भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण (PLSI)

केरल और लक्षद्वीप की भाषाएँ

PLSI खंड 15, भाग 1

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण PLSI

केरल और लक्षद्वीप की भाषाएँ

PLSI खंड 15, भाग 1

मुख्य संपादक

गणेश देवी

खंड संपादक

एम. श्रीनाथन

जोसेफ कोयिप्पल्लि

खंड अनुवादक

विजयकुमारन सी.पी.वी.

bhasha

ओरियंट ब्लैकस्वॉन

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण : केरल और लक्षद्वीप की भाषाएँ, PLSI खंड 15, भाग 1

ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड

मुख्य कार्यालय
3-6-752 हिमायत नगर, हैदराबाद 500029 (तेलंगाना), भारत
ई-मेल : centraloffice@orientblackswan.com

शाखाएँ
बंग्लुरु, कोलकाता, चेन्नई, गुवाहाटी, हैदराबाद,
मुंबई, नई दिल्ली, नोएडा, पटना

ओरियंट ब्लैकस्वॉन द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित 2025

ISBN 978-93-5442-935-4

पुस्तक सज्जा : ओरियंट ब्लैकस्वॉन
आवरण सज्जा : बारान इजलाल

मानचित्र
संगम बुक्स (द एग्रीकल्चरल डेवलपमेंट कमर्शियल क्रेडिट एंड इंडस्ट्रियल इन्वेस्टमेंट कंपनी प्राइवेट लिमिटेड का इम्प्रिंट)

लेज़रटाइपसेटर
सुरेश कुमार शर्मा, नई दिल्ली द्वारा (देवनागरी कोकिला) 13.5/16.2 में टंकणांकित

मुद्रक
अवंतिका प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली 1100 20

प्रकाशक
ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड
3-6-752 हिमायत नगर, हैदराबाद 500029 (तेलंगाना), भारत
ई-मेल : info@orientblackswan.com

यह भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण, सर जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुंबई द्वारा प्रदत्त आंशिक आर्थिक सहयोग से, 'भाषा रिसर्च एंड पब्लिकेशन सेंटर' बड़ौदा द्वारा संपन्न किया गया।

The following are applicable for the maps in this book:
"The coastline of India as depicted in the maps is based upon a digital map from Survey of India." (https://www.surveyofindia.gov.in/).

विषयानुक्रम

भाग 1

केरल

भाग 2

लक्षद्वीप

परिशिष्ट

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण क्या है?

'भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण' भारतीय भाषाओं के सर्वेक्षण का राष्ट्रीय आंदोलन है। विशेष तौर पर खानाबदोशों, तटीय एवं पहाड़ी, द्वीपों, जंगलों में रहने वाले समुदायों और हाशिए पर के समुदायों की भाषा को समझना और उनका दस्तावेज़ीकरण करना इसका खास मकसद है।

'भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण' विद्वानों, लेखकों व कार्यकर्ताओं का विभिन्न बोली समुदायों के सदस्यों के साथ साझेदारी में चलाया गया एक अभियान है।

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण के मुख्य उद्देश्य

- 2011 तक विकसित भारत की भाषाओं का जिस रूप में वे हैं, सिंहावलोकन प्रदान करना,
- बिना विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक भेदभाव के, सदस्यों का एक कार्रवाई नेटवर्क बनाना, जो सतत विकास के लिए प्रतिबद्ध हो और ज्ञान प्रणालियों के जीवन को बढ़ाना और परंपराओं के लिए समुदाय संरक्षक तैयार करना,
- विभिन्न भाषा समुदायों के बीच पुल तैयार करना, जिससे भारतीय समाज का बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक आधार मज़बूत हो सके,
- सरकार और भाषाई समुदायों के बीच घनिष्ठ संबंध बनाना एवं विविध पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए सरकार की सार्वभौमिक विकास रणनीति को सद्भाव के साथ लागू कराना,
- शिक्षण सामग्री और मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए क्षमता का विकास करना,
- भविष्य में भारत के भाषाई और सांस्कृतिक विरासत के सर्वेक्षण के लिए एक आधार प्रदान करना,
- मानव सुरक्षा व अस्तित्व के हित में दुनिया में भाषाई समुदायों द्वारा पीढ़ियों से पोषित और संरक्षित भाषाई, सांस्कृतिक व जैविक विविधता के क्षय व पतन को रोकना एवं उन्हें विलुप्त होने से बचाना।

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण क्या नहीं है

- भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण का मकसद न ही ग्रिअर्सन के भारतीय भाषाई सर्वेक्षण को दोहराना है और न ही यह उसका विकल्प या प्रतिस्थापन है, और न ही एक नमूना सर्वेक्षण या जनगणना सर्वेक्षण का कोई हिस्सा है।
- यह भारत की उस प्रत्येक भाषा का जो आज अस्तित्व में है, एक विस्तृत सर्वेक्षण भी नहीं है।
- और न ही भारतीय भाषा समुदायों के लेखन या ध्वनि के मानक तय करने की कवायद है।

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण है

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण एक त्वरित, गैर-पदानुक्रमित, सार्वजनिक परामर्श और मूल्यांकन है, जिसका लक्ष्य विकास के सांस्कृतिक प्रभाव का आकलन करना और सभी के स्वत्व व आत्मसम्मान को स्वीकार करना है, विशेष रूप से भारत के लुप्तप्राय बोली-समुदायों का। भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण का निर्देशन, स्वैच्छिक रूप से संगठित राष्ट्रीय संपादक मंडल द्वारा किया गया है।

राष्ट्रीय संपादक मंडल

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण (ग्रंथमाला)

Volume 1
The Being of Bhasha: A General Introduction
G. N. Devy
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 2
The Languages of Andaman and Nicobar Islands
Edited by M. Sreenathan
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 3-AP
The Languages of Andhra Pradesh
Part One—Hindi
Part Two—English
Edited by A. Usha Devi
Part Three—Telugu
Edited by A. Usha Devi and D. Chandrasekhar Reddy

Volume 3-TS
The Languages of Telangana
Part One—Hindi
Part Two—English
Edited by A. Usha Devi
Part Three—Telugu
Edited by A. Usha Devi and D. Chandrasekhar Reddy

Volume 4
The Languages of Arunachal Pradesh
Edited by Lisa Lomdak
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 5
The Languages of Assam
Edited by Bibha Bharali and Banani Chakravarty
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 6
The Languages of Bihar
Edited by Vibha S. Chauhan
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 7
The Languages of Chhattisgarh
Part One—Hindi
Edited by Chitta Ranjan Kar
Part Two—English
Edited by Madhu Singh

Volume 8
The Languages of Goa
Edited by Madhavi Sardesai and Damodar Mauzo
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 9
The Languages of Gujarat, Diu & Daman and Dadra & Nagar Haveli
Edited by Kanji Patel
Part One—Hindi
Part Two—English
Part Three—Gujarati

Volume 10
The Languages of Haryana
Edited by Roop Krishen Bhat and Omkar N. Koul
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 11
The Languages of Himachal Pradesh
Edited by Tobdan
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 12
The Languages of Jammu & Kashmir
Edited by Omkar N. Koul
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 13
The Languages of Jharkhand
Edited by Ramnika Gupta and Prabhat Kumar Singh
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 14
The Languages of Karnataka
Edited by Rajeshwari Maheshwariah and H. M. Maheshwariah
Part One—Hindi
Part Two—English
Part Three—Kannada

Volume 15
The Languages of Kerala and Lakshadweep
Edited by M. Sreenathan and Joseph Koyippally
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 16
The Languages of Madhya Pradesh
Part One—Hindi
Edited by Damodar Jain
Part Two—English
Edited by Damodar Jain and Prashant Mishra

Volume 17
The Languages of Maharashtra
Edited by Arun Jakhade
Part One—Hindi
Part Two—English
Part Three—Marathi

Volume 18
The Languages of Manipur
Edited by K. Nipuni Mao
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 19
The Languages of Meghalaya
Edited by Esther Syiem
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 20
The Languages of Mizoram
Edited by Lalnunthangi Chhangte
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 21
The Languages of Nagaland
Edited by Duovituo Kuolie
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 22
The Languages of Odisha
Edited by D. P. Pattanayak and Mahendra Kumar Mishra
Part One—Hindi
Part Two—English
Part Three—Odia

Volume 23
The Languages of Puducherry
Edited by L. Ramamoorthy and G. Ravishankar
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 24
The Languages of Punjab
Edited by Omkar N. Koul and Roop Krishen Bhat
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 25
The Languages of Rajasthan
Edited by Madan Meena and Suraj Rao
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 26
The Languages of Sikkim
Edited by Balaram Pandey
Part One—Hindi
Part Two—English
Part Three—Nepali

Volume 27
The Languages of Tamil Nadu
Edited by V. Gnanasundaram and K. Rangan
Part One—Hindi
Part Two—English
Part Three—Tamil

Volume 28
The Languages of Tripura
Edited by Sukhendu Debbarma
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 29
The Languages of Uttar Pradesh
Edited by Badri Narayan and Rama Shankar Singh
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 30
The Languages of Uttarakhand
Edited by Uma Bhatt and Shekhar Pathak
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 31
The Languages of West Bengal
Edited by Sankar Singha and Indranil Acharya
Part One—Hindi
Part Two—English
Part Three—Bangla

Volume 32
The Scheduled Languages—Assamiya, Bangla, Bodo, Maithili, Manipuri, Odia, Nepali and Santali
Edited by G. N. Devy and K. Nipuni Mao

Volume 33
The Scheduled Languages—Dogri, Kashmiri, Punjabi and Urdu
Edited by Omkar N. Koul

Volume 34
The Scheduled Languages—Gujarati, Konkani, Marathi, Sindhi
Edited by G. N. Devy

Volume 35
The Scheduled Languages—Kannada, Malayalam, Tamil and Telugu
Edited by V. Gnanasundaram and K. Rangan

Volume 36
Sanskrit
Edited by Avadhesh K. Singh

Volume 37
English and Other International Languages
Edited by T. Vijay Kumar

Volume 38
Indian Sign Language(s)
Edited by Tanmoy Bhattacharya, Nisha Grover and Surinder P. K. Randhawa
Part One—Hindi
Part Two—English

Volume 39
Shared Languages of the Indian Subcontinent
Edited by Sukrita Paul Kumar

Volume 40
The Tribal Languages—The North-Eastern States
Edited by G. N. Devy

Volume 41
The Tribal Languages—The Eastern States—Bengal, Bihar, Jharkhand and Odisha
Edited by G. N. Devy

Volume 42
The Tribal Languages—Central Indian States—Chhattisgarh, Gujarat, Madhya Pradesh, Maharashtra and Rajasthan
Edited by G. N. Devy

Volume 43
The Tribal Languages—The Southern States and the Islands
Edited by G. N. Devy

Volume 44
The Tribal Languages of the North-West and the Himalayan States
Edited by Omkar N. Koul

Volume 45
Language Census, Survey and Policy
Edited by G. N. Devy

Volume 46
Scripts in India
Edited by G. N. Devy

Volume 47
Indian Languages in the Diaspora
Edited by T. Vijay Kumar

Volume 48
Comparative Wordlist—Kinship and Social Relations
Edited by G. N. Devy

Volume 49
Comparative Wordlist—Time and Space
Edited by G. N. Devy

Volume 50
The Future of Indian Languages
Edited by G. N. Devy
Part One—Hindi
Part Two—English

आभार

हम द्रविड़ विश्वविद्यालय, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय और तुंचत्तु एषुत्तच्छन मलयालम विश्वविद्यालय के अधिकारियों के आभारी हैं, जिन्होंने हमें विभिन्न अवधियों में इस कार्य से जुड़ने की अनुमति दी। हम केरल सरकार के किर्ताड्स (KIRTADS) की निदेशक डॉ. बिंदु और उनके सहयोगियों को केरल की जनजातीय भाषाओं पर कार्यशाला आयोजित करने में उनकी रुचि और समर्थन के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देते हैं।

खंड के अनुवादक प्रो. विजयकुमारन द्वारा दिए गए सुझावों और सूचनाओं से यह खंड और बेहतर बना है।

इस खंड में कई लोगों ने योगदान दिया और कई अन्य तरीकों से मदद की है। हम उन सभी के बहुत आभारी हैं और आशा करते हैं कि इस पुस्तक ने उनके प्रयासों के साथ न्याय किया है। हम पाठकों से उनकी टिप्पणियों, सुझावों और आलोचनाओं को सुनने के लिए उत्सुक रहेंगे।

एम. श्रीनाथन
जोसेफ कोयिप्पल्लि

भूमिका

मैं जब भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण के बारे में सोचता हूँ, तब मुझे अनायास ही भारत के संविधान की आरंभिक पंक्तियाँ याद आती हैं, 'हम भारत के लोग'। संसद तथा सर्वोच्च न्यायालय की सर्वोपरिता की बहस में हम भारत के लोगों को भूल चुके हैं। यद्यपि लोग सर्वोपरि हैं, किंतु लोग न तो संसद, न ही न्यायालय के प्रतिस्पर्धी हैं। इसी तरह भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण भी न ग्रिअर्सन और न ही रजिस्ट्रार जनरल ऑफ़ इंडिया द्वारा किए गए सर्वेक्षण का प्रतिस्पर्धी है। यह एक स्वतंत्र तथा स्वायत्त कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य अपनी भाषा के प्रति लोगों की धारणा को जानना है। इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य लोगों में इस बात का विश्वास पैदा करना है कि उनकी भाषा शिक्षा, प्रशासन तथा व्यवहार के लिए उपयुक्त है, उनकी भाषा विकास तथा संवाद के योग्य है। एक बार उनका आत्मविश्वास बहाल हो जाने पर वे जान जाएँगे कि उनकी मातृभाषा ही एक बेहतर बुनियाद है, जिसके आधार पर वे विविध विषय तथा भाषाएँ सीख सकेंगे।

भारतीय बुद्धिजीवियों ने 'इंग्लिश डिक्शनरी' में एक शब्द का योगदान दिया है, वह है, 'मुख्यधारा'। इस मुख्यधारा ने छोटी भाषाओं व संस्कृतियों को हाशिए पर धकेलने व तबाह करने का काम किया है। यह विध्वंस का ही पर्यायवाची है। विशेष रूप से आदिवासी, जिन्हें पहले ही उनके जंगलों व पहाड़ों से बेदखल कर दिया गया है, अब उन्हें मानक भाषाओं को ही मातृभाषा के रूप में स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जा रहा है। हिंदी को कई भारतीय भाषाओं की मुख्यधारा माना जाता है तथा अंग्रेज़ी को हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं की मुख्यधारा माना जाने लगा है। आदिम-सभ्य, सरल-उन्नत, ऊँच-नीच इत्यादि सभी दोहरे मानदंडों का प्रयोग चालाकी से प्रभुत्व तथा अधीनता स्थापित करने के लिए किया जा रहा है। वे ''मुख्यधारा की इसी मानसिकता से भाषा का संवाद तथा मुद्रित स्तर पर उपयोग कर रहे हैं एवं इसी मानसिकता से 'अर्थ' तथा अनुभव का बोध कर रहे हैं।'' (Maybin 1994, from *the savage mind to ways with words)* मुख्यधारा की मानसिकता में 'मौखिकता एक सामाजिक दूषण है जिसका उन्मूलन अनिवार्य है।" (रामपाल)

भारतीय समाज रिश्तों पर आधारित समाज है तथा पश्चिम सभ्यता के दोहरे व अनुबंध आधारित समाज से अलग है। भारतीय समाज विस्तारित परिवार, विस्तारित समाज तथा भाषा-संस्कृति को दर्शाता है। हज़ारों वर्ष पहले कहा गया है,

'अयं निजः परो वेत्ति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।'

अर्थात् "यह मेरा है तथा वह मेरा नहीं है, यह एक संकीर्ण विचारधारा है जबकि व्यापक विचारधारा के लोग पूरे ब्रह्मांड को ही एक परिवार के रूप में देखते हैं।"

सामाजिक स्तर पर इसे भारत में खुदरा विक्रेताओं की अधिकता के आधार पर देखा जाता है। भारत में लगभग आठ भारतीयों के लिए एक खुदरा विक्रेता है। इस लिहाज से भारत दुनिया का सबसे बड़ा रिटेलर बेस्ड समाज है। सामाजिक व आर्थिक स्तर पर इसे रिश्तों पर आधारित समाज का एक श्रेष्ठ उदाहरण कहा जा सकता है। भाषा, धर्म, जाति-समाज, अनेकता में एकता भी अपने आप में मिसाल हैं। तीन हज़ार मातृभाषाएँ, चार हज़ार जातियाँ व समुदाय, चार हज़ार से अधिक श्रद्धा व मान्यताएँ! भारत में जितनी विविधता है, उतनी दुनिया में कहीं भी देखने को नहीं मिलती। फिर भी लोग रिश्तों के ताने-बाने में बँधे हुए हैं। हमारे रिश्तों में जिस प्रकार की एकसूत्रता है, उसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। भारत की भाषाएँ छह अलग-अलग

भाषा-परिवारों का प्रतिनिधित्व करती हैं फिर भी दुनिया भर के विद्वान भारत को एक ही भाषाई क्षेत्र के रूप में देखते हैं। जब से विद्वानों ने भाषाओं तथा बोलियों का वर्गीकरण किया है, तभी से भाषाओं की क्रम-व्यवस्था आकार लेने लगी। यहाँ इस तथ्य को भुला दिया गया कि प्रत्येक भाषा भी बोली ही होती है। किसी भी भाषा का बोली के बिना तथा बोली का भाषा के बिना कोई अस्तित्व नहीं होता है। एक आम आदमी की भाषा के बारे में जो धारणा है, विद्वानों की धारणा उससे काफ़ी अलग है। विद्वानों की भाषा शक्तिशाली, एकल तथा एकाधिकारी होती है, जबकि आम आदमी की भाषा सामूहिक, बहुविध व पारस्परिक होती है। आम आदमी की भाषा में सर्वसमावेशकता होती है। जब हम किसी समूह को उसकी पहचान के अधिकार से वंचित करते हैं, तब हम उसके अस्तित्व को भी नकारते हैं तथा उसके नामशेष होने पर हम उसका स्मारक बना देते हैं। आम तौर पर सभी सर्वेक्षण परित्याग करने की भावना से किए जाते हैं। सहयोग की विफलता एक तरीके से संरक्षण की विफलता ही है। भाषा का विलुप्त होना सिर्फ़ मौखिकता का विलुप्त होना न होकर जैव-सांस्कृतिक ज्ञान का विलुप्त होना भी है। भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण की दृढ़ मान्यता है कि बहुभाषी परिवेश में एकभाषी व्यवस्था की अपेक्षा मिथक मात्र है। पश्चिम के विकसित देशों में द्विभाषावाद को एकभाषावाद के विस्तार के रूप में ही देखा जाता है तथा बहुभाषावाद को अनियमितता माना जाता है। एक समय द्विभाषावाद को नकारात्मक अंश तथा बोझ के रूप में देखा जाता था और बहुभाषावाद को भाषा ही नहीं माना जाता था।

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण भाषा अधिग्रहण तथा भाषा परामर्श के बारे में महत्त्वपूर्ण संकेत देता है। कोई भी बहुभाषाई बालक एक के बाद दूसरी भाषा तथा एक के बाद दूसरी कला आत्मसात नहीं करता, वरन् वह कई भाषाएँ एक साथ सीखता है। बच्चे जिस भाषा को चार वर्ष की उम्र में बिना किसी मार्गदर्शन के सीखते हैं, वह उनकी मातृभाषा होती है। स्कूल के वातावरण में जो भाषा सिखाई जाती है, वह दूसरी भाषा होती है तथा जो भाषा सिर्फ़ क्लासरूम तक सीमित होती है, वह विदेशी भाषा होती है। इस समझ के परिणामस्वरूप यह माना जाता है कि बच्चे की एक से अधिक मातृभाषाएँ हैं, एक से अधिक द्वितीय भाषाएँ हैं तथा भारतीय भाषा को एक विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाया जा सकता है। सीखने की प्रक्रिया न तो सिलसिलेवार होती है और न ही रैखिक होती है। ग्रामीण समाज में लोग बिना स्कूली शिक्षा के अपने वातावरण से कई भाषाएँ सीखते हैं, उन्हें सिर्फ़ अपने वातावरण से बाहर की दुनिया से संपर्क करने के लिए साक्षरता की आवश्यकता होती है। ग्रामीण समाज में राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के लिए साक्षरता की आवश्यकता होती है। जहाँ मातृभाषा ही बहुभाषाई हो, वहाँ पहली भाषा अथवा दूसरी भाषा इस प्रकार का क्रम बेमानी हो जाता है।

भाषा सीखने की प्रक्रिया में एकभाषी उच्च-नीचता अब भी मौजूद है। चाहे वह पहली भाषा हो, दूसरी भाषा हो या विदेशी भाषा हो अथवा भाषा संबंधित चार कौशल – सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना हो, इन्हें भी विशिष्टक्रम में ही संगठित किया है। शैक्षणिक पद्धति के अभाव में एक ही भाषा को पहली, दूसरी अथवा तीसरी भाषा के रूप में स्कूलों में पढ़ाया जाता है।

यह स्पष्ट है कि बहुभाषावाद तथा बहुभाषी बच्चों के बारे में कोई सार्थक अनुसंधान नहीं हुआ है। यदि भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण का निष्कर्ष लोगों को इस बात को लेकर जागरूक करता है कि बहुभाषावाद शिक्षा का आधार है अथवा लोगों को अनुसंधान के लिए प्रेरित करता है तो यह परियोजना न्यायोचित होगी। साथ ही यदि यह शैक्षणिक भाषा तथा संस्कृति के बीच संपर्क बना सकता है अथवा लोकप्रिय, सांस्कृतिक और विकास की तरफ़दारी करता है तो यह सर्वेक्षण सफल माना जाएगा।

डी.पी. पटनायक
संयोजक
राष्ट्रीय संपादक मंडल
भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण

मुख्य संपादकीय

एक देश जिसे अपनी भाषाई विविधता पर गर्व है

वैश्विक भाषा-संकट

पिछले दो दशकों से वैज्ञानिक भाषाओं के अस्तित्व पर गणितीय मानकों के आधार पर अनुमान लगा रहे हैं। ये भविष्यवाणियाँ निरपवाद रूप से संकेत दे रही हैं कि मानव प्रजाति की भाषाई विरासत का काफी बड़ा हिस्सा विलुप्त होने के कगार पर है। ये भविष्यवाणियाँ इस बात पर सहमत नहीं हैं कि नुकसान कितना भारी होने वाला है। हाँ, सहमति इस बात पर ज़रूर है कि मौजूदा तीन-चौथाई या उससे भी अधिक भाषाओं में आधे से ज़्यादा मरणासन्न अवस्था में हैं। दूसरी तरफ भाषाई वैश्वीकरण के समर्थक चाहते हैं कि एक या कुछ ही भाषाओं का प्रसार हो, जिससे राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार संप्रेषण आसान हो सके। वास्तविकता यह भी है कि वे देश या समुदाय, जिन्होंने एक ही भाषा की परिधि में रहना सीख लिया है तथा जिनकी आर्थिक प्रगति अपनी भाषा के अलावा किसी अन्य भाषा को जानने पर निर्भर नहीं है या जिनकी ज्ञान-व्यवस्था अपनी भाषा के भीतर ही अच्छी तरह सुरक्षित है, उन्हें अभी भाषाओं के विलुप्त होने के तनाव की कतई अनुभूति नहीं है। कम-से-कम अभी तो नहीं। हालाँकि यह भी सही है कि विश्व की समूची भाषाई विरासत विलुप्त होने से दुनिया की मानव बुद्धिमत्ता एवं सभ्यता कमज़ोर होगी जिसका सीधा एवं गहरा परिणाम उन पर भी होगा। निश्चित तौर पर भाषा ही है जो न सिर्फ़ हमें मनुष्य बल्कि अन्य प्रजातियों तथा प्रकृति से अलग बनाती है। चूँकि मानव चेतना भाषाई अभिव्यक्ति की योग्यता के सहारे कार्य करती है, अतएव यह आवश्यक है कि भाषा को सांस्कृतिक संपदा का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू माना जाए। इस अमूल्य संपदा को संगृहीत करने में हमें लगभग पाँच लाख वर्षों तक सतत एवं गंभीर प्रयास करना पड़ा है। आज हम इस संपदा के बड़े हिस्से को खोने के कगार पर हैं। कुछ अनुमानों के अनुसार, बाईसवीं शताब्दी में लगभग छह हज़ार मौजूदा भाषाओं में से मात्र तीन सौ भाषाएँ ही सुरक्षित रह जाएँगी। गहन सर्वेक्षण के अभाव के कारण यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि इनमें से कितनी भाषाएँ अथवा कौन-सी भाषाएँ बच पाएँगी। प्रत्येक भाषा का इतिहास काफी रोचक होता है तथा कई बार अप्रत्याशित करवटें लेता है। भारत में कुछ आदिवासी भाषाओं की उन्नति का जो रुझान देखा गया है, उनमें भीली भाषा का उदाहरण दिया जा सकता है। इस रुझान ने सभी स्थापित सामाजिक-भाषाई अनुमानों को नकार दिया है। इतिहास साक्षी है कि कुछ महान भाषाएँ जिन्हें ताकतवर साम्राज्यों का समर्थन प्राप्त था, उन्हें भी बिखरते देखा गया तथा सत्ता के बदलाव के चलते उनकी जगह नई भाषाओं का जन्म हुआ। विस्मित कर देने वाले ऐसे अपवाद मौजूद हैं तथा संभवतः भविष्य में भी मौजूद रहेंगे। फिर भी नाइजीरिया, मेक्सिको, पापुआ न्यु गिनी, इंडोनेशिया तथा भारत जैसे देशों के लोग यह महसूस कर रहे हैं कि इनके भाषाई क्षेत्र तथा भाषाओं के शब्द-भंडार निरंतर कम हो रहे हैं। यह देखा जा रहा है कि गैर-वैश्विक भाषा बोलने वाले लोगों में जटिल अवधारणाओं को व्यक्त करने की क्षमता में चिंताजनक कमी आ रही है। इतना ही नहीं, इन भाषाओं के शब्दों के बहुस्तरीय अर्थ (अर्थ छटाएँ) भी अदृश्य होते जा रहे हैं।

इतिहासकार हमें बताते हैं कि संभवतः सात या आठ हज़ार साल पहले इसी तरह की या इससे कुछ अलग स्थिति बनी थी। यह उस समय की बात है जब मनुष्य ने प्रकृति के चमत्कार के रूप में बीज की खोज की थी। उस समय शिकारी-कबीलाई

या पशुचारक (पैस्ट्रोलिस्ट) अर्थव्यवस्थाओं से हटकर कृषि आधारित नई व्यवस्था ने आकार लेना शुरू किया था। हमें यह भी बताया गया कि यही वह समय था जब दुनिया की भाषाई विविधता बुरी तरह प्रभावित हुई। इस निष्कर्ष पर पहुँचना गलत नहीं होगा कि मानवीय भाषाओं का मौजूदा संकट बुनियादी रूप से आर्थिक बदलाव से शुरू हुआ है, जिसने उत्तर से दक्षिण, पश्चिम से पूर्व तक समूची दुनिया को घेर लिया है। इस संकट में एक और आयाम जुड़ गया है क्योंकि आज मनुष्य की गतिविधियाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्रभावित हैं। मनुष्य का मस्तिष्क तथा भाषाई व्यवहार तकनीक तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अधिक निर्भर है। भाषा आधारित तकनीक ने मानव समूह को जोड़ने वाले भाषा व्यवहार में भी पैठ जमा ली है, जिसके चलते हमारा भाषा-विश्व भी अब नया आकार ले रहा है। इस परिस्थिति को हम भले ही दार्शनिक अथवा सामाजिक रूप में चाहे जैसे परिभाषित करें, हमारी जीवनशैली तो प्रभावित हो रही है। इस असाधारण परिवर्तन के चलते उन समुदायों की जीवनशैली विशेष रूप से प्रभावित हो रही है, जिनकी आवाज़ सुनी नहीं जा रही है। यह देखा गया है कि अगर आपकी भाषा, लेखन-व्यवस्था का प्रतिनिधित्व नहीं करती है, तो उस भाषा को बोझ या विकास की प्रक्रिया में एक अवरोध के रूप में तथा पिछड़ी हुई भाषा के रूप में देखा जाता है। इतना ही नहीं, उस भाषा में निहित ज्ञान को भी अधकचरे ज्ञान के रूप में देखा जाता है। जिन देशों का ऊपर उल्लेख किया गया है, उन देशों ने सदियों के प्रयत्नों के बाद अनेक भाषाओं को विकसित किया है, जैसे, पापुआ न्यु गिनी 900, भारत 700, इंडोनेशिया 600, नाइजीरिया 400 तथा मेक्सिको 300। इन देशों की भाषाओं की संख्या का निर्धारण अलग-अलग अनुमान के ज़रिए लगाया गया है। ये देश यह भूल गए हैं कि यह समृद्ध विरासत ही उनकी सांस्कृतिक निधि है। हमारे देश में 1971 की जनगणना के बाद अधिकारियों ने निर्णय लिया कि 10,000 या उससे कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं से संबंधित जानकारी प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं है। इस निर्णय ने इन भाषाओं को गैर-नागरिक (नॉन-सिटीजन) बना दिया जबकि भारत को इतिहास में भाषाओं का गणतंत्र माना जाता रहा है। यह निर्णय 1970 में अचानक अथवा एकदम नहीं लिया गया। इस प्रक्रिया की शुरुआत औपनिवेशिक काल में तब हुई जब इस देश की केवल दो प्रतिशत भाषाएँ ही मुद्रित स्वरूप में थीं। यह एक प्रकार से दो सदियों से चले आ रहे बौद्धिक इतिहास का भी अंत था।

सन् 1970 में पहली बार मैंने ग्रिअर्सन का सर्वेक्षण पढ़ा। एक युवा पाठक होने के नाते उनके इस अविस्मरणीय कार्य को पढ़ते हुए मैं न तो इस बात से प्रभावित हुआ कि ग्रिअर्सन को भारत की भाषाओं की जानकारी है, न ही इस बात ने मुझे प्रभावित किया कि भारी चुनौतियों के बाद भी इस सर्वेक्षण को पूरा करने की उनमें प्रतिबद्धता थी। इसलिए यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि कोई भी पाठक इससे खास प्रभावित हुआ हो। यह सर्वेक्षण मुझे अनेक जगहों पर खामोश दिखाई दिया। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ग्रिअर्सन के सर्वेक्षण से यह बात सामने आई कि उन्होंने जिन 179 भाषाओं को सूचीबद्ध किया था, उनमें से लगभग 165 भाषाएँ धीरे-धीरे समाप्ति की ओर बढ़ रही थीं। मुझे इस बात की कोई जानकारी नहीं मिल सकी कि ग्रिअर्सन के सर्वेक्षण तथा उनके पूर्ववर्ती विद्वान सर विलियम जोंस के इसी प्रकार के सर्वेक्षण का कहीं कोई तुलनात्मक अध्ययन हुआ है। सर विलियम जोंस इस बात से काफी उत्साहित थे कि भारत में विभिन्न तरह की भाषाएँ हैं। हालाँकि उनके पास ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे वे यह पता लगा सकते कि उनके समय में उनमें से कितनी भाषाएँ मौजूद थीं। इसके विपरीत, ग्रिअर्सन के विवरण में इस तरह की कोई नई खोज नहीं थी। जब कोई ग्रिअर्सन के सर्वेक्षण में झाँकता है तो वह इस प्रभाव के साथ वापस लौट आता है कि उनके सर्वेक्षण में, बचकानी तथा मानव-विज्ञान का गुणगान करने वाले लोक गायकों के लिए अनुकूल विविधताएँ हैं। एक ओर वे दो सौ भाषाओं का ज़िक्र करते हैं तो दूसरी ओर पाँच सौ बोलियों का वर्णन करते हैं। यह सूचित करता है कि इस महान कार्य का समीकरण ही पूर्वाग्रह ग्रसित है। शायद, इसकी शुरुआत विलियम जोंस के कार्य के साथ ही जुड़ी हुई थी, बजाय उनके इस उत्साह के कि जैसे उन्होंने भारत को सभ्यता के 'अज्ञात द्वीप' के रूप में खोज लिया है।

खामोश आवाज़

सर विलियम जोंस के समय से ही लगातार यह प्रयास किए जा रहे थे कि भारत की ज्ञान परंपराओं तथा जैव-सांस्कृतिक विविधताओं को पारिभाषित करने के लिए उन्हें ज्ञानात्मक श्रेणियों में पारिभाषित किया जाए। इसके साथ-साथ उपनिवेशवाद को समाप्त करने की प्रक्रिया में पश्चिमी आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में देश के परंपरागत ज्ञान को उपनिवेशिक ज्ञान से जोड़ने की भी कोशिश की गई।

हमारी मौखिक परंपरा में निहित ज्ञान तथा पाश्चात्य विचारधारा के बीच समन्वय तथा संघर्ष के चलते हमारी मौखिक परंपरा ने इस काल्पनिक परिवर्तन को स्वीकारना प्रारंभ कर दिया। हमारी पारंपरिक संस्थाओं जैसे, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, अस्पताल, न्यायालय इत्यादि ने ऐसा रूप धारण कर लिया जिससे भारतीय उपमहाद्वीप में अनेक जटिलताएँ उत्पन्न हो गईं। इस बौद्धिक चुनौती से इक्कीसवीं सदी के विचारकों को मुकाबला करना पड़ेगा। भाषा के ज़रिए सृजनात्मक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में यह परिवर्तन एक बड़ी चुनौती पैदा करेगा। अतएव समकालीन भारतीय बुद्धिजीवियों को भारतीय सौंदर्यशास्त्र तथा भारतीय भाषा-विज्ञान को औपनिवेशिक प्रभाव से बाहर निकालने का चुनौतीपूर्ण काम करना पड़ेगा। हाल के समय में इस बात को समझने की कोशिश की जा रही है कि भाषा एवं बोली के संदर्भ में वर्णनात्मक वर्गीकरण कितना कारगर होगा। भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण का यह केंद्रीय बिंदु रहा है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण ने भाषा-विवरण की पद्धति को अपनाया है। इसीलिए भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण ने जानबूझकर उस भाषा-वैज्ञानिक सोच से दूर रहने का प्रयत्न किया है, जिसमें किसी भाषा की उत्पत्ति तथा उसके परिवार का विचार किया जाता है। इसके विपरीत इसमें ऐतिहासिक तरीका अपनाया गया है, जिसमें इक्कीसवीं सदी के आरंभ में मौजूद भाषाओं की वास्तविक तस्वीर पेश करने की कोशिश है। किसी भाषा की उसके भाषा परिवार के आधार पर पहचान निश्चित करने के लिए सर विलियम जोंस तथा ग्रिअर्सन के स्थापित सिद्धांतों तथा उससे भी आगे बढ़कर जो काम हुआ है, वह है भाषा व बोली में अंतर करना। तीन दशकों के गहन चिंतन तथा विभिन्न समुदायों, सहपाठियों एवं भाषा सर्वेक्षण के संपादक मंडल से बात करने के बाद मैंने यह तय किया कि हमें किसी भी भाषा को 'बोली' कहने से बचना होगा। अगर कोई समूह यह मानता है कि उसकी भाषा बोली न होकर भाषा ही है तो यह बेहतर होगा कि हम उसे भाषा मानें। भले ही भाषा वैज्ञानिक उनके दावे को तर्कसंगत न मानते हों। भाषा विज्ञान ने पिछले दो दशकों में सराहनीय प्रगति की है। फिर भी अभी उसे मानव द्वारा प्रयुक्त उन मौखिक संकेतों के इर्द-गिर्द उलझे रहस्यों को सुलझाने का लंबा रास्ता तय करना है जिसके ज़रिए मानव जटिल तथा अमूर्त व्यवहार करता है। बोली भी उन सवालों में से एक है जिस पर अभी तक सहमति नहीं बन सकी है।

भाषा और सच्चाई

मानव उत्पत्ति की प्रक्रिया बहुत रहस्यमय है। इस प्रक्रिया की अपर्याप्त समझ के चलते हम वैज्ञानिक अनुमानों का आश्रय लेते हैं। हालाँकि ये अनुमान ऐसे हैं कि इनके ठीक विपरीत अनुमान भी सच लगते हैं।

सामाजिक संस्था के रूप में भाषा, इसकी उत्पत्ति तथा इसके निर्माण का सटीक अनुक्रम मानव उत्पत्ति के महाकाव्य में एक रहस्य ही है।

जब ब्रह्मांड अस्तित्व में आया क्या तब कोई ध्वनि उत्पन्न हुई थी? जीव की आवाज़ सुनने की क्षमता से पहले क्या ध्वनि मौजूद थी? क्या अनहत ध्वनि और गले से निकलने वाली ध्वनि एक ही प्रकार की है? मनुष्य प्रजाति ने स्वर यंत्र से नियंत्रित

हवा का ही अर्थ-व्यवहार (meaning-transaction) के लिए क्यों इस्तेमाल किया? जबकि आँखों की भाषा तथा अंग-संचालन (मधुमक्खी की तरह) का 'अर्थ' के आदान-प्रदान के लिए समान रूप से उपयोग किया जा सकता था। फिर मनुष्य प्रजाति ने उसी जुनून से अन्य अभिव्यक्ति के माध्यमों की तलाश क्यों नहीं की? सैद्धांतिक स्तर पर इन सभी सवालों का जवाब तो दिया जा सकता है। संभव है, कोई जवाब दार्शनिक स्तर पर भी सही लगे परंतु अंतिम सत्य नहीं हो सकता। बौद्धिक उत्पत्ति के किसी पड़ाव पर स्वर-यंत्र के माध्यम से हवा को नियंत्रित कर संवाद व्यवहार स्थापित किया गया होगा। तत्पश्चात् संकेत व्यवस्था में अक्षर तथा अंक ने ध्वनि को पीछे छोड़ दिया। फिर भी लिपि की भाषा ध्वनि की भाषा को पूर्ण रूप से विस्थापित क्यों नहीं कर सकी?

शिशु के मस्तिष्क में निहित भाषा ग्रहण की संरचना के सिद्धांत को तो प्रतिपादित किया जा चुका है। फिर भी उन ज्यामितीय आकारों, जिन्हें हम 'अक्षर' कहते हैं तथा मानव ध्वनि जिन्हें हम 'स्वर' कहते हैं, के परस्परावलंबन के सिद्धांत को क्यों प्रतिपादित नहीं किया जा सका है?

अंग संचालन से होने वाली अभिव्यक्ति, ध्वनि-नियंत्रण से होने वाली अभिव्यक्ति तथा लिपि इन तीनों के अलावा मौन एवं निश्चलता द्वारा अभिव्यक्त 'अर्थ' भी अर्थ-व्यवहार में समाहित होता है। इसीलिए 'अर्थ' वास्तव में क्या है, यह अभी तक निश्चित रूप से निर्धारित नहीं किया जा सका है। 'अर्थ' से संबंधित ज़्यादातर सिद्धांत दार्शनिक अटकलों तक ही सीमित हैं। इसके उपरांत अभी तक सटीक रूप से यह कहना भी संभव नहीं हो सका है कि 'अर्थ' ही भाषा है या 'अर्थ' भाषा से पहले अस्तित्व में था या यह एक ऐसी सामाजिक, आध्यात्मिक प्रणाली है जो भाषा से पूर्णतया स्वतंत्र है। यह सही है कि भाषा मनुष्य का व्यक्तिगत अनुभव है, परंतु यह भी सही है कि संसार को समझने की हर एक की क्षमता भाषा पर ही निर्भर होती है। इसीलिए हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि भाषा एक सामाजिक संस्था है।

परंतु, क्या भाषा ही 'अर्थ' है या यह कोई भौतिक वस्तु है? क्या यह ईश्वरीय शक्ति है या महज एक सामाजिक संस्था? क्या यह मानव शरीर तथा मस्तिष्क को प्राप्त एक जैविक क्रिया है, जो उत्पत्ति की प्रक्रिया में प्राप्त हुई है या यह इन सभी का मिला-जुला रूप है? भाषा विज्ञान सभी मानव-विज्ञानों में सबसे विकसित शास्त्र माना जाता है, फिर भी उपर्युक्त सभी प्रश्नों को पूरी तरह समझने की आवश्यकता है।

यह एक स्थापित सत्य है कि भाषा से परे संस्कृति का अस्तित्व नहीं हो सकता अथवा ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह भी माना जाता है कि भाषा के बिना ज्ञान का बोध संभव नहीं है। 'अर्थ' के संबंध में भी यही मान्यता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो भाषा को मनुष्य की बुद्धि-व्यवहार क्षमता का पर्यायवाची शब्द माना गया है।

यहाँ तक कि स्वप्न भी भाषाई संरचना पर आधारित नहीं होते हैं। फिर भी उनकी अवधारणा को भाषा संरचना के समान ही माना गया है। सपनों की उत्पत्ति, स्मृति में याद करने की क्षमता पर निर्भर है। हमें यह भी विश्वास दिलाया जाता है कि भाषा की अनुपस्थिति में स्मृति का अस्तित्व नहीं हो सकता है। इसी तरह हमने यह भी मान लिया है कि मानवीय बुद्धि-व्यवहार क्षमताएँ जैसे प्रेरणा, कल्पना और विवेक आदि भाषा के अभाव में संभव नहीं होतीं।

यह भी सही है कि ऐसे कई अनुभव हैं, जो मानव अन्य पशुओं के साथ समान रूप से अनुभव करता है, जिनमें भाषा पूरी तरह से नगण्य है। जैसे ऊँचाई से गिरने का भय, प्रेम अथवा वासना इसके कुछ मुख्य उदाहरण हैं।

फिनॉमिनॉलॉजी (घटनाक्रिया विज्ञान) जो मानवीय बोधगम्यता का ही एक विज्ञान है, इसके तहत यह माना जाता है कि मनुष्य की वैश्विक अनुभूति निरंतर विकसित होती रहती है जिसके चलते उसकी ज्ञानात्मक क्षमता तथा भाषा विकसित होती है। इसके विरुद्ध यह तर्क दिया जाता है कि मनुष्य की अनुभूति निरंतर विकसित होती भाषा क्षमता के अनुपात में बढ़ती है। यह निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता कि अनुभव क्षेत्र स्वतंत्र एवं भाषा क्षेत्र के बाहर विकसित होता है। अनुभव क्षेत्र के अस्तित्व को नकारना उससे भी मुश्किल काम है।

इसी तरह यह भी एक कठिन सवाल है कि मौखिक सामग्री, जिसे लिपि, व्याकरण तथा संस्कृति भाषा नहीं मानते, वह भाषा है भी या नहीं? सामान्यतः इसे बोली या क्षेत्रीय विविधता के नाम पर हाशिए पर धकेल दिया जाता है।

वस्तुतः ध्वनि की रहस्यमय उत्पत्ति के साथ 'अर्थ' की उत्पत्ति हुई होगी। अतः मानव अस्तित्व तथा मानवीय समय तक भाषाओं को बोली ही मानना चाहिए। इसी प्रकार अर्थ-व्यवहार के भौतिक तथा प्रतीकात्मक साधनों में ध्वनि-संकेतों पर आधारित भाषा को ही बोली के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

इसके अलावा विश्व के बारे में हमारी व्यापक और सतत विकसित होती समझ भी इस संभावना को व्यक्त करती है कि हमारे विकास के वर्तमान स्तर पर ज्ञात भाषा भी हमें उपलब्ध पूर्ण विकसित भाषा का अंश मात्र ही है। इसलिए कुछ मायनों में अनुभव की समग्रता में भाषा को भी बोली के रूप में ही देखा जाना चाहिए। इतना ही नहीं, शब्दों तथा लिपियों के माध्यम से स्थिर मनुष्य की भाषा को भी 'अनुभव' की समग्रता में, 'अर्थ' की समग्रता में एवं 'ध्वनि' की समग्रता में एक इकाई के तौर पर देखा जाना चाहिए। अतः, वह बोली है, इसलिए उसे पीछे नहीं छोड़ा जा रहा है बल्कि वह आगे-आगे पथ-प्रदर्शक बन कर चले।

बोली की वास्तविक प्रकृति को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम उसे भाषा के एक मुख्य घटक के रूप में मानें, न कि एक जर्जर अवशेष, जिसकी नियति मुश्किल घड़ी से गुज़रना है। बोली को ही 'अर्थ' की अप्रयुक्त सीमाओं को पाने के लिए आगे आना होगा। भाषाओं के इतिहास से पता चलता है कि बोलियों के साथ चलना ही उनके भाग्य का हिस्सा है। बोलियों की नियति 'अर्थ' की निरंतर संभावनाओं को खोजने में निहित है। यह काम उन्हें मानक भाषाओं के साथ संबंध खोए बिना करना होगा क्योंकि वे राजनीतिक तथा ऐतिहासिक हालातों से बँधी हैं। प्रचलन में रहना बोली की नियति है परंतु दुर्भाग्यवश बनावटी मूल्य के साथ।

अगर इसे एक मूर्तरूप में समझने का प्रयत्न करें तो यह कहा जा सकता है कि बोली उस अमूर्त पदार्थ की तरह है, जो एक नए जन्मे ग्रह के इर्द-गिर्द घूम रहा है। यह ग्रह अभी भी अपनी चरम गति को खोज रहा है। भाषा रूपी ग्रह का वातावरण भी बोलियों से परिभाषित होता है। बोलियों के माध्यम से भाषा ब्रह्मांड के साथ व बाह्य जगत से लगातार संपर्क बनाए रखती है। इसीलिए वह इसके साथ संबंधित हो जाती है।

अब तक यह माना गया है कि किसी भाषा की विभिन्न बोलियों में से प्रमुख वर्गों की बोली को ही मानक भाषा का दर्जा प्राप्त होता है। जबकि आम जनता की भाषा को बोली के रूप में ही देखा जाता है। इस विचार के पार्श्व में इंग्लैंड में बोली जाने वाली मानक अंग्रेज़ी का ऐतिहासिक अनुभव है। इसी लिहाज से भारत के प्रमुख राजनीतिक वर्ग की हिंदी को ही हिंदी की प्रमुख बोली के रूप में पहचाना जाना चाहिए था या फिर महाराष्ट्र के राज्यकर्ता मराठाओं की बोली को ही प्रमुख मराठी का दर्जा हासिल होना चाहिए था, जबकि ऐसा नहीं है। भारतीय अनुभव के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इंग्लैंड के अंग्रेज़ी भाषा के इतिहास के आधार पर मानक भाषा तथा बोली के संबंध में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सकता है।

इसके अलावा जिन संस्कृतियों में जहाँ प्रमुख राजनीतिक वर्ग अक्सर एक गैर देशी भाषा बोलते हैं तथा जहाँ समाज का प्रमुख वर्ग बहुभाषी है, वहाँ की बोलियों तथा भाषा के बारे में ठीक से विचार करना होगा।

यदि हम इस समीकरण तथा धारणा को एक तरफ रख दें और यह मान लें कि भाषा एक माध्यम है, जो अनुभव के निरंतर विस्तारित विश्व को मानव ग्रहण के अनुकूल बनाती है, तब बोलियाँ मानक भाषा के लिए इस बोध-प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम होंगी।

इस प्रक्रिया में यह आवश्यक हो जाता है कि नित नए अनुभव, नई संवेदनाएँ तथा प्राचीन यादों को एक साथ लाने की कोशिश की जाए। हालाँकि, इस एकीकरण को प्राप्त करने के लिए बोलियों को अपने अस्तित्व तथा पहचान को दाँव पर लगाना पड़ता है व भाषा को समृद्ध संवेदनशीलता तथा अभिव्यक्ति की क्षमता प्रदान करनी पड़ती है।

बोलियों के बिना भाषा एक अर्थहीन ढेर बन जाती है। ऐसी स्थिति में शब्द बेमानी और बिना किसी व्यक्तित्व के बन जाएँगे। शायद इस तरह की भाषा व्याकरण की शुद्धता के चलते अवधारणात्मक परिपक्वता तो प्राप्त कर सकती है लेकिन इसमें समाहित ध्वनि इतनी क्षय होगी कि वह उपयोगकर्ता को विमुख कर देगी।

भाषा का अपना एक व्यक्तित्व (चेहरा) होना चाहिए। मनुष्य भाषा का बोझ लंबे समय तक केवल तभी झेलेगा जब वह अपनी भाषा से जुड़कर गर्व महसूस करेगा।

सदियों से यूरोपियन भाषाविदों ने भाषाओं की जननी के रूप में किसी मूल भाषा का पता लगाने के अनेक प्रयास किए हैं। इन प्रयासों के पीछे 'टावर ऑफ़ बाबेल' (Tower of Babel) की किंवदंती थी। माना जाता है कि 'टावर ऑफ़ बाबेल' विघटित होने पर असंख्य बोलियाँ अस्तित्व में आई थीं। कालांतर में इन पिछड़ी भाषाओं को मानक भाषा के अपरिपक्व रूप में देखा जाने लगा। वस्तुतः ये बोलियाँ अपने आप में अस्तित्व तथा विकास की निशानियाँ हैं। बोलियाँ, भाषा विविधता तथा पिछड़ी बोलियाँ ही भारतीय भाषाओं के प्रवाह को ऊर्जा प्रदान करती हैं। प्रवाह के ही मिथक के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि तथाकथित मुख्य भाषाएँ इस प्रवाह के किनारे हैं तथा बोलियाँ ही मुख्य प्रवाह हैं। हमें कम-से-कम इतना तो प्रयत्न करना चाहिए कि यह प्रवाह बहता रहे।

सीमांत आवाज़ें

पूर्व-औपनिवेशिक काल में भाषा से संबंधित ज्ञान-मीमांसाओं में 'मानक भाषा' तथा 'बोली' के संबंध में किसी भी प्रकार की उच्च-नीचता (पदानुक्रम) नहीं थी। भाषा विविधता जीवन का एक स्वीकृत तथ्य था। साहित्यकार एक ही कृति में कई भाषाओं का प्रयोग किया करते थे तथा दर्शक अथवा आस्वादक इसे आसानी से स्वीकार किया करते थे। *महाभारत* जैसा महाकाव्य बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक कई भाषाओं तथा संस्करणों में उपलब्ध था। साहित्य समीक्षक जब इस संबंध में विचार करते हैं तब वे कई भाषाओं के साहित्य को सम्मिलित करते हैं। मध्यकालीन मुनि मतंग का शैली सिद्धांत बृहद-देशी इस बात का एक सटीक प्रमाण है कि भाषाई विविधता का सिद्धांत सामान्य है। औपनिवेशिक काल में भारत की कई भाषाओं को मुद्रित स्वरूप मिला। इससे पूर्व भी लेखन कला अस्तित्व में थी तथा कई लिपियाँ लेखन के लिए उपयोग में लाई जाती थीं। कागज भी लिखित सामग्री के पुनर्मुद्रण के साधन के रूप में उपयोग में लिया जाता था। इसके बावजूद भी सामग्री मुख्यतः मौखिक रूप में ही प्रचलन में थी। मुद्रण की तकनीक ने मौखिक परंपरा को क्षीण कर दिया। मौखिक सामग्री के मुकाबले लिखित सामग्री को अधिक महत्त्व देने जैसे नए साहित्यिक मानदंड तय किए गए। साहित्य के लिए उसका एक भाषा में होना अनिवार्य माना गया। इन विचारों तथा औपनिवेशिक सत्ता के चलते भारत में भाषाओं की निधि प्रभावित होती गई। उस भाषा को निम्न कोटि का माना जाने लगा जो मुद्रित स्वरूप में उपलब्ध नहीं थी।

स्वतंत्रता के पश्चात्, भाषाओं के आधार पर भारतीय राज्यों का गठन किया गया तथा उन्हें भाषाई राज्य की पहचान दी गई। जिस भाषा की अपनी लिपि थी तथा जिसका अपना मुद्रित साहित्य था, उसे भारत के संघीय ढाँचे में अलग क्षेत्रीय राज्य की पहचान दी गई। समृद्ध मौखिक परंपरा होने के बावजूद भी उन भाषाओं के राज्य नहीं बनाए गए जिन भाषाओं का अपना मुद्रित साहित्य नहीं था। इतना ही नहीं, इन राज्यों की अधिकृत भाषा को ही प्राथमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्कूली शिक्षा का माध्यम बनाया गया। साथ ही भारतीय संविधान के दायरे में भाषा की एक विशेष अनुसूची (आठवीं अनुसूची) तैयार की गई। इस अनुसूची में प्रारंभ में चौदह भाषाओं को सम्मिलित किया गया था। आज अनुसूची में बाईस भाषाएँ सम्मिलित हैं। इन भाषाओं के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा से संबंधित सभी व्यय करने के लिए सरकार बाध्य है। सन् 1961 में की गई

जनगणना के अनुसार, भारत में 1652 मातृभाषाएँ मौजूद थीं। अगली जनगणना (1971) में यह संख्या घटकर 108 रह गई। इस जनगणना में सिर्फ़ उन्हीं मातृभाषाओं को आधिकारिक तौर पर स्वीकार किया गया था जिन्हें 10,000 या उससे अधिक लोग बोलते थे। इस प्रकार लगभग 1500 मातृभाषाओं को खामोश कर दिया गया था। इनमें से अधिकांश भाषाएँ लुप्त नहीं भी हुई हैं तो लुप्त होने के कगार पर हैं। हाशिए पर धकेली गई भाषाओं में अधिकांश भाषाएँ वे हैं, जो खानाबदोश अथवा यायावर समूह बोलते हैं। इन भाषाओं को सुनियोजित पद्धति से खामोश किया जा रहा है। 'भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण' भारत के लोगों द्वारा किया जा रहा एक सामूहिक प्रयास है जिसमें सभी अपनी 'भाषा' को दर्ज कर सकते हैं। इस प्रयास को ग्रिअर्सन के सर्वेक्षण को दोहराने अथवा विस्थापित करने के प्रयत्न के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उन सर्वेक्षणों की उपलब्धियों के मापदंड काफी अलग थे। भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण एक अनौपचारिक प्रयत्न है, जिससे दुनिया के सामने भारत की अभूतपूर्व भाषा विविधता को लाया जा सके, दुनिया के बाकी हिस्सों में इसका विस्तार हो सके तथा भारतीय लोकतंत्र को अक्षुण्ण रखा जा सके जिसे काफी लंबे तथा कड़े संघर्ष के बाद प्राप्त किया गया है।

यह सुनिश्चित करना काफी कठिन है कि कौन-सी भाषा 'खामोश' होने के कगार पर है, कौन-सी भाषाएँ उस ओर बढ़ रही हैं अथवा कौन-सी भाषाएँ भाषा-स्थानांतरण की प्राकृतिक प्रक्रिया के चलते लुप्त हो रही हैं। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि भाषाओं के संबंध में हमारे पास उपलब्ध जानकारी (डाटा) पर्याप्त नहीं है।

सर जॉर्ज ग्रिअर्सन के भारत में किए गए भाषा-सर्वेक्षण (1903-1923), जिसकी सामग्री उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में संगृहीत की गई थी, इसके अनुसार 179 भाषाओं तथा 544 बोलियों को मान्यता दी गई थी। 1921 की जनगणना में यह संख्या क्रमशः 188 व 49 दिखाई गई थी।

1971 की जनगणना में संकलित सामग्री को दो भागों में बाँटा गया था। जिसमें एक ओर उन भाषाओं को सम्मिलित किया गया था, जो पहले से ही संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित थीं तथा जिन्हें बोलने वालों की संख्या 10,000 या उससे अधिक थी। दूसरी ओर उन सभी भाषाओं को 'अन्य भाषाओं' की श्रेणी में डाल दिया गया था, जिन्हें बोलने वालों की संख्या 10,000 या उससे कम थी।

जिस देश में यायावरों की संख्या काफी अधिक हो तथा जनगणना की सार्थकता, साक्षरता के स्तर के कारण प्रभावित होती हो, वहाँ इस प्रकार के आँकड़े प्राप्त होना आश्चर्य की बात नहीं है। हालाँकि यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं है कि लगभग 310 भाषाएँ, जिनमें से 263 भाषाओं के बारे में दावा किया जाता है कि उन्हें बोलने वालों की संख्या पाँच से भी कम है, तथा सैंतालीस ऐसी भाषाएँ जिन्हें बोलने वालों की संख्या एक हज़ार से भी कम है, विलुप्त होने के कगार पर हैं। 1961 की जनगणना की कार्य-प्रणाली की विश्वसनीयता पर बहस हो सकती है परंतु उसमें सूचीबद्ध 1652 मातृभाषाओं में ये 310 भाषाएँ सम्मिलित हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो पिछली आधी शताब्दी में भारत की भाषाई विरासत का पाँचवाँ हिस्सा विलुप्त होने के कगार पर है। इसके अतिरिक्त पिछली तीन जनगणनाओं के लिए अपनाई गई प्रणाली के कारण भी कई ऐसी भाषाएँ होंगी, जो विलुप्त होने के कगार पर हों, लेकिन दर्ज नहीं की जा सकी हों।

एक आशंका यह भी है कि ये हालात महज किसी एक देश में नहीं हो सकते हैं, बल्कि यह स्थिति पूरी दुनिया में हो सकती है क्योंकि किसी देश में भाषा अवमूल्यन के ज़िम्मेदार कारण किसी अन्य देश में आधुनिकता के संदर्भ के रूप में मौजूद हो सकते हैं।

भारत में इस प्रकार का नुकसान मात्र 'छोटी' या 'अवर्गीकृत बोलियों' का ही नहीं है बल्कि उन बड़ी एवं प्रमुख भाषाओं का भी है, जो लंबे समय से साहित्यिक परंपराओं, सृजनशील तथा दार्शनिक लेखन की समृद्ध विरासत से जुड़ी रहीं। वे भाषिक समाज जो मराठी, गुजराती, कन्नड़ तथा ओडिया को अपनी मातृभाषा कहते हैं, उनकी युवा पीढ़ी इन भाषाओं को भले ही मातृभाषा के रूप में बोलना सीख चुकी हो, परंतु उनमें से अधिकांश अपनी मातृभाषा की लिखित विरासत के बारे में या तो बहुत कम

जानते हैं अथवा वे उससे बिलकुल ही अनभिज्ञ हैं। इस स्थिति को आंशिक भाषा ग्रहण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें एक पूर्ण साक्षर व्यक्ति अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा को पढ़-लिख अथवा बोलकर उच्च शिक्षित तो हो सकता है परंतु जिसे वह अपनी मातृभाषा कहता है उसमें सिर्फ बोल सकता है, लिख नहीं सकता।

भाषा क्षति, भाषाई विवर्त (परिवर्तन) और भाषाई विरासत में गिरावट के लिए केवल व्यवस्था विषयक कारणों को ही अकेले दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। उदाहरण के लिए, संविधान के प्रावधान के अनुच्छेद 347 को ही लें जो कहता है–

> 'इस विषय में माँग किए जाने पर, यदि राष्ट्रपति संतुष्ट हो जाए कि, किसी राज्य के जनसमुदाय का पर्याप्त अनुपात चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली कोई भाषा राज्य द्वारा अभिज्ञात की जाए, तो वह निर्देश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र अथवा उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जैसा कि वह उल्लिखित करें, राजकीय अभिज्ञा दी जाए।'

इस विषय में एक अन्य कारण काम कर रहा है, वह यह कि विश्व में विकास की चर्चा जोर-शोर से हो रही है। भारत तथा अन्य एशियाई एवं अफ्रीकी देशों के माता-पिताओं में अपने बच्चों को अंग्रेज़ी, फ्रेंच या स्पेनिश माध्यम में पढ़ाने की एक तीव्र इच्छा देखने को मिलती है। वे यह सोचते हैं कि ये भाषाएँ उनके बच्चों को वैश्विक बाज़ार में रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराएँगी। अंतर्राष्ट्रीय भाषा में पढ़ाने की इस होड़ के चलते स्कूली शिक्षा प्रणाली भी प्रभावित हुई है।

उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन के दौरान एक दिलचस्प बहस छिड़ी। बंगाली बुद्धिजीवी अंग्रेज़ी माध्यम में स्कूली शिक्षा की वकालत कर रहे थे तो माउंट स्टुअर्ट एल्फिंस्टन का विचार था कि स्कूलों में भारतीय भाषाओं में शिक्षा की आवश्यकता है। यह विवाद तब समाप्त हुआ जब 1835 में लॉर्ड मेकॉले के मिनिट्स ऑन एज्युकेशन के अंतर्गत यह तय किया गया कि भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी होगा। यह बताना उल्लेखनीय होगा कि इसके बाद भारतीय भाषाओं में महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय रचनात्मकता दिखाई दी। यहाँ इन सारे तर्कों को प्रस्तुत करने का आशय इतना ही है कि मातृभाषा में शिक्षा ही सबसे उपयुक्त है। मेरा यह भी मानना है कि मातृभाषा में शिक्षा से वंचित किए जाने से मानवीय रचनात्मकता तो प्रभावित होगी ही, साथ ही समूचे समुदाय के अस्तित्व को भी गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। जब समाज में यह मान्यता दृढ़ हो जाती है कि सिर्फ़ किसी विशिष्ट भाषा में शिक्षा लेने से उनका अस्तित्व बच सकता है, तब वह समाज उस नई भाषा को अपना लेता है। इसलिए यह मानना उचित होगा कि समकालीन दुनिया के विकास की इस व्याख्या में वैश्विक भाषाई विरासत विलुप्त होगी अथवा बर्बाद हो जाएगी। इस स्थिति में हमारी भाषाओं का भविष्य भयावह लगता है। जो समुदाय पहले से ही अपने स्थानीय या राष्ट्रीय संदर्भ में हाशिए पर हैं तथा वे जो अपने ही सांस्कृतिक संदर्भों में अल्पमत हैं, वे अपनी बात कहने की क्षमता खो चुके हैं।

भारत में सामान्य शिक्षा प्रदान करना माता-पिता का दायित्व है और बच्चों का अधिकार भी। सरकार द्वारा उपलब्ध शिक्षा लगभग निःशुल्क है और निश्चित रूप से सबसे वंचित तबका भी इससे लाभान्वित हो सकता है। इसके अलावा बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन का भी प्रावधान है ताकि भोजन के अभाव में बच्चे स्कूल से दूर न रहें। केंद्र तथा राज्य सरकारें स्कूली शिक्षा को अपनी प्राथमिक ज़िम्मेदारियों में से एक मानती हैं। बाल श्रम को आधिकारिक तौर पर अवैध घोषित किया जा चुका है तथा कई राज्यों में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा भी निःशुल्क उपलब्ध है। अनुसूचित जाति और जन-जातियों के साथ-साथ अन्य पिछड़ी जातियों के बच्चों के लिए शैक्षणिक संस्थाओं में आरक्षण का प्रावधान है। भारत में लगभग पचास भारतीय भाषाओं तथा कई विदेशी भाषाओं में प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध है। प्रौढ़ शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा को लगातार प्रोत्साहित किया जा रहा है। शैक्षणिक कार्यक्रमों में सूचीबद्ध भाषाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संवैधानिक प्रावधान भी किए गए हैं।

इन सभी प्रयासों के बावजूद हाशिए पर जा चुकी कई भाषाओं तथा कुछ प्रमुख भाषाओं में अपनी उन्नति के प्रति उदासीनता दिखाई देती है। बच्चों की बड़ी तादाद अत्यधिक फीस देकर अंग्रेज़ी माध्यम के स्कूलों में पढ़ रही है। जब कोई बच्चा किसी भारतीय भाषा माध्यम के स्कूल में प्रवेश लेता है तो उसे एक सामाजिक पिछड़ेपन के रूप में देखा जाता है। इन परिस्थितियों में भाषाओं के संरक्षण का काम, विशेष रूप से ऐसी भाषाएँ जिनके संरक्षण की नितांत आवश्यकता है, काफी चुनौतीपूर्ण है। यह काम महज व्यवस्था संबंधी परिवर्तनों से संभव नहीं होगा।

भाषाओं के संरक्षण के कार्य को स्मारकों के संरक्षण कार्य से अलग रूप में देखा जाना चाहिए। भाषा हमारी सामाजिक व्यवस्था है एवं उस पर अन्य सभी सामाजिक विकासों का प्रभाव पड़ता है। सामाजिक व्यवस्था के रूप में भाषा का, इस संदर्भ में एक उद्देश्यपरक अस्तित्व है कि भाषाओं के शब्दकोश और व्याकरण तैयार किए जा सकते हैं, भाषाओं का लिप्यांतरण किया जा सकता है, उनकी वर्तनी बनाई जा सकती है उनकी प्रतिलिपि तैयार की जा सकती है और उन्हें दस्तावेज़ों के रूप में रिकॉर्ड किया जा सकता है। लेकिन निश्चित रूप से मानवीय चेतना से मुक्त भाषा का अपना अस्तित्व नहीं होता। इसीलिए किसी भी भाषा को उस समुदाय से अलग करके नहीं देखा जा सकता, जो इसका उपयोग करता है। अतएव यह कहना भी तर्कसंगत होगा कि भाषा का संरक्षण उस समुदाय का भी संरक्षण है, जो इसे जीवित रखता है।

समाज की सामुदायिक चेतना तथा भाषा, जिसके द्वारा वह अपनी चेतना को मुखर करता है, के साथ-साथ उस समाज की अपनी विचारधारा होती है। भाषा के संरक्षण में उस समाज की विचारधारा के प्रति सम्मान व्यक्त करना भी समाहित है। यदि कोई समाज यह मानता हो कि पृथ्वी की संपत्ति उसकी अपनी नहीं बल्कि मनुष्य की नियति ही पृथ्वी की देन है, तब विकास के नाम पर पृथ्वी के संसाधनों को लूटने की प्रवृत्ति वाली राजनीतिक विचारधारा से उस समाज की भाषा को बचाने का आह्वान करना व्यर्थ होगा। इस परिस्थिति में समाज के पास सिर्फ दो विकल्प होंगे। या तो वह प्राकृतिक संसाधनों को व्यावसायिक वस्तु मानकर उस आदर्श मान्यता को खारिज करे, जो उसे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का अधिकार देती है। या वह दुनिया को देखने के अपने नज़रिए को छोड़ कर अपनी भाषा प्रणाली से बाहर आ जाए जो उसे वैश्विक नज़रिए से बाँधे रखती है।

वस्तुतः दुनिया में, विशेष रूप से यायावरों, हाशिए पर जा चुके लोगों व अल्पसंख्यक समुदायों जिन्होंने विदेशी सांस्कृतिक वर्चस्व को झेला है अथवा झेल रहे हैं, की भाषा तथा संस्कृति अस्थिर हो चुकी है। इनके लिए आवाज़ उठाने में एक दिन की देरी भी ठीक नहीं होगी। फिर भी इस बात की उम्मीद की जा सकती है कि राजनैतिक दलों पर इसका दायित्व डाल कर एक छोटे प्रयास से भी इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। इस मिशन को राष्ट्रीय या राज्य स्तर की स्वायत्त एजेंसी, समाज के विभिन्न वर्ग, विश्वविद्यालय, भाषा-साहित्य अकादमी, समाज के विभिन्न संगठन, गैर-सरकारी संगठन, विद्वज्जन, अनुसंधानकर्ता तथा कार्यकर्ताओं के माध्यम से सफल बनाया जा सकता है। अवनत होती भाषाओं में लेखन, शब्दकोश, शब्दावलियाँ तथा व्याकरण तैयार करना काफी उपयोगी होगा। लेकिन अगर हम भाषाओं के जीवित रहने की अपेक्षा करते हैं तो बोली समुदायों को गरिमा व सम्मान दिए जाने की आवश्यकता है, जिसके वे हकदार हैं।

किसी समाज को भाषा विकसित करने में सदियों का समय लगता है। मानव समुदाय द्वारा विकसित सभी भाषाएँ हमारी सामूहिक सांस्कृतिक विरासत हैं। अतएव यह हमारी सामूहिक जवाबदेही है कि हम यह सुनिश्चित करें कि वैश्विक हमलों के इस समय में हम इन भाषाओं को खो न दें।

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण का विचार भाषा रिसर्च सेंटर के प्रारंभिक दिनों में आया। सन् 2010 में बड़ौदा में *लैंग्वेज कॉन्फ्लूएन्स एट ग्राउंड जीरो* (Language Confluence At Ground Zero) शीर्षक से भाषा संगम आयोजित किया गया था, उसी समय इस विचार को एक निश्चित दिशा मिली। यह मेरा सौभाग्य था कि 320 भाषा प्रतिनिधियों ने एक स्वर से मुझे इस काम के नेतृत्व की ज़िम्मेदारी सौंपी। पहली कार्यशाला हिमाचल प्रदेश के केलाँग की कड़कड़ाती ठंड में उस समय

आयोजित की गई जब समूचा देश भीषण गर्मी से प्रभावित था। मेरे लिए अब यह बताना संभव नहीं है कि अब तक कितनी कार्यशालाएँ आयोजित की जा चुकी हैं। मुझे यह भी ठीक से याद नहीं है कि शायद ही कोई ऐसा दिन होगा जब मैं सर्वेक्षण के काम से अलिप्त रहा। इस काम के चलते मुझे भारत के सभी राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशों की यात्रा करनी पड़ी। हालाँकि पहले भी मैंने भारत के कई राज्यों तथा कई देशों की यात्राएँ की हैं। परंतु भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण ने मुझे भारत की यथार्थ तस्वीर दिखाई, जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था। लोगों ने अपनी भाषा के बारे में लिखने के मेरे आह्वान को उत्साहपूर्वक स्वीकार किया। इन लेखकों में एक ओर विश्वविद्यालयों के कुलपति हैं तो दूसरी ओर एक सामान्य बस चालक है, विद्वानों के साथ-साथ रास्तों पर भटकते गायक हैं, कानून के रखवाले हैं तो कानून को तोड़ने वाले भी हैं, पुरुष हैं तो महिलाएँ भी हैं, बच्चे तथा बूढ़े भी हैं। इन सब लोगों ने साथ बैठकर मेरी बात ध्यान से सुनी तथा अपनी भाषा के बारे में लिखा। इनमें से अधिकांश लोग यह नहीं जानते थे कि व्याकरण क्या होता है। उन्हें यह भी नहीं पता था कि अंतर्राष्ट्रीय भाषा उच्चारण क्या होता है। उन्होंने कभी पाणिनि, भर्तृहरि, सोस्यूर, सापीर अथवा चॉम्स्की के बारे में नहीं सुना था। अधिकांश को यह पता नहीं था कि जॉर्ज ग्रिअर्सन कौन था। मेरा मानना है कि भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण की यही विशेषता है कि यह भाषाविदों द्वारा किया गया काम नहीं है। यह बात अलग है कि भारत के विशेषज्ञ भाषाविदों ने हमारा इस कार्य में न सिर्फ़ साथ दिया है, बल्कि मार्गदर्शन भी किया है। इस सर्वेक्षण का प्रधान संपादक होने के नाते मुझे विश्वास है कि आप इस सदी के पहले दशक में मौजूद भारतीय भाषाओं के इस ''स्नॅप शॉट'' का आत्मीयता से स्वागत करेंगे तथा अपनेपन की भावना से अपना प्रतिभाव देंगे। मैं उन सभी लोगों के प्रति हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस महान कार्य को पूरा करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। मैं भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण के संपादक मंडल के सदस्यों, सलाहकारों तथा मेरे सहयोगियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनका स्थानाभाव के कारण व्यक्तिगत उल्लेख करना संभव नहीं है।

गणेश देवी
अध्यक्ष
भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण

खंड परिचय

यह संकलन केरल की सामाजिक पारिस्थितिकी में उसकी समृद्ध भाषाई संपदा को खोजने का एक प्रयास है। यह पुस्तक राष्ट्रव्यापी पीएलएसआई मिशन का एक हिस्सा है। यह केरल की भाषाई विविधता को समग्रता में प्रस्तुत करने, केरल की समृद्ध भाषा पूँजी को समझने और सूचीबद्ध करने का एक सार्थक प्रयास है।

केरल राज्य को "ईश्वर का देश" कहा जाता है। यह राज्य भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। यह भारत के कुल क्षेत्रफल के 1.3 प्रतिशत क्षेत्र में बसा हुआ है और 8^0 18’ से 12^0 48’ उत्तरी अक्षांश और 74^0 52’ से 77^0 24’ पूर्वी रेखांश में स्थित है। केरल पूर्व में पश्चिमी घाट और पश्चिम में अरब सागर से घिरा हुआ है। इसकी उत्तरी सीमा कर्नाटक राज्य से लगी हुई है और बाकी सभी सीमाएँ तमिलनाडु की सीमा से लगती हैं। सह्याद्रि (पश्चिम घाट) से नीचे की ओर ढलान वाली उच्च भूमि, पहाड़ों और तराई इलाकों के बीच पाया जाने वाला मध्य भूमि क्षेत्र, और तटवर्ती इलाका यानि समुद्र का तटीय क्षेत्र मिलाकर केरल का भौगोलिक स्वरूप बनता है। यह अतीत में चेर शासन के दौरान, दक्षिण में कन्याकुमारी और उत्तर में गोकर्ण के बीच फैला हुआ विशाल भूखंड था।

केरल कई मायनों में विविधताओं से भरा है और इन्हीं के कारण एक विशिष्ट तरह का राज्य है। केरल के विकास मॉडल को जीवन की गुणवत्ता और मानव विकास सूचकांक के लिहाज से अन्य राज्यों की तुलना में एक मॉडल के तौर पर देखा जाता है। केरल की उच्च साक्षरता दर, स्वास्थ्य, स्वच्छता और परिवार नियोजन के क्षेत्र में जागरूकता और अनुशासन आदि की स्थिति सराहनीय है। शिक्षा के प्रति झुकाव और अन्य संस्कृतियों के प्रति संवेदनशीलता के साथ राज्य ने एक विशेष दर्जा प्राप्त किया है। कला, संस्कृति और साहित्यिक मोर्चे पर भी केरल सबसे आगे है। एक भाषा-केंद्रित राजनीतिक पहचान बनाने से केरल को अलग दिखने में मदद मिली है। संगम विरासत से अलग होकर और पश्चिमी तट की बोली से एक अलग भाषा विकसित करके, यह अतीत की भू-राजनीति में मुखर था। यहाँ नृजातीय संगठन की उप-क्षेत्रीय पहचान और उससे जुड़ी भाषिक विविधताओं पर विशेष ध्यान दिया गया है। समय के साथ यह मौखिक परंपरा वाली पहचान दूसरों के संपर्क से समृद्ध हुई और केरल को संस्कृति और आस्वाद्य से समृद्ध भूमि बना दिया। इस क्षेत्र की सामाजिक-स्वानिकी (Socio-phonetics) ने न केवल जातीय विविधता को संरक्षित किया, बल्कि बुनियादी छाप भी छोड़ी।

प्राकृत और संस्कृत ग्रंथों को साथ लाने वाले आर्यों द्वारा आरंभिक स्थानीय साहित्यिक पाठों (text) को बढ़ावा दिया गया था। अभिजात वर्ग के बीच मंच-केंद्रित आर्यीकरण बहुत लोकप्रिय था। उस समय के सार्वजनिक क्षेत्र ने अभिजात वर्ग को साहित्यिक ग्रंथों की इंडो-आर्यन पद्धति का स्थानीयकरण करने के लिए मजबूर किया। इस प्रक्रिया के तौर पर मणिप्रवाळम् का उद्‌भव और उसके आधार में प्राकृत के अंश को देखा जा सकता है या इसके संकेत मिलते हैं। अगले चरण के रूप में "मलयालम के जनक" तुंचत्तु एषुत्तच्छन के नेतृत्व में यह स्थानीयकरण के माध्यम से और आगे बढ़ा। मलयालम भाषा की यह पितृसत्तात्मक उत्पत्ति दिलचस्प है क्योंकि भाषा आम तौर पर वाणीश्वरी (female deity) से जुड़ी होती है। यहाँ तक कि पड़ोसी तमिल (भाषा), तमिल ताई (Mother Tamil) की छवि पेश करती है। लेकिन मलयालम ने विशिष्ट रूप से एक पैतृक संबद्धता विकसित की है। स्थानीयकरण की यह प्रक्रिया राजनीतिक दाँव-पेंच की संस्कृति के साथ शुरू हुई, जो संस्कृत के मूल से उधार लेकर उन्हें मलयालम प्रत्ययों के साथ जोड़ने की विशेषता रखती है। मतभेदों का समाधान स्थानीयकरण की आत्मा बन गया जिसने बदले में स्थानीय पहचान को परिभाषित किया।

संस्कृतनिष्ठ स्थानीय अभिजात वर्ग के उद्‌भव ने मुद्रण के माध्यम से आधुनिकता के प्रसार तक लेखन में संस्कृत के प्रभुत्व को बनाए रखने में मदद की। मिशनरी स्कूलों ने इस बदलाव से प्रेरणा लेते हुए इसे साकार किया। साक्षरता और शिक्षा की पहुँच ने भाषाई एकता की भावना पैदा की। बाद में राज्य के गठन के बाद भाषा के मानकीकरण के माध्यम से अंततः भाषाई एकता का एहसास हुआ। भाषा विविध अस्मिताओं और पहचानों को महत्त्व देती है और मलयालम की बोलियों के रूप में चिह्नित सामाजिक-स्वनिमिक विविधताएँ इसकी अंतर्निहित बहुलता के उत्सव के अलावा और कुछ नहीं हैं।

मलयालम भाषा पर विदेशी भाषाओं का प्रभाव बहुत अधिक है। मलयालम शब्दावली में पालि, प्राकृत, संस्कृत, अरबी, उर्दू, फ़ारसी, सिरिएक और हिंदुस्तानी जैसी प्राच्य भाषाओं का अपना स्थान और हिस्सा है। संस्कृत से इसका घनिष्ठ संबंध इसके व्याकरण में भी स्पष्ट दिखाई पड़ता है। अंग्रेज़ी के साथ भी इसका संबंध बना हुआ है और अंग्रेज़ी सभी क्षेत्रों में मलयालम को गहराई से प्रभावित करती है। इसमें चीनी और सिरिएक भाषा के भी कई आगत शब्द मिलते हैं। वर्तमान मलयालम भाषा की संवेदनशीलता और विशेषता यह है कि किसी एक वाक्य को मलयालम कहा जा सकता है, भले ही उसमें निहित शब्दावली की 'विदेशीयता' कुछ भी हो। भाषा की यह सर्वदेशीय संवेदनशीलता निरंतर और परिपक्व प्रवास संस्कृति का परिणाम है, जिसने कई भाषाई अंतःक्रियाओं को स्वतंत्र रूप से समायोजित किया है। इस तरह की भाषाई आधुनिकता ने मलयालम भाषी समुदाय को महत्त्वपूर्ण अंतर-भाषाई संवेदनशीलता हासिल करने में मदद की है।

भारत में कोई और राज्य ऐसा नहीं है जहाँ उसकी अपनी राजनीतिक सीमाओं के भीतर 96.7 प्रतिशत (2001 की जनगणना) मातृभाषा बोली जाती हो। जबकि कई राज्यों में भाषाई अल्पसंख्यक एक जटिल मुद्दा है, केरल के किसी भी ज़िले में किसी अन्य भाषा का वर्चस्व नहीं है। वर्तमान में केरल में बोली जाने वाली भाषाओं को मोटे तौर पर इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है– 1. जनजातीय लोगों की भाषाएँ जो कई हज़ार वर्ष पहले इस क्षेत्र के शुरुआती प्रवासी थे। 2. अन्य क्षेत्रों से प्रवासित इंडो-आर्यन बोलने वालों की भाषाएँ, और 3. अच्छी तरह से स्थापित द्रविड़ भाषा बोलने वालों की भाषाएँ। यहाँ न केवल भाषा समूहों के बीच, बल्कि भाषा परिवारों के बीच भी बहुत भिन्नता है। द्रविड़ आदिवासी भाषाओं की विशेषता यह है कि इन्हें बोलने वालों की आबादी कम है और प्रमुख भाषाओं का अभाव है। हालाँकि, बोलने वाले आम तौर पर द्विभाषी होते हैं और अपने आस-पड़ोस की भाषाएँ बोल सकते हैं या कम-से-कम समझ सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह स्थिति लंबे समय से बनी हुई है। यह साक्ष्य है कि परिस्थितियों के अनुसार अंतः-समूह (इन-ग्रुप) एवं अंतर-समूह (आउट-ग्रुप) संचार में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है।

केरल में ऑस्ट्रो-एशियाई आबादी की उपस्थिति पचास से भी कम है। पच्चीस भाषाओं के प्रतिनिधित्व के बावजूद तिबेतो-बर्मन परिवार की भी छोटी उपस्थिति है, क्योंकि उनके बोलने वाले बहुत कम हैं। यद्यपि इंडो-आर्यन भाषाओं की संख्या द्रविड़ भाषाओं की तुलना में अधिक है, लेकिन संख्या के आधार पर देखें तो वे बहुत कम हैं। इसमें कोंकणी बोलने वालों की संख्या 61,376 है (2001 की जनगणना), जो सबसे अधिक है, फिर भी यह भाषाई अल्पसंख्यकों में से एक है। उसके बाद मराठी और गुजराती बोलने वालों की क्रमशः संख्या 31,694 और 17,741 है। अन्य इंडो-आर्यन भाषाओं का प्रतिनिधित्व और बड़ी संख्या में हिंदी भाषी आबादी को भी देखा जा सकता है। इंडो-आर्यन भाषा परिवार से जुड़ी आदिवासी भाषाओं की उपस्थिति न के बराबर है, सिवाय मराठी (Marati) (मराठी की एक बोली) भाषी जनजातियों के। साथ ही, आवधिक जनगणनाओं (1961, 1971, 1981, 1991, 2001) से पता चलता है कि लंबे समय से केरल में प्रमुख द्रविड़ भाषाओं की मज़बूत उपस्थिति रही है। दो प्रमुख भाषाई अल्पसंख्यक तमिल और कन्नड़ हैं जिन्हें शिक्षा में भाषाई लाभ प्राप्त हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार, तुलु ने कन्नड़ का स्थान ले लिया है। हालाँकि, लिपियों की कमी, राजनीतिक माँगों और कन्नड़ के साथ अंतर्निहित परिचय की पृष्ठभूमि में तुलु और कोंकणी का मुद्दा उलझा हुआ है। एक ओर भाषा के प्रति निष्ठा का अभाव और दूसरी ओर बहुभाषी

व्यवहार इस समस्या को और जटिल बनाता है। भाषा नियोजन का केरल मॉडल तुलु और कोंकणी भाषियों को सुरक्षा प्रदान करने में बहुत प्रभावी नहीं रहा है।

जैसे-जैसे राज्य छोटी भाषाई पहचानों के लिए सम्मिलन (convergence) और भाषा परिवर्तन का स्थान बन जाता है और जैसे-जैसे अंतर्राज्यीय प्रवासी मातृभाषा की पहचान को बनाए रखने में असमर्थ हो जाते हैं, मातृभाषा के महत्त्व और देखभाल के लिए समान अवसर प्रदान करना कठिन हो जाता है और यह चिंता का विषय है। संख्या के आधार पर बड़ी अल्पसंख्यक आबादी अपनी मातृभाषा को बनाए रखती है, बशर्ते कि आदान-प्रदान के अवसर उपलब्ध हों। राज्य की अल्पसंख्यक स्थिति रिपोर्ट से पता चलता है कि प्रमुख अल्पसंख्यक शिक्षा के माध्यमों द्वारा अपनी भाषा को बचाए रखने की जगह बना पाते हैं, लेकिन दूसरों के पास अपनी भाषा को बनाए रखने और बचाने का कोई मौका नहीं होता है। वास्तव में, शैक्षिक व्यवस्था अल्पसंख्यक भाषाओं के बजाय क्षेत्रीय भाषाओं के पक्ष में है और उन्हें प्राथमिकता देती है। वास्तव में, कोई भी राज्य संख्यात्मक रूप से कमज़ोर अल्पसंख्यक भाषाओं को शिक्षा में बढ़ावा नहीं देता है। ऐसी भाषाएँ अंततः प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं के सामने आत्मसमर्पण कर देती हैं, क्योंकि बहुभाषी स्थान अल्पसंख्यक द्विभाषावाद और भाषा के प्रतिस्थापन के माध्यम से क्षेत्र की प्रमुख भाषा को मज़बूत करता है। त्रि-भाषा फॉर्मूला अल्पसंख्यक भाषा बोलने वालों को मौजूदा परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने के अलावा कोई विकल्प नहीं देता है।

केरल में अनुसूचित जनजाति की आबादी कुल जनसंख्या (2001 की जनगणना) का 1.14 प्रतिशत है। यद्यपि राज्य सरकार ने कुल 35 अनुसूचित जनजातियों को मान्यता प्रदान की है और वे मुख्यत: ग्रामीण हैं, इन जनजातियों की संख्या संशय की स्थिति में है, इनकी संख्या 48 से 54 तक है। आधिकारिक वर्गीकरण में इस तरह की विसंगतियाँ पहचान की समस्या पैदा करती हैं और यह असामान्य नहीं है कि कुछ आदिवासी समूह अपनी मूल पहचान खो देते हैं और आधिकारिक रूप से उन्हें एक अलग नाम से पहचाना जाने लगता है। वे असहाय रूप से अपनी नई पहचान और नए नाम से चिपके रहते हैं क्योंकि उन्हें आधिकारिक लाभ और मान्यता तभी मिलती है जब उनके पास नाम होता है, चाहे उनकी जनजातीय स्थिति कुछ भी हो।

केरल में आदिवासी भाषा का लोप अधिक है और सामाजिक-राजनीतिक प्रक्रिया सक्रिय रूप से इसे साकार करने में सफल रही है। आधिकारिक तौर पर केरल में किसी भी आदिवासी भाषा को कोई मान्यता नहीं मिली है। केरल के आदिवासियों में क्षेत्रीय भाषाओं की साक्षरता दर काफ़ी अधिक है। अनुमानित दृष्टिकोण यह है कि केरल के आदिवासी तमिल, कन्नड़, तुलु और मलयालम से संबंधित भाषाएँ या बोलियाँ बोलते हैं। संख्यात्मक रूप से वक्ताओं की कमज़ोर संख्या, कम वितरण, ज़मीन से अलगाव, उच्च स्तर का गैर-आदिवासी संपर्क, राजनीतिक समर्थन की कमी और भाषाई अधिकारों के प्रति जागरूकता, स्कूली शिक्षा में सरकारी तंत्र का मज़बूत हस्तक्षेप, और प्रतिस्पर्धी सामाजिक पारिस्थितिकी कुछ ऐसे कारण हैं जो आदिवासियों को क्षेत्रीय भाषा में प्रतिस्थापित होने के लिए मजबूर करते हैं। इन सभी कारकों के बावजूद, कई जनजातीय समूह ऐसे हैं जो अभी भी घर और समुदाय में आदिवासी भाषा को विशिष्ट रूप से बनाए रखते हैं। भाषा का प्रतिस्थापन (language shift) और इसके खतरे स्थानीय विधान पर निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए, वयनाड़ में काडार भाषा का स्थानापन्न हो गया, और त्रिशूर एवं पालक्काड में काडार भाषा अभी भी कायम है। कुछ जनजातियाँ (जैसे– इरुळा, मुदुगा, पणिया, कोरगा, और काट्टुनायिक्कन, चोलनायका और पतिनायका) अपनी मातृभाषा को अपने स्थानीय और घरेलू क्षेत्र में बनाए रखती हैं। अडिया, अरनाडन, जेनुकुरुंबा, बेट्टक्कुरुमन, तचनादन, मलासर, महामलासर, हिलपुलाया और पलिया निश्चित रूप से खतरे की स्थिति में हैं तथा कुरिच्यन और मण्णान गंभीर रूप से खतरे में हैं और उराळि, मालवेदन, मुळ्ळुक्कुरुमा एवं कानी अत्यधिक गंभीर रूप से खतरे में हैं। द्विभाषावाद और साक्षरता की स्थिति इस बदलाव को अमल में ला रही है। मातृभाषा की निष्ठा को प्रोत्साहित करने के लिए मातृभाषा शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया गया है। सामाजिक पारिस्थितिकी ने आदिवासियों को अपनी बुनियादी

ज़रूरतों हेतु लड़ने के लिए मलयालम का उपयोग करने को मजबूर किया और सामाजिक असुरक्षा ने मलयालम में समझ को बढ़ाने की आवश्यकता को बढ़ावा दिया है।

इन भाषाओं के भाषाई अध्ययन ने प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं को थोपने में और मदद की है। उदाहरण के लिए, केरल की जनजातीय भाषाओं को प्रमुख भाषाओं की बोलियों के रूप में समझा गया है। अरनाडन, उळ्ळाडन, उरळी, कानी, कुरिच्यन, मुळ्ळुक्कुरुमन, मलौल्दा, पणिया, अडिया, मलपंडारम और विश्वन को मनमाने ढंग से मलयालम बोलियों के रूप में माना जाता है; एरवल्लन, करवजी पुलया, पलिया, कुरुम्बपौल्या, मलासर, महामलासर, मण्णन, मुदुगर, मुतुवन और इरुळा को तमिल बोलियों के रूप में पहचाना जाता है। कन्नड़ बोलियों के रूप में कुरुंबा, काट्टुनायिक्कन, पतिनायका, मुळ्ळुक्कुरुमा, कुरुम्बपुलया और ऊराळि कुरुमा हैं। कुड़िया, कोरगा, माविलन, मलकुंडी और तचनादन तुलु बोलियों के रूप में हैं; तथा मलवेडर, काडर और कानी आदि की पहचान मलयालम और तमिल की मिश्रित परंपरा को दर्शाती है। आळर, करिंपालन, कनलाडि, वयनाडन काडर, चिंगत्तान, न्यादि, पतियन, मल्क्करन, मालपणिक्कर, मल्क्कुरवन, मल्यडियर, मल्यकानी, मल्यान, मलयारायण, मलयाळर और वेट्टुवन जैसी भाषाएँ मलयालम में भाषाई रूप से विलीन हो गई हैं। इनमें से केवल मुतुवा, मुदुगा और इरुळा को स्वतंत्र माना जाता है। आदिवासी भाषाओं के हित के लिए कोई सटीक अध्ययन नहीं किया गया है क्योंकि अधिकांश अध्ययन आदिवासी दृष्टिकोण को सामने लाने के बजाय आदिवासियों और उनकी भाषा को मुख्यधारा में शामिल करने पर अधिक ज़ोर देते हैं और अध्ययन भी इसी नज़रिए से किए गए हैं।

केरल के आदिवासी समुदायों के भाषा अधिकारों को कभी भी सामाजिक-भाषाई गति नहीं मिली क्योंकि अधिकांश भाषाओं को मुख्य भाषा की बोलियों के रूप में देखा जाता है। राज्य में शिक्षा क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से प्रदान की जाती है। स्कूल छोड़ने के बावजूद आदिवासियों में साक्षरता की दर काफ़ी अधिक है। आदिवासी बोलियों और उनके जोखिमीकरण की भाषाई परिप्रेक्ष्य की प्रसिद्धि के विपरीत, हमने यहाँ उनकी भाषाओं को सूचीबद्ध करने में जनवादी दृष्टिकोण (People's perspective) अपनाया है। जैसा कि हम मानते हैं भाषा अपने सामाजिक संदर्भ में लोगों की ज़ुबान पर रहती है, हमने बिना किसी विद्वत्तापूर्ण पूर्वाग्रह के, जिस किसी भी समूह ने अपनी आवाज़ उठाई या अपनी भाषा की बात कही, उसे अलग भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है।

केरल में आदिवासी भाषाओं के लुप्त होने के पीछे का कारण यह है कि राज्य ने बहुसंख्यकवाद को ध्यान में रखा और भाषाओं का दमन किया। आदिवासी हितों को दूसरों के अधीन करने के कारण भाषाई विरासत का यह अलगाव कोई महान आदर्श नहीं है। 90 प्रतिशत आदिवासियों द्वारा भाषाओं का प्रतिस्थापन न तो स्वाभाविक है न ही यह सशक्तीकरण को प्रदर्शित करता है। बल्कि यह भाषाई दमन के ज़रिए अलगाव को ही दर्शाता है। निंदा के खतरे से पैदा हुए भय और अविश्वास ने बड़े समाज से अलगाव की गति को तेज़ कर दिया जिससे राज्य में आदिवासी हितों का दमन हो गया। नागरिकता के लिए अधीनता के स्रोत के रूप में एक स्थिति को संभालने में सरकार वास्तव में अपने घोषित लक्ष्यों के विपरीत एक सामाजिक गतिशीलता पैदा करती है, जिसके परिणामस्वरूप अन्य बोलियाँ अलग-थलग पड़ जाती हैं। भाषाई विविधता की रक्षा करने के बजाय, राज्य की नीतियाँ आदिवासियों को उनकी भाषाओं से अलग करती हैं। जैसे ही जनजाति को राज्य के निर्मित स्थानों में शामिल किया जाता है, जनजातीय मूल्य सार्वजनिक लक्ष्यों के साथ टकराव में आ जाते हैं। जैसे-जैसे राज्य जनजाति को अधिक सामूहिक समझ वाले तरीके से जीने के लिए मजबूर करता है, भाषाओं का अलगाव और तेज़ हो जाता है और आदिवासी राष्ट्र-राज्य दर्शन के विमर्श के लिए खुद को त्याग देते हैं कि अपनी भाषा-बोली को खोए बिना कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता है।

कार्यात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण छोटी भाषाएँ इन भाषाओं के अस्तित्व की दुर्दशा का कारण बनती हैं। छोटी मातृभाषाओं की यह बुरी और दयनीय स्थिति एकतरफ़ा विकास और भाषा नीति की वजह से है। तकनीकी बदलाओं के अनेक कारणों ने भी छोटी मातृभाषाओं के निरंतर विकास को प्रभावित किया है। कई उदाहरणों में, विकास और सामाजिक बहिष्कार की हिंसा से भाषाई

संसाधन नष्ट हो गए। आधुनिक समय में, छोटी भाषाओं और क्षेत्रीय/प्रमुख भाषाओं के बीच के संबंध अधिक समस्याग्रस्त हो गए हैं। प्रमुख और छोटी भाषाओं के बीच विषमता भारत में भाषा के खतरे के सामाजिक-भाषाई परिवेश को इंगित करती है। छोटे समुदायों के बीच भाषाओं के पतन को एक लुप्तप्राय घटना के रूप में नहीं माना जा सकता। इसके ज़रिए भारत में चल रही सोशल इंजीनियरिंग के हिस्से के रूप में भाषा के खतरे को देखना बेहद ज़रूरी हो जाता है। अधिकांश जनजातियाँ लुप्त हो रही बोलियों की प्रतीक बन गई हैं और वे "अन्य बोलियों" या भाषाओं में समाहित हो गई हैं। आखिरकार, उनकी भाषाई विरासत को भविष्य की पीढ़ी की स्मृतियों से स्थायी रूप से मिटा दिया गया है। संक्षेप में, उन्हें "अन्य" द्वारा भाषाई रूप से उपनिवेशित किया गया है। छोटी भाषाओं का भाषाई उपनिवेशीकरण जनजातीय मातृभाषाओं की निरंतरता को भंग करता है। भारत में भाषा के खतरे के पहलुओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए भाषाई उपनिवेशीकरण की गतिशीलता को उजागर करने की आवश्यकता है। यह दर्शन विभाजनकारी और परंपरा से अलग था और उन्हें अपनी बोलियों को संकुचित करने के लिए मजबूर करता था। राज्य की भाषाओं को एक सामाजिक-राजनीतिक रूप से बाध्यकारी साधन के रूप में पेश किया गया है।

केरल में बहुभाषावाद के कई ऐतिहासिक और राजनीतिक कारण हैं। भाषाओं का सह-अस्तित्व, आर्थिक प्रवास, उच्च साक्षरता, पुस्तकालय आंदोलन, प्रगतिशील प्रभाव, और संचालन में भाषा नीति छोटी भाषाओं को आत्मसात करने और द्विभाषावाद एवं बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के पक्ष में है। केरल इस बात का गवाह है कि केवल अपनेपन की भावना भाषाई एकरूपता सुनिश्चित नहीं करती है और लोग अभी भी बहुभाषी बने रह सकते हैं।

हर कोई किसी-न-किसी भाषा में पैदा होता है और इस तरह उसे एक भाषाई पहचान मिलती है। मातृभाषा की मुख्य विशेषता यह है कि व्यक्तियों को समुदाय, क्षेत्र या राज्य के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में स्वतंत्र रूप से भाग लेने का अधिकार है। राजभाषा शब्द प्रशासन के दायरे में आने वाले सभी लोगों को शामिल करता है, भले ही वे उस भाषा के स्वाभाविक उपयोगकर्ता हों या न हों। भाषाई राष्ट्रीयता, एक भाषाई राज्य की सदस्यता, राज्य की सीमाओं के भीतर जन्म से प्राप्त होती है। यह माता-पिता से विरासत में मिलती है या आत्मसात करने की प्रक्रिया द्वारा भी इसे प्राप्त किया जा सकता है। भाषाई पहचान जाति/धर्म/क्षेत्र से अलग है और इसने इतिहास और राजनीति दोनों में मुख्य भूमिका निभाई है।

मलयालम पहचान के निर्माण में आर्य उपनिवेशीकरण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। प्राकृत और संस्कृत का गहरा प्रभाव आद्य-तमिल मलयालम पहचान के विचलन का एक प्रमुख कारण है। यदि मणिप्रवाल काल के दौरान कुलीन बोलियों और लिखित भाषाओं के सभी क्षेत्रों में संस्कृत का प्रभुत्व था, तो वर्तमान में अंग्रेज़ी का प्रभुत्व है। मलयालम साहित्य, संस्कृति और भाषा पर विदेशी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है। जैसे-जैसे लोग आपस में आदान-प्रदान करते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, भाषा भी प्रभावित होती है और यह प्रक्रिया आगे और बदलाव लाती है। यह खंड भाषा की पहचान, भाषा से लगाव एवं जुड़ाव और भाषा की स्थिति के विशिष्ट लेकिन गहराई से जुड़े मुद्दों को प्रस्तुत करता है और इन्हें नई आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों में संदर्भित करता है, जो कई अलग-अलग क्षेत्रों में सकारात्मक कदम उठाने और कार्रवाई की माँग करते हैं।

इस तथ्य से बढ़कर कि मलयालम बोलने वालों की संख्या इसे दुनिया की शीर्ष 30 भाषाओं में से एक बनाती है, भाषाई स्थिति और मानचित्रण भी इसकी माँग करता है क्योंकि केरल की 96.7 प्रतिशत आबादी इसे अपनी मातृभाषा (2001 की जनगणना) होने का दावा करती है। ज़िला स्तरीय मानचित्रण राज्य के भीतर अन्य भाषाओं की अल्पसंख्यक स्थिति को दर्शाता है।

केरल की भाषाई विविधता का मानचित्रण स्पष्टतः सांस्कृतिक रूप से जुड़े पड़ोसी स्थानों पर भी एक नज़र डालने की माँग करता है। लक्षद्वीप निकटतम क्षेत्र में है। यह मलयालम के ही एक विस्तारित भाषाई स्थान के तौर पर चिह्नित है। मलयालम की द्वीप विविधता, जिसे द्वीप मलयालम कहा जाता है और महल भाषा, जो मिनिकॉय द्वीप के पुराने इंडो-आर्यन का अवशेष है, भाषा के रूप में लक्षद्वीप द्वीपसमूह के भाषाई मानचित्रण को प्रमाणित करती है।

जनसंख्या और भौगोलिक क्षेत्रफल दोनों ही दृष्टि से लक्षद्वीप भारत का सबसे छोटा संघशासित प्रदेश है। "लक्षद्वीप" (लक्कदीव के नाम से भी जाना जाता है) शब्द का अर्थ है, एक लाख द्वीप। इस द्वीपसमूह में 36 द्वीप हैं, जिनका क्षेत्रफल 32 वर्ग कि.मी. है। इनमें 12 एटोल, तीन रीफ, पाँच जलमग्न तट और दस आवास योग्य द्वीप हैं। इनमें दस आवास योग्य द्वीप, 17 निर्जन द्वीप हैं, जिनसे जुड़े टापू के अलावा चार नए टापू और पाँच जलमग्न टापू हैं। इन सभी दस द्वीपों– कवरत्ती, अगत्ति, अमिनि, कडमत, किल्तान, चेतलात, बित्र, अंद्रोत्त, कल्पेनि और मिनिकॉय में लोग बसे हुए हैं। इस संघशासित प्रदेश का गठन 1956 में हुआ था और 1973 में इसका नाम लक्षद्वीप रखा गया था। प्रशासनिक और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए लक्षद्वीप द्वीपसमूह को दस उप-खंडों वाला एक एकल ज़िला माना जाता है। लक्षद्वीप का प्रारंभिक इतिहास अलिखित है, यद्यपि इसका एक मौखिक परंपरागत इतिहास ज़रूर है। यहाँ कोई आदिम सभ्यता या बसावट होने के प्रमाण नहीं हैं। पुरातात्त्विक साक्ष्य 1500 ई.पू. के आसपास यहाँ मानव बस्ती के अस्तित्व का समर्थन करते हैं। आबादी संस्तर (strata) यह दर्शाता है कि केरल के लोग यहाँ बहुत पहले से ही बसे हुए हैं, और इन द्वीपों का केरल के साथ एक पुराना और गहरा इतिहास है। मिनिकॉय जहाँ लोग महल/महाल बोलते हैं और जो दिवेही (Divehi) लिपि में लिखी जाने वाली मालदीव की भाषा से जुड़ी है, को छोड़कर द्वीप मलयालम ही सभी द्वीपों में बोली जाती है।

लक्षद्वीप में जनसंख्या घनत्व (1895) केरल (819) से दोगुना है। साक्षरता दर परंपरागत रूप से उच्च रही है, और 2001 की जनगणना के अनुसार यह 87.52 प्रतिशत थी। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति सूची (संशोधन आदेश), 1956 के अनुसार लक्षद्वीप में जिनका जन्म हुआ था और जिनके माता-पिता दोनों इन द्वीपों में पैदा हुए थे, उन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में माना जाता है। इस संघशासित प्रदेश में कोई भी अनुसूचित जाति नहीं है।

यह संग्रह अपने पाठकों को केरल और लक्षद्वीप की भाषा पारिस्थितिकी और उसकी सामाजिक व्यवहार (social negotiations) से परिचित कराता है। इसमें संकलित आलेख विविध प्रकार के विषयों से संबंधित हैं। एक भाषा से जुड़े अनेक लेखकों की रचना होने के बावजूद, इसमें कई लेखकों के विभिन्न मतों का समेकित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। हालाँकि, बहुत संभव है कि प्रस्तुत खंड में कुछ जानकारी दोहराई गई हो और यह कई अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हो। ऐसी परिस्थिति में, संपादकों को अपने विचारों को एकरूप बनाने की स्वतंत्रता नहीं थी, हालाँकि हमने लेखकों के दृष्टिकोण में कोई बदलाव किए बिना भाषा के ही कुछ हिस्से में बुनियादी संपादन किया है। हमने अलग-अलग दृष्टिकोणों में सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश नहीं की है। हमें लगता है कि इस बृहत् आख्यान के निर्माण में कई लोगों की भागीदारी में अंतर्निहित बहुमुखी विचारों की झलक है। हम यह दावा नहीं करते हैं कि यह खंड संपूर्ण या अंतिम है। हम आशा करते हैं कि यह भाषा विविधता में रुचि रखने वालों को भाषा की समझ के लिए संवेदनशील बना सकता है, जो हर तरह के पाठकों को इसकी प्रासंगिकता को समझने में मदद कर सकता है।

एम. श्रीनाथन
जोसेफ कोयिप्पल्लि
संपादक

अनुवादकीय

केरल राज्य में कुल 29 भाषाएँ बोली जाती हैं। मूल रूप से अंग्रेज़ी में निर्मित इस ग्रंथ में मुख्यतः मलयालम के साथ तमिल, कन्नड़ और तुलु जैसी अल्पसंख्यक भाषाएँ शामिल की गई थीं। साथ ही, इस खंड में केरल की आदिवासी भाषाओं एवं बोलियों और लक्षद्वीप की भाषाओं को शामिल किया गया था।

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण (People's Linguistic Survey of India) के इस पंद्रहवें खंड में 39 रचनाकारों द्वारा लिखित 64 से ज़्यादा आलेख हैं। मूल ग्रंथ के अनुरूप प्रस्तुत सामग्री को पाँच अध्यायों में यथाक्रम रखा गया है– 1. मलयालम, 2. केरल की लघु भाषाएँ, 3. आदिवासी भाषाएँ, 4. लक्षद्वीप मलयालम और 5. महल। इन अध्यायों के माध्यम से इस खंड का एक समग्र मानचित्रण करने का प्रयास किया गया है। इसे राष्ट्रव्यापी ज्ञान सामग्री के अनमोल खजाने के रूप में देखा जा सकता है।

इस ग्रंथ का हिंदी अनुवाद करते समय ज़्यादातर कैटफोर्ड के अनुवाद के भाषिक सिद्धांत का अनुसरण किया गया है, जिसमें कुछ पाठ्य सामग्री का प्रतिस्थापन किया गया है। लेकिन नाइडा तक आते-आते मूल पाठ की शैली के साथ-साथ अर्थ पक्ष के अनुवाद को अधिक महत्त्व दिया गया। अन्य सिद्धांतकारों पर गौर किए बिना प्रस्तुत अनुवाद के लिए कई विधियाँ अपनाई गई हैं, ताकि भाषिक, व्याकरणिक, अर्थपरक और शिल्पपरक समस्याओं को सुलझाया जा सके। अनुवाद में समतुल्यता या सममूल्यता जैसी दोनों स्थितियों का ध्यान रखा गया है। प्रस्तुत ग्रंथ त्रिकोणीय अनुवाद आयाम को अपनाने से ही बना है जिसमें पहले मलयालम की ज्ञान सामग्री को अंग्रेज़ी में आत्मसात किया गया है और उसके पश्चात् हिंदी भाषा में इसका यथासंभव समीपवर्ती अनुवाद किया गया है।

शैलीगत सममूल्यता लाने में ज़्यादा कठिनाई नहीं हुई है, क्योंकि यह मूल लेखिम रूप का ही प्रतीकांतर है। उसे लिप्यंकन या लिप्यंतरण के द्वारा, चाहे वे एम. श्रीनाथन, बी. गोपीनाथन नायर, एम.जी.एस. नारायणन, टी. विष्णुकुमारन और एल. डार्विन आदि द्वारा प्रयुक्त तमिल, मलयालम और अन्य भाषाई सामग्री हो या संगम काल के प्रकरण हों, उन्हें जैसे का तैसा रखा गया है। कंप्यूटरीकृत शब्दावली और प्रतीकों को 'कट एंड पेस्ट' किया गया है। पहले अध्याय में 1.1 से 1.4 तालिकाएँ हैं, तो दूसरे में 2.1 से 2.19 तक तालिकाएँ हैं। दूसरे अध्याय की एकाध तालिकाएँ जैसे 2.15 में मलयालम शब्दकोश और 2.18 में अंग्रेज़ी से बाइबिल अनुवाद को हिंदीबद्ध करने में यह ध्यान रखा गया है कि वर्तनी की अशुद्धि या उच्चारण संबंधी भ्रम पैदा न हो। इसी उद्देश्य से, उन्हें भी मूल से 'कट एंड पेस्ट' करके यथास्थान पर रखा गया है। आदिवासी भाषा वाले हिस्से में एल. डार्विन और एन. राजेंद्रन द्वारा प्रयुक्त चालीस तालिकाओं को यथाक्रम 4.1 से 4.40 तक उसी क्रम में हिंदीबद्ध किया गया। लक्षद्वीप वाले अध्याय में तालिकाओं की संख्या 6.1 से 6.3 तक ही है।

तालिका की क्रमसूची के अतिरिक्त भी मूल अंग्रेज़ी ग्रंथ में काफ़ी सामग्रियाँ कंप्यूटरीकृत और बिना तालिका के विस्तारित की गई हैं, जिन्हें किसी और ढंग से व्यवस्थित करने की सुगमता नहीं होगी। अतः प्रत्येक तालिका एवं बिना तालिका वाले तथ्यों को उचित सम्मान के साथ आवश्यकतानुसार संध्वनि, स्वनिम, रूपिम, लेखिम के स्तर से लेकर भाषा की वर्ण संबंधी इकाइयों– लिपि, वर्णमाला, शब्द तथा संरचना स्तर पर हिंदी में समतुल्य बनाना काफ़ी सजगता से किया गया है। चूँकि अधिकांश सामग्रियाँ मूल कथ्य की बारीकी और गुणों को सुरक्षित रखती हैं, इसलिए लेखिम रूप में मूल को बिना परिवर्तित किए ज्यों का त्यों रखा गया है।

दूसरे अध्याय के अंत में श्रीनाथन का शब्दावली वाला हिस्सा (अंग्रेज़ी मूल की विषयसूची में आए क्रमभंग को ठीक करके) प्रस्तुत किया गया है, जिसे मलयालम भाषा की शब्दावलियों का संक्षिप्त संग्रह (कोश) माना जा सकता है। बशर्ते कि मूल सामग्री के अनुरूप अर्थ वाले प्रकोष्ठ में अंग्रेज़ी की जगह हिंदी में अनुवाद की अपेक्षा प्रकाशक द्वारा पहले ही की गई थी। यह बात इस पूरे ग्रंथ के अनुवाद में बेहद मददगार साबित हुई कि जहाँ-जहाँ तालिका में या प्रत्येक गैर-तालिका वाले तथ्य में या पाठ के मध्य में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द, पद, या कोष्ठकीय टिप्पणी तथा उद्धरण चिह्नों में दी गई शब्दावलियों को उसी लेखिम व्यवस्था में हिंदीबद्ध किया गया है।

इसके अलावा दूसरे अध्याय में अंतः टिप्पणियों (संदर्भ-सूची) को रोमन लिपि में ही रखा गया है।

लघु भाषाओं, आदिवासी भाषाओं, द्वीप मलयालम और महल से जुड़े हुए अध्यायों में सीधे-तिरछे अक्षरों में मूल सामग्री थी, जिसमें छोटे-बड़े अक्षर भी थे, इसको हिंदी लेखिम व्यवस्था में ढालना पड़ा। पुस्तक में कुछ ऐसे संदर्भ थे जिनके समकक्ष हिंदी शब्द या पद ढूँढ़ना कठिन था, ऐसी स्थिति में उन्हें मूल रोमन लिपि से नागरी लिपि में ही बदल दिया गया।

माना जाता है कि आधुनिक मलयालम 56 मूल अक्षरों और उनके संयोजनों की एक वर्णमाला है। यह आंशिक रूप से वर्णमाला और आंशिक रूप से शब्दांश-आधारित लेखन प्रणाली है। उच्चारण के आधार पर हिंदी में 45 अक्षर हैं, परंतु लिखने के अनुसार ये 52 हैं। इनमें 13 स्वर, 35 व्यंजन, चार संयुक्त व्यंजन (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) और दो द्विगुणी व्यंजन अर्थात् उत्क्षिप्त व्यंजन (जैसे : ड़, ढ़) हैं।

द्रविड़ भाषा होने के कारण मलयालम के कुछ स्वर और व्यंजन ध्वनियों के हिंदी भाषा में कुछ स्तरों पर लिप्यंतरण, लिप्यंकन एवं रूपांतरण में कई कठिनाइयाँ आती हैं। जैसे मलयालम-हिंदी अग्र केंद्र स्वरों में दीर्घ /आ/ और /ई/ समान रूप से प्रयुक्त होते हैं, लेकिन मलयालम में आगे के लघु (ह्रस्व) स्वर का व्यतिरेक हिंदी लघु स्वर /इ/ में है। वह अति लघु व केंद्र स्वर है। पीछे का लघु स्वर /ओ/ केवल मलयालम में है। हिंदी में केवल दीर्घ /ए/ और /ओ/ हैं, जिनके ह्रस्व उच्चारण और लेखन प्रतीक में शिरोरेखा के बाद उद्धरण चिह्न लगाया गया है, जैसे /ए'/ /ओ'/। लेकिन पूरी पुस्तक में ऐसा प्रतीकांकन कठिन रहा है, इसलिए उसे पाठकों के उच्चारण और समझ पर छोड़ दिया गया है।

सामान्य बोलचाल की मलयालम में अंतिम पद का उच्चारण विशेषतः घोष होता है, जो अधिकतर, अपवाद लघु /ओ/, या "शुद्ध" व्यंजन के रूप में माने जाने वाले स्वनिम (चिल्लुकल) /ण्/, /न्/, /ल्/, /ळ्/, और /र्/, के अलावा यह उन स्वरों में एक होता है। बोलचाल की मलयालम भाषा में "म" और "न" के अतिरिक्त शब्दांत में किसी अन्य व्यंजन का प्रयोग नहीं किया जाता है। हिंदी स्वरों से व्यतिरिक्त मलयालम स्वरों में लघु /ए/ और लघु /ओ/ को लिप्यंकन में उच्चारण को ध्यान में रखकर अतिरिक्त चिह्न –'– के सहारे लिखा गया है। जैसे लघु –ए'– स्वर में स्वनलुप्तता/खासियत है, जैसे– *कात्* (कान) + *कुत्तल* (छेदन) – *कातुकुतु* (कनछेदन)। हिंदी में लाने के लिए अगर इसे "क्" - (हलंतयुक्त व्यंजन -क) बनाए तो भी यौगिक रूप में पूर्ण समास (कान + छेदन – कनछेदन) में प्रथम अक्षर का दीर्घ स्वर लुप्त होता है। वैसे ही *अम्मा* (माता), *अंबा* (माता) या *कुट्टी* (बच्चा) शब्द हैं, जिनमें हिंदी उच्चारण अनुरूपता बनाने के लिए अंतिम व्यंजन को आक्षरिक और दीर्घ बनाना लक्ष्य भाषा की ग्रहणीयता व सुबोधता के लिए किया गया काम है। वरना हिंदी पाठक उसे बिना स्वरयुक्त -*अम्म/अंब, कुट्टि* जैसे उच्चारण करके गलत अर्थ लगा सकते हैं।

हिंदी और मलयालम के समान शब्दों या रूपों से विशेषकर तत्समों के प्रयोग से सुविधा बढ़ी है। लेकिन मूल मलयालम संज्ञाएँ जैसे– *आन* (हाथी), *आम* (कछुआ) आदि का हिंदी लेखिम प्रतीक यथाक्रम *आना, आमा* जैसे बनाया गया है। हिंदी लिप्यंतरण में मलयालम उच्चारण पर मात्र बल देना सही नहीं है यह कठिन है, जैसे– बल (*बेलम*), रक्त (*रेक्तम*), जयम (*जेयम*) में कोष्ठक में दिए गए शब्दों के प्रथमाक्षर में, /अ/ की जगह /ए/ उच्चारण सहज है। बोलियों और आदिवासी भाषाओं में विशेषकर मुखसुख से व्यतिरेकी स्वनिम उत्पन्न होते हैं।

अवन्, अवळ्, अवर् जैसी सार्वनामिक प्रयुक्तियों तथा व्यक्तिवाचक संज्ञाओं, विशेषणों में मलयालम में चिल्लक्षर /ण्/, /न्/, /ल्/, /ळ्/, और /र्/, प्रयुक्त होते हैं, लेकिन इनकी हिंदी अनुरूपता लाने के लिए हलंत जोड़ने से भ्रम पैदा होगा कि इन्हें हिंदी (मात्रिक) प्रकृति में, शब्दांत में स्वरहीन व्यंजन मानकर उच्चरित किया जाता है। आद्यंत ऐसे ढेरों शब्दों को या तो लिप्यंतरित या लिप्यंकित कर प्रयोग किया गया है।

लेखन और उच्चारण दोनों को ध्यान में रखकर मलयालम की कुछ विशेष ध्वनियों को हिंदी में प्रतिस्थापित किया गया है। जैसे, ट/ एक लघु वर्त्स्य स्फोट ध्वनि है जिसका सूचक /टः/ के रूप में, समवर्गस्पर्श अनुनासिक /नः/ संबंधिका विभक्तियुक्त होकर /न/ बन जाता है। जैसे */अवन्टे/* "उसका/के/की"।

मलयालम उच्चारण प्रकृति में सभी महाप्राणों का उच्चारण अघोष रूप में है। लेकिन उसके सूचक सघोष भेदों में प्रयुक्त होते हैं, मानक मलयालम लेखन में संस्कृत के कुछ उधार शब्दों का, जिनके लिप्यंकन में "शुद्ध" उच्चारण होता है, हिंदी उच्चारण की प्रकृति में उनके अनुनासिक वर्ण को तोड़ना पड़ता है। अतः अनुकूलन में ऐसी सतर्कता बरती गई है। जैसे, */मुखम्/* "मुख", */पाठम/* "पाठ", */फलम/* "फल", */मेघम्/* "मेघ", */मूढ़न/* "मूढ़" और */भयम/* "भय"। /फ/ दंत्योष्ठ्य संघर्षी है, जो एक मार्जिनल स्वनिम है, और संस्कृतेतर अंग्रेज़ी, अरबी और उर्दू के सामान्य उधार शब्द के रूप में प्रयुक्त है। इसे भी ध्वन्यनुकूलन माना जा सकता है। उधार शब्दों के लिए प्रबोधचंद्रन नायर का यह कथन, "सभी संघर्षी अघोष हैं, जो मात्र उधार शब्दों के लिए हों तथा गैर-देशीय पद्धति में नवीनतम प्रयोग के खातिर हों", साक्ष्य है। उनके द्वारा अंतस्थ व्यंजनों की प्रयुक्ति में भी मलयालम की विशेष ध्वनियों का उल्लेख किया गया है– "मलयालम में प्रवाही सामान्य रूप से संघर्षी नहीं होते। कुछ शब्दारंभ में /व/ या /य/ प्रतिबंधित हैं। /ष़/ एकल संघर्षरहित, घोष मूर्धन्य स्वनिम है, जिसका अधिकतर प्रयोग */मष़ा/* "बारिश", */पुष़ा/* "नदी", */पष़म/* "फल", */वष़ि/* "रास्ता", */वष़क्कु/* "झगड़ा", */किष़क्कु/* "पूर्व दिशा", */वाष़ा/* "केले का पौधा" शब्द में विशेषकर अंतस्थ हैं।" हिंदी पाठकों के लिए इस विशेष स्वनिम /ष़/ का उच्चारण मुश्किल है, फिर भी मूल के प्रतिस्थापन हेतु उन्हें ही हिंदीबद्ध किया गया है। प्रस्तुत ग्रंथ में प्रयुक्त लिपियों की टिप्पणी में तत्संबंधी अंतर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला और लिपियों की प्रणाली दिखाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक पारिभाषिक कोड आदि का सहारा लिया गया है। पाठक इससे अवगत हो जाएँ तो ग्रंथ में आए मलयालम शब्दों की उच्चारण संबंधी अनेक कठिनाइयों को सुलझाया जा सकता है।

तालव्य और तालव्येतर अग्र उत्क्षिप्त वर्णों जैसे /र/ और /रः/ के उच्चारण में अंतर है। */कराः/* "दाग", */कुरा/* "भौंकना" X */कुरः/* "कमी", */मारि/* "वर्षा" X */मारिः/* "बदल गया", */वरा/* "लकीर" या "खींचना" X */वराः/* "भूनना", */कूरा/* "छत" X */कूराः/* "कपड़ा" या "तिलचट्टा", आदि का भी व्यतिरेक (अंतर) सुधी हिंदी पाठकों को समझ में आना चाहिए। ये शब्द लिप्यंकन के सहारे समझाने में कठिन हैं, लेकिन हर शब्दांत में दीर्घ स्वर /आ/ का चिह्न जोड़ा गया है। मलयाली पाठक इनका अर्धस्वरांत उच्चारण ही करेगा। हिंदी और मलयालम के व्यतिरेकी उच्चारण में यह स्पष्ट परिलक्षित है।

शब्दारंभ की प्रयुक्तियों में -/र/ जैसे, */रूपम/* (रूप), स्वरांतर व्यंजनों में जैसे, */पकरुन्नु/* (फैलता है, वर्तमान) को */पकर्ःन्नु/* (फैला, भूत), */निवरुन्नुः/* (खुलता/खड़ा होता, वर्तमान) को */निवरःन्नु/* (खुला/खड़ा, भूत), */पुलरुन्नु/* (प्रभात होता, वर्तमान) को */पुलर्ःन्नु/* (प्रभात हुआ, भूत) तथा /रः/- की संध्वनियों को जैसे, */पुलरःकालम/* (प्रभात काल), */पलरः/* (कई), */अवरः/* (वे- दूरस्थ), */इवरः/* (ये- निकटस्थ) जैसे शब्दों में पाया जाता है।

/वला/ "जाल" X */वळा/* "चूड़ी", */कला/* "कला" X */कळा/* "खरपतवार", */कुलम/* "नस्ल" X */कुळम/* "छोटा तालाब", */कुत्ति/* "चाकू मारा" X */कुट्टिः/* "खूंडा", और */कुट्टिः/* "बच्चा" में व्यतिरेक (अंतर) स्पष्ट हैं। ये अग्र, दंत्य और मूर्धन्य स्फोट स्वनिमों में सामान्य रूप से दिखाई देते हैं, जो मलयालम की विशेषता है।

ग्रंथ के अनुवाद के दौरान वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर, के.एम. अनिल, एस. कुंजम्मा, एल. डार्विन, पी. तिलकन, टी.वी. वेणुगोपाल पणिक्कर, और लक्षद्वीप-किल्तान द्वीप के एम. मुल्लक्कोय आदि के सुझाव समय-समय पर प्राप्त हुए। अतः मैं इन सबका आभारी हूँ। एल. डार्विन, टी.वी. वेणुगोपाल पणिक्कर जैसे विद्वान लेखकों की दृष्टि में रह गई त्रुटियों को सुधारने की स्वतंत्रता अनुवादक को मिली है।

प्रस्तुत अनुवाद कार्य में दोनों खंड संपादकों एम. श्रीनाथन और जोसेफ कोयिप्पल्लि के सहयोग से सुगमता बढ़ी। जोसेफ कोयिप्पल्लि समय-समय पर आवश्यक सुझाव देते रहे। अनुवाद को व्यवस्थित ढंग से पूरा करने के लिए वे मुझसे भी अधिक उत्सुक थे।

मुख्य संपादक गणेश देवी के मार्गदर्शन के बिना मैं आगे ही नहीं बढ़ सकता था। उनके प्रत्येक "वाक्य" को चाहे लिखित हो या मोबाइल पर, मैं शिरोधार्य कर चुका हूँ। आदिवासी भाषा और द्वीप भाषा प्रकरणों को और सुबोध बनाने के लिए जोड़े गए प्रकरणों के समर्थन में उनके शब्द ''However, after examining minutely the changes he has suggested I have come to the conclusion that the changes made by him should be welcome. They do not violate the original content in any manner, but just reduce minor omissions. That will help the Hindi text become fault free'' मुझ अकिंचन के लिए ढाढ़स बँधाने वाले और विश्वास दिलाने वाले सिद्ध हुए। अनुवाद में अतिरिक्त स्वतंत्रता लेने के लिए मैं गणेश देवी से क्षमा प्रार्थी हूँ, लेकिन मेरी ज़िम्मेदारी इससे और बढ़ गई। बहरहाल, इन वचनों का अनुसरण करते हुए मैं ओरियंट ब्लैकस्वॉन के संपादकीय विभाग के प्रति आभारी हूँ।

अनुवादक यह दावा नहीं करता है और न ही कर सकता है कि यह पूर्ण एवं सटीक अनुवाद है। अतः अनुवाद में सभी तरह की त्रुटियों और कमज़ोरियों के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

विजयकुमारन सी.पी.वी.
अनुवादक

पाठकों से निवेदन

यहाँ हमारा उद्‌देश्य केवल केरल की भाषाई स्थिति और उसके मानचित्रण को प्रस्तुत करना है। हमें ऐसे किसी भी व्यक्ति के सुझाव स्वीकार करने में खुशी होगी, जिसे लगता है कि उनकी भाषा को शामिल नहीं किया गया है। हम ऐसी किसी भी त्रुटि के लिए क्षमा चाहते हैं, और हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि भविष्य में ऐसी चूक को सुधारा जाएगा।

इस खंड के संपादक उन पाठकों के आभारी होंगे यदि वे हमें केरल में बोली जाने वाली किसी भी भाषा या उसकी विविधता के बारे में सूचित करेंगे, जो उन्हें लगता है कि यहाँ छूट गई है ताकि उसे भविष्य के संस्करणों में शामिल किया जा सके।

भाषा रिसर्च एंड पब्लिकेशन सेंटर
3, परिचय पार्क, दिवालीपुरा,
बड़ौदा, 390007
गुजरात

केरल और लक्षद्वीप में प्रयुक्त लिपियों पर एक टिप्पणी

आधुनिक मलयालम 53 मूल अक्षरों और उनके संयोजनों वाली एक वर्णाक्षरमाला (अल्फासिलेबरी) है। यह आंशिक रूप से वर्णमाला और आंशिक रूप से शब्दांश-आधारित लेखन प्रणाली है। इसकी यह विशिष्टता सदियों से भाषा पर पड़े विभिन्न प्रभावों का परिणाम है। ब्राह्मी लिपि वर्तमान मलयालम लिपि की जननी है, जैसा कि अधिकांश भारतीय लिपियों के मामले में है। चूँकि केरल का फोनीशियन लोगों के साथ सीधा वाणिज्यिक संबंध रहा है, और अरामयिक भाषी लोगों की बस्ती रही है इसलिए दक्षिण भारतीय ब्राह्मी के विकास पर उनके प्रत्यक्ष प्रभाव का अध्ययन किया जाना अभी बाकी है। यहाँ तक कि उन्नीसवीं शताब्दी में भी स्थानीय/विदेशी लोगों और समुदायों ने नागरी, ग्रंथ/आर्य, तमिल, वट्टेषुत्तु, कोलेषुत्तु, मलयाण्मा, अरबी, सिरिएक और लैटिन आदि लिपियों का उपयोग करके मलयालम का लेखन किया था। वर्तमान में, कैरली नामक ग्रंथ लिपि का उपयोग मलयालम और कुछ अन्य अल्पसंख्यक भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता है।

तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दक्षिणी यूरेशिया में उपयोग की जा रही मुख्य लिपि ब्राह्मी भारत की सबसे पुरानी लिपि भी है। यद्यपि उत्तर-मध्य भारत (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) में अशोक के शिलालेख सबसे प्रसिद्ध उत्तरी ब्राह्मी शिलालेख हैं। दक्षिण भारत और श्रीलंका के कुछ तमिल-ब्राह्मी शिलालेख अशोक के शिलालेखों से पहले के प्रतीत होते हैं। इन दोनों लिपियों का विकास उन भाषाओं की विशिष्टताओं के अनुरूप हुआ है, जिनका ये प्रतिनिधित्व करती थीं। वर्तमान मलयालम लिपि तमिल ब्राह्मी से विकसित हुई है जो द्रविड़ ध्वनि प्रणाली का प्रतिनिधित्व करती है। यह पल्लव ग्रंथ लिपि से प्रभावित है, जिसने आर्य ध्वनि प्रणाली को संकलित और समायोजित किया। छठी से आठवीं शताब्दी ईस्वी के बीच में कांचीपुरम के पल्लव शासकों ने ब्राह्मी का स्वदेशीकरण करके एक लिपि विकसित की। सांस्कृतिक संपर्क के अलावा, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और शैव एवं वैष्णव भक्ति आंदोलनों के प्रभाव ने लिपि के विकास में योगदान दिया जिसमें आर्य ध्वनियों के अलावा द्रविड़ ध्वनियों को भी शामिल किया गया। मूल व्यंजनों की ध्वनि कैसी थी, इसके बारे में उनकी अलग-अलग धारणाएँ थीं। उत्तरी ब्राह्मी में इसमें एक अंतर्निहित /अ/ ध्वनि जुड़ती थी। जबकि दक्षिणी ब्राह्मी के प्रयोक्ताओं के लिए यह केवल एक शुद्ध व्यंजन ध्वनि थी और /अ/ को एक अलग स्वर चिह्नक (मार्कर) के साथ जोड़ा जाता था, जिससे अक्सर व्यंजन का आकार बदल जाता था। व्यंजन समूह में पहले के नीचे दूसरा लिखा जाता था। इसने ब्राह्मी के गोलाकार और कोणीय आघात (angular strokes) को संयोजित किया और शीर्ष एवं अनुलग्नक बिंदुओं के रूप में निशान जोड़ दिए। व्यंजन चिह्नों में /अ/ अंतर्निहित है और अन्य स्वर चिह्नों को भी जोड़ना है।

यद्यपि वर्तमान तमिल लिपि सातवीं शताब्दी के दौरान ग्रंथ से विकसित हुई। स्थानीय वट्टेषुत्तु (जिसे इसकी गोलाई के आधार पर गजवडिवु; उस क्षेत्र में प्रयुक्त होने से चेरापांड्य लिपि; और "नारायणोनामो" आदि के उत्परिवर्तन (mutation) से *नानम्मोनम* भी कहा जाता है), जिसमें 30 अक्षर थे और वर्ण संयोजन, स्वरों /अ/ और /उ/ और प्रतीकों के लिए परंपराओं का अभाव था। यह पांड्य क्षेत्र में तब तक जारी रहा जब तक कि दसवीं शताब्दी के अंत में चोलों ने इस इलाके पर कब्जा नहीं कर लिया, और चेर साम्राज्य में जिसने केरल का गठन किया। सह्य पर्वत के पश्चिम में रहने वाले लोगों ने इसे उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक बनाए रखा। पल्लव लिपि के विकास काल के दौरान, तमिल और तुलु क्षेत्र में द्रविड़ और आर्य गुणों को समायोजित करने वाली एक ग्रंथ लिपि विकसित हुई। इसमें ळ, ष़ और रः जैसी द्रविड़ ध्वनियों को शामिल किया गया और सीधी रेखाओं

को घुमाकर लिखा गया था। इसके साथ-साथ कोनों को गोलाकार बनाना, संयुक्त अक्षरों को अलग करना और शिलालेख के लिए आकार का मानकीकरण भी किया गया था।

यह लिपि सबसे पुराने मलयालम शिलालेख, वाष़प्पल्लि ताँबे की पट्टियों (830 ईस्वी) में पाई गई। इस लिपि का उपयोग उत्तर में कासरगोड के मोगराल पुत्तूर से लेकर दक्षिण में तिरुवनंतपुरम तक किया गया था। वे मूल रूप से संस्कृत लिखना चाहते थे, लेकिन इसका उपयोग मलयालम और तुलु दोनों द्वारा किया जाता था। इसमें द्रविड़ और आर्य दोनों ध्वनि प्रतीकों को शामिल किया गया था और इसका उपयोग अभिजात्य वर्ग में किया जाता था।

लेकिन आठवीं शताब्दी तक पश्चिमी तटीय क्षेत्र के लोकप्रिय क्षेत्र में वट्टेषुत्तु का बोलबाला था और पंद्रहवीं शताब्दी तक इसमें गिरावट आनी शुरू हुई। मलयाण्मा (कोच्चि के दक्षिण में) और कोलेषुत्तु (कोच्चि के उत्तर में अलग अक्षर दीर्घ "ए" और "ओ" और उनकी क्षेत्रीय विविधताओं के साथ) के अलग-अलग प्रकार केरल में उन्नीसवीं शताब्दी तक जारी रहे। ये लिपियाँ विभिन्न ताड़पत्र दस्तावेज़ों में पाई जाती हैं। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान केरल में विभिन्न भाषाओं और लिपियों का उपयोग कोच्चि में रचित केरल के पौधों के एक शास्त्रीय संग्रह *हॉर्तुस मलाबारिकस* (1678-1693) में देखा जा सकता है। इसकी छह प्रतिलिपियाँ (testimonials) विभिन्न भाषाओं और लिपियों में लिखी गई हैं– एक मलयालम में ग्रंथ लिपि का उपयोग करके, दो पुर्तगाली में, एक मलयालम में कोलत्तिरि अच्युतन द्वारा कोलेषुत्तु लिपि का उपयोग करके, और एक कोंकणी में रंगा भट्ट, विनायक पंडित और अप्पू भट्ट द्वारा देवनागरी लिपि का उपयोग करके।

आधुनिक मलयालम वर्णमाला की संरचना नौवीं और तेरहवीं शताब्दी के बीच विकसित हुई प्रतीत होती है, जब मलयालम तमिल से अलग हो गई और ब्राह्मणवादी संस्कृत के प्रभाव में आ गई। इस लिपि को लोकप्रिय बनाने वाले पहले प्रमुख लेखक तुंचत्तु एषुत्तच्छन (पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी) हैं, जिनकी तेलुगु रचना *अध्यात्म रामायण* का एक समवर्ती रूपांतरण मलयालम में हुआ। यह लेखन प्रणाली, जिसे आर्य-एषुत्तु के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है आर्य लेखन, इसे द्रविड़ भाषा से अलग और इंडो-आर्यन संस्कृत के लेखन से भी अलग करती है।

आर्य/ग्रंथ लिपि की स्थापना तब हुई जब पश्चिमी ईसाई मिशनरियों ने इसे मुद्रण और शिक्षा के संस्थानों के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। समय बीतने के साथ-साथ उनके इस प्रयास के परिणामस्वरूप संख्या, आकार, और संयोजन के नियमों के संदर्भ में मलयालम लिपि का मानकीकरण हुआ। उन्होंने द्रविड़ भाषा के अनुरूप /ए/ और /एः/ और /ओ/ और /ओः/ के बीच अंतर करने के लिए अक्षरों को जोड़कर ग्रंथ को संशोधित किया। अक्षर /ईः/, चंद्रकला के नियम, दोहरीकरण आदि के संबंध में इक्कीसवीं शताब्दी तक भी भ्रम की स्थिति बनी रही। आधुनिक मुद्रण (printing) प्रौद्योगिकी के विकास के साथ मलयालम लिपि का सरलीकरण, इसे टाइपराइटर और टाइपसेटिंग के अनुकूल बनाना आदि मुद्दे बन गए। लिथोग्राफिक प्रिंटिंग के विपरीत, मुद्रण के लिए फॉन्ट की बड़ी संख्या एक व्यावहारिक मुद्दा बन गई। ऐसे में मलयालम लिपि की प्रवृत्ति को देखते हुए नए अक्षरों का गठन किया गया, कई बार पाँच अक्षरों को मिलाकर एक अक्षर या प्रतीक बनाया गया। *संक्षेपवेदार्थम* गतिशील प्रकारों से मुद्रित होने वाला पहला मलयालम ग्रंथ बना। जिसे 1128 विभिन्न फॉन्ट का उपयोग करके मुद्रित किया गया था। बेंजामिन बेली, जिन्होंने 500 से अधिक फॉन्ट विकसित किए थे, ने अपनी मलयालम बाइबिल को मुद्रित किया। प्रसिद्ध मुद्रक और प्रकाशक कंडत्तिल वर्गीस माप्पिला ने इस व्यावहारिक समस्या का सामना किया और इस पर *भाषापोषिणी सभा* में बहस शुरू की। केरल सरकार ने 1969-71 में और 1981 में मलयालम फॉन्ट की जटिलता को कम करने के लिए ग्लिफ (व्यंजन-स्वर संयुक्ताक्षर) जोड़कर तथा इसे नियमित करके और मुद्रण में उपयोग किए जाने वाले फॉन्ट की संख्या को कम करने के लिए मलयालम वर्तनी में सुधार किया। हालाँकि, नई सहस्त्राब्दी की शुरुआत के बाद से, पुरानी जटिल लिपियाँ मुद्रित होने लगी हैं, क्योंकि कंप्यूटर प्रौद्योगिकी ने उन्हें प्रबंधनीय (manageable) बना दिया है।

पारंपरिक मलयालम में 18 अलग-अलग स्वराक्षर हैं जो सभी संभावित संस्कृत ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें से पाँच स्वर 7, 8, 9, 10 और 18 आधुनिक मलयालम में कमोबेश विलुप्त हो चुके हैं।

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
स्वर	അ	ആ	ഇ	ഈ	ഉ	ഊ	ഋ	ൠ	ഌ	ൡ	എ	ഏ	ഐ	ഒ	ഓ	ഔ	അം	അഃ
चिह्न		ാ	ി	ീ	ു	ൂ	ൃ	ൄ	ൢ	ൣ	െ	േ	ൈ	ൊ	ോ	ൌ	ം	ഃ

36 व्यंजन अक्षरों (ക, ഖ, ഗ, ഘ, ങ, ച, ഛ, ജ, ഝ, ഞ, ട, ഠ, ഡ, ഢ, ണ, ത, ഥ, ദ, ധ, ന, പ, ഫ, ബ, ഭ, മ, യ, ര, റ, ല, ള, ഴ, വ, ശ, ഷ, സ, ഹ) में स्वर चिह्न जोड़कर विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके उनका दुहराव और संयोजन किया जाता है। इनके अलावा, छह शुद्ध व्यंजन ध्वनियाँ हैं जिन्हें मलयालम में चिल्लु (ൺ, ൻ, ർ, ൽ, ൾ, ൿ) के नाम से जाना जाता है। कैरली लिपि लगभग तदनुरूप एक से एक के साथ सभी संस्कृत और द्रविड़ ध्वनियों का प्रतिनिधित्व कर सकती है।

मलयालम व्यंजनाक्षर और आईएसओ एवं आईपीए का उपयोग कर उनका लिप्यंकन इस प्रकार है–

मलयालम	ക	ഖ	ഗ	ഘ	ങ	ച	ഛ	ജ	ഝ	ഞ	ട	ഠ	ഡ	ഢ	ണ	ത	ഥ	ദ
ISO	k	kh	g	gh	ṅ	c	ch	j	jh	Ñ	ṭ	ṭh	ḍ	ḍh	ṇ	t	th	d
IPA	k	kʰ	g	gʱ	Ŋ	c	cʰ	ɟ	ɟʱ	ɲ	ʈ	ʈʰ	ɖ	ɖʱ	ɳ	t̪	t̪ʰ	d̪
हिंदी	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द

मलयालम	ധ	ന	ന	പ	ഫ	ബ	ഭ	മ	യ	ര	റ	ല	ള	ഴ	വ	ശ	ഷ	സ	ഹ
ISO	dh	n	ṉ	p	ph	b	bh	m	y	r	ṟ	l	ḷ	ḻ	v	ś	ṣ	s	h
IPA	d̪ʱ	n̪	n	p	pʰ	b	bʱ	m	j	r	r	l	ɭ	ɻ	ʋ	ʃ	ʂ	s	ɦ
हिंदी	ध	नः	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	रः	ल	ळ	ष़	व	श	ष	स	ह

अंक और प्रतीक

अंकों (0-9) के अलावा मलयालम में 1/4, 1/2, और 3/4, 10, 100, और 1000 के लिए भी अंक हैं। शून्य का भी सामान्य तौर पर उपयोग किया जाता है।

0	¼	½	¾	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	100	1000
0	൳	൴	൵	൧	൨	൩	൪	൫	൬	൭	൮	൯	൰	൱	൲

मलयालम के लिए यूनिकोड ब्लॉक इस प्रकार है U+0D00–U+0D7F

	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	A	B	C	D	E	F
U+0D0x	◌ഀ	ഁ	◌ം	◌ഃ	ഄ	അ	ആ	ഇ	ഈ	ഉ	ഊ	ഋ	ഌ		എ	ഏ
U+0D1x	ഐ		ഒ	ഓ	ഔ	ക	ഖ	ഗ	ഘ	ങ	ച	ഛ	ജ	ഝ	ഞ	ട
U+0D2x	ഠ	ഡ	ഢ	ണ	ത	ഥ	ദ	ധ	ന	ഩ	പ	ഫ	ബ	ഭ	മ	യ
U+0D3x	ര	റ	ല	ള	ഴ	വ	ശ	ഷ	സ	ഹ	ഺ	഻	഼	ഽ	◌ാ	◌ി
U+0D4x	◌ീ	◌ു	◌ൂ	◌ൃ	ൄ		◌െ	◌േ	◌ൈ		◌ൊ	◌ോ	◌ൌ	◌്	ൎ	൏
U+0D5x					ൔ	ൕ	ൖ	◌ൗ	൘	൙	൚	൛	൜	൝	൞	ൟ
U+0D6x	ൠ	ൡ	ൢ	ൣ			൦	൧	൨	൩	൪	൫	൬	൭	൮	൯
U+0D7x	൰	൱	൲	൳	൴	൵	൶	൷	൸	൹	ൺ	ൻ	ർ	ൽ	ൾ	ൿ

केरल में सामान्यतः पाई जाने वाली अन्य लिपियाँ निम्नलिखित हैं–

1. रोमन लिपि : इसका उपयोग पश्चिमी भाषाओं, जैसे– अंग्रेज़ी, फ्रेंच आदि को लिखने के लिए किया जाता है। इसे आमतौर पर विदेशी नागरिकों को बोलचाल की मलयालम भाषा सिखाने के लिए भी संशोधित किया जाता है।

2. देवनागरी लिपि : इसका उपयोग हिंदी और संस्कृत लिखने के लिए किया जाता है।

3. तमिल लिपि : इसका उपयोग तमिल भाषाई अल्पसंख्यकों द्वारा किया जाता है, जो केरल में सबसे बड़े भाषाई अल्पसंख्यक हैं।

4. कन्नड़ लिपि, और

5. तेलुगु लिपि : इनका उपयोग भाषाई अल्पसंख्यकों द्वारा किया जाता है, जो केरल के स्कूलों में भाषा विषय के रूप में अपनी मातृभाषा का चयन करते हैं।

6. अरबी लिपि : कई स्कूलों में विशेषकर मुस्लिम अल्पसंख्यकों को अरबी पढ़ाई जाती है। यह केरल में लोकप्रिय है क्योंकि कई मलयाली खाड़ी देशों में प्रवास करते हैं। इसकी संशोधित लिपि जिसे अरबीमलयालम के नाम से जाना जाता है, का उपयोग मलयालम लिखने के लिए भी किया जाता है।

7. उर्दू कुछ क्षेत्रों में पढ़ाई जाती है।

8. सिरिएक लिपि : यह सीरियाई ईसाई समुदाय की धार्मिक भाषा है। पूर्वी और पश्चिमी सिरिएक लिपियाँ विदेशी धार्मिक प्रतिष्ठानों द्वारा पढ़ाई जाती हैं।

लक्षद्वीप

कल्पेनि शिलालेख (1527 ई.) में देखी गई वट्टेषुत्तु लिपि को लंबे समय से अरबीमलयालम द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा था, जो लक्षद्वीप की सामान्य भाषा मलयालम लिखने के लिए अरबी लिपि का उपयोग करती थी। यह 1930 के दशक तक उपयोग में थी जब वर्तमान मलयालम लिपि, जो 1880 के दशक में लक्षद्वीप में आई थी, उस पर हावी हो गई।

महल लिपि, जो मिनिकॉय में इंडो-आर्यन भाषा महल को लिखने में काम आती है, वह भी अरबी का ही रूपांतर है। अभी भी द्वीप में कोई स्वतंत्र लिपि विकसित नहीं हुई है। इसे विकसित करना बाकी है।

PLSI केरल और लक्षद्वीप के संकलन की प्रक्रिया

भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण (People's Linguistic Survey of India) के प्रस्तुत केरल खंड की संकल्पना देशव्यापी PLSI पहल के रूप में ही हुई थी। यहाँ मुख्य प्रयास केरल राज्य की राजनीतिक सीमा के भीतर भाषाओं का मानचित्रण करना है। केरल खंड को PLSI में शामिल करने की शुरुआत मार्च 2011 के पहले सप्ताह में हैदराबाद के केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित एक कार्यशाला में हुई। इसमें इस बात पर विचार किया गया था कि दक्षिणी राज्यों से संबंधित भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण को सर्वोत्तम तरीके से कैसे संकलित किया जाए। इस कार्यशाला में सभी दक्षिण भारतीय राज्यों के प्रख्यात भाषाविदों और विद्वानों ने भाग लिया था। कार्यशाला में दक्षिणी राज्यों के लिए एक संयुक्त खंड प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया और इसी के अनुरूप केरल को 80 पृष्ठ आवंटित किए गए थे। यद्यपि हम मौजूदा सामग्री को संकलित कर यह खंड पूरा कर सकते थे, लेकिन हमने नए विचारों को शामिल करने का निर्णय लिया। इसी के अनुरूप इसके विषयों का निर्धारण कर यह काम शुरू किया गया था। इसमें अधिकतम विद्वानों की भागीदारी सुनिश्चित करने की योजना थी और विभिन्न योगदानकर्ताओं से अनुरोध भी किया गया था। भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण के अध्यक्ष गणेश देवी ने हैदराबाद विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर अप्लाइड लिंगविस्टिक्स एंड ट्रांसलेशन स्टडीज़ (CALTS) के प्रमुख पंचानन मोहंती के सहयोग से मार्च 2011 के पहले सप्ताह में हैदराबाद विश्वविद्यालय में एक कार्यशाला आयोजित की। इसी बैठक में एम. श्रीनाथन को राज्य संपादक के रूप में केरल और लक्षद्वीप खंड का उत्तरदायित्व सौंपा गया और इस संकलन की रूपरेखा तैयार की गई। एम. श्रीनाथन ने मलयालम के लिए एक रूपरेखा तैयार की। गणेश देवी के सुझावों को मद्देनजर रखकर बी. रामकृष्ण रेड्डी के समग्र मार्गदर्शन में आदिवासी (जनजातीय) भाषाओं/अन्य अल्पसंख्यक भाषाओं के संकलन की एक सर्वसम्मत रूपरेखा तैयार की गई थी।

अधिकतर विद्वानों को सम्मिलित करने की योजना बनी और बहुत से लोगों को अनुरोध पत्र भी भेजे गए थे। चुने गए विद्वानों में से अधिकतर ने समय पर अपना सहयोग दिया लेकिन कुछ बार-बार अनुरोध करने के बाद भी लेख नहीं भेज सके। एक भाषा को समग्रता से समझने में कई लेखकों की राय को शामिल करना आसान और अनुकूल स्थिति नहीं होती है, क्योंकि ऐसी स्थिति में सूचनाओं की पुनरावृत्ति होती है और विभिन्न दृष्टिकोणों के रूप में परिणाम सामने आता है। ऐसी परिस्थिति में, संपादकों के पास भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों को एकसमान बनाने की स्वतंत्रता नहीं थी। हालाँकि हमने लेखक के दृष्टिकोण को बदले बिना भाषा भाग में कुछ बहुत ही बुनियादी संपादन का सहारा लिया।

विषयगत योजना का मसौदा 5 मार्च 2011 को तैयार किया गया और संपादक मंडल के सामूहिक अनुमोदन के बाद 30 मार्च 2011 से निर्धारित सहयोगी लेखकों को अनुरोध पत्र भेजे गए। 8-9 अगस्त 2011 को भाषा, वडोदरा में आयोजित कार्यशाला के बाद खंड की प्रगति पर चर्चा की गई। केरल की जनजातीय भाषाओं पर एक कार्यशाला आयोजित करने का प्रयास कालीकट विश्वविद्यालय के जनजातीय अध्ययन और अनुसंधान संस्थान (Institute of Tribal Studies and Research/ITSR) के साथ शुरू किया गया था। केरल और तमिलनाडु खंड का मसौदा 7 जनवरी 2012 को तैयार कर वैश्विक भाषा सम्मेलन — भाषा सुविधा (Bhasha Suvidha) के हिस्से के रूप में विमोचित किया गया। इसके बाद, जोसेफ कोयिप्पल्लि द्वारा दोनों राज्य खंडों की समीक्षा की गई। इसके बाद जोसेफ कोयिप्पल्लि को केरल खंड का सह-संपादक बनाया गया।

स्थिति की समीक्षा करने के बाद, 24 अप्रैल 2012 को केरल की आदिवासी भाषाओं पर संयुक्त कार्यशाला आयोजित करने के लिए किर्ताड्स (KIRTADS) से संपर्क किया गया और 16-17 जून 2012 को केरल की आदिवासी भाषाओं की

संयुक्त कार्यशाला किर्ताड्स, कोष़िकोड में आयोजित की गई। इस कार्यशाला को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य यह था कि आधिकारिक स्थिति के अनुसार केरल में किसी भी आदिवासी भाषा को कोई मान्यता प्राप्त नहीं थी। राज्य की 97 प्रतिशत आबादी ने मलयालम को अपनी मातृभाषा होने का दावा किया और शेष तीन प्रतिशत तमिल, कन्नड़ और तुलु जैसे भाषाई अल्पसंख्यकों का रहा है। इसके अलावा यह भी बताया गया है कि केरल की जनजातियाँ तमिल, कन्नड़, तुलु और मलयालम से संबंधित भाषाएँ या बोलियाँ बोलती हैं। केरल में अनुसूचित जनजाति की आबादी, कुल आबादी का 1.14 प्रतिशत है और राज्य में कुल 35 अनुसूचित जनजातियाँ हैं और वे अधिकतर ग्रामीण हैं। यद्यपि राज्य ने 35 जनजातियों को मान्यता दी है, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए उनकी वास्तविक संख्या 48 और 54 के बीच मानी जाती है। संख्यात्मक रूप से कम बोली जाने वाली और कम वितरण, भूमि अलगाव, गैर-आदिवासियों के साथ उच्च संपर्क स्तर, भाषाई अधिकारों पर राजनीतिक समर्थन और जागरूकता की कमी, स्कूली शिक्षा में सरकारी तंत्र का मज़बूत हस्तक्षेप और प्रतिस्पर्धी सामाजिक पारिस्थितिकी एक क्षेत्रीय भाषा को अपनाना सुनिश्चित करते हैं। इसके बजाय, भाषाविज्ञान और लोकप्रिय दृष्टिकोण के ज़रिए, हमने जनजातीय समूहों से उनकी मातृभाषा पर उनके दृष्टिकोण को जानने की एक योजना बनाई। जिन भाषाओं के अलग होने का दावा किया गया है, उन्हें इस खंड में केरल की आदिवासी भाषाओं के रूप में शामिल किया गया है।

इसके बाद 19 जनवरी 2013 को केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड में केरल के भाषा मानचित्रण (language mapping) पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। विस्तृत पांडुलिपि प्रस्तुत की गई और सभी सहयोगी लेखकों की सहमति से इस खंड को अंतिम रूप दिया गया।

हम गणेश देवी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें इस दस्तावेज़ को व्यवस्थित रूप से तैयार करने का एक शानदार अवसर प्रदान किया। इससे हमें अपने गृह राज्य केरल की भाषाई स्थिति और उससे भी बढ़कर हमारी मातृभाषा मलयालम को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली। भाषा के अन्य सदस्यों, विशेषकर सुरेखा देवी और विपुल कपाड़िया के प्रति हम दिल से आभार व्यक्त करते हैं।

केरल की अन्य भाषाएँ

इस खंड में आम तौर पर मलयालम के अलावा अन्य भाषाओं को शामिल किया गया है। इनमें से प्रमुख क्षेत्रीय भाषाएँ जिनका अन्य राज्यों के खंडों में विस्तार से वर्णन किया गया है, उन्हें विस्तृत विवरण के साथ यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया है, लेकिन उनकी उपस्थिति और स्थिति को दिखाने के लिए इस खंड में संक्षेप में उनका उल्लेख किया गया है।

तमिल

सबसे बड़े भाषाई अल्पसंख्यक, जो केरल के सभी ज़िलों में व्यापक रूप से फैले हुए हैं। ये पारंपरिक प्रवासी हैं, जो बहुत पहले केरल में बस गए थे। केरल में अलग-अलग पेशे वाले कई पारंपरिक समुदाय बसे हुए हैं और इनमें से कुछ समुदायों में भाषा परिवर्तन आया है, जबकि अधिकांश समुदाय द्विभाषी बन गए हैं। अय्यनवर, चक्किलिया, चक्रवार, चेट्टी, कैकोलन, अय्यर, वेल्लालर आदि तमिल मूल के कुछ समुदाय हैं। इनमें भाषा अनुरक्षण अर्थात् रख-रखाव की दर बहुत अधिक है। तमिल भाषा को सरकार से भाषाई अल्पसंख्यक का दर्जा और कवरेज प्राप्त है। तमिल माध्यम के स्कूलों और ऐच्छिक भाषा के रूप में तमिल अध्ययन करने की सुविधा प्रदान की जाती है। कई तमिल प्रचारक सांस्कृतिक एजेंसियाँ युवा पीढ़ी में तमिल प्रचार को बनाए रखने के लिए समर्पित हैं।

तेलुगु

केरल के तेलुगु भाषी समुदायों में आंडिप्पंडारम, अरुंधतियार, बलिजनैडु, बोयेन, देवनागा आदि पारंपरिक प्रवासी हैं। सभी समुदाय द्विभाषी हैं और तेलुगु मूल के कुछ समुदाय मलयालम के अलावा तमिल भी बोलते हैं। केरल की कुल जनसंख्या का 0.15 प्रतिशत प्रतिनिधित्व मातृभाषा तेलुगु द्वारा किया जाता है। 48,633 की संख्या होने के बावजूद तेलुगु के प्रचार-प्रसार पर कोई समन्वित प्रयास नहीं हो रहा है। राज्य में अधिकतम 21,854 तेलुगु भाषी पालक्काड ज़िले में हैं और वे पारंपरिक प्रवासियों में हैं। भाषाई अल्पसंख्यक होने के बावजूद इसे अल्पसंख्यक कवरेज की सुविधा प्रदान की जानी बाकी है।

कन्नड़

एक अन्य पड़ोसी भाषा कन्नड़ है। तमिल की तरह कई कन्नड़ समुदाय हैं, जो पारंपरिक रूप से केरल में आकर बस गए हैं। उदाहरण के लिए, बंडी, बटाहदा, देवंगा, गौड़ा, हव्यक ब्राह्मण, हेगड़े, होलेया, जैन आदि कन्नड़ मूल के प्रवासियों में से कुछ पारंपरिक हैं। चौदह में से दस ज़िलों में उनकी उपस्थिति 500 से अधिक पाई गई है और जिनमें से 50,000 से अधिक सीमावर्ती ज़िले कासरगोड में देखी गई है। कन्नड़ को केरल राज्य द्वारा भाषाई अल्पसंख्यक के रूप में भी मान्यता प्राप्त है और शिक्षा के भाषाई अल्पसंख्यक विशेषाधिकारों के तहत संरक्षित किया गया है।

मराठी

केरल में लगभग 31,845 (0.1 प्रतिशत) मराठी भाषी हैं। केरल में अधिकांश मराठी भाषी उन प्रशासकों और सिविल सेवकों के वंशज थे, जो उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान तमिलनाडु के तंजौर ज़िले से आए थे।

गुजराती

केरल में 17,741 (0.05 प्रतिशत) गुजराती बोलने वाले हैं। कुछ परिवार कोच्चि में कई पीढ़ियों से रह रहे हैं। राज्य में गुजराती समुदाय जैन, सौराष्ट्री और कच्छी जैसे विभिन्न सामाजिक समूहों से बना है। कन्नूर, कोझिकोड और एर्णाकुलम में बड़ी संख्या में इनकी उपस्थिति देखी जाती है। ये मूल रूप से सभी प्रकार के थोक और फुटकर व्यापार करने वाले व्यवसायी हैं।

हिंदी

हिंदी भाषियों की कुल 26,386 (0.08 प्रतिशत) की आबादी मुख्य रूप से 12 ज़िलों में बसी हुई है। इडुक्की (249) और पत्तनंतिट्टा (322) में इनकी उपस्थिति काफ़ी कम है। ये सभी वर्गों से संबंधित हैं लेकिन मुख्य रूप से कर्मचारी और दिहाड़ी मज़दूर हैं।

पंजाबी

पंजाबी भाषी सिख समुदाय एर्णाकुलम ज़िले के कोच्चि में केंद्रित है। केरल के कई पंजाबी सिख समुदाय ऑटोमोबाइल स्पेयर पार्ट्स उद्योग से जुड़े हुए हैं। केरल का एकमात्र गुरुद्वारा भी कोच्चि में स्थित है। ये सांस्कृतिक रूप से जीवंत समुदाय हैं, हालाँकि एर्णाकुलम में इनकी आबादी 1,000 से भी कम है।

उर्दू

केरल में उर्दू मूल के कई पारंपरिक समुदाय बसे हैं। हनफी मुसलमान– तुर्कुर, लब्बा, रावुत्तर और दखिनी केरल के प्रमुख उर्दू भाषी समुदाय हैं। इनकी जनसंख्या 13,492 (0.04 प्रतिशत) बताई गई है।

अंग्रेज़ी

केरल के कोच्चि में पारंपरिक रूप से बसे हुए एंग्लो-इंडियन समुदाय हैं और इनकी मातृभाषा अंग्रेज़ी है। केरल में अंग्रेज़ी मूल के माने जाने वाले कुल 5,087 लोग हैं जो राज्य की आबादी का 0.02 प्रतिशत हैं।

बांग्ला

2001 की जनगणना में केरल में बांग्ला भाषी जनसंख्या 3,387 पाई गई है, लेकिन उत्तर बंगाल क्षेत्र से श्रमिकों के प्रवास की स्थित को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि स्पष्ट रूप से 2011 की जनगणना के बाद इनकी संख्या में वृद्धि हुई है।

ओडिया

केरल में ओडिया भाषी लोगों की संख्या 3,032 बताई गई है।

नेपाली

केरल के तिरुवनंतपुरम ज़िले में बड़ी संख्या में नेपाली बोलने वाले लोग बसे हुए हैं।

भारतीय भाषा वितरण : जनगणना (2011) के आधार पर

भाषा का वितरण 10,000 लोगों पर आधारित – भारत, राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश 2011

भारत/राज्य/केंद्र शासित प्रदेश*	अनुसूचित भाषाएँ										
	कुल	असमिया	बांग्ला	बोडो	डोगरी	गुजराती	हिंदी	कन्नड़	कश्मीरी	कोंकणी	मैथिली
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भारत	10,000	126	803	12	21	458	4363	361	56	19	112
जम्मू और कश्मीर*	10,000	7	16	N	2004	15	2083	6	5327	N	1
हिमाचल प्रदेश	10,000	2	9	N	34	15	8588	1	83	N	7
पंजाब	10,000	1	10	N	7	5	935	1	1	N	3
चंडीगढ़*	10,000	4	59	N	10	15	7360	4	13	1	30
उत्तराखंड	10,000	2	150	N	5	4	8915	1	2	N	54
हरियाणा	10,000	2	28	N	1	3	8805	1	2	N	10
रा.रा.क्षे. दिल्ली*	10,000	5	129	N	4	24	8492	6	11	1	73
राजस्थान	10,000	N	12	N	1	10	8939	1	1	N	2
उत्तर प्रदेश	10,000	1	12	N	N	1	9408	N	N	N	1
बिहार	10,000	N	78	N	N	1	7752	N	N	N	1255
सिक्किम	10,000	14	114	1	4	3	796	6	N	N	10
अरुणाचल प्रदेश	10,000	390	727	51	7	3	710	4	1	N	21
नागालैंड	10,000	87	378	37	6	1	318	2	N	N	7
मणिपुर	10,000	9	107	1	6	1	111	2	N	N	1
मिज़ोरम	10,000	12	983	2	2	1	97	2	N	N	1
त्रिपुरा	10,000	6	6573	1	1	4	211	2	N	N	1
मेघालय	10,000	134	784	16	1	1	212	2	N	N	3
असम	10,000	4838	2892	454	1	2	673	1	N	N	2
पश्चिम बंगाल	10,000	1	8622	5	N	5	696	N	N	N	3
झारखंड	10,000	N	974	N	N	7	6195	N	N	N	42
ओडिशा	10,000	N	120	N	N	4	295	1	N	2	1
छत्तीसगढ़	10,000	1	95	N	N	15	8362	1	N	N	4
मध्य प्रदेश	10,000	N	15	N	N	26	8857	1	N	N	1
गुजरात	10,000	1	13	N	N	8597	706	3	N	1	2
दमण और दीव*	10,000	49	215	2	N	5083	3631	19	N	6	43
दादरा और नगर हवेली*	10,000	28	91	1	N	2148	2616	26	N	226	64
महाराष्ट्र	10,000	1	39	N	N	211	1289	89	1	36	4
आंध्र प्रदेश	10,000	N	7	N	N	7	369	63	N	N	N
कर्नाटक	10,000	2	14	N	N	19	330	6654	1	129	N
गोवा	10,000	8	49	N	1	47	1029	466	3	6611	2
लक्षद्वीप*	10,000	N	22	1	-	4	25	6	-	N	-
केरल	10,000	2	9	N	N	1	16	26	N	21	N
तमिलनाडु	10,000	N	3	N	N	38	55	178	N	1	N
पुडुचेरी*	10,000	1	12	N	N	11	51	15	N	1	N
अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह*	10,000	3	2849	N	2	6	1929	6	1	3	4

- = यह भाषा नहीं
N = नगण्य

अनुसूचित भाषाएँ												अनुसूचित भाषाएँ कॉलम 3–24	गैर-अनुसूचित भाषाएँ कुल योग
मलयालम	मणिपुरी	मराठी	नेपाली	ओडिया	पंजाबी	संस्कृत	संथाली	सिंधी	तमिल	तेलुगू	उर्दू		
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26
288	15	686	24	310	274	N	61	23	570	670	419	9672	328
9	2	18	18	8	175	N	N	N	12	11	16	9727	273
2	N	5	130	5	896	1	1	N	2	2	8	9791	209
4	N	7	8	4	8982	N	N	N	4	3	10	9986	14
19	4	12	62	18	2203	N	N	1	53	13	100	9981	19
3	N	6	105	4	261	N	N	3	3	3	422	9944	56
6	N	5	8	6	947	N	N	1	5	4	148	9982	18
53	2	16	22	22	520	N	N	19	49	15	517	9982	18
4	N	3	1	2	332	N	N	56	1	1	97	9464	536
1	N	1	1	1	25	N	N	1	1	1	542	9998	2
N	N	N	1	N	1	N	44	N	0	0	842	9975	25
15	6	19	6260	16	32	-	5	N	12	17	33	7364	2636
29	20	17	689	49	27	N	12	N	9	12	9	2787	7213
15	48	13	220	23	11	-	1	N	6	6	6	1187	8813
5	5330	6	223	3	5	N	N	-	6	4	1	5820	4180
7	20	4	82	3	3	-	10	-	3	3	1	1235	8765
3	65	4	8	71	3	N	11	N	3	10	1	6978	3022
6	15	70	184	5	15	N	1	1	3	4	7	1465	8535
2	54	4	191	70	7	N	68	6	2	9	3	9278	722
1	N	2	127	18	7	N	266	1	2	10	182	9947	53
2	N	3	5	161	24	N	991	1	3	9	596	9014	986
2	N	2	2	8270	5	N	206	1	1	159	160	9230	770
9	N	56	1	358	26	N	7	37	4	60	31	9067	933
5	N	170	1	3	19	N	N	34	3	3	126	9264	736
11	N	152	4	30	10	N	N	196	7	12	79	9825	175
51	1	453	58	182	9	N	3	17	13	19	42	9896	104
63	2	701	34	130	12	N	2	14	22	23	32	6232	3768
33	N	6893	7	12	25	N	9	64	45	118	671	9548	452
7	N	80	1	43	3	N	N	1	84	8355	887	9910	90
127	1	338	3	10	4	N	N	3	345	584	1083	9647	353
89	3	1089	18	38	13	7	1	4	48	76	283	9883	117
8417	-	4	1	6	1	-	-	1	56	7	5	8554	1446
9703	N	9	1	3	N	N	N	N	150	11	4	9957	43
101	N	12	1	3	1	N	N	1	8837	587	175	9993	7
384	N	7	3	15	1	N	-	1	8822	596	69	9991	9
722	1	17	25	29	41	N	8	N	1520	1324	34	8524	1476

संक्षिप्तियाँ

स्वर

അ	ആ	ഇ	ഈ	ഉ	ഊ	ഋ	ൠ	ഌ	എ	ഏ	ഐ	ഒ	ഓ	ഔ
a	Ā	I	ī	u	ū	ṛ	ṝ	ḷ	e	ē	ai	o	ō	au
a	aa	I	ii	u	uu				e	ee	ai	o	oo	au

- â î ê ô û

व्यंजन

M.	ക	ഖ	ഗ	ഘ	ങ	ച	ഛ	ജ	ഝ	ഞ	ട	ഠ	ഡ	ഢ	ണ	ത	ഥ	ദ	ധ	ന	ന	പ	ഫ	ബ	ഭ	മ	യ	ര	റ	ല	ള	ഴ	വ	ശ	ഷ	സ	ഹ
ISO	k	Kh	g	Gh	ṅ	c	ch	j	jh	ñ	T	Th	D	Dh	N	t	th	d	dh	ṉ	n	p	ph	b	bh	m	y	ṟ	r	l	ḷ	ḻ	v	ś	ṣ	s	h
IPA	k	k^{h}	g	$g^{ɦ}$	ŋ	c	c^{h}	ɟ	$ɟ^{ɦ}$	ɲ	T	T^{h}	ɖ	$ɖ^{ɦ}$	ɳ	t̪	$t̪^{h}$	d̪	$d̪^{ɦ}$	n̪	n	p	p^{h}	b	$b^{ɦ}$	m	j	r	ɾ	l	ɭ	ɻ	ʋ	ʃ	ʂ	s	ɦ
B.	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖	𑀗		𑀙	𑀚	𑀛	𑀜	𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡	𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦			𑀨	𑀩	𑀪	𑀫	𑀬	𑀭		𑀮	𑀴		𑀯	𑀰	𑀱	𑀲	𑀳
T.	க				ங	ச		ஜ		ஞ	ட				ண	த				ந	ன	ப				ம	ய	ர	ற	ல	ள	ழ	வ	ஶ	ஷ	ஸ	ஹ
D.	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	ऩ	प	फ	ब	भ	म	य	र	ऱ	ल	ळ	ऴ	व	श	ष	स	ह
K.	ಕ	ಖ	ಗ	ಘ	ಙ	ಚ	ಛ	ಜ	ಝ	ಞ	ಟ	ಠ	ಡ	ಢ	ಣ	ತ	ಥ	ದ	ಧ	ನ		ಪ	ಫ	ಬ	ಭ	ಮ	ಯ	ರ	ಱ	ಲ	ಳ	ೞ	ವ	ಶ	ಷ	ಸ	ಹ
T.		ఖ	గ	ఘ	ఙ	చ	ఛ	జ	ఝ	ఞ	ట	ఠ	డ	ఢ	ణ	త	థ	ద	ధ	న		ప	ఫ	బ	భ	మ	య	ర	ఱ	ల	ళ		వ	శ	ష	స	హ

स्वनिमिक

Pb			td		T D	cj	kg
Phbh			thdh		ThDh	chjh	khgh
M			ṉ	n	N	ñ	ṅ
				l	ḷ		
		r		ṟ			
	(f)	ś		s		ṣ	h
	v	ḻ				y	

പബ			ടഡ		തദ	ചജ	കഗ
ഫഭ			ഠഢ		ഥധ	ഛഝ	ഖഘ
മ			ണ	ന	ന	ഞ	ങ
				ല		ള	
		റ		ര			
	f	ശ		സ		ഷ	ഹ
	വ	ഴ				യ	

सहयोगी लेखकों की सूची

अशोकन नांबियार
शोधार्थी, अंग्रेज़ी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

आर. राजीव
फैकल्टी, आईआईआईटीएम, केरल

आर.वी.एम. दिवाकरन
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, मलयालम विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय

ए.एम. थॉमस
प्रोफ़ेसर, आईआर विभाग, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय

ए.बी. रघुनाथन नायर
'केदारगौरी', नन्म नगर, तिरुवनंतपुरम

एल. डार्विन
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम

एम.वाई. इंदु
शोधार्थी, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड

एम.जी.एस. नारायणन
सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, कालीकट विश्वविद्यालय एवं पूर्व चेयरमैन, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद

एल. थॉमसकुट्टी
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, मलयालम विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय

एम.एच. इलियास
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, गल्फ स्टडीज़ सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

एम. श्रीनाथन
प्रोफ़ेसर, तुंचत्तु एषुत्तच्छन मलयालम विश्वविद्यालय

एन. राजेंद्रन
सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय

एन.के. राखी
शोधार्थी, आईआईटी, जोधपुर, राजस्थान

एस.डी. प्रिंस
पीआरओ, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम

एस. कुंजम्मा
सीनियर असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम

एषुमाट्टूर राजराजवर्मा
सचिव, प्रो. एन. कृष्ण पिल्लई फाउंडेशन, तिरुवनंतपुरम

कावुंबायि बालकृष्णन
प्रोफ़ेसर, केरल शास्त्र साहित्य परिषद, तिरुवनंतपुरम

के.एम. अनिल
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, मलयालम विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय

के.एम. शरीफ
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय

के. मंजु
शोधार्थी, मलयालम विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय

के.पी. सतीश
विकास अधिकारी, ग्रंथशाला संघम, तिरुवनंतपुरम

के.वी. दिलीप कुमार
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडि

जी. उषाकुमारी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम

जोसेफ कोयिप्पल्लि
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड

टी.बी. वेणुगोपाल पणिक्कर
सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर (मलयालम), कालीकट विश्वविद्यालय

टी. विष्णुकुमारन
सीनियर असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, तमिल विभाग, द्रविड़ विश्वविद्यालय, कुप्पम

टी.वी. सुनीता
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, सामूतिरि गुरुवायूरप्पन महाविद्यालय, कालीकट

पी.के. तिलकन
सेवानिवृत्त शोध अधिकारी, एससीईआरटी, तिरुवनंतपुरम, केरल

पी. शिवदासन
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, इतिहास विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय

पी.जी. स्वाति
शोधार्थी, काल्ट्स (CALTS), केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रदीपन पांबिरिक्कुन्नु
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडि

बी. गोपीनाथन नायर
सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम

बी.एस. शिवकुमार
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, तुलु विभाग, द्रविड़ विश्वविद्यालय, कुप्पम

रश्मि
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, तुंचत्तु एषुत्तच्छन मलयालम विश्वविद्यालय

रोसि थंपि
एसोसिएट प्रोफ़ेसर (मलयालम), लेखिका, कवयित्री एवं फिल्म निर्माता

लाल मोहन
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, मीडिया स्टडीज़, तुंचत्तु एषुत्तच्छन मलयालम विश्वविद्यालय

वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर
सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय

वी.वी. मंजु
शोधार्थी, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड

शमशाद हुसैन
संस्कृत विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, तिरूर

सी.एस. वेंकटेश्वरन
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, गुलाटी इंस्टिट्यूट ऑफ़ फाइनेंस एंड टैक्सेशन, तिरुवनंतपुरम; फिल्म आलोचक

सी.पी.वी. विजयकुमारन
अनुवादक एवं भूतपूर्व आचार्य, हिंदी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड

सहयोग

एम. श्रीनाथन
भूमिका, मलयालम शब्द की उत्पत्ति, मलयालम भाषी समुदाय

बी. गोपीनाथन नायर
मलयालम भाषा का इतिहास, मलयालम भाषा की आद्य-द्रविड़, आद्य-तमिल और मध्य-तमिल वंशावली

टी. विष्णुकुमारन
संगम साहित्य और मलयालम भाषा

एम.जी.एस. नारायणन
मलयालम भाषा की उत्पत्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर
मलयालम का भाषा वैज्ञानिक स्वरूप

टी.बी. वेणुगोपाल पणिक्कर
मलयालम में पुरातनवाद

जोसेफ कोयिप्पल्लि
मलयालम भाषावैज्ञानिक अध्ययन का इतिहास

एन.के. राखी
मलयालम व्याकरण परंपरा का विकास

एस. कुंजम्मा
मलयालम कोशकला अध्ययन का इतिहास

बी. गोपीनाथन नायर
मलयालम का संपर्क इतिहास

एम.एच. इलियास एवं शमशाद हुसैन
मलयालम, अरबी और फ़ारसी

एम. श्रीनाथन
मलयालम और प्राकृत

ए.एम. थॉमस
मलयालम और सिरिएक भाषा

वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर
मलयालम और संस्कृत

जोसेफ कोयिप्पल्लि
मलयालम और अंग्रेज़ी, मलयालम लिपि

के.एम. अनिल
मलयालम लिपि का विकास

अशोकन नांबियार
मलयालम मुद्रण का इतिहास

टी.वी. सुनीता
डिजिटल भाषा प्रौद्योगिकियाँ

बी. गोपीनाथन नायर
मलयालम की बोलियाँ

एम.एच. इलियास एवं शमशाद हुसैन
अरबीमलयालम

जोसेफ कोयिप्पल्लि
पातिरि मलयालम

रोसि थंपि
मलयालम पर बाइबिल का प्रभाव

के.एम. अनिल
मौखिक साहित्य विधा

जी. उषाकुमारी
मलयालम में शास्त्रीय साहित्य – एक अवलोकन

एल. थॉमसकुट्टी
मलयालम नाटक का विकास

जोसेफ कोयिप्पल्लि
चविट्टुनाटकम

जोसेफ कोयिप्पल्लि
मिशनरी साहित्य

आर.वी.एम. दिवाकरन
प्रगतिवादी साहित्य

प्रदीपन पांबिरिक्कुन्नु
मलयालम में दलित साहित्य

एम.वाई. इंदु
मलयालम में नारीवादी लेखन

ए.बी. रघुनाथन नायर
बाल साहित्य

के.वी. दिलीपकुमार
मलयालम साहित्य का इतिहास लेखन

वी.वी. मंजु
संस्कृत से मलयालम में अनुवाद

के.एम. शरीफ
अंग्रेज़ी से मलयालम में अनुवाद, अंग्रेज़ी से इतर अन्य भाषाओं से अनुवाद

जी. उषाकुमारी
मलयालम और हिंदी

पी.के. तिलकन
शिक्षा में मलयालम भाषा

एषुमाट्टूर राजराजवर्मा
प्रशासन में मलयालम

एस.डी. प्रिंस
मुद्रण माध्यम में मलयालम

सी.एस. वेंकटेश्वरन
दृश्य-श्रव्य माध्यम में मलयालम भाषा

लाल मोहन
नए माध्यम में मलयालम

एस. कुंजम्मा
मलयालम में विश्वकोश, मलयालम में शब्दावलियाँ

कावुंबायि बालकृष्णन
मलयालम में विज्ञान साहित्य

वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर
लेखन दीक्षा अनुष्ठान

के.पी. सतीश
पुस्तकालय आंदोलन

एम. श्रीनाथन
प्रवासी मलयाली

कावुंबायि बालकृष्णन
जन विज्ञान आंदोलन और मलयालम

एम. श्रीनाथन
मलयालम की राजनीतिक बोली, मलयालम सार्वदेशीयता

पी. शिवदासन
केरल में साक्षरता

एम. श्रीनाथन
शब्दावली

पी.जी. स्वाति
ब्यारि

रश्मि
कोंकणी

बी.एस. शिवकुमार
तुलु

एल. डार्विन
आदिवासी भाषाएँ

एन. राजेन्द्रन
मुदुगा

सी.पी.वी. विजयकुमारन
अनुवादकीय टिप्पणियाँ

टी.बी. वेणुगोपाल पणिक्कर
लक्षद्वीप मलयालम

के. मंजु
महल

अकारादि क्रम में केरल और लक्षद्वीप की भाषाओं के नाम

अंग्रेज़ी
अडिया
इरुळा
उर्दू
ओडिया
कन्नड़
काट्टुनायिक्कन
कुरिच्यन
कुरुंबा
कोंकणी
कोरगा
गुजराती
तमिल
तेलुगु
तुलु
द्वीप मलयालम
नेपाली
पंजाबी
पणिया
बांग्ला
ब्यारि
मण्णन
मराठी
मलयालम
महल
मुदुगा
मुदुवन
वेट्टकुरुमा
हिंदी

भाग I

केरल

1



भूमिका

केरल की भाषाई मानचित्रावली (एटलस)

केरल की भाषाई विविधता और उपलब्ध सरकारी दस्तावेज़ों (तालिका 1.1) के आधार पर केरल के वर्तमान भाषाई परिदृश्य को देखा जा सकता है। इसके आधार पर केरल की भाषागत पहचान को समझा जा सकता है। 2001 की जनगणना के अनुसार केरल की भाषाई विविधता में 64 भाषाओं को शामिल किया गया है। इनमें द्रविड़, भारोपीय, ऑस्ट्रो-एशियाटिक और तिबेतो-बर्मन परिवार के अतिरिक्त "अन्य" कोटियों में आने वाली भाषाएँ भी शामिल हैं। इस सूची में द्रविड़ भाषाएँ प्रमुख हैं, इसके बाद कोंकणी, मराठी, हिंदी और गुजराती जैसी भारतीय-आर्य (इंडो-आर्यन) भाषाएँ हैं, जिनके बोलने वालों (वक्ताओं) की संख्या लगभग 10,000 है। कोंकणी भले ही भाषाई अल्पसंख्यकों की सूची में है, लेकिन यह भारतीय-आर्य का प्रतिनिधित्व करती है। ऑस्ट्रो-एशियाटिक और तिबेतो-बर्मन के अंतर्गत वे भाषाएँ शामिल हैं जो या तो हाशिये पर हैं या जिनका उपयोग कम आबादी द्वारा किया जाता है, लेकिन उन भाषाओं का भी राष्ट्रीय महत्त्व है। लक्षद्वीप में ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा नहीं के बराबर है। केरल की आबादी में उनका प्रतिनिधित्व 50 से भी कम है। तिबेतो-बर्मन परिवार में लगभग 25 भाषाएँ हैं लेकिन उनके बोलने वालों की संख्या नगण्य है। इनमें 22 भाषाओं के बोलने वालों की संख्या दस से कम है, जबकि अन्य तीन भाषाओं के बोलने वालों की संख्या 50 से भी कम है। केरल में द्रविड़ भाषाओं से ज़्यादा भारतीय-आर्य भाषाएँ बोलने वाले हैं। शिक्षा के आधार पर लाभ पाने वाले केरल के भाषाई अल्पसंख्यकों में कन्नड़ और तमिल हैं। स्थिति जो भी हो लेकिन 2001 की जनगणना के अनुसार तुलु बोलने वाले कन्नड़ से ज़्यादा हैं। 2001 की जनगणना में जनजातीय भाषाओं को स्पष्टता के साथ शामिल नहीं किया गया है और उन्हें "अन्य" कोटि की भाषाओं में गिना गया है। अनुसूचित जनजातियों की मातृभाषाएँ वे मानी जाती हैं, जो अन्य भाषाओं की तुलना में 0.05 प्रतिशत के साथ दसवें स्थान पर हैं, यद्यपि केरल में अनुसूचित जनजातियाँ कुल जनसंख्या का 1.14 प्रतिशत हैं।

तालिका 1.1 : केरल में बोली जाने वाली भाषाएँ

मलयालम	3,08,03,747 (96.7 %)	कोरवा	11
तमिल	5,96,971 (1.87)	अंगमी	10
तुलु	1,22,995 (0.38)	मुंडा	10
कन्नड़	81,406 (0.25)	खासी	9
कोंकणी	61,376 (0.19)	कुरुख/ओराओन	8
तेलुगु	48,633 (0.15)	निस्सी/दफला	8
मराठी	31,845 (0.1)	मुंदारी	7
हिंदी	26,386 (0.08)	कोडा/कोरा	5
गुजराती	17,741 (0.05)	कुइ	5
‘अन्य’	16,220 (0.05)	पइते	5
उर्दू	13,492 (0.04)	गारो	4
अंग्रेज़ी	5,087 (0.02)	फ़ारसी	4
बांग्ला	3,387 (0.02)	तमांग	4
ओडिया	3,032 (0.01)	भोटिया	3
नेपाली	2,715 (0.008)	संथाली	3
पंजाबी	1,668	खोंद/कोंध	3
अरबी	1,245	सिम्ते	3
सिंधी	1,205	लदाखी	3
भीली/भिलोदी	851	बिष्णुपुरिया	2
असमिया	421	सेमा	2
कश्मीरी	183	कुकी	1
संस्कृत	166	कबुई	1
डोगरी	126	कोया	1
मणिपुरी	109	मिरी/मिशिंग	1
कूरगी /कोडगु	54	पोचुरी	1
मैथिली	48	शिना	1
लुशाई /मिज़ो	33	जोउ	1
अनल	23	खरिया	1
बोडो	21	मारम	1
तिब्बती	20	निकोबारसे	1
लियांगमेय	20	रंगमा	1
त्रिपुरी	15	तंगखुल	1
अडि	11	कुल	3,18,41,374

अनुसूचित भाषाएँ

मलयालम केरल की राजभाषा (आधिकारिक भाषा) है, जो तीन करोड़ तीस लाख से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है।

केरल की अन्य भाषाएँ

मलयालम के अलावा अन्य सभी भाषाएँ इसमें शामिल हैं। जिन भाषाओं की चर्चा अन्य राज्यों के संस्करणों में विस्तार से की गई है और जिन्हें क्षेत्रीय भाषाओं के रूप में भी मान्यता प्राप्त है, उनका विवरण यहाँ नहीं दिया गया है। तमिल भाषी भाषाई अल्पसंख्यकों में से हैं और ये केरल के हर ज़िले में पाए जा सकते हैं। ये पारंपरिक अप्रवासी हैं जो वर्षों पहले केरल में बस गए थे। विभिन्न व्यवसायों में लगे तमिल मूल के अनेक समुदाय केरल में बसे हुए हैं। इनमें से कुछ भाषाई प्रवासन से गुज़रे हैं, किंतु अधिकतर द्विभाषी हैं। अय्यनडार, चक्किलिया, चक्रवर, चेट्टी, कैकोलन, अय्यर और वेल्लालर आदि समुदाय तमिल मूल के हैं। इनमें से एक बड़ा प्रतिशत अपनी मूल भाषा को ही संजोता और बोलता आ रहा है। सरकार ने तमिल भाषा को भाषाई अल्पसंख्यक का दर्जा दिया है। यहाँ तमिल माध्यम में पढ़ाने वाले स्कूल भी हैं और तमिल को वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाने वाले स्कूल भी हैं। तमिल को प्रोत्साहित करने वाली अनेक सांस्कृतिक संस्थाएँ भी हैं, जो युवा पीढ़ी के बीच तमिल को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

केरल के तेलुगु भाषियों में अंडिपंडारम, अरुंधतियार, बलिजनायिडु, बोयन और देवनाग आदि पारंपरिक प्रवासी हैं। ये सभी समुदाय द्विभाषी हैं। कुछ ऐसे समुदाय भी हैं, जो मलयालम भाषा के अलावा तेलुगु मूल की तमिल भी बोलते हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार तेलुगु मातृभाषी लोग केरल की कुल आबादी का लगभग 0.15 प्रतिशत हैं। संख्या में 48,633 (2001 की जनगणना) होने के बावजूद तेलुगु को बढ़ावा देने के लिए कोई समन्वित प्रयास नहीं दिखाई देता। पालक्काड ज़िला प्रवासी तेलुगु भाषियों की संख्या (21,854) में सबसे आगे है। भाषाई अल्पसंख्यक होने के बावजूद तेलुगु को भाषाई अल्पसंख्यक का दर्जा नहीं दिया गया है।

सीमावर्ती क्षेत्रों की एक अन्य भाषा कन्नड़ है। तमिल के समान, कन्नड़ बोलने वालों के समुदाय भी केरल में हैं, जो पारंपरिक प्रवासियों के रूप में यहाँ रह रहे हैं, जैसे– बंडी, बटाहदा, देवंगा, गौड़ा, हव्यक ब्राह्मण, हेगडे, होलेया और जैन आदि। केरल के दस ज़िलों में कन्नड़ मातृभाषियों की संख्या 500 है, चूँकि कर्नाटक का सीमावर्ती ज़िला कासरगोड है, वहाँ इनकी संख्या 50,000 से अधिक है। केरल के भाषाई अल्पसंख्यक में कन्नड़ की भी गणना की गई है। उसे शैक्षिक आधार पर संरक्षण प्राप्त है।

केरल में मराठी भाषियों की संख्या 31,845 (2001 की जनगणना) है, जो कि 0.1 प्रतिशत है। केरल के मराठी भाषियों में उन्नीसवीं शताब्दी में तमिलनाडु के तंजावूर ज़िले से आए प्रशासनिक व सरकारी सेवा में काम करने वाले मराठियों के वंशज ही अधिक हैं।

केरल में गुजराती भाषियों की संख्या 17,741 (2001 की जनगणना) है, जो कि 0.05 प्रतिशत है। कई पीढ़ियों से कोच्चि में बसे जैन, सौराष्ट्री, एवं कच्छ के विभिन्न सामाजिक संगठनों के लोगों के कारण यहाँ गुजराती भाषा का प्रचलन भी बढ़ा। कन्नूर, कोष़िकोड, और एर्णाकुलम में इनकी आबादी काफ़ी ज़्यादा है। मूलतः ये लोग थोक एवं परचून के छोटे व्यापारी के रूप में अपने व्यवसाय में लगे हुए हैं।

केरल में हिंदी भाषी लोग (26,386) 12 ज़िलों में बसे हुए हैं, जो (2001 की जनगणना के अनुसार) 0.08 प्रतिशत हैं। शेष दो ज़िलों इडुक्की (249) और पत्तनंतिट्टा (322) में इनकी आबादी (2001 की जनगणना के अनुसार) कम है। इन लोगों को विभिन्न सामाजिक समूहों में देखा जा सकता है। इनमें से ज़्यादातर लोग कर्मचारी और मज़दूर हैं।

पंजाबी भाषी सिख समुदाय के लोग केरल के कोच्चि में एर्णाकुलम ज़िले में रहते हैं। केरल के ज़्यादातर पंजाबी ऑटोमोबाइल स्पेयर पार्ट्स के व्यापार में लगे हैं। यद्यपि इनकी आबादी 1,000 (2001 की जनगणना) से कम है, लेकिन ये एक सांस्कृतिक विरासत वाले लोग हैं। इनका एकमात्र गुरुद्वारा कोच्चि में है।

केरल में उर्दू बोलने वाले भी रहते है। इनमें से हनफी मुस्लिम (तुर्क, लब्बा, राउत्तर और दक्षिणी) प्रमुख रूप से उर्दू भाषी हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार इनकी आबादी 13,492 अर्थात् 0.04 प्रतिशत है।

कोच्चि में बसे एंग्लो-इंडियन समुदाय की मातृभाषा अंग्रेज़ी है। इनकी संख्या 5,087 (2001 की जनगणना) है, जो केरल की कुल आबादी का 0.02 प्रतिशत है।

2001 की जनगणना में केरल में बंगालियों की आबादी 3,387 थी, लेकिन पश्चिम बंगाल से केरल की ओर मज़दूरों का पलायन बढ़ गया, जिसके कारण 2011 की जनगणना में इस संख्या में काफ़ी वृद्धि हुई। 2001 की जनगणना के अनुसार, केरल में 3,032 ओडिया भाषी हैं और 2011 में इनकी संख्या में भी काफ़ी वृद्धि हुई है। तिरुवनंतपुरम ज़िले में नेपाली भाषी भी रहते हैं।

यहाँ 2001 की जनगणना की भाषाई तालिका के अनुसार भाषाओं का मानचित्रण किया गया है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, ज़िलावार मानचित्रण की कोशिश की गई है। प्रत्येक ज़िले में 500 से अधिक संख्या में भाषा बोलने वालों को वरीयता दी गई है। निम्न तालिका में उन प्रमुख भारतीय भाषाओं के बोलने वालों की ज़िलावार सूची है, जिसमें ऐसी भाषाओं को दर्शाया गया है जिनके बोलने वालों की संख्या कम-से-कम 500 है।

तालिका 1.2 : केरल में ज़िलावार (500 से अधिक संख्या) बोली जाने वाली प्रमुख भाषाएँ

01. कासरगोड		उर्दू	548	**05. मलप्पुरम**	
मलयालम	9,79,827	ओडिया	534	मलयालम	36,04,887
तुलु	1,16,919	**03. वायनाड**		तमिल	13,264
कन्नड़	50,575	मलयालम	7,54,116	तेलुगु	2,001
मराठी	24,382	तमिल	10,172	कन्नड़	1,276
कोंकणी	17,199	कन्नड़	9,948	गुजराती	1,059
उर्दू	6,297	तेलुगु	1,886	हिंदी	683
तमिल	5,065	तुलु	982	मराठी	91
हिंदी	1,671	गुजराती	889	**06. पालक्काड**	
गुजराती	752	हिंदी	799	मलयालम	24,08,847
तेलुगु	566	**04. कोषिकोड**		तमिल	1,60,991
02. कन्नूर		मलयालम	28,52,482	तेलुगु	21,854
मलयालम	23,83,901	तमिल	13,298	अन्य	14,131
तमिल	9,560	गुजराती	3,764	कन्नड़	6,783
गुजराती	3,364	तेलुगु	2,138	उर्दू	2,098
कन्नड़	2,512	हिंदी	1,922	हिंदी	778
तेलुगु	2,333	कन्नड़	1,238	**07. त्रिशूर**	
हिंदी	2,102	कोंकणी	1,120	मलयालम	29,43,407
कोंकणी	1,895	मराठी	842	तमिल	18,772
मराठी	768	उर्दू	623	तेलुगु	3,562

कन्नड़	2,767
कोंकणी	2,170
हिंदी	894
उर्दू	654
मराठी	643
08. एर्णाकुलम	
मलयालम	30,06,860
तमिल	39,013
कोंकणी	26,820
हिंदी	12,276
तेलुगु	3,951
गुजराती	3,152
अंग्रेजी	2,035
कन्नड़	1,869
मराठी	1,680
उर्दू	1,271
तुलु	1,271
ओडिया	1,222
बांग्ला	1,113
पंजाबी	992
सिंधी	951
अन्य	548
09. इडुक्की	
मलयालम	9,00,907
तमिल	2,21,734
तेलुगु	2,357
कन्नड़	2,245
10. कोट्टायम	
मलयालम	19,33,792
तमिल	13,940
कोंकणी	1,232
तेलुगु	1,142
गुजराती	1,041
हिंदी	653
11. आलप्पुष़ा	
मलयालम	20,89,802
कोंकणी	7,918
तमिल	7,202
गुजराती	999
तेलुगु	801
हिंदी	570
12. पत्तनंतिट्टा	
मलयालम	12,21,743
तमिल	10,032
गुजराती	495
13. कोल्लम	
मलयालम	25,56,065
तमिल	22,837
तेलुगु	2,004
कोंकणी	1,053
हिंदी	511
बांग्ला	501
14. तिरुवनंतपुरम	
मलयालम	31,67,111
तमिल	51,091
तेलुगु	3,714
हिंदी	2,931
तुलु	1,513
कोंकणी	1,129
नेपाली	1,129
कन्नड़	1,089
उर्दू	981
मराठी	880
गुजराती	731

(प्रस्तुत तालिका में 2001 की जनगणना के सरकारी आँकड़ों का सहारा लिया गया है।)

उपरोक्त तालिका 1.2 में किसी भाषा को बोलने वाले कम-से-कम 500 लोग (2001 जनगणना) मौजूद हैं। इसके अनुसार मलयालम सभी ज़िलों की प्रमुख भाषा मानी जा सकती है। भाषाई अल्पसंख्यकों में सारे ज़िलों में तमिल भाषियों की संख्या 500 या उससे अधिक है तथा किसी भी अन्य अल्पसंख्यक भाषा को ऐसा दर्जा नहीं मिला है। इडुक्की, पालक्काड, और तिरुवनंतपुरम ज़िलों में तमिल का प्रभुत्व ज़्यादा है। अन्य अल्पसंख्यक भाषाओं में तुलु कासरगोड में अधिक बोली जाती है और अन्य चार ज़िलों के दूरस्थ इलाकों में इसकी उपस्थिति 500 से ज़्यादा है। पाँच ज़िलों को छोड़कर बाकी ज़िलों में कोंकणी बोलने वाले 1,000 से अधिक हैं। कासरगोड से इदुक्की तक और तिरुवनंतपुरम जैसे नौ दूरवर्ती ज़िलों में कन्नड़ बोलने वाले 1,000 से अधिक हैं, लेकिन कोट्टायम, आलप्पुष़ा, पत्तनंतिट्टा और कोल्लम ज़िलों में ये नहीं के बराबर हैं। तेलुगु बोलने वाले 500 से अधिक हैं जो पत्तनंतिट्टा को छोड़कर अन्य सभी ज़िलों में बसे हुए हैं। अध्ययन में ऐसा पाया गया कि सात ज़िलों में मराठी भाषा 500 से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। उर्दू आठ,

तालिका 1.3 : राज्य में भाषाई वितरण

ज़िला/ भाषाएँ	कासरगोड	कन्नूर	वायनाड	कोषिकोड	मलप्पुरम	पालक्काड	त्रिशूर	एर्णाकुलम	इडुक्की	कोट्टायम	आलप्पुषा	पत्तनंतिट्टा	कोल्लम	तिरुवनंतपुरम
मलयालम	9,79,827	23,83,901	7,54,116	28,52,482	36,04,887	24,08,847	29,43,407	30,06,860	9,00,907	19,33,792	20,89,802	12,21,743	25,56,065	31,67,111
तमिल	5,065	9,560	10,172	13,298	13,264	1,60,991	18,772	39,013	2,21,734	13,940	7,202	10,032	22,837	51,091
तुलु	16,919		982					1,271						1,513
कोंकणी	17,199	1,895	9,948	1,120			2,170	26,820		1,232	7,918		1,053	1,129
कन्नड़	50,575	2,512		1,238	1,276	6,785	2,767	1,869	2,245					1,089
तेलुगु	566	2,333	1,886	2,138	2,001	21,854	3,562	3,951	2,357	1,142	801		2,004	3,714
मराठी	24,382	768	889	842	591		643	1,680						880
गुजराती	752	3,364	799	3,764	1,059			3,152		1,041	999			731
हिंदी	1,671	2,102		1,922	683	778	894	12,276		653	570		511	2,931
उर्दू	6,297	548		623	370	2,098	654	1,271						981
बांग्ला								1,113					501	
ओडिया		534						1,222						
नेपाली														1,129
पंजाबी								992						
अंग्रेज़ी								2,035						
सिंधी								951						
अन्य						14131		548						

गुजराती नौ, हिंदी नौ तथा बांग्ला और ओडिया को दो ज़िलों में 500 से ज़्यादा लोगों द्वारा बोला जाता है। नेपाली बोलने वाले केवल तिरुवनंतपुरम में ही पाए गए। पंजाबी, अंग्रेज़ी और सिंधी भाषा को केवल एर्णाकुलम ज़िले तक ही सीमित देखा गया।

प्रस्तुत आँकड़ों से यह भी पता चलता है कि केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम की तुलना में एर्णाकुलम ज़िले में भारतीय भाषाओं को बोलने वाले अधिक हैं। मध्य त्रावणकोर के कोट्टायम, इडुक्की, आलप्पुषा, पत्तनंतिट्टा और कोल्लम ज़िलों में आंतरिक प्रवासन कम है। लेकिन एर्णाकुलम और उत्तरी ज़िलों में पारंपरिक और नए प्रवासियों का अनुपात अधिक है। राजधानी शहर में जहाँ 12 भाषाओं का अस्तित्व है और जिनके बोलने वालों की संख्या 500 से अधिक है, दक्षिण की ओर आते-आते भाषाई विविधता कम होती जाती है।

उपरोक्त आँकड़ों के अनुसार केरल में भाषाई अल्पसंख्यक कम हैं। मलयालम के अलावा ज़्यादातर भाषाएँ पारंपरिक प्रवासी (migrant) लोगों की हैं।

राज्यवार भाषा बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से देश भर में मलयालम बोलने वालों की उपस्थिति को निम्नलिखित तालिका (तालिका 1.4) में देखा जा सकता है। प्रस्तुत आँकड़ों के माध्यम से मलयालम बोलने वालों की आबादी और उनके बाहरी प्रवासन की ओर झुकाव को भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

तालिका 1.4 : भारत में राज्यवार मलयालम बोलने वालों की संख्या

केरल	3,08,03,747	छत्तीसगढ़	26,319	उत्तराखंड	2,870
कर्नाटक	7,01,673	उत्तर प्रदेश	19,683	बिहार	2,674
तमिलनाडु	5,57,705	पश्चिम बंगाल	17,043	चंडीगढ़	2,356
महाराष्ट्र	4,06,358	गोवा	15,081	मेघालय	2,000
दिल्ली	92,009	हरियाणा	13,989	दादरा एवं नगर हवेली	1,839
गुजरात	67,838	पंजाब	10,669	त्रिपुरा	1,747
आंध्र प्रदेश	62,214	ओडिशा	10,440	मिज़ोरम	1,322
लक्षद्वीप	51,555	जम्मू एवं कश्मीर	10,063	हिमाचल प्रदेश	1,231
मध्य प्रदेश	48,515	झारखंड	8,783	मणिपुर	1,231
पुदुचेरी	42,782	असम	8,141	दमण एवं दीव	1,166
राजस्थान	33,975	अरुणाचल प्रदेश	5,583	सिक्किम	1,021
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	28,869	नागालैंड	3,901		

2 मलयालम



भूमिका

मलयालम शब्द की उत्पत्ति

सामान्यतः यह माना जाता है कि स्वतंत्र मलयालम भाषा की उत्पत्ति आद्य-तमिल-मलयालम से हुई है और यह बहुत पुरानी है। लेकिन यह भी एक विरोधाभास है कि संज्ञापद "मलयालम" की उत्पत्ति बिल्कुल नई है। मलयालम शब्द की उत्पत्ति पर बहस एक जटिल मुद्दा है। आज मलयालम केरल और लक्षद्वीप में बोली जाने वाली मुख्य भाषा के रूप में प्रसिद्ध है। यह एक प्रमुख द्रविड़ भाषा है।

केरलम और मलयालम शब्दों की व्युत्पत्ति

दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध साहित्यिक भाषा के रूप में मलयालम भाषा में साहित्य एवं लिपियों की लंबी परंपरा दिखाई देती है। यह केरल और भारत के दक्षिण-पश्चिमी समुद्री तट से 200-400 कि.मी. दूर लक्षद्वीप की मुख्य भाषा है।

केरलम शब्द की व्युत्पत्ति बहुत स्पष्ट नहीं है। *केरलम* को शास्त्रीय तमिल शब्द *चेरलम* "पहाड़ी ढलान" या *चेरलम* "चेरों का प्रदेश" से उत्पन्न माना जा सकता है। इसे *केर-अलम* से भी व्युत्पन्न माना जा सकता है। *केर* का मतलब होता है "नारियल का पेड़" और *अलम* का मतलब "भू-भाग" या "स्थान" अर्थात् "नारियल के पेड़ों का इलाका या स्थान"। केरल के मूल निवासी "मलयाली" (मलयालम मातृभाषी) अपनी भूमि को *केरलम* कहते हैं। एक लोक कथा के अनुसार, भगवान परशुराम ने अपना परशु फेंककर, गोकर्ण से लेकर कन्याकुमारी तक व्याप्त समुद्री इलाके को समुद्र के देवता वरुण से खाली करवाया था। ऐसे में समुद्र वहाँ से हट गया और जो ज़मीन बनी वही केरल का इलाका है।

अशोक के शिलालेखों में (ई.पू. तीसरी शताब्दी) केरल नाम का सबसे पहला प्रमाण मिलता है, जिसमें एक प्रदेश या वहाँ के लोगों को "केरलपुत्र" कहा गया है। संस्कृत ग्रंथ *ऐतरेय आरण्यक* में भी केरल के बारे में जानकारी मिलती है। कात्यायन, पतंजलि और प्लिनी आदि प्राचीन लेखकों ने भी केरल के बारे में वर्णन किया है। ई.पू. अंतिम शताब्दी में ऐसा उल्लेख मिलता है कि यूनानी और रोमन लोगों को केरल के व्यंजन, विशेषकर काली मिर्च, बहुत प्रिय थे।

एक भाषा के रूप में मलयालम शब्द के प्रयोग का बहुत लंबा इतिहास नहीं है। प्रामाणिक दस्तावेज़ों में भाषा के अर्थ में मलयालम शब्द का प्रयोग उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में ही देखा या खोजा जा सकता है।

"मलयालभाषा" शब्द का सबसे पहला उपलब्ध संदर्भ 1811 में कायंकुलम फिलिपोस रंबन द्वारा बाइबिल के पहले मलयालम अनुवाद में पाया जाता है। उपलब्ध प्रमाणों से यह भी पता चलता है कि उन्नीसवीं शताब्दी से पहले केरल के भू-भाग में तमिल भाषा का प्रयोग होता था, इसे ही आगे चलकर "केरलभाषा" के रूप में पहचाना गया। उस प्रदेश विशेष में बोली जाने वाली भाषाओं के नाम *मलईनाट्टु-तमिल, मलयाय्मा, मलयाळमा और मलयाण्मा,* उस विशेष ज़ुबान को एक स्वतंत्र नामकरण की खोज के लिए सुझाते थे, ताकि एक अलग पहचान हो सके। प्रारंभ में मलयालम शब्द का प्रयोग एक स्थान वाचक संज्ञा के रूप में था। भाषा और भूमि के बीच तब जाकर सही अंतर दिखाई देने लगा। मलयालम एक निवास भूमि से संदर्भित था तथा *मलयाळमा* या *मलयाय्मा* जैसे शब्दों के साथ भाषा को जोड़ा गया।

मलयालम शब्द की व्युत्पत्ति से जुड़ी विभिन्न व्याख्याएँ हैं। मलयालम एक सामासिक शब्द है, जो "मलयम" (सह्याद्रि का दक्षिणी भाग) और "अलम" (निचली भूमि) के योग से बना है। जिसका अर्थ होता है सह्याद्रि के दक्षिणी भाग की निचली भूमि। ऐसा विदित होता है कि "मला" यानि पहाड़ "अलम" यानि भूमि से जुड़कर "पहाड़ी भूमि" के अर्थ में या "आलम" यानि गहराई या सागर से जुड़कर उस प्रदेश, जो गहरे सागर और पहाड़ के बीच का हो, का द्योतक बना। "मला+आल" (क्रियापद *आलुका* -आवास/स्वामित्व) + "अम" (प्रत्यय) यानि पहाड़ के स्वामी अर्थात् मलयाळरः और जिनकी भाषा मलयालम हो। इस तरह की व्याख्याएँ उपयुक्त और समीचीन प्रतीत होती हैं। उपर्युक्त पदों में मलयाय्मा, मलयाळमा या मलयाण्मा आदि एक ही क्रियापद, *आलुका* -स्वामित्व/अधिकार/नियंत्रण के विभिन्न रूप हैं। उपलब्ध प्रमाणों से ज्ञात होता है कि मलयालम शब्द शुरुआती तौर पर उक्त भू-भाग को दर्शाता था, न कि वहाँ के निवासियों या भाषा को। प्रस्तुत पद की व्याख्या से इस विशिष्ट इलाके के निवासियों के सांस्कृतिक भूगोल का परिचय ही समझ आता है। पश्चिमी घाट की सीमा द्वारा भौगोलिक दृष्टि से अलग होकर वहाँ के निवास-समूहों की पहली पहचान बनती है। किसी भी स्थान को नामांकित करने की प्रवृत्ति वहाँ बसने वाले और बाहरी दोनों लोगों द्वारा आम है। यह स्व या परा अर्थात् स्वयं या दूसरे के संदर्भ को रेखांकित करता है। मौलिक समझ के आधार पर भाषा और देश में कोई अंतर नहीं है, वे निरंतरता की एक कड़ी में हैं। अनुकूलतम संसाधन उपयोग, संसाधन की कमी (crunch), जनसंख्या दबाव, विखंडन आदि ऐसे मुद्दे हैं, जो उस इलाके के लोगों में खाली भूमि के प्रति जुड़ाव पैदा करते हैं। आमने-सामने के संवाद की कमी से भाषाएँ अलग-अलग हो जाती हैं और फिर सांस्कृतिक एकरूपता के साथ (पैतृक संस्कृति में बना रहता है) या विजातीयता (नए सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने से) विकास होता है। भौगोलिक स्थानांतरण के बावजूद भाषा के बदलाव तक एक तरह की नृजातीय (ethnic) और भाषाई निरंतरता बनी रहती है। संभावित परिस्थितियाँ ऐसी रही होंगी कि उनका नामकरण अवश्य हुआ होगा। उदाहरण के लिए, अन्य लोगों ने क्षेत्र विशेष का नाम मलनाडु और वहाँ की भाषा का मलईनाट्टु तमिल रखा होगा और उसका प्रयोग करने वाले समूह के लिए *मलयन/मलयन्मारः* (बोलचाल के रूप में मलयाम/मलयाण्मा– पहाड़ के निवासी) जैसा नाम रखा होगा। बाद में भौगोलिक अलगाव, बाहरी संपर्क और आर्थिक आत्मनिर्भरता आदि ने एक नई पहचान बनाने में मदद की होगी। पश्चिमी तट की पारिस्थितिकी ने उक्त समूह को सांस्कृतिक दूरी के सामाजिक चयन को स्वीकारने में मदद की और इस प्रकार एक अलग सांस्कृतिक समूह का निर्माण हुआ। अभिजात वर्ग के आधिपत्य से नए समूह को *मल आळर* (वे लोग जो पहाड़ों पर नियंत्रण रखते हैं) नाम दिया गया। संभव है यह नाम स्वयं उनके द्वारा या बाहरी लोगों द्वारा दिया गया होगा। नए भाषाई बोध ने *मलयनाडु* के "अय" को "अ" में परिवर्तित कर पुनः *मलनाडु* के रूप में शब्दबद्ध किया होगा। बाद में *मलयाळरः* के देश को मलयालम के नाम से जाना जाने लगा होगा। इस प्रकार उस समय प्रयोग की जाने वाली भाषा को अलग से मलयाय्मा, मलयाळमा और मलयाण्मा कहा गया होगा, जो मलयाम/मलयाण्मा का ही भ्रष्ट (corrupted)

रूप है और जिसका अर्थ है देशज/बोली। आमतौर पर इसे ही मलयाम/मलयाण्मा के रूप में पहचाना जाने लगा, जिसमें प्रदेश विशेष, आम जनता और भाषा की झलक है। राजनीतिक परिस्थितियों ने देशज मलयाम/मलयाण्मा को बदलकर ताकतवर और आभिजात्य *मलयाळरः* को अधिक लोकप्रियता दी। मिशनरियों ने अपनी समझ से इस भाषा को परिभाषित करने का प्रयास किया उन्होंने जनता की भाषा के रूप में इसे पहले *मलयाम पेछा* या "पहाड़ियों की भाषा" (उदयमपेरूर रिकॉर्ड, 1599), *मलयाय्मा* (बेली, 1829) माना और आगे चलकर उन्होंने *मलयाला भाषा* को "मलयालरः की भाषा" के रूप में माना। इसका प्रयोग पहली बार 1811 में किया गया था। फिर गुंडर्ट ने 1851 और 1868 में इसका प्रयोग किया। भाषा के स्थान पर *मलयाळमा* शब्द का समवर्ती प्रयोग 1863 में (*मलयाश्रमयुटे व्याकरणम्* यानि "मलयाळमा का व्याकरण") हुआ। मिशनरी बौद्धिकता ने मलयालम को साहित्यिक रूप भी प्रदान किया। उसके बाद प्रदेश, भाषा और लोगों को अलग-अलग माना जाने लगा तथा मलयालनाडु, मलयाली और मलयालम एक-दूसरे से जुड़े रहे।

मलयालम भाषा का भौगोलिक विस्तार

मलयालम भाषा का भूगोल भूमि और इतिहास के माध्यम से उसके विस्तार को भी दर्शाता है। 1 नवंबर 1956 को मलयालम की वर्तमान मातृभूमि केरल भारतीय संघ के एक राज्य के रूप में अस्तित्व में आया और उसकी राजनीतिक सीमा बनी। केरल दक्षिण-पश्चिमी सिरे पर भारतीय उपमहाद्वीप का एक छोटा सा टुकड़ा है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल के 1.3 प्रतिशत भाग में स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से यह 8^0 18' और 12^0 48' उत्तरी अक्षांश तथा 74^0 52' और 77^0 24' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। पूर्व में पश्चिमी घाट और पश्चिम में अरब सागर इसकी सीमाएँ निर्धारित करते हैं। इसके उत्तरी भाग में कर्नाटक राज्य है और शेष (अरब सागर में अतिलंघित पूर्व को छोड़कर) तमिलनाडु की सीमा है। उच्च भू-भाग – सह्याद्रि (पश्चिमी घाट) से नीचे की ओर ढलान, निम्न भू-भाग में तटवर्ती इलाका और मध्य भू-भाग – इन दोनों के बीच का प्रदेश – ये सब मिलकर केरल राज्य का प्राकृतिक भौगोलिक रूप बनाते हैं। चेर राजाओं के शासन में यह दक्षिण में कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में गोकर्ण तक व्याप्त एक विशाल भूखंड था। पहले कुट्टनाडु – कोल्लम और पोन्नानि के बीच का प्रदेश – में चेर साम्राज्य की स्थापना हुई थी, जो बाद में छठी शताब्दी तक पूरे केरल और तमिलनाडु के अधिकांश भाग तक फैल गया था। हालाँकि मलयालम भाषाई भूगोल को चेर साम्राज्य के भूगोल के समानांतर नहीं माना जा सकता। यद्यपि मलयालम की उत्पत्ति चेर साम्राज्य से हुई है, लेकिन यह भाषाई विस्तार को नहीं दर्शाती। पहली से तीसरी शताब्दी तक संगम तमिल को आधुनिक तमिलनाडु और केरल की समान साहित्यिक भाषा माना जाता था। चेंतमिल साहित्यिक विरासत 1600 ई. तक को लगभग कायम रखा गया, जो राजनीतिक प्रभुता से युग्मित सामान्य विरासत से संभव हुआ।

मलयालम की उत्पत्ति के बारे में अलग-अलग मत हैं, जैसे- क्या यह आद्य-तमिल-मलयालम से अलग होकर बनी है या यह मध्यकालीन तमिल से बनी है। यह पाँचवीं से नौवीं शताब्दी तक रही। शिलालेखों से प्रमाणित होता है कि नौवीं शताब्दी तक इसका प्रयोग राजभाषा के रूप में होता था। ग्लोटो के कालक्रम के अनुसार, तमिल और मलयालम के अलगाव का समय लगभग सातवीं शताब्दी के आसपास माना गया है। बाद के वर्षों में मलयालम भाषा का भूगोल चार चीज़ों के आधार पर बनता है, जैसे- भौगोलिक, नृजातीय (ethnic), सामाजिक और प्रवासी। चेर राजाओं में कुलशेखर या द्वितीय चेर सम्राज्य (800 से 1102 ई.) केरल के इतिहास का स्वर्णिम दौर माना जाता है। राजशेखर वर्मा के शासनकाल में मलयालम युग यानि कोल्लम युग (825 ई.) की स्थापना हुई थी। यह राजनीतिक हस्ताक्षर (political signature) मलयालम पहचान की परिपक्वता की पुष्टि करता है। 1102 ई. में द्वितीय चेर साम्राज्य के पतन के बाद इस क्षेत्र में कई स्वतंत्र रियासतों, जैसे– वेनाड (त्रावणकोर), पेरुंपटप्पु स्वरूपम (कोच्चि), कालीकट के सामूतिरि (zamorin) शासन और उत्तर केरल के चिरक्कल के कोलत्तिरि शासन का उदय

हुआ। मलयालम इन सभी क्षेत्रों में मुख्य भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी थी, लेकिन इसने अपनी विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान को भी बनाए रखा। न तो पुर्तगाली और डच घुसपैठ से और न ही मैसूर आक्रमण (1766-82) से, जिसने केरल की पुरानी सामाजिक व्यवस्था – ब्राह्मण-क्षत्रिय-नायर गठबंधन को प्रभावित किया, मलयालम के भाषाई परिदृश्य में कोई बदलाव आया। अंग्रेज़, जिन्होंने मैसूर के आक्रमण को रोकने में रियासती राजाओं की मदद की, बाद में केरल के स्वामी बन गए।

अंग्रेज़ों द्वारा मलाबार को मद्रास प्रेसीडेंसी में शामिल करने से भाषाई परिदृश्य (language geography) में पहला बदलाव आया। उन्नीसवीं शताब्दी में कोच्चि और त्रावणकोर दोनों रियासतें बनी रहीं। इस कालखंड में भाषाई परिदृश्य में काफ़ी बदलाव आया। स्वतंत्रता के बाद नए त्रावणकोर-कोच्चि राज्य की स्थापना से भाषाई भूगोल (परिदृश्य) और सुदृढ़ हो गया। यह एकभाषी राज्य के रूप में केरल के उदय की शुरुआत थी, जिसमें मलाबार ज़िला, मद्रास राज्य का कासरगोड तालुक और त्रावणकोर-कोच्चि राज्य के कई भाग (दक्षिण त्रावणकोर के तमिल बोलने वाले क्षेत्रों को छोड़कर) शामिल थे। इससे मलयालम (भाषा) सीमावर्ती राज्यों की भाषाओं– तमिल, कन्नड़, तुलु और कोडगु से अपनी सीमा निर्धारित करने में सक्षम हुई। दक्षिण और उत्तर (तिरुवनंतपुरम-कन्याकुमारी/कासरगोड/मंगलोर आदि) के संपर्क क्षेत्रों में अच्छी द्विभाषिक स्थिति कायम रही। मलयालम भू-भाग से कन्याकुमारी को हटाने से भाषाई मानचित्र में बदलाव आया, लेकिन वहाँ लंबे समय तक जीवित रहने वाली द्विभाषिकता और मलयालम बोलने वालों की भाषाई अनुकूलनशीलता के कारण इसने बहुस्तरीय उप-क्षेत्रीय पंगु भाषाई पहचान नहीं बनाई। केरल में कुल चौदह ज़िले हैं, जिनमें उत्तर केरल में कासरगोड, कन्नूर, कोष़िकोड, मलप्पुरम और वयनाड़; मध्य केरल में एर्णाकुलम, इडुक्की, पालक्काड और त्रिशूर तथा दक्षिण केरल में आलप्पुषा, कोल्लम, कोट्टायम, पत्तनंतिट्टा और तिरुवनंतपुरम हैं।

मलयालम भाषा की दूसरी मातृभूमि लक्षद्वीप है, जो भारत का सबसे छोटा संघशासित प्रदेश है। इस द्वीप समूह में 36 द्वीप हैं और यहाँ की प्रमुख भाषा मलयालम है। स्थानीय दंतकथाओं के अनुसार चेर साम्राज्य के अंतिम राजा चेरमान पेरुमाल ने इस द्वीप को अपना उपनिवेश बनाया था। इन दो प्रमुख क्षेत्रों के अलावा, मलयालम भारत और विदेशों तक फैली हुई है, जिन्हें मलयालम भाषिक द्वीप समूह के रूप में जाना जाता है।

भाषाई भूगोल अंतरभाषिक क्षेत्रीय विविधता की भी व्याख्या करता है। इस प्रकार मलयालम में सांस्कृतिक क्षेत्रों – उत्तर, मध्य और दक्षिण – के अनुरूप क्षेत्रीय बोली संबंधी विविधताएँ हैं। राज्य के गठन के बाद शिक्षा के क्षेत्र में एक समेकित (integrated) पाठ्यपुस्तक संस्कृति का विकास हुआ। इसके साथ-साथ जनसंचार माध्यमों, जैसे– आकाशवाणी, दूरदर्शन और प्रिंट मीडिया द्वारा भी केरल का एकीकरण हुआ। ये मलयालम भाषा की पहले बनी हुई क्षेत्रीय सीमाओं को मिटाने में सहायक हुए। मानक मलयालम इन विविधताओं को संप्रेषणीय स्तर पर तटस्थ बनाती है। लक्षद्वीप मलयालम में पुरानी मलयालम की कई पुरातन विशेषताएँ हैं। प्रवासी भारतीयों ने विश्व भर में अन्य भाषाओं के संपर्क में रहते हुए मलयालम को जीवित रहने में मदद की, जिसने कालांतर में मलयालम को विभिन्न भौगोलिकताएँ उपलब्ध कराईं।

मलयालम भाषा का नृजातीय आधार

आज की मलयालम भाषा का नृजातीय (ethnic) आधार नृजातीय सीमाओं के संदर्भ में समृद्ध और विशिष्ट है। इसमें स्थानीय रूप से विकसित समूह, आप्रवासी से प्रवासी बने समूह, द्विसांस्कृतिक द्विभाषी, भाषिक वशीभूत समूह (linguistically subjugated) आदि शामिल हैं। मातृभाषा में विविधता के बावजूद इनमें से अधिकांश वर्ग मलयालम भाषी के रूप में ही जाने जाते हैं। इनमें अनुसूचित जनजाति (एसटी), अनुसूचित जाति (एससी), अन्य पिछड़ी जाति (ओबीसी), अन्य योग्य समुदाय (ओईसी) और अन्य समुदाय (ओसी) जैसे सामाजिक समूह शामिल हैं। उक्त ताने-बाने में धार्मिक उपसंस्कृतियाँ बड़ी विविधता के साथ जीवित रहती हैं। केरल में ब्राह्मण समुदाय नृजातीय दृष्टि से काफ़ी वैविध्य रखता है। मलयालम भाषी केरल ब्राह्मणों में नंबूदिरि और कई

उपजातियाँ शामिल हैं, जैसे– तमिल ब्राह्मण (स्मार्त और अय्यंगर), तुलु ब्राह्मण (एंब्रांतिरि और पोट्टि) और कोंकणी ब्राह्मण (गौड़ सारस्वत ब्राह्मण सहित) आदि। मलयालम भाषी समुदाय के ईसाई संप्रदायों में सीरियाई (सीरियाई कैथोलिक, जाकोबाइट्स, ऑर्थोडॉक्स, मार्थोमा और कनानया समुदाय), लैटिन कैथोलिक, नाडार ईसाई और विविध प्रोटेस्टेंट ईसाई समुदाय, आदि शामिल हैं। केरल के मुस्लिम समुदाय में मुख्यतः दस समुदायों के लोग हैं। ये सभी धाराप्रवाह मलयालम भाषा बोलने वाले लोग हैं, लेकिन चार समुदाय (माप्पिला, मरक्कार, मेथोर, ओस्सान) दावा करते हैं कि मलयालम उनकी मातृभाषा है। अन्य में गुजराती (बोहरा, कच मेमन), उर्दू (दखनी मुस्लिम, नवायत), तमिल (राउथर) और तुर्की भाषी (तुरक्कन) शामिल हैं।

वर्तमान मलयालम भाषी समुदाय को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

1. मलयालम मातृभाषी
2. मलयालम को मातृभाषा के रूप में अपनाने वाले
3. मलयालम को अपनी मूल मातृभाषा के साथ-साथ प्रयोग में लाने वाले (देशज द्विसांस्कृतिक द्विभाषी लोग)
4. भाषाई अल्पसंख्यक, जिन्होंने मलयालम को वशीभूत किया है।

1. मलयालम मातृभाषी

पहले वर्ग में अल्लर, चक्काला, चाकियार, चेरुमन, चिंगत्तान, ईसाई समुदाय (उपर्युक्त), ईष़वा, एषुत्तच्छन, एषुवाति, कदियान, कक्कालन, कल्लाट्टु, कुरुप, कल्लाड़ि, कल्लपनिक्कारन, कलनाड़ि, कनक्कन, कनलाड़ि, कनियान-कम्मालर, करिंपाला, कावुतियन, कोल्लन, क्षत्रिय, कुंडुवडियन, कुंडुवतियन, कुरुक्कल, कुंतल, मल पणिक्कर, मलयालर, माप्पिला, मारार, मराश्शारि, मुकया, मुक्कुवन, मूशारि, मुस्लिम समुदाय (उपर्युक्त), मुत्ताटु, मुंपर, नायाडि, नाडार, नायर (100 से अधिक उपजातियाँ), नंबिडि, नंबीशन, नंबूदिरि, नंपियार, नुलयर, ओस्सन, पलक्कड तंडान, पाणन, पणिक्का, परःवन, परःयन, पतियन, पेरुंकोल्लर, पिशारटि, पोदुवाल, पुलयन, पुल्लुवन, पुष्पकन उण्णि, सामंतन, तक्कंडन, तंडान, तरक्लन, तीयाट्टु उण्णि, वलन, वनियक्कुला क्षत्रिय, वाणियर, वारियर, वेलन, वेल्लुवन, वेलुत्तेडत्तु नायर, वेट्टुवन, विलकुरुपु, विश्वन, वयनाडु काडर और वयनाडु पतियर हैं।

2. मलयालम को मातृभाषा के रूप में अपनाने वाले

अय्यनवर (तमिल), किडारन (कन्नड़), कुरवन/सिद्धनार (तमिल), कुशवन (तेलुगु), मुक्कारि (तुलु), वण्णान क्रिश्चियन, वीरशैव लिंगायत (22 समुदाय- तमिल)

3. मलयालम को अपनी मूल मातृभाषा के साथ-साथ प्रयोग में लाने वाले (देशज द्विसांस्कृतिक द्विभाषी लोग)

i. तेलुगु (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
   इस वर्ग में अरुंधतियार, अंडिपंडारम, बलिजनायिडु, बोयन, देवंगा, नायक्कन, पंडारम, रेड्डी और यादव हैं।
ii. कन्नड़ (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
   बंड़ी, बताडा, बिलवा, देवंगा, हेग्गडे, जैन, मतिगा और ओक्कलिगा समुदाय को मलयालम और कन्नड़ भाषी समाज के रूप में माना जाता है।
iii. तुलु (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
   तुलु आधारित मलयालम बोलने वाले समाज में बल्लाल, बंडारि, बुंट, देवडैगा, गणिका, गट्टि, होलया, जोगि, कवरा, मइला, माविलन, मोगेर, मंडला, नालक्कटेया और पंपाडा हैं।
iv. तमिल (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज

भरतर, चक्रवर, चायक्कारन, कैकोलन, कोंगवेल्लाल, गुंडार, कुरवा (ईसाई), मरत्तुवर, मुतल, नसुवन, पडन्नन, पल्लन, पंडारम, पंडितार, राउत्तर, उदयर, तट्टान, तेवर, वाणियर, वाणियकुला क्षत्रिय, वेलर, वेल्लाल (अठारह वर्ग) एवं वयनाटु चेट्टि तमिल में परिवर्तित मलयालम भाषी हैं।

v. गुजराती (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
केरल के मलयालम भाषी गुजराती वर्गों में बोहरा (शिया मुस्लिम) और कच्च मेमन हैं।

vi. मराठी (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
आर्य मराठा, समगारा एवं मराठी (अनुसूचित जनजाति) आदि मूलतः मराठी भाषी रहे जो बाद में मलयालम भाषी समाज बने।

vii. अंग्रेज़ी (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
एंग्लो-इंडियन समुदाय अपने मूल अंग्रेज़ी समाज से व्यावहारिक तौर पर मलयालम भाषी बने।

viii. पंजाबी (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
सिक्ख प्रवासी जो केरल में आकर बसे और मलयालम के साथ द्विभाषिकता बनाई।

ix. कोंकणी (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
कुटुंबी, गौड़ सारस्वत ब्राह्मण।

x. उर्दू (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
दक्षिण मुस्लिम, नवायत।

xi. तुर्की (मातृभाषा) और सामाजिक रूप से मलयालम भाषी समाज
तुरक्कन।

उपर्युक्त समुदाय केरल के द्विसांस्कृतिक द्विभाषी हैं। ये सामूहिक रूप से उस बड़े समूह का हिस्सा बनने के लिए प्रमुख भाषा को अपनाते हैं, जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से फ़ायदेमंद है।

4. भाषाई अल्पसंख्यक, जिन्होंने मलयालम को वशीभूत किया है

केरल और लक्षद्वीप की जनजातियाँ इस वर्ग में शामिल हैं। अरंडन, कणिक्कारन, कणियान, कोच्चुवेलन, कोया, कुरिच्यन, कुरुंबा पुलयन, मलक्कुरुवन, मलयरायन, मलय वेडन, मल पंडारम, मल वेट्टुवन, मलयन (कोंगि, नट्टु), मलमी, मेलच्चेरि, पणियन, उल्लाडन और ऊरालि मलयालम भाषी हैं। भाषावैज्ञानिक विविधता के आधार पर तेईस भाषिक समुदाय हैं, लेकिन वे सरकारी दस्तावेज़ों में मलयालम भाषी समाज का हिस्सा भी हैं। यह भाषाई मेल-मिलाप होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मलयालम का नृजातीय आधार यह दर्शाता है कि विविध तरह की पलने वाली प्रवृत्तियाँ पुनरावृत्त उत्प्रवासन में परिणत होती हैं।

भाषा जनसांख्यिकी

भाषा जनसांख्यिकी से किसी भाषा की वक्ता-शक्ति (speaker-strength) को समझा जा सकता है। 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में मलयालम बोलने वाले 3,30,66,392 लोग थे। 1971 से 2001 के बीच मलयालम की राष्ट्रीय स्थिति निम्नलिखित दर्शाती है–

तालिका 2.1 : मलयालम भाषा की राष्ट्रीय स्थिति

जनगणना	राष्ट्रीय रैंकिंग	वक्ता (अखिल भारतीय)	दशकीय जनगणना	मलयालम वक्ताओं में दशकीय वृद्धि
1971	8	4 प्रतिशत	-	
1981	8	3.86 प्रतिशत	1971-81	17.15 प्रतिशत
1991	9	3.62 प्रतिशत	1981-91	18.20 प्रतिशत
2001	9	3.21 प्रतिशत	1991-2001	8.5 प्रतिशत

ज़्यादातर मलयालम भाषी केरल में ही निवास करते हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार राज्य देश के कुल भौतिक क्षेत्र का केवल 1.18 प्रतिशत है, लेकिन कुल आबादी के 3.3 प्रतिशत है का प्रतिनिधित्व करता है। केरल की प्रमुख भाषा मलयालम है। फिर भी, मलयालम भाषियों की उपस्थिति भारत के अन्य सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों में भी बताई गई है। केरल के अलावा, मलयालम भाषी लक्षद्वीप, कर्नाटक, तमिलनाडु और महाराष्ट्र में भी रहते हैं। केरल भाषाई रूप से सजातीय प्रांत है, जिसमें 99.54 प्रतिशत (2001 की जनगणना) मलयालम भाषी हैं। जबकि लक्षद्वीप में 86.83 प्रतिशत मलयालम भाषी हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार कर्नाटक में 7,01,673, तमिलनाडु में 5,57,705 और महाराष्ट्र में 4,06,358 मलयालम भाषी हैं।

भारत के सभी राज्यों एवं संघशासित प्रदेशों में मलयालम भाषियों की मौजूदगी से यह पता चलता है कि मलयालम भाषा की जनसांख्यिकी राष्ट्र भर में फैली हुई है, जिसका बड़ा हिस्सा केरल में पाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय मलयाली प्रवासी जनगणना को ध्यान में रखते हुए मलयालम के वैश्विक प्रसार को देखा जा सकता है। केरल की पहली (भाषाई) जनगणना 1961 में हुई। राज्य के गठन से पहले त्रावणकोर, कोच्चि और मलाबार की अलग से गणना की गई थी। त्रावणकोर और कोच्चि रियासतों की पहली जनसांख्यिकी (त्रावणकोर और कोच्चि रियासतों के भौगोलिक एवं सांख्यिकीय इतिहास) लेफ्टिनेंट वार्ड और कोनर ने 1816-1820 में बनाई थी। बाद में त्रावणकोर रियासत में 1836 में और कोच्चि में 1854 में जनगणना की गई। 1875 में त्रावणकोर-कोच्चि की पहली आधुनिक जनगणना हुई और 1881 से दशकीय जनगणना के दस्तावेज़ उपलब्ध हैं।

1981 तक केरल में उच्चतम जनसंख्या घनत्व था, जिसके अनुसार प्रति वर्ग कि.मी. 819 व्यक्तियों की आबादी थी, जो राष्ट्रीय औसत से तीन गुना थी। केरल सभी राज्यों में तीसरे स्थान पर है। केरल की जनसांख्यिकी प्रवृत्ति अद्वितीय है। उदाहरण के लिए, 1951-2001 के बीच कुल आबादी में 135 प्रतिशत की वृद्धि हुई, तो राज्य ने 1991-2001 के दशक में न्यूनतम जनसंख्या वृद्धि दर्ज की। अशोधित मृत्यु दर (crude death rate) में गिरावट के मामले में भी यही स्थिति है। केरल के जनसांख्यिकीय संक्रमण की प्रवृत्तियाँ मलयालम भाषा की बदलती भाषिक जनसांख्यिकी को समझने में उल्लेखनीय तत्त्व हैं।

तालिका 2.2 : मलयालम भाषियों का राज्यवार वितरण

राज्य/संघशासित प्रदेश	मलयालम भाषियों की संख्या	राज्य/संघशासित प्रदेश	मलयालम भाषियों की संख्या
भारत	3,30,66,392	पंजाब	10,669
केरल	3,08,03,747	ओडिशा	10,440
कर्नाटक	7,01,673	जम्मू एवं कश्मीर	10,063
तमिलनाडु	5,57,705	झारखंड	8,783
महाराष्ट्र	4,06,358	असम	8,141
दिल्ली	92,009	अरुणाचाल प्रदेश	5,583
गुजरात	67,838	नागालैंड	3,901
आंध्र प्रदेश	62,214	उत्तराखंड	2,870
लक्षद्वीप	51,555	बिहार	2,674
मध्य प्रदेश	48,515	चंडीगढ़	2,356
पुदुचेरी	42,782	मेघालय	2,000
राजस्थान	33,975	दादरा एवं नगर हवेली	1,839
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	28,869	त्रिपुरा	1,747
छत्तीसगढ़	26,319	मिज़ोरम	1,322
उत्तर प्रदेश	19,683	हिमाचल प्रदेश	1,231
पश्चिम बंगाल	17,043	मणिपुर	1,231
गोवा	15,081	दमण एवं दीव	1,166
हरियाणा	13,989	सिक्किम	1,021

केरल प्रवासी सर्वेक्षण 2011 (www.cds.edu) के अनुसार केरल से अन्य देशों में प्रवासितों (emigrants) की संख्या 2011 के आकलन के अनुसार 2.28 मिलियन है। यह मातृभाषा के आधार पर किया गया सर्वेक्षण तो नहीं है, लेकिन इससे यह परिणाम निकाला जा सकता है कि केरल के प्रवासियों की संरचना मुख्यतः वहाँ की भाषाई पहचान से तय होती है।

तालिका 2.3 : केरल प्रवासियों का वैश्विक वितरण

राष्ट्र	केरलवासियों की संख्या	राष्ट्र	केरलवासियों की संख्या
यूएई	8,83,313 (38.7 प्रतिशत)	यूएसए	68,076 (2.9 प्रतिशत)
सऊदी अरब	5,74,739 (25.2 प्रतिशत)	कनाडा	9,486 (0.4 प्रतिशत)
ओमान	1,95,300 (8.6 प्रतिशत)	यूनाइटड किंगडम	44,640 (1.9 प्रतिशत)
कुवैत	1,27,782 (5.6 प्रतिशत)	अन्य यूरोप	10,602 (0.5 प्रतिशत)
बहरीन	1,01,556 (4.5 प्रतिशत)	अफ्रीका	12,834 (0.6 प्रतिशत)
कतर	1,48,427 (6.5 प्रतिशत)	सिंगापुर	11,160 (0.5 प्रतिशत)
अन्य पश्चिम एशिया	6,696 (0.3 प्रतिशत)	मालदीव	7,254 (0.3 प्रतिशत)
उपकुल	**20,37,813 (89.4 प्रतिशत)**	मलयेशिया	13,392 (0.6 प्रतिशत)
		अन्य दक्षिण पूर्व एशिया	16,182 (0.7 प्रतिशत)
		ऑस्ट्रेलिया/न्यूजीलैंड	24,552 (1.1 प्रतिशत)
		अन्य राष्ट्र	24,552 (1.1 प्रतिशत)
		कुल	**22,80,543 (100 प्रतिशत)**

रिपोर्ट में अंतर्राज्यीय केरल प्रवासियों को भी दिखाया गया है।

तालिका 2.4 : केरलवासियों का राज्यवार वितरण

राज्य/संघशासित प्रदेश	केरलवासियों की संख्या	राज्य/संघशासित प्रदेश	केरलवासियों की संख्या
कर्नाटक	2,68,723 (28.9 प्रतिशत)	उत्तर प्रदेश	9,541 (1.0 प्रतिशत)
तमिलनाडु	2,38,511 (25.6 प्रतिशत)	गोवा	8,480 (0.9 प्रतिशत)
महाराष्ट्र	1,78,618 (19.2 प्रतिशत)	पश्चिम बंगाल	7,420 (0.8 प्रतिशत)
नई दिल्ली	68,903 (7.4 प्रतिशत)	झारखंड	6,360 (0.7 प्रतिशत)
आंध्र प्रदेश	45,052 (4.8 प्रतिशत)	राजस्थान	6,360 (0.7 प्रतिशत)
गुजरात	36,042 (3.9 प्रतिशत)	असम	5,830 (0.6 प्रतिशत)
पंजाब	10,601 (1.1 प्रतिशत)	पुदुचेरी	5,300 (0.6 प्रतिशत)
मध्य प्रदेश	10,071 (1.1 प्रतिशत)	अन्य	24,912 (2.7 प्रतिशत)
		कुल	**9,30,724 (100 प्रतिशत)**

मलयालम की वर्तमान स्थिति

मलयालम भारत की अनुसूचित भाषाओं में से एक है। केरल और लक्षद्वीप में इसे अंग्रेज़ी के साथ राजभाषा का दर्जा भी प्राप्त है। पुदुचेरी में भी इसे राजभाषा के रूप में गिना जाता है। यह केरल की मातृभाषा है, जिसके बोलने वालों की संख्या राज्य में 99.54 प्रतिशत है। लक्षद्वीप में मलयालम भाषी 86.83 प्रतिशत हैं। इसके मानक रूप के साथ तीन प्रमुख क्षेत्रीय व जातीय बोलियाँ (caste dialects) भी हैं। मलयालम की उच्च साक्षरता ने आभिजात्य पांडित्य वाली मलयालम भाषा को निष्प्रभावी बना दिया है।

मानक भाषा के रूप में मलयालम समृद्ध और गतिशील है। मलयालम में करीब 170 दैनिक समाचार पत्र, 235 साप्ताहिक और 560 मासिक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। भारत में सबसे अधिक प्रचारित दैनिक अखबार मलयालम में ही निकलता है। राज्य में इसे स्कूली स्तर पर शैक्षिक माध्यम के रूप में अपनाया गया है। आज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। शिक्षा में मातृभाषा के घटते प्रयोग को भाषा की जीवंतता के लिए भविष्य में खतरे के रूप में देखा जा रहा है। जनसंचार के प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक दोनों ही क्षेत्रों में मलयालम खूब प्रचलित है। कूटनीतिक भाषा के रूप में इसका प्रयोग नगण्य होता जा रहा है, लेकिन प्रदेश में चल रहे व्यापार में ज़मीनी स्तर की भाषा के रूप में इसे कमतर नहीं आँका जा सकता। धर्म के क्षेत्र में मलयालम का प्रयोग उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है। धार्मिक संस्कृतियों में, यद्यपि इसने सिरिएक और लैटिन भाषा को ईसाई आस्था से हटा दिया है, लेकिन अभी तक हिंदू आस्था से संस्कृत और मुस्लिम आस्था से अरबी को हटा नहीं पाई है। धार्मिक प्रचार के लिए भी इसका प्रयोग प्रभावी ढंग से होता है। राजनीतिक कार्यों में मलयालम का खूब प्रयोग होता है। बोलने और लिखने दोनों में राजनीतिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में, राजनीतिक भाषा का सशक्त स्वर एवं भाषाई प्रवीणता यह हासिल कर चुकी है। नारी जगत को रूढ़िबद्ध करते हुए यह एक लैंगिक भाषा के रूप में कार्य करती है। राजनीतिक सजगता और हस्तक्षेप ने इसके लिखित स्वरूप को थोड़ा प्रभावित किया है, लेकिन मौखिक रूप में महिलाओं के प्रति प्रभावी पूर्वाग्रह बना हुआ है। सांस्कृतिक क्षेत्र में, केरल की लोक कलाओं में मलयालम बड़ी प्राचीनता और प्रतिष्ठा के साथ जीवित है। शास्त्रीय कला परंपरा में मलयालम की भूमिका गौण है। फिल्मों और अन्य लोकप्रिय मनोरंजन कार्यक्रमों में यह भाषा बेहद प्रभावी बन जाती है।

हालाँकि न्यायपालिका में मलयालम के प्रयोग का प्रशासनिक निर्णय 1978 में लिया गया था, लेकिन यह अब तक लागू नहीं हुआ। प्रशासनिक कार्यों में मलयालम के प्रयोग का भी यही हाल है। जहाँ तक विज्ञान और प्रौद्योगिकी का संबंध है, मलयालम के माध्यम से विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया गया है। भाषा प्रौद्योगिकी के लिए यह अभी तक पूरी तरह से अनुकूल नहीं है। कंप्यूटर के जरिए मलयालम के प्रयोग की शुरुआत हुई है। इंटरनेट में भी इसके प्रयोग में तेज़ी आई है और बढ़ावा मिला है। यह यूनिकोड कंसोर्सियम की भाषाओं में अभी भी अपना स्थान नहीं बना पाई है। हालाँकि भाषा प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग से लगता है कि यह जल्दी ही इस क्लब की सदस्य बन जाएगी। ज्ञान प्रसार के माध्यम के रूप में विश्व चिंतन की नई विधाओं को यह समृद्ध कर रही है। समाज विज्ञान और मानविकी में नए सैद्धांतिक विचारों को यह आसानी से समायोजित करती है। लेकिन इसमें विज्ञान और गणित को अभिव्यक्त करने योग्य अतिरिक्त शब्दावली के विकास की आवश्यकता है। साहित्यिक भाषा और लोकप्रिय माध्यम के रूप में यह एक प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त कर चुकी है। ज्ञान को लोकप्रिय संस्कृति में शामिल कराने की आशा से लोकप्रिय विज्ञान और समाज विज्ञान के निर्माण में भी इसे बढ़ावा मिला है। भाषाई उपकरणों, जैसे– शब्दकोश, शब्दावलियाँ, व्याकरण और अन्य शैक्षिक सामग्रियों के निर्माण को व्यवस्थित, वैज्ञानिक और सामयिक बनाते हुए विज्ञान और समाज विज्ञान में इसकी पैठ बढ़ी है। ज्ञान के कई क्षेत्रों में बढ़ती माँग को अनुवाद के जरिए यह पूरा करती है, समय की माँग के अनुसार मलयालम मशीनी अनुवाद द्वारा तकनीकी तौर पर भी बेहतर होती जा रही है। जो भी हो, अभी भी यह विकास के प्रारंभिक चरण में ही है।

मलयालम का विकास इसके सार्वदेशीय दृष्टिकोण (cosmopolitan outlook) का प्रतिनिधित्व करता है। अन्य भाषाओं के तत्त्वों को आत्मसात करना मलयालम भाषा की प्रकृति है। मलयालम का आधुनिकीकरण उसकी शैली और लिपि में सुधार, नए

तरह के प्रयोग और मानकीकरण प्रक्रिया में अंतर्निहित है। मलयालम वाक्यों में अंग्रेज़ी शब्दों का उतना ही खुला प्रयोग, जितना कि अतीत में संस्कृत भाषा के मामले में होता था, मलयालम की इस सार्वदेशीयता का प्रतीक है।

मातृभाषाई परिप्रेक्ष्य में मलयालम

मातृभाषा के नज़रिए से मलयालम को समझने का एक आसान तरीका यह पता लगाना है कि केरल के लोग अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने के लिए कैसे प्रतिबद्ध हैं।

मातृभाषा को नृजातीयता (ethnicity) के लेबल के रूप में देखा जाता है और इसलिए किसी की मातृभाषा के साथ व्यक्तिगत पहचान को सामाजिक रूप से चिह्नित किया जाता है।

"स्व" की चेतना एक व्यक्ति की मातृभाषा से भावनात्मक पहचान स्थापित करती है। कई अन्य भाषाई नृजातीय समूहों के विपरीत मलयालम अपने संदर्भ में एक संकुचित और पक्षपाती भाषा नहीं है। केरल के लोगों की मातृभाषा से संबंध स्थापित करने की परंपरा और यह संबंध जिस पहचान की भावना को व्यक्त करता है वह संकीर्ण होने के बजाय सार्वभौमिक है। मलयालम वह भाषा है जिसे केरल के अधिकतर लोग सबसे पहले सीखते हैं, समझते हैं, प्रयोग करते हैं, आंतरिक और बाहरी पहचान स्थापित करते हैं और जिसमें उनका विश्व दृष्टिकोण संरक्षित रहता है। केरल समाज के सभी घरेलू संबंधों में आमतौर पर मलयालम भाषा का प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। अपनी मातृभाषा के प्रति एक दृष्टिकोण झलकता है और मातृभाषा शैली में सोचना अपनेपन का प्रतीक और जीवन का आधार बनता है। अन्य संबंधित भाषाओं की तरह मलयालम, वह रूपक, मातृभाषा का अर्थ ग्रहण करती है। अंतर-वक्ता (inter-speaker) संबंधों में भाषाई अवबोध और क्षमता केरल में मातृभाषा के उपयोग को बढ़ावा देते हैं। कई उपनिवेशीकृत स्थितियों के बावजूद मलयालम एक घर में प्रयोग की जाने वाली भाषा, माता-पिता की भाषा, दादा-दादी एवं नाना-नानी की भाषा और सहोदर भाषा जैसे महत्त्वपूर्ण प्राथमिक संबंधों की निरंतरता को जारी रखती है। स्थानीय स्तर पर जुड़ी प्रतिष्ठा मलयालम के पक्ष में है। मलयालम के साथ संकीर्ण पूर्वाग्रह मुक्त भावनात्मक जुड़ाव उल्लेखनीय है।

केरल का इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि भाषाई निधि (linguistic capital) को लाभ प्रेरित माना गया है। जिस प्रकार अतीत में ब्राह्मणीय संस्कृत का ज्ञान व्यक्ति को कई लाभ प्रदान करता था, उसी प्रकार औपनिवेशिक काल के समय से बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों के कारण सामाजिक और आर्थिक लाभ के लिए अंग्रेज़ी में दक्षता आवश्यक हो गई। भाषा के ज़रिए लाभ पाने की अवधारणा से मलयालम भाषी लोग अंग्रेज़ी में भी दक्षता हासिल करने लगे और अपनी मातृभाषा से ज़्यादा अंग्रेज़ी को प्रोत्साहन देने लगे। इस चिंता के परिणामस्वरूप शिक्षा को बढ़ावा दिया गया, जो ऐसे शिक्षित लोगों को तैयार करती है और वे जो अपनी मातृभाषा में पर्याप्त रूप से दक्ष एवं कुशल नहीं हैं। केरल ने उन भाषाओं को सीखने को बढ़ावा दिया जो उपयोगी मानी जाती हैं। चूँकि मातृभाषा सीखने को अनिवार्य नहीं बनाया गया, ऐसे में मलयालम एक उपेक्षित भाषा बनकर रह गई। केरल राजभाषा अधिनियम 1969 के अनुसार, केरल की राजभाषा (आधिकारिक भाषा) मलयालम या अंग्रेज़ी थी। राज्य की आधिकारिक भाषाओं के रूप में "मलयालम और अंग्रेज़ी" दोनों की पुष्टि करने के लिए राजभाषा अधिनियम 1969 को 1973 में संशोधित किया गया था। कुछ लोग यह मानते हैं कि इसी कारण मलयालम को प्रशासन में प्रयोग के मामले में समान दर्जा हासिल नहीं हुआ, जैसा कि अन्य मूल भाषाओं को अपने-अपने राज्यों में प्राप्त है।

एक भाषा कार्यकर्ता के नज़रिए से केरल राजभाषा अधिनियम में संशोधन किया जाना आवश्यक है, जिसमें केवल मलयालम को ही राजभाषा का दर्जा दिया जाए। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में मलयालम पहली अनिवार्य भाषा मानी जाए। लोक सेवा आयोग सहित सभी स्तरों पर सरकारी कर्मचारियों के चयन के लिए होने वाली परीक्षाएँ इस भाषा में हों और नियुक्ति के लिए मलयालम का कार्यकारी ज्ञान अनिवार्य किया जाए। केरल में न्यायपालिका की भाषा भी यही हो। व्यापारिक समझ यह है कि आदान-प्रदान और सूचनाओं के हस्तांतरण में मातृभाषा ज़्यादा प्रभावशाली होती है और अच्छी-से-अच्छी वस्तुओं का चयन भी मातृभाषा में दी गई

सूचनाओं द्वारा ही संभव होता है। विचार और चिंतन की सफलतम अभिव्यक्ति मातृभाषा की सक्षमता से ही हो पाती है। स्थानीय भावों और चीज़ों को प्रकट करने में मातृभाषा सबसे ज़्यादा प्रभावशाली है। राजनीतिक एवं धार्मिक समूहों को यह बात अच्छी तरह समझ आती है और उन्हें फ़ायदा पहुँचाती है। सकारात्मक भाव वाले शब्दों से निकटवर्ती संपर्क बनाने में मदद मिलती है। इन सभी पक्षों को ध्यान में रखकर एक नई शिक्षा नीति का निर्माण किया गया, जिसमें 2012 से मातृभाषा में शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया।

जो भी हो अंग्रेज़ी को जानना या अंग्रेज़ी की समझ होना कभी मातृभाषा के बढ़ावे के विरुद्ध नहीं है, बल्कि भाषाई निधि के लिए यह ज़्यादा उपयोगी सिद्ध होता है। इस दृष्टि से भाषाई निधि के अनिवार्य रूप से फ़ायदे ही होते हैं। राष्ट्रीय आधार पर और अंतर्राष्ट्रीय व क्षेत्रीय आधार पर आर्थिक चीज़ों के उभरने में मलयालम के व्यापक प्रयोग की स्थिति के उत्पन्न होने और उसके अस्तित्व की संभावना बनी रहती है।

संक्षेप में केरल में बची हुई मातृभाषा का परिप्रेक्ष्य पहचान की गुंजाइश और उसके अस्तित्व की चिंता के बीच व्याप्त है।

मलयालम भाषी समुदाय

भाषाई समुदाय की उत्पत्ति

प्राचीन समय में, विशेषकर पाँचवीं और दसवीं शताब्दी के बीच, मूल मलयालम भाषी समाज की उत्पत्ति की स्थानीय परिस्थितियों को जाँचने-परखने से एक धुंधला चित्र सामने आता है। मलयालम भाषी समाज में इस तरह की उत्पत्तियों को जताने के लिए कई नृजातीय समुदाय दिखाई पड़ते हैं। लेकिन न तो इन नृजातीय समुदायों की उत्पत्ति को परखना आसान है और न ही वर्तमान मलयाली समाज को पुराने नृजातीय समुदाय के साथ निरंतरता में देखना और जोड़ना आसान है। यह अलग-अलग समुदायों और समाजों से मिश्रित होकर बना है। नृजातीय दृष्टि से देखें तो यह बहुस्तरीय है। आवासीय रूप से उभरे और व्यवस्थित मुख्य समूह इसके मूल में हैं, जो भाषा अपनाने वाले समूहों और भाषाई अधीनता (linguistic subjugation) वाले समूहों की परतों से घिरे हुए हैं।

मलयालम भाषी समाज की उत्पत्ति ऑटोचथोनस जैसे आदिम समूह की निरंतरता के रूप में नहीं हुई है। पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण, ताम्रपाषाण और महापाषाण सहित प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के भाषिक चिह्न या अवशेष के रूप में मलयालम की कोई स्थिति नहीं दिखाई पड़ती है। हालाँकि महापाषाण अवशेष के रूप में उन्हें अभी भी सीमांत क्षेत्रों में आदिवासी समुदायों के रूप में देखा जा सकता है। जनजातीय भाषाई खोजों ने अब तक मलयालम भाषा में किसी जनजातीय आधार की पुष्टि नहीं की है। पुलयर, चेरुमर, पाणर, पुलुवर आदि समुदायों का इस क्षेत्र में मूल आवास है और वे मलयालम भाषी समुदाय का हिस्सा हैं। लेकिन साथ ही यह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि वे मलयालम की उत्पत्ति के लिए ज़िम्मेदार थे। ऐसे में यह सवाल उठता है कि मलयालम भाषा की उत्पत्ति के दौर में मलयालम भाषी कौन लोग थे?

चेरा उपनिवेश के शुरुआती संगम संदर्भ पहाड़ी चोटियों में रहने वाले शिकार और संग्रह करने वाले (हंटिंग-गेदरिंग) से परे अधीनता (subjugation) की पुष्टि नहीं करते। लगभग दूसरी या तीसरी शताब्दी ई.पू. सबसे पहला उल्लेख प्लिनी डेटिंग से मिलता है, जिसमें शिकार-संग्रहण के माध्यम से जीवन निर्वाह का वर्णन किया गया है, जिसमें कृषि का कोई स्वरूप नहीं दिखाई पड़ता है। चेरा इस क्षेत्र में लोगों को नई स्थिति (layer) देने के लिए ज़िम्मेदार थे, जिनमें ब्राह्मणों समेत योद्धा, कारीगर, मज़दूर और विशेषज्ञ शामिल थे। आगे चलकर चोल के इलाके में अकाल पड़ा और नई तरह की बसावट और विस्थापन शुरू हो गया। जहाँ बहुत कम आबादी थी वहाँ पर आप्रवासियों (immigrants) का कब्जा हो गया। संगम साहित्य में उल्लिखित सभी समुदायों के बारे में पश्चिम तट से क्षेत्र में पता नहीं लगाया जा सकता। लेकिन अब भी वहाँ परःयर, वेटर, परतवर (परःवर), पाणन्मार, आर्यकूट्टूर, कुरुवर आदि रहते हैं।

प्रवासियों (in-migrants) और स्थापित निवासी समुदायों के आपसी मेलजोल और व्यवहार से मलयालम भाषा का आविर्भाव हुआ। उस समय तमिल, संस्कृत और प्राकृत आदि प्रवासियों की भाषाएँ थीं, जबकि मूल स्थानीय लोगों के समूह के साथ संप्रेषण से मलयालम की उत्पत्ति का पता चलता है। ये स्थानीय निवासी समूह क्या वर्तमान जनजातीय समाज का हिस्सा थे या आद्य-तमिल-मलयालम का प्रतिनिधित्व करने वाले या पश्चिम तटवर्ती बोली कोटुमतमिल बोलने वाले या आद्य-द्रविड़ भाषा बोलने वाले थे, इस बात की पुष्टि नहीं की गई है। वहाँ समुद्र पार के इलाकों से अरब, यहूदी और ईसाई जैसे आप्रवासियों का आना-जाना लगा रहता था, जो तट के किनारे स्थापित हुए, बस्तियाँ बनाईं, स्थानीय महिलाओं के साथ विवाह किया और अपनी अलग पहचान स्थापित की। उन्होंने अलग तरह की धार्मिक उपसंस्कृतियों का गठन किया। इन आप्रवासियों के बीच सांस्कृतिक अंतर स्थानीय भाषा में उभरी भाषाई विविधताओं में परिलक्षित होता है। इसे तमिल ब्राह्मणों, तमिल भाषी मुस्लिम राउथर, नवायत, गौड़ सारस्वत, कोंकणी बोलने वाले नौकरों, देवदासियों और अन्य, आदि के राजनीतिक और व्यावसायिक इतिहास से जाना जा सकता है। इससे पता चलता है कि मलयालम भाषा का नृजातीय आधार ऐतिहासिक दृष्टि से एक संकर भाषा के रूप में उत्पन्न हुआ दिखाई देता है। राजनीति ने भाषा के प्रतिस्थापन को बढ़ावा दिया, जिसमें द्विभाषिकता के कारण स्थानीय भाषा में बदलाव आया और मूल भाषा बदलती गई।

मलयालम भाषा की मातृभूमि का इतिहास

स्वदेश या देशज भूमि के अर्थ में अपनी मातृभूमि के लिए कई तरह के शब्द प्रयोग किए जाते हैं, जैसे– पितृभूमि, मातृभूमि और पैतृक भूमि। जब एक मलयाली (देशज मलयालम वक्ता) केरल को मलयाली धरती (*मातृभूमि*) के रूप में प्रयुक्त करता है तो केरल एक देश नहीं बल्कि एक भाषाई क्षेत्र के रूप में बदल जाता है। उसी प्रकार कोई ऐसा कह सकता है कि केरल मेरा जन्मस्थान (*जन्मनाडु*) है, जिससे यह स्पष्ट नहीं किया जा सकता है कि वह मलयाली (मलयालम मातृभाषी) है या नहीं। क्योंकि केरल कई भाषाओं का राज्य है, इनमें मलयालम राज्य की प्रमुख भाषा है। केरल में कोई भी गैर-मलयाली (जिनकी मातृभाषा मलयालम से इतर है) स्थायी निवासी भी इसे अपनी मातृभूमि घोषित कर सकता है या गैर-मलयाली केरल भाषी की भी मातृभूमि हो सकती है। सामान्यतः मातृभूमि और भाषाई पहचान पर्यायवाची पद रूप में प्रचलित है। "मैं केरल का हूँ", कहने का तात्पर्य उसका मलयालम भाषी होना ही है। स्थानीय देशभक्ति मातृभाषा की अवधारणा के माध्यम से व्यक्त की जाती है। भारतीय संदर्भ में मातृभाषा पारिभाषिक रूप से प्रवाहमान (fluid) है। परिभाषा की तरलता (fluidity) को अलग रखते हुए मलयालम का तात्पर्य माता-पिता, पूर्वजों, और जन्मभूमि की ज़ुबान से है। एक अवधारणा के रूप में मातृभूमि का उद्‌भव होमटाउन से वतन की भावना में प्रतिस्थापित कर ले तो मलयालम मातृभाषा की जगह उपलब्ध होती है।

प्राचीन केरल का इतिहास यह बताता है कि *मलनाटु* के निवासी *चेंतमिल* बोलने वाले समूह थे। मलयालम के इतिहास से यह भी पता चलता है कि कुलशेखरों के नेतृत्व वाले दूसरे चेर शासनकाल में मलयालम को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता दी गई थी। प्राप्त प्रमाणों से पुष्टि होती है कि राजशेखर वर्मा के निर्देशानुसार 832 ईस्वी में मलयालम पहली बार लिपिबद्ध (शिलालेख) हुई। बारहवीं शताब्दी से इसके साहित्य के भी साक्ष्य मिलते हैं। इन साक्ष्यों से अनुमान लगाया जाता है कि कुलशेखरों (800-1102) द्वारा, जो कोल्लम से कोषिकोड तक के प्रदेशों के स्वामी थे, आधिकारिक तौर पर अपने राज्य में तमिल से भिन्न एक क्षेत्रीय भाषा को मान्यता दी गई थी। इसका तात्पर्य यह है कि इन क्षेत्रों में मलयालम का विकास कोटुमतमिल की पश्चिम तटवर्ती बोलियों से हुआ।

उस कालखंड के दौरान मलयालम ने उन लोगों को एक मातृभूमि प्रदान की, जो उस विशेष राजनीतिक इकाई से जुड़े हुए थे। बाद में मलयालम को एक प्रांतीय भाषा का दर्जा मिला। त्रावणकोर और कोच्चि स्वतंत्र इकाइयाँ थीं और मलाबार मद्रास प्रेसीडेंसी में बना रहा। एक भाषा के बजाय यह बोलियों में जीवित रही। स्थानीय राजनीतिक संरक्षण ने इसके प्रांतीय अस्तित्व

का समर्थन किया। अन्य क्षेत्रों के विपरीत, त्रावणकोर की भाषा शुरुआत में पूरी तरह से मलयालम नहीं थी। बाद में, राजनीतिक एवं प्रशासनिक प्रक्रिया के कारण यह परिदृश्य बदल गया। भाषाई आधार पर राज्य के गठन ने मलयालम को राजनीतिक एकता का सेतु बना दिया। मलयालम केरल राज्य क्षेत्र में एक ऐसी भाषा के रूप उभरी, जो एक जगह तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह कई जगहों पर मौजूद थी, जिसने प्रत्येक क्षेत्र की बोलियों को अपने में समाहित किया। क्षेत्रीय भाषाओं में शामिल होने के कारण मलयालम ने प्रत्येक स्थान पर अपना अलग रूप विकसित किया और विभिन्न स्थानों पर अपनी संपूर्णता में विकसित होती गई। इस प्रकार भाषाई विलक्षणता के साथ द्वंद्वात्मक विरासत को जोड़ते हुए मानक मलयालम प्रत्येक मलयाली (मलयालम मातृभाषी) को एक मातृभूमि प्रदान करती है। मलयालम एक पसंदीदा बोली एवं पसंदीदा भाषा दोनों बन गई थी। यह एक लचीली और समावेशी मातृभूमि बन गई।

आलोचना में कोई यह कह सकता है कि मानक मलयालम राजनीतिक क्षेत्र में रहने वाले सभी लोगों के लिए समावेशी नहीं है। निम्न (subaltern) भाषाई पहचान, जैसे- जनजाति, दलित, धार्मिक अल्पसंख्यक और कुछ क्षेत्रीय बोलियों को मानक मलयालम में समान रूप से मान्यता नहीं है। लेकिन इस तरह का भाषाई हाशियाकरण (linguistic marginalisation) मलयालम की मातृभूमि (homeland) पर सवाल नहीं उठाता है। *मलयाली* और *केरलीयन* दोनों मातृभूमि की सीमा को बताने वाले पर्यायवाची शब्द हैं। पहला भाषाई पहचान है तो दूसरा स्थान की पहचान है। केरल न केवल मलयालियों की मातृभूमि है, बल्कि स्थायी निवास करने वाले गैर-मलयालियों की भी मातृभूमि है। जिस भाषा में किसी के पूर्वज बात करते थे, वह स्थान जहाँ उसके निवासी रहते थे, वह स्थान जिस पर कोई भरोसा रखता था, वह उसकी अपनी मातृभूमि होती है। केरल के बाद लक्षद्वीप मलयालम भाषा का दूसरा घर है।

मलयाली के बदलते अर्थ

"मलयाली" शब्द अनेक अर्थ देता है। मलयालम भाषी समुदाय और केरल के मूल निवासियों के दृष्टिकोण को समझने के लिए किसी को अंदरूनी लोगों (निवासी मलयालम भाषी और गैर-मलयालम भाषी), अनिवासी केरलवासियों, और बाहरी लोगों के लिए इसके बदलते संदर्भ को समझना चाहिए। मलयाली शब्द मुख्यत: मलयालम बोलने वालों की निष्ठा और एकता को दर्शाता है। इस पर मौजूदा साहित्य का उद्देश्य अर्थ संबंधी विविधताओं को स्पष्ट करना नहीं है। उक्त शब्द की सांस्कृतिक व्यापकता अप्राप्य प्रतीत होगी। मलयाली शब्द विभिन्न अर्थपूर्ण छवियों को समाहित करता है, जो आंतरिक और बाहरी पहचान को समझने के प्रमुख संकेतक हैं। मलयाली भाषी समाज के साथ-साथ इसमें एक व्यक्ति की भागीदारी सदस्यता का भी प्रतीक है। दूसरे अर्थ में, इस शब्द और मातृभूमि केरल के बीच बहुत निकटवर्ती संबंध है और यह स्पष्ट है कि इसका व्यापक रूप से क्षेत्रवाद के पर्याय के रूप में उपयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है अपने लोगों का मातृभूमि के प्रति झुकाव।

संभवतः मलयाली होने का अर्थ केरल में रहने के अलावा और भी बहुत कुछ है। केरल में रहने वाले सभी लोग मलयालम भाषी नहीं हैं। लेकिन स्पष्ट रूप से यह शब्द न केवल जन्मजात, बल्कि भाषाई पहचान को भी दर्शाता है। यह आंतरिक और बाहरी पहचान पर समान रूप से लागू होता है। नृजातीय और क्षेत्रीय विविधता के बावजूद, मलयालम भाषिक समुदाय एक मौलिक एकता, साझा संस्कृति, साझा मूल्यों, साझा आदर्शों और साझा दृष्टिकोण पर निर्भर करता है, जो एक साझा भाषा में परिलक्षित होते हैं। मलयाली शब्द सांस्कृतिक परिदृश्य की विरासत को दर्शाता है। यह एक संस्कृति से परिपूर्ण प्रतीक है। यह मलयालम संस्कृति का एक अत्यंत संवेदनशील संकेतक है। इसमें स्वयं और अन्य के होने का अर्थ शामिल है। यह भाषाई और देशी संवेदनशीलता पर बल देने के साथ पारंपरिक आत्म छवि को दर्शाता है। दोनों केरल के लोगों के लिए अविभाज्य हैं, जिनके पास मलयालम विरासत का श्रेय (credit) है। यह उनकी मातृभूमि और भाषा के प्रति प्रेम है और इस पर वे गर्व करते हैं, जिससे

बाहरी लोग भी उन्हें पहचान पाते हैं। द्विभाषी और द्विसांस्कृतिक अंदरूनी लोगों (insiders) के लिए यह मुख्य रूप से राज्य के भीतर भाषाई और सांस्कृतिक अन्य है और बाहर एक घोषित स्वयं है। यह दायित्वोन्मुख है और उनके सांस्कृतिक या भाषाई अधिकारों के अनुसार भी उन्मुख (oriented) है। राज्य के बाहर उन्हें केरलवासियों के बजाय मलयाली के रूप में जाना जाता है, ताकि उन्हें केरल का मूल निवासी कहा जा सके। ऐसे अवसरों पर यह शब्द अल्पसंख्यक भाषाई स्वत्व को थोड़ा छिपा देता है।

दुनिया भर में मलयाली प्रवासी इस शब्द के अलग-अलग अर्थ बताते हैं। मलयाली लोगों को भारत के भीतर बाहरी लोगों द्वारा "मल्लू" कहा जाता है, जो उनके जन्म और भाषाई पहचान दोनों का प्रतीक है। यह शब्द उस व्यक्ति के यहाँ के निवासी होने की गारंटी नहीं देता है। ऐसे संदर्भ का अर्थ संबंधी निहितार्थ काफ़ी मान्य है। प्रस्तुत शब्द के मलयालम भाषी या केरल के निवासी होने का कोई अर्थ नहीं बनता। कई संदर्भों में, सांस्कृतिक और या भाषाई रूप से अलग-थलग व्यक्तियों को उनके ऐतिहासिक संबंधों अर्थात् भूमि या भाषा से माता-पिता की संबद्धता के कारण इस शब्द से संदर्भित किया जाता है। प्रस्तुत शब्द से उन पीढ़ियों का पता चलता है, जिन्होंने केरल के सांस्कृतिक परिदृश्य को कभी नहीं अपनाया। पहली पीढ़ी के प्रवासियों को यह शब्द एक भिन्न रंग-रूप प्रदान करता है। लेकिन गैर-निवासियों की आने वाली पीढ़ियों के लिए यह पैतृक जुड़ाव बना रहता है। गैर-विरासत वाले मलयाली निवासी के लिए यह एक नई समाजशास्त्रीय विशेषता है। इस समूह को केरल की अनूठी विरासत भाषा को साझा किए बिना ही मलयाली होने का विशेषाधिकार भी प्राप्त होता है। केरल के इतिहास की कुंजी और क्षेत्रीय पहचान का एक महत्त्वपूर्ण कारक भाषाई रूप से अलग-थलग रहने वाले निवासियों के लिए संशोधित किया गया है। गैर-निवासी मलयाली उप-संस्कृति द्वीप जो निवासियों के बीच से उभरे हैं, उक्त चर्चित शब्द में सांकेतिक जुड़ाव है। हालाँकि, बाहरी और आंतरिक पहचान में इस शब्द का उपयोग आमतौर पर कैसे किया जाता है, इसका सटीक अर्थ निकालना मुश्किल है। कोई यह दावा नहीं कर सकता कि "मलयाली" का अर्थ मलयालम भाषी से है या केरल के मूल निवासी से है। मलयाली शब्द का अर्थ कोई विशिष्टता नहीं दर्शाता है। यह कई रूपों में प्रकट होता है, स्थानिक-अस्थायी रूप से बदलता है, परस्पर जुड़ा है और लगातार नई अर्थपूर्ण छवियाँ प्राप्त करता है।

केरल में द्विभाषिकता

द्विभाषिकता का चलन काफ़ी महत्त्वपूर्ण है। केरल में जहाँ मातृभाषा बोलने वालों का प्रभाव मज़बूत है, वहीं द्विभाषिकता पर पकड़ भी उल्लेखनीय है।

केरल में बोली जाने वाली 16 भाषाएँ, बोलने वालों की संख्या के क्रमानुसार, निम्नलिखित हैं – मलयालम, तमिल, तुलु, कोंकणी, कन्नड़, तेलुगु, मराठी, गुजराती, हिंदी, उर्दू, बांग्ला, ओडिया, नेपाली, पंजाबी, अंग्रेज़ी और सिंधी। काडार, कोरगा, मलकुंडी, आदि जनजातीय भाषाएँ भी स्थानीय रूप से बोली जाती हैं।

केरल में 225 विभिन्न समुदाय हैं। थोड़ी-बहुत भारोपीय भाषाओं के बोलने वालों के अतिरिक्त शेष द्रविड़ भाषाएँ बोलते हैं। इनमें 112 समुदाय मलयालम, 39 तमिल, 24 तुलु, 15 कन्नड़, 12 तेलुगु, 5 मराठी, 4 कोंकणी, और 2 उर्दू बोलते हैं। अंग्रेज़ी, पंजाबी एवं गुजराती प्रत्येक एक समुदाय द्वारा बोली जाती है। काडार, कोरगा और मुदुगा आदि भाषाएँ अपने समुदाय के नाम से जानी जाती हैं। विशवन मलकुंडी बोलते हैं। मोकयर समुदाय कन्नड़ और मलयालम बोलने वाले हैं। वीरशैव समुदाय तमिल एवं मलयालम दोनों बोलते हैं तथा देवंगा और मुदुगा समुदाय तेलुगु और कन्नड़ दोनों बोलते हैं।

केरल में क्षेत्रीय द्विभाषिकता के तीन प्रमुख पैटर्न देखे जा सकते हैं। एक सामान्य प्रवृत्ति है, जो त्रिभाषा शिक्षा नीति और बाहरी प्रवासन के परिणामस्वरूप विकसित हुई। दूसरा, अल्पसंख्यक निवासी, जो मलयालम के साथ-साथ अपनी मातृभाषाओं को भी कायम रखते हैं। तीसरा, जनजातीय द्विभाषिकता है। जनजातीय संदर्भ में ऐसे अंतर न केवल भाषाई स्तर पर बल्कि जीवन स्तर, सत्ता, स्थिति, जनसांख्यिकी, साक्षरता, शहरीकरण, शिक्षा, जनसंख्या संरचना, आदि में भी दिखाई देते हैं। भारत में जनजातीय

द्विभाषिकता अनौपचारिक रूप से अर्जित की जाती है, लेकिन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों से प्रेरित है। यह बिना किसी सांस्कृतिक आत्मसात के बहुसंख्यक भाषा के भाषाई प्रभुत्व का एक उदाहरण है। (अन्नामलइ, 2000) सत्ता, जनसंख्या आदि में विषमता के कारण भारत में जनजातीय द्विभाषिकता एकदिशात्मक है।

जहाँ तक लिंग आधारित द्विभाषिकता का संबंध है, तुलनात्मक रूप में उच्च महिला साक्षरता एवं प्रवासन के कारण केरल में महिला द्विभाषिकता अधिक है।

केरल में अल्पसंख्यक भाषी समुदायों के संदर्भ में द्विभाषिकता के पैटर्न को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। यहाँ सीमावर्ती ज़िलों में पड़ोसी राज्यों की भाषाओं का प्रभाव पाया जाता है। उत्तरी ज़िले कासरगोड में द्विभाषी हैं, पड़ोसी राज्य कर्नाटक की तुलु और कन्नड़ भाषाओं में पारंगत हैं, उसी प्रकार कन्नड़ और तुलु मूल की अल्पसंख्यक आबादी मलयालम में भी पारंगत है। तिरुवनंतपुरम और पालक्काड ज़िलों में निवास करने वाले तमिल अल्पसंख्यक मलयालम और तमिल में द्विभाषी हैं तथा सीमावर्ती आबादी तमिल में भी पारंगत है। कोंकणी भाषियों में भी द्विभाषी हैं, जिनमें अधिकांश मलयालम को अपनी मातृभाषा के समान व्यवहार में लाते हैं। केरल की जनजातियाँ प्रायः द्विभाषी हैं, जो अपने समुदायों में मातृभाषा और अंतर-समूह संचार के लिए मलयालम का प्रयोग करती हैं।

ओडिशा, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम के मज़दूर भी अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त धीरे-धीरे मलयालम का प्रयोग सीख रहे हैं।

भारत के विभिन्न इलाकों में प्रवासी मलयाली आबादी भी द्विभाषी है और मलयालम के अलावा सामान्यतः स्थानीय भाषा या हिंदी का प्रयोग करती है। अन्य राज्यों में बसने वाले प्रवासी मलयाली भी आजीविका चलाने के लिए आसानी से द्विभाषी बन रहे हैं।

अल्पसंख्यक आबादी में अधिकतर तमिल हैं। उनमें से ज़्यादातर केरल के तिरुवनंतपुरम, पालक्काड और इडुक्की ज़िलों में लंबे समय से रह रहे हैं। तमिल समुदायों में तमिल ब्राह्मण और सुनार पूरे केरल में पाए जाते हैं। तमिल आबादी में पाया जाने वाला द्विभाषिकता का पैटर्न सभी ज़िलों में एकसमान नहीं है। पालक्काड में बसी तमिल आबादी अपनी मातृभाषा तमिल को बनाए रखती है और भाषा के प्रति निष्ठा उनमें अधिक पाई जाती है। वे मलयालम जानते हैं, लेकिन चूँकि इस इलाके में मलयाली भाषी तमिल भी बोलते हैं इसलिए वे अपनी मातृभाषा को बनाए रखते हैं। इडुक्की के तमिल निवासी आसानी से दोनों भाषाएँ बोल लेते हैं और तिरुवनंतपुरम के अधिकतर समुदाय क्षेत्रीय भाषा में उच्च स्तर का बदलाव दिखाते हैं।

कोंकणी बोलने वाले समुदाय केरल में सबसे बड़ी दूसरी अल्पसंख्यक आबादी वाले हैं, जो कन्नूर, एर्णाकुलम, और आलप्पुषा ज़िलों में बसे हुए हैं। हालाँकि वे द्विभाषी हैं और मलयालम में भी दक्ष हैं, फिर भी अपने भाषाई व्यवहार और उसके संरक्षण में मातृभाषा कोंकणी का ही सहारा लेते हैं।

कन्नड़ भाषी अल्पसंख्यक कासरगोड और कन्नूर ज़िलों में बसे हुए हैं। इन इलाकों में कन्नड़, तुलु और मलयालम भाषा का प्रयोग होता है और सीमावर्ती इलाकों में सामान्यतः द्विभाषिकता कायम है। मलयालम आबादी को कन्नड़ मालूम है और कन्नड़ आबादी को मलयालम। दोनों एक-दूसरे से बहुत जल्दी घुलमिल जाते हैं।

पूरे केरल में पाए जाने वाले तुलु बोलने वाले "पोट्टी" समुदाय मलयालम की ओर प्रतिस्थापित हो गए हैं। कासरगोड के तुलु भाषी अपनी मातृभाषा के समान ही कन्नड़ के प्रति भी लगभग समान आकर्षण रखते हैं।

अधिकतर तेलुगु लोग पालक्काड ज़िले में बसे हुए हैं। पूरे केरल में तेलुगु लोग मलयालम भाषियों के बजाय स्थानीय तमिल भाषियों के प्रति अधिक आकर्षण दिखाते हैं। मातृभाषा के तेलुगु से तमिल में प्रतिस्थापन की एक प्रवृत्ति भी देखी गई है।

जनजातीय द्विभाषिकता ज़्यादातर मौखिक प्रकृति की है और यह राष्ट्रीय औसत (2001 की जनगणना के अनुसार 19.44 प्रतिशत) से अधिक है। अपने ग्रामीण आधार के कारण, जनजातीय द्विभाषिकता अपनी प्रकृति और उपयोग में अंतर्निहित अंतर के साथ शहरी द्विभाषिकता के विपरीत खड़ी है। जहाँ तक जनजातीय भाषा का संबंध है, जनजातियों की बोली जाने वाली भाषा की विविधता के कारण अधिकांश मलयालम (कणिक्कर, मल उल्लाडन आदि), तमिल (उदाहरण, मुदुवन, पलियन) या कन्नड़

(उदा- मलकुंडी, काट्टुनायिक्कन) की बोलियों में समाहित हो गई हैं। अन्य जनजातीय भाषाई भेदों को अलग भाषाओं के रूप में माना जा सकता है (जैसे, मुदुगा)। उत्तर में स्थिति तेज़ी से बदल रही है क्योंकि मैदानी इलाकों से लोग इस क्षेत्र में चले जाते हैं और जंगल तेज़ी से खेती योग्य भूमि में तब्दील हो रहे हैं। कुछ जनजातियों (जैसे, कनेक्कर, कुरिच्यन आदि) में जनजातीय भाषाओं से मलयालम में मातृभाषा परिवर्तन की प्रक्रिया तेज़ी से बढ़ रही है।

प्रमुख भाषिक समुदाय के साथ रहते हुए, जनजातियों को न केवल परिवर्तन की ताकतों को आत्मसात करना पड़ता है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दबावों का भी सामना करना पड़ता है। इस प्रकार, अन्नामलइ (2000) बताते हैं, "अल्पसंख्यक वक्ताओं ने पाया कि भाषाई राज्य में बहुसंख्यक समुदाय द्वारा उनके साथ भेदभाव उनकी उपलब्धि पर आधारित है, न कि भाषाई योग्यता पर। लेकिन भाषा की पहचान पर एक तरह से जुड़ाव है।" यह धारणा अल्पसंख्यक वक्ताओं को बोलीकरण (dialectalisation) (राज्य की प्रमुख भाषा के भीतर सामाजिक स्थिति) की कीमत पर प्रमुख भाषा की पहचान को आत्मसात करने के लिए प्रोत्साहित करती है। जनजातियों के बीच इस प्रकार के दृष्टिकोण को आकार देने वाले कारकों पर ध्यान देने के बजाय, हम इसे खुशी से आत्मसात करने के रूप में परिभाषित करते हैं। असमानता की स्थिति में आत्मसातीकरण (assimilation) कभी नहीं होता है। इस प्रकार मुख्यधारा में लाने की प्रक्रिया को वर्चस्व वाले अल्पसंख्यक (dominated minority) पर प्रभुत्व के आधिपत्य के रूप में समझा जाना चाहिए। इस संदर्भ में जनता की पसंद के मुद्दे को उठाना महत्त्वपूर्ण है। संपर्क स्थितियों में जनजातियों को उनकी अपनी प्राथमिकताओं से बाहर कर दिया जाता है, इस प्रकार वे अपनी भाषा की कीमत पर दूसरी भाषा को स्वीकारती हैं। द्विभाषिकता के कायम रहने से मातृभाषा का ह्रास होता है, जैसा कि भारत में लगभग आधी जनजातियों के साथ होता है।

सीमावर्ती क्षेत्रों में भाषाओं की निकटता द्विभाषियों की बातचीत में भाषाई हस्तक्षेप का कारण बनती है। यह ध्वनि से लेकर शब्द स्तर तक भाषा के सभी स्तरों पर स्पष्ट है। इस संबंध में सीमावर्ती इलाकों में कन्नड़ और तमिल का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

द्विभाषिक एक-दूसरे से बोलते हुए प्रायः कोड मिक्सिंग का सहारा लेता है। शिक्षित मलयालम भाषी जब अपने भाषिक समुदाय के किसी अन्य शिक्षित मलयाली से बात करते हैं तो अंग्रेज़ी शब्दों का बहुत ज़्यादा प्रयोग करते हैं।

केरल की भाषाई स्थिति में सम्मिलन (convergence) का पहलू एकतरफ़ा है। यानि सम्मिलन क्षेत्र की प्रमुख भाषा की दिशा की ओर है। यद्यपि यहाँ मलयालम भाषा का ही प्रभुत्व है। केरल के सबसे उत्तरी भाग में कन्नड़, तेलुगु और तुलु आदि का प्रभाव देखा जा सकता है तथा दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में तमिल भाषा का प्रभाव देखा जा सकता है।

मलयालम भाषा का इतिहास

मलयालम की आद्य-द्रविड़, आद्य-तमिल और मध्य तमिल वंशावली

भारतीय उपमहाद्वीप में बोले जाने वाले प्रमुख भाषा परिवारों में से एक के सामान्य नाम के रूप में द्रविड़ियन (dravidian) शब्द का प्रयोग पहली बार 1856 में रॉबर्ट काडवेल द्वारा किया गया था। यह संस्कृत शब्द *द्रविड़* (विशेषण- *द्राविड़*) का रूपांतर है, जो पारंपरिक रूप से कुछ अन्य संदर्भों में तमिल भाषा और तमिल भाषी दक्षिण भारतीयों को संदर्भित करता है। माना जाता है कि आधुनिक द्रविड़ भाषाएँ एक सामान्य पूर्वज आद्य-द्रविड़ (proto-dravidian) से उत्पन्न हुई हैं। वर्तमान द्रविड़ भाषा परिवार में 26 स्थापित भाषाएँ शामिल हैं, इसके अलावा लगभग 70 विशिष्ट जनजातीय बोलियों वाले समुदाय हैं। 26 भाषाओं को चार आनुवंशिक उपसमूहों में वर्गीकृत किया गया है :

(i) दक्षिण द्रविड़ (SD) : तमिल, मलयालम, इरुळा, कुरुंबा, कोडगु, तोडा, कोटा, बडगा, कन्नड़, कोरगा, तुलु।

(ii) दक्षिण मध्य द्रविड़ (SCD) : तेलुगु, गोंडी, कोंडा, कुई, कुवि, पेंगो, मंडा।

(iii) मध्य द्रविड़ (CD) : कोलामी, नायिकी, परजी, ओल्लारी, गडब।

(iv) उत्तर द्रविड़ (ND) : कुरुक, माल्तो, ब्राहुई।

दक्षिण द्रविड़ और दक्षिण मध्य द्रविड़ एक सामान्य स्रोत आद्य-दक्षिण द्रविड़ (PSD) से विकसित हैं। साझा ध्वन्यात्मक (phonalogical) नव खोजों में ये शामिल हैं–

(i) (आद्य-द्रविड़) *इ, *उ यथाक्रम निम्न स्वर *अ के पहले क्रमशः *इ, *ओ बनते हैं। (ii) (आद्य-द्रविड़) *च>श>ह>ओ यथाक्रम (दक्षिण द्रविड़) में, जो अब (दक्षिण मध्य द्रविड़) में प्रगतिशील है।

रूपपरक (morphological) नव खोजों में शामिल हैं : (i) (आद्य-द्रविड़) से उत्पन्न पूर्व रूपांतरण *_नान_ का समावेशी बहुवचन उत्तम पुरुष एकवचन *_नाःम/नाम_ सिवाय आद्य-द्रविड़, *_यान_ "मैं" के। (ii) सकर्मक और अकर्मक धातुओं से विकसित अनुनासिक स्फोट/अनुनासिक स्फोट प्लस क्रियाओं में विचलन। (iii) प्रेरणात्मक निर्धारक के रूप में प्रयुक्त रिफ्रलक्सस -_प्पि_।

प्रत्येक उपसमूह में कई नई खोजें हुई हैं। दक्षिण द्रविड़ में विशेष उल्लेखनीय हैं– (i) अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन सर्वनाम में -व्यस्व CV का लोप- जैसे *_अवन_ < (आद्य-द्रविड़) *_अवन-तु_ "वह आदमी", (ii) मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग सर्वनाम एकवचन -_अल_ का निर्माण, (iii) निजवाचक सर्वनाम -*_ए_ के पहले, सिवाय *_ए_ के, अवधारक (emphatic) चिह्नक *_तान_ का प्रयोग।

आद्य-द्रविड़ में पाँच ह्रस्व स्वर *इ, *ए, *अ, *ओ, *उ, और उसके समान दीर्घ स्वर हैं। प्राचीन और आधुनिक तमिल और मलयालम भाषाओं में दस स्वरों की विरासती प्रणाली को कायम रखा गया है। कोडगु और अधिकांश नीलगिरि भाषाओं (इरुळा, टोडा, कुरुंबा आदि) ने मूर्धन्य व्यंजनों के बाद या कभी वर्त्स्य व्यंजनों द्वारा भी अग्र और मध्य केंद्रीकृत व्यंजनों का विकास किया है। एमेन्यू (1984) का मानना है कि तमिल मलयालम में अग्र स्वरों के प्रारंभ में कंठ्य ध्वनियों के तालव्यीकरण शुरू होने से पहले ही नीलगिरि भाषाएँ पूर्व तमिल से अलग हो गई होंगी, यानि तमिल पाठों (text) का संकलन पहली से तीसरी शताब्दी ई.पू. के आसपास शुरू हुआ होगा। प्राचीन तमिल और मलयालम में तालव्यीकरण का अभाव, जब अग्र स्वर मूर्धन्य व्यंजनों (कुछ वर्त्स्य व्यंजन) के बाद प्रयुक्त होने लगे, अग्र स्वरों का केंद्रीकरण इन सभी भाषाओं की विरासत का वैशिष्ट्य है। कोटा ही एकमात्र उदाहरण है, जिसमें यह विशेषता दिखाई नहीं देती।

आद्य-द्रविड़ में व्यंजनों के घोष और महाप्राणीकरण की विशिष्ट विशेषताएँ नहीं थीं। वर्त्स्य और मूर्धन्य व्यंजन शब्दांत में नहीं आते, प्रारंभिक व्यंजन गुच्छ भी नहीं थे, मध्यवर्ती गुच्छ द्वित्व व्यंजन स्पर्श होते थे, नासिक्य या नासिक्य समवर्ग स्पर्श तरल (liquid) या अर्ध स्वर होते थे।

प्राचीन तमिल में व्यंजनों का आविष्कार आद्य-द्रविड़ के समान ही है। उसमें 16 व्यंजन– छह अघोष स्पर्श ([प], [ट], [र] [त] [क्त] [क]), चार नासिक्य ([म], [नः], [न], [ङ]), एक कंपित ([र]), तीन वर्त्स्य ([टः], [ल], [रः]) और दो अर्ध स्वर ([व], [य]) हैं।

प्राचीन तमिल में तीन विभिन्न त, टः, ट (दंत्य, वर्त्स्य, मूर्धन्य) हैं। प्राचीन मलयालम और आधुनिक मलयालम में भी यही पद्धति अपनाई गई है। आधुनिक तमिल में केवल दंत्य और मूर्धन्य स्पर्श हैं। आधुनिक तमिल स्पर्श व्यंजनों की परंपरा में, मुख्यतः उधार शब्दों में, वाणी-विरोधाभास (voice contrast) दिखता है। प्राचीन तमिल में शब्दारंभ के नौ ([प], [त], [च], [क], [म], [न], [नः] [व], [य]) और शब्दांत के नौ ([म], [न], [नः], [र], [ल], [ळ], [ष], [व], [य]) व्यंजन हैं। मलयालम में संस्कृत से बड़े पैमाने पर उधार लेकर घोष और अघोष महाप्राण स्पर्श व्यंजनों का विकास हुआ है। इसकी छह नासिक्य ध्वनियाँ ([म], [नः], [न], [ण], [ञ], [ङ]) तत्संबंधी अघोष स्पर्श ([प], [ट], [र], [त], [च], [क]) भी हैं। आद्य-द्रविड़ की अघोष प्रवाही ध्वनियाँ जो

---

*प्राचीन शब्द जो वर्तमान में प्रयोग में नहीं हैं।

मध्यकाल तक साहित्यिक भाषाओं के रूप में प्रयुक्त थीं, आधुनिक तमिल में उनके बोली रूप को ही कायम रख पाए, लेकिन मलयालम में ये ध्वनियाँ वैसे ही सुरक्षित हैं। अधिकांश तमिल बोलियों में ये *ल* और *य* में विलय भी हुई हैं।

तमिल और मलयालम के बीच में कई पारस्परिक संबंध हैं। सभी दक्षिण द्रविड़ भाषाओं की नई उद्भावनाओं की तुलना में आद्य-दक्षिण द्रविड़ के कई गुण तमिल मलयालम में सुरक्षित रखे हैं– (i) आद्य-द्रविड़ और आद्य-दक्षिण द्रविड़ *ळ का प्रयोग केवल *लीलातिलकम्* में ही हुआ है। मलयालम, प्राचीन कन्नड़, और बोली जाने वाली तमिल की कुछ बोलियों में; कन्नड़ में न/ष़ अंतरमौखिक रूप में इसका विलय हुआ है। उदाहरण के लिए, तमिल *पळा*, मलयालम *पष़या*, कन्नड़ *पळा, हला* (प्राचीन); तमिल और मलयालम में *पालु*, कन्नड़ *पन* "पकना"। (ii) आद्य-दक्षिण द्रविड़ द्वित्व व्यंजन वर्त्स्य स्पर्श *(टटः)* तमिल और मलयालम में संरक्षित था और यहाँ तोडा, कोटा में भी, लेकिन कन्नड़ में *(*टटः)* का *(*तत)* में विलय हुआ। उदाहरण, *पट्टुः* "मज़बूत पकड़", तोडा, कोटा में *पट्*, कन्नड़ में *पट्टुः* (चिपक)। (iii) आद्य-द्रविड़ और आद्य-दक्षिण द्रविड़ *न्टे को प्राचीन तमिल ने बरकरार रखा है; आरंभिक प्राचीन मलयालम जैसे- *न्न्र*, जबकि कन्नड़ में इसका विलय होकर न्ड और न्न्र बना। उदाहरण, तमिल *मन्न्रु*, कन्नड़ *मन्डु* (सभागार)। तमिल *कन्न्रु*, मलयालम *कनःनु*, कन्नड़ *कारु* (बछड़ा)। इससे भी ज़्यादा महत्त्वपूर्ण वे समभाषांश सीमारेखाएँ (isoglosses) हैं, जो विशिष्ट सामान्य तमिल और मलयालम नवाचारों को दर्शाती हैं। इनके अतिरिक्त, तमिल और मलयालम के दो अतिविशिष्ट ध्वन्यात्मक विकास हैं– (i) आद्य-दक्षिण द्रविड़ *ए, *ओ > इ, उ जो *अ* से व्युत्पन्न प्रत्यय के पहले लगते हैं। उदाहरण के लिए, **येला, यिला* "पत्ता", **ओला > उला* "चूल्हा"। (ii) अग्र स्वर से पहले मूर्धन्य व्यंजन *ट, ण, ळ, ल* के नहीं होने से *क > च* का तालव्यीकरण। उदाहरण, आद्य-दक्षिण द्रविड़ **कीरु* "चिथड़ा"। तमिल और मलयालम *चीर्*, कन्नड़ *कीरु*। ये दोनों समभाषांश सीमारेखाएँ दक्षिण भारत के दो बड़े बोली क्षेत्रों को अलग करती हैं, जिनमें एक, तमिल मलयालम या पूर्व-साहित्यिक तमिल क्षेत्र और दूसरा कन्नड़ क्षेत्र। तमिल-मलयालम तालव्यीकरण प्रारंभिक तमिल स्रोतों में पाया जाता है, और इसलिए इसे एक पूर्व-साहित्यिक एवं पूर्व-पुरालेखी यानि प्रागैतिहासिक भाषाई परिवर्तन माना जाना चाहिए।

तमिल और मलयालम में कई समान ध्वन्यात्मक (phonological) और रूपात्मक विशेषताएँ हैं, जैसे– उद्देश्यपूर्ण विभिक्त प्रत्यय *-आन*, प्रेरणार्थक प्रत्यय *-व*, और *-प्पि* साबित करते हैं कि तमिल के भाषाई विकास के उस पड़ाव पर, जिसे वृद्ध तमिल (late old Tamil) एवं प्रारंभिक मध्य तमिल कहा जाता है, मलयालम मूल रूप से एक भाषा थी, जिसमें पूर्व-मलयालम उस सामान्य चरण के बोले जाने वाले रूप की एक भिन्न पश्चिमी बोली थी।

कुछ नवाचार केवल मलयालम की विशेषता हैं। अभिलेखीय साक्ष्यों के अनुसार, ये नवाचार नौवीं और दसवीं शताब्दी में प्रकट होने लगे हैं। इनमें से कई, उन्हीं प्रवृत्तियों के प्रतिबिंब मात्र हैं, जो तमिल की अनौपचारिक बोली में पाई जाती हैं। जैसे कि निम्न उदाहरणों में देखा जा सकता है– (i) मलयालम स्वर ऊ और इसका शब्दांत में *ए* होना, जैसे– *आडा* (कपड़ा), *आडे* (बकरी), इट्टु (रखा), इट्टे (जो रखे)। (ii) दंत्य और वर्त्स्य अनुनासिक वर्ण के बीच द्वितीय माध्यमिक ध्वनि भेद उत्पन्न होता है। जबकि बोलचाल की तमिल और आधुनिक तमिल में दोनों के बीच का अंतर चित्रात्मक होता है। (iii) **-अय* का *-अ* में स्थानापन्न होना, उदाहरण के लिए, *अमयिच्च->अमच्च* (दिया गया)। (iv) अनुनासिक एवं स्फोट ध्वनियों का पुरोगामी समीकरण > अनुनासिक प्लस अनुनासिक, सिवाय मूर्धन्य और ओष्ठ्य के।

इन्हें और अन्य समान विशेषताओं को परिभाषित करने वाली ये समभाषांश सीमारेखाएँ नौवीं शताब्दी के अंत से बारहवीं शताब्दी तक दिखाई देती हैं। हालाँकि, बारहवीं शताब्दी से पहले केरल की भाषा कुछ हद तक सीमावर्ती तमिल क्षेत्र की समकालीन भाषा के समान थी, चाहे वह मध्य तमिल हो या पुरानी तमिल। इसके बाद आसपास के तटीय क्षेत्रों की तमिल बोलियों में कई नवीनताएँ दिखाई देने लगीं, जिससे मलयालम को केरल की एक स्वतंत्र भाषा के रूप में द्रविड़ भाषा परिवार में गिने जाने के लिए दबाव डाला जाने लगा। मलयालम भाषा का तमिल, इरुळा, कुरुंबा, तोडा, कोटा, कोडगु, बडगा, कोरगा और तुलु से गहरा

संबंध है और इन भाषाओं को द्रविड़ परिवार के दक्षिण द्रविड़ समूह में रखा गया है। फिर भी, मलयालम की नज़दीकी तमिल के साथ सबसे अधिक है, क्योंकि मलयालम की उत्पत्ति आद्य-तमिल-मलयालम से हुई है। इसमें ज़्यादातर विविधताएँ आठवीं शताब्दी के बाद से केवल चार या पाँच सौ वर्षों के भीतर उत्पन्न हुईं, इसलिए मलयालम तमिल से अलग एक स्वतंत्र भाषा के रूप में अस्तित्व में आने लगी।

मलयालम भाषा की व्युत्पत्ति

मलयालम भाषा का साहित्यिक इतिहास आठ शताब्दियों से अधिक पुराना है। नौवीं शताब्दी का राजशेखर का वाष़प्पिल्लि अभिलेख इस भाषा में पहला अभिलेख माना जाता है। इसका प्रारंभिक साहित्य तीन विभिन्न परंपराओं से होकर विकसित हुआ है– (i) *पाट्टु* की तमिल परंपरा, शास्त्रीय गीत जैसा कि पहली साहित्यिक कृति *रामचरितम* में दर्शाया गया है; (ii) *मणिप्रवाळम* की संस्कृत परंपरा, एक साहित्यिक नवाचार जो *भाषा* (देसज भाषा) और *संस्करित* (संस्कृत) के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण को चित्रित करता है, जैसा कि *वैशिकतंत्रम्* में है, और (iii) मुख्य रूप से स्वदेशी तत्त्वों से संबंधित लोक गीतों और गाथा गीतों की मूल परंपरा *भाषाकौटिलीयम* सरल भाषा में लिखा गया सबसे प्राचीन गद्य है। ये तीनों परंपराएँ बारहवीं शताब्दी की हैं। आधुनिक मलयालम साहित्य उपन्यास, कविता, गद्य, नाटक, कहानी, जीवनी और साहित्यिक आलोचना से समृद्ध है।

मलयालम लेखन प्रणाली की उत्पत्ति वट्टेष़ुत्तु से हुई है। इसका पता अखिल भारतीय ब्राह्मी लिपि से लगाया जा सकता है। इंडो-आर्यन भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाली ग्रंथलिपि के प्रतीकों को मिलाकर यह प्रणाली लंबे समय तक जारी रही। लेखन *अक्षर* (चित्राक्षर अथवा ग्राफिक्स शब्दांश) की अवधारणा पर आधारित है, जिसमें ग्राफिक तत्त्वों को इकाइयों के रूप में पढ़ा जाता है, हालाँकि व्यक्तिगत स्वर और व्यंजन आसानी से पहचाने जा सकते हैं। 1970 के दशक में लागू किए गए लिपि सुधारों ने संयुक्त व्यंजन और "उ" स्वर के साथ विभिन्न व्यंजनों के संयोजन से सरल लेखन प्रणाली बनाई। वर्णविन्यास अधिकतर ध्वन्यात्मक (phonemic) है और प्रत्येक स्वर के लिए अलग लिपि (कुछ अपवादों के साथ) है। दंत्य और वर्त्स्य नासिक्य एकवचन (नः और न) एक समान लिपि (ന) में अपने दीर्घ रूप में लिखे जाते हैं। कई लिपियाँ घड़ी की सुई की दिशा अर्थात् दक्षिणावर्त दिशा के अनुसार ही लिखी जाती हैं। कुछ मामलों में यह एकल वर्ण के साथ दक्षिणावर्त (clockwise) और वामावर्त (anti-clockwise) या कभी-कभी इसके उलट भी होती है। मलयालम लिपियाँ सरल से जटिल उपवर्ण (allographic) निरूपण करती हैं। द्वित्व व्यंजन और विषम तत्त्व व्यंजन समूह व्यंजन को एक साथ या एक के ऊपर एक लिखकर अलग-अलग चिह्नित करते हैं। इसके अतिरिक्त, व्यंजनों के अन्य संयोजन भी हैं, जो ग्राफिक चित्रण में शायद ही कभी नियमित पैटर्न का अनुसरण करते हैं। शब्द की अंतिम स्थिति में छह व्यंजन *(म, न, नः, र, ल, ळ)* लिखने के लिए अलग-अलग प्रतीक हैं।

मलयालम व्याकरण परंपरा चौदहवीं शताब्दी में *लीलातिलकम* से आरंभ हुई। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में यूरोपियों का योगदान महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर हर्मन गुंडर्ट का *मलयाल भाषा व्याकरणम्* (1851, 1868)। देशी विद्वानों ने भी उन्नीसवीं शताब्दी में इस क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया, जैसे– जॉर्ज मात्तन *(मलयाळमयुटे व्याकरणम्*, 1873), कोवुण्णी नेटुंङाडि (*केरल कौमुदी*, 1878) आदि। सबसे ज़्यादा उपयोग ए.आर. राजराजवर्मा के *केरल पाणिनीयम्* (1816) का हुआ है। इसके बाद एल.वी. रामस्वामी अय्यर का, 1925 में मलयालम भाषा विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर, अभूतपूर्व योगदान है।

पिछले चार दशकों में आधुनिक भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर कई उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। कई शताब्दियों तक फैले लिखित ग्रंथों से लेकर जैसे कि *रामचरितम* से सोलहवीं शताब्दी के *अध्यात्मरामायण* तक क्षेत्रीय, सामुदायिक और आदिवासी बोलियों तक का अध्ययन विभिन्न तकनीकों के अनुप्रयोग से किया गया, ताकि मलयालम का ऐतिहासिक व्याकरण रचा जाए,

जिसकी अब भी माँग है। (इनमें अधिकांश कार्य केरल विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग के कई शोधार्थियों के शोध निबंधों में देखा जा सकता है।)

नौवीं शताब्दी से पहले पश्चिम घाट के दोनों भागों में रहने वाले लोग एक ही भाषा बोलते थे, जिसमें बोली संबंधी मतभेद थे। दोनों क्षेत्रों में रहने वाले साहित्यकारों की साहित्यिक रचनाओं में प्रयुक्त भाषा भी एक ही थी। इलंको अडिकल, कुलशेखर आलवार जैसे विख्यात लेखक पश्चिमी तट से संबंध रखते थे। संगम साहित्य को तमिलनाडु और केरल की साझी विरासत माना जाता है। अपने विकास के दौरान पश्चिमी तट की भाषा ने इतिहास के विभिन्न चरणों में अलग-अलग प्रभाव देखे। तमिल का प्रभुत्व मलयालम भाषा की प्रारंभिक विशेषता रही। पश्चिम घाट के पूर्वी भाग में यह साहित्यिक और शैक्षिक भाषा का स्थान ग्रहण कर चुकी थी, लेकिन पश्चिमी तट पर यह स्थान तमिल को प्राप्त था, जहाँ मलयालम बोलचाल की भाषा थी। धीरे-धीरे बोलचाल की इस भाषा का रुतबा बढ़ता गया और इसे शाही दस्तावेज़ों में प्रयुक्त किया जाने लगा।

यद्यपि मलयालम के विकास के विभिन्न चरणों को लेकर विद्वानों में कई मतभेद हैं, लेकिन ऐतिहासिक घटनाओं और परिवर्तनों के आधार पर इसे आसानी से तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है। नौवीं से बारहवीं शताब्दी तक प्रारंभिक मलयालम काल, बारहवीं से सोलहवीं शताब्दी तक मध्य मलयालम काल और सोलहवीं शताब्दी के बाद से आधुनिक मलयालम काल।

संगम साहित्य और मलयालम भाषा

संगम साहित्य (पहली से तीसरी शताब्दी) तमिल-मलयालम की सबसे पुरानी साझी विरासत का परिचय देता है। संगम साहित्य की मुख्य उपलब्धियों में *आठ चयनिकाएँ (एट्टुत्तोकय)* जिसमें 2000 से अधिक पद्य हैं, *दस ग्रामकाव्य (पाट्टुप्पत्तु)* जिसमें *अकम* (प्रेम और रोमांस के विषय पर) और *पुरम* (राजाओं की स्तुति) शामिल हैं। आठ चयनिकाओं (anthologies) में *पतिट्टुःप्पाट्टु, पुरःनाःनूःरुः, अकनाःनूःरुः, नट्टिःनेय, कुरुंतोकय, ऐकुरुंनूरु, कलित्तोकय,* और *परिपाटल* हैं। दस ग्रामकाव्यों में *तिरुमुरकाट्टुःप्पाटय, पोरुनराट्टुपाटय, चिरुपाञाटुप्पाटय, पेरुंपाञाट्टुपाटय, मुल्लैप्पाट्टु, मतुरईक्कांचि, नेटुनालवाटय, कुरुंञिप्पाट्टु, पट्टुञाप्पाटय* और *मलयपाटुकाटाम्* हैं। यह साहित्यिक निधि न केवल एक-दूसरे से बाद में अलग हुए मलयालम और तमिल समाज के साझा अतीत का दस्तावेज़ है, बल्कि यह भी याद दिलाती है कि तमिल और मलयालम दोनों समाज एक-दूसरे पर निर्भर हैं। संगम साहित्य न तो पूरी तरह से वर्तमान तमिल है और न ही मलयालम और न ही यह किसी एक राज्य का विशिष्ट स्थलाकृतिक, नृजातीय, सामाजिक-सांस्कृतिक या राजनीतिक विवरण देता है। दोनों राज्यों के लिए यह एक साझी विरासत है। संगम साहित्य में केरल की अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और भाषाई विरासत है, इसके बावजूद मलयालम ने बाद के समय में एक स्वतंत्र इतिहास प्रमाणित किया है।

आधुनिक तमिल और मलयालम के लिए संगम विरासत को अलग तरह से देखा जा सकता है। सामान्य एवं विशिष्ट वंशानुक्रम प्रतिमान (patterns) भी यहाँ दिखाई पड़ते हैं। शाब्दिक स्तर पर, जबकि कुछ संगम शब्द दोनों भाषाओं द्वारा साझा किए गए हैं, कुछ विशेष रूप से प्रत्येक भाषा में पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, *चिरैः* (बाँध), *वलिय* (बड़ा), *पट्टी* (कुत्ता), *विळि* (बुलावा), *चेरुः* (रोकना) जैसे संगम शब्द मलयालम में सामान्य हैं, लेकिन तमिल में नहीं ।

पुरःनाःनूःरुः भौगोलिक विवरण, पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं के सुंदर वर्णन के साथ, केरल की पारिस्थितिकी के समान हैं।

संगम साहित्य राजनीतिक विवरण, विशेष रूप से चेर राजवंश पर, केरल से संबंधित है। इस राजवंश के अतिरिक्त, केरल के अन्य महत्त्वपूर्ण राजाओं और शासकों का उल्लेख *पुरःनाःनूःरुः* में है। उदाहरण के लिए, *आय, ओय, कोथा* और *कुट्टन*। *आय* और *ओय* दोनों संगम युग के सात प्रसिद्ध *वल्लालों* (दानियों) में से हैं। वे केरल के दक्षिण भाग के शासक थे, उनकी राजधानी *आयुर* और *ओयुर* थी, जो दक्षिण केरल के दो नगर-क्षेत्र हैं।

तमिल शास्त्रीय साहित्य में उद्धृत कुछेक सांस्कृतिक विशेषताएँ केरल में कायम हैं, लेकिन तमिलनाडु में नहीं। उदाहरण के लिए, शास्त्रीय नृत्य शैली *चाक्यारःकूत्तु* और नारियल के पेड़ से ताड़ी निकालने की प्रवृत्ति तमिलनाडु में नहीं दिखाई देती है, लेकिन यह केरल में प्रचलित। चारणों की परंपरा में *पाणन, कूत्तार* आदि जो संगम युग और बाद के युगों के राजा और स्वामी वर्ग के स्तुति-गायक थे, तमिल राज्य में नहीं पाए जाते, किंतु केरल में वे अपनी जातीय और व्यावसायिक पहचान बनाए रखते हैं। उनके मौखिक गीतों को केरल में *पाणन पाट्टु* के नाम से जाना जाता है। कुछ स्थानों के नाम जैसे *पाणन विलई, कूत्ताट्टुकुलम* आदि इन्हीं की चारण वंश-परंपरा से आए और प्रसिद्ध हुए।

संगम साहित्य में उल्लिखित *चात्तन, कुट्टन, कोत्ताट्टु* जैसी व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ आज भी केरल में आम हैं। चात्तन पूजा (सेवा) केरल में आज भी जारी है। केरल में अभी भी उन स्थानों के नाम मौजूद हैं जिनका उल्लेख संगम ग्रंथों में मिलता है। उदाहरण के लिए, केरल में वंचियूर और कोतमंगलम जैसे स्थान हैं, जिनके समकक्ष संगम पाठ में *वंचि* और *कोत्ताट्ट* जैसे स्थानों का उल्लेख है। संगम कवियों में *कुट्टुवन, कीरनार, कीड़ार, पोय्कयार* आदि केरल के हैं। *चिलप्पतिकारम* के रचयिता इलंको अडिकल चेर राजवंश के माने जाते हैं। ये सारे लक्षण केरल की मिट्टी और मलयालम का संगम विरासत से गहरा संबंध दर्शाते हैं।

मलयालम स्वाभाविक रूप से तमिल भाषा से जुड़ी हुई है। विद्वानों ने मलयालम के उद्भव और तमिल के साथ इसके संबंध को समझाने के लिए विभिन्न सिद्धांतों का निरूपण किया है। (अय्यर, 1936; ज्वेलेबिल, 1968; नंबूदिरि 2004) संगम साहित्य को तमिल की विशिष्ट बौद्धिक संपदा होने का दावा किया जाता है। हालाँकि, मलयालम विद्वानों के बहुत से मज़बूत तर्क मलयालम की संगम विरासत पर दावा नहीं करते हैं। नाचिमुत्तु (2005) के अनुसार, संगम साहित्य में मलयालम का अपना स्थान है और इसे दोनों भाषाओं का साझा साहित्य माना जाना चाहिए। संगम साहित्य की शब्दावली के विश्लेषण से संगम साहित्य में मलयालम के संभावित शाब्दिक संबंध की संभावनाएँ दिखती हैं।

मलयालम के आद्य (proto) रूप को ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी और तीसरी शताब्दी ईस्वी के बीच रचित संगम साहित्यिक प्रवृत्तियों से पहचाना जा सकता है। संगम साहित्य की शब्दावली के निरीक्षण से मलयालम का संगम साहित्य के साथ संबंध दिखाई देता है, जिसे निम्नलिखित शाब्दिक श्रेणियों में बाँटा गया है–

1. तमिल और मलयालम द्वारा साझा किए जाने वाले शाब्दिक समूह।
2. आधुनिक मलयालम में आमतौर पर प्रयुक्त सामान्य शाब्दिक समूह जिन्हें तमिल भाषी समझते हैं।
3. आधुनिक तमिल में आमतौर पर प्रयुक्त शाब्दिक समूह जिन्हें मलयाली समझते हैं।
4. केवल मलयालम में सुरक्षित रखे गए शाब्दिक समूह।
5. केवल तमिल में सुरक्षित रखे गए शाब्दिक समूह।
6. दोनों भाषाओं के लिए आद्य रूपों के शाब्दिक समूह।

1. तमिल और मलयालम द्वारा साझा किए जाने वाले शाब्दिक समूह

संगम साहित्य के कई शब्द अब भी दोनों भाषाओं में जीवंत हैं। आकाशीय पिंडों के नाम, पंचभूत, रिश्ते-नाते के शब्द, स्थानों के नाम, कलाकृतियाँ, वनस्पति और जीव-जंतु आदि इस श्रेणी के उदाहरण हैं–

1. आकाशीय पिंडों के नाम

ஞாயிறு	*ञायिरु*	सूर्य
திங்கள்	*तिंकल*	चाँद

வெள்ளி	*वेल्लि-शुक्रन*	बृहस्पति
நிலவு	*निलाव*	चाँदनी
வானம்	*वानम*	आकाश

2. पंचभूतों के नाम

தீ	*ती*	आग
காற்று	*काट्टुः*	वायु
வளி	*वलि*	ऊर्ध्व-वायु
மண்	*मण्णु*	मिट्टी

3. प्रकृति से संबंधित शब्द

கடல்	*कटलु*	सागर
மழை	*मश़य*	बरसात
வெயில்	*वेयिलु*	धूप
மலை	*मलेय*	पहाड़
நிலம்	*निलम*	खेत

4. स्थानों के नाम

நாடு	*नाटु*	तालुक जैसा एक भाग
ஊர்	*ऊरु*	गाँव जैसा एक भाग
காவு	*कावु*	लोक पूजा स्थल

5. वनस्पतियों के नाम

மரம்	*मरम*	पेड़
நெல்	*नेल्लु*	चावल का पौधा
கரும்பு	*करिंपु*	गन्ना

6. जीव-जंतुओं के नाम

புலி	*पुलि*	बाघ
யானை	*यानय*	हाथी
மீன்	*मीनु*	मछली
புறவு	*प्रावु*	कबूतर
முதலை	*मुतलई*	मगरमच्छ

7. कलाकृतियों के नाम : यह दिलचस्प बात है कि संगम साहित्य में बताई गई कलाकृतियों के नाम आज भी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं।

வாள்	*वालु*	तलवार
மதில்	*मतिलु*	दीवार
தேர்	*तेरु*	रथ

8. संख्यावाचक संज्ञाएँ

ஒன்று *ओन्नु* एक
பத்து *पत्तु* दस
நூறு *नूरु* सौ
கோடி *कोटि* करोड़

9. व्यावसायिक शब्द

கொல்லன் *कोल्लन* लुहार

2. आधुनिक मलयालम में आमतौर पर प्रयुक्त शाब्दिक समूह जिन्हें तमिल भाषी समझते हैं

कई संगम शब्दों को व्यापक एवं सामान्य रूप से आधुनिक मलयालम में प्रयुक्त किया जाता है। ऐसे शब्द आधुनिक तमिल में प्रयुक्त नहीं हैं, किंतु तमिलवासी उनके अर्थ को समझते हैं। उदाहरण के लिए–

விளி *विळि* पुकारना
தொழு *तोऴु* नमस्ते
அறி *अरि* चावल
வலிய *वलिय* बड़ा/विस्तृत
உண் *ऊणु* भोजन

हालाँकि तमिलवासी ऐसे शब्दों के अर्थ जानते हैं फिर भी वे उनके लिए तमिल में अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं। तमिल में ऐसे शब्दों का प्रयोग कुछ इस तरह से है–

விளி *विळी* (கூப்பிடு) पुकार
தொழு *तोऴु* (கும்பிடு) नमस्ते की मुद्रा
ஞான்அறியும் *ञानअरिःयुम* (னக்குத்தெரியும்) मुझे मालूम है

3. आधुनिक तमिल में आमतौर पर प्रयुक्त शाब्दिक समूह जिन्हें मलयाली समझते हैं

कई संगम शब्दों का प्रयोग व्यापक रूप से आधुनिक तमिल में होता है, किंतु वे आधुनिक मलयालम में शायद ही कभी प्रयुक्त होते हैं। जो भी हो, मलयालम भाषी उनका अर्थ समझते हैं। उदाहरण के लिए–

எதிரி *येतिरि* दुश्मन
கடவுள் *कटवुळ* देव
பொருள் *पोरुळ* अर्थ
மறவர் *मरवर* एक जाति
கவளம் *कवळम* हाथी के लिए भात की गेंद

यद्यपि मलयाली इन शब्दों का अर्थ समझते हैं, किंतु वे उनके स्थान पर संस्कृत शब्दों का प्रयोग करना पसंद करते हैं, उदाहरण के लिए–

எதிரி *येतिरि* दुश्मन *शत्रु*
கடவுள் *कटवुळु* देव *ईश्वरन्*
பொருள் *पोरुळु* अर्थ *अर्थम्*

4. केवल मलयालम में मूलार्थ सुरक्षित रखे गए शाब्दिक समूह

आधुनिक मलयालम में कई संगम शब्दों को उनके मूल अर्थ के साथ सुरक्षित रखा गया है और उन्हें मलयालम शब्द के रूप में अपनाया जाता है। यह रोचक बात है कि तमिल भाषियों को वे शब्द मालूम नहीं हैं। उदाहरण के लिए–

വലിയ	*वलिय*	வலிய
പുഴുക്കു	*पुषुक्कु*	புழுக்கு
ചെറുക്കുമ്	*चेरुक्कुमु*	செறுக்கும்
ചമര്	*चमरु*	சமர்
ചിറൈ	*चिरई*	சிறை

चमरु (ചമര്) का अर्थ है युद्ध। यह केवल तमिल पाठों में ही सुरक्षित है। लेकिन मलयालम में इसका नियमित प्रयोग होता है, और च वर्ण के बदले स वर्ण को अपनाती है। जैसे- समरम् (സമരം)। इसी प्रकार चिरई (ചിറൈ) का अर्थ है– "एक छोटा बाँध जहाँ पानी को सुरक्षित रखा जाता है"। इस प्रकार मलयालम इन संगम शब्दों को आज भी वैसे ही प्रयोग में लाते हुए सुरक्षित रखती है।

इनके अतिरिक्त, कई व्यक्तिवाचक संज्ञाओं और स्थानों के नामों का प्रयोग जैसे संगम साहित्य में हुआ करता था, मलयालम में आज भी वैसा ही पाया जाता है। उदाहरण के लिए, राजाओं के नाम— आय (ആയ്), ओय (ഓയ്), कुट्टन (കുട്ടന്) चात्तन (ചാത്തൻ), कोतै (കോതൈ) (ஆய், ஓய், குட்டன், சாத்தன், கோதை)– ആയ്, ഓയ് प्रसिद्ध परोपकारी राजाओं के नाम थे। केरल के दो छोटे शहर ആയൂര്, ഓയൂര് (ஆயூர்ஓயூர்) जो तिरुवनंतपुरम के पास स्थित हैं, उन राजाओं के नाम से जाने जाते हैं। കുട്ടൻ और ചാത്തൻ (குட்டன், சாத்தன்) जो अब तमिलनाडु में कहीं भी प्रयुक्त नहीं हैं, केरल में सामान्य व्यवहार के नाम हैं। संगम साहित्य में उल्लिखित कुछ स्थानों के नाम, जैसे വഞ്ചി (வஞ்சி), और കോതൈ (கோதை) वर्तमान केरल में வஞ்சியூர் கோதைமங்கலம் വഞ്ചിയൂര്, കോതമംഗലം नामों से जाने जाते हैं।

5. केवल तमिल में सुरक्षित रखे गए शाब्दिक समूह

जिस प्रकार मलयालम संगम साहित्य के कई शब्दों को सुरक्षित रखती है जो तमिल भाषियों को ज्ञात नहीं हैं, उसी प्रकार तमिल में भी कई शब्द हैं, जो मलयालम भाषियों को ज्ञात नहीं हैं। उदाहरण के लिए–

பன்மை	*पन्मय*	ताड़
இன்பம்	*इन्पम*	संतोष
உறுப்பு	*उरुःप्पु*	शरीर के अंग
பேதமை	*पेतमय*	मूर्खता

6. दोनों भाषाओं के लिए आद्य रूपों के शाब्दिक समूह

संगम साहित्य के कई शब्द इसी श्रेणी में आते हैं। ये उन्नीसवीं शताब्दी तक तमिल और मलयालम में लिखे गए कई ग्रंथों में पाए जाते हैं। इन आद्य रूपों के स्वरूप और इनके अर्थ से मलयाली और तमिल भाषी अपरिचित नहीं हैं। तमिल और मलयालम के विद्वानों को इनके अर्थों को जानना आवश्यक है, ताकि संगम साहित्य को अच्छी तरह से समझ सकें। तमिल भाषा विशेषज्ञों के लिए इन शब्दों पर गहरी पकड़ आवश्यक है ताकि वे संगम साहित्य के विशेषज्ञ बन सकें, लेकिन मलयालम इस संगम विरासत की उपेक्षा करती आई है। परिणामतः तमिल विद्वान संगम साहित्य में पारंगत माने जाने लगे।

उदाहरण के लिए, ഒലല്ുവതുഒലല്ും – ஒல்லுவதுஒல்லும் (*पुरःनाःनूःरु,* 1961) या ആളിനൈമരുങ്കിലും ஆள்வினைமருங்கில் (1963) न तो आधुनिक मलयालम में और न ही आधुनिक तमिल में पाए जाते हैं। कुछ शब्दावलियों से पता चलता है कि वे दोनों भाषाओं में पाए जाने वाले सबसे पुराने रूप हैं। उदाहरण के लिए, संगम शब्द യാൻ (யான்)। इस शब्द से मलयालम शब्द ഞാൻ (*ञान्*) और तमिल शब्द நான் (നാൻ) (*नाःन्*) की उत्पत्ति हुई है।

संगम साहित्य में मलयालम भाषा की अपनी भागीदारी है। संगम साहित्य को बिना सटीक प्रशिक्षण के तमिल भाषी या मलयालम भाषी पूर्णतः समझ नहीं सकते हैं। इसे समझने के लिए किसी को तमिल और मलयालम दोनों में प्रशिक्षित होना आवश्यक है। *पुरःनाःनूःरुः* की एक कविता के शाब्दिक समूह से यह पता चलता है कि मलयालम भाषी थोड़े से प्रयास से संगम साहित्य को आसानी से समझ सकता है, क्योंकि कविता में प्रयुक्त संज्ञाएँ मलयालम भाषियों के लिए सुपरिचित हैं।

पाणर तामरै मलैयवुम पुलवन/पू नूतल यानैयोटु पुनैतेर पण्णवुम/अरःनो? मट्टितु विरुमाण्कुटुमि/इन्नावाक पिरःर मण्कोंटु/इनिय चेय्ति निन आरवलर मुकत्ते।

പാണര്താമരൈമലൈയവുമ്പുലവന്	பாணர்தாமரைமலையவும்புலவன்
പൂനുതലയ്ാനൈയൊടുപുനൈതേര്പണ്ണവുമ്	பூநுதல்யானையொடுபுனைதேர்பண்ணவும்
അറനോ ഘ്മറ്റിതുവിറന്മാണ്കുടുമി	அறனோ ஘்மற்றிதுவிறன்மாண்குடுமி
ഇന്നാവാകപിററ്മണ്കൊണ്ടു	இன்னாவாகபிறர்மண்கொண்டு
ഇനിയചെയ്തിനിന്ആരവ്ലര്മുകത്തേ	இனியசெய்திநின்ஆர்வலர்முகத்தே

इस कविता में, मलयालम भाषियों के सुपरिचित शब्द नीचे दिए गए हैं :

പാണര്	*पाणर*	चारण गायक (चारण गायक अब भी केरल में रहते हैं)
താമരൈ	*तामरय*	कमल
പുലവൻ	*पुलवन*	कवि
പൂ	*पू*	फूल
നുതൽ	*नूतल*	माथा
തേര്	*तेर*	रथ
യാന	*यानै* (ആന)	हाथी
കുടുമി	*कुटुमि*	एक राजा का नाम
പിറര്	*पिरःर*	अन्य
മൺ	*मण*	मिट्टी
നിൻ	*निन*	आपका/आपकी
മുക	*मुकम्*	चेहरा
പണ്ണവും	*पण्णवुम्*	करना
കൊണ്ടര്	*कोंटु*	लेना
ചെയ്തി	*चेय्तु*	(तुमने) किया

कुछ संज्ञाएँ व क्रियाएँ मलयालम भाषियों के लिए परिचित नहीं हैं। किंतु वे तमिल भाषियों को भी ज्ञात नहीं हैं। जैसे– മലൈയവും (*मलैयावुमु*) വിറൻമാണ് (*विरःन्माण्*)।

शाब्दिक स्तर पर समझ के अलावा, न तो मलयालम और न ही तमिल भाषी संगम भाषा की वाक्यात्मक संरचना से इतने परिचित हैं कि इस कविता का पूरा अर्थ समझ सकें। दोनों भाषाओं को संगम साहित्य से जोड़ने वाली शाब्दिक कड़ियों को पहचानकर नाचिमुत्तु (2005) तमिल और मलयालम भाषिक समाज की साझी संगम विरासत को दर्शाते हैं। इसके शाब्दिक खजाने को आँककर कोई भी समझ सकता है कि यह केवल तमिल और मलयालम दोनों भाषाओं के इतिहास का ही संरक्षण नहीं करता। शाब्दिक और सांस्कृतिक संबंध के आधार पर यह कहना उचित है कि संगम दोनों के लिए समान है, सिवाय इस सीमित दावे के कि यह या तो तमिल से या मलयालम से संबद्ध है।

मलयालम भाषा की उत्पत्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

भाषा संस्कृति की उपज है और संस्कृति दैनिक जीवन में राजनीति और समाज की गतिशीलता के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है। संस्कृति लोगों के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। संस्कृति की प्रकृति और आदतें रहस्य बनी हुई हैं, लेकिन भाषा की उत्पत्ति में योगदान देने वाले कई कारकों की पहचान और विश्लेषण किया गया है।

तिरुपति और कन्याकुमारी के बीच प्रायद्वीपीय भारत के दक्षिणी भाग को परंपरागत रूप से तमिलकम अर्थात् तमिल दुनिया (tamil world) कहा जाता था। संगम साहित्य-समुच्चय (corpus) से पता चलता है कि इस भौगोलिक क्षेत्र की साझा संस्कृति और साझा भाषा है जिसे ई.पू. चौथी शताब्दी और पाँचवीं शताब्दी ईस्वी के बीच की अवधि का माना जा सकता है।

भाषाई पहचान

उस साहित्य की भाषा क्या है? पिछली शताब्दी के आरंभ में संगम साहित्य के भंडार की खोज के बाद, मद्रास, अन्नामलाई, मदुरै और पुदुचेरी विश्वविद्यालयों के तमिल विद्वानों द्वारा कई अध्ययन, अनुसंधान और प्रकाशन किए गए थे। उन्होंने मान लिया कि भाषा तमिल– पुरातन तमिल या चेंतमिल थी। यह इसलिए संभव है कि सारी रचनाएँ तमिलनाडु में ही खोजी गईं, और उनकी प्रतिलिपियाँ उसी लिपि में थीं, जिसका उपयोग प्राचीन तमिल पांडुलिपियों को समझने के लिए किया गया था। यहाँ तक कि वर्तमान लेखकों सहित, बाहरी लेखकों ने भी "तमिल संगम साहित्य" जैसे शब्द का प्रयोग बिना सोचे-समझे किया। जो भी हो, वैज्ञानिक अध्ययन के दौरान हमें यह स्वीकार करना होगा कि यह न तो वर्तमान तमिल और न ही वर्तमान मलयालम है। यद्यपि दोनों भाषाओं में समानताएँ हैं, तथ्य यह है कि बिना विशेष प्रशिक्षण के न तो मूल तमिल भाषी और न ही मूल मलयालम भाषी इस भाषा को पहचान सकते हैं। इसलिए यह मानना पड़ेगा कि यह भाषा दोनों से स्वाभाविक रूप से संबंधित है। समीचीन यही होगा कि इसे *पूर्व द्रविड़* या *मूल द्रविड़*, "प्राचीन द्रविड़" माना जाए, जो वर्तमान केरल और वर्तमान तमिलनाडु सहित सभी तमिलकम अर्थात् तमिल दुनिया (tamil world) के लिए सामान्य है।

साहित्यिक सामग्री

इस साहित्य में दोनों क्षेत्रों के शासकों के गुणगान, उनके युद्धों और गठबंधनों, शहरों और बस्तियों, व्यापार और कृषि, पूजा और मनोरंजन के विविध रूपों, त्योहारों, उत्सवों, मेलों और कलाओं, मौसम और मौसमी परिवर्तन आदि का उल्लेख किया गया है। वस्तुतः उनके मन के आंतरिक जीवन और बाहरी व्यवहार सहित, उनके व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के सभी पहलू इस मौखिक साहित्य की विषयवस्तु बनते हैं।

प्रस्तुत संग्रह में मौखिक काव्यों (कविताओं) का संचयन है, जो “पाणन” के परंपरागत चारणों द्वारा विभिन्न अवसरों पर अलग-अलग संदर्भ के लिए रचे और गाए गए हों, और उनके परिवारिक समूहों द्वारा सामाजिक स्मृति या इतिहास के रूप में संरक्षित किए गए हों। बाद में मदुरै के पांड्य राजाओं की देखरेख में, अकादमी (संगम) के विद्वानों द्वारा इन्हें संगृहीत कर टिप्पणी सहित संपादित (पतिकम) किया गया था। इनके अलावा दार्शनिक ग्रंथ *तिरुक्कुरल*, व्याकरण और काव्य शास्त्रीय ग्रंथ *तोलकाप्पियम*, दो महाकाव्य *चिलप्पतिकारम* और *मणिमेखलै* भी संगम साहित्य से जुड़े हैं। के.ए. नीलकंठ शास्त्री (1955) और अन्य इतिहासकारों के अनुसार, इनकी शैली और विषयवस्तु से पता चलता है कि प्रबोधनात्मक (didactic) काव्य और व्याकरणिक ग्रंथ तथा दो महाकाव्य संगम काल के बाद के हैं। *तिरुक्कुरल* में संगम युग के अर्द्ध-आदिवासी चारणों (bards) की पहुँच से बाहर के विचारों और अवधारणाओं का समावेश है। यद्यपि पारंपरिक विद्वानों द्वारा *तोलकाप्पियम* को संगम कवियों के बाद की, कविता के नियमों और परंपराओं से जुड़ी एक विद्वत्तापूर्ण टीका माना गया, साहित्य का वैश्विक अनुभव इस दृष्टिकोण का खंडन करता है। जब सार्वजनिक रूप से वीरतापूर्ण कार्य किए जाते हैं तो मौखिक कविता सामाजिक संदर्भ में अनायास ही उत्पन्न हो जाती है। बाद के विद्वानों द्वारा ग्रंथ में व्याकरण और लय की खोज हुई, जिनसे भविष्य के नियमों का निर्माण हुआ। इसलिए इस ग्रंथ को संगम युग की कई प्रमुख रचनाओं के निर्माण के बाद के किसी समय का माना जाना चाहिए।

बाद के ग्रंथों और उन्नत संस्थानों (advanced institutions) के संदर्भ वाले दो बृहत् महाकाव्य भी संबंधित भाषाओं में ग्रीक और संस्कृत महाकाव्यों की तरह, कुछ शताब्दियों तक छोटी मौखिक कविताओं से अलग हो गए।

संगम और उसके बाद का विकास

लगभग एक-तिहाई संगम काव्य वर्तमान केरल क्षेत्र के शासकों – एषिमला के मूवा या मूषक (मूषिक), तोंड़ी और मुचिरी के चेर राजा, विषिञ्ञम के आय राजा – और उनके युद्धों एवं प्रतिद्वंद्विता से संबंधित है। मुचिरी, तोंड़ी, मंतई, वाकई और पंतर जैसे बंदरगाह शहरों की व्यापारिक गतिविधियों का वर्णन किया गया है, वियलूर, पषि, चेल्लूर, और मोकूर जैसे अंतर्देशीय शहरों की धन-संपदा और कीर्ति का बखान किया गया है, तट के नमक निर्माता, एषिल मलई के आसपास के जंगलों के जंगली जानवरों और पेड़ों आदि का उल्लेख संगम साहित्य में किया गया है। संगम साहित्य समुच्चय (corpus) के लगभग 50 लेखक इस भू-भाग से जुड़े हैं। *पत्तिरुपाट्टु* के अतिरिक्त जो पश्चिमी समुद्री तट के प्रथम दस चेर राजाओं का वर्णन करता है, *चिलप्पतिकारम* जैसा महाकाव्य इलंको अडिकल (राजकुमार) द्वारा रचित माना जाता है, जो उसने अपने बड़े भाई चेंकुट्टुवन की स्तुति में लिखा है। यह भी केरल के संगम साहित्य में स्थान पाता है।

अरब सागर और पश्चिमी घाट के बीच आधुनिक केरल के क्षेत्र में तमिलकम के पश्चिमी तट पर संगम युग के बाद समाज का प्रमुख ऐतिहासिक विकास बड़ी संख्या में आर्य ब्राह्मण आप्रवासियों के आगमन से था, जो व्यवसाय और खेती के लिए नई कृषि भूमि की तलाश में धीरे-धीरे तटीय क्षेत्र में चले गए। वे दूसरी शताब्दी ईस्वी में सातवाहन साम्राज्य के पतन के बाद मध्य भारत से रवाना हुए थे और कदंब भूमि (तीसरी शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी), पश्चिमी चालुक्य भूमि (पाँचवीं शताब्दी से सातवीं शताब्दी) और अलुपा भूमि (सातवीं और आठवीं शताब्दी) पार करके आठवीं शताब्दी के अंत तक केरल के बत्तीस गाँवों में बस गए।

वे वन क्षेत्र में पहुँचे जहाँ ज़्यादातर महापाषाण संस्कृति वाले आदिवासी या अर्द्ध-आदिवासी लोग रहते थे। और कुछ बंदरगाह शहर थे जिनका सुदूर रोम साम्राज्य से व्यापारिक संबंध था।

उन्होंने वर्तमान कर्नाटक और तमिलनाडु में जैनियों और बौद्धों की चुनौतियों से प्रभावित हुए बिना क्षेत्र के समाज पर लगभग पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया। वहीं गैर-वैदिक पंथ (creeds) ईसा युग के प्रारंभ से ही अपना आधिपत्य स्थापित कर चुके

थे। उन्होंने मंदिर-केंद्रित स्वशासित गाँवों की स्थापना की, जो आगे चलकर उप-गाँवों में बदल गए जिससे केरल में एक सशक्त ब्राह्मण कुलीनतंत्र का विकास हुआ। मूल द्रविड़ लोग और आप्रवासित आर्य ब्राह्मण, जिन्होंने उन्नत विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अपने ज्ञान से राजनीति और समाज में प्रमुख भूमिका निभाई थी, के आपसी विचार-विमर्श ने पुरानी द्रविड़ भाषा की बोली विविधताओं के लिए पृष्ठभूमि प्रदान की। यह बोली वैविध्य गुणात्मक परिवर्तन होने तक बढ़ता गया जिसके परिणामस्वरूप एक अलग नई भाषा का उद्‌भव हुआ।

चेर शिलालेखों की प्रारंभिक पुरानी मलयालम

यह नई भाषा ज़्यादातर तमिल की तरह थी, जो एक या दो शताब्दी पहले पश्चिम घाट के उस पार मूल द्रविड़ लोगों और आर्य ब्राह्मण निवासियों, जो अलग रास्ते से जैसे पूर्वी घाट से पूर्वी चालुक्य, पल्लव, चोल और पांड्य भूमि की तरफ़ से आए थे, उनके बीच के आदान-प्रदान से उद्‌भूत हुई। जो भी हो, उनके बीच अंतर भी अवश्य थे। केरल क्षेत्र की यह नई भाषा कुछ मामलों में आर्य भाषा के निकट थी। जब आप सन् 800 और 1120 के बीच की अवधि के चेर शिलालेखों की तुलना उसी समय के पश्चिम घाट के उस पार के चोल-पांड्य शिलालेखों से करते हैं, तो अंतर और स्पष्ट हो जाता है। इस अंतर के ऐतिहासिक संदर्भ में स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

आर्य आप्रवासियों (immigrants) सहित ब्राह्मण, जैन और बौद्ध का सातवाहन क्षेत्र से दक्षिणी ओर का प्रस्थान दो विभिन्न मार्गों से हुआ। वे दो विभिन्न धाराओं में विभक्त हुए। इस प्रवास पथ का यह विभाजन प्रायद्वीपीय भारत के भौगोलिक विन्यास के कारण था।

मकोटाइ (कोटुंगलूर के महोदयपुरम) के चेर राजाओं से संबंधित 800 से 1124 ईस्वी तक के करीब 150 शिलालेख प्राप्त हुए। ए.सी. शेखर (1954) ने इन्हें प्रारंभिक प्राचीन मलयालम और इलंकुलम कुञ्ञन पिल्लई (1957) ने मिश्रित भाषा (संकर भाषा) के माना। इसी काल में तमिल भक्ति आंदोलन से जुड़े कुछ राजाओं, जैसे– कुलशेखर आलवार और चेरमान पेरुमाल ने तमिल और संस्कृत में रचनाएँ कीं। इससे विदित होता है कि मलयालम तब तक विकास के संक्रमणकालीन चरण से गुजर रही थी जो प्राचीन द्रविड़ या संगम साहित्य और आधुनिक मलयालम के बीच की थी, जो साहित्यिक माध्यम के रूप में प्रयुक्त होने लायक नहीं थी।

ऐसी कौन-सी स्थिति हुई होगी कि प्राचीन द्रविड़ भाषा से अलगाव का सिलसिला चल पड़ा जो बाद के, नौवीं शताब्दी के चेर शिलालेखों को एक संक्रमणकालीन भाषा में लिखने का कारण बना होगा। कृषि योग्य भूमि का मुख्य भाग जो *देवस्वम* भूमि और *ब्रह्मस्वम* भूमि के रूप में था, उसमें सुरक्षित खेती के लिए नए आगंतुकों ने प्रवेश किया। उन्होंने सुचारु रूप से संगठित ब्राह्मण कुलीनतंत्र की स्थापना की जो मकोटाइ के चेर राजाओं जैसे चेरमान पेरुमाल के मुकुटोद्धारण की शक्ति (force) बनी। घाट के उस पार के आर्य ब्राह्मण उपनिवेशकों को स्वदेशी आबादी पर वह पूर्ण आधिपत्य नहीं मिला, क्योंकि उनको स्वदेशी (native) शासकों के अधीन कार्य करना पड़ा था। केरल में, बहरहाल स्वदेशी शासकों को ब्राह्मण कुलीनतंत्र के वशीभूत होना पड़ा। पश्चिमी (कुड मलई नाडु) पहाड़ी राज्य के अर्द्ध-आदिवासी स्वदेशी द्रविड़ समुदाय के बीच उत्तराधिकार की मातृसत्तात्मक प्रणाली ने शक्ति संपन्न और अनुशासित ब्राह्मण ज़मींदारों को *संबंधम्* (एक तरह का विवाह) की प्रथा के आयोजन करने में सक्षम बनाया, जिसमें राजा, सेनापतियों, सरदारों और अधिकारियों को अपने संतान जैसे होने की गारंटी लेते थे और सारे किसान उनके किरायेदार और दास बनते थे। यह स्थिति और घनिष्ठ एवं निरंतर मानवीय संपर्क केरलवासियों के बीच संस्कृत शब्दों और अवधारणाओं को उधार लेने और संस्कृत भाषा में प्रयुक्त सभी वर्णों को स्वीकार करने की बढ़ती प्रवृत्ति को स्पष्ट करेगा।

जातीय मिश्रण और भाषा मिश्रण

संबंधम् जैसी प्रथा से बड़े पैमाने पर उत्पन्न जातीय (racial) मिश्रण क्षेत्रीय भाषा में होने वाले भाषाई परिवर्तन में कुछ मदद कर भी सकता है, या नहीं भी। जैसे भी हो, यह स्पष्ट है कि देशी द्रविड़ भाषियों में संस्कृत भाषी आर्यों के प्रति आदर का विकास हुआ, जो उनके पिता, गुरु और मार्गदर्शक बने। दरबारों में, स्कूलों में और मंदिरों में चिंतन और भाषण में ब्राह्मणों को अनुकरणीय बनाने की प्रवृत्ति बढ़ी। क्षेत्रीय राजाओं में यह भाव प्रबल था कि ब्राह्मणों ने ही उन्हें राजनीतिक उद्देश्य से शूद्रों के ओहदे से पदोन्नत किया था। उसी प्रकार, मंदिर सेवक– पोदुवाल, वारियर, पिषारटि आदि– जो ब्राह्मणों को पूजा आदि अनुष्ठानों में सहायता पहुँचाते थे, उनको ब्राह्मण पुजारियों और विद्वानों से घुलने-मिलने की छूट मिलती थी। इस घनिष्ठ संपर्क ने उनकी बोली और चिंतन पर अवश्य प्रभाव डाला होगा, जातियों के आनुष्ठानिक अलगाव के बावजूद उन्होंने भाषा के रूपांतरण में अपनी भूमिका निभाई होगी।

यह भी उल्लेखनीय है कि जबकि वर्तमान तमिलनाडु के *अग्रहारम* में बसे ब्राह्मण निवासियों और मूल निवासियों ने घर बनाने में और काम-धंधों में दूरी बनाए रखी, केरल में उन्हें खुला सहयोग प्राप्त था कि मंदिर के सेवक और नायर ब्राह्मण गाँवों में अपनी बस्ती बनाते थे। इसी कारण ब्राह्मण विरोधी द्रविड़ आंदोलन का सूत्रपात केरल में आधुनिक काल तक नहीं हुआ। पवित्र वेदों को छोड़कर संस्कृत भाषा एवं साहित्य और उससे संबंधित शास्त्रों का अध्ययन मूल निवासियों के बीच काफ़ी आम हो गया। इससे ब्राह्मणों के साथ उनका बौद्धिक सहयोग विकसित हुआ और ज्ञान की महत्त्वपूर्ण शाखाओं में कई पुस्तकों का लेखन हुआ। मणिप्रवाळम भाषा इस अंतरंगता का ही उप-उत्पाद अथवा परिणाम है। यह मिश्रित भाषा, *मिश्रभाषा*, मूल भाषा को रूपांतरित करने में बहुत आगे रही होगी। मध्यकाल में ब्राह्मणों और मूल निवासी उच्च जाति वालों के बीच में प्रेम-द्वेष और लेन-देन की नीति की अनेक परंपराएँ मौजूद हैं। उनमें सबसे सुस्पष्ट तुंचत्तु एष़ुत्तच्छन, जो मलयालम भाषा के जनक माने जाते थे, उनके समकालीन *नारायणीयम* के रचयिता मेल्पत्तूर नारायण भट्ट, से जुड़ा वाद-विवाद है। एष़ुत्तच्छन नामक अध्यापक वर्ग जो *एष़ुत्तुपल्लि* और कुलीन घरानों से जुड़ा है, से भाषाओं के बीच एक सेतु अवश्य स्थापित होगा। एष़ुत्तच्छन संस्कृत के विद्वान और मलयालम के अध्यापक थे और वे केरलवासियों को *पुराणों* और *इतिहासों* से परिचित कराने के साधन थे।

इन सबके अलावा, स्थानीय दर्शकों के सामने संस्कृत नाटकों के प्रदर्शन के साथ कूटियाट्टम रंगमंच का विकास और गैर-ब्राह्मण लोगों से उनकी भाषा में बात करने के लिए एक *विदूषक* को शामिल करना मलयालम भाषा को समृद्ध करने की दिशा में एक और कदम था।

यद्यपि बाद के चेर साम्राज्य के प्रारंभिक चरण में मूल आर्य ब्राह्मण निवासियों की संख्या कम थी, तो भी एक मिश्रित जाति का निर्माण करते हुए *संबंधम्* प्रथा का विस्तार होने लगा। पंद्रहवीं शताब्दी तक नंबूदिरि-नायर गठबंधन द्वारा जिस मिश्रित जाति का निर्माण हुआ उसकी संख्या कई लाख थी और वह व्यापक रूप से फैल गई थी, जो सामाजिक जीवन के सारे क्षेत्रों में काम कर रही थी। भाषा पर उनके प्रभाव को एक नई भाषा के निर्माण में मुख्य घटक के रूप में लिया जा सकता है। ब्राह्मण घराने के कनिष्ठ युवा नायर तरवाटु से वैवाहिक संबंध हासिल करने में कुलीनता हासिल कर चुके होते हैं। करीब सोलहवीं शताब्दी तक के आसपास मलयालम भाषा लिखने के लिए ग्रंथ लिपि को अपनाना, जो तमिलकम में संस्कृत भाषा की लिपि थी, भी भाषा के विकास का एक दिशा-निर्देश सूचित करता है।

राजराजवर्मा (केरल पाणिनी) द्वारा पहचानी गई छह प्रवृत्तियाँ मलयालम के मातृ-द्रविड़ मूल से अलग हटने के विशिष्ट लक्षण हैं, जो चेर शिलालेखों में दिखाई देते हैं, और प्रत्येक बीतती शताब्दी के साथ इनका विकास पाया गया है। पूर्व आर्य ब्राह्मण उपनिवेश के समय के विकास से भाषा पर उनके प्रभाव के प्रमाण मिल जाते हैं। कई बड़े व्यापारी समूहों, जिनके अलग-अलग

नृजातीय, भाषाई और धार्मिक संबंधों के कारण जो अफ़्रीका और पश्चिम एशिया से केरल में उत्प्रवासित हुए और बस्तियाँ बसाईं, उनको सुदृढ़ ब्राह्मण कुलीनतंत्र का सहारा मिला था। इस प्रकार यहूदियों, सीरियाई ईसाइयों और अरब मुस्लिमों आदि ने भी मलयालम भाषा के विकास में अपना-अपना योगदान दिया था।

पुरालेखों और साहित्य का नया उपयोग

ई.पू. दूसरी शताब्दी से सातवाहन राजाओं के समय से गंगा तटवासी ब्राह्मणों के भूमि अनुदान पाने हेतु प्रवासन की गति को रेखांकित करना संभव हुआ। सातवाहनों के पतन के बाद, बड़े पैमाने पर ब्राह्मण समूहों का दक्षिण की ओर पलायन हुआ। इससे भारत के दक्षिण भू-भागों में बड़े पैमाने पर शांतिपूर्वक आर्यकरण संभव हुआ, जो आर्थिक प्रभुत्व के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभाव के परिणामस्वरूप हुआ। उन्हें उन रियासती राजाओं से भूमि अनुदान मिल गया, जो उनके *अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिशास्त्र, कामसूत्र* और *धर्मशास्त्र* संबंधी ज्ञान की ओर आकर्षित हुए। चूँकि वे काफ़ी अनुशासित और शांत स्वभाव वाले थे, रियासती राजाओं एवं वहाँ के स्थानीय निवासियों को यह अवबोध हुआ कि ब्राह्मणों के वहाँ बसने से उन्हें खेती-बाड़ी और व्यापार में वृद्धि तथा सुदृढ़ एवं व्यवस्थित प्रशासन प्राप्त होगा। इन्हीं ब्राह्मणों के पास संपत्ति के रूप में संस्कृत भाषा एवं साहित्य था और बृहत् इतिहास जैसे *रामायण* और *महाभारत* तथा *पुराण* और *पंचतंत्र कथाएँ* थीं।

दक्षिण भारत में ये सारे कारक द्रविड़ समाज और राज्य के विकास में सहायक साबित हुए। वहाँ लिपियों, लिखित कानूनों और सिक्कों के साथ-साथ जनजातियों का जातियों में और रियासतों का राज्यों में विकास हुआ। सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ भाषाई विकास भी संभव हुआ। केरल ऐसा विशेष भू-भाग है, जहाँ घने जंगलों का पश्चिमी घाट, पश्चिमी दिशा की ओर बहने वाली अनेक नदियों, प्राकृतिक बंदरगाहों, खाड़ी जैसा समुद्री इलाका, नदी-समुद्र संगम स्थान, पहाड़ी उत्पादों जैसे काली मिर्च, चंदन, सागौन, और औषधीय पौधों, आदि ने इस प्रदेश को विश्व भर के व्यापारियों के लिए यात्रा गंतव्य बना दिया।

केरल पहुँचने वाले ब्राह्मण निवासियों को शक्तिशाली स्थानीय राजवंशों या जैन और बौद्ध धर्म जैसे विधर्मी पंथों (heretic creeds) की चुनौती का सामना भी नहीं करना पड़ा था। उन्होंने बड़ी ही सरलता से समस्त भूमि को *ब्रह्मदेश* में परिणत कर लिया था। भारी संख्या में बरसात और अनगिनत नदियों के कारण उनका निरंतर अधिवास हुआ और उनके बिखरे हुए स्वतंत्र घरों के साथ बस्तियाँ बनती गईं। विदेशी व्यापार से राज्य में काफ़ी धन-दौलत आती गई, ब्राह्मणी स्वामित्व से स्थानीय शासक एवं किसान उनके वफ़ादार अनुयायी बने और *संबंधम्* का रिश्ता देशवासियों में विश्वास सुदृढ़ बनाने का एक और कारक बना, जिससे कि अन्य जातियों एवं श्रद्धालुओं में धार्मिक सहिष्णुता लाई जा सके तथा वे उनके मंदिरों के संरक्षण का दायित्व निभा सकें।

यही वह पृष्ठभूमि है जिसके विरुद्ध मूल द्रविड़ भाषा को एक अधिक सक्षम नए साहित्यिक माध्यम के रूप में विकसित किया गया। शताब्दियों के दौरान यही आधुनिक मलयालम भाषा में परिवर्तित हुई। ब्राह्मण कुलीनतंत्र की निरंतर समृद्धि, बाहरी आक्रमणों और आंतरिक तोड़फोड़ के खतरों से मुक्त पूर्व-आधुनिक केरल के इतिहास में कोई बड़े युद्ध या विद्रोह नहीं हुए, इससे केरलवासियों को आर्य और द्रविड़ दोनों संस्कृतियों का सर्वोत्तम आनंद प्राप्त हुआ।

प्रवासन के समानांतर और पूरक मार्ग

प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में तमिल भाषा के विकास में पूर्वी तटवर्ती इलाके से ब्राह्मणों के प्रवास ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे पूर्वी चालुक्य, पल्लव, चोल और पांड्य राज्यों से होकर गुजरे। उनके प्रवास के मार्ग का अब भूमि अनुदान की तारीख

की सहायता से भी पता लगाया जा सकता है। हालाँकि, तमिल भाषा और साहित्य की बारीकियों से अच्छी तरह परिचित भाषा वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र में शोध उपयोगी सिद्ध होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि वे सातवीं शताब्दी के आसपास पल्लवों की राजधानी कांचीपुरम तक पहुँच गए थे, क्योंकि हम उनके शिलालेखों और साहित्य में उच्च स्तर का संस्कृतीकरण (sanskritisation) देखते हैं। इस प्रायद्वीप के मध्य भाग, दक्षिण (दक्कन) का पठार, को सभी प्रवासियों ने नज़रअंदाज़ किया था क्योंकि यह बंजर था और कृषि योग्य नहीं था। यह आर्य सांस्कृतिक धारा के विभाजन का कारण था, जिसके परिणामस्वरूप दो नई अलग-अलग द्रविड़ भाषाओं, पूर्वी तट पर तमिल और पश्चिमी तट पर मलयालम की उत्पत्ति हुई। मूल द्रविड़ संस्कृति और भाषा के आने वाली आर्य संस्कृति और भाषा के साथ अंतःक्रिया के कारण भौगोलिक और कालानुक्रमिक विभिन्नताओं के परिणामस्वरूप दो अलग धाराओं का विकास हुआ, जो एक-दूसरे से थोड़े-बहुत परिवर्तित स्वरूप और प्रकृति की थी।

मलयालम का भाषा वैज्ञानिक स्वरूप

स्वानिकी और स्वनविज्ञान

मलयालम स्वानिकी में छह लघु स्वर उच्चारण हैं जो निम्नलिखित हैं–

तालिका 2.5 : मलयालम स्वर

	अग्र	**मध्य**	**पश्च**
होठों की स्थिति	अवर्तुल	तटस्थ	वर्तुल
उच्च	1. इ		5. उ
मध्य	2. ए’	6. ऊ	4. ओ’
निम्न		3. अ	

प्रमुख शब्द, जहाँ भी अंग्रेज़ी में उपलब्ध हों, प्रत्येक का निकटवर्ती उच्चारण :

1. sit, 2. bet, 3. cut, 4. mop, 5. put, और 6. Learn शब्द में प्राप्त लघु स्वर।

स्वनप्रक्रियात्मक (phonologically) दृष्टि से उपर्युक्त सभी लघु स्वरों के दीर्घ समकक्षी व्यतिरेक उपलब्ध हैं। अपवाद /उ /

1. *किरि*/Kiri /- “होंठ” x *कीरी*/Kiir:i/ “विभाजित”,
2. के‘ट्टू/keTTu/ “सड़ा” x केट्टू/keeTTu/ “सुना”
3. कट्टि/kaTTi/ “घना” x काट्टि/kaaTTi/ “दिखाया”
4. को‘ट्टि/koTTi/ “खटखटाया” x कोट्टि/kooTTi/ “विकृत”
5. कुटि/kuTi/ “पीना x कूट्टि/kuuTi/ “जोड़ा”

यहाँ केवल दो संयुक्त स्वर हैं- *अइ (ऐ)* और *अउ (औ)* जो क्रमश: *हाइ* और *हाउ* उच्चरित होते हैं। *अइ* ज़्यादातर उधार शब्दों (loan words) में ही *अई* में परिवर्तित होता है और *औ* केवल उधार शब्दों में होता है।

कुल 39 व्यंजनों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है–

तालिका 2.6 : मलयालम व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	दंतोष्ठ्य	दंत्य-वर्त्स्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य
स्पर्श (11)	प ब			त द	टः	ट ड	च ज	क ग
महाप्राण स्पर्श (10)	फ भ			थ ध		ठ ढ	छ झ	ख घ
नासिक्य (6)	म			नः	न	ण	ञ	ङ
पार्श्व (2)					ल	ळ		
उत्क्षिप्त (2)			र		रः			
संघर्षी (5)		फ	श			ष	स	ह
प्रवाही (3)		व				ष़	य	

अक्षर/ध्वनि जो बाएँ और दाएँ खानों में अंकित हैं, यथाक्रम उनका अघोष और सघोष उच्चारण है। */ट/* एक लघु वर्त्स्य स्फोट ध्वनि है जिसका सूचक */टः/* के रूप में और समवर्ग स्पर्श अनुनासिक */नः/* संबंधिका रूप में */न/* रूप में है, जैसे */कन्नःन्टे/* (कण्णन्टे) "कण्णन का/के/की" और /अवन्टे/ "उसका/के/की", */च/* और */ज/* संघर्षी उच्चारण रखते हैं, लेकिन वितरण में वे स्पर्शी बनते हैं।

प्राकृतिक उच्चारण में सभी महाप्राणों का उच्चारण अघोष रूप में है, लेकिन उनके सूचक (sign) सघोष रूप में प्रयुक्त होते हैं, बस मानक मलयालम सुलेख (orthography) में संस्कृत के कुछ उधार शब्दों का, लेखन में "शुद्ध" उच्चारण हो– /मुखम्/ "चेहरा", /छाया/ "परछाई", /पाठम/ "पाठ", */कथा/* "कहानी" और */फलम/* "परिणाम" जैसे शब्दों के स्थान पर */मेघम्/* "मेघ", */झषम्/* "मछली", */मूढन/* "मूढ़", /राधा/ "राधा" और */भयम/* "भय" होते हैं।

/फ/ दंतोष्ठ्य संघर्षी है, जो एक मार्जिनल स्वनिम है, जो प्रायः अंग्रेज़ी, अरबी और उर्दू जैसे गैर-संस्कृत स्रोतों से सामान्य उधार शब्दों के रूप में प्रयुक्त होता है।

सामान्य बोलचाल की मलयालम में अंतिम पाद (खंड) का उच्चारण विशेषतः घोष होता है, जो अधिकतर लघु */ओ/* को छोड़कर या "शुद्ध" व्यंजन के रूप में माने जाने वाले स्वनिम (चिल्लुकल) */ण्/, /न्/, /ल्/, /ळ्/*, और */र्/*, के अलावा उन स्वरों में एक होगा।

व्यतिरेक अनुनासिक उच्चारण के लिए मलयालम के अधिकतम छह वर्ण (*ङ, ञ, ण, नः, न,* और *म*) प्रमुख हैं। */माञ्ञु/* "मिट गया", */मञ्जु/* "बर्फ", */मण्णु/* "पृथ्वी", */निःन्नाल/* "तुम्हारे कारण", */निःन्नाःल/* "खड़ा हो तो", */आमा/* "कछुआ", */आना/* "हाथी"।

सभी संघर्षी अघोष हैं, जो उधार शब्दों के लिए या गैर-देशीय पद्धति में नवीनतम प्रयोग तक सीमित हैं।

प्रवाही (continuants) सामान्य रूप से संघर्षी नहीं होते। कुछ शब्दारंभ में */व/* या */य/* प्रतिबंधित हैं। */ष़/*, जो अद्वितीय संघर्षरहित, घोष मूर्धन्य स्वनिम है, जिसका ज़्यादातर प्रयोग */मष़ा/* "बारिश", */पुष़ा/* "नदी", */पष़म/* "फल", */वष़ि/* "रास्ता", */वष़क्कु/* "झगड़ा", */किष़क्कु/* "पूर्व दिशा", */वाष़ा/* "केले का पौधा" शब्द में होता है, विशेषकर अंतस्थ है।

तालव्य और तालव्येतर अग्र उत्क्षिप्त वर्णों, जैसे */र/* और */रः/* के उच्चारण में व्यतिरेक निर्णायक है। कई लघुतम (minimal) जोड़ियाँ हैं– */कर/* "सीमा", या "तट" (नदी) x */कराः/* "दाग", */कुरा/* "भौंकना" x */कुरः/* "कमी", */मारि/* "वर्षा" x */मारिः/*

"बदल गया", */वरा/* "लकीर" या "खींचना" x */वराः/* "भूनना", */कूरा/* "छत" x */कूराः/* "कपड़ा" या "तिलचट्टा"। स्वनिम */र/* ही मलयालियों को पसंद है। उनके रामायण के नायक */राम/* हैं, */राःम/* नहीं हैं। लोरी में */र/* का प्रयोग *रारारो रारिरारो* में सुनाई देता है।

दंत्य-वत्र्स्य बनाम मूर्धन्य पार्श्विक में जो व्यतिरेक है, भाषा के नाम पर ही उसका प्रकटीकरण होता है, जिससे कई सामान्य शब्द अलग रखते जाते हैं, जैसे– */वला/* "जाल" x */वळा/* "चूड़ी", */कला/* "कला" x */कळा/* "खरपतवार", */कुलम/* "नस्ल" x */कुळम/* "छोटा तालाब", */कुत्ति/* "चाकू मारा" x */कुट्टिः/* "खुंडा/छड़ी", और */कुट्टि/* "बच्चा" में व्यतिरेक स्पष्ट है। ये अग्र, दंत्य और मूर्घन्य स्फोट स्वनिमों में सामान्य रूप से दिखाई देते हैं, जो मलयालम की विशेषता है। स्फोट (plosive) उच्चारण की न्यूनतम छह प्रकार की कालद्योतक खिंचाव की दशाएँ निम्नलिखित हैं–

तालिका 2.7 : स्पर्शों का उच्चारण

1	2	3	4	5	6
अतु "वह"	*तन्नुः* "दिया"	*अत्ति* "चित्र"	*आरःतु* "चिल्लाया"	*अरथम* "अर्थ"	*पत्थ्यम* "पथ्य"
आकुन्नु "है/होता है"	*कुन्नुः* "पहाड़"	*आक्कुन्नुः* "बनाता"	*आरःक्कु* "किसके लिए	*मूरःखन* "ब्लैक हेड"	*आख्या* "संज्ञा/कर्ता"

कॉलम एक के उदाहरणों में दंत्य और स्फोट संधियोजन सबसे अधिक शिथिल हैं; उनका तनाव आगे के कॉलम में धीरे-धीरे जाता है। कॉलम छह तक आते-आते वह अधिकतम होता है।

मलयालम की रूपस्वनिमिकी (morphophonemics) दो प्रकार की है– 1. स्वनिम आकार में परिवर्तन सहित रूपिमों का प्रत्यावर्तन और 2. संधि, एक ही शब्द के बीच की और शब्दों के बीच की।

(1) प्रत्यावर्तन

1. */तर-उन्नुः/* "देता है" (वर्तमान काल), */त-न्नु/* "दिया", */ता/* "दे" (आदेशात्मक) और */वर-उन्नुः/* "आता है" (वर्तमान काल), */व-न्नुः/* "आया", */वा/* "आ" (आदेशात्मक)।
2. */ओर-अ् ऊर/* "एक", */इरु अ् ईर-/* "दो", */मून्नू अ् न्नु-/* "तीन"
3. */ना-न अ् एन-/* "मैं", */नि अ् निन-/* "तू"

   संधि में निम्नलिखित प्रक्रियाएँ समाहित हैं–

   (i) जोड़ना, (ii) द्वित्वीकरण, (iii) अपमार्जन, और (iv) प्रतिस्थापन

   (i) जोड़ना

   उदाहरण– *हरि+अल्ल* > *हरियल्ला* "यह हरि नहीं है"
   अनु + *आणु* > *अनुवाणु* "यह अनु है"

   अग्र स्वर */इ/* के बाद जोड़ा गया तत्त्व */य/* है; पश्च स्वर के बाद */उ/ /व/* होता है।

   (ii) द्वित्वीकरण

   उदाहरण– *चीत्त* + *कुट्टि* > *चीत्तक्कुट्टि* "बुरा बच्चा"
   आन + *पुरःतु* > *आनप्पुरतु* "हाथी की पीठ पर"

/क/ और */प/*, संज्ञा के अंत */अ/* में द्वित्व बनता है। इसके विपरित उन्हीं व्यंजनों */नल्ल कुट्टि/* "अच्छा बच्चा" के दूसरे शब्द में और */आनप्पुरत्तु कयरिः/* "हाथी ऊपर चढ़ा", में द्वित्व नहीं होता। इस संदर्भ में यह संबंध बिठाया जा सकता है कि इन मामलों में ऐसे व्यंजनों का नियम खुला संयोजन (juncture) है।

(2) संधि

संधि का ढाँचा और व्याकरणिक संबंध प्रायः परस्पर सुसंगत होता है।

उदाहरण– */कथकळि/* वह जो */कळि/* "मंचित खेल" है, यानि जिसकी */कथा/* "कहानी" हो, जबकि */पूरक्कळि/* वह */कळि/* "मंचित खेल" है जो */पूरम/* "पूरम (मलयालम) तिथि (मार्च-अप्रैल महीने–मलयालम महीना–*मीनम्*) से जुड़ा आनुष्ठानिक मंचन है।

/ओलक्केटेटु/ "नारियल के गुँथे हुए पत्तों से बनी (झोंपड़ी की) छत" बनाम */ओलक्केटेटु/* "नारियल के गुँथे हुए पत्तों का बंडल"

(i) अपमार्जन

पूर्वपद के अंतिम स्वर के लुप्त होने और उत्तरपद के पहले स्वर में विकार होकर दीर्घ स्वर में परिणत होता है।

उदाहरण– *नःन्नुः* + *आयि* > *नःन्नाःयि* "अच्छा हुआ"
आइ + *इरिक्कुम* > *आयिरिक्कुम* "होगा"
वन्नः + *अवर* > *वन्नःवर* "वे जो आए"
चेय्याते + *इरिक्कट्टे* > *चेय्यातिरिक्कट्टे* "इसे बिना किए रहने दो"

(ii) प्रतिस्थापन

निकट संधि में पूर्वपद का अंतिम स्वर *–उ–* (अति लघु स्वर) प्रतिस्थापित होकर *–उ–* बनता है।

उदाहरण– *मून्नु* + *तेङ्ङा* > *मून्नुतेङ्ङा* "तीन नारियल"
अटुत्त् + *निन्नु* > *अटुत्तुनिन्नु* "पास से"

प्रगतिगामी समीकरण: उदाहरण–*कण्* + *टु* > *कण्टु* "देखा", *नट्* + *टु* > *नट्टु* "बोया"
पश्चगामी समीकरण: उदाहरण– *पैं* + *किलि* > *पैंकिलि* "नन्हा हरा तोता"
पारस्परिक समीकरणः उदाहरण– *केल* + *तू* > *केट्टु* "सुना"

रूप विज्ञान

मलयालम रूपवैज्ञानिक दृष्टि से योगात्मक (agglutinative) भाषा है। उसमें रूपवैज्ञानिक (morpheme) सीमाएँ स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। उदाहरणार्थ– */कळ्ळम्मारुटे/* "पुरुष चोरों का" जैसे शब्द का घटक रूपिम */कळ्ळन-मार-उटे/* "चोर–पुल्लिंग–बहुवचन–संबंध कारक"।

मलयालम की अधिकतर प्रकृति प्रत्यय उपसर्ग रूप में है। शब्द */विहरिक्कुक/* "खेलना", */प्रहरिक्कुक/* "प्रताड़ना", */संहरिक्कुक/* "मारना", */असत्यम/* "जो सत्य नहीं", */अनेकम/* "एक नहीं, अनेक" आदि मलयालम में सामान्य हैं, जिनके प्रारंभ के उपसर्ग */वि-, प्र-, सम-, अ-/* और */अन-/* आदि एकदम उधार शब्द हैं।

नवविज्ञान (neologisms) जैसे– */दुर्नटप्पु/* "बिगड़ी चाल: बुरा चरित्र" */दृष्चैति/* "बुरा कृत्य" और */पुनर्रवायना/* "पुनः वाचन" आदि संस्कृत धातुओं के परप्रत्यय (pre-posed) रूप (*/दुर-/, /दुष-/* और */पुनर्र-/*) और देशी क्रिया रूप हैं।

लिंग, वचन और पुरुष

तालिका 2.8 : लिंग और वचन

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग (पु.)	/कळ्ळन/ "पुरुष चोर"	/कळ्ळनमार/ "पुरुष चोर"
स्त्रीलिंग (स्त्री.)	/कळ्ळि/ "महिला चोर"	/कळ्ळिकल/ "महिला चोर"
नपुंसक	/कळ्ळम/ "चोरी"	/कळ्ळङल/ "चोरियाँ"

तालिका 2.9 : सार्वनामिक अभिव्यक्तियाँ

एकवचन	बहुवचन	
उत्तम पुरुष / ञान/	एक्सक्लूसिव /ञङ्गल /	इन्क्लूसिव */नम्मल/* /नाम/
मध्यम पुरुष /नी/ /तान/	/निङल/ /ताङल/	
अन्य पुरुष दूरस्थ निकटस्थ पु. */अवन/ /इवन/* स्त्री. */अवल/ /इवल/* पु. एवं स्त्री.*/अयाल/ /इयाल/* नपुंसक*/अतु/ /इतु/*	दूरस्थ निकटस्थ *अवर/ /इवर/* */अव/ /इव/*	

सार्वनामिक रूप सामाजिक स्तर के कई तत्त्वों को प्रतिबिंबित करते हैं।

तालिका 2.10 : प्रत्यययुक्त नामरूप

	/अम्म/ "माता"/स्त्री. प्रत्यय */-अ/*	*/अच्चन/* "पिता" पुल्लिंग प्रत्यय */-अन/*	*/वेळ्ळम/* "जल" नपुं. प्रत्यय */अम/*
कर्तृ कारक (कर्ता)	अम्म	अच्चन	वेळ्ळम
कर्म कारक (मुख्य कर्म)	अम्मये	अच्चने	वेळ्ळम
करण कारक ("से")	अम्मयोटु	अच्चनोटु	वेळ्ळत्तोटु
संप्रदान कारक ("को" या "के लिए")	अम्मक्कु	अच्चनु	वेळ्ळत्तिनु
अपादान कारक (कारण बताने के लिए)	अम्मयाल	अच्चनाल	वेळ्ळत्ताल

संबंध कारक	अम्मयुटे	अच्चन्टे	वेळ्ळत्तिन्टे
अधिकरण कारक	अम्मयिल	अच्चनिल	वेळ्ळत्तिल
संबोधन कारक	अम्मेऽ, अम्माऽ अम्मोऽ	अच्चाऽ, अच्चोऽ	प्रयोग में नहीं

उपसर्ग

निम्नलिखित तालिका के अनुरूप इनमें विशेष कारक हैं–

तालिका 2.11 : मलयालम कारक

विभक्ति	उपसर्ग	उदाहरण
कर्तृवाचक	*/ तोट्टु/* या */मुतल/* या*/तुटंङि/* "से...तक" */वरे/* या*/ओळम/* "तक" या "तकरीबन"	*/मंत्रि तोट्टु एल्लावरुम/* "मंत्री से लेकर सब लोग" */कोल्लम वरे/* "कोल्लम तक" */नूरोळम/* "तकरीबन सौ"
कर्मवाचक	*/पट्टि/* या */कुरिच्चु/* या */संबंधिच्चु/* "के बारे में" */काळ/* "से बढ़कर/ज़्यादा" */कोंटु/* "के द्वारा" "से" */पोले/* "के समान"	*/आनयेप्पट्टि/* "हाथी के बारे में" */आनयेक्काल/* "हाथी से बढ़कर" */वटिकोंटु/* "छड़ी के द्वारा" "छड़ी से" */चंद्रनेप्पोले/* "चाँद के समान"
संबंधवाचक	*/कूटि/* "के साथ"	*/अम्मयोटुकूटि/* "माँ के साथ"

कृदंत रूप

मलयालम में अधिकांश कृदंत (जो क्रिया अधूरी है) विशेषण या क्रियाविशेषण के रूप में हैं।

तालिका 2.12 : कृदंत

क्रियाधातु: */परःक्क-/* "उड़ना"	संबंधी या विशेषण कृदंत	उदाहरणः उत्तरपद नाम धातु से जुड़कर व्याख्यायित होता है।
भूतकाल	*परःन्नः*	*-पक्षी* "जो पक्षी उड़ गया"
वर्तमानकाल	*परःक्कुन्नः*	*-पक्षी* "वह पक्षी जो उड़ता है"
भविष्यतकाल	*परःक्कुम*	*-तळिका* "उड़ती तश्तरी"

इसी प्रकार क्रियाविशेषण पदबंध */परःन्नु/* जिसका अर्थ होता है "उड़ा हुआ" जिसमें क्रियार्थक प्रत्यय */पोयी/*, जुड़ता है तो यही पदबंध क्रियाविशेषण बनेगा, जिसका अर्थ होगा "उड़ गया"।

सहायक क्रियारूप

ये क्रिया के "मूल" रूप से परसर्ग के रूप में जोड़े जाते हैं, ताकि विभिन्न पहलुओं और मनोवृत्तियों को समझा जा सके, जैसे निम्नलिखित उदाहरणों में है–

तालिका 2.13 : क्रिया रूप

क्रिया का मूल रूप	सहायक क्रिया रूप	संयुक्त रूप
/कण्टु/ "देखा गया है"	*/एक्कुम्/* "संभावना है"	*/कण्टेक्कुम्/* "देखने की संभावना है"
/कण्टु/	*/इट्टु/* "क्रिया जो समाप्त हो"	*/ कण्टिट्टु/* "जो देखा गया"

लंबे क्रमवार सहायक क्रियारूप का उदाहरण–

/परःञुकोटुत्तिट्टुण्डायिरुन्निःल्ल/ "बोला गया है– इच्छासहित-क्रिया जो समाप्त हो– संपन्न हुआ हो– कुछ शेष– न रह गया हो" : "जो इच्छानुसार नहीं कहा हो"

क्लिटिक्स/प्रत्ययप्राप्त रूप

ये ऐसे रूपवैज्ञानिक तत्त्व हैं, जो संज्ञा या क्रिया नहीं हैं, यानि इनका कारक या काल निर्धारक (marker) से कोई संबंध नहीं है। ये या तो मुक्त होते हैं या बद्ध। इनके अन्य रूपों में प्रो-क्लिटिक्स, या जो अन्य रूपों के बाद में आते है, वे एन-क्लिटिक्स कहलाते हैं।

तालिका 2.14 : क्लिटिक्स

क्लिटिक्स	उदाहरण
मुक्त क्लिटिक्स	*/एटो/* संबोधनात्मक; */इता/* और */अता/* निकटस्थ और दूरस्थ ध्यानाकर्षक
प्रो-क्लिटिक्स	प्रारंभिक */अ-, इ-/* और */ए-/* जैसे– */अ-ङ्ङने/* "उस प्रकार" */इ-ङ्ङने/* "इस प्रकार", */ ए-ङ्ङने/* "किस प्रकार"
एन-क्लिटिक्स	*/-ङ्ङने/* प्रो-क्लिटिक्स */अ-, इ-/* और */ए-/* के बाद

वाक्य

शब्दक्रम

मलयालम वाक्य में सबसे ज़्यादा प्रयुक्त शब्दक्रम कर्ता-कर्म-क्रिया है।

उदाहरण : */कुट्टितुंपियेप्पिटिच्चु/*

(एक) बच्चा- (एक) तितली-पकड़ी

"बच्चे ने तितली पकड़ी।"

समझौता

वर्तमान समय की मानक मलयालम में नियत क्रिया का कर्ता से कोई समझौता चिह्नक (marker) नहीं है।

संज्ञा और उसके विशेषण के बीच का समझौता कुछ सीमित संदर्भों के लिए ही है, जैसे– */अवरःक्केल्लावरःक्कुम्/* "वे–संप्रदान–सब–संप्रदान : "उन सब को"

अस्तित्ववादी क्रिया

योजक क्रिया */आणु/* की वर्तमान काल रूप में अनुवाद योग्य क्रिया है "होना", जो अक्सर प्रयुक्त होती है। */आणु/* जितना प्रयोगात्मक समतुल्य शब्द */आकुन्नुः/* या */अत्रे/* नहीं है।

पदबंध संरचना

मलयालम में पदबंध निम्नलिखित संरचनाओं को प्रकट करते हैं :

1. संज्ञा + क्रिया
2. क्रिया + संज्ञा
3. क्लिटिक + क्रिया
4. क्लिटिक + संज्ञा
5. क्रिया + क्रिया
6. संज्ञा + संज्ञा

पहले प्रकार में, प्रारंभिक घटक संबंध कारक और संबोधन कारक को छोड़कर कर्ता कारक का रूप ग्रहण करेगा।

उदाहरणः */अम्मवन्नुः/* "माता आई" (कर्तृ कारक +…)

/अम्मयेक्कंटु/ "माता को देखा" (कर्म कारक +…)

दूसरे प्रकार में, क्रिया रूप निम्नलिखित संज्ञाओं के विशेषण के रूप में व्यवहृत होता है :

उदाहरण: */वन्नाःम्म/* "जो माँ आई"

/पेरियस्वामि/ "महासंत"

(तीसरे और चौथे प्रकार में यथाक्रम) क्लिटिक्स संज्ञा या क्रिया को विशेषित कर सकता है।

उदाहरण: */इन्नुवन्नु/* "आज आया/ई" (वह आज आया/आई)

/इत्रनाळ्/ "इतना/ने दिन"

क्रिया रूप वाले पदबंधों में (पाँचवाँ प्रकार) कहीं (i) कृदंत या (ii) सामान्य या (iii) संभाव्य या (iv) क्रियार्थक संज्ञा या क्रिया के संयोजित रूप हो सकते हैं।

उदाहरणः */ओटियेत्ति/* "भागकर पहुँचा (ची)"

/कुळिक्कानपोयि/ "नहाने गया/ई"

/तोट्टालपोट्टुम्/ "छूने से टूट जाएगा"

/कळिकषिञ्ञु/ "खेल समाप्त हुआ"

वाक्य सरल (एक सामान्य क्रियायुक्त), जटिल (एक सामान्य क्रिया और कम-से-कम एक कृदंतयुक्त), या संयुक्त (एक से ज़्यादा सामान्य क्रियायुक्त) हो सकते हैं।

मलयालम में पुरातनवाद

विद्वानों ने इस पर ध्यान दिया कि मलयालम में कायम पुरातनवाद (archaism) *केरल पाणिनीयम्* के लेखक से लेकर, विद्वानों के ध्यान से बच नहीं पाया है। यहाँ उन्हें संक्षेप में आवश्यक परिवर्धन के साथ नीचे दिया जा रहा है।

I. स्वन और स्वन विज्ञान में प्रतिधारण (Retentions)

1. द्रविड़ भाषाओं में मलयालम ही वह एकमात्र भाषा है, जिसमें द्रविड़ मूर्धन्य संप्रवाही (continuant) व्यंजन *ष़* (-ष-) को बड़े पैमाने पर बरकरार रखने की प्रवृत्ति है, जबकि तमिल में इसे सीमित बोलियों में ही बरकरार रखा जाता है। वैसे *पष़म* "पका फल" बहुत से तमिलभाषियों का *पऴम* है। मलयालम भाषियों के लिए अनौपचारिक संदर्भ में ही सही, *पष़म* ही प्रयुक्त है।
2. द्रविड़ परिवार की प्राचीन प्रकृति से शीर्ष स्पर्श (apical plosive) का तृतीयक व्यतिरेक (दंत्य-वर्त्स्य-मूर्धन्य) मलयालम में ही बरकरार है। इस प्रकार हम *कुत्ति/* "चाकू मारा" : *कुट्टि* "शावक" : *कुट्टि* "बच्चा" को लें। 550 ईस्वी से *-ट्ट-* का *-तत-* में बोलचाल में लुप्त होने का प्रमाण कम-से-कम तमिल में है। (ज्वेलेबिल, 1970-90) अब *[त्रः]* का वर्तमान "वाचक" उच्चारण उसके लिखित रूप *-तत-* होने का निदान कर सका, यह एक नई खोज है।
3. प्रारंभ में दक्षिण भारत की कुछ जनजातीय बोलियों और लक्षद्वीप में वर्त्स्य नासिक्य संघर्षी गुच्छ (cluster) को कायम रखा है, जैसे पणिया *पैक्किन्तो* "भूख लगी है", लक्षद्वीप *फोंता* "जाता है"। हालाँकि, मलयालम में *-न्ट-* जैसे *अवन्टे* "उसका /के/ की"– जैसे उदाहरण भी हैं जिन्हें मलयालम के ऐतिहासिक कालक्रम में विकसित रूप माना जा सकता है। **-न्ट-* मलयालम में *-नःनः-* और तमिल में *-णण-* में बदल जाता है तथा उच्च तमिल का वर्तमान उच्चारण पुराने उच्चारण *[न्द]* का प्रतिनिधित्व नहीं करता। इस प्रकार मलयालम *येन्टे* "मेरा/रे/री" के समान तमिल में *येन्टु* -यानि (न्टत्रु) – है, जो पूर्व संदर्भ का मिलता-जुलता है।
4. द्रविड़ भाषा के सभी छह नासिक्य व्यंजनों का, मलयालम में स्वनिमिक अंतर देखा जा सकता है *-ङ, ञ, ण, न, ऩ* और *म*। समकालीन तमिल में *ञ-* केवल विदेशी शब्दों जैसे– *ञानम* "ज्ञान" और देशी शब्दों, जैसे– *ञायरु* "रवि" में पाया जाता है। इसके स्थान पर मलयालम *ञ* से जुड़े प्राचीन संदर्भों को, जैसे– *ञंटु* "केकड़ा", *ञेट्टु* "डंठल" जैसे शब्दों में सुरक्षित रखती है। मलयालम में इस प्रकार प्रारंभ में *ञ* को बनाए रखने की प्रवृत्ति प्राचीन है। लेकिन तिर्यक रूप *येन (ञान)* "मैं", यह अनुमानित किया जाता है कि मलयालम *ञान* "मैं" पुरातनवाद को बरकरार रखने का उदाहरण बनता है। मलयालम बोलियों में च *(ड़)* का संघर्षी उच्चारण नहीं के बराबर है। जैसे– *चारु* "रस", *चाडु* "कूदना", *चिरि* "हँसी", *चोरिः* "खरोंचना", *चुरुःळ* "लुढ़कना" हैं और वे बोलचाल की तमिल के *[र]* या *[स]* के अनुसार नहीं हैं।
5. बोलचाल की तमिल में प्रारंभिक अघोष स्पर्श व्यंजन जहाँ सामान्य है, मलयालम में नहीं है। जहाँ तमिल में *दडि* "मोटापा" और *गट्टि* "लंगड़ा/ना/पन" हैं, वहाँ मलयालम में हम केवल *[त]* और *[क]* के योग से यथाक्रम शब्द *तटि* और *कट्टि* ही सुन सकते हैं। तद्भव शब्द *तेवर* < *देवर* "देवता" और *कुणम* < *गुणम* "विशेषता" से किया जाने वाला एक समझौता है।

II. स्वनिमिक प्रक्रिया

1. मलयालम स्वनिमिक निर्माण में संतुलनवादी एवं स्वानिकी प्रक्रिया में पुरोगामी (Progressive) है। किंतु संतुलनवादी रुझान के कई प्रमाण इस क्षेत्र में उपलब्ध होते हैं। तमिल संधि *ल* > *ट* /- "स्पर्श" अनुप्रयोग में तमिल में *विरक्कुम* < *विळ-क्कुम* "बेचेगा" बनता है। मलयालम में *विल्क्कुम* है।

2. च का क्रम (sequence) न होने देने की प्रक्रिया का भी मलयालम में अभाव है। वैसे तमिल में *चेक्कु* "चक्की" < इंडो-आर्यन में *चक्का* "पहिया" और मलयालम में *चक्कु* बनता है।

III. आकृति विज्ञान में प्रतिधारण

1. पुनर्निर्मित *मुतुक्कन* "बूढ़ा आदमी" मलयालम में बरकरार है, लेकिन तमिल में नहीं है।
2. मध्यम पुरुष बहुवचन तिर्यक रूप *निम* मलयालम के पुराने पाठों (texts) में बरकरार है, जो बाद में *निंःड़ळ* < "आप" *(निंःन -क़ळ)* शब्द के स्थान पर प्रयुक्त होता है। पुरानी तमिल में भी यह पहले *नुम-* और बाद में *उम* संध्वनि में परिवर्तित होता है, लेकिन मलयालम *निःन* को बरकरार रखती है।
3. मलयालम पुराने आज्ञार्थक बहुवचन प्रत्यय *-विन* सबल क्रियाओं के साथ संरूप *-प्पिन* और नासिक्य व्यंजन के साथ *मिन* को बरकरार रखती है। जैसे *वरुविन* "आइए", *नटप्पिन* "जाइए" और *काण्मिन* "देखिए"। प्राचीन तमिल रंगमंच में हम केवल *-मिन* का प्रयोग देखते हैं, जो प्रायः नासिक्य के बाद का संरूप होता है, जैसे *वरुमिन* "आइए"।
4. पुराने संकेतवाचक विशेषण "अ" और "इ" मलयालम में संरक्षित हैं। पुरानी तमिल में भी, "आ" काव्यात्मक पुरातनवाद (archaism) के रूप में शेष है।
5. सबसे पुराना अधिकरण कारक परसर्ग *-अत्तु* (तोलकाप्पियम सूत्र, 242, 243) जो पहले से ही तमिल में प्रयोग के बाहर था, और साहित्य में जिसका प्रयोग नहीं देखा गया है। यह मलयालम में अब भी प्रचलन में है, जैसे कुछ संदर्भों में *वेयिलत्तु* "गरमी में", *कविळत्तु* "गाल में" जैसे प्रयोग होते हैं।
6. पुरानी तमिल में अपादान परप्रत्यय *निःन्तु* मलयालम में विशिष्ट ध्वन्यात्मक परिवर्तन के साथ संरक्षित है। पुरानी तमिल में *नीर निःन्तु* मलयालम में *नीरिल निःन्नुः* "पानी से" बनता है।
7. असमापक परप्रत्यय *-वान, -प्पान, (-मान)* पुरानी तमिल के बाद उत्पन्न हुए, जो मध्यकाल तक लुप्त हो गए, लेकिन मलयालम में अभी भी बरकरार हैं, जैसे– *चेय्यान* "करने को", *नःटप्पान* "चलने को", *काण्मान* "देखने को"।
8. प्राचीन तमिल प्राणिवाचक बहुवचन प्रत्यय *-मार* मलयालम में बरकरार (retained) हैं, जैसे *अम्मा -मार* "माताएँ"।

IV. शाब्दिक प्रतिधारण

1. मलयालम पहले के कई स्वदेशीकृत भारतीय-आर्य उधार शब्दों को अपने में धारण करती है, जैसे– *आशान* (<संस्कृत आचार्य) "अध्यापक" और *अच्चन* (<प्राकृत *अज्ज*) "पिता, एक आदरणीय व्यक्ति"।
2. कई क्षेत्रीय समुदायों के नाम केवल मलयालम भाषी को ही पता हैं। जैसे– *पाणर* "चारण", *वेट्टुवर* "शिकारी", *पुळ्ळुवर* "गायक", और *परवर* "मछुवारे" आदि।
3. कई पुराने शब्द जिनके विशेष अर्थ हों, वे केवल मलयालम में ही बचे हैं, जैसे– *ओत्तु* "लिप्यंकित निर्देश", *पोत्तु* "भैंस", *पेड़ा* "हिरणी", और *पट्टी* "कुतिया"।
4. मलयालम में उपलब्ध पर्यायवाची जोड़ियों के अर्थपरक और वाक्यपरक अंतर जो तमिल में नहीं हैं, वह मलयालम की प्रतिधारणा है। वैसे "देना" क्रिया के *तरु* और *कोटु* का अंतर प्राप्तकर्ता (receiver) की सार्वनामिक स्थिति के आधार पर मलयालम में है। यदि प्राप्तकर्ता उत्तम पुरुष या मध्यम पुरुष है, तो क्रिया *तरु* है जबकि अन्य पुरुष के साथ क्रिया *कोटु* प्रयुक्त है।

मलयालम में बातचीत की प्रवृत्ति और नवीनीकरण की प्रवृत्ति में संतुलन दिखता है।

मलयालम भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का इतिहास

चौदहवीं शताब्दी का संस्कृत ग्रंथ *लीलातिलकम्*, जिसमें मलयालम को मणिप्रवाळम्, संस्कृत और तमिल की मिश्रित भाषा माना गया था, को मलयालम का सबसे पहला वैज्ञानिक अध्ययन माना जाता है। सोलहवीं शताब्दी से पाश्चात्य ईसाई मिशनरियों का मलयालम व्याकरण पर प्रभाव पड़ा। उनका अध्ययन लैटिन और यूनानी व्याकरण के उनके स्वयं के अध्ययन से अधिक प्रभावित था और जो बाद के पाश्चात्य मिशनरियों हेतु स्थानीय भाषाओं को सूचीबद्ध करने के उनके प्रयास के साथ जुड़ा था। सन् 1700 से 30 वर्ष केरल में निवास करने वाले आर्नोस पातिरि ने पाठ्य आधारित *ग्रंथभाषयुडे व्याकरणं* ग्रंथ लिखा, यह मानकर कि संस्कृत से मलयालम की उत्पत्ति हुई है। आंजले फ्रांसिस ने बोलचाल की मलयालम भाषा का व्याकरण (1712) लिखा। अन्य प्रमुख योगदानकर्ता क्लमेंट पियनियस (*आल्फबैटम ग्रंथोनिकम्*, 1772), पॉलिनोस पातिरि (*सिद्धरूपम्*, 1790), ड्रमोंड (*ग्रामर ऑफ़ द मलयालम लैंग्वेज़*, 1799), जे.एफ. स्प्रिंग (*आउटलाइन ऑफ़ ए ग्रामर ऑफ़ द मलयालम लैंग्वेज़ एज़ स्पोकन इन द प्रोविंसेस ऑफ़ नॉर्थ एंड साउथ मलाबार एंड किंगडम् ऑफ़ त्रावणकोर एंड कोच्चि*, 1839) और पीत (*मलयालम व्याकरणं*, 1841) आदि हैं। मलयालम भाषा का एक समग्र अध्ययन हर्मन गुंडर्ट का (*मलयाल भाषा व्याकरणं*, 1851, *मलयाल व्याकरण चोद्योत्तरम*, 1860) और गारथवाइट एल. का (*मलयाल भाषा व्याकरण संग्रहम्*, 1860, *मलयालव्याकरण चोद्योत्तरम*) है।

रॉबर्ट काडवेल का दक्षिण भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन (*कंपेरेटिव ग्रामर ऑफ़ द द्रविड़ियन लैंग्वेजेज़* और आंद्रनोव का (*ए कंपेरेटिव ग्रामर ऑफ़ द द्रविड़ियन लैंग्वेजेज़*) उल्लेखनीय हैं। द्रविड़ भाषाई परिषद (डीएलए), और केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईएल) आदि के अध्ययन का भी काफ़ी योगदान रहा है।

जॉर्ज मात्तन (1863) पहले स्थानीय मलयालम वैयाकरण थे। उनके बाद इस क्षेत्र में व्यापक कार्य करने वालों में वैक्कत्तु पाछु मूत्तु (*केरल भाषा व्याकरणम्*, 1876), टी.एम. कोवुण्णि नेडुंगाडी (*केरल कौमुदी*, 1878), ए.आर राजराजवर्मा (*केरल पाणिनीयम्*, 1896), *शब्द शोधिनि*, 1902; *प्रथम व्याकरणम्* 1904; *मध्यम व्याकरणम्*, 1907), श्रीकंटेश्वरम पद्मनाभ पिल्लई (*मलयाल व्याकरण चोद्योत्तरम्*, 1902), एम. शेषगिरि प्रभु (*व्याकरणमित्रम्* 1902), स्वदेशाभिमानि रामकृष्ण पिल्लई (*बालबोधिनि*, 1902) पी.के. नारायण पिल्लई (*प्रयोगदीपिका* 1935, *व्याकरण प्रवेशिका*, 1937), और के.एस. नारायण पिल्लई, साहित्य पंचानन् (*लघु व्याकरणम्*, 1937), आट्टूर (*भाषा सुधाकरम्* 1942), कुट्टिक्कृष्ण मारार (*भाषा परिचयम्*, 1942,) एन. कुंञुरामन पिल्लई (*श्री चित्र व्याकरणमंजरि*, 1945), जॉन कुन्नप्पल्लि (*शब्दसौभगम्*, 1976), एन.एन. मूसत (*व्याकरण विवेकम्*, 1984), सी.वी. वासुदेव भट्टतिरि (*अभिनव मलयालम*, 1989), के.एस. नारायण पिल्लई (*आधुनिक मलयाल व्याकरणम्*, 1995), गोपिक्कुट्टन (*मलयाल व्याकरणम्*, 2002), ई.वी.एन. नंबूदिरि (*केरल भाषा व्याकरणम्*, 2005) आदि प्रमुख हैं।

यद्यपि केरल का पहला विश्वविद्यालय 1937 में खुला, फिर भी मलयालम भाषा विज्ञान पर गंभीर ध्यान 1963 में मलयालम विभाग खुलने के बाद दिया गया। शूरनाट्ट पी.एन. कुञ्ञन पिल्लई, के. राघवन पिल्लई, इलंकुलम कुञ्ञन पिल्लई की तरह ही पी.के. नारायण पिल्लई, वी.आई. सुब्रह्मण्यम, वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर, जी.के. पणिक्कर के गहन अध्ययन और योगदान मलयालम की भाषाई विशेषताओं को लेकर हुए। *कृष्णगाथा* (प्रबोधचंद्रन नायर), *रामचरितम्* (नडुवट्टम गोपालकृष्णन), *कण्णश्श रामायणम्* (रामचंद्रन पिल्लई), *भारतमाला* (सरस्वति अम्मा), *भाषाकौटिलीयम्* (सरोजिनि अम्मा एवं के.एन. एष़ुत्तच्छन), मणिप्रवाळम् पर हुए पहले अध्ययन (एन. गोपीनाथन नायर), *अध्यात्म रामायणम्* (गोपीनाथन पिल्लई), *भारतम्* (जगदम्मा), *तुल्लल कोर्पस* (विजयकृष्णन); जाति एवं क्षेत्र का बोलीपरक अध्ययन (टी. वेलवन, बी. गोपीनाथन नायर, पी. सोमशेखरन नायर, आर.वी.के. तंपुरान, सी.जे. रॉय, ए.पी. अंद्रेवकुट्टि), और *ट्राइबल लैंग्वेजेज़* (सोमशेखरन नायर, एन. राजेंद्रन, एल. डार्विन, एम. श्रीनाथन); *स्टडीज़ ऑन मलयालम वर्बल फॉर्म्स एंड मलयालम फॉनेटिक्स* (प्रबोधचंद्रन नायर), *तमिल-मलयालम कांटैक्ट* (सोलोमन), *स्टाइलिस्टिक फीचर्स ऑफ़ प्रोवर्ब्स* (मूसत), *लीलातिलकम्* (गोपाल पिल्लई), *मलयालम ग्रामर्स* (सुकुमारन पिल्लई),

मिडीवल मलयालम (वेलायुधन पिल्लई), *लैंग्वेज ऑफ़ आट्टप्रकारम्* (एम. लीलावती), *कोंट्रास्टिक फोनेटिक्स ऑफ़ इंग्लिश एंड मलयालम* (वेलायुधन), *हेल्पिंग वर्ब्स* (राजशेखरन नायर), *टैगमेमिक अनालिसिस* (सरस्वती अम्मा), *टी.जी. ग्रामर* (अंद्रेसकुट्टी), *कोंट्रास्टीव ग्रामर* (श्रीदेवी), *ट्रांसलेशन इश्यूज़* (रविशंकर, बालकृष्णन नायर), *ट्रेडिशनल ग्रामर्स* (जयकुमारी अम्मा) आदि उल्लेखनीय विवरणात्मक अध्ययन हैं। हाल ही में, रोनाल्ड ई. आशर और एम.एस. आंद्रेव भी भाषावैज्ञानिक अध्ययन में अभूतपूर्व योगदान दे चुके हैं।

पी.के. नारायण पिल्लई, दामोदरन नायर, पन्मन रामचंद्रन नायर, वासुदेव भट्टतिरि, प्रबोधचंद्रन नायर आदि के शैक्षिक व्याकरण ग्रंथों व आलेखों का उपयोग शिक्षा के भिन्न स्तरों पर हुआ है। वर्तमान मलयालम महा निघंटु *शब्दतारावली* (श्रीकंठेश्वरम, 1932) कोशकला अध्ययन में, जो शूरनाट्ट कुञ्ञन पिल्लई के संपादकत्व में शुरू किया गया था, वह मलयालम का एक उल्लेखनीय भाषा अध्ययन है। प्रभाकर वारियर, बी.सी. बालकृष्णन् वेणुगोपाल पणिक्कर, शोरनूर कार्तिकेयन, रत्नम्मा, एन.आर. गोपीनाथन पिल्लई, वी.के. हरिहरन उण्णित्तान और प्रबोधचंद्रन नायर आदि ने मलयालम को मौलिक योगदान प्रदान किया। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों में टी.बी. वेणुगोपाल पणिक्कर (*भाषारत्नम*), के.एम. प्रभाकर वारियर (*आधुनिक भाषा शास्त्रम*), प्रबोधचंद्रन नायर (*स्वनविज्ञानम*) हैं। कुट्टिकृष्ण मारार (*मलयाल शैली*), सी.वी. वासुदेव भट्टतिरि (*नल्ल मलयालम*), और पन्मन रामचंद्रन नायर (*तेट्टिल्लात्त मलयालम*) आदि मलयालम व्याकरण को जनवादी ख्याति प्रदान कर चुके हैं।

मलयालम व्याकरण परंपरा का विकास

मलयालम में व्याकरण साहित्य रेखाचित्र जैसा है। मलयालम व्याकरण का समग्र अध्ययन अब भी लिखा जाना बाकी है। मलयालम व्याकरण का व्यापक अध्ययन यूरोपीय लोगों द्वारा शुरू हुआ। पहला आधुनिक मलयालम व्याकरण रॉबर्ट ड्रमोंड द्वारा 1799 में प्रकाशित किया गया था। चर्च मिशनरी सोसाइटी के सदस्य, जोसफ पीत द्वारा 1841 में *ए ग्रामर ऑफ़ द मॉडर्न मलयालम लैंग्वेज* प्रकाशित किया गया था। रॉबर्ट काडवेल के *ए ग्रामर ऑफ़ द्रविडियन एंड साउथ इंडियन लैंग्वेज* का प्रकाशन 1855 में हुआ था। जैसा कि शीर्षक से पता चलता है यह ग्रंथ द्रविड़ भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण लिखने का प्रयास था। इसमें तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम के अलावा तुलु, कोडगु, तोडा, और मालतो जैसी छोटी भाषाएँ शामिल थीं। जर्मन पादरी हर्मन गुंडर्ट ने 1860 में *मलयाल भाषा व्याकरणम्* प्रकाशित किया।

अठारहवीं शताब्दी के अंत तक, मलयालम के क्षेत्रीय वक्ताओं के लिए कोई आधिकारिक पाठ या कोश उपलब्ध नहीं था। यह संस्कृत के प्रभुत्व के कारण था। कई व्याकरणविदों ने मलयालम के विस्तृत अध्ययन में योगदान को छोड़कर, संस्कृत व्याकरण के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित किया। पहला मलयालम व्याकरण *मलयाळमयुटे व्याकरणम्* (1863) क्षेत्रीय विद्वान जॉर्ज मात्तन (मात्तन गीवर्गीस, 1819-70) ने प्रकाशित किया।

के.एन. एषुत्तच्छन ने मलयालम व्याकरण परंपरा का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। उनका *हिस्ट्री ऑफ़ ग्रामेटिकल थियरीज़ इन मलयालम* पाँच उल्लेखनीय विवरणात्मक व्याकरण पाठ्यपुस्तकों – *लीलातिलकम्, केरल कौमुदी, केरल भाषा व्याकरणम्, व्याकरण मित्रम्, और केरल पाणिनीयम्* के रूप में मान्य है। *लीलातिलकम्* मलयालम व्याकरण का सबसे पुराना उपलब्ध ग्रंथ है, जो चौदहवीं शताब्दी तक का व्याकरण विषयक प्रबंध है। *लीलातिलकम्* को सही मायने में व्याकरण नहीं कहा जा सकता, किंतु यह एक *मणिप्रवाळ लक्षण* ग्रंथ है, जैसा कि इसके रचयिता ने कहा है। अर्थात् यह *मणिप्रवाळम्* की व्याख्या एवं विवरण है। इस ग्रंथ के अनामी लेखक इसे भाषा (केरलभाषा) और संस्कृत का मिश्रण घोषित करते हैं। इसकी भाषा केरल के लोगों की बोलचालीय भाषा नहीं है– मणिप्रवाळ काव्य है। *लीलातिलकम्* में आठ अध्याय हैं, जिन्हें *शिल्प* के नाम से जाना जाता है। पहले के तीन अध्यायों में लेखक भाषा की ध्वनि व्यवस्था एवं स्वरूप विज्ञान का परिचय देते हैं, संधि नियम भी तीसरे अध्याय

में वर्णित है। शेष पाँच अध्यायों में लेखक मणिप्रवाळ काव्य के गुण-दोष का विवेचन करते हैं, साथ ही भाषा के शब्द एवं अर्थ विषयक रूप को भी स्पष्ट करते हैं। इस ग्रंथ में 161 *सूत्र* और उनकी *वृत्ति* (शब्दावली) हैं। लेखक संस्कृत भाषा का उपयोग करते हुए *सूत्र* और *वृत्ति* तथा मलयालम में *सूत्र* का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। लेखक का दावा है कि केरलीय (केरलवासी) पहले तमिलवासी थे, जिनकी भाषा तमिल थी। किंतु वह भाषा लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली आधुनिक तमिल नहीं है। वे उसे *चोलभाषा* या *पांड्यभाषा* मानते हैं। उक्त भाषा की कारक व्यवस्था का विस्तारपूर्वक अध्ययन और उदाहरण लेखक ने दिए हैं। संधि नियम का भी विस्तार किया गया है। *लीलातिलकम्* अचूक एक व्याकरणिक प्रबंध नहीं है। कोई भी इसे पढ़कर बता सकता है इसमें निहित पाठ अस्पष्ट और अधूरे हैं। लेखक कभी-कभी विरोधाभासी प्रतिपादन करते हैं और अप्रमाणित तथ्य प्रस्तुत करते हैं। पाठ में गलतियाँ तथा विसंगतियाँ हैं। इन मतभेदों के बावजूद तथ्य यह है कि *लीलातिलकम्* मध्यकालीन मलयालम की एक प्रामाणिक कृति है, जो उपयोगी रचनाओं में से एक है। यह रचना मलयालम भाषा एवं उसकी भाषाई विशेषताओं को समझने का अभूतपूर्व कार्य है।

केरल कौमुदी टी.एम. कोवुण्णि नेडुङाडि (1831-1889) की 1878 में प्रकाशित रचना है। यह मलयालम का परंपरागत व्याकरण ग्रंथ है। यह सोलह अध्यायों या *कलशों* में विभक्त है। प्रत्येक सूत्र की व्याख्या में मलयालम के साथ-साथ संस्कृत और तमिल को समतुल्य स्थान नेडुङाडि ने दिया है। पाठकों की सुविधा के लिए *वृत्ति* अर्थात् शब्दावली (gloss) दी गई है। 385 *कारिका* या *सूत्र* इस ग्रंथ में हैं। संधि संयोजन और विग्रह का भी ब्यौरा दिया है। मलयालम की क्रिया धातुओं को समझाने के प्रयास के कारण इस ग्रंथ को व्याकरण के एक महत्त्वपूर्ण पाठ के रूप में पहचाना गया है। नेडुङाडि की रचना को भी मलयालम में एक शैक्षिक व्याकरण सामग्री माना जा सकता है। शुरू के कुछ अध्यायों में वे संस्कृत व्याकरण पर प्रकाश डालते हैं, ताकि मलयालम के व्याकरणिक नियमों को आसानी से समझा जा सके। व्याकरण के सारे प्रकरणों का विशेषकर वाक्य रचना और उसके वर्गीकरण का इस ग्रंथ में उल्लेख है। छात्र और साहित्य मनीषियों के उपयोगी व्याकरण, काव्य तत्त्व और काव्यशास्त्र का भी विवरण इसमें दिया गया है। हालाँकि, इसके कुछ दोष भी हैं। *केरल कौमुदी* के सूत्र में प्रवाह और सौंदर्य का अभाव है। यद्यपि सामग्री का विशद प्रस्तुतीकरण है, लेखक उसे सुगम और प्रभावशाली बनाने में असफल हुए हैं। उन्होंने यहाँ तमिल व्याकरण का अंधानुकरण किया है। ध्वनि विज्ञान और स्वरूप विज्ञान की व्याख्या कुछ अर्थों में गलत है। फिर भी इसमें निहित सामग्री की अधिकता के कारण, कमज़ोरियों के बावजूद यह एक महत्त्वपूर्ण व्याकरणिक रचना है।

वैक्कत्त पाच्चु मूत्तत (1876) की रचना *केरल भाषा व्याकरणम्* मुख्यतः संस्कृत व्याकरण परंपरा का अनुसरण करती है। अन्य मलयालम व्याकरणविदों के विपरीत तमिल के साथ-साथ अंग्रेज़ी का उनका ज्ञान सीमित था। इसलिए वे संस्कृत परंपरा का पालन करते हैं। यह ग्रंथ *पूर्वभाग* और *उत्तरभाग* में विभाजित है। प्रत्येक भाग के चार उपभाग हैं। *पूर्वभाग* में ध्वनि विज्ञान, संधि, शब्द और समास के चार अध्याय हैं। दूसरे भाग में धातु (मूल), क्रिया, प्रयोग और अलंकार शामिल हैं। उनका मानना था कि देशी वक्ताओं को भाषा की व्याकरणिक शुद्धता के साथ प्रयोग करने के लिए सटीक व्याकरणिक नियमों की आवश्यकता होती है। उनका लक्ष्य था कि यह ग्रंथ कवियों और लेखकों के लिए एक टीका के रूप में काम करे। यह रचना सहजता एवं बोधगम्यता के लिए वर्णलुप्त (catechetic) शैली में की गई है। उन्होंने अंतिम कुछ अध्यायों में शब्दालंकार और छंदों का विस्तृत वर्णन किया है। कमियों के बावजूद, इस रचना से पता चलता है कि लेखक के पास गहरी भाषाई समझ और सामग्री की स्पष्टता थी।

एम. शेषगिरि प्रभु की रचना *व्याकरण मित्रम* (1902) को माध्यमिक विद्यालय और विश्वविद्यालयी छात्रों के लिए डिजाइन किया गया। इसके 336 भाग हैं, और यह तीन अध्यायों – *शिक्षाकांड* (स्वानिकी), *परिनिष्ठ कांड* (आकृति विज्ञान) और *वाक्य कांड* (वाक्य) में विभक्त है। लेखक ने कुछ अनुभाग सामान्य भाषा विज्ञान के साथ-साथ व्याकरण को भी समर्पित किए हैं। रचना के अंत में भाषा के उद्भव के बारे में लघु टिप्पणी दी गई है। संस्कृत व्याकरण पर एक अध्याय भी है। इस ग्रंथ की भी कमज़ोरियाँ

हैं। *व्याकरण मित्रम* में जो विवरण हैं, वे संपूर्ण नहीं हैं। कुछ विषयों को सही ढंग से व्यवस्थित करने और विचार करने में लेखक विफल रहा है। फिर भी कुल मिलाकर, मलयालम व्याकरण साहित्य में उनकी रचना का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

ए. आर राजराजवर्मा की *केरल पाणिनीयम्* (1986) एक मौलिक कृति है। इसका प्रकाशन वर्मा की भूमिका के साथ हुआ। राजराजवर्मा ने अपनी कृति को अध्ययन के चार मुख्य क्षेत्रों में विस्तारित किया– *शिक्षा* (स्वानिकी), *परिनिष्ठा* (आकृति विज्ञान), *आकांक्षा* (वाक्य) और *निरुक्ता* (व्युत्पत्ति)। इसके लेखन में उन्होंने हर्मन गुंडर्ट सहित छह अन्य व्याकरणविदों से परामर्श लिया। इसमें *असित्र-वृत्ति-भाष्य* शैली का अनुसरण किया गया है। *केरल पाणिनीयम्* का दूसरा संस्करण कई अर्थों में भिन्न है।

केरल पाणिनीयम् के लेखक ने मलयालम व्याकरण के अलावा अन्य कई विषयों को भी शामिल किया है। यह ग्रंथ चार अध्यायों में विभाजित है और निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करता है– केरल और उसकी भाषा, प्रांत के आधार पर भाषा विभाजन, वर्ण और ध्वनि परिवर्तन। उनके अनुसार, तमिल और मलयालम एक ही भाषा की दो बोलियाँ हैं। उनके विचार में द्रविड़ लोग दक्षिण भारत के मूल निवासी हैं और आर्यों के आगमन के पहले ही पूरे देश में फैल गए थे। उन्होंने मलयालम के तमिल से अलग होने के कारणों पर भी प्रकाश डाला। भाषाओं के चार स्तरीय विभाजन में द्रविड़ भाषाओं को संश्लिष्ट योगात्मक माना, लेकिन संस्कृत लचीली भाषाओं में एक है। लेखक ने मलयालम भाषा के ऐतिहासिक विकास के तीन चरणों का भी उल्लेख किया है। *केरल पाणिनीयम्* का अधिकांश विश्लेषण पारंपरिक तरीके से किया गया है। उन्होंने मलयालम व्याकरण को सरल बनाने के लिए अन्य ग्रंथ भी लिखे, जिनमें *शब्दशोधिनि, प्रथमव्याकरणम्* और *मध्यमव्याकरणम्* शामिल हैं।

रोनाल्ड ई. आशर और टी.सी. कुमारी ने *मलयालम* (1997) ग्रंथ लिखा, जो मलयालम भाषा के आधुनिक भाषाई सिद्धांत पर आधारित है। इसमें मलयालम के स्वानिकी, स्वरूप विज्ञान, और वाक्य विज्ञान का विश्लेषण है। यह भाषा सीखने वालों, और भाषा विज्ञान के छात्रों के लिए उपयोगी है। वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर का *भाषाशास्त्र निघंटु* भाषा विज्ञान का एक विश्वकोश है, जिसमें विभिन्न भाषिक शब्दावलियों और विचारों का सैद्धांतिक एवं अनुप्रयुक्त अध्ययन शामिल है। इसमें भाषा विज्ञान के उत्कृष्ट विद्वानों का भी परिचय है। यह मलयालम में भाषा विज्ञान का सबसे व्यापक शब्दकोश है। मलयालम स्वानिकी पर उनका *स्वनविज्ञानम्* एक और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

मलयालम कोशकला अध्ययन का इतिहास

एक भाषा के गद्य के विकास में उस भाषा के कोश एवं व्याकरण ग्रंथों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। केरल में कोशग्रंथों (dictionaries) के निर्माण में यूरोप की ईसाई मिशनरियों का अभूतपूर्व योगदान है, ताकि उनकी मूल भाषाओं को स्थानीय मलयालम भाषा के साथ जोड़ा जा सके। लगभग 1680 और 1730 के बीच में, मलयालम भाषी भूमि में सबसे पहले कोशकला अध्ययन शुरू हुआ। मलयालम-पुर्तगाली कोश मलयालम का पहला कोश है, जो जॉन अर्न्स्ट हैंक्सेलडेन द्वारा *वोकाबुलारियम मलबारिको लुसितानम्* नाम से प्रकाशित है। वे केरल में "आर्नोस पातिरि" के नाम से जाने जाते हैं। उससे भी पहले कुछ अंतर्भाषी पांडुलिपियों का उपयोग होता था, जिनमें से कुछ अब भी इटली, जर्मनी और पुर्तगाल के पुस्तकालयों में सुरक्षित हैं। हंगरी के पादरी जेकब हरिसेग्गर द्वारा आर्नोस के कामों को पूरा किया गया। केरल साहित्य अकादमी ने 1966 में इस मलयालम-पुर्तगाली शब्दकोश का पुनः प्रकाशन किया, जिसमें रोमन लिपि का सहारा लिया गया है। जॉन फिलिप फाब्रिक्स का अंग्रेज़ी और मलाबार भाषा शब्दकोश 1786 में प्रकाशित हुआ।

बेंजामिन बेली का *ए डिक्शनरी ऑफ़ हाई एंड कोलोक्विअल मलयालम एंड इंग्लिश* मलयालम का दूसरा शब्दकोश है, जो 1846 में प्रकाशित हुआ था। मलयालम का पहला एकभाषा कोश मलयालम-मलयालम कोश का मुद्रण एक और पादरी रिचर्ड कोलिंस द्वारा 1865 में हुआ। प्राचीन कोशों में लब्धप्रतिष्ठित, हर्मन गुंडर्ट का मलयालम-अंग्रेज़ी शब्दकोश है, जिसका प्रकाशन

1872 में हुआ। किसी मूल निवासी द्वारा मलयालम में पहला शब्दकोश *मलयालम-इंग्लिश स्कूल डिक्शनरी* था जिसे थोबियस ज़कारिया द्वारा लिखा गया था और जो 1870 में प्रकाशित हुआ था। जैसा कि शीर्षक से ही पता चलता है यह शब्दकोश स्कूली छात्रों को ध्यान में रखकर बनाया गया था। इस पहल को उन्नीसवीं शताब्दी के केरल के संदर्भ में समझने की आवश्यकता है जब मलयालम भाषा में पाठ्यपुस्तकें लिखी जाने लगीं।

मलयालम में प्रकाशित मुख्य शब्दकोश निम्नलिखित हैं :

तालिका 2.15 : मलयालम शब्दकोश

1695	Malayalam-Portuguese dictionary	Arnos Padre
1786	Dictionary of the English and Malabar languages	Johann Philip Fabricus
1846	Dictionary of High and Colloquial Malayalam- English	anonymous
1849	English-Malayalam dictionary	CMS Press
1856	Malayalam-English, English-Malayalam dictionary	E. Laseron
1860	Anglo-Malayalam vocabulary and phrase book	P. John
1865	Malyanma Nighandu	Richard Collins
1870	English-Malayalam School Nighandu	C. Muller
1870	Malayalam and English school dictionary	C. Muller, J. S. Beuttler
1870	Malayalam-English School Nighandu	Thobias Zacharias
1872	Malayalam Nighandu	Herman Gundert
1874	MalayalamAkaraadi	anonymous authors
1888	Amarartha Akshara Nighandu	Kaikulangara Rama Varrier
1891	Malayalam-Latin-English dictionary	OCD missionary
1898	Syriac-Malayalam dictionary	Abraham Kathanar
1899	Hindi Vocabulary	B. S. Ganapathy Singh
1899	Puranakatha Nighandu	Pailo Paul
1907	Anglo-Malayalam-Nighandu	Thobias Zacharias
1923	Sabdatharavali	Sreekanteswaram Padmanabha Pillai
1926	Kairali Kosam	C. N. Vennikkulam Gopalakuruppu
1937	Malayala Sailee Nighandu	T. Ramalingam

1939	Bhaashaanighantu	Karunakara Panikkar
1939	Navayuga Bhasha Nighandu	R. Narayana Panikkar
1942	Sabda Vaijayanti Nighantu	Kuriseri Gopala Pillai
1944	Malayalam-English Saiilee Nighantu	Karunakaran Nair, V. Karunakaran
1950	Vedapustaka Nighantu	A. C. Clatton
1953	English-English-Malayalm Dictionary	T. P. Ramalingam Pillai
1953	Sanskrit-Malayalam Dictionary	Sankaran Namboothiripadu
1955	Malayala-Samskrita Nikhandu	T. P. Xavier
1955	Vidyarthimithram Malayala Nighantu	P. John Koshi
1958	Kuttikalute Nighantu	Payampallil Gopala Pillai
1959	Udaya Malayalam-English Nighandu	E. Eliyas and E. Isaac
1960	Sreedevi Malayalam-English Nighandu	Karunakara Menon
1962	A Concise Dictionary of Malayalam-Tamil	M. A. Samy
1964	Purana Nighandu (Later Puranic Encyclopedia)	Vettom Mani
1965	Malayalam lexicon (First volume)	University of Kerala
1966	English-Malayalam Dictionary	C. Madhavan Pillai
1968	English-Hindi-Malayalam Nikhandu	V. Ramanathan, V. Balakrishnan
1971	Malayalam-Russian Dictionary	M. S. Andanov
1973	Paryayamala	K. K. Balakrishnan Panikkar
1973	Vidyarthimithram Samskrit-Malayalam Nikhandu	V. Balakrishnan, R. Laila Devi
1976	Abhinava bhaasha Nighandu	C. Madhavan Pillai
1976	Apasabda Nighantu	Damodaran Nair
1976	English-English-Malayalam dictionary	T. Ramalingam
1976	Malayalam-English dictionary	C. Madhavan Pillai
1977	Sabda sagaram	B. C. Balakrishnan, K.S. Narayan Pillai
1984	Malayala paryaaya Nighantu	V. Gopinata Pillai
1998	Kerala bhasha Nighandu	S. Guptan Nair
1998	Vedasabdaratnakaram	D. Babu Paul

चर्च मिशन प्रेस, कोट्टायम ने 1849 में अंग्रेज़ी-मलयालम कोश का प्रकाशन किया और इसके सुलेख एवं अक्षर नमूनों के गठन का कार्य बेंजामिन बेली ने किया। बेली के अक्षर नमूनों में मलयालम के अक्षरों को उनके लंबे स्वरूप से गोल रूप में बदल दिया गया। थोबियस ज़कारिया का *मलयालम-इंग्लिश स्कूल निघंटु* (1870) किसी स्थानीय विद्वान द्वारा कंपोज किया गया पहला शब्दकोश है। उसने आगे चलकर *एंग्लो-मलयालम-निघंटु* (1907) का भी प्रकाशन किया।

मलयालम का पहला व्यापक (comprehensive) कोश हर्मन गुंडर्ट का (1872) है। एक और व्यापक कोश *शब्दतारावली* श्रीकंठेश्वरम पद्म पिल्लई का है, जो 1923 में आया। केरल विश्वविद्यालय की बृहत् शोध परियोजना के अंतर्गत *मलयालम लेक्सिकन* है, जिसका पहला भाग 1965 में प्रकाशित हुआ और आगे चलकर इसके ग्यारह भाग प्रकाशित हो चुके हैं।

पौले पॉल का *पुराणकथा निघंटु* और वेट्टम मणि का *पुराणिक निघंटु*, मिथकों और दंतकथाओं पर केंद्रित है। डी. बाबू पॉल का *वेदशब्दरत्नाकरम्* (1998) मलयालम बाइबल शब्दकोश है, *केरल भाषा निघंटु* का संपादन एस. गुप्तन नायर ने किया जो 1998 में केरल भाषा संस्थान द्वारा प्रकाशित हुआ। इनके अलावा अनेक विद्वानों ने कई अन्य मलयालम-अंग्रेज़ी शब्दकोशों का संपादन व प्रकाशन किया।

भाषा संपर्क और उसका प्रसार

मलयालम का संपर्क इतिहास

भारत के विभिन्न हिस्सों और विदेशों में मलयालम मातृभाषी लोगों (मलयाली) का प्रवासन हुआ है, जैसे– मलेशिया, सिंगापुर, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और ऑस्ट्रेलिया। 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में मलयालम बोलने वाले 31.8 मिलियन हैं। केरल में कुल आबादी का 96 प्रतिशत धार्मिक बहुसंख्यक (58.1 प्रतिशत हिंदू) और धार्मिक अल्पसंख्यक (मुस्लिम 21.3 प्रतिशत; ईसाई 20.6 प्रतिशत) से बना है। ये समुदाय अधिकतर मलयालम बोलते हैं। कुल आबादी के 5.2 प्रतिशत लोग भाषाई अल्पसंख्यक हैं।

संस्कृत, प्राकृत और पालि के निरंतर संपर्क और अभिसरण अर्थात् सम्मिलन (convergence) से केरल में मलयालम का विकास हुआ। इनसे शब्दावलियाँ उधार लेने के अलावा अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, डच, सिरिएक, उर्दू, फ़ारसी और अरबी भाषाओं से भी शब्द उधार लिए गए। मलयालम भाषा का आरंभिक विकास विद्वानों की भाषा संस्कृत और प्रशासन की भाषा तमिल से प्रभावित माना गया है। और अंततः मलयालम का लिखित दस्तावेज़ों और साहित्य में प्रयोग होने लगा। ब्राह्मण संपर्क ने मलयालम में कई इंडो-आर्यन विशेषताएँ शामिल करने में गहरा प्रभाव डाला।

दक्षिण भारत में पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के दौरान पुर्तगाली प्रमुख औपनिवेशिक शक्ति थे। इस संपर्क से मलयालम में कई पुर्तगाली ऋण शब्द (loan words) जुड़े, जो उसकी भाषिक संरचना से ज्ञात होता है, जैसे– *कप्पित्तान<कपिताओ* "कैप्टन", *लेलम<लेयिलाओ* "नीलाम", *तुवाला<तौलहा* "तौलिया" आदि। इसी प्रकार, कई अरबी शब्द भी मलयालम में स्वीकृत हुए, जैसे– *तरजुमा* "अनुवाद", *हाजर* "हाजिरी", *वकालत* "वकालत"। मलयाली ईसाई समुदाय द्वारा प्रयुक्त शब्द, जैसे– *मिशिहा, कत्तनार* सिरिएक की देन हैं।

भाषा संपर्क द्विभाषावाद एवं भाषिक अभिसरण को जन्म देता है। भाषाई अभिसरण और भाषाई प्रतिस्थापन (परिवर्तन) में व्यापक द्विभाषावाद, क्षेत्रीय प्रभुत्व और सामाजिक-राजनीतिक तत्त्वों का प्रमुख योगदान है। केरल की भाषाई स्थिति में अभिसरण का पहलू एकतरफ़ा है यानि क्षेत्र विशेष की भाषाई आधिपत्य की दिशा में। केरल के उत्तरी क्षेत्रों में कन्नड़, तेलुगु और तुलु आदि का तथा दक्षिण में तमिल का प्रभाव है। सामाजिक-भाषाई ढाँचे में द्विभाषावाद की स्थापना के संबंध में अभिसरण को स्वानिकीय (ध्वन्यात्मक), व्याकरणिक और शब्द स्तर पर विभाजित कर सकते हैं। जो भी हो, इन वक्ताओं

की भाषा के प्रति अधिक निष्ठा है, और वे अपनी मातृभाषा को बनाए रखने और विकसित करने में अपना योगदान करते आ रहे हैं।

भाषा की संपर्क अवस्था में उधार लेना एक अपरिहार्य और सहगामी प्रक्रिया है। संपर्क अनुकरण की ओर ले जाता है, और अनुकरण अभिसरण (मिलन) की ओर। सांस्कृतिक संपर्क और प्रतिष्ठित इरादा ये दो प्रबल रूप शाब्दिक उधार की ओर ले जाने वाले हैं। जहाँ तक मलयालम का सवाल है, इसमें कई अन्य भाषाओं, जैसे– संस्कृत, अंग्रेज़ी, अरबी आदि से उधार लिए गए शब्द हैं। जैसा कि देखा गया है केरल में अंग्रेज़ी शब्दों की व्यापकता है, और ये शिक्षा, व्यवसाय, भूगोल और सामाजिक स्थिति आदि के संदर्भ में जवाबदेह वक्ताओं के बीच एक सुस्पष्ट तरीके (pattern) से वितरित किए गए हैं। मलयालम भाषियों द्वारा प्रयुक्त अंग्रेज़ी के बहुत से शब्द मलयालम की ध्वन्यात्मक संरचना में ऐसे समाहित हो गए हैं कि उनके देशी प्रयोक्ताओं को भी यह जानकारी नहीं होती कि वे उधार लिए हुए शब्द हैं।

मलयालम, अरबी और फ़ारसी

उत्तर केरल के मुस्लिमों, जिन्हें माप्पिला के नाम से जाना जाता है, का एक विशिष्ट सांस्कृतिक इतिहास है, जिसमें उनके अखिल भारतीय समकक्षों के साथ बहुत कम समानता है। केरल के समाज ने सदियों से जो वैश्विकता हासिल की है, उसके लिए धन्यवाद। उत्तर भारत के मुस्लिमों की तुलना में दूर-दराज के हद्रमावत या सुमात्रा के मुस्लिमों के साथ माप्पिलाओं की अधिक समानताएँ हैं। भारतीय मुस्लिमों की सामान्य स्थिति से उल्लेखनीय अंतर उन माप्पिलाओं की संस्कृति में ज़रूर देखा जा सकता है। यहाँ इस भाग में मुश्किल से कुछ ही लोग हैं, जिन्होंने मुगल-उर्दू परंपरा को आत्मसात किया हो, अन्यथा वे उत्तर की मुस्लिम संस्कृति के अस्तित्व को निर्धारित करते हैं। माप्पिला समुदाय का भारतीय-फ़ारसी इस्लाम से अलगाव बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने न केवल राजनीतिक शासन व परंपरा को, बल्कि इसके सांस्कृतिक उत्तराधिकार और धर्मशास्त्र संबंध को भी, दरकिनार कर दिया है। (दाले, 1980) उसके स्थान पर, माप्पिलाओं ने अरब और भारतीय अनुयायियों की सांस्कृतिक संकरता (cultural hybrid) को कायम रखा है। "माप्पिला अरब और मलयाली अनुयायियों का सांस्कृतिक मिश्रण हैं; उन्होंने अपनी ही पहचान को आत्मसात किया, जिसने स्थानीय समाज से भिन्न अरबी भाषा और इस्लाम से घनिष्ठता रखी, किंतु इसके बावजूद स्थानीय समाज के सामाजिक रिवाजों के कई तत्त्वों तथा नीति व्यवस्था को बनाए रखा"। (अरशरत्नम, 2004; 266) अरबीमलयालम या माप्पिला मलयालम जो माप्पिलाओं के बीच धार्मिक व रचनात्मक अभिव्यक्ति दोनों का माध्यम है, वह माप्पिला जीवन के अंतर-सांस्कृतिक विनिमय की विशेष उपलब्धि है, जिसका सदियों से माप्पिला प्रतिनिधित्व करते आए हैं।

केरल का अरब संपर्क सत्रहवीं शताब्दी के इस्लाम के जन्म और विस्तार से भी पुराना है। पहली शताब्दी से अरबों की समुद्र यात्रा हुआ करती थी, यद्यपि अरबी प्रवास का मुख्य सिलसिला अरब व्यापारियों के मलाबार समुद्र तट पर सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान पदार्पण से हुआ। मलाबार का अरेबिया से व्यापार संबंध ज़्यादातर प्रदेशों में बसे प्रवासी अरबों के वाणिज्य से हुआ। व्यापारी समुदायों को लंबी दूरी पार करते हुए लंबी अवधि तक व्यापार केंद्रों में बसने को हुआ था। (अरशरत्नम, 2004) पूर्व-आधुनिक व्यापार जो पूरे हिंद महासागर में व्याप्त था सुदूर देशों से माल बेचने वालों को उनके व्यापार में हाथ-बाँटने योग्य मध्यवर्तियों का यहाँ होना अपेक्षित था। विश्वास किया जाता है कि वे जो प्रत्येक थल केंद्रित व्यापारी दलाल ठहरे, उन्हें मुख्य बंदरगाही शहरों में अपना प्रवासी समुदाय कायम रखना पड़ा। हिंद महासागर क्षेत्र में इस्लाम के प्रसार के साथ आस्था-आधारित प्रवासन की एक नई प्रवृत्ति शुरू हुई। सातवीं शताब्दी में जब अरब में इस्लाम का प्रचार हुआ तो इन प्रवासियों के माध्यम से यह तुरंत केरल तक फैल गया। वे अरब-मुस्लिम विद्वान धर्मप्रचार कार्यों में भी अग्रणी थे इसलिए वे केरल में अपने संपर्कों को मज़बूत करने में लगे रहे, जो उनके विश्वास, संस्कृति और भाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक बने।

सम्राट सिकंदर (356-324 ई.पू.) के भारत पर आक्रमण से बहुत पहले अरबों ने मलाबार से संपर्क स्थापित कर लिया था। अरब, मिस्र और सीरिया के लोग यूनान (ग्रीस) और रोम के साथ भारत के व्यापार संबंधों में मध्यस्थ का काम निभा रहे थे। अरब में यमन के हदारमाउथ का समुद्री तटवर्ती क्षेत्र दफर मलाबार उत्पादों को बेचने का व्यापार केंद्र था। यूनान और रोम के लोगों को यह तो पता था कि ये सब सामान भारत से हैं, लेकिन उन्हें भारत से व्यापार का मार्ग नहीं पता था। विश्व व्यापार समुदाय सही मायने में उस काली मिर्च की तलाश में केरल आया था, जो यूनानी और रोम के मध्ययुगीन ग्रंथों में "भारतीय दवा" के नाम से जानी जाती थी और अरबों ने केरल का नाम *बिलाद फिलफिल* रखा था जिसका मतलब "काली मिर्च की भूमि" था। काली मिर्च के अलावा इन लोगों को जो वस्तुएँ लुभाती थीं उनमें हाथी दाँत, चंदन, इमली, और सागौन शामिल थे। केरल के विविध भागों की खुदाई से उन मुद्राओं की प्राप्ति हुई है, जो केरल के रोम, यूनान, मिस्र, अरब, फ़ारस देश और चीन से तत्कालीन व्यापार में काम आती थीं, जो ईसा के बहुत पहले से ही मौजूद थीं। उन दिनों के मुख्य व्यापार केंद्रों में *मुज़िरिस* (कोटुंङल्लूर) और *एषिमला* (हेयली) थे। जावा और चीन को जाने वाले व्यापारिक जहाज अरबों और फ़ारसियों के थे, जो मलाबार के बंदरगाह शहरों में डेरा डालते थे, जिससे आगे चलकर वे उन शहरों के निवासी बन गए थे।

अरबीमलयालम की उत्पत्ति इन्हीं लोगों और विचारों से जुड़ी हुई है। यह भाषा वास्तव में अरबों और स्थानीय व्यापारियों के बीच व्यापारिक लेन-देन के लिए संपर्क भाषा के रूप में विकसित हुई। स्थानीय व्यापारियों और अरबों के बीच बातचीत के कारण, यह भाषा मलाबार तट पर इस्तेमाल की जाने वाली एक प्रमुख व्यापारिक भाषा में बदल गई। अतः इस भाषा के शुरुआती प्रयोक्ता स्थानीय व्यापारी थे, जो अरब से समुद्री व्यापार करते थे। बाद में यह भाषा बड़े पैमाने पर समुद्र तट पर रहने वाले लोगों से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों तक फैल गई। केरल के स्वदेशी उत्पादों, जैसे– चंदन (sandal), काली मिर्च (pepper), और इमली (tamarind) जिनका उपयोग अंग्रेज़ करते थे, से प्रमाणित होता है कि उन्हें ये अरब लोगों से मिले थे। पुर्तगाल के राजा का कालीकट (अब कोषिकोड) के सामूतिरि (zamorin) राजा के नाम लिखा गया पत्र, जिसे बाद में वास्को डि गामा द्वारा दिया गया, भी अरबी में था। इससे स्पष्ट होता है कि उन दिनों अरब लोगों और अरबी भाषा को बहुत सम्मान प्राप्त था। मलयालम शब्दों *तांबूलम* (पान), *नालिकेरम* (नारियल) और *अरि* (चावल) आदि के समान अरबी शब्द क्रमशः *तांबूल, नारहिन* और *अरूस* हैं। चूँकि ये चीज़ें अरब देश में नहीं थीं, इसलिए ज्ञात होता है कि अरबों ने इन शब्दों को मलयालम से लिया है। मलाबार तटवर्ती इलाकों में अरबों का फैलाव, और उनका ग्रामीण इलाकों में प्रवेश करना आदि ने अरबीमलयालम को अंतर-क्षेत्रीय उपयोग की एक मुख्य व्यापारिक भाषा बना दिया।

संरचना और भाषाई प्रभाव

अरबीमलयालम सही अर्थों में न तो अरबी है और न ही मलयालम, बल्कि यह दोनों की अपरिष्कृत मिली-जुली भाषा है। अरबी और मलयालम से अलग अनेक शब्द और पदबंध इस भाषा की रचना में पाए जाते हैं। यह अरबी और फ़ारसी जैसी प्राच्य भाषाओं तथा उर्दू, संस्कृत, तमिल, कन्नड़, और तुलु जैसी भारतीय भाषाओं का अद्भुत मिश्रण है। समय के साथ इस भाषा ने काफ़ी शब्दावलियाँ इन्हीं भाषाई मिश्रण से हासिल कीं, लेकिन सख्ती से सुदृढ़ द्रविड़ संरचना और मलयालम व्याकरणिक आधार के साथ। अरबीमलयालम या तो सेमिटिक लिपि में लिखी गई अरबी की एक बोली है या स्थानीय स्वानिमों (phonetics) को समायोजित करने के लिए उचित संशोधन के साथ सेमिटिक लिपि में लिखी गई मलयालम है।

अरबीमलयालम को सबसे पहले धार्मिक उपयोग के लिए प्रमुखता मिलने लगी। माप्पिलाओं के धार्मिक जीवन में इस भाषा ने मदरसों में शिक्षा का माध्यम बनकर अपनी महत्ता सिद्ध की। लेकिन इस भाषा ने दूसरा रास्ता अपनाना शुरू कर दिया, जिससे इसे एक लोकतांत्रिक ढाँचा मिला और यह लोगों के विचारों, कल्पनाओं और भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम बन गई।

यह माप्पिला महिलाओं की विशिष्ट भाषा बन गई, भले ही उनकी शिक्षा मुख्यत: केवल मदरसा केंद्रित थी। यह पत्र-लेखन का प्रमुख माध्यम और दैनिक अभिव्यक्ति का मुख्य साधन बन गई। उनके लिए अरबी भाषा पवित्र पुस्तक *शरिया* और इबादत की भाषा बनी रही, जबकि मलयालम के संस्कृतीकरण (Sanskritisation) ने उन्हें उस भाषा से दूर कर दिया।

इस भाषा की रचनाएँ उक्त समुदाय के तत्कालीन तनाव को प्रतिबिंबित करने में सक्षम थीं। यहाँ तक कि माप्पिला ने कुरान का अरबीमलयालम में अनुवाद करना भी शुरू कर दिया, जो तत्कालीन पारंपरिक कट्टरपंथी मुस्लिमों के लिए एक अनादर का कार्य था। कट्टरपंथी उलेमाओं के लिए यह घोर विरोध का ज़रिया बन गया। लेकिन इसके साथ ही इसमें अन्य धार्मिक मान्यताओं और नियमावलियों का भी अनुवाद होने लगा। और यही अंततः अरबीमलयालम गद्य में लेखन का बड़ा हिस्सा बना।

साहित्यिक परंपरा

इन संप्रदायों की बोलियों में विविध प्रकार की मौखिक व लिखित परंपराएँ शामिल हैं, जिनमें लोक गीत, शास्त्रीय काव्य, मौखिक साहित्य व बौद्धिक रचनाएँ प्रमुख हैं। मोटे तौर पर अरबीमलयालम साहित्य को गद्य और पद्य में विभाजित किया जा सकता है। गीतों में *माप्पिलाप्पाट्टु* (माप्पिला गीत) लोकप्रिय और प्रसिद्ध हैं, जिनमें *मालप्पाट्टु* (श्रृंखला गीत), *पड़प्पाट्टु* (युद्ध गीत), *किस्साप्पाट्टु* (कहानी गीत), *कल्याणप्पाट्टु* (शादी गीत), *मधु पाट्टु* (सुधा गीत जिसमें पैगंबर और संतों की स्तुति हो), *कत्तुपाट्टु* (चिट्ठी गीत), *दार्शनिक काव्य* (दार्शनिक गीत) आदि हैं। काव्य परंपरा मुस्लिम समुदाय की प्रारंभिक ऐतिहासिक घटनाओं के इर्द-गिर्द घूमती है। उनमें पुराने फ़ारसी संतों और साधुओं की जीवनियाँ, दिव्य पैगंबरों और पौराणिक संतों की स्तुतियाँ, सामरिक (martial) गीत, नैतिक पाठ, दिव्य घटनाओं का वर्णन करने वाले गीत, पद्य रूप में पत्र-काव्य और प्रेम गीत आदि होते हैं। (कारश्शेरि)

इसी प्रकार, कई जीवन-चक्र घटनाएँ हैं, जिनमें अरबीमलयालम में, मौखिक साहित्यिक परंपरा अपनी अभिव्यक्ति पाती है। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण *ओप्पना* मंच गीत प्रस्तुति है, जो पूरे प्रदेश की मुस्लिम महिलाओं में लोकप्रिय है। माप्पिला महिलाएँ विवाह की रस्म के दौरान गीतों के साथ *ओप्पना* का प्रदर्शन करती हैं। ऐसे आयोजनों में गाए जाने वाले गीत एक विशाल और गतिशील संग्रह से तैयार किए जाते हैं, जो अरब संस्कृति और स्थानीय केरल संस्कृति के भाषाई और सांस्कृतिक सम्मिश्रण (fusion) को दर्शाते हैं

कोलक्कळि (लकड़ी-खेल प्रस्तुति) एक और अवसर है, जहाँ मौखिक परंपरा का पालन किया जाता है। माप्पिला मलयालम गीत जो *कोलक्कळि* में समाविष्ट है, तालात्मक नृत्य के साथ उसकी अनन्यतम तान में प्रस्तुतीकरण होता है। भारतीय और अरब परंपरा का विशेष मिश्रण इन गीतों में दिखाई देता है। कुछ अन्य प्रदर्शनात्मक अवसर भी हैं जो माप्पिला संस्कृति पर अरब प्रभाव को जीवंत करते हैं । इनमें *दफ मुट्टु* और *अरबना मुट्टु* शामिल हैं, जो आम तौर पर *रात्तिब* और *दिक्कर* जैसे अनुष्ठानों और सामूहिक प्रार्थनाओं के साथ किए जाते हैं।

वट्टपाट्टु (वृत्त-गीत) पुरुषों की एक आध्यात्मिक गीत प्रस्तुति है। इनकी विषयवस्तु दहेज प्रथा के प्रसार जैसी तत्कालीन सामाजिक समस्याओं से लेकर इस्लाम इतिहास के उपाख्यानों तक है। मुख्य रूप से अरबीमलयालम में रचे इन गीतों में भाषा की साहित्यिक अभिव्यक्तियों को बृहत् और गतिशील संग्रह रूप में दर्शाया जाता है। *वट्टप्पाट्टु* गीत अपनी अनूठी प्रस्तुति और भाषाई विशेषताओं के साथ शास्त्रीय काव्य और लोक गीत परंपरा को एक रचना में जोड़ते हैं। इसी प्रकार की अन्य क्षेत्रीय प्रस्तुतियों में *मुट्टुम विळियुम* (वाद्य यंत्रों के साथ गीत प्रस्तुति), *कैमुट्टुकळि* (ताली बजाकर प्रस्तुति), *परिचमुट्टुकळि* (ढाल खेल), *कल्याणप्पाट्टुकळ* (शादी गीत), आदि हैं। ये वही अरबीमलयालम गीत हैं, जो प्रस्तुतियों के कथ्य और भाषाई उपयोग में एक आध्यात्मिक माहौल बनाते हैं ताकि उनके आध्यात्मिक उद्देश्य पूरे हो सकें।

माप्पिला गीत

अरबीमलयालम में साहित्यिक संपदा को सामान्यतः *माप्पिलाप्पाट्टु* (माप्पिला गीत) कहा जाता है। यद्यपि वास्तव में ये प्रदर्शन से निकटता से संबंधित हैं, माप्पिला गीत शब्द गद्य या काव्यात्मक रूप में साहित्यिक रचनाओं को भी संदर्भित करते हैं, जो जानबूझकर प्रदर्शन के बजाय कलात्मक उपभोग के लिए बनाई गई हैं। माप्पिला गीत आमतौर पर मौखिक और लिखित दो रूपों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित किए जाते हैं। पाठ्य परंपरा अरबीमलयालम भाषा का उपयोग करती है, और जो गीत पुस्तिकाओं और पन्नों (leaflet) में संरक्षित होते हैं और मुस्लिम घरों में रखे जाते हैं, उन्हें सामान्यतः *सबिना एट्टु* (सबिना के पन्ने) कहा जाता है। महिलाएँ इस परंपरा की मुख्य संरक्षक हैं, और वे *माप्पिलाप्पाट्टु* के लिखित या मौखिक रूप में संरक्षण और प्रसार में अपनी भूमिका निभाती हैं। *माप्पिलाप्पाट्टु* के अनेक संकलन प्रकाशित हैं, उनमें से प्रत्येक में, गीतों को उनकी सामग्री के अनुसार वर्गीकृत करने की सामान्य प्रवृत्ति है।

अपने समुदाय के इतिहास के मुस्लिम संतों और इतिहास की वीरतापूर्ण घटनाओं पर *माला* या आख्यानात्मक गीत अरबीमलयालम पद्य परंपरा का सबसे महत्त्वपूर्ण रूप है। इस परंपरा की उत्पत्ति *मुहिउद्दीनमाला* तक फैली हुई है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसकी रचना 1607 ई. में कालीकट (अब कोष़िकोड) के काज़ी मोहम्मद ने की थी। यह लोकप्रिय भक्ति क्लासिक बगदाद के अल-जिलानी के प्रसिद्ध सूफी संत शेख मोहिउद्दीन अब्दुल कादर, जिन्होंने कादिरी आदेश की स्थापना की, के इतिहास को दर्शाता है। यह मलयालम की प्रथम साहित्यिक कृति एष़ुत्तच्छन की *अध्यात्म रामायण* से पाँच वर्ष पुरानी है। इस परंपरा में दूसरी कृति *नफीसतमाला* है, जो मिस्र के नफ़ीसतुल मिस्रिया के संत जीवन पर आधारित है। मुस्लिम महिलाओं का विश्वास है कि इस *माला* का नियमित पाठ करने से गर्भवती महिलाओं का प्रसव आसानी से हो जाता है। (मिलर, 1976) *रिफायिमाला, बदरमाला,* और *मञ्ञक्कुलमाला* इसी विधा की अन्य रचनाएँ हैं।

कत्तुपाट्टु का मतलब पत्रों (letters) के रूप में शब्दांकित (recorded) गीत है। इस विधा का प्रवासी मुस्लिम समुदाय की कल्पना पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा है। यह खाड़ी देशों में रहने वाले अपने प्रवासी पति और केरल में रहने वाली उसकी पत्नी के बीच का संदेशगीत है, जिसके मुख्य संरक्षक प्रवासी हैं। पहले ऑडियो कैसेटों में ये गाने रिकॉर्ड करके भेजे जाते थे किंतु अब इसने म्यूजिक एलबम का रूप ले लिया है। संचार माध्यमों में इस रूप के परिवर्तित हो जाने के बाद भी श्रमिक स्थलों पर काम करने वाले आम मज़दूर इस गीत का पसंदीदा विषय बनते हैं। *किस्साप्पाट्टु* (कहानी गीत) इस्लामिक इतिहास की गाथाओं की गीत रूप में प्रस्तुति है। इसे भी अपनी यादों में सहेजकर पारंपरिक रूप से विशेष अवसरों पर माप्पिला महिलाओं द्वारा लंबे गीतों के रूप में गाया जाता है। (मिलर, 1976) इसके संकलनकर्ता समकालीन मलयाली जीवन की समानांतर घटनाओं को इस्लामिक इतिहास की शुरुआती घटनाओं में बदल देते हैं।

समांतर पाठ के रूप में

अरबीमलयालम की पाठ्य परंपरा में उपन्यासों, कहानियों और गैर-काल्पनिक साहित्य रचनाओं का एक विशाल संग्रह (corpus) भी है। इस भाषा में कथा साहित्य लेखन का इतिहास *चार दरवेस* (चार संत) के प्रकाशन से आरंभ होता है, जो इसी शीर्षक वाले फ़ारसी उपन्यास पर आधारित है। इस रचना का प्रकाशन *इंदुलेखा* (प्रकाशन वर्ष 1889) से भी पहले 1883 में हुआ था, जिसे मलयालम का पहला उपन्यास माना जाता है। इसके अलावा अरबीमलयालम में कई पत्रिकाएँ और दैनिक समाचार पत्र भी प्रकाशित होते थे, जिसमें वक्कम मौलवी द्वारा संपादित *अल-इस्लाम*, एक नारीवादी मासिक *अल-निसा* (वह महिला), *अल-इरशाद* और *रफीक-उल-इस्लाम* प्रमुख थे। मुस्लिम आबादी के बड़े हिस्से तक पहुँचने के लिए राष्ट्रीय नेताओं और समाज सुधारकों ने अरबीमलयालम की लोकप्रियता को भुनाने की एक रणनीति बनाई और इसके लिए ढेर सारी पुस्तिकाएँ प्रकाशित कीं।

इस भाषा में लिखे गए कई यात्रा वृत्तांत औपनिवेशिक इतिहास लेखन के प्रतिसंवाद हैं, क्योंकि वे अक्सर औपनिवेशिक स्रोतों का खंडन करते हैं, और पूर्व देश के भूगोल शास्त्र में निहित समाज और परिस्थिति को रेखांकित करने में औपनिवेशिक प्रोक्तियों की पारंपरिक धारणाओं का तिरस्कार करते हैं। जैसे कि सुजयि मोय्तु मुसलियार की *अल-फतुल फता* आदम से लेकर ओटोमन खलीफा तक के मुस्लिम समाज के इतिहास को प्रस्तुत करने में वैकल्पिक आख्यानात्मक रणनीति का उपयोग करती है। इसमें अपनाई गई आख्यानात्मक रणनीति और अंतर्दृष्टि एक नई संवेदनशीलता की बात करती है, जो पहले अनसुनी थी। पैगंबर के बाद के इस्लामी समाज के इतिहास को प्रस्तुत करने में काज़ी मुहम्मद की *मुहिउद्दीनमाला* में अपनाई गई भिन्न और अलग शैलियों में यह काफ़ी स्पष्ट है।

हालाँकि, आज अरबीमलयालम की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रही हैं। सामान्य शिक्षा में लगातार वृद्धि के कारण इस भाषा की लोकप्रियता में गिरावट आई है। खाड़ी प्रवास और मलाबार मुस्लिम समुदाय का व्यापक इस्लामी दुनिया में घुलना-मिलना अथवा एकीकरण भी एक मुद्दा है। इस प्रक्रिया ने रोजमर्रा की ज़िंदगी को एक समजातीय (homogenous) पैन-इस्लामिक ढाँचे के भीतर पुन: व्यवस्थित करने में मदद की है। इस बदलाव का सांस्कृतिक अर्थ अरबीमलयालम पर शुद्धतावादी हमले और इसकी कई सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के "गैर-इस्लामी" होने से स्पष्ट है। फिर भी अरबीमलयालम इन सभी हमलों का सामना करती दिख रही है। लोकप्रिय सिनेमा में उपयोग किए जाने वाले माप्पिला गीत धार्मिक सीमाओं से परे आम आदमी द्वारा पसंद किए जाते हैं।

मलयालम और फ़ारसी

हज़ारों वर्षों के अरबी-फ़ारसी संबंधों ने केरल में *अरबीमलयालम* नामक नई लिपि को जन्म दिया। इस संबंध में फ़ारसी प्रभाव अरब प्रभाव की तुलना में अधिक है। केरल के मुस्लिमों पर फ़ारसी प्रभाव के परिणामस्वरूप *सिरनी, बांकु, मेशांतकल्ल्, सबना,* और *मुल्ला* जैसे उधार शब्द प्रयोग में आए। इसके अलावा पिछली कई शताब्दियों से केरल की मस्जिदों में पढ़ाई जाने वाली *मिशन* और *संचनि* जैसी किताबें वास्तव में फ़ारसी मूल की हैं। अरब-फ़ारसी प्रभाव से पहले, मस्जिदों को भारतीय वास्तुकला के अनुसार बनाया जाता था। फ़ारसी प्रभाव से ही मस्जिदों में गुंबदों और मीनारों का प्रयोग होने लगा।

फ़ारसियों ने ही *मल* (पहाड़) के साथ *बार* जोड़कर मलाबार शब्द गढ़ा था। फ़ारसी में *बार* का मतलब *नाटु* (इलाका) होता है, इसलिए मलाबार को *मलनाटु* भी कहा जाने लगा। फ़ारसी और अरब लोग केरल में बस गए, उन्होंने केरल की महिलाओं से विवाह किया, और इन अंतर्विवाहों से बने समाज को "माप्पिला" कहा जाने लगा। अरब-फ़ारसी व्यापार से कालीकट के सामूतिरि (Zamorins of Calicut) बहुत अमीर हो गए। यही केरल में कई बंदरगाहों के विकास का कारण बना।

अरबों और मूल निवासियों के बीच पारस्परिक सहिष्णुता और सौहार्द से केरल में इस्लाम का विकास आसानी से संभव हुआ। स्थानीय निवासियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने से उनका सामाजिक सम्मान और प्रतिष्ठा हिंदू ज़मीदारों के बराबर हो गई । इब्न-खुदाबि, खुदामा, याकुबि, इब्न-रुस्ता, इब्न-अल-हकिह जैसे विद्वानों ने केरल के मध्यकालीन इतिहास में अभूतपूर्व योगदान दिया। मसूदि, नसिदुखुब्दु, इब्न-बतूता, इब्न-जिब्र आदि का यात्रा साहित्य केरल की बौद्धिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है, जिससे यहाँ के चिंतन और ज्ञान का पता चलता है। केरल के साथ अरब-फ़ारसी संबंधों के कारण अनेक यात्रा वृत्तांतों की रचना हुई। इन यात्रा वृत्तांतों में स्थानों के नामों का उल्लेख है, जैसे– *सिंकालि* (कोटुंङल्लूर), *सालिया* (चालियम), *मनाफरुर* (मैंगलूर), *राह्सगयिल* (एषिमला), *फंतदुराइना* (पंदलायिनि), *कौलम* (कोल्लम), *वादफाथर* (वळपट्टणम्), *कालिकूत्त* (कोषिकोड) आदि। साथ ही इन क्षेत्रों की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ भी उपलब्ध होती हैं। अरब दुनिया में मलाबार का नाम *मनिबर* है, जिसका अरब ऐतिहासिक आख्यानों में महत्त्वपूर्ण स्थान के रूप में उल्लेख है।

बिरयानी, जो आजकल केरल का पसंदीदा भोजन है, अरब-फ़ारसी प्रभाव के कारण केरल में आया है। मलयालम में रोज़मर्रा के जीवन में प्रयोग होने वाले शब्द, जैसे– *मुनसिफ, आमीन, नाज़िर, तहसीलदार, दिवा, मजलिस, वकील, अदालत, मुक्काडम, कसव, कशाप* आदि अरबी से ही आए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि समय के साथ जैसे फ़ारसी सम्राज्य का पतन हुआ और अरबी का प्रभाव बढ़ने लगा फ़ारसी का प्रभाव कम होता गया।

मलयालम और प्राकृत

सामान्यतः दक्षिण भारत और विशेषकर केरल में ब्राह्मणों के सांस्कृतिक कब्जे के दौरान क्षेत्रीय भाषा पर संस्कृत और प्राकृत का प्रभाव बढ़ता गया। केरल में रहने वाले लोगों के जीवन और भाषा पर ब्राह्मणों और उनकी भाषाओं का प्रभाव लंबे समय तक रहा। मलयालम भाषा पर आर्यों का प्रभाव सर्वव्यापी प्रतीत होता है, जो भाषा के लगभग सभी स्तरों पर व्याप्त है। आद्य-तमिल-मलयालम (Proto-Tamil-Malayalam) के अंतिम विघटन में और मलयालम एवं तमिल को एक-दूसरे से अलग करने में इसका उत्प्रेरक (catalytic) प्रभाव पड़ा। प्राकृत साहित्यिक संस्कृति ने मलयालम के प्रारंभिक साहित्य को आकार देने के लिए दबाव डाला ।

मध्य प्राकृत कई क्षेत्रीय किस्मों में मौजूद थी और उसने अपना स्वयं का साहित्य विकसित किया। पालि, बुद्ध के धर्म वैधानिक लेखों की भाषा, सबसे प्राचीन साहित्यिक प्राकृत है। लगभग बारहवीं शताब्दी तक प्राकृत भाषाओं का दैनिक उपयोग किया जाता था। द्रविड़ भाषाएँ प्राकृत भाषाओं के साथ प्राचीन संपर्क के निशान साझा करती हैं। संगम साहित्य प्राकृत प्रभावों के बारे में बताता है, जो तमिल और मलयालम के लिए सामान्य हैं। प्राकृत साहित्य दक्षिण भारत में प्रमुख था। केरल का सबसे पुराना व्याकरणिक ग्रंथ *लीलातिलकम्* केरल में प्राकृत भाषा एवं साहित्य की उपस्थिति को दर्शाता है। *लीलातिलकम्* के पहले चार भागों में प्राकृत शब्दों पर चर्चा है। आरंभिक मणिप्रवाळम् में प्राकृतभाव, प्राकृतसमा और प्राकृत देसा समा आदि किस्में थीं।। यह एक कारण हो सकता है कि मलयालम को प्राकृत अपभ्रंश भाषा के रूप में वर्गीकृत किया गया था। द्रविड़ व्याकरण प्राकृत संबंधों के बारे में बताता है। उदाहरण के लिए, मलयालम प्राकृत के साथ लघु *ए, ओ* और श्रुति (glide) *य* साझा करती है।

मध्य प्राकृत, मलयालम और केरल के संबंध को तीन चरणों में रेखांकित किया जा सकता है। पहला, प्राचीन केरल में प्राकृत भाषा और साहित्य; दूसरा, प्राकृत साहित्य में केरलीयों (केरलवासियों) का योगदान और तीसरा, मलयालम भाषा और साहित्य के निर्माण में प्राकृत का प्रभाव।

केरल में प्राकृत साहित्य प्रसिद्ध था और प्राकृत भाषा एवं साहित्य में केरल ने भी योगदान दिया है। आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में रचित कई प्राकृत ग्रंथों की टीकाएँ केरल की हैं। केरल के विद्वानों ने प्राकृत कविताओं और प्राकृत भागों की व्याख्या संस्कृत नाटकों में की थी। वररिचि का प्रसिद्ध शोध-प्रबंध *प्राकृतापरक्ष* और प्रवरसेन का *सेतुबंध रावणवाहो*, तथा आंध्र त्रिविक्रमा की रचनाएँ (तेरहवीं शताब्दी) केरल में प्रसिद्ध हुईं। दरअसल, वररिचि की वंशावली केरल से जुड़ी हुई है। सिंहराज, जिन्होंने प्राकृत व्याकरण *प्राकृतरूपावतार* की रचना की, समुद्रबंध के पुत्र थे, जो केरल में कोल्लम के रवि वर्मा के दरबार से जुड़े हुए थे। तेरहवीं शताब्दी से काव्य रचनाओं, जैसे– लीलाशुक की *श्रीचिह्नम/गोविंदाभिषेक* और सौरिकांत की *सौरिचरितम* की पहचान हुई है।

संस्कृत नाटकों द्वारा मलाबार में प्रयुक्त अलग प्रकार की प्राकृत भाषा पर प्रकाश डाला गया था। संस्कृत रचनाओं में प्राकृत के पद्यों को संरक्षित किया गया है। बताया जाता है कि केरल की स्थानीय भाषा तथाकथित *भाषा नाटकों* की प्राकृत भाषा में आ गई। उस युग की ज़्यादातर साहित्यिक कृतियों में *प्राकृत अपभ्रंश* साहित्य जैसी ही प्रवृत्ति दिखाई देती है।

उल्लेखनीय है कि मलयालम में कुछ *प्राकृतभावास* हैं और ये प्राकृत शब्दावलियाँ आद्य-मलयालम चरण की हैं। कुछ *चंपू*, *आट्टक्कथा* और शिलालेखों में प्राकृत पद्य हैं। *कूटियाट्टम* चरण में शूर्पणखा प्राकृत भाषा की नकल में गढ़ी गई विभिन्न प्रकार की मलयालम बोलती है।

आरंभिक मणिप्रवाळम् साहित्य और प्राकृत साहित्य में बहुत समानता है। श्रोता के रूप में महिलाएँ, अत्यंत कामुक, छद्मदेवों (demigods) की दुनिया, वैकल्पिक रूप से गद्य और पद्य का मिश्रण, वर्ण छंद और देशी छंद आपस में जुड़े हुए हैं। पद्य और गद्य में भिन्न-भिन्न प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया गया है। पद्य में केरल की *मार्गा शाखा* और गद्य में *नंपियारतमिल* का प्रयोग किया गया है। जीवन के विविध स्तरों, शहरों, गाँवों, मंडियों, मेलों, तथा मैदानों आदि का वर्णन रोमांटिक तरीके से किया गया है। शंकुण्णि नायर (1995) के अनुसार, मणिप्रवाळम् भी उसी मार्ग का अनुसरण करती है।

एल.वी. रामस्वामी अय्यर (1936) ने मलयालम के 47 शब्दों को सूचीबद्ध किया जो प्राकृत मूल के थे। गोदवर्मा (1948) ने संभावित प्राकृत मूल के 243 शब्दों को प्रस्तुत किया। *लीलातिलकम्* में *संस्कृत-प्राकृतसमा* और *संस्कृत-प्राकृतभाव* मलयालम शब्द मिलते हैं। राजराजवर्मा ने प्राकृत उधार (ऋण) शब्दों की चर्चा नहीं की है। गोदवर्मा ने अर्थपरक परिवर्तन के साथ प्राकृत शब्दों का अंकन और वर्गीकरण प्राकृत मूल के अनुरूप किया है, लेकिन अर्थ या रूप में परिवर्तन किए बिना। जो प्राकृत मूल के हैं, उनका केवल रूप में परिवर्तन हो, केवल अर्थ में परिवर्तन हो और कुछ जिनके प्राकृत मूल हों, लेकिन दोनों के परिवर्तन के साथ। शंकुण्णि नायर (1995) ने 24 श्रेणियों के संदिग्ध प्राकृत मूल-शब्दावली वाले शब्दों को सूचीबद्ध किया। ये हैं अनुकृत शब्द, क्रिया में विशेषण प्रत्यययुक्त स्वीकृति, मूल में संयोजक रूपों की स्वीकृति, नामधातु क्रियाएँ, अनुनासिकीकरण, रूपात्मक प्रत्यय- *का*, रूपात्मक प्रत्यय *-भ, ल, ट,* ड और *रः*, मूर्धन्यीकरण, स्त्रीलिंग, मोरा नियम, द्वित्व और त्रित्व, बलाघात, घरेलू शब्द, व्यक्तिवाचक संज्ञा, दृश्यात्मक प्राकृत शब्द, जाति संज्ञाएँ, शिलालेखी प्राकृत, वाणिज्य और व्यवसाय में प्रयुक्त शब्द, गैर-वैदिक धर्मों के शब्द, समास, शब्दार्थ विशेषताएँ, आयुर्वेद शब्दावली, नृत्य एवं संगीत शब्दावली, और संस्कृत के माध्यम से प्राकृत शब्द, आदि हैं।

मलयालम और सिरिएक भाषा

केरल का तीस लाख की बड़ी आबादी वाला सीरियाई समुदाय, जो राज्य की आबादी का दस प्रतिशत है, का यह मानना है कि ईसा मसीह के शिष्य ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए 52 ईस्वी में केरल आए और उनके पूर्वजों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया। भले ही इस संबंध में ऐतिहासिक साक्ष्य कम हैं, पर इतना तो सर्वविदित है कि केरल भूमध्यसागरीय क्षेत्र से आने वाले जहाजों और व्यापारियों के लिए एक पसंदीदा स्थान बन गया। एक सीरियाई ईसाई समूह, जो पूजा-पद्धति की भाषा के रूप में सिरिएक बोलता था पिछली दो सहस्राब्दियों में मलाबार तटवर्ती क्षेत्र में बस गया। ऐसा इसलिए था क्योंकि उनकी चर्च संबंधी ज़रूरतें, जिनमें प्रीलेट्स की सेवाएँ भी शामिल थीं, पश्चिम एशिया के लोगों द्वारा प्रदान की जाती थीं जहाँ सिरिएक प्रचलित भाषा थी।

सिरिएक भाषा अरामयिक (Aramaic) से विकसित हुई। ईसा मसीह की बातचीत इसी भाषा में थी, जिसका अपना एक लंबा इतिहास है। अरामयिक कम-से-कम दसवीं शताब्दी ई.पू. से फिलिस्तीन की भाषा रही और करीब एक हज़ार वर्ष तक रही और यह महत्त्वपूर्ण यहूदी और ईसाई साहित्य की भाषा रही थी। प्राचीन यहूदी हस्तलिपियों की खोज से यह स्थापित हुआ कि कम-से-कम एक सहस्राब्दि तक उक्त क्षेत्र में अरामयिक प्रमुख भाषा थी जब तक कि इसे अरबी भाषा द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया गया।

आधुनिक सिरिएक या अरामयिक में सीरिया के कुछ गाँवों में बोली जाने वाली पश्चिम नव-अरामयिक और दक्षिण-पूर्वी तुर्की, उत्तरी इराक और उत्तर-पश्चिमी ईरान की सुदूर बस्तियों में बोली जाने वाली पूर्व नव-अरामयिक शामिल है।

केरल के सीरियाई ईसाइयों की पूजा-पद्धति के अनुसार सिरिएक के दो प्रकार हैं– पूर्वी सिरिएक और पश्चिमी सिरिएक। प्राचीन सिरिएक *एस्ट्रांजेला* लिपि में लिखी जाती थी। लेकिन समय के साथ दो तरह की लिपियों का विकास हुआ– पश्चिमी लिपि या *सेरतो* और पूर्वी लिपि या *मदनहया* लिपि। इसके उच्चारण में भी स्पष्ट अंतर दिखाई दिए। उदाहरण के लिए "गॉड" को पूर्वी सिरिएक में अलाहा कहा जाता है, जबकि पश्चिमी सिरिएक में इसके लिए अलोहो शब्द है। सत्रहवीं शताब्दी तक केरल के सभी सीरियाई ईसाई उपासना के लिए पूर्वी सिरिएक भाषा का इस्तेमाल करते थे। पुर्तगाली हस्तक्षेप के बाद उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्रियाकलापों में बदलाव आया। उनके बीच एक गहरी खाई पैदा हो गई। एक समूह पुर्तगाली और रोमन कैथोलिक चर्च से जुड़ा और दूसरा स्वतंत्र बना रहा। पहले समूह ने अपने धार्मिक क्रिया-कलापों में बदलाव करके पूर्वी सिरिएक को काफ़ी हद तक बरकरार रखा। जबकि दूसरा समूह अधिक लंबे समय तक स्वतंत्र नहीं रह सका इसलिए जल्दी ही अंतियोक के जेकोबाइट पैट्रियार्क के प्रभाव में और अंततः अधिकार क्षेत्र में आ गया। अंतियोक और निकटवर्ती प्रदेशों की तरह ही उन्होंने भी अपनी उपासना पद्धति को पश्चिमी सिरिएक में बदल लिया। आज सीरियाई ईसाई कई समूहों में बँटे हुए हैं। कुछ पोप के प्रति निष्ठा रखते हैं, कुछ अंतियोक के जेकोबाइट पैट्रियार्क के प्रति और कुछ स्वतंत्र बने हुए हैं। सिरो-मलाबार कैथोलिक चर्च और पूर्व का असीरियन चर्च पूर्वी सिरिएक (कल्डियन) पूजा (उपासना) पद्धति का पालन करते हैं जबकि सिरो-मलंकरा कैथोलिक चर्च, मलंकरा ऑर्थोडॉक्स चर्च, सीरियाई जेकोबाइट चर्च, मार थोमा चर्च और स्वतंत्र सीरियाई चर्च पश्चिमी सिरिएक (अंतियोकी) परंपरा का अनुसरण करते हैं।

ऐसे सीरियाई ईसाइयों के लिए सिरिएक पूजा (उपासना) पद्धति की भाषा बनी रही, जिनका इससे धार्मिक जुड़ाव था। सभी पादरियों को उस भाषा में निपुणता हासिल करने की ज़रूरत थी, क्योंकि उपासना के अधिकांश भक्ति गीत इसी भाषा में थे। अंतियोकी अधिकार प्राप्त चर्चों में सिरिएक ग्रंथों के एक अच्छे हिस्से को प्रतिस्थापित करते हुए स्थानीय भाषा (vernacular) का उपयोग जल्दी शुरू हो गया। सिरो-मलाबार चर्च में, दूसरी वेटिकन परिषद (1962-1965) तक, पूर्वी सिरिएक में पवित्र मिस्सा (holy mass) मनाया जाता था। मलयाली (मलयालम मातृभाषी) और यूरोपीय विद्वानों ने कई धार्मिक ग्रंथों का सिरिएक से मलयालम और अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है। सिरिएक शब्द *मलाखा* (परी), *कूदाशा* (संस्कार) और *मामोदेसा* (बपतिस्मा), आदि मलयालम शब्दावली में शामिल हो गए।

शताब्दियों से, सीरियाई ईसाइयों ने कई पांडुलिपियाँ लिखीं और संकलित कीं। भारत आने वाले पुर्तगालियों ने इन ग्रंथों में न केवल कई अन्य सिद्धांत जोड़े बल्कि कई लैटिन पुस्तकों का सिरिएक भाषा में अनुवाद भी किया। और दियंपर की धर्मसभा (1599) में सीरियाई ईसाइयों के इन ग्रंथों को उनकी सामग्री से या तो नष्ट कर दिया गया या फिर उन्हें हटा दिया गया। अब भी केरल के अधिकांश सीरियाई ईसाई शैक्षणिक संस्थानों और पुस्तकालयों में सिरिएक छात्रवृत्ति दी जाती है। जब 1985 में कोट्टायम में संत एफ्रेम एकुमिनिकल शोध संस्थान की स्थापना की गई, तो मुख्य कार्य सबसे पहले प्राचीन दस्तावेज़ों के खजाने को संकलित कर उन्हें सीरियाई विद्वानों तक पहुँचाना था।

मलयालम और संस्कृत

मलयालम के सबसे पुराने लिखित दस्तावेज़, वाष़प्पिलि शिलालेख (लगभग 830 ईस्वी), से मलयालम भाषा पर संस्कृत के प्रभाव का पता चलता है, जिसकी शुरुआत ही संस्कृत से होती है :

/नमश्शिवाय। श्री राजराजाधिराज परमेश्वरभट्टारक राजशेखरदेवरक्कु/

मणिप्रवाळम् स्कूल के शास्त्रीय काव्य ने देशी शब्दों को संस्कृत शब्दों के साथ व्यवस्थित और सामंजस्यपूर्ण ढंग से मिश्रित किया है। जिसके कारण भविष्य में मलयालम में संस्कृत के निरंतर बढ़ते प्रचलन को उत्कृष्ट कृतियों व समकालीन साहित्य की अधिकांश विधाओं और आधिकारिक अभिलेखों में देखा जा सकता है। संस्कृत तत्त्वों का प्रचलन न केवल औपचारिक रूप से,

बल्कि बोलचाल की भाषा और संचार के अन्य माध्यमों, जैसे– समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, आकाशवाणी, दूरदर्शन और सिनेमा की भाषा में भी बढ़ रहा था।

बाद में मलयालम की बुनियादी शब्दावली में भी संस्कृत शब्द शामिल होते गए। कई रिश्ते-नाते और शरीर के अंगों को सूचित करने वाले शब्दों का उद्भव संस्कृत से हुआ। जैसे– *अच्चन*/ "पिता", /*अज्जा*/</*आर्या*/, /*अम्मा*/</*अंबा*/, चेट्टि/ "दीदी", /*चेट्टन*/ "बड़ा भाई", /*ज्येष्ठ*/ "बड़ा", /*अनुजत्ति*/ या /*अनुजन*/ दोनों अनुज, "बाद में आने वाले/वाली के लिए प्रयुक्त यानि जिसका जन्म बाद में हुआ हो छोटा, /*भार्या*/ "पत्नी", /*भर्ताउ*/ "पति" दोनों संस्कृत धातु, /*भ्र*/ "संरक्षित", /*मुखम*/ "मुख" आदि। इनके समतुल्य कुछ अन्य शब्द भी पुरानी स्थानीय अभिव्यक्तियों में प्रयोग में थे, जैसे– *नखम*/"नाखून" आदि।

इनके अलावा कुछ ऐसे शब्द भी हैं, जो प्रायः वर्जित हैं, जैसे– /*तंता*/ "पिता", /*तल्ला*/ "माता", /*अच्चि*/ "पत्नी", /*नाःयर*/ "पति", /*मीडु*/ या /*मूरुः*/ या /*मोन्ता*/ "चेहरा" आदि। ऐसे ही दो क्रिया रूपों– /*मरिक्कुक*/ और /*चावुका*/ का अर्थ है "मरना"; दोनों मूलतः संस्कृत धातु से हैं। लेकिन जब किसी मनुष्य के लिए बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होते हैं, तो पहला शब्द अच्छा माना जाता है, जबकि दूसरा बुरा, क्योंकि समान्यतः दूसरा मानवेतर प्राणियों के लिए प्रयोग में लाया जाता है, यह एक देशज रूप है।

संस्कृत की भाषाई और या रूपात्मक संरचना का अनुकरण करके मलयाली ने कुछ पदबंधों का निर्माण किया, जैसे– /*भोस्कु*/ "झूठ", /*दृष्टु*/ "अशुद्ध", /*एभ्यन*/ या /*शुंभन*/ "निकम्मा आदमी", /*मढ़यन*/, /*विड्डि*/ दोनों का अर्थ है "मूर्ख" आदि। संदर्भवश /*मढ़यन*/ अर्थापकर्ष से /*मटैयन*/ का अति शुद्ध रूप है, जिसका अर्थ होता है– "वह आदमी, विशेषकर रसोइया, जो चाकरी करता हो।"

शाब्दिक उधारी (lexical borrowing) में मलयालम अत्यंत उदार है। आवश्यकता पूर्ति और प्रतिष्ठा दोनों ही उद्देश्य प्रबल होते हैं। संस्कृत की क्रिया धातु से व्युत्पन्न शब्द भी भाषा में प्रवाहित हुए, विशेष रूप से औपचारिक संदर्भों और साहित्यिक विधाओं में, जो संस्कृत परंपरा का सम्मान करते थे। *कृष्णगाथा* (पंद्रहवीं शताब्दी ई.) के काल से मलयालम में लगभग 55 प्रतिशत क्रिया धातु रूप प्रचलित थे, जिनकी उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। संस्कृत से रूपात्मक रूप से व्युत्पन्न (derived) किसी भी /इ/ में समाप्त होने वाली धातु देशी क्रिया धातु के ही समान होती है, जैसे– /*अटि-*/ "मारना", /*इटि-*/ "टकराना", /*कटि-*/ "काटना", /*पिटि-*/ "पकड़ना", /*चिरि-*/ "हंसना", और /*कुळि-*/ "नहाना" के साथ भूतकालिक सूचक चिह्न /*च्चु-*/ के जुड़ने से लोकप्रिय बने। इसने हज़ारों संस्कृत पदों - जैसे /*सहायिच्चु*/ या /*उपकरिच्चु*/ "मदद की", /*क्षमिच्चु*/ "माफी दी", /*संशयिच्चु*/ "शंकित हुआ" आदि को आम बोलचाल की मलयालम भाषा में भी शामिल करने का मार्ग प्रशस्त किया। सामूहिक रूप से नियोजित विकास पद्धति में इस एकल क्रांतिकारी कदम से मलयालम के शब्द भंडार में संस्कृत से उत्पन्न लगभग सभी क्रिया धातुओं से जुड़े हज़ारों रूप शामिल हो गए। वर्तमान मलयालम में /*व्यवसायवलक्करिक्कुक*/ "औद्योगिकीकरण" और /*आगोलवल्करणम*/ "भूमंडलीकरण" जैसी अभिव्यक्तियों का प्रचलन हुआ।

/*स्थापनम*/ क्रियार्थक संज्ञा, /*स्था*/ "स्थिर रहना" से व्युत्पन्न शब्द है, जिसका अर्थ है "किसी को स्थिर बनाना"। लेकिन सामाजिक क्रियाओं के संस्थानीकरण से इस शब्द में भी क्रमानुसार परिवर्तन आते गए, जैसे– /*स्थापनम*/ शब्द का अर्थ "संस्थान" या "इंस्टीट्यूट" या "संस्थापन" होने लगा। वैसे सामान्यतः भाषा के नवीनीकरण में अर्थ परिवर्तन होना आम है। उदाहरण के लिए, /*सभा*/ शब्द मूलतः किसी आयोजन आदि के लिए प्रयुक्त होता था, लेकिन आगे चलकर इसके अर्थ में परिवर्तन होने से यह विधान सभा यानी /*नियमसभा*/ बना। इसी प्रकार "संघर्ष" शब्द का सटीक अर्थ लड़ाई के संदर्भित होता था किंतु आगे चलकर यह "कारखानों" और "कॉलेजों" आदि के विरोधों के लिए भी प्रयोग हुआ, जिसका मलयालीकरण इस प्रकार है – /*पणिमुटक्कु*/ यानि "कारोबार बंद करना" एवं /*पठिप्पुमुटक्कु*/ यानि "शिक्षा में बाधा डालना"।

घोषीकरण व महाप्राणीकरण द्रविड़ भाषा के लिए विदेशी अथवा अपरिचित (alien) थे, जिन्हें बाद में संस्कृत से तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम में उधार लिया गया ताकि इन शब्दों को रूप में किसी परिवर्तन के बिना सम्मिलित कर लिया जाए– तमिल

द्वारा अपनाई गई नीति के विपरीत। वर्तमान में उन केरलवासियों को, जिन्हें संस्कृत से लगाव कम है, उपर्युक्त विशेषताओं को लिए मानक उच्चारण और शब्दों के उच्चारण में इतना आत्मविश्वास और सहजता नहीं है, जो सामान्यतः भाषा की वृद्धिपरक औपचारिक शैली में होती है, जैसे समाचार संप्रेषण के निम्न पदों में देखा जा सकता है– */अध्यापकविद्यार्थिसंघटनकळ/* यानि "अध्यापक-शिक्षार्थी-संगठन", *प्रतिषेधम* यानि "प्रतिशोध", */मध्यप्रदेशमुख्यमंत्रि/* यानि "मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री", */उल्घाटनम/* यानि "उद्घाटन", */मुख्यातिथि/* यानि "मुख्य अतिथि"। संक्षेप में कहें तो मलयालम ने संस्कृत रूपों को बड़े पैमाने पर स्वीकार करके अपनी शब्दावली को समृद्ध किया।

मलयालम और अंग्रेज़ी

आधुनिक काल में अंग्रेज़ी ने मलयालम की बहुस्वनिमीय (polyphonic) प्रकृति में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है और इसका प्रभाव मलयालम भाषा के स्वानिमी से शब्दार्थ स्तर तक स्पष्ट है। प्रारंभिक औपनिवेशिक काल से ही अंग्रेज़ी ने मलयालम भाषा और साहित्य पर अभूतपूर्व प्रभाव डाला है, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम केरल की सार्वजनिक शिक्षा में अंग्रेज़ी को एक आदर्श के रूप में अपनाना था। यह प्रभाव इतना प्रबल था कि मलयालम के विकास के प्रथम चरण में पड़ा संस्कृत भाषा का प्रभाव गौण हो गया। मलयालम के सशक्तीकरण और सुदृढ़ीकरण में उसके शब्द भंडार, रूप विज्ञान, वाक्य और अर्थ विज्ञान में मूल रचनाओं और उनकी मुख्य भूमिकाओं के कई भावों को अनूदित कर शिक्षा और सामाजिक व्यवस्था में शामिल किया गया। मलयालम में अंग्रेज़ी के शब्दों और भावों को उधार लेना वास्तव में अंग्रेज़ी भाषा के विकास के शुरुआती चरण के समान था।

सन् 1790 के दशक के दौरान मद्रास प्रेसिडेंसी के अधीन मद्रास क्षेत्र, अंग्रेज़ रेसिडेंट के अधीनस्थ त्रावणकोर और कोच्चि में अंग्रेज़ों के संपर्क से मलयालम का प्रभाव शुरू हुआ। 1980 के दशक की शुरुआत में त्रावणकोर और कोच्चि में जॉन मुनरो के निवास तथा जब ईस्ट इंडिया कंपनी का चार्टर नवीनीकृत किया गया तो "पयस क्लॉस" का कार्यान्वयन, साथ ही मैकाले के *मिनट्स ऑन इंडियन एजुकेशन* ने मलयालम के अंग्रेज़ी के साथ भाषाई संपर्क को प्रभावित किया। केरल में आधुनिक शिक्षा के सूत्रधार अंग्रेज़ मिशनरियों के पास बाइबिल थी। बेंजामिन बेली द्वारा बाइबिल के अंग्रेज़ी से मलयालम में किए गए अनुवाद *किंग जेम्स वर्ज़न* (King James Version/KJV) ने मलयालम पर गहन प्रभाव डाला।

अंग्रेज़ी के साथ मेलजोल से मलयालम पर ध्वन्यात्मक प्रभाव होने लगा, जैसे मलयालम का अघोष महाप्राण ओष्ठ स्पर्श वर्ण *(फ)* का दंत्योष्ठ्य संघर्षी */फ/* से पहले उधार शब्दों में और फिर देशज शब्दों में भी व्यापक प्रतिस्थापन हुआ। (जेम्स, 2000) उदाहरण ले लिए, falam का *फलम* (phalam), fanam का *फणम* (phanam), kafan का *कफन* (kaphan)। यह नियम कि वायुकोशीय अनुनासिक वर्ण *-न-* शब्द के शुरू में नहीं या सकता, का भी उल्लंघन नोवल, नेम प्लैट, नोट बुक आदि जैसे अंग्रेज़ी शब्दों के जुड़ने से हो गया। (नायर, 2012; 518) यद्यपि *लीलातिलकम्* में स्पष्टतः उल्लेख है कि मलयालम शब्द का अंत रेफ से नहीं हो, जैसे *कोकसंदेशम्* में कुरुवायूरु, *उण्णियाटी चरितम्* में चेङनियूरू होते हैं, अंग्रेज़ी के प्रभाव से अब ये व्यंजनांत ध्वनियाँ (गुरुवायूर और चेङ्ङनूर) हैं, यद्यपि ये अब भी मलयालम में *चिल्लु* मानी जाती हैं। शब्दकोशीय दृष्टि से मुख्यतः छह श्रेणियों– प्रशासनिक, अर्थशास्त्रीय, नापतोल, इमारत/इन्फ्रास्ट्रक्चर, ड्रेस कोड और शिक्षा, में अंग्रेज़ी का अत्यधिक प्रभाव है। (जोसेफ, 1984; 447-470) कर्मवाच्य और भाववाच्य में *मून्नु पेर कोल्लप्पेटेट्टु* का "तीन मारे गए", *प्रत्यक्ष दैवम्* का "प्रत्यक्ष देवता", *फलम प्रख्यापिक्कप्पेटुम* का "परिणाम घोषित होगा" आदि। संक्षिप्तियों, जैसे– *पुरोगमन कला साहित्यम्* के लिए "पु.क.स."। (गिरीश, 2005) परसर्ग जोड़ने में, जैसे– चेय्य अंग्रेज़ी पदरूपों में फोन (phone-), फैक्स (fax-), इंपीच (impeach-), ई-मेल (e-mail-), रिटायर (retire-), रिकवर (recover-), रजिस्टर (register-), डफर (defer-), सस्पेंड (suspend-), डेलिगेट (delegate-) आदि। स्थलनामों के अंग्रेज़ीकरण में, जैसे– Alleppey, Quilon, Tellichery, Trivandrum आदि। (वारियर,

2004) संयुक्त मिश्र शब्दों, जैसे– *पोलीसकारन, सर्वेक्कल्लु, कुप्पिग्लास* आदि; इसी प्रकार पय्यन्स जैसे प्रत्ययों का बहुत ही कम प्रयोग; वाक्यों में लोकप्रियता की दृष्टि से प्रयुक्त *केरलत्तिन्टे भाषा* "केरल की भाषा" केरल में भाषा "केरलीय भाषा" का प्रयोग। (भट्टतिरि, 1977) शैलीपरक दृष्टि से, उच्चारण की प्रयुक्ति में, बीच-बीच में खाली स्थान में, अनुच्छेदीकरण में, विभिन्न फोंटों के प्रयोग में, पादटिप्पणी में, अंतर्संबंधों के प्रयोग में, सामान्य लेखन की विषयसूची में, अंग्रेज़ी में लोकप्रिय उपपद *-ए/एन-* के स्थान पर धातुरूप के साथ *ओरु* के प्रयोग में ऐसा होता है। (मारार, 1971)

मलयालम की साहित्यिक विधाओं, जैसे– उपन्यास, निबंध, अभिवादन, का विकास भाषाई संपर्क से ही संभव हो सका है। शिक्षित लोग भी कभी-कभी जाने-अनजाने में अंग्रेज़ी शब्दों को अपनी बातचीत में शामिल कर लेते हैं। आम जनता भी अंग्रेज़ी से इतनी प्रभावित है कि उनके कई वाक्यों में अंग्रेज़ी शब्द मिलना सामान्य बात है। उदाहरण के लिए, इस लंबे वाक्य 'Central Railway Stationइल first platformइल इरःङ्गि autoपिटिच्चु bankइलपोयि draftउमाट्टि, cashयेटुत्तु, finance corporation officइल पोयि, fineओटुकूटि fifth installment payचेय्तु; flatइलतिरिच्चेत्ति fridgइल निन्नुः orange juiceयेटुत्तुकुटिच्चु fanइट्टु sofaयिलेक्कुचाञ्ञु' (Nayar, 2012; 580), में अंग्रेज़ी विभक्तियों और क्रियाओं के अपवाद को छोड़कर बाकी सब।

कई अंग्रेज़ी शब्द सामान्य मलयालम शब्दावली में इस प्रकार सम्मिलित हो गए हैं कि एक नज़र में वे मलयालम शब्द ही प्रतीत होते हैं। ऐसी शब्दावलियाँ सभी क्षेत्रों में पाई जाती हैं। कुछ ऐसी शब्दावलियों का शब्दानुवाद ही किया गया है, जैसे – *धवळ पत्रम/* dhavala patram (सफेद कागज), *कण्णीर वातकम/* kanneer vathkam (आँसू गैस), *रक्त सम्मर्दम/* rakta sammardam (ब्लड प्रेशर), *शीतल पानीयम/* seetala paneeyam (ठंडा शर्बत), *उच्च न्यायालयम/* ucca nyayalayam (उच्च न्यायालय), *उत्तर कडलासु/* uthara kadalas (उत्तर पुस्तिका) आदि। इसके अलावा कुछ आंशिक अनुवाद, जैसे– *चोद्य पेपर/* chodya paper (प्रश्न पत्र), *क्लासुमुरि/* classumuri (क्लास रूम), *क्रिकेट मलसरम्/* cricket malsaram (क्रिकेट प्रतियोगिता) आदि भी उल्लेखनीय हैं।

मलयालम में कई मुहावरे और लघु आलंकारिक प्रयोग अंग्रेज़ी के शब्दानुवाद हैं। जैसे– *आगोलीकरण* (भूमंडलीकरण), *अंञ्जाम पंक्ति* (पाँचवाँ स्तंभ), *चुवरेषुत्तु* (भित्ति चित्र), *इरट्टत्ताप्पु* (द्वयात्मक रीति), *कडलक्किषवन* (समुद्री वृद्ध), *कलक्कवेळ्ळत्तिल मीनपिडिक्कुक* (गंदे पानी में मछली पकड़ना), *कण्णाटि मालिका* (काँच की इमारत), *करिंचंदा* (काला बाज़ार), *कुरुन्निःले नुळ्ळुका* (कली में चुटकी), *मूढ स्वर्गम* (मूर्ख का स्वर्ग), *मृत भाषा* (मृत भाषा), *नालक्कवला* (चौराहा), *नग्ननेत्रम्* (नंगी आँखें), *नट्टेल्लु* (रीढ की हड्डी), *नाषिकक्कल्लु* (मील का पत्थर), *निरःम मारुःका* (रंग बदलना), *पल्लुम् नखवुम् कोंटु नेरिटुका* (दाँत व नाखूनों से लड़ना), *पुस्तकप्पुषु* (किताबी कीड़ा), *रंडट्टेवुम् कूट्टिमुट्टिक्कुक* (दोनों छोर मिलाना), *सहवर्तित्वम्* (सहवर्तिता), *सौंदर्य राणि* (सौंदर्य रानी), *सिरोकेंद्रम* (शिरोकेंद्र), *स्थापित ताल्पर्यम्* (विशेष लगाव), *सुवर्ण कालम्* (स्वर्ण युग), *सुवर्णावसरम्* (स्वर्णिम अवसर), *स्वयं शवक्कुषितोंटुका* (स्वयं की कब्र खोदना), *स्वंतम् कालिल् निल्कुक* (अपने पैरों पर खड़ा होना), *तकर्नःहृदयम्* (टूटा हुआ दिल), *तोलिक्किट्ट* (मज़बूत त्वचा), *तोळोडुतोळ* (कंधे से कंधे मिलाना), *वषित्तिरिवु* (टर्निंग प्वाइंट), *वेलिच्चत्तु कोंटुवरिका* (पर्दाफाश करना), *वेलिप्पुरःत्तिरिक्कुक* (घेरे पर बैठना), *वेळ्ळाना* (सफेद हाथी), *विहगवीक्षणम्* (विहंगम दृष्टि), *विकेंद्रीकरणम्* (विकेंद्रीकरण), *विलक्कप्पेट्ट कनि* (निषिद्ध फल) आदि।

कई बार ये लंबी अभिव्यक्तियों के रूप में भी दिखाई देते हैं, जैसे– *चायक्कोप्पयिले कोटुंकाट्टु* (चाय की प्याली में आँधी), *चेकुत्तानुम् कटलिनुम् नटुविल्* (राक्षस और सागर के बीच), *चेरुप्पु नक्कुक* (जूता चाटना), *चूडप्पम् पोले विल्कुक* (गरमा-गरम रोटियाँ बेचना), *हृदयत्तिन्टे अटित्तट्टिलनिन्नु* (हृदय की गहराई से), *पूच्चक्कु मणि केट्टुक* (बिल्ली को घंटी बाँधना), *तोप्पियिल ओरु तूवल्* (सोने में सुहागा), *वायिल वेळ्ळिक्करंटियुमायि पिरःक्कुक* (नवाबजादा), *वरच्चट्टियिलनिन्नु*

एरित्तीयिलेक्कु (फ्राइंग पैन से भभकती आग पर), *वैक्कोलत्तुरुंपिल पिटिक्कुक* (डूबते को तिनके का सहारा), *विट्टपोय कण्णि* (छूटी कड़ी) आदि।

दिलचस्प बात है कि मलयालम की मौलिक अभिव्यक्तियाँ उतनी ही भ्रमित करने वाली हैं जितनी कि अंग्रेज़ी में। जैसे– *पूच्च पुरत्तायि* (बिल्ली निकली थैली से) को मलयालम अभिव्यक्ति *पूच्च् पुरत्तायि* (रहस्य खुल गया) के रूप में प्रयोग करना। पहले वाली अभिव्यक्ति का प्रयोग मलयालम में ज़्यादा नहीं दिखता लेकिन दूसरी का प्रचलन बहुतों को उलझन में डाल देता है।

आधुनिक संचार माध्यमों का प्रभाव, जैसे– इंटरनेट, एसएमएस, दूरदर्शन (टेलीविज़न) आदि से मलयालम पर अंग्रेज़ी का प्रभाव बढ़ता ही गया है। केरल में लोगों की महानगरीय (cosmopolitan) प्रकृति और विदेशी भाषा के प्रति झुकाव से अंग्रेज़ी शिक्षा को मिलने वाला यह महत्त्व मलयालम पर गहरा प्रभाव छोड़ेगा।

मलयालम लिपि

तालिका 2.16 : स्वर

അ	ആ	ഇ	ഈ	ഉ	ഊ	ഋ	ൠ	ഌ	എ	ഏ	ഐ	ഒ	ഓ	ഔ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	एं	ए	ऐ	ओं	ओ	औ

तालिका 2.17 : व्यंजन

मलयालम	ക	ഖ	ഗ	ഘ	ങ						
हिंदी	क	ख	ग	घ	ङ						
मलयालम	ച	ഛ	ജ	ഝ	ഞ						
हिंदी	च	छ	ज	झ	ञ						
मलयालम	ട	ഠ	ഡ	ഢ	ണ						
हिंदी	ट	ठ	ड	ढ	ण						
मलयालम	ത	ഥ	ദ	ധ	ന ഩ						
हिंदी	त	थ	द	ध	न नः						
मलयालम	പ	ഫ	ബ	ഭ	മ						
हिंदी	प	फ	ब	भ	म						
मलयालम	യ	ര	റ	ല	ള	ഴ	വ	ശ	ഷ	സ	ഹ
हिंदी	य	र	रः	ल	ळ	ष़	व	श	ष	स	ह

मलयालम लिपि का विकास

मलयालम लिपि के ऐतिहासिक अध्ययन से पता चलता है कि मलयालम भाषा अपने प्रारंभिक विकास के दौरान विभिन्न लिपियों में लिखी जाती थी। मलयालम भाषा जिन लिपियों में लिखी जाती थी उनका विवरण निम्नलिखित है–

वट्ट्टेषुत्तु

उपलब्ध दस्तावेज़ों से पता चलता है कि मलयालम को लिखने की प्राचीनतम लिपि वट्ट्टेषुत्तु (Vattezhuthu) है। अन्य भारतीय लिपियों के समान इसका उद्‌भव भी ब्राह्मी लिपि से हुआ है। कालांतर में ये क्षेत्रीय विविधताएँ विशिष्ट होती गईं और प्रामाणिक बन गईं। उत्तर भारतीय लेखकों के साथ कम संबंध होने एवं प्राचीन काल में उत्तर-दक्षिण के बीच संचार की कमी से दक्षिण भारत में नई लिपियों का सूत्रपात होने लगा।

तमिल सहित अन्य द्रविड़ भाषाओं में इसके कुछ प्राचीनतम दस्तावेज़ आज भी मिलते हैं। तमिल में ईसा पूर्व तक की लिखित पांडुलिपियाँ उपलब्ध है। पूरे तमिल भाषी क्षेत्र में वट्ट्टेषुत्तु एक लेखन प्रणाली के रूप में प्रचलित थी। पल्लवों द्वारा तमिलनाडु के उत्तरी भाग पर विजय प्राप्त करने एवं उसे अपने अधीन बनाने के बाद वहाँ ग्रंथ (Grantha) और ग्रंथ तमिल लिपि का प्रचार करने का प्रयास शुरू किया। चूँकि शासक वर्ग को प्राकृत भाषा तथा ग्रंथ लिपि में रुचि थी इसलिए कालांतर में वट्ट्टेषुत्तु ने ग्रंथ तमिल लिपि को प्रतिस्थापित कर दिया। ऐसा माना जाता है कि तमिल की प्राचीनतम शास्त्रीय रचनाओं *तिरुक्कुरल*, *तोलकाप्पियम* और *चिलप्पतिकारम* की मूल लिपि वट्ट्टेषुत्तु थी। कुछ लोगों का मानना है कि वट्ट्टेषुत्तु वर्णों की उत्पत्ति दक्षिण अशोकाई रचनाओं से हुई है।

वट्ट्टेषुत्तु में लिखा गया प्रारंभिक दस्तावेज़ आठवीं शताब्दी ईस्वी का है। 821 में लिखा गया महान राजशेखरन का वाष़प्पिल्लि दस्तावेज़ प्राचीनतम मलयालम दस्तावेज़ माना जाता है। नौवीं शताब्दी ईस्वी के स्थानु रवि के शासनकाल के दौरान लिखे गए वट्ट्टेषुत्तु शिलालेखों वाले दो पुराने मलयालम ताम्रपत्र भी मौजूद हैं। ये वट्ट्टेषुत्तु सुलेख अभिव्यक्तियाँ आठवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व मलयालम भाषा के अस्तित्व को प्रमाणित करती हैं।

वट्ट्टेषुत्तु शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में कोई एकमत नहीं है। अनेक विद्वानों का मत है कि वट्ट्टेषुत्तु लिपि का नामकरण इसकी लेखन शैली के अनुरूप है। उनका यह भी मानना है कि यथार्थ में उसका नाम "वट्ट्टेषुत्तु" यानि "खुदा हुआ लेखन" है, जिसके भ्रष्ट उच्चारण में वह शब्द "वट्ट्टेषुत्तु" बना होगा। एल.ए. रविवर्मा (1938) का मानना है कि पदबंध एषुत्तु का उद्‌भव एषु या अषु (खोदने या काटने से बनी छाप) से हुआ होगा। (दे. पदावलियाँ—*अष़ुतुक* यानि गोल रुखानी से बनी द्रोणिका आदि) सामान्यतः दक्षिण भारत में पाई जाने वाली वह लेखन विधि, जो किसी नुकीली लेखनी अथवा तेज़ छेनी और लकड़ी के हथौड़े से खुदी तस्वीर की छाप होगी। मोटे ताँबे की पट्टियों या चट्टानों पर इसका प्रयोग होता था, और इसी से क्रमशः "वट्ट्टेषुत्तु" या "खोदा हुआ अक्षर" के नाम पर उसकी निर्माण विधि के अनुरूप यह पद्धति व्युत्पन्न हुई होगी।

कई अन्य विद्वानों का मानना है कि वट्ट्टेषुत्तु लिपि का नामांकन अक्षरों के वक्र रूप से हुआ होगा। संयुक्त पद वट्ट्टेषुत्तु का मतलब "वक्र अक्षरों" से है, जबकि इस संयुक्त पद का आविर्भाव "वट्ट" ("वक्र", गोलाकार) और द्रविड़ "एषुत्तु" (लेखन) के योग से बना माना जाए।

हालाँकि ब्राह्मी लिपि और अशोक के शिलालेखों में अधिकांश अक्षर घुमावदार (curved) नहीं हैं। फिर भी इन अक्षरों के घुमावदार होने की संभावना इसलिए है कि शायद दक्षिण भारत के लेखकों को अक्षरों को घुमावदार बनाने की छूट रही हो। चूँकि लेखन की नई घुमावदार पद्धति पहले से मौजूद पद्धति से भिन्न थी और अंतर केवल अक्षरों के आकार में था, इसलिए नई लेखन शैली का नाम वट्ट्टेषुत्तु पड़ा। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे शिलालेख भी पाए गए हैं, जिनमें वट्ट्टेषुत्तु नाम का उल्लेख मिलता है।

वट्ट्टेषुत्तु लिपि को कुछ अन्य क्षेत्रीय नाम भी मिले हैं, जैसे– दक्षिणी मलयालम, *नामम मोनम* और *चेरपांड्या एषुत्तु*। वट्ट्टेषुत्तु को दक्षिणी मलयालम इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसने तमिलनाडु में अपना आधार खो दिया था और इस लिपि में केवल मलयालम ही लिखी जाती थी। वट्ट्टेषुत्तु में लिखे गए कुछ शिलालेखों में *स्वस्तिश्री* के बदले *नमोनारायणाय* अभिवादन

का प्रयोग किया गया है। *नमोनारायणाय* का व्यतिरेकी (विपरीत) रूप *नामम मोनम* है। इसलिए वट्टेषुत्तु को *नामम मोनम* नाम से भी पुकारा जाता है।

केरल में वट्टेषुत्तु शैली के अनेक शिलालेख पाए जाते हैं। यद्यपि वट्टेषुत्तु ग्रंथों में संयुक्ताक्षर उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी आधे अक्षरों को कुछ विशेषक चिह्नों द्वारा दर्शाया गया है। यह लिपि केरल में सोलहवीं शताब्दी तक प्रचलित थी। ऐसा माना जाता है कि मार्को पोलो, जो तेरहवीं शताब्दी में केरल आया था, ने बताया कि केरल के लोगों की एक अलग भाषा और लिपि पद्धति अथवा प्रणाली थी। इस अलग लिपि पद्धति का नाम ही वट्टेषुत्तु था।

कोलेषुत्तु

कोलेषुत्तु एक ऐसी लेखन पद्धति है जिसका उद्भव वट्टेषुत्तु से हुआ है। लंबे समय तक दोनों पद्धतियाँ एक साथ प्रचलन में रहीं। लेखन की एक विशेष पद्धति के कारण इसे कोलेषुत्तु नाम मिला। मलयालम में *कोल* का अर्थ "एक शैली" या "लंबी छड़ी जैसी वस्तु" है और *एषुत्तु* का अर्थ "अक्षर" है। यह लिपि मुख्यतः ताड़ के पत्तों (palm leaves) पर लिखी जाती थी।

कोलेषुत्तु भाषा के वर्ण भी वट्टेषुत्तु के समान ही हैं। घोष और महाप्राण ध्वनियों के लिए कोलेषुत्तु में कोई प्रतीक या वर्ण उपलब्ध नहीं थे। ये दोनों द्रविड़ भाषाओं के लेखन में ही काम आते थे। इसलिए इनके चिह्नों की संख्या उत्तर भारतीय लिपियों की तुलना में कम थी, लेकिन दोनों ने सभी प्रकार की ध्वनियों और अर्धाक्षरों का प्रतिनिधित्व किया। कोलेषुत्तु ग्रंथों में कुछ विशिष्ट विशेषक चिह्न भी पाए गए हैं। एल.ए. रविवर्मा लिखते हैं, "मलाबार के कोलेषुत्तु में यह अच्छी तरह प्रकट है, जहाँ एक सामान्य रेखा या रेखा के अंत में उलटी खिंचाव दक्षिणी छोर में मुख्य अक्षरों के दीर्घाकार बनाने में प्रयुक्त है। वे म्, न्, ल्, और र् से प्रयुक्त *अर्धाक्षरों* के ऊपर शिरोभाग में स्वरों के विशिष्ट चिह्न बिंदु से द्योतित हैं।"

ग्रंथ लिपि

दक्षिण भारत में ग्रंथ लिपि का उपयोग संस्कृत लिखने के लिए किया जाता था। यह लिपि पूरे दक्षिण भारत में फैली हुई थी। *ग्रंथ* शब्द का अर्थ है पाठ्यपुस्तक, और जिस लिपि का प्रयोग संस्कृत पुस्तकें लिखने में किया जाता था उसे बाद में ग्रंथ लिपि कहा जाने लगा। दक्षिण भारत में ग्रंथ लिपि का सूत्रपात पल्लवों ने किया था। कई विद्वानों का यह भी मानना है कि ग्रंथ लिपि सीधे अशोक के शिलालेखों से विकसित हुई है।

वट्टेषुत्तु और कोलेषुत्तु के वर्णों के साथ ग्रंथाक्षर (ग्रंथ वर्णमाला) का प्रयोग भी होता था। मलयालम के अधिकांश शिलालेखों में वट्टेषुत्तु रूपों के साथ ग्रंथ लिपि भी है। प्राचीन काल में संस्कृत शब्द केवल ग्रंथ लिपि में लिखे जाते थे। प्रागैतिहासिक काल से ही द्रविड़ भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, इसलिए प्राचीन मलयालम में कई ऐसे संस्कृत शब्द शामिल थे, जो तत्सम और तद्भव दोनों रूपों में दिखाई देते हैं। वट्टेषुत्तु लिपि संस्कृत ध्वनि प्रणाली और महाप्राण ध्वनियों को उच्चरित कर पाने में सक्षम नहीं थी, इसलिए संस्कृत शब्दों के सही उच्चारण हेतु वट्टेषुत्तु वर्णों के साथ ग्रंथ लिपि का भी सहारा लिया जाता था। ग्रंथ लिपि में सभी संस्कृत ध्वनियों के प्रतीक थे। मलयालम में लिखी जाने वाली वट्टेषुत्तु शिलालेखों तक सीमित हो गई, जबकि ग्रंथ लिपि का आगे चलकर काफ़ी विकास हुआ, यहाँ तक कि पाठ्यपुस्तक में संस्कृत शब्दों का तद्भव रूप ग्रंथ लिपि में ही लिखा जाता था। वर्तमान मलयालम की उत्पत्ति प्राचीन *ग्रंथाक्षरों* से ही मानी जाती है।

इन तीनों लिपियों के अतिरिक्त, अरबी, सिरिएक, देवनागरी, तमिल और रोमन लिपि का प्रयोग मलयालम लिखने में किया जाता था।

मलयालम में ज्ञात प्राचीनतम ग्रंथ लिपि में मुद्रण *होरतुस मलाबारिकुस* (एम्स्टर्डम, 1678-1693) में है, जिसका विवरण अग्रलिखित है।

मलयालम मुद्रण का इतिहास

केरल में मुद्रण का इतिहास और मलयालम मुद्रण का इतिहास विभिन्न धाराओं (trajectories) को प्रदर्शित करता है। यद्यपि केरल में सोलहवीं शताब्दी में ही मुद्रणालय अथवा प्रिंटिंग प्रेस (printing press) की स्थापना हो चुकी थी, परंतु मलयालम का मुद्रण उन्नीसवीं शताब्दी में ही प्रारंभ हो सका। केरल में सोलहवीं, सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में ज़्यादातर मुद्रण तमिल में ही होते थे। अतः मलयालम का मुद्रण अन्य जगहों से प्रारंभ हुआ। पहला मलयालम मुद्रण लैटिन में प्रकाशित *होरतुस मलाबारिकुस* (1678-1693) में दिखाई देता है, जो एम्स्टर्डम से प्रकाशित था। फिर लगभग एक शताब्दी बाद 1772 में रोम में पहले मलयालम ग्रंथ *संक्षेपवेदार्थम्* का मुद्रण हुआ। भारत में 1799 में मुंबई की कुरियर प्रेस में एक पृष्ठ की ब्रॉडशीट (मलयालम में) *मलाबार टंकण का नमूना* (A specimen of Malabar types) शीर्षक से तथा रॉबर्ट ड्रमोंड का *ग्रामर ऑफ़ द मलाबार लैंग्वेज*, जिसमें मलयालम की महत्त्वपूर्ण सामग्री थी, का प्रकाशन हुआ। इसके बाद नए नियम (द न्यू टेस्टामेंट) का पहला मलयालम अनुवाद 1811 में कुरियर प्रेस, मुंबई से प्रकाशित हुआ था।

केरल में मलयालम मुद्रण 1821 में, कोट्टायम में चर्च मिशनरी सोसाइटी (सी.एम.एस.) प्रेस की स्थापना से शुरू हुआ। 1824 में उन्होंने केरल की मलयालम की पहली मुद्रित रचना, बालोपयोगी अंग्रेज़ी कहानियों का अनुवाद, *चेरुः पैतङ्ङळक्कु उपकारार्थम* प्रकाशित की। यह मलयालम में बाल साहित्य का वह उदाहरण था, जिसे चौकोर आकार की मलयालम लिपि में मुद्रित किया गया। आगे चलकर बेंजामिन बेली ने लिपि को पुनः नए आकार में ढाला, और 1829 में *पुतिय नियमम* नाम से न्यू टेस्टामेंट का अनुवाद तथा 1846 में मलयालम-अंग्रेज़ी शब्दकोश व अंग्रेज़ी-मलयालम शब्दकोश प्रकाशित किया। सी.एम.एस. प्रेस के बाद विभिन्न मिशनरी समूहों ने मान्नानम में सेंट जोसेफ प्रेस (1844), तलश्शेरी में बेसल मिशन प्रेस (1846) और कोच्चि में सेंट थॉमस प्रेस (1862) की स्थापना की। जून 1847 में बेसल मिशन द्वारा मलयालम की पहली पत्रिका *राज्यसमाचारम्* का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, यद्यपि इसके कुछ ही अंक प्रकाशित हो सके। इसका प्रकाशन बंद होने के बाद अक्टूबर 1847 में, उन्होंने एक और पत्रिका *पश्चिमोदयम* का प्रकाशन शुरू किया। 1851 में पहली मलयालम पाठ्यपुस्तक *पाठारंभम्* का प्रकाशन हुआ और उसी वर्ष हर्मन गुंडर्ट द्वारा लिखित मलयालम का पहला पूर्ण व्याकरण भी सिर्फ़ बेसल मिशन द्वारा प्रकाशित किया गया था। कैथरीन हन्ना मुल्लन के बांग्ला उपन्यास का पहला अनुवाद *फूलमणि ओ करुणार बिबरण* (1852), अयमनम् पी. जॉन की रचना *इंडिया चरित्रम्* (भारतीय इतिहास) (1860) भी प्रकाशित हुई। मूल निवासी जॉर्ज मात्तन द्वारा लिखित पहला मलयालम व्याकरण *मलयाण्मयुटे व्याकरणम्* 1863 में प्रकाशित हुआ तथा 1865 में रिचर्ड कोलिंस के पहले मलयालम एकभाषी शब्दकोश *मलयाण्म निघंटु* का प्रकाशन हुआ। मलयालम में पहला मुद्रित नाटक 1866 में कल्लूर उम्मन् पिलिप्पोस द्वारा शेक्सपियर के *कॉमेडी ऑफ़ एरर्स* का अनुवाद था, जिसका शीर्षक *आळमाराःट्टम* था। इनके अलावा कई अन्य उल्लेखनीय प्रकाशन भी हैं। इन सबसे पता चलता है कि उन्नीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध मलयालम मुद्रण (printing) के क्षेत्र में मिशनरी पहल का युग था। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मूल निवासियों ने मुद्रण और प्रकाशन की दुनिया में प्रवेश करना शुरू कर दिया। केरल के किसी मूल निवासी द्वारा स्थापित पहली प्रेस केरलविलासम प्रेस थी, जिसे कथकली कलाकार और दरबारी प्रतिनिधि ईश्वरन पिल्लई ने शुरू किया था। इसकी स्थापना 1852 में तिरुवनंतपुरम में त्रावणकोर के महाराजा उत्रम् तिरुनाळ के सहयोग से की गई थी। 1857 में त्रावणकोर पाठ्यपुस्तक समिति नियुक्त की गई, जिसने मलयालम में सुव्यवस्थित मुद्रण को प्रोत्साहित किया। शताब्दी के उत्तरार्ध में केरल के कई भागों में कई प्रेस स्थापित की गईं, जिनके द्वारा मलयालम भाषा में विविध मुद्रित सामग्रियों, जैसे– पुस्तकों, पत्रिकाओं, साहित्यिक पत्रिकाओं, और समाचार पत्रों आदि का प्रचुर मात्रा में प्रकाशन होने लगा। केरल में प्रिंट संस्कृति के विकास से आधुनिक गद्य, और उपन्यास एवं कहानी जैसी नई साहित्यिक विधाओं का उदय हुआ।

1867 में त्रावणकोर के महाराजा (Sovereign) ने पहली पाठ्यपुस्तक समिति की स्थापना की, जिसने मलयालम में विभिन्न विषयों पर कई पाठ्यपुस्तकों के निर्माण और प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन से मलयालम में आधुनिक गद्य ने एक नया आकार ग्रहण किया।

उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही के दौरान, केरल में एक जीवंत मुद्रण संस्कृति की स्थापना हुई, जिसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक मुद्रण क्षेत्र का निर्माण हुआ। इस अवधि में किताबों, धार्मिक पुस्तिकाओं, पाठ्यपुस्तकों, शब्दकोशों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, ज्ञापन, उपन्यासों और साहित्यिक इतिहास आदि की विस्तृत श्रृंखला का मुद्रण हुआ। मलयालम की प्रारंभिक पत्रिकाओं में समुदाय, लिंग, भाषा, साहित्य और राष्ट्रवाद से संबंधित कई मुद्दों पर चर्चा की गई। मलयालम में लिखे पहले उपन्यास *घातकवधम्* का सी.एम.एस. कॉलेज, कोट्टायम द्वारा *विद्यासंग्रहम्* मासिक पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशन कराया गया। एक और प्राचीन उपन्यास *पुल्लेलिक्कुंञ्चि* का धारावाहिक प्रकाशन *ज्ञाननिक्षेपम* पत्रिका में हुआ। पी. गोविंद पिल्लई द्वारा लिखित मलयालम के पहले साहित्यिक इतिहास *मलयालभाषाचरितम्* के खंड, 1881 में एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित होने से पहले, *विद्याविलासिनि* के संस्करणों में दिखाई दिए।

मलयालम के पहले समाचार पत्र *केरलमित्रम* का प्रकाशन 1881 में केरलमित्रम प्रेस से हुआ। आज के कुछ प्रमुख समाचार पत्रों, जैसे– *मलयाला मनोरमा* और *दीपिका* का शुभारंभ उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में हुआ।

बीसवीं शताब्दी के केरल में न केवल मुद्रण गतिविधियों का प्रसार हुआ, बल्कि एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ मुद्रण और प्रकाशन के लिए कई संस्थाओं का गठन भी हुआ। सन् 1954 में समकालीन साहित्यिक विद्वानों द्वारा गठित साहित्य प्रवर्तक सहकारी सोसाइटी, केरल साहित्य अकादमी (1956), और केरल भाषा संस्थान (1968) जैसे संस्थानों ने बीसवीं शताब्दी के मलयालम मुद्रण को एक नई प्रेरणा दी। इन संगठनों ने और साथ ही छोटे-बड़े निजी स्वामित्व वाले मुद्रण और प्रकाशन घरानों ने केरल में आम पाठकों को सूचित करना और आकार देना जारी रखा।

डिजिटल भाषा प्रौद्योगिकियाँ

मलयालम में प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) कार्य

व्यापक अर्थ में सभी पारंपरिक मीडिया भाषा के मामले में तटस्थ रहे हैं। मलयालम भाषा के प्रयोग के संबंध में प्रिंट, रेडियो और टेलिविजन कोई बड़ी चुनौती पेश नहीं करते। हालाँकि कंप्यूटर के साथ ऐसा नहीं है। सूक्ष्म और स्थूल स्तर पर कई ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर अनुसंधान, नीति निर्माण, ज्ञान प्रसार और प्रौद्योगिकी विकास की आवश्यकता है। सी-डैक के कंप्युटेशनल भाषा विज्ञान समूह ने इस कार्य का ज़िम्मा उठाया है। केरल राज्य आईटी मिशन और केरल विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग के समन्वय में एक समन्वित परियोजना, सेंटर फॉर लिंग्विस्टिक कंप्यूटिंग केरलम (CLICK) का उद्देश्य मलयालम प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण अथवा एनएलपी (Natural Language Processing/NLP) को अपग्रेड करना है।

मिशन मलयालम पाँच चरणों में मलयालम सॉफ्टवेयर उत्पादों को विकसित करने हेतु विकास कार्यक्रमों की एक श्रृंखला है। इस प्रक्रिया के कई चरण हैं, जैसे– मानकीकरण, निरंतरता, सार्वजनिक-निजी भागीदारी, खुला स्रोत, कॉपी लेफ्ट, मुफ्त वितरण, सरल इंटरफेस, विकेंद्रीकरण आदि। 2004 में आधिकारिक मलयालम सॉफ्टवेयर "निला" (NILA) के विमोचन को मिशन मलयालम का प्रारंभ माना जाता है। एक प्रमुख मुफ्त मलयालम सॉफ्टवेयर "कावेरी" इसके दूसरे चरण का मुख्य घटक है। कावेरी एक निःशुल्क ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर होगा जो ओपन ऑफिस जैसे प्रमुख ओपन सोर्स उद्यमों के साथ मिलकर काम करेगा। इसमें मलयालम वर्तनी जाँचने से लेकर अंग्रेज़ी-मलयालम अनुवाद सहायता तक कई विशेषताएँ सम्मिलित हैं। सेंटर फॉर लिंग्विस्टिक कंप्यूटिंग केरलम ने अपने कावेरी प्रोजेक्ट के अंतर्गत मलयालम के लिए एक मशीनी अनुवाद (एमटी) टूल विकसित करने के

काम में अग्रणी भूमिका निभाने की योजना बनाई है। कावेरी के साथ दिया जाने वाला यह अनुवाद सहायक (translation assistant) मशीन आधारित अनुवाद को सरल बनाता है।

मलयालम एनएलपी से जुड़े प्रमुख एनएलपी विभाग निम्नलिखित हैं–

1. मानव मशीन इंटरफेस प्रणाली

i. **नयना (NAYANA)– मलयालम के लिए ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन प्रणाली (ओसीआर)**
मलयालम ओसीआर (opital character recognition) प्रणाली मुद्रित मलयालम दस्तावेज़ों की स्कैन फोटो को संपादन योग्य पाठ में परिवर्तित करती है। यह एक मल्टी-फॉन्ट व्यवस्था है, जो कई तरह के फॉन्ट साइज में काम करती है। इसमें प्रति सेकंड 50 वर्णों की पहचान गति है।

ii. **सुभाषिणी (SUBHASHINI)– मलयालम पाठ से वाक् प्रणाली (टीटीएस)**
विंडोज आधारित मलयालम पाठ से वाक् (text to speech) प्रणाली में मलयालम पाठों (text) को सुगम्य स्पीच आउटपुट में परिवर्तित किया जाता है। सॉफ्टवेयर एक टेक्स्ट एडिटर के साथ एकीकृत है, जिसमें इस्की (ISCII) और इसफोक (ISFOC) दोनों का सहयोग है। यह डायाफोनिक संयोजन (diaphonic concatenation) द्वारा वाक् संश्लेषण पर आधारित है।

2. ज्ञान उपकरण

i. नेरपदम (NERPADAM)– मलयालम वर्तनी जाँचक
इस व्यवस्था में सुझाव सूची और स्वतः सुधार की सुविधाएँ शामिल हैं। "नेरपदम" को माइक्रोसॉफ्ट वर्ड से जोड़कर मलयालम पाठों में शब्दों की वर्तनी की सूक्ष्म जाँच होती है। यह ऑफ़लाइन वर्तनी जाँचकर्ता (spell checker) के रूप में भी काम करता है।

ii. अन्वेषणम (ANWESHANAM)– मलयालम वेब आधारित सर्च इंजन
वेब पृष्ठ पर मलयालम सामग्री और जानकारी की जाँच "अन्वेषणम" द्वारा की जाती है। यह विशिष्ट मलयालम कुंजी शब्दों (keywords) की खोज करता है और मलयालम में संक्षिप्त विवरणों के साथ खोजी गई जानकारी वाले वेब पृष्ठों के लिंक की सूची तैयार करता है।

3. सी-डैक में एनएलपी काम करता है

सी-डैक, संचार व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा तिरुवनंतपुरम में स्थापित उन तेरह संसाधन केंद्रों में से एक है, जो भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी समाधान के लिए भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (TDIL) कार्यक्रम के तहत आते हैं। सी-डैक तिरुवनंतपुरम का मुख्य केंद्र बिंदु मलयालम है, जो केरल की राजभाषा भी है।

राज्य में मलयालम समर्थित मुख्य प्रौद्योगिकियों और उत्पादों के विकास में आईटी सक्षम सेवाओं को प्रोत्साहन दिया गया है। मलयालम के कंप्यूटरीकरण के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने तथा सूचना प्रौद्योगिकी को मलयालम भाषी तक उसकी भाषा में पहुँचाने में भी इन्होंने काफ़ी सफलता पाई है। मलयालम शब्द संसाधन में "अक्षरमाला" सॉफ्टवेयर का उपयोग कई सरकारी कार्यालयों में शुरू हो गया है। गैर-निवासी मलयालियों के लिए एक मलयालम ट्यूटर/शिक्षक "एषुत्तच्छन" सुपरिचित सॉफ्टवेयर है।

सी-डैक उत्पादों की श्रेणी में निम्नलिखित शामिल हैं–

i. मलयालम के लिए नॉलेज टूल्स, जैसे– पोर्टल, फॉन्ट, रूपांतरात्मक विश्लेषक (morphological analyser), वर्तनी जाँचक, पाठ संपादक (text editor), सर्च इंजन और कोड परिवर्तक।

ii. ज्ञान संसाधन, जैसे– मलयालम कोर्पोरा, त्रिभाषी (अंग्रेज़ी-हिंदी-मलयालम) ऑनलाइन शब्दकोश, केरल के साहित्य और संस्कृति के ज्ञान के आधार।
iii. मानव मशीन इंटरफेस जिसमें ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन और टेक्स्ट टु स्पीच सिस्टम शामिल हो।
iv. मलयालम में ई-कॉमर्स एप्लिकेशंस और ई-मेल सेवाएँ।
v. मलयालम और अंग्रेज़ी के लिए भाषा ट्यूटर यानि भाषा शिक्षक।

4. भारतीय भाषा से भारतीय भाषा मशीन अनुवाद प्रणाली (आईएलएमटी)

तमिल विश्वविद्यालय, तंजावूर का भाषा विज्ञान विभाग, AUKBC और भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT) हैदराबाद के संयुक्त तत्त्वाधान में भारतीय भाषाओं से भारतीय भाषाओं में मशीनी अनुवाद को विकसित करने की परियोजना पर काम कर रहा है। वे तमिल से मलयालम और मलयालम से तमिल मशीनी अनुवाद कर रहे हैं। यथार्थ जीवन-पद्धति पर आधारित यह प्रणाली अनुवाद की शुद्धता को ध्यान में रखकर बनाई गई है। उन्होंने भारतीय भाषाओं के लिए बुनियादी सामग्रियों के विकास तथा शब्द संसाधनों, जैसे– पीओएस टैग्गर्स, छंगर्स, रूपिम विश्लेषकों, द्विदिश द्विभाषी शब्दकोशों, व्याख्यायित कोर्पोरा आदि में विशेष क्षमता हासिल कर ली है।

5. आईएलसीआई परियोजना

यह परियोजना केरल के भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन संस्थान (IIITM) द्वारा संचालित है। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी कॉर्पस (corpus) का मलयालम में अनुवाद करना तथा उनमें निहित बोलियों के प्रकारों की खोज करना है।

6. मलयालम के लिए रूपवैज्ञानिक विश्लेषक

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) हैदराबाद और तमिल विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में मलयालम के रूपवैज्ञानिक विश्लेषक पर काम हो रहा है। यह प्रतिमान (paradigm) पद्धति पर आधारित है तथा इसे विकसित करने के लिए ANUSAARAKA उपकरण (tool) का सहारा लिया जा रहा है।

मलयालम की बोलियाँ

मलयालम बोली में भिन्नताओं को क्षेत्र, जाति, समुदाय, सामाजिक स्तर, आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, शैली जैसे मापदंडों के साथ स्वनिमिक, ध्वनि वैज्ञानिक, व्याकरणिक, शब्दार्थ और शाब्दिक स्तरों के रूप में देखा जा सकता है। त्रावणकोर, कोच्चि, दक्षिण और उत्तर मलाबार तथा लक्षद्वीप द्वीपसमूह की बोलियों में काफ़ी अंतर दिखाई पड़ते हैं। केरल के पहाड़ी इलाकों में बोली जाने वाली 48 आदिवासी बोलियों में से कई बोलियाँ मलयालम की हैं और कुछ दक्षिण द्रविड़ भाषाओं में से एक या अन्य से संबंधित हैं।

मलयालम का पहला व्यवस्थित बोली सर्वेक्षण (dialect survey) एकल बोली समुदाय, पूरे केरल में रहने वाले ईझ़वा/तिया समूहों, पर आधारित था जो 1968 में पूरा हुआ। इसमें 12 प्रमुख क्षेत्रीय बोली क्षेत्रों का सीमांकन किया गया। इन क्षेत्रों में उत्तर त्रावणकोर, कोच्चि, उत्तर मलाबार एवं दक्षिण त्रावणकोर, दक्षिण मलाबार, दक्षिण-पूर्वी पालक्काड, उत्तर-पश्चिमी पालक्काड, मध्य मलाबार, वयनाड़, मध्य त्रावणकोर, पश्चिम वेंपनाड और कन्नूर ज़िले के उत्तर की मुख्य बोलियों वाली कुछ पंचायतें शामिल हैं। (सुब्रह्मण्यम, 1974)

इसके बाद नायर और दलित बोलियों का सर्वेक्षण हुआ। ईझ़वा/तिया और नायर जातियों से संबंधित लगभग 600 बोली मानचित्र बनाए गए, साथ ही पाठभेदों के आवृत्ति चार्ट भी शामिल थे, जिनमें 300 नैदानिक शाब्दिक वस्तुओं (diagnostic lexical items) के बीच अंतर दिखाया गया था। इन मानचित्रों की प्रतियों को केरल विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग और इंटरनेशनल स्कूल ऑफ़ द्रविड़ियन लिंग्विस्टिक्स, तिरुवनंतपुरम के संग्रहालय में संरक्षित रखा गया है।

कई बोली विविधताओं में, *य* के स्थान पर *ळ* का होना आम बात है जैसे *पळम* > *पयम* "फल", किंतु *त* (*केतक्कु* "पूर्व") का प्रयोग कासरगोड के उत्तरी क्षेत्र में पाई जाने एक दुर्लभ विशेषता है। प्रारंभ के *व/ब* का विचलन जैसे *व/बेळ्ळम्* "पानी", *व/बाप्पा* "पिता" पूरे केरल और लक्षद्वीप की मुस्लिम बोलियों की एक विशिष्ट विशेषता है। किंतु कन्नूर ज़िले में यह परिवर्तन कुछ अन्य जातियों की बोलियों में भी दिखाई देता है, जिससे जाति, समुदाय और क्षेत्रीय लक्षणों के आदान-प्रदान के संकेत मिलते हैं। एरनाड और लक्षद्वीप की मुस्लिम बोलियों में शब्दांत का *न/म* परिवर्तन देखने को मिलता है, जैसे *नेःरन/नेःरम्* "समय"। वर्तमान काल चिह्नक *-अनराः, -उन्त* का जैसे *कोत्तन्राः* "चीरना", *इतुन्त* "स्थान" कासरगोड के परःया समुदाय की बोली की विशेषता है। लक्षद्वीप की मुस्लिम बोली में *-न्ता* चिह्नक के जुड़ने से *बयंता* "आता है" बनता है।

दलित समुदाय की परःया उपजाति की कुछ उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। इसमें लगभग सभी शब्दारंभिक व्यंजनों (*प त च क ह व न*) को नज़रअंदाज़ किया जाता है, जबकि *आजरु* "हाजिर", *आरम* "हार" में *ह* व्यंजन (इस स्थान पर प्रयुक्त अन्य किसी व्यंजन को नहीं) को ही छोड़ दिया जाता है, ईष़वा/तिया नायर की बोलियों में देखा गया है। सर्वनामों की प्रयुक्ति में *अतोन* "वह" (पु.), *अतालु* "वह" (स्त्री.), के तत्संबंधी अन्य बोली रूपों में *अवन, अवल* आदि हैं। विशिष्ट शब्द रूपों में *वेरेः* "रक्त", *इप्पुलु* "नीचे", *आंपु* "शयनकक्ष" आदि शामिल हैं।

मलयालम में स्ववाची (reflexes) एवं *ळ* के विकल्प व्यंजन, काफ़ी हद तक जातीय/सामुदायिक और क्षेत्रीय सीमाओं के आधार पर निर्धारित होते हैं। मलयालम की विभिन्न बोलियों में, विशेषकर ईष़वा/तिया बोलियों (सुब्रह्मण्यम, 1974) में, *ळ* की स्ववाचियाँ पूरे केरल में बोली जाती हुई नज़र आती हैं। साहित्यिक बोली और मलयालम की मानक क्षेत्रीय बोली में भी ये प्रयोग की जाती हैं। केरल के सभी ज़िलों में कुछ विशेष शब्दों में, जैसे– *कूळि* "मुर्गा", *वळि* "रास्ता", *केळक्कु* "पूर्व" में भी यही दिखाई देता है।

स्ववाची रूप में *य* का प्रयोग अधिकांशतः दलित बोलियों में दिखाई देता है या फिर मुस्लिम बोलियों के अंतर्गत अशिक्षित ईष़वा एवं नायर की बोलियों में। मलाबार क्षेत्र के अन्य भागों, विशेषकर केरल के उत्तरी ज़िलों यानि कन्नूर, कोष़िकोड, मलप्पुरम, पालक्काड, में *ळ* को *य* के साथ प्रतिस्थापित करके *कूयि, वायि* आदि रूप प्रयुक्त होते हैं।

कुछ संदर्भों में कन्नूर ज़िले में कासरगोड के सबसे उत्तरी गाँवों की तिया जाति बोलियों में *त* का प्रयोग पाया जाता है, जो इस बात का संकेत है कि यह विशिष्ट बोलियों वाला क्षेत्र है, उदाहरण के लिए, *केतक्कु* "पूर्व", *केतन्नु* "कंद", *पुतु* "कीड़ा" आदि। कई बोलियों में, भूतकालिक रूपियों में *–ण–* के पहले *–ष़–* स्वरयुक्त क्रियाओं में दीर्घ वर्ण लुप्त हो जाता है, जैसे– *वीणु* < *वीष़ुन्नु* "गिरता", *ताणु* < *ताष़ुन्नु* "नीचे झुकता"। इसी प्रकार प्रमुखतः कन्नूर और कोष़िकोड ज़िलों की बोलियों की संज्ञाओं में होता है, जैसे– *केन्नु* "कंद", *केक्कु* "पूर्व" आदि।

य, य्य, ज्ज जो मुस्लिम बोलियों की विशेषता है, मलाबार की ईष़वा/तिया बोलियों में भी पूर्व के संपर्क के कारण कम दिखाई देते हैं, उदाहरण के लिए, *पुज्जु/पुय्यु/पुयु* "कीड़ा"।

व का प्रयोग कन्नूर, कोष़िकोड और पालक्काड क्षेत्रों में किया जाता है, जैसे– *कवुत* "गधा", *कवुत्तु* "गर्दन"।

ग, ग्ग का प्रयोग कोष़िकोड और पालक्काड में होता है, जैसे– *कोगु/कोग्गु* "हल का फलक"।

स का प्रयोग सिर्फ़ पालक्काड में कहीं-कहीं किया जाता है, जैसे– *पुसु* "कीड़ा", *कोसि* "मुर्गी"।

श का प्रयोग कन्नूर और कोष़िकोड में होता है, जैसे– *पुशु* "कीड़ा"।

ह का प्रयोग कोष़िकोड में किया जाता है, जैसे– *कहुत्तु* "गर्दन" आदि।

उल्लेखनीय है कि अब तक हुए मलयालम भाषाई सर्वेक्षण और बोली अध्ययन, विशेषकर जाति और क्षेत्र पर आधारित, यह साबित करते हैं कि सभी जातिगत अंतर दो या तीन विभाजनों में अव्यक्त होते हैं, जैसे– ब्राह्मण-गैर ब्राह्मण, या ब्राह्मण-गैर-

ब्राह्मण-दलित आदि। जाति दल के अंतर्गत प्रत्येक समुदाय, जाति और यहाँ तक कि उपजाति का स्वतंत्र और विस्तृत अध्ययन किया जाना चाहिए। जैसे गैर-ब्राह्मणों में नायर, ईष्रवा और दलित जातियाँ भी हैं, यहाँ तक कि दलित के अंतर्गत परःया और पुलयर जैसी जातियाँ भी शामिल हैं। हम दावा नहीं कर सकते कि ये सभी जातियाँ एक ही बोली संबंधी विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं; इन समूहों में बोली जाने वाली बोलियों में काफ़ी अंतर हैं।

क्षेत्रीय विविधताओं के संबंध में, भाषाई संरचना के विभिन्न स्तरों में चरम अंतर देखा जाता है, जिसमें एक ही जाति समूह या दो अलग-अलग क्षेत्रों में रहने वाले विभिन्न समूहों की बोलियों की आवाज़ (intonation patterns of speech) का उतार-चढ़ाव शामिल है। उदाहरण के लिए, दक्षिणी क्षेत्र की तुलना में उत्तरी क्षेत्र के किसी भी समूह की मलयालम बोली, जिसे केवल क्षेत्र के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है, क्योंकि उससे संबंधित क्षेत्रों के किसी भी समूह के लिए विशेषताएँ लगभग समान हैं। शाब्दिक रूपों के मामले में विशुद्ध रूप से अनेक क्षेत्रीय व्यंजनाएँ मिलती हैं, किन्हीं दो स्थानों पर यह एकरूप हो सकती है, किंतु इनके अर्थ में अंतर होता है। कुछ रूप तो ऐसे हैं, जो एक जगह वर्जित हैं तो दूसरी जगह प्रचलित हैं। इसी प्रकार, कुछ संज्ञाओं और क्रियाओं को साथ-साथ प्रयुक्त करना वर्जित है।

उपरोक्त वर्णित क्षेत्रीय बोलियों के अतिरिक्त जाति आधारित बोलियाँ, व्यावसायिक बोलियाँ और धर्म आधारित बोलियाँ भी हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर मलाबार क्षेत्र में केरल के मुस्लिम समुदायों की मलयालम बोली को माप्पिला मलयालम कहा जाता है। यह अरबी भाषा से उधार लिए गए कई शब्दों के मिश्रण से बनी मलयालम है। सिंगापुर, मलेशिया में रहने वाले मलयाली मुस्लिम समुदाय और केरल के कुछ लोग मलयालम लिखने में अरबी लिपि का प्रयोग करते हैं। केरल में अरबीमलयालम में लिखे गए साहित्य की एक अनूठी परंपरा रही है, जिसमें अधिकतर काव्य रूप हैं, जो विभिन्न विषयों को दर्शाते हैं। माप्पिला मलयालम को साहित्यिक दर्जा प्राप्त है।

केरल के सुरीयानी ईसाई प्रारंभ में मलयालम को सुरीयानी (सिरिएक) लिपि में लिखा करते थे, जिसे "कुरुस्सोनी" कहा जाता है।

कोच्चि में रहने वाले यहूदियों ने अपने दैनिक जीवन में मुख्य रूप से कुछ अलग प्रकार की मलयालम का प्रयोग किया है, जिसमें हिब्रू और संस्कृत से लिए गए शब्द, शब्दकोश, स्वनिम एवं वाक्यविन्यास में प्राचीन द्रविड़ के तत्त्वों को शामिल किया गया था। भाषाई पदार्थ (substance) का मूल समकालीन मलयालम के समान है। यहूदी मलयालम पर शोध बहुत ही कम हुए हैं। जेरूसलम के हिब्रू विश्वविद्यालय का बेन-ज्वी संस्थान वर्तमान में यहूदी मलयालम लोक गीतों के विश्लेषण में लगा हुआ है। ऐसे गीतों की श्रृंखला का जर्मन अनुवाद पहले ही प्रकाशित हो चुका है। (फ्रैंज़ और ज़कारिया, 2002)

साहित्यिक बोली का स्वरूप लगभग एक समान है। समाचार पत्रों, जनसंचार माध्यमों और औपचारिक रूप से प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा, जो किसी जाति, समुदाय और क्षेत्रीयता पर आधारित नहीं है और क्षेत्रीय दायरे के बाहर बड़े पैमाने पर अधिकांश लोगों द्वारा समझी जाती है, मानक किस्म मानी जाती है। शिक्षा के प्रसार के साथ कई लोगों द्वारा अपनी क्षेत्रीय या जाति/सामुदायिक पहचान को छिपाकर मानक रूपों के साथ-साथ अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग धीरे-धीरे नई बोली को जन्म दे रहा था, जिसे मानक बोलचाल की मलयालम कहा जा सकता है।

अरबीमलयालम

अरबीमलयालम एक अनूठी लिपि है जिसका प्रयोग मुस्लिम मिशनरी धार्मिक उद्देश्यों के लिए करते थे। सामान्यतः मुस्लिम मिशनरी जहाँ-जहाँ गए, वहाँ विशेष स्थानीय भाषाओं के लिए अरबी लिपि का इस्तेमाल करते थे। परिणामस्वरूप इस प्रकार की लिपि पूर्ण विकसित रूप में मालदीव, तुर्की, फ़ारस, मलेशिया और भारत जैसे देशों में पनपने लगी। आगे चलकर यह लिपि गुजराती, मराठी, पंजाबी, कन्नड़, तेलुगु, तमिल और मलयालम जैसी विभिन्न भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय बनी।

अरबी लिपि में लिखी जाने वाली मलयालम को अरबीमलयालम कहा जाता है। अनुमान है कि इसकी शुरुआत नौवीं या दसवीं शताब्दी ईस्वी में हुई थी। प्राचीन माप्पिलाओं के लिए यह मौखिक उपयोग हेतु एक सुविधाजनक माध्यम था। केरल में अरबीमलयालम की अनेक साहित्यिक रचनाएँ मिलती हैं। केरल में इसका व्यापक प्रचार होने के साथ-साथ लक्षद्वीप में भी यह काफ़ी लोकप्रिय हुई।

अरबीमलयालम ने केरल के मुस्लिमों को शत प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करने में मदद की। अरबी तमिल के कुछ साहित्य, जैसे– *स्क्कुम पडप्पाट्टु* का अरबीमलयालम में अनुवाद किया गया। मुद्रण संस्कृति से पहले अरब विद्वानों ने इस्लाम साहित्य को माप्पिला काव्यों, जैसे– एक माप्पिला साहित्यिक विधा माप्पिला गीत का प्रणयन (rendered) किया था। अहमद कोया द्वारा अरबीमलयालम पुस्तक *थिब्बुनबी* के मुद्रण के लिए कालीकट (कोष़िकोड) से बॉम्बे (मुंबई) की यात्रा करना अरबीमलयालम और माप्पिला समाज में इसके महत्त्व को बताता है। केरल में मुद्रणालय अथवा प्रेस (press) की स्थापना के बाद अरबीमलयालम शिक्षा में तेज़ी देखी गई। गद्य में सैकड़ों पुस्तकें आईं, जैसे– कुरान का अनुवाद, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, उपन्यास, बाइबिल अनुवाद, *विक्रमादित्य कदकल* और अन्य।

डेढ़ सौ से ज़्यादा *पडप्पाट्टु*, सैकड़ों *मालाप्पाट्टु*, *किसाप्पाट्टु*, *कत्तुपाट्टु* और *सर्कीट्टुपाट्टु* का प्रकाशन इसी समय हुआ।

ऐसा माना जाता है कि कालीकट के नादापुरम में पहला अरबीमलयालम मुद्रणालय (printing press) खोला गया था। आगे चलकर तिरूरंगाडि, पोन्नानि और तलश्शेरी अरबीमलयालम के प्रसिद्ध प्रकाशन केंद्र बन गए।

सलाहुल एकवान और *रफीकुल इस्लाम* अरबीमलयालम में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र थे तथा *एडयातुल एकवान, अल बयल निशाहुल इस्लाम, अल मुर्शेद, अल इस्लाह* उस समय की अरबीमलयालम में प्रकाशित होने वाली कुछ पत्रिकाएँ थीं। 1883 में अरबीमलयालम में *चार दरवेश* नामक एक उपन्यास का प्रकाशन हुआ। चकेरि मोयदीन कुट्टि का *भाषा भूषणम्* और अब्दलु कादर वैद्य का *खवसुल मुसलिमीन* दोनों विश्वकोश (thesauruses) और तोयपरंबिल कुचअहमद का शब्दकोश आदि भी अरबीमलयालम की अन्य उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। समय के साथ अरबीमलयालम में कई परिवर्तन आए हैं। इसने अक्षरों में खुद को सुधार लिया है और अब मलयालम के सूक्ष्म पहलुओं को भी व्यक्त करने में सक्षम है। वक्कम अब्दुल कादर मौलवी, सुजाइ मुयिदु मुसलियार, सैयद सनाहुला मुक्ति तंगल, चालियत कुच्चामिना हाजि सयिदालिक्कुट्टि मास्टर, कारक्कल मम्मद आदि ने अरबीमलयालम के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है। माप्पिला समाज के बोलचाल के शब्दों के अलावा, अरबीमलयालम ने संस्कृत, अरबी, तमिल, फ़ारसी, उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी के शब्दों को अपने साहित्य में आत्मसात किया।

अरबीमलयालम ने मलयालम को *पिरिशम, पोरिशा, चंङा, चोगु, रंगु, परीह्स, थंङरिचु, मिन्दि, पगयन* और *पगिशम* जैसे अनेक शब्द दिए हैं। एक तरह से अरबीमलयालम ने अपनी अद्भुत सांस्कृतिक पहचान से मलयालम को समृद्ध किया है।

पातिरि मलयालम

ताम्रपट्टियों (copper plates) में लिखे प्रारंभिक गद्य रूपों की तुलना में, सोलहवीं शताब्दी में मंदिर के शिलालेख, *भाषाकौटिलीयम, अत्तप्रकारम्, क्रमदीपिका, दूतवाक्यम्, ब्रह्मांडपुराणम्* आदि रचनाएँ मलयालम गद्य के संरचनात्मक एवं संचारी इतिहास में अभूतपूर्व प्रगति थी। जिन यूरोपीय मिशनरियों ने मलयालम के मौखिक और लिखित दोनों रूपों में अध्ययन किया वे आम जनता से आसानी से जुड़ पाए और धर्मोपदेश (preach) दे सके। पातिरि (लैटिन के *पाद्रे* "पुरोहित") विदेशी ईसाई मिशनरियों का लोकप्रिय स्थानीय नाम है। मलयालम में संस्कृत के प्रभुत्व को कम करने के लिए पादरियों ने भरसक प्रयास किए और मलयालम के प्रारंभिक काल के दौरान काव्य को गद्य से बदलने में उन्होंने बहुत योगदान दिया, क्योंकि उन्होंने मलयालम के लिए एक परिपक्व गद्य प्रारूप

विकसित किया था। उन्होंने इसे औपचारिक शिक्षा, मुद्रण और प्रवचन (उपदेश) के माध्यम से भी लोकप्रिय बनाया। इस रूप ने आधुनिक मलयालम गद्य को काफ़ी प्रभावित किया।

सोलहवीं शताब्दी में जब केरल में कोई मानकीकृत सामान्य भाषा नहीं थी, तो गद्य शैली के साथ-साथ पाश्चात्य ईसाई मिशनरियों की स्थानीय भाषाओं और लैटिन एवं ग्रीक जैसी यूरोपीय शास्त्रीय भाषाओं की भाषाई और प्रवचन संरचना (discourse structure) ने उन्हें काफ़ी प्रभावित किया। उन्होंने मलयालम में शब्दकोशों, व्याकरणिक ग्रंथों, धार्मिक पथों (tracts) तथा साहित्यिक कृतियों की रचना की। इसकी संप्रेषणीय प्रभावकारिता और भाषा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने पातिरि मलयालम को गद्यात्मक या लगभग समान चंपू गद्य और नांबियार तमिल, जो उस समय प्रचलन में थी, की तुलना में अधिक लोकप्रिय बना दिया। इसकी प्रत्यक्षता ने कुछ हद तक मलयालम की व्याकरणिक और अर्थपरक अस्पष्टताओं को हल किया, जिनमें कोई विद्वत्तापूर्ण गद्य नहीं था और जो संस्कृत या मणिप्रवाळम् (संस्कृत मलयालम) पर निर्भर थी।

सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी में सक्रिय इन देशी और विदेशी ईसाई मिशनरियों ने मलयालम गद्य शैली के विकास में अपना योगदान दिया। इससे उनकी गद्य रचना शैली ने समकालीन मलयालम गद्य को प्रभावित किया। ग्रंथ सूची संबंधी विवरण जैसे– लेखक का नाम, प्रकाशक, प्रकाशन का वर्ष आदि मिशनरी लेखन की ही विशेषताएँ थीं। उच्च ध्वनि वाले लेकिन अपरिचित संस्कृत शब्दों के प्रयोग के बजाय उन्होंने संचार को प्रमुखता दी, जिससे उन्होंने विशिष्ट स्थानीय ध्वन्यात्मक अंतर और क्षेत्रीय विविधता वाले द्रविड़ शब्दों का प्रयोग करना शुरू कर दिया। वाक्य स्तर पर उन्होंने छोटे वाक्यों, जिसमें कर्ता-कर्म-क्रिया संरचना शामिल हो, को प्राथमिकता दी। संरचनात्मक रूप से उन्होंने भूमिका-पाठ-निष्कर्ष पद्धति, जिसमें विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए छोटे खंडों को अलग रखा जाता था, का अनुसरण किया। पाश्चात्य मिशनरियों ने मलयालम को कई शब्द दिए क्योंकि उन्होंने मिशनरी लेखन के माध्यम से ईसाई धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों और पाश्चात्य दार्शनिक विचारों को मिशनरी लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया था। उन्होंने पुर्तगाली, डच और लैटिन जैसी अपनी भाषाओं के साथ-साथ सिरिएक, संस्कृत और अरबी से भी स्वतंत्र रूप से शब्द उधार लिए। उन्होंने मौजूदा शब्दों को नए अर्थ प्रदान किए और कुछ मामलों में कुछ शब्दों के प्राथमिक अर्थ को नज़रअंदाज़ कर दिया और द्वितीयक अर्थ को अधिक महत्त्व दिया। मलयालम की बाद की प्रगति में पातिरी मलयालम और मिशनरियों के व्याकरणिक, शाब्दिक और नैतिक शोध-प्रबंधों के साथ ही शिक्षा और मुद्रण जैसे उनके शुरुआती प्रयासों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

विदेशी और भारतीय दोनों ईसाई मिशनरियों ने आधुनिक मलयालम भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। हालाँकि उनका प्राथमिक उद्देश्य धार्मिक था फिर भी, मिशनरियों की प्रत्येक पीढ़ी ने मलयालम में अपनी टिप्पणियों और शोध-निबंधों के दस्तावेज़ तैयार किए, जिससे भावी मिशनरियों के लिए वे मार्गदर्शक बन सकें या खुद ही वे अग्रणी प्रयास के रूप में पहचाने गए। इससे मलयालम को जो लाभ हुआ वह इसके समृद्ध भाषाई और साहित्यिक मिश्रण और विश्वव्यापी (cosmopolitan) चरित्र में स्पष्ट है।

मलयालम पर ईसाई प्रभाव

मलयालम पर बाइबिल का प्रभाव

हालाँकि मलयालम में बाइबिल का अनुवाद उन्नीसवीं शताब्दी में शुरू हुआ, किंतु सोलहवीं शताब्दी से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तक केरल पहुँचने वाले पुर्तगाली एवं डच मिशनरी स्थानीय भाषा में कैथोलिक चर्च के बाइबिल सारांश, कैटचिस्म (catechism) और सिद्धांत पढ़ा रहे थे। मलयालम में बाइबिल के पहले अनुवादों का इतिहास जो उन्नीसवीं शताब्दी के अधिकांश भाग को कवर करता है, मलयालम गद्य के विकास के इतिहास का एक जैविक और अभिन्न अंग है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के

दौरान, मलयालम में बाइबिल के विविध अनुवादों की व्यवस्थित प्रगति ने समवर्ती रूप से मुख्यधारा के मलयालम गद्य के तीव्र विकास को प्रभावित किया।

भाषा संचार का सबसे आम और प्रभावी माध्यम है। मिशनरी गतिविधियों और धार्मिक प्रचार में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। केरल में उन्नीसवीं शताब्दी के प्रोटेस्टेंट मिशनरियों का उद्देश्य धार्मिक सिद्धांतों को सरल और स्पष्ट गद्य में संप्रेषित करना था। जिस तरह भक्ति आंदोलन ने मलयालम कविता में योगदान दिया उसी तरह ईसाई मिशनरी गतिविधियों ने मलयालम गद्य को उल्लेखनीय योगदान से समृद्ध किया। उन्नीसवीं शताब्दी में भी मलयालम गद्य के विकास और समृद्धि में ईसाई मिशनरी आंदोलनों का अभूतपूर्व योगदान रहा। ईसाई मिशनरियों के नेतृत्व में ही उनकी व्याकरणिक पुस्तकें और शब्दकोश संकलित हुए, उनका मुद्रण हुआ, पाठ्यपुस्तकें तैयार हुईं, पत्रकारिता शुरू हुई तथा धार्मिक और नैतिक ग्रंथों का अनुवाद हुआ। मिशनरियों द्वारा बाइबिल अनुवादों ने कई अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के विकास और सुधार में मदद की।

उन्नीसवीं शताब्दी में केरल पहुँचे प्रोटेस्टेंट मिशनरी पहले चरण के रूप में संपूर्ण बाइबिल का मलयालम भाषा में एक सुबोधात्मक (sensible) अनुवाद करना चाहते थे। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि बाइबिल और धार्मिक ग्रंथ स्थानीय भाषा में होने चाहिए। त्रावणकोर और कोच्चि में तत्कालीन ब्रिटिश रेजिडेंट कर्नल मुनरो के अनुरोध पर क्लॉडियस बुकानन ने 1806 में केरल का दौरा किया और कयामुलम फिलिपोस रामबन के नेतृत्व में केरल के कुछ ईसाई पुजारियों को बाइबिल का मलयालम में अनुवाद करने के लिए प्रेरित किया। बाइबिल का यह पहला अनुवाद 1810 में पूरा हुआ और 1811 में कुरियर प्रेस, बॉम्बे (मुंबई) में मुद्रित हुआ। परंतु यह अनुवाद मिशनरी उद्देश्यों के लिए अपर्याप्त था इसलिए बेंजामिन बेली के नेतृत्व में लंदन में मिशनरी सोसाइटी और उसके बाद डॉ. हर्मन गुंडर्ट के नेतृत्व में बेसल मिशन ने बाइबिल के दो अलग-अलग अनुवादों को एक साथ तैयार करने के लिए एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा की। अंततः बेली ने अंग्रेज़ी के किंग जेम्स संस्करण को मलयालम अनुवाद का स्रोत बनाया। इस विश्वसनीय अनुवाद ने मलयालम गद्य के दिशा निर्धारण में महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा, जिसने मलयालम में अपरिचित लेकिन प्रभावशाली अंग्रेज़ी गद्य शैली का सूत्रपात किया। दोनों संस्करण, यथाक्रम 1821 में बेली और 1829 में गुंडर्ट, गुणवत्ता और संचार दक्षता के मामले में बेहतरीन थे। तब से मलयालम में बाइबिल के लगभग 50 पूर्ण अनुवाद हो चुके हैं।

1811-1857 के दौरान बाइबिल के मिशनरी अनुवाद मलयालम गद्य के व्यवस्थित विकास और उत्कर्ष को सूचीबद्ध करते हैं। 1811 का यह अनुवाद मलयालम गद्य भाषा की संरचनात्मक सटीकता की अपर्याप्तता का गवाह है, लेकिन बेली और गुंडर्ट के अनुवादों की भाषा आधुनिक मलयालम गद्य भाषा की निकटतम है। जहाँ बेली की भाषा त्रावणकोर मलयालम से प्रभावित थी, वहीं गुंडर्ट की भाषा मलाबार बोली से प्रभावित थी। ये दोनों अनुवाद संशोधन के योग्य सामान्य अनुवाद माने गए, बेली की शैली नई बाइबिल पर हावी रही, जिसका शीर्षक *सत्यवेदपुस्तकम* था। बेली और गुंडर्ट के बाइबिल अनुवादों की भाषा की जाँच करने पर मलयालम गद्य भाषा की भाषिक विशिष्टताओं की खूबियों को सूचीबद्ध किया जा सकता है, जो बाइबिल अनुवादों के माध्यम से विकसित हुई है–

1. गुंडर्ट और बेली के मलयालम बाइबिल अनुवादों की शब्दावली, उपयोग और संरचना सिरिएक प्रभाव से मुक्त है।
2. यह भाषा तमिल प्रभाव से मुक्त हो जाती है।
3. संस्कृत शब्दों का कम प्रयोग होता है। इनका प्रयोग वहीं किया जाता है जहाँ ज़रूरत हो।
4. ग्राफिक संरचना, स्वर संरचना, संयोजन नियम आदि के माध्यम से भाषाई स्वच्छंदता अथवा मनमानी कम हो जाती है।
5. जैसे-जैसे मुद्रण (Printing) क्षेत्रीय विविधताओं को कम करने में मदद करता है, और जैसे-जैसे मुद्रित समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और ग्रंथों में प्रयुक्त शब्द आम बोलचाल में आते हैं, एक आम भाषा विकसित होती है।

6. कर्म वाच्य का इस्तेमाल कम होता है।
7. क्षेत्रीय विविधताएँ समाप्त हो जाती हैं और एक सामान्य जीवंत गद्य भाषा विकसित होती है।
8. लेखन में बोलचाल की भाषा की जीवंतता बनी रहती है।
9. जिस प्रकार राजाज्ञा में से मणिप्रवाळम् और चंपू शैली विकसित हुई, उसी प्रकार बाइबिल अनुवाद से आधुनिक मलयालम शैली विकसित हुई।
10. चूँकि बाइबिल की स्रोत भाषा की संरचना छोटे और सरल वाक्य युक्त थी (यहाँ तक कि बाइबिल में जटिल वाक्यों को भी सरल बना दिया गया था), बाइबिल अनुवादों के माध्यम से मलयालम ने सरल शब्द-वाक्य संरचना का उपयोग करना शुरू कर दिया।
11. स्कूल की पाठ्यपुस्तकों में बाइबिल की वाक्य संरचना होती थी। बाद में इस शैली का प्रयोग सरकार द्वारा तैयार की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ मिशनरियों द्वारा तैयार पुस्तकों व पत्रिकाओं में भी किया जाने लगा। सरकारी पाठ्यपुस्तकों की शैली पारंपरिक चंपू गद्य शैली से भिन्न थी।
12. केरल के लिए इतिहास, जीवनियों, आत्मकथाओं, यात्रावृत्तांतों, लेखों आदि की शुरुआत आरंभिक कार्मेलाइट-जेसुइट मिशनरियों ने की। हालाँकि इनमें अधिकांश विदेशी भाषाओं में लिखे जाते थे, लेकिन इस भाषा को सीखने वाले शिक्षित लोगों और पुरोहितों के लिए इन साहित्य से परिचित होना आसान था, अतः उनके माध्यम से दूसरों ने भी इन विधाओं को सीखा और अपनाया, जबकि संस्कृत या तमिल साहित्य में यह प्रवृत्ति नहीं थी। बाद में, अंग्रेज़ी शिक्षा के लागू होने पर ये रूप न सिर्फ़ लोकप्रिय हुए बल्कि मलयालम में भी इन्हें अपनाया गया।

बाइबिल का मलयालम में अनुवाद

मलयालम में बाइबिल का अलग-अलग पुस्तकों के रूप में, जैसे कि *न्यू टेस्टामेंट* (New Testament) और *ओल्ड टेस्टामेंट* (Old Testament) या अलग-अलग और संपूर्ण बाइबिल का अनुवाद, व्यक्तियों और संगठनों द्वारा किया गया या व्यवस्थित किया गया, की सूची निम्नलिखित है, जिसमें 1997 तक के क्रमिक विवरण शामिल हैं–

तालिका 2.18 : बाइबिल का मलयालम अनुवाद

वर्ष	अनुवादक	शीर्षक
1811	Philippose Ramban	Gospels
1817	Cheppatt Priest/Thoma Norton	Gospels
1821	Benjamin Bailey	Matthew
1824	Cheruvathur Kurian	Psalms *Hulalapusthankam*
1829, 1841	Benjamin Bailey	New Testament
1835	Benjamin Bailey	Old Testment
1854	Herman Gundert	New Testament
1857	Herman Gundert	Old Testament
1858	Herman Gundert	New Testament from Greek
1859	Benjamin Mailey	Whole Bible
1863, 1878	Bible Society	*Satyavedapshtakam*

1867	Madras Auxiliary Bible Society	*Vishudhavedam*
1876	Bible Society	New Testament
1877	Bible Society of India	New Testament and Pslams
1880	Madras Bible Society	New Testament
1882	Archdeacon Alumootil Ommen	*Salmonte Subhashithangal*
1896	O.C.D. Manjummel	New Testament
1910	Madras Bible Auxiliary Society	*Aikyavivarthanam*
1914	Madras Bible Auxiliary Society	New Testament
1921	T.O.C.D	*Slomente Suvisheshangal*
1924	Anthoni Puthussery	Letters of St. Paul
1924	Mani Kathanar T.O.C.D	*Panchagrandhi*
1926	O.C.D. Manjummel	Revelations
1927	Anthoni Puthussery	Old Testament
1929	Anthoni Puthussery	New Testament
1930	Living Literature Centre	New Testament *Divyasandesham*
1931	Charles	Psalms
1931	O.C.D Manjummel	Mathew
1935	Mani Kathanar T.O.C.D	NT with Commentary
1940	MathewVadakkel	Whole Bible
1940	O.C.D Manjummel	Gospels
1941	L.M. Thomas	Gospels
1948	MayyantAJohn	Mathew
1951	Malankara Malpan	New Testament
1951	Thakidiyil Yakobu Kashisha	*Malayala Vayabappadi*
1953	C.K. Mattam	*Prthidina Suvishesham*
1954	C.K. Mattam	*Adhunika Malayala* Bible
1960	Federik Moolayil	New Testament
1962	Jacob Naduvathussery	New Testament
1963	Thomas Moothedan	Whole Bible
1970	Mathew Nadakkal	*Puthiyaniyama Samhitha*
1971	Abel C.M.I.	Mathew *Mukthimargam*
1971	George Alexander	Gospels
1975	Mathew Nadakkal	*Pazhayaniyama Samhitha*
1977	Pastoral Orientation Centre	New Testament
1978	Banglore Bible Society	New Testament

1978	Mannanam Ashram	New Testament
1978	T. John	New Testament
1979	C.L.S. Thiruvalla	*Vedapusthakabhashyam*
1979	Don Bosco Publication Centre	*Kuttikalude Bible*
1981	Pastoral Orientation Centre	Whole Bible
1982	Bible Society	Bible Society
1983	C.R.L Society	Malayalam Bible
1983	Osana	Whole Bible
1987	Thomas Kayyalapparampil	New Testament
1994	Kaniyamparampil Kurian	*Vishudha Grantham* from Psitha
1997	Z.M. Moozhoor	Gospels

मलयालम साहित्यिक परंपरा

मौखिक साहित्य विधा

मौखिक साहित्य हमारे पारंपरिक ज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण खजाना है। इसमें लोक गीत, लोक कथाएँ, कहावतें, पहेलियाँ आदि शामिल हैं। इनमें से कुछ आख्यानात्मक और कुछ गैर-आख्यानात्मक हैं। मौखिक साहित्य भी कुछ विशिष्ट संदर्भों से बँधे होते हैं, जो धार्मिक या धर्मनिरपेक्ष भी हो सकते हैं।

कई विद्वानों ने केरल के सांस्कृतिक जीवन में लोक गीतों से जुड़े संदर्भों की पहचान की है। इन सभी संदर्भों को जीवन-चक्र से जुड़े समारोहों में विशिष्ट लोक गीतों द्वारा पहचाना जा सकता है। यहाँ देवताओं के लिए बड़ी संख्या में गीत गाए जाते हैं। इसके आलावा हमारे पास श्रम साध्य नौकरियों में लगे लोगों के संदर्भ में गाए जाने वाले अन्य गीत भी उपलब्ध हैं। गीतों के प्रकार लोगों की कल्पनात्मक समृद्धि और उनकी संस्कृति की विविधता को दर्शाते हैं।

केरल में विभिन्न जाति समूहों से जुड़े कई लोक गीत हैं। जैसे *पुल्लुवप्पाट्टु, पाणप्पाट्टु, पुलयप्पाट्टु, माप्पिलाप्पाट्टु* आदि क्रमशः *पुल्लुवर, पाणर, पुलयन* और *माप्पिलाओं* से संबंधित हैं। आज हम उन खास विशेषताओं को पहचानते हैं जो प्रत्येक समुदाय के गीतों को अलग करती हैं। *तेय्यम, तिरा, पूरक्कलि, कळमपाट्टु, सर्पःक्कळम* आदि कुछ आनुष्ठानिक समारोह हैं। इन समारोहों का आनंद लेने के लिए कई लोक गीत एकत्र किए गए हैं। *ओणक्कळिप्पाट्टु, तुंपितुळ्ळलपाट्टु,* (ओणम त्योहार से संबद्ध), *तिरुवातिरक्कळिप्पाट्टु* (*तिरुवातिरा* त्योहार से संबद्ध), *मार्गम्कळिप्पाट्टु* (ईसाई सांस्कृतिक जीवन से संबद्ध) आदि कुछ ऐसे ही उदाहरण हैं। श्रमजीवी गीत एक और अन्य प्रकार है, जिसकी पहचान विद्वानों द्वारा की गई है। *कृषिप्पाट्टु* (कृषि से संबद्ध), *वंचिप्पाट्टु* (नौका गीत), *अरवुपाट्टु* (शादी में नारियल कूटते समय गाया जाने वाला गीत), *तेक्कुपाट्टु* (खेतों में सिंचाई के वक्त गाया जाने वाला गीत) आदि ऐसे ही उदाहरण हैं।

गाथा गीत (ballads) हर संस्कृति में लोक गीतों की एक महत्त्वपूर्ण श्रेणी है। हमें मलयालम में उत्तर, दक्षिण और मध्य केरल से जुड़े गाथा गीत मिलते हैं। उत्तर केरल के गाथा गीतों में *तच्चोळि ओतेनन* और *उण्णियार्चा* की वीरगाथाएँ हैं। मध्य केरल के गाथा गीतों में *चेडन्नूरात्ति* और दक्षिण केरल के गाथा गीतों में *इरविक्कुट्टिप्पिळ्ळा* की वीरगाथाएँ हैं। ये सब गीत मध्यकालीन केरल के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को दर्शाते हैं।

इसी प्रकार लोक कथा एक अन्य महत्त्वपूर्ण आख्यान रूप है। लोक कथाओं को कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है, जैसे– मिथक, दंत कथाएँ, पशु कथाएँ, किंवदंतियाँ, जादू कथाएँ, हास्य कथाएँ आदि। उत्पत्ति से जुड़े मिथकों में दैवीय तत्त्वों की विशेषता पाई जाती है। *तोट्टम पाट्टु* (*तेय्यम* से जुड़े आनुष्ठानिक गीत) में अधिकांश विशिष्ट देवी-देवताओं की उत्पत्ति का विवरण है। उसी प्रकार कई कथाएँ केरल के विभिन्न समुदायों की उत्पत्ति की व्याख्या करती हैं। कुछ किंवदंतियाँ ऐतिहासिक तथ्यों से संबंधित हैं। उनमें से एक है केरल में ब्राह्मणवादी आधिपत्य की उत्पत्ति और विकास की व्याख्या तथा परशुराम को एक नायक के रूप में वर्णित करने वाली कहानी। इसे *केरलोल्पत्ति* के नाम से जाना जाता है। ऐसी कई कथाएँ लिखित रूप में भी उपलब्ध हैं। इसके अलावा विभिन्न सामाजिक समूहों से उत्पन्न हास्य कथाएँ भी हैं, जिनमें *नंबूतिरि फलितङ्ळ* (नंबूदिरियों की हास्य कथाएँ), और *माप्पिला फलितंङ्ङळ* (मुस्लिमों की हास्य कथाएँ) व्यापक रूप से प्रचलित हैं। संकलन के स्थान के आधार पर भी हास्य कथाओं का वर्गीकरण किया गया है।

पहेलियाँ मुख्यतः बच्चों के बीच प्रचलित हैं। हालाँकि अधिकांश पहेलियाँ मनोरंजक प्रकृति की हैं फिर भी वे पेशे, सामाजिक संरचना, भाषा आदि जैसे हर सांस्कृतिक पहलू को दर्शाती हैं। उदाहरण के लिए, *इक्कोल्लम् वेळ्ळत्तिल पोयाल वरुं कोल्ले वेळ्ळत्तिल पोवू*– स्थानीय रूप से उगाए जाने वाले धान के बीज *तळेन* से संबंधित है। पहेलियाँ पूछने का एक उदाहरण दृष्टव्य है– "वर्ष में एक बार कोई पानी में पड़ता, वह क्या है?" अगर किसी को जवाब मालूम हो तो वह बोलता है, *तळेन*। इस प्रकार इस पहेली से यह जानकारी मिलती है कि यहाँ धान वर्ष में एक बार ही बोया जाता है। जब समाज कृषि से विमुख होता जाता है तो ऐसी पहेलियाँ धीरे-धीरे खत्म हो जाती हैं। इसके स्थान पर नई पहेलियाँ लोक साहित्य में जुड़ जाती हैं। इसी प्रकार क्रिकेट, दूरदर्शन, मोटर गाड़ी, कंप्यूटर आदि के लिए भी पहेलियाँ बुनी गई हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि पहेलियाँ बच्चों की तर्क क्षमता का परीक्षण है क्योंकि पहेलियों के जवाब देने के लिए "सांस्कृतिक ज्ञान" की आवश्यकता होती है।

लोकोक्तियाँ अथवा कहावतें गैर-आख्यानात्मक (non-narrative) मौखिक परंपरा की एक और अन्य श्रेणी है। सामान्यतः लोकोक्तियाँ बुजुर्ग पुरुषों और महिलाओं द्वारा आपस में बोली जाती हैं। लेकिन कभी-कभी बच्चे भी इनका प्रयोग करते हैं। देखा जाए तो, एक पहेली कुछ छुपाती हुई प्रतीत होती है, जबकि एक कहावत संदर्भ को उजागर करती हुई प्रतीत होती है। *काक्क कुळिच्चाल कोक्काकुमो*– यह लोकोक्ति इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि किसी की मूल प्रकृति (प्राकृतिक गुण वंशानुगत होते हैं) को बदलना मुश्किल है। इस लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ इस प्रकार है– "क्या कौआ नहाने से सारस बन सकता है?" समकालीन अध्ययन इस बात पर ज़ोर देता है कि इस प्रकार की कहावतें एक मौजूदा सामाजिक व्यवस्था की विचारधारा को पुनरुत्पादित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और आमूलचूल परिवर्तन का प्रतिरोध करती हैं।

लोक साहित्य में पहले के अध्ययनों में मुख्य रूप से मौखिक साहित्य का संग्रह और संरक्षण शामिल था। केरल की स्थिति भी अलग नहीं है। केरल की लोक कथाओं के तीन चरण हैं। प्रारंभिक चरण की शुरुआत औपनिवेशिक स्वामियों और मिशनरियों से मानी जा सकती है। लोकोक्तियों का पहला संकलन इतालवी मिशनरी पॉलिनोस पातिरि ने *अडगिया मलाबारिःक्क* (1791) और दूसरा संकलन हर्मन गुंडर्ट ने *पऴचोल समाहारम्* (1845) प्रकाशित कराया। लोक कथाओं के दूसरे चरण में देशी विद्वानों का अभूतपूर्व योगदान रहा। उन्होंने अपने पूर्ववर्तियों का अनुसरण किया। उनमें अधिकतर साहित्यिक इतिहासकार थे। वे मौखिक साहित्य को साहित्य का एक पुरातन रूप समझते थे। पी. गोविंद पिल्लई पहले साहित्यिक इतिहासकार हैं, जिन्होंने अपने *मलयाळ भाषाचरित्रम* (मलयालम भाषा का इतिहास) में लोक गीतों की अलग से चर्चा की है। एडगर थर्सटन अपने *कास्ट्स एंड ट्राइब्स ऑफ़ सदर्न इंडिया* और विलियम लोगन ने अपने *मलाबार मैनुअल* में मलयालम मौखिक परंपरा पर थोड़ा-सा ही सही किंतु विस्तृत वर्णन दिया है। एल.ए. आनंदकृष्ण अय्यर ने *कास्ट्स एंड ट्राइब्स ऑफ़ कोचिन* और अच्युत मेनन ने *कोच्चिन मैनुअल* में मौखिक परंपरा का उल्लेख किया। चेङलपेट के तत्कालीन जिलाधीश पेर्सि मक्विन ने एक स्थानीय विद्वान अडियेरि

कुञ्जिरामन की सहायता से कोडुङ्ङल्लूर से दक्षिण कर्नाटक प्रदेशों तक फैले लोक गीतों का संकलन किया। बाद में इसी संकलन को चेलनाटु अच्युतमेनन और एस.के. नायर के संपादन में मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा *बैलेड्स ऑफ़ नॉर्थ मलाबार* (1956) नाम से प्रकाशित किया गया था। कोट्टारत्तिल शंकुण्णि ने केरल की स्थानीय किंवदंतियों एवं दंत कथाओं में काफ़ी रुचि दिखाई और 1909 से 1934 तक 126 दंत कथाएँ संगृहीत कीं। बाद में माम्मन माप्पिला की पत्रिका *भाषापोषिणी* में श्रृंखला (series) में इन कथाओं का प्रकाशन किया गया, जिनका एक संकलित रूप *ऐतिह्यमाला* नाम से बाद में प्रकाशित हुआ। आधुनिक युग में एम.वी. विष्णु नंबूदिरि, चुम्मार चुंडल, ए.के. नांबियार, सी.एम.एस. चंतेरा, भार्गवन पिल्लई, वी.एम. कुट्टी आदि के अथक परिश्रम से मलयालम की मौखिक साहित्य सामग्री का संकलन तेज़ी से चला। राघवन पय्यनाड के इस क्षेत्र में किए गए सैद्धांतिक प्रयास उल्लेखनीय हैं।

शास्त्रीय परंपरा का अवलोकन

मलयालम में शास्त्रीय साहित्य – एक अवलोकन

तमिल, मलयालम, कन्नड़ और तेलुगु द्रविड़ भाषा परिवार के स्वतंत्र सदस्य हैं। पऴमतमिल या पूर्व द्रविड़ वह मातृधारा है, जिससे मलयालम और तमिल का विकास हुआ। संगम काल के दौरान तमिल और मलयालम को मुश्किल से अलग किया जा सका। अंततः भाषा सह्य पर्वत (पश्चिम घाट) के पूर्व में तमिल के रूप में और घाट के पश्चिम में मलयालम के रूप में विकसित हुई। मलयालम तेलुगु और कन्नड़ से भी पुरानी लिपियों में लिखी गई है, लेकिन इसमें अब भी द्रविड़ भाषा की ध्वनियाँ और आकार (स्वनिम और रूपिम) बरकरार हैं।

मलयालम कम-से-कम 2300 वर्षों के अस्तित्व का दावा कर सकती है। मलयालम भाषा और साहित्य के विकास को चार चरणों में विभाजित किया जा सकता है : आद्य-तमिल-मलयालम युग (800 ईस्वी तक), प्राचीन मलयालम युग (801-1300 ईस्वी), मध्यकालीन मलयालम युग (1301-1600 ईस्वी) और आधुनिक मलयालम युग (1601 ईस्वी से लेकर)।

आद्य-तमिल-मलयालम (800 ईस्वी तक) *पतिट्टुपाट्टु, ऐंकरनूरुः, चिलप्पतिकारम, तोलकाप्पियम* के कुछ प्रकरण, मलनाडु युग के बोलचालीय रूप, विदेशी यात्रावृत्तों में प्रयुक्त मलयालम शब्द, प्राचीन केरलीय लिपियाँ, *यात्रकळि* गीत, तोलन श्लोक, *आट्टप्रकारस,* और *क्रमदीपिका* आदि का प्रतिनिधित्व करती है।

पांडुलिपियाँ, पाट्टु लेखन एवं मणिप्रवाळम् आंदोलन तथा आदिम निबंध आदि का आविर्भाव प्राचीन मलयालम युग (801-1300 ईस्वी) में था। इस युग की मुख्य रचनाएँ *रामचरितम, भाषाकौटिलीयम्, कण्णश्शरामायणम्, भाषा भगवतगीता, भारतमाला,* और *रामकथापाट्टु* हैं। चीरामन का *रामकथापाट्टु,* जिसका रचनाकाल 1195-1208 के बीच है, पहली संपूर्ण रचना मानी जाती थी, जो पाट्टु आंदोलन का हिस्सा है। वाल्मीकि रामायण का रूपायन हनुमान द्वारा भरत को बताने की फ्लैशबैक शैली में हुआ है जिसमें राम-रावण युद्ध से लेकर राम के राज्याभिषेक तक का वर्णन है, जो मूल कथावस्तु से थोड़ी अलग है। इसमें एक सुंदर पुरुष रावण सीता के पास जाता है, जिसे शूर्पणखा धमकाती है। रावण सीता को सुरक्षित राम के पास पहुँचाने का वादा करता है। ये सब परिवर्तन के कुछ उदाहरण हैं (कृष्ण चैतन्य, 1971); ट्रडीशनल पोयट्री– ओ.एन.वी. कुरुप इन कंपैरेटिव इंडियन लिटरेचर, पृ. 223) (*केरल साहित्यचरित्रम*, भाग 1; 302-305)। कौटिल्य के *अर्थशास्त्र* का पहला भारतीय भाषाई अनुवाद मलयालम में ही हुआ था। ग्यारहवीं से बारहवीं ईस्वी के बीच का *भाषाकौटिलीयम्* नामक यह अनुवाद केरल के प्रचलित अनुष्ठानों, केरल की संस्कृति और उत्तराधिकार कानूनों आदि का वर्णन करता है। इसमें केरल की संस्कृति की स्पष्ट झलक मिलती है। राम पणिक्कर का *कण्णश्शरामायणम्* (1350-1450 ईस्वी) मलयालम की पहली संपूर्ण *रामायण* है, जिसे उल्लूर एस. परमेश्वर अय्यर ने मलयालम की विशेष कृति मानी है। इस रचना में केरल के नैतिक मूल्य, प्रकृति और जीवन शैली समाहित है। कण्णश्श स्कूल

ऑफ़ राइटिंग (रामचंद्रन, 2008) के नाम से प्रसिद्ध एकल अनूठी शैली इसी कृति की है। शंकराचार्य के *भगवतगीता भाष्यम्* पर आधारित कण्णशश माधवन (1350-1400 ईस्वी) के *भगवतगीता* के 700 श्लोकों का मलयालम में 328 गीतों में अनुवाद किया गया है। यह गीता का पहला दक्षिण भारतीय अनुवाद था। उन्होंने इसे एक अनूठी शैली में लिखा है (चैतन्य, 1971-76)। कण्णशश शंकरन ने *महाभारत* पर आधारित *भारतमाला* लिखी, जो कि मलयालम भाषा के जनक तुंचत्तु एषुत्तच्छन के *महाभारतम किळिप्पाट्टु* की आधारशिला बनी। (पणिक्कर, 1978; 23-24) अय्यिप्पिल्ल आशान की प्रसिद्ध *रामकथापाट्टु* दक्षिण केरल की चौदहवीं शताब्दी की मलयालम बोली में लिखी गई है, जो द्रविड़ गीत संस्कृति और वाल्मीकि *रामायण* का स्वतंत्र रूपांतरण है। इसे संभवतः तिरुवनंतपुरम के श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर के उत्सव के दौरान प्रस्तुत किया जाता था। (पिल्लई)

मध्यकालीन मलयालम युग (1301-1600 ईस्वी) के दौरान प्रसिद्ध लेखकों में चेरुश्शेरि नंबूदिरि, पूनम शंकरन नंबूदिरि (1500-1550 ईस्वी) और मष़मंगल आदि शामिल थे।

मंजरी छंद में रचित चेरुश्शेरि नंबूदिरि का महाकाव्य *कृष्णगाथा*, तत्कालीन मलाबार की बोलचाल की भाषा में रचा गया है। महिलाओं में लोकप्रिय कृष्ण कहानी का यह वर्णन केरल की सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि में कृष्ण को एक नया आयाम देता है। (कृष्ण चैतन्य, 1971) पूनम शंकरन नंबूदिरि का *रामायणम् चंपू* वाल्मीकि *रामायण* का रूपांतरण है, जो समकालीन केरल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में 20 अध्यायों में रचा गया है। मष़मंगलत्तिल्लम शंकरन नंबूदिरि की *कालदीपिका व्याख्या* (715 ईस्वी से पहले) और *मुहूर्तपद व्याख्या* (729 ईस्वी से पहले) भी उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। ऐसा माना जाता है कि उनके बेटे ने *नैषधम् चंपू*, *मष़मंगलभाणम्* और *स्मार्त प्रायश्चित्तविमर्शिनि* लिखी थी। उल्लूर ने तो *राजरत्नावलियम* को भी उन्हीं की रचना माना है, लेकिन अन्य इतिहासकार इसे पूनम की रचना मानते हैं। फूलों की पंखुड़ियों के रूप में मलयालम वर्णमाला के इक्कावन अक्षरों के साथ ब्रह्मांड की अधिष्ठात्री देवी को प्रणाम करने वाले उनके चंपू ने उण्णायि वारियर को *आट्टक्कथा* लिखने के लिए प्रेरित किया।

मणिप्रवाळम् काल को दो भागों में बाँटा जा सकता है– पूर्व मणिप्रवाळम् और उत्तर मणिप्रवाळम्। मणिप्रवाळम् से पहले के युग को *आट्टप्रकारम* (अभिनय का आख्यान) और *क्रमदीपिका* (मंच अनुष्ठानों का आख्यान) कहा जाता था, जो कूत्तु और कूटियाट्टम के लिए लिखा जाता था। ये 800 ईस्वी पहले के माने जाते थे। *मंत्रांङ्म* को सबसे पुराना आट्टप्रकारम माना जाता है। लोकप्रिय आट्टप्रकारम में *मत्तविलासम, भगवदज्जुगम* और *आश्चर्यचूड़ामणि* हैं। इस युग की मुख्य कृतियाँ दामोदरगुप्त की वेश्यावृत्ति को लेकर लिखी गई *कुत्तानिमतम, वैशिखतंत्रम* (प्रारंभिक तेरहवीं शताब्दी) (चैतन्य, 1971), प्राचीन चंपू *उण्णियाटिचरितम* (1250-1300 ईस्वी); *उण्णिच्चिरुदेवीचरितम* (1300 ईस्वी); संदेशकाव्य *उण्णिनीलीसंदेशम* (1350-70 ईस्वी); *कोकसंदेशम* (1375 ईस्वी); छोटे काव्यों में देवदासी जीवन का वर्णन करने वाली रचना *पद्यरत्नम* (1300 ईस्वी) है। भक्ति आंदोलन के स्तवम जैसे– *वासुदेवस्तवम* (1300 ईस्वी), *अवतारण दशकम* (1350 ईस्वी), *अनंतपुरवर्णनम* (1350 ईस्वी) जिसमें कांतल्लूर के एक शैक्षिक केंद्र के अलावा तिरुवनंतपुरम के जीवन, वाणिज्य, जनसंख्या विभाजन आदि का वर्णन है, और *चंद्रोल्सवम* आदि प्रमुख हैं। उत्तर मणिप्रवाळम् युग में पंद्रहवीं शताब्दी तक चंपू और आट्टप्रकारम की रचनाएँ जारी रहीं, जो तथ्यों पर नहीं बल्कि दंतकथाओं पर आधारित थीं। *भाषारामायणम चंपू, भाषानैषधम् चंपू, कामदहनम चंपू, कोडियविरहम चंपू* तत्कालीन उल्लेखनीय रचनाएँ थीं। उस वक्त मंदिर के देवताओं पर चंपू लिखे जाते थे, जैसे– *तेनकैलनाथोदयम, चेल्लूरनाथोदयम* आदि। मणिप्रवाळम् में कई आट्टक्कथाएँ (कथकली की विषयवस्तु) हैं किंतु कोट्टारक्कर तंपुरान की आट्टक्कथा मलयालम की सबसे पहली आट्टक्कथा मानी जाती है। (वारियर, 1985)

आधुनिक मलयालम युग (1601 ईस्वी से)

तुंचत्तु रामानुजन एषुत्तच्छन और पूंतानम नंबूदिरि मलयालम साहित्य के भक्ति काल का प्रतिनिधित्व करते हैं। तुंचत्तु एषुत्तच्छन ने सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में *अध्यात्म रामायणम किळिप्पाट्टु* लिखी, यद्यपि *कंब रामायणम* और *कण्णश रामायणम* तब तक

लोकप्रिय हो चुकी थीं। उन्होंने कई संस्कृत रचनाओं का मलयालम में अनुवाद किया। उनकी अन्य रचनाएँ *महाभारतम किळिप्पाट्टु* और *हरिनामकीर्तनम* हैं। कर्कटक महीने (जुलाई-अगस्त) में केरल के अधिकांश हिंदू घरों में प्रत्येक दिन उनका *अध्यात्म रामायणम किळिप्पाट्टु* पढ़ा जाता है, और मंदिरों में सुबह-सुबह *हरिनामकीर्तनम* भजन होता है। एषुत्तच्छन के समकालीन पूंतानम नंबूदिरि ने सबसे प्रसिद्ध भक्ति काव्य *ज्ञानप्पाना* और *संतानगोपालम* की रचना की। उन्हें मलयालम साहित्य में पाना परंपरा का प्रवर्तक माना जाता है। पानक्कळि भगवती मंदिरों में किया जाने वाला अनुष्ठान है और पाना इसके लिए लिखे गए गीत का छंद है। *संतानगोपालम* का मूल नाम *कुमारहरणम पाना* था, जो भागवत के दसवें अध्याय पर आधारित है। *भाषा कर्णमित्रम* भी पूंतानम की ही रचना मानी जाती है, *ज्ञानप्पाना* जटिल आध्यात्मिक चिंतन को सरल भाषा में वर्णित करने वाली उनकी प्रसिद्ध रचना है।

1350-1390 ईस्वी में लिखित *लीलातिलकम् को*, जो व्याकरणिक संरचना, मणिप्रवाळ रचनाओं की साहित्यिक विशेषताओं, पाट्टु आंदोलन आदि का विस्तार से वर्णन करती है, मलयालम साहित्य में मील का पत्थर माना जाता है। इसके अनाम रचयिता संस्कृत, तमिल और अन्य स्थानीय भाषाओं के प्रकांड विद्वान थे। इसके अलावा उन्हें तेलुगु, कन्नड़ और कोडगु की भी जानकारी थी।

आट्टक्कथा आंदोलन की शुरुआत कोट्टारक्कर तंपुरान द्वारा आठ दिवसीय *रामनाट्टम* की पटकथा लिखने के साथ हुई। बाद में, कोट्टायम तंपुरान (1700-1800 ईस्वी) ने इसे संशोधित कर वैज्ञानिक ढंग से संकलित किया। उन्होंने नाट्य तत्त्वों, जैसे– *आंगिक, वाचिक, आहार्य* और *सात्विकाभिनय* को शामिल किया, जिससे एक नए निर्देशकीय संप्रदाय (school) का जन्म हुआ। *बकवधम, कल्याणसौगंधिकम, किर्मीरवधम, कालकेयवधम* आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। उण्णायि वारियर के *नळचरितम* को व्यापक रूप से सर्वश्रेष्ठ *आट्टक्कथा* माना जाता है, जिसमें संगीत, साहित्य, अभिनय, श्रृंगार, वेशभूषा, तालवाद्य आदि का बेहतर संतुलन है, जो इसे पढ़ने या अभिनय के लिए आदर्श बनाता। अश्वती तिरुनाल ने *पूतनामोक्षम, रुक्मिणी स्वयंवरम, अंबरीषचरितम*, और *पौंड्रकवधम* लिखा। कप्लिंङाडत्तु नारायणन नंबूदिरि और कार्तिक तिरुनाल रामवर्मा (1725-1798 ईस्वी) ने कथकली में सुधार किया और कप्लिंङाड शैली की शुरुआत की। कार्तिक तिरुनाल ने *राजसूयम*, *नरकासुरवधम* का पहला भाग, *कल्याणसौगंधिकम, पांचालीस्वयंवरम* और *सुभद्राहरणम* लिखे। उनकी कृतियों को *वटक्कन* (उत्तरी) से अलग करने हेतु उन्हें *तेक्कन* (दक्षिणी) शैली नाम दिया गया है। कोट्टारक्कर तंपुरान ने *रामायण* आधारित विषय चुने तो वहीं कोट्टायम तंपुरान ने *महाभारत* आधारित विषय चुने। दूसरी ओर, अश्वती तिरुनाल की एक दर्जन से अधिक संस्कृत और मलयालम रचनाएँ भागवतम के वैष्णव उपाख्यान पर आधारित हैं।

कलकत्तु कुंञजन नांबियार (1705-1770) ने अठारहवीं शताब्दी में मलयालम साहित्य को और समृद्ध किया। वे अंबलप्पुष़ा में कला के केंद्र मथुर कलारी में शामिल हो गए और *श्रीकृष्णचरितम, मणिप्रवाळम्, पंचतंत्रम किळिप्पाट्टु, भगवतदूत पतिनालुवट्टम* और *शिवपुराणम सूतवाक्यम* की रचना की। इस क्रम में व्यंग्यपूर्ण *तुल्ललकथा* (ओट्टन तुल्लल का अभिनय करते समय सुनाई गई कहानी) उनकी अनुपम देन है। माना जाता है कि मणिप्रवाळम् शैली में उन्होंने छत्तीस *तुल्लल कथाएँ* भी तैयार की थीं। इनमें ओट्टन तुल्लल के लिए 20 और शीतंकन तुल्लल तथा परःयन तुल्लल प्रत्येक के लिए आठ-आठ कथाएँ शामिल हैं। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति *भदजनङ्ङडे नटुविलुळ्ळोरु पडयणिक्किह चेरुवान/वटिवियेन्नोरु चारुकेरल भाषतन्ने चितम वरु* प्रमाणित करती है कि कुंञजन नांबियार ने मणिप्रवाळम् को केरल की ही भाषा घोषित किया है।

उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत तक केरल में एक नए प्रकार के साहित्य ने जड़ें जमा लीं। यह औपनिवेशिक शासन द्वारा लाए गए आधुनिकीकरण से प्रभावित था। ओ चंतु मेनन के उपन्यास *इंदुलेखा* (1889) के प्रकाशन के साथ केरल में उपन्यासों का सिलसिला हुआ। उनका दूसरा उपन्यास *शारदा* समकालीन समाज का आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। सी.वी. रामन पिल्लई ने तीन उपन्यास *मार्तंडवर्मा, धर्मराजा* (1912) और *रामराज बहादुर* (1920) लिखे।

तीन महान कवियों कुमारन आशान (1873-1924), उल्लूर एस. परमेश्वर अय्यर (1877-1949) और वल्लत्तोल नारायण मेनन (1878-1958) की काव्य कृतियों ने बीसवीं शताब्दी की मलयालम के पूर्वार्ध को चिह्नित किया। श्रीनारायण गुरु के शिष्य कुमारन आशान ने *वीणपूव, नळिनी, लीला, चंडालभिक्षुकी, ग्राम वृक्षत्तिले कुयिल, चिंताविष्टयाय सीता, दुरवस्था* और *करुणा* रचनाएँ लिखीं। रामायण पर आधारित *बालरामायण* भी इन्हीं की एक रचना है। इन्होंने एडविन आर्नोल्ड की *लाइट ऑफ़ एशिया* का मलयालम में *बुद्धचरितम* नाम से अनुवाद किया है। उल्लूर ने एक महाकाव्य *उमाकेरलम* और तेरह खंडकाव्य लिखे। *कर्णभूषणम, पिंगला, चित्रशाला, भक्तिदीपिका, मङ्त्तुळ्ळि, बालांगुरम, तुंबप्पूवु, रामशास्त्री, प्रेमसंगीतम* आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इन्हें *तरंगिणि, मणिमंजूषा, रत्नमाला, अमृतधारा* और *कल्पसखी* जैसे शीर्षकों में संकलित किया गया था। वल्लत्तोल ने कई रोमांटिक कविताओं और श्लोकों की रचना की है। उन्होंने संस्कृत रचनाओं, जैसे– *ऋग्वेद, पद्मपुराण*, भास एवं महाकवि कालिदास की रचनाओं, वाल्मीकि की *रामायण*, हलन की प्राकृत भाषा की रचना *गाथासप्तशती* का मलयालम में अनुवाद किया। उन्होंने *साहित्य मंजरी, चित्रयोगम महाकाव्यम, गणपति, बधिर विलापम, बंधनस्थनाय अनिरुद्धन, शिष्यनुम मकनुम, मग्दलन मरियम, कोच्चु सीता, अच्चनुम मकळुम* आदि जैसे खंडकाव्य लिखे हैं। उन्होंने केरल के कला रूपों को प्रोत्साहित करने के लिए केरल कलामंडलम की स्थापना भी की।

मलयालम नाटक का विकास

केरल की प्रदर्शन कलाओं की वंशावली (ancestry) शास्त्रीय और लोक कला का एक समृद्ध भंडार दर्शाती है। इनमें से अधिकांश की उत्पत्ति आनुष्ठानिक (ritualistic) है। भूगोल और जाति जैसे कारकों के आधार पर केरल समाज को कई छोटे समूहों में विभाजित किया गया था और इससे प्रत्येक समुदाय के लिए अलग-अलग जीवन शैलियों और अनुष्ठानों का निर्माण हुआ। लोगों ने देवी-देवताओं, पौराणिक विभूतियों और पूर्वजों को मूर्त रूप देना शुरू कर दिया। उन्होंने उनके *कोलम* (Kolams) बनाए और उन कोलम के साथ नृत्य करके उन्हें खुश करने की कोशिश की। भौगोलिक और जातिगत अंतर इन *कोलम* को विशिष्ट बनाते हैं । इसके अतिरिक्त अन्य प्रदर्शन कला रूपों, जैसे– *तेयम, तिरा, पडेनी, कन्यारकली, कालीयूट्टु, विल्पाट्टु* आदि ने भी इस परंपरा को और अधिक समृद्ध बनाया है।

इनमें से अधिकांश कला रूप ''*काली-दारिका* मिथक'' को अपने कथानकों के स्रोत के रूप में अपनाते हैं। *काक्कारिशि नाटकम, पोराट्टु नाटकम, वेल्लरी नाटकम, चिम्मानक्कली, वल्ली नाटकम* आदि जैसी लोक नाटक विधाओं को भी प्रदर्शन कला के रूप में विकसित किया गया। आगे चलकर *चविट्टुनाटकम* और *रातेबु* जैसे गैर-हिंदू नाटक रूप भी केरल की प्रदर्शन कला की समृद्ध विरासत का हिस्सा बन गए। यदि *रातेबु* एक आनुष्ठानिक कला रूप है, तो *चविट्टुनाटकम* की उत्पत्ति आधुनिक यूरोपीय ओपेरा से हुई है। केरल की प्रदर्शन कलाओं के आद्य रूप (प्रोटोटाइप) *भरतक्कली* को गैर-मौखिक रंगमंच माना जाता है, जो अभी भी अस्तित्व में है। यह सुझाव दिया गया है कि *मुडियेट्टु, कालियूट्टु* आदि जैसे आनुष्ठानिक कला रूपों ने कथकली जैसे शास्त्रीय कला रूपों के विकास को प्रभावित किया है। भले ही संस्कृत में मंचन की परंपरा भारत के अन्य हिस्सों में पुरानी हो गई है, केरल ने नौवीं शताब्दी में विकसित *कूडियाट्टम* के माध्यम से अभी भी इस परंपरा को जीवित रखा है।

आधुनिक साहित्यिक और सांस्कृतिक विमर्श (discourses) उपनिवेशवाद और यूरोपीय आधुनिकतावाद के प्रभाव से उत्पन्न हुआ। नाटकों और उनके दृश्य रूपों की पृष्ठभूमि एकसमान होती है। इसकी शुरुआत विभिन्न भारतीय भाषाओं में संस्कृत और पश्चिमी नाटकों के अनुवाद से हुई। ऐसा माना जाता है कि 1882 में केरलवर्मा वलियकोयि तंपुरान द्वारा अनूदित *अभिज्ञान शाकुंतलम* ऐसे अनुवादों में पहला था। कालिदास की *शकुंतला* के कई अन्य अनुवाद भी उसी समय के आसपास किए गए थे। लेकिन केरलवर्मा की इस रचना को तिरुवत्तार नारायण पिल्लई की ''मनोमोहनम नाटक कंपनी'' ने अपने शुरुआती मंचन के लिए

चुना था। यह मंचन तमिल संगीत नाटकों से प्रभावित था। दूसरी ओर, तमिल संगीत नाटकों को फ़ारसी व्यापारियों की नाटकीय तकनीकों के अनुसार संरचित किया गया था। इस प्रकार, यह यूरोपीय शैली थी जो गुजरात और बॉम्बे (अब मुंबई) के व्यापारियों के माध्यम से प्रसारित हुई, जो तमिल संगीत नाटकों की मध्यस्थता के माध्यम से केरल पहुँची। इसमें स्क्रिप्ट को ऐतिहासिक होने की कोई आवश्यकता नहीं थी। गायन और अभिनय के लिए अभिनेताओं की प्रतिभा ही मायने रखती थी। "बालापार्ट" और "राजापार्ट" आदि जैसी स्टॉक भूमिकाएँ और कभी-कभार "चविट्टु हार्मोनिस्ट" ऐसे नाटकों के अभिन्न अंग बनते थे। तमिलनाडु की कल्याण रामय्यार सेट, रामाडू सेट, सामी अय्यर सेट, बब्बलन सेट आदि नाटक मंडलियों ने त्रावणकोर और कोच्चि में *कोवलन चरितम, नल्ला तंगल, गुलेबक्कावलि, पारसी ललितांगी, अल्ली अर्जुनन* जैसे नाटकों का प्रदर्शन किया। केरल में भी संगीत नाटक विकसित हुए, कोच्चप्पन तरकन का *मरियम्मा नाटकम* (1892), एरुवायिल चक्रपाणि वारियर का *हरिचंद्र चरितम* (1893), के.सी. केशवपिल्लई का *सादरमा* (1903), कुट्टुमत्तु का *देवयानिचरितम* (1912), विद्वान पी. केलु नायर का *पाक्कनार चरितम* आदि इसी विधा के नाटक हैं। संगीत नाटकों की पहले से ही विकसित हो रही विधा की संगीतमयता को संस्कृतिबद्ध करने और उन्हें शास्त्रीय संगीत के करीब लाने के लिए टी.सी. अच्युत मेनन ने 1892 में *संगीत नैषधम* लिखा।

फार्स (*प्रहसनम*) विधा की उत्पत्ति मलयालम में केरल के अंग्रेज़ी-शिक्षित युवाओं के शौकिया प्रदर्शन के रूप में हुई थी। इसका एकमात्र उद्देश्य दर्शकों को हँसाने के लिए कॉमेडी बनाना था। उनकी प्रमुख विशेषताएँ संगीत नाटक से अलग प्रस्तुति की विशिष्ट शैलियाँ थीं, और गद्य संवादों को महत्त्व मिला था। सी.वी. रामन पिल्लई, ई.वी. कृष्ण पिल्लई, एन.पी. चेलप्पन नए, टी.एन. गोपीनाथन नायर आदि प्रहसन के शुरुआती लेखक थे। सी.वी. रामन पिल्लई ने 1884 में *चंद्रमुखी विलासम* लिखते समय श्लोकों (पद्य) की रचना की। 1909 तक, जब वे *कुरुःप्पिल्ला कलरी* लिख रहे थे, उन्होंने गद्य नाटक विधा की शुरुआत कर दी थी। पुस्तकालयों के वार्षिक समारोहों और पारिवारिक समारोहों के दौरान प्रहसन का प्रदर्शन किया जाता था। इन प्रहसनों का नाट्यशास्त्र में वर्णित प्रहसन (*प्रहसनम*) से कोई संबंध नहीं है। भले ही तिरुवत्तर नारायण पिल्लई की "मनोमोहनम", सी.पी. अच्युत मेनन की "विनोद चिंतामणि", चात्तुकुट्टी मन्नाडियार की "रसिकरंजिनी", पी.एस. वरयार की "परमशिवविलासम नटनसभा" आदि सभी आंशिक रूप से व्यावसायिक नाटक मंडलियाँ थीं, फिर भी पहली पूर्ण व्यावसायिक शौकिया नाटक मंडली कैनिक्करा कुमार पिल्लई की "कौमारकुशलसंघम" मानी जाती है।

इस समय के आसपास केरल के नाटक इतिहास में जो बड़ा परिवर्तन हुआ वह था अनुष्ठान (ritual) से मनोरंजन क्षेत्र की तरफ़ बदलाव। इसके साथ ही इनके कथानक भी बदल गए क्योंकि किंवदंतियों के स्थान पर समकालीन सामाजिक स्थितियों को भी स्थान मिलना शुरू हो गया। संगीत नाटकों की मुख्यधारा शैली में भी बदलाव देखा गया। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण *करुणा* (1933) है, जो स्वामी ब्रह्मवृत्तन के नेतृत्व में प्रस्तुत किया गया। इस नाटक में राजा की पारंपरिक भूमिकाओं और चमचमाते वस्त्रों को त्यागने वाले एक बौद्ध भिक्षु को नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसने जाति आधारित भेदभाव के ख़िलाफ़ जागरूकता फैलाने का कार्य किया। दर्शकों ने भी इसे बड़ी गर्मजोशी से स्वीकार किया। कुमारन आशान की कविता करुणा ने पहले ही लोगों के मन में अपना स्थान बना लिया था, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इसने भी नाटक की सफलता में एक उत्प्रेरक का कार्य किया होगा। संगीत नाटकों का स्थान मेलोड्रामा ने ले लिया। भावनाओं के अतिरंजित निरूपण से उत्पन्न नाटकीयता मेलोड्रामा के केंद्र में थी। ऐतिहासिक पात्र, अति-अभिनय और अत्यधिक भावनाएँ आदि इस विधा की प्रमुख विशेषताएँ थीं। कैनिक्करा पद्मनाभ पिल्लई का *काल्वरियिले कल्पपादपम* (1936) इस विधा का एक प्रसिद्ध नाटक था।

इसके बाद समाज सुधार के प्रयासों का युग आया। सुधारों को ध्यान में रखते हुए नाटकों की रचना की गई। वी.टी. भट्टतिरिप्पाड की *अडुक्कलयलिनिन्नुम अरंङत्तेक्कु* (1929), एम.आर.बी. की *मरःक्कुडक्कुलिले महानःरकम* (1931) और प्रेमजी की *ऋतुमति*

(1939) आदि इसी युग की रचनाएँ हैं। के. दामोदरन की *पाट्टबाक्कि* (1938) ने नाटक की एक नई राजनीतिक शैली को जन्म दिया। उल्लेखनीय है कि जिन नाटकों में सामंतवाद और आम आदमी के शोषण का चित्रण किया गया था उनका मंचन *कर्षकसंघम* (किसानों के समूह) की एक सभा में किया गया था। नाटक एक मनोरंजक माध्यम से बढ़कर लोगों के दैनिक जीवन को छूकर प्रचार-प्रसार करने वाले माध्यम में बदल रहा था। जब राष्ट्रीय स्तर पर इप्टा (इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन) का गठन किया गया उस समय केरल में इसके सहायक के रूप में के.पी.ए.सी. (केरल पीपुल्स आर्ट्स क्लब) की स्थापना भी हुई और तोप्पिल भासी के *निंङलेन्ने कम्यूनिस्टाक्कि* (1952) जैसे नाटकों का प्रदर्शन किया गया, जिन्हें दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया। इसी प्रकार, "मलाबार केंद्रकला समिति" ने उत्तर केरल में चेरुकाडु के.पी. गोविंद पिशारटि के *नःम्मलोन्नुः* (1969) नाटक की प्रस्तुति की। और देवकी निलयमकोड के नेतृत्व में ब्राह्मण महिलाओं के एक समूह द्वारा *तोझ़िल केंद्रत्तिलेक्कु* (श्रम शिविर की ओर) की प्रस्तुति उल्लेखनीय थी।

एन. कृष्णपिल्लई का *भग्नभवनम* (1942) मलयालम नाटक के इतिहास की दिशा में एक नए बदलाव को दर्शाता है। उन्होंने हेनरिक इबसेन के नाटकीय मॉडल को अपनाकर बेहतरीन समस्या नाटकों (problem plays) का निर्माण किया। कृष्णपिल्लई का मानना था कि किसी भी सामाजिक समस्या का इलाज एक नाटक के माध्यम से किया जा सकता है, बस नाटक को सफल होने के लिए संरचनात्मक रूप से व्यवस्थित होना चाहिए। वे अपने लेखन में न सिर्फ़ अनुशासन लाने में सक्षम थे बल्कि एक सुसंगत नाटक बनाने के लिए अपने पात्रों के हावभाव और संवादों को भी सावधानीपूर्वक लिखा था। बाद के अन्य नाटकों ने किसी-न-किसी तरह इसी शैली का अनुसरण किया। प्रोसेनियम का उपयोग, सामाजिक मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमने वाले कथानक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि को मलयालम नाटक में शामिल किया गया था।

पुलिमाना परमेश्वरन पिल्लई के *समतावादी* (1944) नाटक ने समकालीन नाटकों से एक कदम आगे निकलकर भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाले मॉडल का अनुसरण किया। सी.जे. थॉमस ने अनुवाद के माध्यम से मलयालम में दुनिया के विभिन्न नाटकीय मॉडल अपनाए और *उयरुन्नः यवनिका* (1950) की रचना की। उनका नाट्यशास्त्र पर यह पहला बृहत् मलयालम काम विशेष उल्लेखनीय है। *अवन वीण्डुम वरुन्नुः, आ मनुष्यन नीः तन्ने* और *1128 -इल् क्राइम 27* नाटक विभिन्न शैलियों में लिखे गए थे और नाटकीय अनुभवों से परिपूर्ण थे। *आ मनुष्यन नीः तन्ने* का शास्त्रीय स्पर्श और *1128 -इल् क्राइम 27* का महाकाव्यात्मक चरित्र अभी भी मलयालम नाटक में सराहनीय प्रयोग बने हुए हैं।

एम. गोविंदन का *नीः मनुष्यरे कोल्लरुतु* (1947) युद्ध-विरोधी नाटकों में से एक है। इसी श्रेणी में इडश्शेरी का *कुट्टुकृषि* (1950) और वैक्कम मुहम्मद बशीर का *कथाबीजम* (1945) भी विशेष उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त के.टी. मुहम्मद, तिक्कोडियान, एन.एन. पिल्लई, पी.जे. एंटनी, पी.एम. एंटनी, ओमचेरी, वासु प्रदीप, सी.पी. राजशेखरन, सुरसु इब्राहिम वेंङरा, पी.आर. चंद्रानंद, पी.के. वेणुकुट्टन नायर आदि ने भी सामाजिक-राजनीतिक ज़रूरतों को कथ्य बनाकर नाटक लिखे। इस तरह के नाटकों में गीत और नृत्य प्रदर्शन शामिल होते थे, ये नाटक आनंदोत्सव अथवा कार्निवल प्रकृति के होते थे। सी.एल जोस, कडवूर चंद्रन पिल्लई, एस.एल. पुरम सदानंदन, कनियापुरम रामचंद्रन, पिरिप्पनकोड मुरली, करिवेल्लूर मुरली, एडवोकेट मणिलाल, पी.आर. नाथन, बेन्नी पी. नायरम्बलम, अजित अंजल और एडवोकेट वेंकुलम गोपालकृष्णन जैसे व्यावसायिक नाटककारों ने भी कार्निवल (carnival) प्रकृति को बचाए रखते हुए इसी प्रकार के नाटक लिखे।

1967 में शास्तामकोट्ट में आयोजित *नाटकक्कळरी* (नाटक कार्यशाला) के दौरान आधुनिक मलयालम नाटक को पुनर्जीवित करने के उपाय किए गए थे। इसका उद्देश्य "स्वदेशी रंगमंच" (*तनतुनाटकवेदी*) बनाना था। इसी तरह के प्रयास भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों में भी किए जा रहे थे। एम. गोविंदन, सी.एन. श्रीकंठन नायर, जी. शंकरपिल्लई, कावालम नारायण पणिक्कर, जी. अरविंदन और अय्यप्प पणिक्कर जैसी प्रमुख हस्तियों ने एक अद्वितीय मंच की तलाश में बड़ा काम किया। इसका उद्देश्य

एक ऐसे मंच की खोज करना था जो न सिर्फ़ उपनिवेश विरोधी हो बल्कि पूरी तरह से स्वदेशी भी हो। परिणामस्वरूप सी.एन. श्रीकंठन नायर का *कली* (क्रोध), कावालम का *साक्षी* (गवाह) और जी. शंकरपिल्लई का *किरातम* (क्रूर) आदि नाटकों के मंचन किए गए। उन्होंने केरल के नाटकीय इतिहास की विशाल वंशावली को आधुनिक मलयालम नाटक में आत्मसात करने का प्रयास किया। साथ ही उन्होंने *तौर्यत्रिकम– आट्टम, पाट्टु, कोट्टु* (नृत्य, गीत, बाजा) पर आधारित लोक नाटकों को भी मंच पर लाने का प्रयास किया। जी. शंकरपिल्लई का *करुःत्त देवतयेत्तेडी* (इन सर्च ऑफ़ द ब्लैक गॉड), कावलम का *अवनवन कडंबा* (अपनी बाधा) आदि ऐसे प्रयासों के ही परिणाम हैं। कावालम की रचनाएँ अभी भी मिट्टी और उसके लोगों के प्रति आत्मीयता को दर्शाती हैं। इसी प्रकार जी. शंकरपिल्लई की कृतियों ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों से नाटक के विभिन्न मॉडल पेश किए। अतः नाट्य विद्यालय की स्थापना कर विश्वविद्यालय प्रणाली के माध्यम से सैद्धांतिक और व्यवस्थित पक्ष को नियंत्रित रखते हुए नाटकीय शैली का प्रसार करने में उनका योगदान अमूल्य है। उनका जीवन नाटक के क्षेत्रीय विद्यार्थियों और उनके विदेशी समकक्षों के बीच अंतर-सांस्कृतिक संबंध सुनिश्चित करने के लिए समर्पित रहा।

स्पष्टतः बीसवीं शताब्दी के मलयालम नाटक काफ़ी समृद्ध थे, उस समय के नाटककारों में असीज (*चावेरप्पडा*), आर. नरेंद्रप्रसाद (*वेल्लियाऴ्चा*), वायला वासुदेवन पिल्लई (*कुचेलगाथा*), ओमचेरी (*तेवरुडे आना*), के.जे. बेबी (*नाट्टुगद्दिका*), पी.एम. ताज (*कुडुक्का*), टी.एम. अब्राहिम (*अत्भुतांगनम*), जॉय मैथ्यू (*संकडल*), पी. बालचंद्रन (*पावम उस्मान*), पी.एम. एंटनी (*क्रिस्टुविन्टे आराःम तिरुमुरिवु*), मधु मास्टर (*स्पार्टाकस*), एन. प्रभाकरन (*पुलिजन्मम*), एन. शशिधरन और ई.पी. राजगोपालन (*केलु*), जयप्रकाश कुलूर (*अप्पुण्णिकलुडे रेडियो*), सूर्य कृष्ण मूर्ति (*पुलरी*), श्री जनार्दनन (*पूर्णकुंभम*) और के.एस. श्रीनाथ आदि प्रमुख थे।

के. रामकृष्णपिल्लई के *तप्तबाष्पम* (1937) के साथ शुरू हुआ एकांकी नाटक (*एकांगनाटकम*) परिपक्व होकर बीसवीं शताब्दी के अंत तक एक प्रमुख शैली के रूप में विकसित हो चुका था। प्रमुख नाटककारों में से अधिकांश ने एकांकी नाटक भी लिखे हैं। इन नाटकों के मंचन का समय धीरे-धीरे कम होता गया और समय बीतने के साथ संरचनात्मक सामंजस्य बढ़ता गया। 1980 के दशक के दौरान एकांकी नाटक अपने विकास के चरम पर पहुँच गए। इसका कारण ग्रामीण पुस्तकालयों और युवा उत्सवों में शौकिया रंगमंच की प्रतियोगिताओं की बढ़ती संख्या थी। स्कूल ऑफ़ ड्रामा के नेतृत्व में गठित कालीकट यूनिवर्सिटी लिटिल थिएटर (सीयूएलटी), कूत्तम्बलम, रूट, नाटक योगम, नाट्यगृहम, रंगप्रभात (चिल्ड्रंस थिएटर), रंगचेतन, प्रकाश कलाकेंद्रम, युवा कलावेदी और लोकधर्मी जैसे शौकिया नाटक मंडलियों ने राज्य भर में एकांकी नाटक मंचित किए। सांस्कारिकावेदी, मंजुमलईमक्कल, केरल शास्त्र साहित्य परिषद, मानुषी, देसी (कैंपस थिएटर, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय), बिंचिमारा (कैंपस थिएटर, कालीकट विश्वविद्यालय) आदि भी एकांकी नाटक और नुक्कड़ प्रदर्शन को प्रोत्साहित करते रहे।

नाटक को दलित, पर्यावरण और नारीवादी मुद्दों को प्रस्तुत करने का एक अच्छा मंच माना जाने लगा। इस युग के नाटकों में सौंदर्यपरक और सहज ज्ञान युक्त तत्त्वों को अधिक महत्त्व दिया गया। निर्देशक की भूमिका ने नाटक की पटकथा को प्रभावित किया। समकालीन मुद्दों पर तुरंत नाटक रचे जाते थे इसलिए उपन्यासों और कहानियों से रूपांतरण तथा समसामयिक मुद्दों पर सुधार सामान्य हो गए थे। इस क्षेत्र में सतीश के. सतीश, श्रीजा आरङोट्टुकरा, ए. संतोषकुमार, जॉय पॉल, रफीक मंगलश्शेरी, चाको चावक्काड़, प्रदीप मण्णूर जैसे नाटककार बहुत सक्रिय रहे हैं। सजिता, ई. राजराजेश्वरी जैसी महिला नाटककार और रघूत्तमन, कलाधरन, नरिप्पट्ट राजू, सुवीरन, शैलजा, सुधी, श्रीलता, रत्नाकरन, पी.जे. उण्णिकृष्णन, पी.आर. रतीश, दीपन शिवरामन, प्रभात, के.के. पुरुषोत्तमन, एस. सुनील और सुनील कडवत्तूर समसामयिक नाटकों के अगुवा थे, जिन्होंने समकालीन मलयालम नाटक को नई और सार्थक निर्देशन तकनीकों से समृद्ध बनाया। परिणामस्वरूप केरल के बाहर के कलाकारों को शामिल करने की माँग बढ़ने लगी। विश्व रंगमंच तक नाटक को पहुँचाने हेतु तकनीक में संवादों को पूरी तरह हटाकर केवल दृश्य संकेतों के सहारे प्रदर्शन होने लगा (शंकर वेंकटेश का *वाटर स्टेशन* इसका एक उदाहरण है)।

वर्तमान मलयालम नाटक मंच हमें नाटकों में मल्टीमीडिया और अन्य तकनीकों के उपयोग के साथ-साथ मंच और नाटकीय अनुभवों के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोण प्रदान करता है। केरल संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित केरल के अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच महोत्सव (आईटीएफओके) ने मलयाली नाटकों की सराहना को प्रोत्साहन प्रदान दिया है। आधुनिक नाटकों को व्यवस्थित रूप से शिक्षित नाटककारों की बढ़ती संख्या, वैश्विक मंच और विभिन्न थिएटर समूहों के दौरे आदि का समर्थन मिला है। मुख्यधारा के जो नाटक अब भी पारंपरिक शैलियों और तकनीकों का प्रयोग करते हैं वे धीरे-धीरे पर्दे से गायब होते जा रहे हैं। इसके कारणों में दर्शकों की बदलती रुचि और नाटकों की बदलती भूमिकाएँ हो सकती हैं। वैसे भी, मलयालम नाटक के इतिहास में इक्कीसवीं शताब्दी को एक प्रमुख मोड़ माना जा सकता है, आज कथानक, प्रस्तुतीकरण, मंच, संगठन, तकनीकी पहलू, संदर्भ, श्रोता आदि धीरे-धीरे नए अर्थ प्राप्त कर रहे हैं।

चविट्टुनाटकम

चविट्टुनाटकम कोच्चि और उसके आसपास विकसित हुआ माना जाता है। चमत्कारी नाटक प्रारूप के साथ पश्चिमी रंगमंच परंपरा अन्य भारतीय राज्यों से पहले केरल पहुँची, उस समय पुर्तगालियों ने उसे स्थानीय रूप में प्रेरित किया। यद्यपि *जेनोआ, कैरलमैन चरितम* और *नेपोलियन चरितम* जैसे ग्रंथ अभी भी जीवित हैं, हालांकि काफ़ी हद तक उपेक्षित हैं। ये नए परिवर्तन स्थानीय लोगों द्वारा महसूस किए गए एक कथित सांस्कृतिक शून्य को भरने के प्रयास में विकसित हुए थे। लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के बीच यूरोपीय ईसाई मिशनरियों ने उन्हें एक सबाल्टर्न ओपेरा नाटक प्रदर्शन का आविष्कार करने में मदद की, जिसे *चविट्टुनाटकम* के नाम से जाना जाता है। यह मलयालम नाम या तो *चविट्टु* (स्टंपिंग) या *चुवट्टी* (ताड़-पत्र पाठ) और *नाटकम* (नाटक) से लिया गया है। इसमें अभिनेता ज़ोरदार और लयबद्ध कदमों के साथ लकड़ी के मंच पर लय व तालबद्ध थपथपाहट पैदा करते हुए आगे बढ़ते हैं, जो अक्सर *चेंडा* की थाप और लकड़ी की तलवारों के टकराव के साथ नृत्य की गतिविधियों को पूरक करते हैं। वैसे उस समय इसे सुनाने एवं प्रदर्शित करने वाले दृश्यों के लिए उपयोग किया जाता है। यह मंच हल्की लकड़ियों की कई परतों से बना होता है, अक्सर शाम से सुबह तक की लयबद्ध थपथपाहट के कारण कई बार मंच टूट जाता था, जिससे इस विधा को एक उपहासपूर्ण उपनाम *तट्टुपोलिप्पन* (मंच तोड़ने वाला) भी दिया जाता है।

यदि नाटक साहित्यिक पाठ की एक दृश्य प्रस्तुति है, तो लिखित ग्रंथों का खुले मंच पर प्रदर्शन करने वाले *चविट्टुनाटकम* भारत में पश्चिमी नाटकीय संकेतों की पहली शुरुआत का प्रतीक है, जबकि अन्य भारतीय राज्यों की तुलना में केरल में आधुनिक नाटक का इतिहास बहुत पहले का है। भारत के अन्य राज्यों में ब्रिटिश औपनिवेशिक संपर्क से ही नाटक का प्रारंभ हुआ। माना जाता है कि पारंपरिक नाटक मलयालम में केरलवर्मा वलियकोयि तंपुरान के *शकुंतला* (1882) के अनुवाद के साथ महत्त्वपूर्ण हो गया। हालाँकि, *चविट्टुनाटकम* मध्य केरल के उन क्षेत्रों में पहले ही लोकप्रिय था जहाँ जेसुइट प्रभावशाली थे। 1498 में केरल आए पुर्तगाली जेसुइट्स को केरल ले आए और 1661 में डचों द्वारा पुर्तगालियों को हराने के बाद भी केरल में यह आदेश बना रहा, जब तक कि 1773 में इस आदेश को भंग नहीं कर दिया गया। इसके खुले मंच ने स्थानीय नाट्य प्रस्तुतियों को इतना प्रभावित किया कि कुछ ने तो यहाँ तक आश्चर्य प्रकट किया कि क्या यह पुर्तगालियों से प्रेरित कथकली के समान ही है। यूरोपीय नाटक की इस कमज़ोर नकल को ग्रीक-रोमन-यूरोपीय नाटकीय परंपरा के एक हिस्से के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें उस समय बोली जाने वाली तमिल में यूरोपीय ऐतिहासिक शख्सियतों, बाइबिल के पात्रों और संतों के जीवन का मंचन करने के लिए पुर्तगाली तकनीकी परंपराओं का इस्तेमाल किया जाता था। इनमें कुछ काल्पनिक विषयों और पात्रों पर भी आधारित थे। पहला नाटक स्थानीय तमिल में था, जिसे नाटककारों ने यूरोपीय कैथोलिक मिशनरियों के सक्रिय सहयोग से विकसित किया था और जो स्थानीय ईसाइयों को मंदिर कला से दूर करना चाहते थे। वे अभिनेता ज़्यादातर मिश्रित नस्ल के स्थानीय ईसाई और नव

धर्मांतरित लोग थे। *चविट्टुनाटकम* स्थानीय जुनूनी नाटकों और सुसमाचार दृश्य के मंचन के पूरक थे जो आगे चलकर उपासना (धार्मिक) प्रदर्शन का हिस्सा बने।

चविट्टुनाटकम का प्रारंभ तमिल-ईसाई लेखकों से संबंधित है, जिन्हें कोच्चि और उसके आसपास अन्नवी के नाम से जाना जाता है। उन्होंने इन नाटकों के साथ-साथ क्नानाई ईसाइयों के तमिल-युक्त अन्नवी गीतों की रचना भी की। इस प्रभाव के कारण, तमिल-युक्त मलयालम, प्रारंभिक लिपियों की एक सामान्य विशेषता बन गई। ऐसा लगता है कि सत्रहवीं शताब्दी में मट्टनचेरी में रहने वाले चिन्नतंबी पिल्लई को यूरोपीय मिशनरियों ने *ब्रसीना* की रचना करने के लिए प्रेरित किया था। आशानों ने *चुवती* (लिपि) पर आधारित उत्साहवर्धक व जटिल चरणों (*चुवडु*) में बनाई गई संगीत की धुन का 12 नृत्य कलाकारों को प्रशिक्षण भी दिया। *चविट्टुनाटकम* के लगभग दो अंक थे। यह सैन्य रोमांच के प्रदर्शन के लिए विख्यात है, जिससे खिलाड़ियों को नृत्य, तलवारबाजी और कोरियोग्राफिक चालों में अपने कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर मिलता था। *कैरलमैनचरितम* पुर्तगाली से शारलेमेन के इतिहास के मलयालम अनुवाद उन्नीसवीं शताब्दी पर आधारित था। यह प्रदर्शन सम्राट शारलेमेन और उनके 12 सामंतों द्वारा तुर्कों को हराते हुए चित्रित करने वाला सबसे लोकप्रिय *चविट्टुनाटकम* था। इसमें पर्याप्त रोमांस, युद्ध, विस्मयकारी दृश्य और साथ ही धार्मिक पवित्रता के दृश्य भी शामिल थे, जिसके मंचन हेतु सात रातों के लिए लगभग अस्सी अभिनेताओं की आवश्यकता थी। इसी प्रकार, कहानी के हिसाब से *जेनोआ* अधिक आकर्षक था, जबकि लंबाई के हिसाब से *नेपोलियन*, जिसके प्रदर्शन के लिए ग्यारह रातें लगती थीं। लगभग 35 अन्य बृहत् नाटकों और उनकी विविधताओं का मंचन अक्सर किया जाता था। इन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है– बाइबिल आधारित कथ्य (*अब्रहाम, बाराबास, दाविदुम गोलियात्तुम, तोबियास, याक्कोवु*); यूरोपीय इतिहास (*नेपोलियनचरितम, रेयिलोन, वाल्देवु*); भारतीय इतिहास और मिथक (*अकबर, अनारकली, बहवतदूत, भारत युद्धतिंटे नांदी, चंद्रगुप्तन, स्वामि अय्यप्पन*); संतों का जीवन (*अल्फोंस, गीवर्गीस पटलाळी, गीवर्गीसुम पेरुंपांपुम, लोवियल, मार्टिन, सबास्टियन*); नैतिक कथाएँ (*धर्मिष्ठिन, जानकी, कोमलचंद्रिका, सत्यपलम, वीरकुमारन*); और धार्मिक विषय (*अल्लेसु, गीवर्गीस चरित्रम, इस्तकी, ज्ञानसुंदरी, कैथरीना, सन्निक्लोसु, यौसेप्पु*)।

आगे चलकर बीसवीं शताब्दी में सहयोग और समर्थन की कमी, सार्वजनिक रुचि में बदलाव तथा निर्माण में भारी लागत के कारण *चविट्टुनाटकम* में गिरावट आती गई। कार्यात्मक रूप से सफल गठन के बावजूद इसका साहित्य गुणवत्ता के आधार पर कथकली साहित्य की तुलना में घटिया था। इसके प्रायोजक बहुत कम होते थे, उसमें भी ईसाइयों के केवल एक संप्रदाय से ही इसे संरक्षण प्राप्त था। अतः इसे एक संप्रदाय विशेष के मनोरंजन की विधा माना जाता था। साथ ही, बहुसंख्यक अभिजात वर्ग ने इसे धार्मिक प्रचार के एक उपकरण के रूप में देखा और कथकली जैसे पारंपरिक कला-रूपों के लिए चुनौती माना। अंततः धार्मिक और नस्लीय पूर्वाग्रहों, इसे नियंत्रित करने के लिए पादरियों के प्रयासों और निरंतर उभर रहे सरल नाटकीय रूपों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए खुद को आधुनिक बनाने में असमर्थ होने के कारण यह धीरे-धीरे और भी अलग-थलग पड़ गया।

मिशनरी साहित्य

मलयालम भाषा और साहित्य में योगदान देने वाले विदेशी मिशनरी मुख्य रूप से पुर्तगाल, इटली, जर्मनी और हॉलैंड से आए थे। बाद में, ईस्ट इंडिया कंपनी (ईआईसी) चार्टर के नवीनीकरण के साथ "पवित्र खंड" (pious clause) के पुनरुद्धार के बाद, ब्रिटिश प्रोटेस्टेंट मिशन भी भारत आने लगे। ब्रिटिश शासन के दौरान केरल में सक्रिय सभी तीन प्रमुख समूहों– दक्षिण त्रावणकोर में लंदन मिशनरी सोसाइटी, उत्तर त्रावणकोर में चर्च मिशन सोसाइटी; और मलाबार में बेसल इवेंजेलिकल मिशन– ने मलयालम गद्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। प्रमुख यूरोपीय मिशनरियों में हेनरिक एड्रियन वैन रीड (1637-1690), जॉन अर्न्स्ट हैंक्सेलडेन [आर्नोस पातिरि] (1681-1730), एंजेलोज फ्रांसिस (1650-1712), जॉन बैप्टिस्टा (1674-1756), क्लेमेंट पियानियस

(1731-1782), पॉलिनोस बार्थेलोम्यू [पॉलिनोस पातिरि] (1748-1806), रॉबर्ट ड्रमोंड, इल्डाफोंस (अठारहवीं शताब्दी), एंटोनियो पिमेंटल, बेंजामिन बेली (1805-1871), रॉबर्ट काडवेल (1813-1871), हर्मन गुंडर्ट (1814-1898), एल. गर्थवेट, एफ. स्प्रिंग, जोसेफ पीट (1833-1865), रिचर्ड कोलिंस (1866-1892), मार्सलिनोस (1892), एल.जे. फ्रोहान मेयर आदि विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। इनके अलावा, कई स्थानीय ईसाइयों ने भी मलयालम भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

केरल में आने वाले पहले कैथोलिक मिशनरी जेसुइट्स थे, जो एक अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक संगठन था। उन्होंने पहले पुर्तगाली किलों में चर्च स्थापित किए थे, जिन्हें वे बाद में छोड़ गए। कोच्चि में उनका बेस (base) 1548 में स्थापित किया गया था। अप्रामाणिक दावे हैं कि जॉन फारिया नामक एक पुर्तगाली ने कोल्लम में जेसुइट के सल्वाडोर कॉलेज में 1549 की शुरुआत में एक प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की थी। वहाँ तमिल में छपी 16 पृष्ठ वाली पुस्तिका *डॉक्ट्रिना क्रिस्टियम* या *तंबिरान वणक्कम* (1578) किसी भारतीय भाषा में मुद्रित पहली पुस्तक हो सकती है। पुर्तगालियों ने 1577 में चेन्नमंगलम में एक चर्च, एक सभागार और किताबों के अच्छे संग्रह के साथ एक पुस्तकालय का निर्माण भी किया। अनुमान है कि उन्होंने वहाँ एक प्रिंटिंग प्रेस भी शुरू की थी। यह भी दावा किया जाता है कि स्पेन के जॉन गोंज़ाल्विस ने स्थानीय भाषा में छापने के लिए टंकण (types) तैयार किया था, इतना ही नहीं, उन्होंने कोडुंङल्लूर (1581) में एक स्कूल भी स्थापित किया। हालाँकि, जब डच प्रोटेस्टेंटों ने 1661 में कैथोलिक पुर्तगालियों को हराया, तो उनके सभागार और पुस्तकालय को अंबष़क्काड़ स्थानांतरित कर दिया गया जहाँ उन्होंने 1662 में सेंट पॉल कॉलेज की स्थापना की। हालाँकि उसके बाद बहुत कम जेसुइट केरल आए। अंततः 1773 में जेसुइट संगठन को भंग करने तक सेंट पॉल उनके साथ रहे। जेसुइट्स के बाद अंबष़क्काड़, डच कार्मेलाइट्स के अधीन आ गया, लेकिन टीपू सुल्तान के आक्रमण के दौरान सभागार और चर्च नष्ट हो गए। हालाँकि यह सभी जानते हैं कि पुर्तगाल और स्पेन के कई लोगों ने किताबें लिखी हैं, उनमें से कुछ को संरक्षित किया जा चुका है तो कुछ अभी भी यूरोपीय अभिलेखागारों में खोजी जा रही हैं।

मलयालम में मुद्रित पहला प्रामाणिक ग्रंथ *हॉर्तुस मलाबारिकुस* था। यह केरल की वनस्पति व पौधों को सूचीबद्ध करने वाली 12 खंड की शास्त्रीय पुस्तक है। पुस्तक में मलयालम में पौधों के नाम और दो प्रमाणपत्र हैं, एक कोलेषुत्तु में और दूसरा ग्रंथ लिपि में। यद्यपि यह पुस्तक डच सेना के कैप्टन हेनरिक एड्रियन वैन रीड (1637-1690) के नाम से जानी जाती है, जिन्होंने 1661 में पुर्तगालियों को हराया था, लेकिन इसमें अधिकांश योगदान वास्तव में एक जेसुइट पुरोहित सेंट जोसेफ के मैथियस और आलप्पुष़ा के पारंपरिक चिकित्सक कोलाट्ट इट्टि अच्युतन का था। कैप्टन वैन रीड ने पांडुलिपि के मूल्य को समझा और उसका काम पूरा करने के लिए मैथियस को यहाँ रुकने की अनुमति दी। इसे 1686 में एम्स्टर्डम में मुद्रित किया गया।

एक अन्य योगदानकर्ता आर्नोस पातिरि थे। ऑस्ट्रिया में जॉन अर्न्स्ट हैंक्सेलडेन में जन्मे आर्नोस पातिरि 1700 में सूरत के रास्ते केरल आए। वे केरल के अंबष़क्काड़ में जेसुइट सभागार पहुँचे और पारंपरिक विद्वानों से संस्कृत सीखी। उन्होंने संस्कृत के साथ-साथ मलयालम में भी उत्कृष्टता हासिल की। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण भाषाई योगदान 651 पृष्ठ का मलयालम-पुर्तगाली (*मलाबारिको लुसिताना/आर्ते मलाबार*) शब्दकोश है, जिसे मलयालम का पहला शब्दकोश बनने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने संस्कृत-पुर्तगाली कोश (*डिक्शनारियम संस्कृतमिको-लुसितानम*) को मलयालम वर्ण "त" तक पूरा किया। जिसे बाद में बर्नहार्ड बिशोपिंक और एंटोनियो पिमेंतल ने पूरा किया लेकिन इसका प्रकाशन 1988 में ही किया जा सका। उन्होंने मलयालम में साहित्यिक रचनाओं के अलावा संस्कृत और लैटिन में किताबें भी लिखीं। उनमें *संस्कृतव्याकरणम्, चतुरंत्यम* (चार भागों में 1851 दोहों वाली रचना), *पुत्तन्पाना, उम्माडे दुखम, जिनेविवा पुण्यचरित्रम, व्याकुल प्रबंधम, आत्मानुतपम* शामिल हैं। उन्होंने *वशिष्ठ शरम, उपनिषद, वेदांताराम, अष्टावक्रगीता, युधिष्ठिर विजयम* आदि संस्कृत ग्रंथों पर आधारित लैटिन रचनाएँ भी लिखीं। इसके बावजूद वे पश्चिम में तब तक अज्ञात ही बने रहे जब तक कि पॉलिनोस पातिरि (Padre) की किताब, दे *कोदसिबुस इंदिको मैनुस्क्रिप्ट आरपी जोआनिस हैंक्सेलडेन* (1799) प्रकाशित नहीं हो गई।

इतालवी कार्मेलाइट बिशप एंजेलोज फ्रांसिस (1650-1712) ने बोलचाल की मलयालम की एक व्याकरण पुस्तक लिखी, बाद में उनके उत्तराधिकारी जॉन बैप्टिस्टा (1674-1750) ने एक मलयालम शब्दकोश की रचना की। 1757 में केरल पहुँचने वाले फादर क्लेमेंट पियानियस (1731-1782) ने भी दो पुस्तकों की रचना की। ये पुस्तकें हैं- *कॉम्पेंदिओसा एक्सप्लिकैतियो ओम्निबुस-क्रिश्चियनिस सीयता नेसेसारिया* जिसे *संक्षेपवेदार्थम* के नाम से जाना जाता है और *अल्फबेतम ग्रंथोनिको मलाबारिका*, जो 1772 में रोम की पॉलीग्लॉट प्रेस से मलयालम लिपि में प्रकाशित हुई। *संक्षेपवेदार्थम* 1128 विभिन्न वर्ग प्रकारों की सहायता से मुद्रित 273 पृष्ठ का मलयालम ग्रंथ है। इसमें गरिमामय गद्य का प्रयोग किया गया है। *अल्फबेतम ग्रंथोनिको*मलयालम भाषा के अक्षरों की व्याख्या के अलावा मलयालम भाषा के बारे में विस्तृत परिचय देता है। यह मलयालम लिपियों– *ग्रंथ, संस्कृत,* और मलयाष्मा के बीच के अंतर को स्पष्ट करता है और सूचित करता है कि पहली दो लिपियाँ व्यावहारिक रूप से एक ही हैं।

ऑस्ट्रियाई कार्मेलाइट विद्वान बहु-भाषाविद् पॉलिनोस बार्थेलोम्यू, जिन्हें लोकप्रिय रूप से पॉलिनोस पातिरि (1748-1806) के नाम से जाना जाता है, 1777 में केरल पहुँचे। उनकी मलयालम कृतियों में *त्रेसियाचरितम, देवषडगुणम, कूदाशापुस्तकम, एट्टुदिवसत्ते ध्यानम, दिव्यज्ञानलब्धिक्कुल्ल सारणी, मलयालम व्याकरणम्, अक्षरमाला विस्तारम* और *मलयालम-अंग्रेज़ी-पुर्तगाली निघंडु* आदि हैं। अन्य यूरोपीय भाषाओं में उनकी कृतियों में *सिद्धरूपम* (1790), *सिस्तेमा ब्राह्मणिकम* (1791), *ए ट्रीटीज ऑन द इंडियन एमएसएस टु द लाइब्रेरी ऑफ़ कॉन्ग्रेगेशन दे प्रोपेगडा फिदे* (1 792), *ए ट्रीटीज ऑन द एमएसएस इन पेन्नारी, स्यामी, मलयालम, एंड हिंदुस्तानी लैंग्वेजेज* (1793*), इंडिया ओरिएंटलिस क्रिस्तियाना* (1794), *ए ट्रीटीज ऑन एंशिएंट इंडिया* (1795), *ए वॉएज टु ईस्ट इंडीज* (1796), *अमरकोशम* (1798), दे *कोदसीबुस इंडिको मेनुस्क्रिप्ट आरपी जोआनिस हैंक्सेलडन* (1799), *ए ट्रीटीज ऑन द आंटिक्विटी एंट अफिनिटी ऑफ़ पर्सियन, संस्कृत एंड जर्मन लैंग्वेजेज* (1799), *अदगिया मलाबारिका* (1790) हैं।

अठारहवीं शताब्दी के एक मिशनरी इल्डाफोंस ने अंबष्क्काड़ में रहते हुए मलयालम-लैटिन-पुर्तगाली शब्दकोश, मलयालम व्याकरण और हिंदुओं के रीति-रिवाजों पर एक-एक ग्रंथ लिखे।

अंग्रेज़ी मिशनरियों का भी मलयालम में योगदान है। अनुवादक के रूप में काम करने वाले एक अंग्रेज़ी सर्जन रॉबर्ट ड्रमोंड ने *ग्रामर ऑफ़ द मलयालम लैंग्वेज* (1799) लिखा। यह किसी अंग्रेज़ द्वारा रचित मलयालम भाषा का पहला व्याकरण था। इसका प्रभाव एफ. स्प्रिंग और जोसेफ पीट की कृतियों पर पड़ा। लंदन मिशनरी सोसाइटी के स्कॉटिश मिशनरी बेंजामिन बेली (1791-1871) ने बाइबिल का मलयालम में अनुवाद किया. तदुपरांत उनकी जितनी भी भाषिक और साहित्यिक कृतियाँ थीं, वे इस अनुवाद कार्य के अनंतर परिणाम थीं। बाइबिल के उनके अनुवाद का सामान्य रूप से मलयालम साहित्य और विशेष रूप से मलयालम गद्य पर स्थायी प्रभाव पड़ा। कोट्टायम सीएमएस प्रेस (1821) के लिए उन्होंने आधुनिक मलयालम फॉन्ट विकसित किए, जिससे मलयालम प्रिंटिंग की सुंदरता और बढ़ गई। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– *डिक्शनरी ऑफ़ हाई एंड कोलोक्विअल मलयालम एंड इंग्लिश* (1846), *ए डिक्शनरी ऑफ़ इंग्लिश एंड मलयालम* (1849)। एफ. स्प्रिंग ने 1839 में, अंग्रेज़ों के लिए मलयालम भाषा की 94 पृष्ठ की व्याकरण पुस्तक लिखी, जिसका शीर्षक *आउट-लाइन ऑफ़ ए ग्रामर ऑफ़ द मलयालम लैंग्वेज एज स्पोकन इन द प्रोविंसेज ऑफ़ नॉर्थ एंड साउथ मलाबार एंड किंगडम ऑफ़ त्रावणकोर एंड कोचिन* था। आयरिश एलएमएस मिशनरी रॉबर्ट काडवेल (1813-1871) ने उन्हें दक्षिण भारतीय भाषाओं की तुलना करने के लिए प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अपना क्लासिक ग्रंथ *कंपेरेटिव स्टडी ऑफ़ द्रविड़ियन लैंग्वेजेज* (1857) लिखा। वे बाइबिल के अनुवाद और तमिल भक्ति गीतों की रचना में भी लगे हुए थे। इसी प्रकार एलएमएस मिशनरी जोसेफ पीट (1833-1865) ने ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों के लिए मलयालम भाषा की उन्नत व्याकरण (1841) पुस्तक तैयार की। ऑक्सफोर्ड के प्रोफ़ेसर और एंग्लिकन मिशनरी रिचर्ड कोलिंस (–1900) और कोट्टायम सीएमएस कॉलेज के प्रिंसिपल ने संयुक्त रूप से एक बृहत् संस्कृतीकृत (sanskritised) मलयालम शब्दकोश *मलयाष्मा निघंडु* (1865) की रचना की, जिसके लिए स्थानीय विद्वानों की भी सहायता ली गई थी। उन्होंने

विद्यासंग्रहम (1864) नामक एक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया, जिसमें उनके द्वारा मलयालम में अनूदित उपन्यास द *स्लेयर स्लैन* को क्रमबद्ध रूप से प्रकाशित किया गया, जिसे 1859 में उनकी पत्नी सारा कोलिंस ने अंग्रेज़ी में लिखना शुरू किया था और 1862 में उनकी भी मृत्यु के बाद रिचर्ड कोलिंस ने 1864 में इसे पूरा किया।

जर्मन मिशनरी हर्मन गुंडर्ट (1814-1893) तेईस वर्ष की उम्र में भारत पहुँचे थे। बेसल इवेंजेलिकल मिशन में भर्ती होने के बाद उन्हें बेंजामिन बेली से मिलने का अवसर मिला, जो उस समय बाइबिल का मलयालम में अनुवाद कर रहे थे। उनकी कई कृतियों में 1116 पृष्ठ का *मलयालम-इंग्लिश डिक्शनरी* (1872), *मलयालम ग्रामर* (1851), पुराने नियम का अनुवाद (अप्रकाशित), नए नियम का अनुवाद, *नलचरित सारशोधनम, पटमाला, केरल पष्मा, पष्ञ्जोल्माला (1850) मलयालराज्यम, संचारियुडे प्रयाणम, केरलोल्पत्ति (1843)* शामिल हैं। बाद में कोवुण्णी नेडुङाडि और ए.आर. राजराजवर्मा जैसे स्थानीय व्याकरणविदों ने अपनी व्याकरण पुस्तकों को गुंडर्ट के व्याकरण पर आधारित बनाया। गुंडर्ट के सहयोगी एल. गर्थवेट ने गुंडर्ट के मलयालम व्याकरण को पूरा किया और *मलयालम भाषा व्याकरण संग्रहम* (1860), *चाणक्यसूत्रम* (1868), *पंचतंत्रम किळिप्पाट्टु* (1870), *नलचरितम, वेतालाचरितम* और *भारतम-संभवपर्वम* लिखे। एल.जे. फ्रोहनमेयर ने मलयालम में विज्ञान पर एक बृहत् पुस्तक *प्रकृतिशास्त्रम* (1883) भी लिखी।

स्थानीय ईसाइयों ने भी मलयालम भाषा और साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। फादर जेरार्ड, एक मूल सीरियाई ईसाई कार्मेलाइट पादरी थे, जिन्होंने मलयालम में *अलंकारशास्त्रम* (1881) लिखा, जिसमें मलयालम में पश्चिमी आलोचनात्मक सिद्धांतों का परिचय दिया और उन्हें कई लोकप्रिय भारतीय रचनाओं में लागू भी किया। यह पुस्तक ए.आर. राजराजवर्मा की *साहित्यसह्या* की अग्रदूत बनी थी। थॉमस पारमक्कल (1736-1791) ने पहला यात्रावृत्त *वर्तमानपुस्तकम* मलयालम में लिखा। इसके पाठ की पांडुलिपि ताड़पत्र और कागज पर मलयालम और कुर्सोनी लिपियों में थी, जिसका प्रकाशन 1936 में हुआ। उल्लूर ने "केरल का स्वर्णाभूषण" नाम से अभिहित कर इसकी सराहना की। उनकी अन्य कृतियों में थॉमस एकेम्पिस के अनुवाद *इमिटेशन ऑफ़ क्राइस्ट एज क्रिस्टियानुकरणम, भूलोकचरित्रम, वेदपुस्तक तरजुमा* आदि प्रमुख हैं। कुरियाकोस चावरा एलियास (1805-1871) भी एक अच्छे मलयालम लेखक थे, जिन्होंने मान्नाःनम में एक प्रेस की स्थापना की और *आत्मानुतपम, नःलागमम, रोकोस सेस्मायुडे चरित्रम, नःल्ला अपंटे चावरुल, ध्यान सल्लापंङल, स्नेहसल्लापंङल और मरण पर्वम* आदि रचनाएँ लिखीं। कोशी (1825-1900) ने बाइबिल के संयुक्त अनुवाद (1872-1898) में मदद की। वे मलयालम के तीसरे समाचार पत्र *ज्ञाननिक्षेपम* के संपादक थे। उन्होंने पुल्लेलिकुंचु (1882) नामक उपन्यास प्रकाशित किया और *परदेशियुडे मोक्षयात्रा* तथा तिरुप्पोराट्टम नाम से जॉन बनियन की रचनाओं के अनुवाद किए। जॉर्ज मात्तन (मात्तन गीवर्गीस) (1819-1870) ने *मलयाळमयुटे व्याकरणम्* (1863) लिखा। एक अनुवादक होने के अलावा, उम्मन (1880-1904) ने *बालप्रियन* और *सुक्रुतमुळ्ळ स्त्री* लिखे। निधिरिकल मणि (1872-1904) ने अकेले ही बाइबिल के सिरिएक पाठ, जिसे प्सिता (psita) के नाम से जाना जाता है, का मलयालम में अनुवाद किया और *शोभराजविजयं* और *कृपावती* जैसे नाटक भी लिखे। इस क्रम में 1895 में परुमला ग्रेगोरीओस के यात्रावृत्त उर्सलेम *यात्राविवरणम* की छपाई महत्त्वपूर्ण है। मलयालम भाषा में पहला भारतीय इतिहास, जॉन अयमानन का *इंडियाचरित्रम* (1860) त्रावणकोर पाठ्यपुस्तक समिति (1867) की स्थापना से बहुत पहले लोकार्पित हुआ था। उम्मन फिलिपोस ने शेक्सपियर की *कॉमेडी ऑफ़ एरर्स* को *आळमाराःट्टम* (1866) शीर्षक से मलयालम में भी अनूदित किया। यह मलयालम में लिखा गया पहला आधुनिक नाटक हो सकता है। इसके अलावा उन्होंने *अमरकोशप्रदीपिका* और *शब्दप्रदीपिका* भी लिखीं। कोचीप्पन तरकन का *मरियाम्मा नाटकम* (1878 में लिखा और 1903 में प्रकाशित हुआ) केरल का पहला स्वतंत्र सामाजिक नाटक था। उनकी अन्य कृतियों में *परिष्कारभ्रांति* और *लुब्धन्टे वीडु* जैसे नाटक शामिल हैं। कोचुतोम्मन कुन्नुकुष़ी की *परिष्कारप्पति* (1892) समकालीन सीरियाई ईसाइयों के रीति-रिवाजों और प्रथाओं का विस्तृत परिचय देती है। 1890 में कंडत्तिल वर्गीस माप्पिला (1958-1904)

ने कोट्टायम में *मलयाल मनोरमा* की स्थापना और *भाषापोषिणी सभा* की शुरुआत की, जिसका आगे चलकर मलयालम साहित्य और भाषा में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उनकी प्रमुख कृतियों में *डारपविचेदनम, योशभूषनम, विस्मयजननम, एब्रयाकुट्टी नाटकम, सचरित्राशतकम, कीर्तनमाला* और शेक्सपियर के नाटकों– *कालाहिनिदामनकम* (टेमिंग ऑफ़ द श्रू) और *उथलन* (ओथेलो)– के दो अनुवाद शामिल हैं। इसके अतिरिक्त कट्टक्कयम चेरियान माप्पिला (1859-1937) ने *श्रीयेशुविजयम* (1826), *मार्थामाविजयम, योदाजेश्वरी, साराविवाहम* और *ओलिवरविजयम* लिखे तो वहीं पाउलो पॉल (1864-1936) ने जॉन डावसन के शास्त्रीय शब्दकोश पर आधारित *पुराणकथा निघंडु* (1899) की रचना की। यह वेट्टम मणि के *पौराणिक एनसाइक्लोपीडिया* (1964) के प्रकाशन तक एक संदर्भ पुस्तक बनी रही। स्पष्ट है वह इससे बेहतर निकला। उन्होंने *रासेलस* का अनुवाद भी किया, और मलयालम बाइबिल का सामंजस्य (concordance), *कांतिमतिपुराणम* और *पश्चंचोल्लुकळ* (1902) लिखे। आई.सी. चाको (1875-1966) ने व्याकरण से लेकर कृषि तक कई विषयों पर लिखा। पाणिनि की *अष्टाध्यायी* की *पाणिनि प्रद्योतम* (1955) के नाम से इनकी व्याख्या अपनी स्पष्टता और सुबोधता के लिए प्रसिद्ध है। ओ.एम. चेरियन, तोबियस ज़कारियास, के.वी. साइमन, मायानाद ए.जॉन, थॉमस पॉल, मैथ्यू एम. कुष़वेली, वेट्टम माणि, कोच्चीपन तरकन, सी. अंतप्पाई, जोसेफ मूलियिल, जोसेफ मुंडश्शेरी, एम.पी. पॉल, ज़कारिया, काक्कनाडन, सी.एल. जोस, बेन्यामिन, स्कारिया ज़कारिया आदि कुछ अन्य प्रमुख ईसाई लेखक हैं, जिन्होंने मलयालम भाषा को अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है।

प्रगतिवादी साहित्य

मलयालम में प्रगतिशील साहित्यिक आंदोलन संपूर्ण भारत में विभिन्न लेखकों के आंदोलनों के एक हिस्से के रूप में विकसित हुआ था। मुल्क राज आनंद और सज्जाद ज़हीर जैसे कुछ भारतीय लेखकों ने लंदन में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ का गठन किया। संघ ने इलाहाबाद (1935) और लखनऊ (1936) में एक या दो सम्मेलनों के बाद जनता और साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलनों का व्यापक ध्यान आकर्षित किया। लखनऊ सम्मेलन के बाद अप्रैल 1937 में कम्युनिस्ट नेता ई.एम.एस. नंबूदिरिप्पाड (ई.एम.एस.) की अध्यक्षता में कुछ युवा कार्यकर्ताओं ने केरल में एक *जीवल साहित्य संघ* (जीवंत साहित्यिक समूह) का गठन किया। के. दामोदरन और उपन्यासकार पी. केशवदेव की उपस्थिति, ई.एम.एस. द्वारा व्यापक लेखन और वार्ता और के. दामोदरन द्वारा *एन्ताणु साहित्यम* (साहित्य क्या है) जैसी पुस्तकों ने इस नई विचारधारा को न केवल सैद्धांतिक समर्थन दिया बल्कि उन्होंने आंदोलन के लिए लेखकों की सामाजिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता को भी सिद्ध किया तथा उत्पीड़ित श्रमिक वर्ग के लिए अलग संवेदनशीलता और साहित्य की माँग भी की। ई.एम.एस. ने *मातृभूमि* साप्ताहिक (19 जुलाई 1937) में एक लेख प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था *जीवल साहित्यवुम सौंदर्य बोधवुम* (लिविंग लिटरेचर एंड सेंस ऑफ़ ब्यूटी), जो आगे चलकर आंदोलन के उद्घाटन घोषणापत्र के रूप में काम आया। मलयालम साहित्य में कला के मूल्यांकन में सामाजिक, ऐतिहासिक और मार्क्सवादी मानदंडों को लागू करने का यह शायद पहला गंभीर प्रयास था।

इस आंदोलन को व्यापक मान्यता मिली और यह एम.पी. पॉल, जोसेफ मुंडश्शेरी, चंङमपुष़ा, कृष्णपिल्लई, जी शंकर कुरुप, तकष़ी शिवशंकर पिल्लई और वैक्कम मोहम्मद बशीर जैसे प्रख्यात लेखकों का समर्थन हासिल करने में सफल रहा। आंदोलन को ध्यान में रखकर कई कविताएँ, उपन्यास, लघु कथाएँ, नाटक, निबंध और आलोचनाएँ लिखीं और प्रकाशित की गईं। साहित्य की मार्क्सवादी-समाजवादी प्रशंसा की परंपरा शुरू हुई। सौंदर्यशास्त्र और संवेदनशीलता पर कई स्वस्थ बहसों ने 1930 और 40 के दशक के अंत में मलयालम साहित्यिक परिदृश्य को समृद्ध किया।

1944 में, *केरल पुरोगमन साहित्य संगठन* (प्रोग्रेसिव लिटरेरी एसोसिएशन) का आविर्भाव शोरनूर में एक निरंतरता के रूप में हुआ था जिसमें मिशन के उद्देश्यों पर स्पष्ट दृष्टिकोण तैयार किया गया था। प्रगतिशील लेखन और अनुवाद, रूढ़िवादी सांस्कृतिक

ताकतों का विरोध, साहित्य और कला रूपों की प्रस्तुति, आलोचना की प्रगतिशील शैली विकसित करना, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बनाए रखना, आदि संकल्प के मुख्य बिंदु थे। मलयालम में साहित्यिक परंपरा, विशेष रूप से गद्य का आलोचनात्मक विश्लेषण नए तरीके से किया गया था। 1945 में कवि चंङमपुष़ा ने कोट्टायम में वार्षिक सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए सर्वहारा (proletarian) के लिए लेखकों की प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया और केरल की कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति लेखकों की आत्मीयता की पुष्टि की। कम्युनिस्ट नेता ई.एम.एस. और कुछ सहयोगियों ने प्रगतिशील समूह को साम्राज्यवाद-विरोधी घोषित किया और कहा कि प्रगतिशील साहित्य का दिल राजनीतिक है। अधिकांश स्वतंत्र लेखक, जो वास्तव में आंदोलन की विचारधारा से सहमत थे, अर्ध-उग्रवादी ब्रिटिश-विरोधी राजनीतिक समूह के साथ खुले जुड़ाव के प्रति उत्तेजित हो गए। जोसेफ मुंडश्शेरी ने औपचारिक-सौंदर्यशास्त्र (*रूपभद्रता*) का मुद्दा उठाया और पार्टी की भागीदारी के ख़िलाफ़ विद्रोह किया।

इस अवधि के दौरान इस मुद्दे पर कई बहसें पत्रिकाओं में छा गईं। वामपंथियों ने कई प्रमुख लेखकों पर हठधर्मी तरीके से हमला बोल दिया और प्रगतिशील विचारधारा की कमी के लिए उन्हें दोषी ठहराया। विरोधियों ने सौंदर्यबोध की कमी के आरोपों का विरोध किया और कुछ प्रगतिशील कवियों की नारा-कविताओं (slogan-poems) का मजाक उड़ाया।

इस स्थिति में एक विभाजन की संभावना प्रबल हो गई थी, क्योंकि दोनों पक्षों ने अपने तथाकथित सांप्रदायिक दृष्टिकोण के लिए एक-दूसरे की आलोचना की थी। परिणामस्वरूप अधिकांश सदस्यों ने संघ छोड़ दिया और 1948 तक इसका जोश कम हो गया। 1954 और 1955 में जी. शंकर कुरुप जैसे कुछ लेखकों ने एक नया घोषणापत्र लाकर संगठन को पुनर्जीवित करने की कोशिश की, लेकिन कामयाबी नहीं मिल पाई। 1961 में, उत्तराधिकार के दावे के साथ *केरल साहित्य समिति* (साहित्यिक समूह) का गठन किया गया। 1981 में पार्टी के समर्थन से *पुरोगमन कला साहित्य संघम* (प्रोग्रेसिव ग्रुप फॉर आर्ट एंड लिटरेचर) का जन्म हुआ था जो आज भी काम कर रहा है। बाद में, वामपंथियों ने मलयालम में वैचारिक आलोचना की एक बेहतर परंपरा विकसित की और साहित्यिक हस्तियों को अधिक विवेकपूर्ण तरीके से स्थानांतरित किया। 1990 के दशक में वयोवृद्ध कम्युनिस्ट नेता ई.एम.एस. नंबूदिरिप्पाड ने कला और साहित्य के प्रति अपने शुरुआती वर्षों में पार्टी के यांत्रिक दृष्टिकोण को स्वीकार किया और ऐतिहासिक एवं राजनीतिक रूप से मज़बूत आलोचनात्मक दृष्टिकोण की कामना की।

मलयालम में दलित साहित्य

मलयालम में दलित विमर्श 1970 के दशक के आसपास शुरू हुआ। इससे पहले पहचान की समस्याओं को जाति-विरोधी सामंती आंदोलनों के माध्यम से उठाया जाता था। अय्यंकाली, पोयकयिल कुमार गुरु, पांबाडी जॉन जोसेफ, के.पी. करुप्पन और के.पी. वेल्लोन जैसे दलित नेताओं द्वारा दलितों के सामाजिक अधिकारों के बारे में उठाए गए नए सवालों ने केरल में दलित समुदाय को उनके स्वयं के एक नए अहसास की ओर प्रेरित किया। इसने उन्हें गुलामी और दलितता की विषय स्थिति को समझने में सक्षम बनाया। उन्होंने साधुजन परिपालन संघ और प्रत्यक्ष रक्षा दैव सभा जैसे संगठन बनाए।

1960 के दशक में भारत के कई हिस्सों में विकसित हुई दलित चेतना केरल में भी फैलने लगी। हालाँकि 1970 के दशक में सक्रिय नक्सली आंदोलन से जो उम्मीदें जगी थीं, वे 1980 के दशक में कम होने लगीं। इसके अलावा, यूरोप में कम्युनिस्ट शासन के पतन के बाद दलित युवाओं को, जो वामपंथी आंदोलन में सक्रिय थे, वैकल्पिक समाधानों की ओर प्रेरित किया। दलित पैंथर्स आंदोलन का उदय इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम था।

"एस.ई.ई.डी.आई.ए.एन." (Socially Economically Educationally Depressed Indian Ancient Natives) (सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक रूप से निराश भारतीय प्राचीन मूल निवासी) पत्रिका में दलित मुद्दों पर चर्चाएँ तेज़ होने लगीं, और बाद में उसने मलयालम में भी अपनी जड़ें जमा लीं। दलित राष्ट्रवाद, मुक्ति की इच्छा, अंबेडकर के विचार और मार्क्सवादी

विचारधारा की सीमाओं पर सक्रिय रूप से चर्चा की गई। इसके साथ ही संसदीय राजनीति में दलित समूहों के प्रवेश ने विभिन्न मौजूदा राजनीतिक दलों के अंतर्गत दलित भागीदारी के विखंडन की भरपाई की, जिसके परिणामस्वरूप एकीकरण हुआ। यह नया विवादास्पद संदर्भ ही है, जिसने केरल में दलित साहित्य की एक परंपरा का निर्माण किया।

मलयालम में दलित साहित्य को आमतौर पर मौखिक संस्कृति के क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है। मलयालम साहित्य में मौजूदा लोक छवियों के एक बड़े हिस्से के निर्माण का श्रेय दलितों को जाता है। मलयालम में शारीरिक श्रम, धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित लोक गीतों और दलित चारण समुदाय द्वारा विभिन्न विषयों पर गाए जाने वाले *पाणर* जैसे लोक गीतों का एक विस्तृत संग्रह मौजूद है। ये गीत दलितों की जीवन स्थितियों, आकांक्षाओं और सांसारिक ज्ञान को दर्शाते हैं।

पोय्कइल कुमार गुरुदेवन ने गुलामी के अपने अनुभव का वर्णन करते हुए जिस तरह से पारंपरिक इतिहास लेखन की आलोचना की है, वह इस प्रकार है–

मैं एक भी अक्षर नहीं देख सकता
जो लिखा है मेरी जाति पर
और मैं कई इतिहास देखता हूँ
असंख्य अन्य जातियों पर।

(पोय्कइल अप्पच्चन के गीत)

लेकिन, मुख्यधारा के मलयालम साहित्यिक इतिहास के अनुसार, बीसवीं शताब्दी तक केरल में दलित गुट से संबंधित केवल दो लेखक थे। दलितों द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से ज्ञान-मीमांसा पर किसी ने विचार नहीं किया। जहाँ तक साहित्यिक इतिहास का संबंध है, के.पी. करुप्पन की *जातिकुम्मी* और *उदयनाविरुन्नु* जैसी रचनाएँ दलित चेतना वाली प्रारंभिक कविताएँ हैं। उनका नाटक *बालकलेशम* दलित चरित्र वाला पहला मलयालम नाटक है।

निरणम केशवन, कल्लडा शशि, के.के. गोविंदन, के.के.एस. दास, वी.के. नारायणन, राघवन अत्तोली, जी. शशि, एस. जोसेफ, सण्णी कपिक्काड़, एम.बी. मनोज, एम.आर. रेणु कुमार, ए.के. वासु, शिवदास पुरमेरी आदि की कविताएँ मलयालम कविता के अन्य दलित चेहरों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

यद्यपि उपन्यासों में दलित जीवन का चित्रण *घातक वधम* (स्लेयर स्लेन, 1878) के साथ शुरू हुआ माना जाता है, किंतु मलयालम कथा साहित्य की मुख्यधारा का सौंदर्यशास्त्र *इंदुलेखा* से विकसित हुआ, जो नायर जीवन पर केंद्रित था। अतः एक दलित रचना के रूप में, पॉल चिरकरोडे के *पुलयत्तरा* को पहला दलित उपन्यास माना जा सकता है। जिसे टी.के.सी. वडुतला (*चंङलकळ नुरंङ्ङुन्नु*), डी. राजन (*मुक्काणि*), पी.ए. उत्तमन (*चावोली*), कवियूर मुरली (*अय्यंकालीप्पड़ा*) और राघवन अत्तोली (*चेरपरिशम*) आदि ने आगे बढ़ाया।

मलयालम लघु कथा में टी.के.सी. वडुतला एक उल्लेखनीय प्रारंभिक लेखक हैं, जिन्होंने दलितों पर महत्त्वपूर्ण कथाएँ लिखी हैं। सी. अय्यपन आधुनिक दलित लेखकों में प्रमुख हैं। उनके संग्रह *उचयुरःक्कत्तिले स्वप्नंङल* और ञंडुकळ मलयालम लघुकथा के इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। पी.ए. उत्तमन और पी.के. प्रकाश भी ऐसे ही प्रख्यात लघु कथाकारों में से हैं।

दलितों द्वारा मंचित *तेयम-तिरा, काक्करश्शी नाटकम* जैसे आनुष्ठानिक कला रूप प्रस्तुत नाटक के प्राचीन रूप हैं। के.पी. करुप्पन के साथ शुरू हुआ दलित नाटक आगे चलकर कई नाटककारों के योगदान से समृद्ध हुआ, जिनमें ए. शांताकुमार (*करःक्कटम, करुःत्त विधवा* और *ओरु देशम नुणपरःयुन्नु*) के नाटक विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मलयालम में सबसे महत्त्वपूर्ण शैलियों में से एक आत्मकथा शैली है, जिसमें दलित हस्तक्षेप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पर्यावरणविद् कल्लेन पोक्कुडन की आत्मकथा *कंडल काडुकळक्किडयिल एंटे जीवितम* (मैंग्रोव के बीच मेरा जीवन) भी एक ऐतिहासिक कृति है जिसमें यह दिखाया गया है कि केरल का इतिहास कैसे एक सामाजिक कार्यकर्ता का निर्माण करता है।

मरियाम्मचेट्टत्तियुडे जीवितम और *अडियरु शिक्षक* दो अन्य महत्त्वपूर्ण आत्मकथाएँ हैं, जो केरल के इतिहास में दलितों की सामाजिक गतिशीलता का बेहतरीन दस्तावेज़ हैं। *मरियाम्मचेट्टत्तियुडे जीवितम* शीर्षक से दलित लोक गीतों का एक संग्रह भी है, जिसमें अडियरु शिक्षक द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक दलित महिला के सांस्कृतिक अनुभव को दर्शाया गया है।

मलयालम में साहित्यिक आलोचना और सामाजिक सिद्धांत में सबसे सशक्त दलित उपस्थिति दिखाई पड़ती है। मलयालम में दलित गद्य लेखन ने साहित्य के अलावा, सांस्कृतिक आलोचना और राजनीतिक प्रोक्तियों में भी महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप किया है। इसी प्रकार भाषा, साहित्य और आलोचना के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति कवियूर मुरली हैं। उनके दलित भाषा, दलित साहित्य और दलित निघंडु भी समग्र लेखन के प्रतीक हैं। के.के. कोच्चु, के.के.एस. दास, के.एम. सलीमकुमार, के.के. बाबुराज, सण्णी एम. कप्पिक्काड़, टी.एम. जेसुदासन, एम. दासन, सनल मोहन आदि दलित विमर्श के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रहे हैं।

अतः स्पष्ट है कि दलित लेखन ने मलयालम साहित्य को सामाजिक जटिलताओं के बारे में अधिक आलोचनात्मक जागरूकता और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उसकी पहचान के पुनर्गठन के लिए प्रेरित किया है।

मलयालम में नारीवादी लेखन

मलयालम में महिला लेखकों ने अपने लिए अलग जगह बनाई है, जहाँ वे पुरुषों के बराबर खड़ी हैं। वे मौजूदा पितृसत्तात्मक मानदंडों व स्त्रियों को निम्न स्थापित करने के ख़िलाफ़ विद्रोह की एक मज़बूत भावना उत्पन्न करती हैं। वे लेखिकाएँ अपने लिए एक ऐसा स्थान बनाने में सफल रही हैं जहाँ वे पितृसत्तात्मक समाज से निर्देशित हुए बिना अपने विचारों और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकती हैं। वे अन्य विषयों के अलावा प्यार, वासना, विश्वासघात, पहचान, मन और शरीर की स्वतंत्रता के बारे में लिखती हैं। उनका लेखन चरणबद्ध तरीके से धीरे-धीरे विकसित हुआ। यहाँ वे नारी के शरीर और उसकी अंतरात्मा की तलाश में उनकी मनोवैज्ञानिक यात्रा के बारे में बात कर सकती हैं। यद्यपि पहले भी रचनाओं में आत्मा की खोज पर लेखन होते रहे हैं, जैसा कि हम ललितांबिका अंतरजनम (1909-87) के *अग्निसाक्षी* (1977) ("साक्षी के रूप में अग्नि") में देखते हैं, जहाँ ब्राह्मण महिला अपने वैवाहिक जीवन को त्यागकर अध्यात्म का रास्ता चुन लेती है और अपनी एक अलग पहचान स्थापित कर उसे आत्मसात करती है। समय-समय पर समान रूप में स्वयं की आत्मा की खोज संबंधी लेखन देखे जा सकते हैं। इसी तरह के उदाहरण सारा जोसेफ (*इनसाइड एवरी वुमन राइटर*) और चंद्रमती (*द स्टोरी ऑफ़ ए पोएम*) जैसी समकालीन लेखिकाओं की रचनाओं में भी दिखाई देते हैं।

माधवीकुट्टी (कमला दास) के लेखन में किसी की आत्मा की खोज और किसी के शरीर की खोज का आपस में मिलन हो जाता है, जहाँ लेखिका अपनी पहचान तथा भाग्य का फ़ैसला करने में अपने शरीर और मस्तिष्क के महत्त्व पर ज़ोर देती है। केरल जैसे पितृसत्तात्मक समाज में एक महिला के लिए कामुकता पर लिखना कभी भी आसान नहीं रहा। फिर भी इन लेखिकाओं ने अपनी रचनात्मकता पर अंकुश लगाने वाली कई बाधाओं को पार किया है और खुद को साबित किया है। धीरे-धीरे नारी लेखन गति पकड़ता गया। ये अपने लेखन को मलयालम भाषा में स्थापित करने हेतु एक समानांतर भाषाई प्रणाली उत्पन्न कराने में सफल रहीं। यह अपने-आप में अपरिहार्य घटना बन जाती है, क्योंकि महिलाओं द्वारा किए गए कार्य मानव मन को गहराई तक छूते हैं, ताकि उनके पात्र और अधिक जीवंत हो सकें।

सुगतकुमारी और सारा जोसेफ जैसी लेखिकाएँ जो पर्यावरणविद् भी हैं, अपने लेखन के ढाँचे में प्रकृति को भी शामिल करती हैं, जिससे पर्यावरण-नारीवादी रचनाओं की शुरुआत होती है। नारी अपने भीतर छिपी अकल्पनीय शक्ति से प्रकृति की तरह एक रहस्य बन जाती है। इनमें से कुछ लेखिकाएँ भारतीय महाकाव्यों और किंवदंतियों पर फिर से लिखती हैं या उन पर फिर से

काम करती हैं, जैसा कि सारा जोसेफ के *रामायण (तायकुलम; ऊरु कावल)* या के.आर. मीरा की आधुनिक संकल्पना में रचित उपन्यास *मीरासाधु* (भगवान कृष्ण की एक उपासिका) आज केरल के मलयालम साहित्यिक परिदृश्य में लेखिकाओं के लिए एक प्रमुख स्थान बनाने में कामयाब हो सके हैं। राज्य भर के पाठकों द्वारा उनकी रचनाओं को व्यापक रूप से पढ़ा और सराहा गया है। मलयालम पाठकों का छोटा आकार कभी-कभी भारत जैसे विशाल देश में इन लेखिकाओं की लोकप्रियता को सीमित कर देता है। इसके बावजूद इनकी कई रचनाओं के अंग्रेज़ी अनुवाद, जो पहले से ही बाज़ार में उपलब्ध हैं, इन लेखिकाओं को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने के लिए एक व्यापक मंच प्रदान करते हैं।

मलयालम साहित्य की महिला लेखिकाएँ अपने लेखन में हमेशा प्रयोगात्मक रही हैं। मलयालम में पहली प्रमुख महिला लेखिका ललितांबिका अंतरजनम और के. सरस्वती अम्मा (1919-1975) थीं। एक नंबूदिरि (ब्राह्मण) महिला अंतरजनम ने नंबूदिरि महिलाओं की दुर्दशा के बारे में विस्तार से लिखा। उनकी प्रमुख कृति *अग्निसाक्षी* में एक *अंतरजनम* (ब्राह्मण महिला) की कहानी को दर्शाया गया है, और कैसे उसने नंबूदिरि विवाह की सीमाओं के ख़िलाफ़ विद्रोह किया। के. सरस्वती अम्मा ने कई कहानियाँ, एक उपन्यास *प्रेमभाजनम* (1944, "डार्लिंग") और एक नाटक *देवदूती* (1945, "पैसेंजर ऑफ़ गॉड") लिखा है। 1958 में उन्होंने *पुरुषमरिल्लात्त लोकम* ("ए वर्ल्ड विदाउट मेन") नामक निबंध संग्रह भी प्रकाशित किया। मैरी जॉन तोट्टम, जो बाद में सीनियर मैरी बेनिग्ना (1901-1985) बनीं, भी अंतरजनम और सरस्वती अम्मा की समकालीन एक उल्लेखनीय लेखिका हैं। उनकी आत्मकथा *लोकमे यात्रा* (1928, "फेयरवेल टु द वर्ल्ड"), राजलक्ष्मी (1930-1965) के दो उपन्यास *ओरु वऴियुम कुरे निऴलुकुलम* (1959 "ए पाथ एंड ए फ्यू शैडोज") और *ञानेन्न भवम* (1965 में *मातृभूमि* पत्रिका में धारावाहिक; "बीइंग आई") आदि उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार नालाप्पाट बालामणि अम्मा (1909-2004) की *अम्मा* (1934 "मदर"), *मषुविंटे कथा* (1966 "स्टोरी ऑफ़ एक्स"), *मातृहृदयम* (1988, "मदर्स हार्ट") कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं। माधवीकुट्टी (1934-2009), जिन्हें कमला दास/कमला सुरैया के नाम से भी जाना जाता है, ने निडर होकर कामुकता और पुरुष-महिला संबंधों के बारे में मलयालम और अंग्रेज़ी दोनों में लिखा। उनकी आत्मकथा *एंटे कथा* (1982, "माई स्टोरी" के नाम से अनूदित) और उपन्यास *नीरमातलम पूत्त कालम* (1994 "व्हेन द नीरमातलम ब्लॉसम्ड") सनसनीखेस रचनाएँ रही हैं। कवि और सामाजिक कार्यकर्ता सुगतकुमारी (1934-2020) की प्रसिद्ध कृतियाँ *पावम मानवहृदयम* (1968, "पुअर ह्यूमन हार्ट"), *इरुळ चिरःकुकळ* (1969, "विंग्स ऑफ़ डार्कनेस"), *रात्रिमऴा* (1977, "नाइट रेन") और *अंबलमणि* (1981, "टेंपल बेल") हैं। सारा थॉमस (1934) के उपन्यास *नर्मदिप्पुडवक्कु* को कई पुरस्कार मिले। एक अन्य उपन्यास *दैवमक्कळ* (1982, 2006 में "दैवमक्कल : भगवान के बच्चे" के नाम से अनूदित) में एक दलित (निम्न जाति) विमुक्ति की तलाश को केंद्र में रखा गया है। एक प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार और एक सामाजिक कार्यकर्ता सारा जोसेफ (1942–) के प्रसिद्ध कहानी संग्रह *काडिंटे संगीतम* ("म्यूजिक ऑफ़ द फॉरेस्ट") और *नन्मतिन्मकळुडे वृक्षम* ("द ट्री ऑफ़ गुड एंड एविल") हैं। उनके उपन्यास नारीत्व के विभिन्न पहलुओं की खोज करते हैं और उनका जश्न मनाते हैं। उनके उपन्यास-त्रय *आलाहयुडे पेण्मक्कळ* (1999, "आलाहाज डॉटर्स"), *मातत्ति* (2003) और *ओतप्पू* (2005, *ओतप्पू : द सेंट ऑफ़ द अदर साइड*, 2009 के नाम से अनूदित) अद्वितीय हैं, जो नारीत्व और समाज में उसकी असंख्य अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए भाषा का उपयोग करने में एक लेखिका की अद्वितीय रचनात्मकता को दर्शाते हैं। इसी क्रम में पी. वलसला (1938–) का प्रमुख उपन्यास *निऴलुरंगुन्न वऴिकळ* (1975, "पाथ्स व्हेयर शैडोज स्लीप") है।

चंद्रिका बी. (1954–), जिसे चंद्रमती के नाम से जाना जाता है, अंग्रेज़ी और मलयालम दोनों में लिखती हैं। उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ *आर्यावर्तनम* (1995, "आर्य रिपीटिड"), *देवीग्रामम* (1997, "विलेज ऑफ़ द गॉडेस"), और *रेंडियर* (1998) हैं। उनकी आत्मकथात्मक रचना अंडुकळुडे नाट्टिल ओरु इडवेळा (2006, "एन इंटरवल इन द लैंड ऑफ़ द क्रैब्स")

में कैंसर से उनकी लड़ाई को दर्शाया गया है। के.पी. सुधीरा एक अन्य प्रमुख समकालीन उपन्यासकार और कहानीकार हैं। उनकी कुछ प्रमुख कृतियों में उपन्यास *गंगा* (2004), *आजीवनांतम* (2006, "लाइफ-लॉन्ग"), और कहानी संग्रह *स्नेहस्परशंगळ* (1999, "टच ऑफ़ लव"), *चोलमरंङिळल्लात्त वष़ी* (2000, "द पाथ विद नो शैडी ट्रीज") और *आरो ओराळ* (2005, "समवन") हैं।

प्रसिद्ध मलयालम कवयित्री रोज़मेरी (1956–) की प्रमुख रचनाएँ *वाक्कुकळ चेकेरुःन्नः इडम* ("द प्लेस व्हेयर वर्ड्स टेक रिफ्यूज"), *चाञ्‌ञु पेयुन्नः मष़ा* ("द स्लैंटिंग रेन") और *वेनलिल ओरु पुष़ा* ("ए रिवर इन द समर") हैं। इसी प्रकार ग्रेसी (1951–) भी मलयालम की एक प्रमुख कथाकार हैं, जिनकी प्रमुख कृतियों में *पडियिरंगिप्पोय पार्वती* (1991, "पार्वती हू लेफ्ट होम"), *नरकवातिल* (1993, "गेटवे टु हैल") आदि शामिल हैं। विजयलक्ष्मी भी (1960–) एक समकालीन कवयित्री हैं जिनकी रचनाओं में *मष़क्कप्पुरःम* ("बियॉन्ड द रेन"), *मृगशिक्षकन* ("एनिमल ट्रेनर"), *तच्चन्टे मकळ* ("स्कल्पचर्स डॉटर") शामिल हैं। पत्रकार और लेखिका, के.आर. मीरा (1970–) अपने उपन्यास *आराचार* ("द एक्जीक्यूशनर"), *मीरासाधु* और अपने कहानी संग्रह *के.आर. मीरायुड कथकळ* और *एवे मारिया* से मशहूर हैं। उनकी रचनाएँ "नए युग की महिला" और पितृसत्तात्मक दुनिया में उनके अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करती हैं।

सभी महिला लेखिकाएँ अपने दृष्टिकोण को स्वयं के अनुभवों से बुनती हैं, वे अपने साहित्यिक कार्यों से एक ऐसी वैकल्पिक दुनिया का निर्माण करती हैं, जहाँ महिलाओं को अभिव्यक्त करने, सवाल करने और पुरुष-केंद्रित दुनिया की बेड़ियों को तोड़ने की शक्ति मिलती है। उनके लेखन में आत्मकथात्मक विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं और वे ऐसे वर्गीकरण का विरोध करती हैं जो उनके लेखन को हाशिएकरण का ब्रांडिंग रूप बताए।

बाल साहित्य

अन्य भाषाओं की तरह, मलयालम में भी बाल साहित्य की जड़ें लोक कथाओं और लोक गीतों में हैं। मोटे तौर पर कहा जाए, तो बाल कहानियाँ मुख्य रूप से मनोरंजन के लिए गढ़ी जाती हैं, परंतु बच्चों की शिक्षा और नैतिकता इसके अन्य प्रमुख उद्देश्य हैं।

सामान्यतः बच्चों के लिए लिखे गए या बच्चों द्वारा पढ़े जाने वाले साहित्य को बाल साहित्य कहा जा सकता है। यदि हम स्पष्ट रूप से इस विधा को मिथकों, किंवदंतियों, दंतकथाओं, परी कथाओं, कल्पनाओं, आख्यानों, जीवनियों, कविताओं, नाटकों आदि के रूप में निर्धारित करते हैं तो यह समझदारी होगी। कुछ हद तक बच्चों की शिक्षा संबंधी गैर-कथाओं (non-fiction) को भी इसमें शामिल किया जा सकता है। बच्चों के लिए रचित कुछ साहित्यिक कृतियाँ बड़ों को भी उतनी ही मनोरंजक लगती हैं। *पंचतंत्रम, कथासरितसागरम* और *विक्रमादित्य* जैसी प्राचीन कृतियाँ केवल बड़े लोगों के लिए ही नहीं लिखी गई थीं, ये व्यापक रूप से किंवदंतियों का संग्रह थीं। वास्तव में, बच्चे इन पुस्तकों के मुख्य पाठक होते हैं। कोट्टारत्तिल शंकुण्णी की *ऐतिह्यमाला* भी इसी श्रेणी की रचना है। यहाँ तक कि पुराण और महाकाव्य भी बच्चों द्वारा पढ़े और पसंद किए जाते हैं। इनकी कहानियाँ बच्चों के अच्छे मनोरंजन के रूप में तो काम आती ही हैं साथ ही उनके द्वारा प्रस्तुत मनोबल, धर्मपरायणता और दूरदर्शिता बड़ों के लिए भी अमूल्य चिंतन के अंश हैं।

मलयालम को लोक कथाओं, नैतिक कहानियों, परी कथाओं, काल्पनिक कथाओं, फंतासी कथाओं, कहावतों और पहेलियों की महान भारतीय परंपरा विरासत में मिली है, जिन्हें सुनने या पढ़ने से बुजुर्ग और युवा समान रूप से उत्साहित होते हैं। इन्हीं से मलयालम में बाल साहित्य की उत्पत्ति हुई है। ऐसा माना जाता है कि सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मलयालम के पहले बाल साहित्य की रचना हुई थी। अनुमानतः 1675 के आसपास किसी अनाम व्यक्ति द्वारा *अञ्जडि* नामक सरल कविता रूप में इसे

लिखा गया था। किंतु कुंञ्जन नांबियार द्वारा रचित *पंचतंत्रम किळिप्पाट्टु* (अठारहवीं शताब्दी) को पहला संपूर्ण बाल साहित्य माना जाता है। इसमें निहित उपदेशात्मक कहानियों का उद्देश्य बच्चों में प्रेम, सच्चाई, नैतिकता, दया, करुणा, न्याय आदि गुण प्रदान करना है।

उन्नीसवीं शताब्दी में बाल साहित्य के निर्माण में बेहतर प्रयास किए गए। जिनमें ईसाई मिशनरियों, विशेष रूप से बेंजामिन बेली और हर्मन गुंडर्ट का विशेष योगदान रहा था। *चेरुपैतंङळक्कु उपकारार्थम इंग्लीषिलनिन्नुः परिभाषप्पेडुत्तिय कथकल* (बच्चों के हितार्थ अंग्रेज़ी से अनूदित कहानियाँ) इस संबंध में पहला प्रयास था। इसके बाद *पदारंभम* (1851) और *पदमाला* (1860) को इस श्रेणी में रखा जा सकता है। इनमें गुंडर्ट द्वारा लिखित प्राचीन कविताओं और गद्य के अंश सम्मिलित हैं। इस अवधि के दौरान प्रकाशित एक अन्य पुस्तक, *बालनिक्षेपम* थी। पश्चिमी शिक्षा प्रणाली और स्थानीय स्कूलों के विकास ने मलयालम में बाल साहित्य के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। केरलवर्मा वलियकोयि तंपुरान इस आंदोलन के पथ प्रदर्शक थे। वे त्रावणकोर सरकार की पाठ्यपुस्तक समिति के अध्यक्ष भी बने। समिति ने प्राथमिक विद्यालयी स्तर और उससे ऊपर के बच्चों के लिए उपयुक्त गणित, इतिहास, भू-विज्ञान, नैतिकता जैसे विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तकें बड़ी संख्या में प्रकाशित करने का ठोस कदम उठाया। इस विधा की एक अन्य उल्लेखनीय पुस्तक वैक्कत्तु पाच्चु मूत्ततु की *बालभूषणम* (1868) है। इनके अतिरिक्त, भारतीय और विदेशी भाषाओं की लोकप्रिय पुस्तकों के अनुवादों ने भी बाल साहित्य के विकास में योगदान दिया है। उनमें से सर्वाधिक उल्लेखनीय रचनाएँ *जिंदबंदिन्टे कप्पलोट्टम* (1880) और *ऐस्सोपिन्टे कथकळ* (1887) थीं।

बीसवीं शताब्दी में बाल साहित्य की रचनाओं की भरमार थी। उनमें से अधिकांश बच्चों की आवश्यकतानुसार भारतीय और विदेशी भाषाओं की कहानियों से प्रेरित थीं या उधार ली गई थीं। *शाकुंतलम* (मूरकोत्तु कुमारन, 1910), *अली बाबा* (के. पद्मनाथ पिल्लई, 1914), *कप्पलचेतम संभविच्च ओरु कुटुंबम* (वी. कृष्णन तंपी, 1915), *रॉबिन्सन क्रूसो* (सी.वी. रामन पिल्लई, 1916), *कला लतिका* (पल्लत्तु रामन, 1933), *कथारत्नमालिका* (चंङमपुषा, 1934), *शेक्सपियरुडे नाटकंङळ* (आर. ईश्वर पिल्लई, 1938) उनमें से प्रमुख हैं। द *बाइबिल, ग्रीक माइथोलॉजी, अरेबियन नाइट्स* और *डिकैमरन स्टोरीज* से ली गई कहानियाँ बाल-किशोर साहित्य के अमूल्य खजाने हैं। शेक्सपियर के नाटकों, जिन्हें चार्ल्स लैम्ब ने शेक्सपियर स्टोरीज़ के नाम से दोबारा प्रकाशित किया था, का अनुवाद भी किशोरों की पढ़ने की लालसा को संतुष्ट करने के लिए किया गया था। भारतीय क्लासिक्स की कहानियों के पुनर्कथित संस्करणों में सबसे महत्त्वपूर्ण निम्न हैं– *भीष्मर* (पी. अनंतन पिल्लई, 1924), *पुराणमंजरी* (चेलनाट्टु अच्युत मेनन, 1924), *भारत कथा संग्रहम* (मूरकोत्तु कुमारन, 1932), *पंचतंत्र कथकळ* (ई.वी. कृष्ण पिल्लई, 1935)। माली (वी. माधवन नायर का उपनाम) की रचनाएँ– *माली रामायणम, माली भारतम्* और *माली भागवतम*– बाल साहित्य के इतिहास में चिरस्थायी स्थान रखती हैं। इनके अतिरिक्त कोट्टारत्तिल शंकुण्णी का भी विशेष उल्लेख किया जा सकता है, जिनकी *ऐतिह्यमाला* समग्र रूप से मलयालम साहित्य के इतिहास में अद्वितीय है। यद्यपि यह पूर्ण अर्थों में बाल साहित्य की विधा नहीं कही जा सकती है, फिर भी यह न सिर्फ़ किशोरों के लिए बल्कि सभी पीढ़ियों के मध्य सबसे लोकप्रिय रचना है। *ऐतिह्यमाला* विभिन्न प्रकार के विषयों जैसे कि किंवदंतियों, मिथकों, लोक कथाओं, परी कथाओं, पहेलियों, कहावतों आदि से युक्त एक शानदार रचना के रूप में आकर्षण का केंद्र बनती है।

यद्यपि बाल साहित्य में कहानियों की संख्या काफ़ी है, जिनमें से अधिकांश अन्य भाषाओं से अनुवाद या रूपांतरण हैं, मगर बाल साहित्य में उपन्यास और नाटकों की स्थिति अच्छी नहीं है। इनकी अपर्याप्तता को कुछ हद तक प्रख्यात लेखकों की कुछ मूल कहानियाँ पूरा करने में मदद करती हैं। ई.वी. कृष्ण पिल्लई की *बाललीला*, कैनिक्करा कुमार पिल्लई द्वारा रचित *बालहृदयम*, जी. शंकर कुरुप की *कथा कौतुकम* और कारूर नीलकंठ पिल्लई की *आनक्कारन* की बाल साहित्य में सराहनीय भूमिका है।

इस क्षेत्र में अन्य प्रमुख योगदानकर्ताओं में *पंडु पंडु* (कुंञ्ञुण्णी), *मल्लनुम मरणवुम* (उरूब), *साई परञ्ञ कथा* (ललितांबिका अंतरजनम), *कोच्चु नीलांडन* (पी. नरेंद्रनाथ), *मिठायिप्पोति* (सुमंगला), *माणिक्कक्कल्लू* (एम.टी. वासुदेवन नायर), *आनक्कुट्टी* (पी. ए. वारियर), *अप्पूप्पनताडियुटे स्वर्गयात्रा* (सिप्पी पिळ्ळप्पुरम), *कल्याणक्कुरुवी* (एम.एस. कुमार), *निलाविंटे भंङ्गि* (पेरुम्बडवम), *कुसृतिक्कुट्टन* (मुहम्म रमणन), *रंडु चंङ्डातिकळ* (जी. बालचंद्रन), *स्नेहसमुद्रम* (किळिरूरः राधाकृष्णन) आदि मुख्य हैं।

मलयालम बाल नाटक एक लंबी परंपरा का दावा नहीं करता, फिर भी कैनिक्करा कुमार पिल्लई (*वाल्यक्कारत्ति*), तिक्कोडियन (*मष्विल्लिंटे नाःट्टिटल*), अक्कित्तम (*ई एडत्ति नुःणे परःयू*), तायाट्टू शंकरन (*वनभोजनम*) आदि इस क्षेत्र में अग्रणी लेखक हैं। 1970 के बाद ही बाल नाटकों ने यहाँ अपने पैर जमाए हैं। इस दिशा में जी. शंकर पिल्लई के नेतृत्व में रंगप्रभात नामक बाल रंगमंच की स्थापना एक साहसिक कदम था। उन्होंने रंगप्रभात के माध्यम से अपने नाटक *पुष्पकिरीडम* सहित कुछ अन्य नाटकों का भी निर्देशन किया। इनके अतिरिक्त वी. आनंदक्कुट्टन (*पत्तु मुतल नालुवरे*) और अब्राहम जोसेफ (*पोन् पेना*) भी इस क्षेत्र के उल्लेखनीय नाम हैं।

मलयालम साहित्य का इतिहास लेखन

मलयालम साहित्य लगभग एक हज़ार वर्ष पुराना है। लेकिन बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक प्रारंभिक साहित्य के अस्तित्व के दस्तावेज़ी साक्ष्य प्राप्त करना बिल्कुल भी आसान नहीं है। फिर भी हमें लगभग ऐसे 20 साहित्यिक इतिहास दस्तावेज़ प्राप्त हैं, जिनसे पता चलता है कि युगों के दौरान केरल में साहित्यिक विकास कैसे हुआ। केरल के साहित्यिक इतिहास को आम तौर पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है– 1. व्यक्तिगत विद्वानों द्वारा रचित मलयालम रचनाएँ, 2. विद्वानों की साझेदारी रचनाएँ, और 3. साहित्यिक विधा के रूप में इतिहास की खोज करने वाली रचनाएँ।

मलयालम के साहित्यिक इतिहास पर पहला काम पी. गोविंदा पिल्लई द्वारा लिखित *मलयाल भाषा चरित्रम* (1881) है। इसके बाद आर. नारायण पणिक्कर द्वारा लिखित *केरल भाषा साहित्य चरित्रम* (1928) है। ये दोनों रचनाएँ मलयालम साहित्य के युगीन विकास की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास करती हैं, जिनमें पूर्व के कई लेखकों और उनकी कृतियों पर बड़े पैमाने पर सामग्री उपलब्ध है। लेकिन लेखकों द्वारा स्थानीय मिथकों और किंवदंतियों से निकाले गए कई निष्कर्ष इन कार्यों की आलोचनात्मक और वैज्ञानिक प्रकृति को कमज़ोर करते हैं। इनके बाद सबसे महत्त्वपूर्ण प्रयास उल्लूर एस. परमेश्वर अय्यर का *केरल साहित्य चरित्रम* (केएससी) (पाँच खंड) है, जिसे उनके मरणोपरांत केरल विश्वविद्यालय द्वारा 1953 और 1955 में प्रकाशित किया गया था। इसमें सात भागों में विभक्त 64 अध्याय हैं, जिनमें केरल साहित्य के लगभग हज़ार वर्ष के इतिहास को शामिल किया गया है। उल्लूर ने महान कवियों पर आलोचनात्मक नज़रिया अपनाया है। हालाँकि इन पर मुख्यतः यह आरोप लगाया जाता है कि उल्लूर ने समकालीन साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित कई लेखों का संदर्भ तो लिया है, लेकिन वह उन्हें स्वीकार नहीं करते हैं।

टी.एम. चुम्मार ने क्रमशः 1936 और 1955 में दो साहित्यिक इतिहास, *पद्य साहित्य चरित्रम* और *भाषा गद्य साहित्य चरित्रम* (मलयालम गद्य का इतिहास) प्रकाशित किए। पहला, मलयालम कविता के इतिहास के विश्लेषण के साथ-साथ समकालीन कवियों का उल्लेख भी करता है। *भाषा गद्य साहित्य चरित्रम* मलयालम भाषा एवं अक्षरों की उत्पत्ति, शिलालेख और इसी प्रकार के अन्य अभिलेखों का सुव्यवस्थित चित्रण करता है। *भाषाकौटिलीयम्, उदयमपेरूर सूनाहदोस के सिद्धांत* जैसे प्रारंभिक गद्य रूप, आयुर्वेद, तंत्र, ज्योतिष के क्षेत्र में मध्यकालीन लेखन भी उनकी चर्चा के दायरे में आते हैं। इनमें लेखक मिशनरियों और प्रिंट मीडिया के प्रभाव से एक नए गद्य के विकास का स्पष्ट रूप से उल्लेख करते हैं। गद्य-नाटक, उपन्यास, मलयालम में अनुवाद के प्रभाव, जीवनी, निबंध और यात्रावृत्त के विकास पर प्रकाश डालने वाली यह पहली कृति है।

साहित्य अकादमी से प्रकाशित पी.के. परमेश्वरन नायर का *मलयाल साहित्य चरित्रम* (1958) अंग्रेज़ी में लिखा गया एक साहित्यिक इतिहास है। इसमें गैर-मलयाली पाठकों को लक्षित किया गया है और यह योजना बनाई गई कि उन्हें मलयालम साहित्य के ऐतिहासिक विकास की एक झलक प्रदान की जा सके। बहरहाल, इसमें विस्तृत विवरण नहीं दिया गया है।

दूसरी श्रेणी में विद्वानों का एक साझा ग्रंथ *मलयालम साहित्य चरित्रम प्रस्थानंङळिलूटे* (1958) है, जो विभिन्न विधाओं और निश्चित अवधि के प्रमुख ग्रंथों, कवियों और मलयालम विधाओं के इतिहास पर ध्यान केंद्रित करता है। के.एम. जॉर्ज द्वारा संपादित और सी.एल. एंटनी, इलंकुलम कुञ्जन पिल्लई, जी. शंकरपिल्लई, के.एन. एषुत्तच्छन, डी.पी. उण्णी, वटक्कुमकूर राज राज वर्मा, एस.के. नायर, ए.डी. हरि शर्मा, गुप्तन नायर के सहयोग से यह विशाल रचना तैयार हुई। इसका दूसरा भाग, के. एम. जॉर्ज द्वारा संपादित, *आधुनिक साहित्य चरित्रम* (1998) आधुनिक विधाओं, जैसे– उपन्यास, कहानी, यात्रावृत्त, आलोचना, जीवनी आदि की उत्पत्ति और विकास का वर्णन करता है।

इस तरह का अगला काम, *मलयाल साहित्यम नूट्टनटुकळिलूटे* (1999-2003) है, जिसे पी.के. परमेश्वरन नायर मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसके पहले भाग में मलयालम भाषा की उत्पत्ति, *पाट्टु साहित्य, मणिप्रवाळम्*, गद्य का विकास, मौखिक परंपरा, *किलिप्पाट्टु, चंपू, आट्टक्कथा, तुल्लल, पाणा, और वंचिप्पाट्टु* साहित्य हैं। आरंभिक ग्रंथों की तुलना में यह अधिक व्यवस्थित और वैज्ञानिक है। दूसरा भाग, एम.जी.एस. नारायणन, श्रीधर मेनन, टी. भास्करन, एन.आर. गोपीनाथ पिल्लई और के.पी. शंकरन के संयुक्त प्रयास से तैयार हुआ था। इस भाग में मलयालम साहित्यिक इतिहास से संबंधित विभिन्न विषयों पर चयनित आलेख शामिल हैं।

एन. कृष्णा पिल्लई का *कैरलियुटे कथा* (1958) साहित्य में रुचि रखने वाले आम लोगों पर केंद्रित है। हालाँकि, इसे कोई विद्वतापूर्ण कार्य नहीं कहा जा सकता, लेकिन इसमें कई लेखकों के दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण हैं। आगे चलकर, एरुमेली परमेश्वरन पिल्लई द्वारा रचित *मलयाल साहित्य चरित्रम कालघट्टङळिलूटे* (1966, युगों के माध्यम से मलयालम साहित्यिक इतिहास) एक और उपलब्धि बनी, जिसमें मलयालम में प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति का विशद विवरण दिया गया है।

तीसरी श्रेणी की कृतियाँ मलयालम विधाओं के ऐतिहासिक विकास पर केंद्रित हैं। इस श्रेणी में महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं– *कविता साहित्य चरित्रम* (एम. लीलावती, 1980), *नाटक साहित्य चरित्रम* (जी. शंकर पिल्लई, 1981), *नोवल साहित्य चरित्रम* (के.एम. तरकन, 1978), *चेरुःकथा साहित्य चरित्रम* (एम.एम. बशीर, 2002), *ए सर्वे ऑफ़ मलयालम लिटरेचर* (के.एम. जॉर्ज, 1968), *ए हिस्ट्री ऑफ़ मलयालम लिटरेचर* (कृष्ण चैतन्य, 1971), और *ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ़ मलयालम लिटरेचर* (अयप्प पणिक्कर, 1997)। एम. अच्युतन का *चेरुकथा– इन्नःले इन्नुः* (लघु कहानी– कल और आज) भी उल्लेखनीय है।

आमतौर पर प्रमुख रचनाएँ मलयालम की उत्पत्ति, अन्य द्रविड़ भाषाओं के साथ इसके संबंध, संभावित क्षेत्रीय इतिहास और अधिकतम तथ्यात्मकता के साथ प्रमुख विधाओं और कवियों के उद्भव पर, चर्चा करती हैं। सभी कृतियाँ कम-से-कम प्रारंभिक, मध्यकालीन और आधुनिक काल विभाजन के प्रस्ताव प्रस्तुत करती हैं।

मलयालम में अनुवाद

मलयालम में कई विदेशी रचनाएँ अनुवाद, रूपांतरण, अनुकरण और पुनः सृजन (transcreation) के रूप में आईं। लेकिन आपातकाल के दशक में लेखन धीमा पड़ गया और अनुवाद में लगातार वृद्धि हुई। केरल भाषा संस्थान, शास्त्र साहित्य परिषद आदि की लोकप्रिय सामाजिक विज्ञान रचनाओं के अलावा मलयालम में साहित्यिक कृतियों के अनुवाद बहुत अधिक संख्या में हुए। सूक्ष्म विश्लेषण से पता चलता है कि 1950 के दशक से रूसी अनुवाद कम हो रहे हैं।

तालिका 2.19 : विदेशी भाषाओं से मलयालम में अनुवाद

	अंग्रेज़ी	रूसी	फ्रेंच	जर्मन	यूनानी	स्पेनिश	इटालियन	नॉर्वेजियाई	अरबी	चीनी	जापानी	किर्गिज़	फ़ारसी	पोलिश	डेनिश	चेक	बुल्गारियाई	लेटिश	स्वीडिश	अल्बानियाई	इंडोनेशियाई	पुर्तगाली	सर्बो-क्रोएशियाई	उक्रेनी	यिद्दीश	
1800-50	3		0	0	0																					3
1850-99	14		0	0	0																					14
1900-09	10		0	1	0																					11
1910-19	19		2	0	0																					21
1920-29	16		5	0	0										1											22
1930-39	27	2	9	0	0	1							2													41
1940-49	26	14	12	4	2	0	1	2					1	1	1											64
1950-59	86	51	36	4	8	1	5	4		3	1		2	3	1	1	1	1		1						208
1960-69	78	46	30	5	12	1	2	5	1	0	2	5		0	1	2	1	2					1	1	1	196
1970-79	41	18	5	8	2	2	3	0	2	3	1			0							1			1		87
1980-89	214	31	31	18	7	13	5	4	6	4	3	1		2					1	1		1				342
1990-91	2		1	2	1			1																		7
	536	162	131	42	32	18	16	16	9	10	7	6	5	6	4	3	2	2	2	1	1	1	1	2	1	1016

अनुवादकों में कवि वल्लत्तोल जैसे प्रसिद्ध मलयालम लेखक शामिल थे, जिन्होंने संस्कृत से *ऋग्वेद*, भास और कालिदास की कृतियों, *रामायण* और *पद्मपुराण* का अनुवाद किया और प्राकृत से हलन की विशाल रचना *गाथासप्तशती* का अनुवाद किया। कोशी, सी.जे थॉमस, चंङमपुषा, के.एम. पणिक्कर, मलयाट्टूर, मुट्टत्तुवर्की, के. सच्चिदानंदन, नालाप्पाट्टु, अय्यप्प पणिक्कर आदि कुछ अन्य प्रमुख अनुवादक हैं।

संस्कृत से मलयालम में अनुवाद

संस्कृत ने मलयालम के साथ-साथ इसके विभिन्न साहित्यिक प्रभागों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मलयालम में लिखित साहित्य की शुरुआत संस्कृत साहित्य के अनुवादों से ही हुई है। संस्कृत साहित्य के समृद्ध संग्रह के कारण संस्कृत अनुवाद मलयालम भाषा के विकास के लिए एक शक्तिशाली मंच के रूप में सामने आया।

उदाहरण के लिए, काव्य के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले कवि चीरामन के *रामचरितम* में अनुवाद की प्रथा का आरंभ देख सकते हैं। *रामचरितम* वाल्मीकि *रामायण* के *युद्धकांड* का एक स्वतंत्र अनुवाद है। इसके अतिरिक्त अय्यप्पिला आशान का *रामकथापाट्टु* और निरणम की कृतियाँ भी उल्लेखनीय हैं। परंतु एक संपूर्ण कविता का पहला अनुवाद एषुत्तच्छन द्वारा किया गया था। यह माना जाता है कि वे सोलहवीं शताब्दी में जीवित थे। उनकी *अध्यात्म रामायणम किळिप्पाट्टु* और *श्री महाभारतम किळिप्पाट्टु* दोनों ही अनुवाद हैं। अन्य अनुवादों में कोट्टायम केरलवर्मा की सत्रहवीं शताब्दी में लिखित *वाल्मीकि रामायण* और नांबियार का अठारहवीं शताब्दी का *पंचतंत्रम किळिप्पाट्टु* हैं।

केरलवर्मा युग संस्कृत कविताओं के अनुवाद का एक महत्त्वपूर्ण चरण है। जिस रचना ने मलयालम नाटक की शुरुआत को चिह्नित किया, वह था वलियकोयि तंपुरान का *शाकुंतलम* का अनुवाद, उसके काव्यानुवाद भी ध्यातव्य हैं। नीलकंठ दीक्षितर के *अन्योपदेश शतकम* का उनका अनुवाद भी काफ़ी प्रसिद्धि पा चुका है। इस चरण में, संस्कृत कविताओं के अनुवाद में भाषा

कवियों ने एक विवादास्पद भावना दिखाई। इस दौरान कुंञ्ञिकुट्टन तंपुरान द्वारा *महाभारत* और वल्लत्तोल द्वारा *वाल्मीकि रामायणम* के अनुवाद भी उल्लेखनीय स्थान रखते हैं। अन्य अनुवाद कार्य, जैसे– वल्लत्तोल का हलन की प्राकृत कविता का *ग्रामसौभाग्यम* शीर्षक से अनुवाद, किळिमानूर राघववरियार का *माघम* का अनुवाद, पुलियूर पुरुषोत्तमन नंबूदिरि का *नैषधम* का अनुवाद, के.सी. शिवपिल्लई का मेलपत्तूर का *नारायणीयम* का अनुवाद विशेष उल्लेखनीय हैं। इसी काल के संस्कृत ग्रंथों के मलयालम अनुवादक कुंडूर नारायण मेनन, परवूर शाममेनवन और मुष़ङोट्टुविला कृष्णपिल्लई आदि हैं।

कालिदास की रचनाएँ भी काव्यानुवाद में काफ़ी प्रसिद्ध हैं। ए.आर. कुंडूर, के.पी. नारायण पिशारटि और के.एम. पणिक्कर जैसे अन्य लोग भी कालिदास की कृतियों के अनुवादक हैं। *मेघसंदेशम्* के अनुवाद और उस विधा का अनुकरण कर लिखी गई अन्य रचनाओं ने संदेशकाव्य (messenger poetry) को समृद्ध किया। जो भी हो, मलयालम कविता के इतिहास में, संस्कृत कृतियों के अनुवाद को नकारा नहीं जा सकता।

इसी प्रकार भाषा गद्य के प्रारंभिक चरणों में भी संस्कृत का प्रभाव दिखाई देता है। *भाषाकौटिलीयम*, जिसे बारहवीं शताब्दी में लिखा गया माना जाता है, एक उल्लेखनीय कार्य है। महान कवि उल्लूर ने एक बार टिप्पणी की थी कि कौटिल्य के *अर्थशास्त्र* में संस्कृत में तीन प्राचीन समीक्षाएँ हैं, लेकिन मलयालम में एक ही उपलब्ध है। यह कृति *अर्थशास्त्र आट्टप्रकारं* का स्वतंत्र अनुवाद है। *क्रमदीपिका* और *दूतवाक्य* सभी इसी परंपरा की आगे की कड़ियाँ हैं। उपर्युक्त अवलोकन इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि मलयालम में कविता और गद्य ने पहला कदम संस्कृत की मदद से ही उठाया था।

संस्कृत नाटक का पहला प्रकाशित अनुवाद केरलवर्मा वलियकोयि तंपुरान का *मणिप्रवाळशाकुंतलम* (1882) है। यद्यपि, साहित्यिक इतिहासकारों ने टिप्पणी लिखी है कि आयिल्यम तिरुनल महाराजा और वेलुत्तेरि केशवन वैद्य द्वारा एक संयुक्त अनुवाद *भाषाशाकुंतलम* 1861 से पहले ही लिखा जा चुका था, लेकिन उसका भी प्रकाशन 1882 में ही हुआ। संस्कृत नाटकों के अनुवाद के कारण मलयालम में एक अनूठी नाटकीय परंपरा विकसित हुई है। ए.आर. राजराजवर्मा का *मलयाल शाकुंतलम*, रामभद्रदीक्षित के *जानकी परिणयम* (1889) का चात्तुक्कुट्टी मन्नाडियार द्वारा किया गया अनुवाद, के. नारायण मेनन का *मालविकाग्निमित्रम* (1890) का अनुवाद, भवभूति के *उत्तररामचरितम* का चम्पत्तिल चात्तुक्कुट्टी का अनुवाद, कुंञ्ञिकुट्टन तंपुरान का कालिदास के *अभिज्ञानशाकुंतलम* का अनुवाद, शक्तिभद्रन के *आश्चर्यचूड़ामणि* का अनुवाद, वल्लत्तोल के संस्कृत नाटकानुवाद और कई अन्य रचनाएँ नाटक परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

मलयालम के साहित्यिक इतिहास में जिन प्राच्य (oriental) विचारों को स्वीकार किया गया उनमें से अधिकांश का जन्म संस्कृत में हुआ है। इसके अलावा संस्कृत की अधिकांश साहित्यिक आलोचनाओं का मलयालम में भी अनुवाद किया गया। धर्मराज का *बालरामभारत*, के.पी. नारायणपिषारटि का *नाट्यशास्त्र*, डॉ. टी. भास्करन का *औचित्यविचारचर्चा*, के. सुकुमारपिल्लई का *व्यक्तिविवेक* का अनुवाद इस संदर्भ में उल्लेखनीय कार्य हैं। अतः मलयालम आलोचना के वैचारिक आधार को मज़बूत करने में संस्कृत साहित्यिक आलोचना ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मलयालम व्याकरण महाकाव्य और *वेद*, सभी संस्कृत में एक मज़बूत आधार के साथ विकसित हुए। वल्लत्तोल द्वारा *ऋग्वेद* का अनुवाद, *भगवत गीता* और *पाणिनीयम्* के मलयालम अनुवाद इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं।

भाषा के साथ-साथ साहित्य के विकास के महत्त्वपूर्ण चरणों में संस्कृत अनुवादों ने एक अभूतपूर्व भूमिका निभाई। केरल साहित्य अकादमी द्वारा 1973 में प्रकाशित मलयाल ग्रंथ सूची में लगभग 541 संस्कृत अनुवाद कार्यों का उल्लेख किया गया है।

अंग्रेज़ी से मलयालम में अनुवाद

मलयालम में अनुवाद के लिए अंग्रेज़ी सबसे प्रचुर स्रोत भाषा रही है। दुनिया में अंग्रेज़ी की स्थिति और मलयालम भाषी क्षेत्रों के औपनिवेशिक इतिहास पर विचार करें तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

अंग्रेज़ी से ज़्यादातर अनुवाद कथा साहित्य और नाटकों का हुआ है। कविता के अनुवाद पर उतना ज़ोर नहीं दिया गया। हालाँकि हाल में कवि-अनुवादक सच्चिदानंदन द्वारा इस दिशा में एक व्यवस्थित प्रयास किया गया है। यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत से "वफादार" (faithful) अनुवाद की पश्चिमी अवधारणा मलयालम साहित्य के सौंदर्यशास्त्र में भी अंतर्निहित होने लगी थी। अन्य ग्रंथों के अलावा, शेक्सपियर और ऑस्कर वाइल्ड के नाटकों के कई अनुकूलित और मुक्त अनुवाद होने लगे थे। दिलचस्प बात यह है कि अंग्रेज़ी से पहला अनुवाद शायद *घातकवधम* है, जो कि सारा कोलिंस और रिचर्ड कोलिंस के उपन्यास *स्लेयर स्लेन* का अनुवाद है, जो केरल की वस्तुस्थिति पर लिखा गया एक "मिशनरी उपन्यास" है।

कई उपनिवेशी संस्कृतियों के विपरीत, अंग्रेज़ी से अनुवाद ने मलयालम साहित्य के सिद्धांत के गठन पर गंभीर प्रभाव नहीं छोड़े हैं। यद्यपि यह औपनिवेशिक परिदृश्य के ही उत्पाद थे इसके बावजूद इन अनुवादों ने मलयालम कथा साहित्य को प्रभावित नहीं किया। कवियों के विपरीत, अधिकांश प्रारंभिक मलयालम कथाकार (अप्पू नेडुङाडि से वैक्कम मोहम्मद बशीर तक) अंग्रेज़ी-शिक्षित, या कम-से-कम, अंग्रेज़ी जानने वाले अभिजात वर्ग से आते थे। अंग्रेज़ी जानने वाले कुलीन लेखकों ने व्यवस्थित मॉडल के रूप में ग्रंथों का अनुवाद करने के बजाय पश्चिमी मॉडलों की नकल करना पसंद किया जो उनके सामने थे न कि उन लेखकों के अनुरूप जो अंग्रेजी नहीं जानते थे। आजकल अकादमिक संस्थानों द्वारा वित्त पोषित कुछ परियोजनाएँ, मुख्य रूप से सैद्धांतिक और दार्शनिक ग्रंथों के अंग्रेज़ी से अनुवाद की ओर प्रवृत्त हो रही हैं।

बीसवीं शताब्दी के मध्य दशकों में सामान्यतः अंग्रेज़ी ने माध्यमिक स्रोत भाषा के रूप में भी काम किया है। अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से ही विभिन्न यूरोपीय भाषाओं के ग्रंथ बड़ी संख्या में मलयालम पहुँचे। सबसे बड़ी संख्या फ्रांसीसी और रूसी रचनाओं की थी, इनमें सबसे उल्लेखनीय नालापाट्टु नारायण मेनन, विक्टर ह्यूगो के *लेस मिजरेबल्स* का अनुवाद *पावङ्ङल* है, जो 1887 में प्रकाशित हुआ। इसको इसेबल एफ. हैपगूड के अंग्रेज़ी अनुवाद के आधार पर तैयार किया गया था। इसके अतिरिक्त, अंग्रेज़ी ने अरबी, जापानी और चीनी जैसी प्रमुख गैर-यूरोपीय भाषाओं के ग्रंथों के लिए भी एक द्वितीयक (secondary) स्रोत भाषा के रूप में काम किया है। वर्तमान में, गतिशील अंग्रेज़ी-मलयालम प्रकाशन उद्योग और बड़ी संख्या में अनुवादकों की संख्या यह सुनिश्चित करती है कि अंग्रेज़ी से अनुवाद की मात्रा किसी भी अन्य भाषा के अनुवादों से अधिक है। एक जीवंत प्रकाशन उद्योग यह दावा करता है कि दुनियाभर के साहित्यकारों, जिनमें से कुछ अंग्रेज़ी में लिखते हैं, की प्रमुख रचनाओं के विमोचन या उन्हें नोबेल जैसे साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित होने के कुछ सप्ताह के भीतर ही उनका मलयालम अनुवाद उपलब्ध करा दिया जाता है। अनुवादों की इस सूची में मार्केज, महफूज़, सरमागु, येलनिक, ग्रास और लोसा जैसे लेखक शामिल हैं। परंतु दुर्भाग्यवश अंग्रेज़ी से मलयालम में अनुवाद की एक पूर्ण, या कम-से-कम एक व्यावहारिक, ऐतिहासिक ग्रंथ सूची अभी तक संकलित नहीं हुई है। (गोवी, 1995)

ज्ञान ग्रंथों (knowledge text) का अनुवाद ज़्यादातर उपनिवेशवाद के बाद की घटना है, जिसमें संभवतः जल्द ही राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की विभिन्न परियोजनाओं के शुरू होने के साथ और तेज़ी आएगी। कई अनुवादों को पाठ्यपुस्तकों के रूप में भी शामिल किया गया है, खासकर तृतीयक स्तर पर। हालाँकि, तथ्य यह है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम अभी भी ज़्यादातर अंग्रेज़ी माध्यम से संचालित होते हैं, और ऐसे अनुवादों की आवश्यकता को सीमित रखा गया है। लेकिन अंग्रेज़ी निश्चित रूप से मलयालम की "दुनिया के लिए खिड़की" रही है। अंग्रेज़ी से मलयालम अनुवाद में शब्दानुवाद, भावानुवाद, अनुकरण और अंतर्विधाई (trans-genre) अनुकूलन जैसे अनुवाद के संभाव्य प्रकारों का उपयोग किया गया।

विदेशी भाषाओं की रचनाओं के मलयालम अनुवाद में शेक्सपियर के अनुवाद को एक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। आधुनिक अंग्रेज़ी शिक्षा ने पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता पैदा की, जिससे भाषा शिक्षण में शेक्सपियर के नाटकों की माँग में वृद्धि हुई। अतः मलयालम अनुवादों ने रोमांटिक कॉमेडी और त्रासदियों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया और ज़्यादातर ऐतिहासिक नाटकों को नज़रअंदाज़ कर दिया। हालाँकि, अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में *शेक्सपियर संपूर्ण कृतिकल* के 2000 में प्रकाशित होने के साथ पूरे शेक्सपियर कॉर्पस का मलयालम में अनुवाद किया गया। इसके अतिरिक्त शेक्सपियर की कुछ कृतियों के अनेक अनुवाद भी उपलब्ध होने लगे, जैसे– *ओथेलो* के ग्यारह, *मैकबेथ* के दस, *मर्चेन्ट ऑफ़ वेनिस* के नौ अनुवाद मलयालम में निकले, और ये अनुवाद तत्कालीन प्रमुख विचारधाराओं की प्रतिक्रिया के परिचायक बने। शाब्दिक अनुवाद में भी एक उल्लेखनीय प्रयास प्रतिभाशाली मलयालम कवि कुंञ्ञिकुट्टन तंपुरान का रहा, जिन्हें अंग्रेज़ी कम आती थी, लेकिन *हेमलेट* और *ओथेलो* का अनुवाद करने के लिए उन्होंने ए. रामचंद्रन नेडुङाडि को निर्देशक के रूप में रखा था।

अंग्रेज़ी से इतर अन्य भाषाओं से अनुवाद

अंग्रेज़ी के अलावा अन्य भाषाओं से मलयालम अनुवाद कुछ विशिष्ट ऐतिहासिक कालखंडों और कुछ विशिष्ट प्रतिमानों (pattern) में किए गए हैं। प्रारंभ में, साहित्य, व्याकरण, धर्म और चिकित्सा जैसे विभिन्न संस्कृत ग्रंथों के कई प्रोक्तियों (discourses) से अनुवाद होते थे। इनमें से कई अनुवाद भारतीय परंपरा का अनुसरण करते हुए स्वतंत्र प्रतिपादन या पुनर्लेखन ही हुआ करते थे जिनके कथानक से लेकर चरित्र चित्रण तक कभी-कभी सब कुछ मूलतः बदल दिया जाता था। अष्टांगहृदयम जैसे ग्रंथ, जो आयुर्वेदिक चिकित्सकों के व्यावहारिक उपयोग थे, उनका पुनर्लेखन किया गया अथवा टिप्पणियों के साथ आंशिक अनुवाद किया गया। विशाल किंतु अधिकतर अनिर्दिष्ट अनुवाद अरबी से हुए हैं संभवतः जिनकी शुरुआत सोलहवीं शताब्दी में हो गई थी। हालाँकि कुरान का पूर्ण अनुवाद 1870 में पूरा हुआ था, धार्मिक ग्रंथों, प्रवचनों, भजनों, अरब मिथकों, किंवदंतियों और लोक कथाओं के पुनर्लेखन और पुनर्कथनों का अनुवाद (आंशिक या पूर्ण रूप से) एक सतत प्रक्रिया रही है, जिसे उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में पब्लिशिंग हाउस सी.एच. मोहम्मद एंड संस और हाल ही में इस्लामिक पब्लिशिंग हाउस की स्थापना से और बल मिला। आधुनिक अरबी ग्रंथों के अनुवाद, विशेष रूप से महफूज जैसे प्रमुख लेखकों के उपन्यास, हाल में मुख्यधारा के प्रकाशन गृहों द्वारा किए जा रहे हैं।

अन्य भारतीय भाषाओं से अनुवाद काफ़ी हद तक बीसवीं शताब्दी का है, हालाँकि सत्रहवीं शताब्दी से कम-से-कम तमिल संगम साहित्य के अनुवाद तो हुए ही हैं। अनुवाद में सर्वाधिक प्रतिनिधित्व वाली भाषाएँ बांग्ला और तमिल रही हैं इसके अलावा अन्य दो द्रविड़ भाषाओं कन्नड़ और तेलुगु तथा हिंदी का भी अच्छा प्रतिनिधित्व है। टैगोर और बिमल मित्रा जैसे कुछ प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं के मलयालम अनुवाद तो पूरी तरह से उपलब्ध हैं। प्रारंभिक अनुवाद शौकिया अनुवादकों का काम था, जिन्होंने बीसवीं शताब्दी के अंत तक अच्छी तरह से अपना काम करना जारी रखा। उनमें सबसे उल्लेखनीय नाम एम.एन. सत्यार्थी का था, जिन्होंने हिंदी, उर्दू, पंजाबी और बांग्ला से अनुवाद किया। बीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही में केरल साहित्य अकादमी और राज्य भाषा संस्थान जैसे शैक्षणिक संस्थानों ने अन्य भारतीय भाषाओं से व्यवस्थित अनुवाद किया। केंद्र साहित्य अकादमी ने भी बड़ी संख्या में भारत की अन्य भाषाओं के लेखकों के ग्रंथों का मलयालम में अनुवाद किया है। इनके अलावा राज्य में प्रमुख व्यावसायिक प्रकाशकों और *मातृभूमि* जैसी पत्रिकाओं की भूमिका, जिन्होंने भारतीय भाषाओं से अनुवादों के विशेष संस्करण निकाले हैं, भी स्मरणीय हैं। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में मलयाली प्रवासियों के अस्तित्व ने उन अनुवादकों के उद्भव को सुनिश्चित किया है जो उन क्षेत्रों की भाषाओं और मलयालम के बीच अनुवाद-सेतु का काम करते हैं। 1990 के दशक में मुख्यधारा व हाशिए के साहित्य पर नई उत्तर-औपनिवेशिक धारणा और सांस्कृतिक पहचान की दावेदारी की आवश्यकता ने मलयालम में अन्य भारतीय भाषाओं से अनुवाद की गतिविधि को भी तेज़ कर दिया।

पिछली शताब्दी के सत्तर और अस्सी के दशक में मलयालम में अनुवाद हेतु रूसी एक अन्य स्रोत भाषा थी। 1966 में सोवियत सूचना कार्यालय की स्थापना और प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स द्वारा भारतीय भाषाओं में अनुवाद शुरू करने के बाद बड़ी संख्या में रूसी ग्रंथ, शास्त्रीय राजनीतिक ग्रंथ, बाल साहित्य और लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकों का मलयालम में अनुवाद होने लगा। रूसी भाषा ने सोवियत संघ की कई भाषाओं, विशेष रूप से लोक कथाओं सहित बाल साहित्य के लिए, एक माध्यमिक स्रोत भाषा के रूप में भी काम किया। अनुवादक दंपति गोपालकृष्णन-ओमाना के नाम उल्लेखनीय हैं। "मॉस्को गोपालकृष्णन" के नाम से मशहूर गोपालकृष्णन सत्तर के दशक की शुरुआत से एक-चौथाई शताब्दी तक मॉस्को में रहे, उन्होंने सीधे रूसी से मलयालम में अनुवाद किया। दुर्भाग्यवश इन अनुवादों का दस्तावेज़ीकरण नहीं किया गया। सोवियत संघ के विघटन के बाद इनमें से अधिकांश शीर्षक मुद्रण से बाहर हो गए हैं।

मलयालम और हिंदी

भारतीय साहित्य की अवधारणा को विभिन्न भाषाओं और विभिन्न साहित्य संग्रहों की निरंतरता के रूप में देखा जाता है, हालाँकि इसमें सामाजिक और सांस्कृतिक एकता की अंतर्धारा है। साहित्य अकादमी जैसी संस्था इस बात पर ज़ोर देती है कि भले ही भारतीय साहित्य विभिन्न भाषाओं में लिखा गया हो, लेकिन वह एक ही है, जो उनकी सामान्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को उजागर करता है, और इसे प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन अनुवाद है।

हिंदी में मलयालम अनुवाद का इतिहास अपेक्षाकृत नया है। मलयालम में बांग्ला के बाद दूसरी सबसे अधिक अनूदित भाषा हिंदी है। प्रारंभिक प्रकाशन, पत्रिकाओं के ज़रिए होते थे और प्रारंभिक अनुवाद दुर्गा प्रसाद खत्री के जासूसी उपन्यासों से हुआ। आज प्रेमचंद और यशपाल के लगभग सभी उपन्यासों का मलयालम में अनुवाद उपलब्ध है। उस समय केवल पुरस्कृत उपन्यासों का अनुवाद हुआ करता था। 1994 तक 130 पुस्तकों का अनुवाद हिंदी से मलयालम में और 54 पुस्तकों का अनुवाद मलयालम से हिंदी में किया जा चुका था।

जिस प्रकार विदेशी भाषाओं से अनुवाद के लिए अंग्रेज़ी एक माध्यम भाषा है, उसी प्रकार शायद अन्य भारतीय भाषाओं से अनुवाद के लिए हिंदी सबसे उपयुक्त माध्यम है। किसी मलयालम पुस्तक का मराठी, पंजाबी, तेलुगु या कन्नड़ में अनुवाद करना तब आसान हो जाता है, जब उसे हिंदी अनुवाद के माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित किया जाए। किसी अन्य भारतीय भाषा से मलयालम में अनुवाद करते समय भी यही सच है। इसी प्रक्रिया से पी. माधवन पिल्लई ने मराठी के *ययाति* का और बांग्ला के *प्रथम प्रतिश्रुति* का हिंदी से मलयालम में अनुवाद किया।

इसी प्रकार तुलसीदास के *रामचरितमानस* का विभिन्न लेखकों द्वारा मलयालम में अनुवाद किया गया था। प्रेमचंद और यशपाल के उपन्यासों का जब मलयालम में अनुवाद किया गया, तो बहुत से केरलवासियों की रुचि हिंदी साहित्य में बढ़ी। 1950 के बाद से हिंदी से मलयालम में अनुवादों की संख्या में वृद्धि हुई है। पी. माधवन पिल्लई, एम.एन. सत्यार्थी, ए. रामचंद्र देव, जी. सत्यन, ई.के. दिवाकरन पोट्टी, पी.ए. वारियर और वी.डी. कृष्णन नांबियार उस समय के प्रख्यात अनुवादक थे।

साहित्य की अन्य शाखाओं की तुलना में काव्यानुवाद बहुत कम हुआ है। 1995 में जयशंकर प्रसाद की *कामायनी* का मलयालम में अनुवाद उल्लेखनीय है. वी. रवींद्रन ने चंद्र गुप्त विद्यालंकर के हिंदी एकांकी *एकांकङ्ल* का अनुवाद किया है, तो वहीं प्रेमचंद, यशपाल, फणीश्वर नाथ रेणु, आशापूर्णा देवी आदि की कहानियों का मलयालम में विभिन्न लेखकों द्वारा अनुवाद किया गया है।

साहित्यिक कृतियों के अलावा कई ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक पुस्तकें भी हिंदी से मलयालम में अनूदित हुई हैं। कोलकाता से *विशाल भारत* और *विश्वमित्र*, दिल्ली से *देवनगर* आदि हिंदी पत्रिकाओं ने भी मलयालम-हिंदी अनुवाद प्रकाशित किए हैं।

यद्यपि मलयालम से हिंदी में अनूदित पुस्तकों की संख्या हिंदी से मलयालम में अनूदित पुस्तकों की संख्या से कम मानी जाती है। फिर भी एषुत्तच्छन का *अध्यात्म रामायणम*, कुमारन आशान, उल्लूर, वल्लत्तोल, अय्यप्प पणिक्कर, ओ.एन.वी कुरुप, के.जी. शंकर पिल्लई और पुतुश्शेरी रामचंद्रन की कविताओं का हिंदी में अनुवाद किया गया।

इंदुलेखा, चेम्मीन, मार्तंडवर्मा, राम राज बहादुर, अरनाषिक नेरम, ओरु देशत्तिन्टे कथा, वेरुकल, मञ्ञु, बाल्यकाल सखी, रंडामूष़म, मरुन्नु, एणिप्पडिकल जैसे उपन्यास और तोप्पिल भासी, एन. कृष्ण पिल्लई, सी.एन. श्रीकंठन नायर, सी.जे. थॉमस और टी.एन. गोपीनाथन नायर के नाटकों का भी हिंदी में अनुवाद किया जा चुका है।

अभय देव, लक्ष्मण शास्त्री और भारती विद्यार्थी प्रारंभिक दिनों में तीन प्रतिष्ठित अनुवादक थे। उनका उद्देश्य मलयालम के उल्लेखनीय साहित्यिक विचारों को हिंदी लोगों से साझा करना था। इस क्रम में रत्नमयी दीक्षित का नाम भी स्मरणीय है, जिन्होंने मानकीकृत अनुवाद में प्रसिद्धि पाई। 1960 के बाद सुधांशु चतुर्वेदी ने कई किताबों, जैसे सुकुमार अषीक्कोड की *तत्वमसि* और केशवदेव की *ओडयिल निन्नु* और *कांचनसीता*, टी.एन. गोपीनाथन नायर की *सुधा* और *परीक्षा* का अनुवाद किया। 1965 के बाद से इन अनुवादों को काफ़ी गंभीर माना जाने लगा। जब जी. शंकर कुरुप को प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया, तो उनके काव्य संग्रह *ओडक्कुष़ल* को पुरस्कार समिति द्वारा हिंदी में अनूदित किया गया। इसके साथ ही उनकी सभी कविताओं का जी.एन. पिल्लई और लक्ष्मी चंद्र जैन द्वारा हिंदी में अनुवाद किया गया। इसके बाद भारतीय ज्ञानपीठ ने बालामणि अम्मा की 56 कविताओं का भी हिंदी में अनुवाद किया। एस.के. पोट्टक्काडु और तकष़ी को ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किए जाने के बाद विभिन्न रचनाओं के अनुवाद करने के लिए कई संस्थान कार्यरत हुए। वैक्कम मोहम्मद बशीर, मलयाट्टूर रामकृष्णन, एम.टी. वासुदेवन नायर, के.पी. अप्पन आदि की रचनाओं का भी इस काल में अनुवाद हुआ।

नारायण देव, एन. चंद्रशेखरन नायर, कवियूर शिव राम अय्यर, पी. नारायणन, ए. अरविंदाक्षन, एम. षणमुखन, हरिहरन उण्णित्तान, एम.एस. विनयचंद्रन आदि प्रख्यात काव्यानुवादक हैं। एन.पी. कुट्टन पिल्लई का *अध्यात्म रामायण* और पी.आर. भास्करन नायर का *तुल्लल कृतिकल* के नाम भी उल्लेखनीय हैं। अनुवाद में माध्यमों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आकाशवाणी ने अनेक अनूदित रचनाओं का प्रसारण किया, जिसके लिए कई वृत्तचित्रों का हिंदी से मलयालम और मलयालम से हिंदी में अनुवाद किया गया। आज राष्ट्रीय स्तर पर *कादम्बिनी, आजकल, समकालीन भारतीय साहित्य* और *भाषा* जैसी पत्रिकाएँ अनुवाद प्रकाशित कर रही हैं। चेन्नई से *दक्षिण भारत पत्रिका*, कोच्चि से *साहित्य मंडल पत्रिका*, केरल हिंदी प्रचार सभा से *केरल ज्योति*, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, एर्णाकुलम से *केरल भारती*, हिंदी विद्यापीठ, तिरुवनंतपुरम से *संग्रथन* भी मलयालम कृतियों के अनुवाद प्रकाशित करने वाली पत्रिकाएँ हैं।

केंद्र साहित्य अकादमी, क्षेत्रीय साहित्य अकादमियाँ और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (नेशनल बुक ट्रस्ट) मलयाली पाठकों के लिए अन्य भाषाओं की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों और लेखकों का परिचय कराते हैं। लेकिन क्षेत्रीय भाषा के कार्यों का एक बड़ा हिस्सा अभी भी अपरिचित है। साहित्यिक संवेदनशीलता के अतिरिक्त सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक कारण भी अनुवाद में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज हिंदी और मलयालम दोनों में साहित्यिक प्रवृत्तियाँ समानांतर रूप से आगे बढ़ती हुई प्रतीत होती हैं, जैसे मलयालम में स्वच्छंदतावाद (काल्पनिकता) अपने अद्‌भुत रंगों में था, तो हिंदी में छायावाद। इसी प्रकार यथार्थवाद, अति-यथार्थवाद और आधुनिकतावाद भी दोनों भाषाओं में लगभग एक ही साथ आगे बढ़े। शायद यही कारण हो सकता है कि जहाँ प्रेमचंद के उपन्यासों को मलयालम में तो वहीं तकष़ी के उपन्यासों को हिंदी भाषा में सहर्ष स्वीकार किया गया।

अनुवाद ही वह सार्थक माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने सांस्कृतिक विचारों को एक-दूसरे के मध्य स्थानांतरित कर सकते हैं, और यह किसी भी देश की राष्ट्रीय अखंडता के लिए बहुत आवश्यक है। निश्चित रूप से सांस्कृतिक अखंडता के पीछे साहित्य ही प्रेरक शक्ति है, जिसमें अनुवाद एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

मलयालम से अन्य भाषाओं में अनुवाद

मलयालम से अंग्रेज़ी और अन्य यूरोपीय भाषाओं में होने वाले अनुवादों की संख्या 1947 से पूर्व बहुत सीमित थी। केरल साहित्य अकादमी द्वारा 1976 में प्रकाशित अन्य भाषाओं में अनूदित मलयालम ग्रंथ सूची में केवल तीन उल्लेखनीय नाम हैं, जिनमें ओ चंतु मेनन की रचना *इंदुलेखा* (1889) का डुमरग्यूओ द्वारा 1890 में किया गया अनुवाद प्रमुख है। मलयालम से अब तक अनूदित अधिकांश ग्रंथ साहित्यिक प्रकृति के हैं, जिनमें कथा साहित्य प्रमुख है।

केरल साहित्य अकादमी और केंद्र साहित्य अकादमी दोनों ने मलयालम साहित्य के विभिन्न ग्रंथों को अंग्रेज़ी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिनमें कथा साहित्य के अलावा, नाटक और कविता में कम-से-कम उन रचनाओं को उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया, जो रचनात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट थीं। इसके अलावा लेखकों और साहित्यिक इतिहास के कुछ अध्ययनों का अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं में भी अनुवाद किया गया था। इसी प्रकार बीसवीं शताब्दी के सत्तर और अस्सी के दशक में कई मलयालम उपन्यासों का सोवियत और पूर्वी यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद किया गया।

पिछली शताब्दी के अस्सी के दशक में चार लेखक-अनुवादकों का उदय हुआ– कथाकार ओ.वी. विजयन, वी.के. एन. (वी. के. नारायणन कुट्टि नायर का छद्म नाम), सी. राधाकृष्णन और कवि-आलोचक सच्चिदानंदन, जिन्होंने अपनी कई कृतियों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। हालाँकि इन अनुवादों पर अधिक आलोचनात्मक ध्यान नहीं दिया गया क्योंकि ये उत्तर औपनिवेशिक संदर्भ में हाशिए की भाषा से एक वर्चस्ववादी भाषा में, लेखक-अनुवादों के मामलों के अध्ययन के लिए कोई मूल्यवान सामग्री (कई साहित्य में शायद ही उपलब्ध) नहीं प्रदान करते। इनके आधा दर्जन ग्रंथों में से अपवादों को छोड़ दें तो, मलयालम से अंग्रेज़ी में अनूदित साहित्य ने अंतर्राष्ट्रीय पाठकों को लक्षित नहीं किया, भले ही ये अनुवाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित उन प्रकाशकों के भारतीय प्रभागों द्वारा प्रकाशित किए गए हों, जिन्होंने वैश्विक स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। इनका लक्षित पाठक अंग्रेज़ी-शिक्षित भारतीय मध्यम वर्ग था।

भारतीय विश्वविद्यालयों के साहित्य विभागों में उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययनों के लोकप्रिय होने से बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों के दौरान भारतीय भाषाओं से अंग्रेज़ी में साहित्यिक अनुवादों की भरमार हो गई। अकादमिक और व्यावसायिक दोनों प्रकाशकों ने सामान्य पाठकों और अकादमिक समुदाय दोनों के उद्देश्य से सैकड़ों अनुवाद तैयार किए। भारत में अधिकांश भाषाई समुदायों में लेखकों और बुद्धिजीवियों के बीच भारतीय भाषाओं के मध्य सीधे अनुवाद की आवश्यकता पर जागरूकता बढ़ी, जिसने संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेज़ी का उपयोग करने के बजाय भौगोलिक दृष्टि से सन्निहित भारतीय साहित्य के बीच गतिशील अनुवाद गतिविधि को जन्म दिया। संभवतः 1990 और बीसवीं शताब्दी के पहले दशक में तमिल और मलयालम के बीच अनुवाद का बृहत् प्रसार इसका सशक्त उदाहरण है।

ऑनलाइन पत्रिकाओं और ब्लॉगिंग के उद्भव से लेखकों और अनुवादकों द्वारा अन्य भारतीय भाषाओं की तरह मलयालम से विशेषकर अंग्रेज़ी में अनुवाद गतिविधि को बढ़ावा मिला है। ऑनलाइन अनुवाद गतिविधि से इतिहास में पहली बार कथा साहित्यानुवाद से ज़्यादा कविताओं के अनुवाद हुए। *पोएट्री इंडिया इंटरनेशनल* और अन्य यूरोपीय भाषाओं की ऑनलाइन पत्रिकाओं में अंग्रेज़ी अनुवाद द्वारा बड़ी संख्या में मलयालम कवियों को पाठक मिले हैं। लेखकों के ऑनलाइन वार्तालाप ने भी मलयालम साहित्य को सह्य पर्वतमाला और अरब सागर के पार ले जाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भाषा उपयोग के क्षेत्र

शिक्षा में मलयालम भाषा

केरल समाज की शैक्षिक प्रक्रिया में मलयालम महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मलयालम की जड़ों की खोज हमें मौखिक परंपरा

और स्वदेशी आशानों की सेवाओं तक ले जाती है। उन दिनों परिवार ही शिक्षा का केंद्र होता था। मलयालम शिक्षा में गुरुकुल प्रणाली की भूमिका नहीं के बराबर है। हमारी पुरानी संयुक्त परिवार प्रणाली में परिवार में महिलाओं सहित सभी को अंकगणित और भाषा सिखाने की व्यवस्था होती थी। उन दिनों संस्कृत केवल धनी परिवारों में गौरव का प्रतीक थी। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में केरल के कुछ हिस्सों में अंग्रेज़ी शिक्षा को लोकप्रियता मिलने लगी। शिक्षा में संस्कृत, मलयालम या अंग्रेज़ी, किस भाषा का प्रयोग किया जाए, यह तय करने में सामाजिक पदानुक्रम में अंतर एक महत्त्वपूर्ण कारक रहा है। अभिजात वर्ग के मूल पाठ्यक्रम में संस्कृत, आयुर्वेद और कविता थे। जो लोग अमीरों और शासक वर्ग के आश्रित थे, वे अंग्रेज़ी भाषा को पसंद करते थे, जो उन्हें राज्य की सीमाओं के पार ले जा सकती थी। दोनों धाराओं ने मलयालम को अपनी मातृभाषा के रूप में मान्यता दी। इसलिए सभी ने अंग्रेज़ी शिक्षा से पहले स्थानीय भाषा में स्कूली शिक्षा स्वीकार की।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में प्रचलित अक्षरश्लोक प्रदर्शनों ने मलयालम भाषा और साहित्य को लोकप्रिय बनाया। वास्तव में, अक्षरश्लोक प्रदर्शन मलयालम में प्रायः 51 अक्षरों की प्रशंसा के साथ शुरू होता है। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक के दौरान केरल में शुरू हुए सामाजिक सुधारों ने मलयालम भाषा को लोकप्रिय और मज़बूत बनाया तथा मलयालम में कई कविताओं, गीतों, नाटकों और लघु कथाओं की रचना में मदद की। केरलवासियों के बीच राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने में मलयालम भाषा ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। कुमारन आशान की *चंडालभिक्षुकी* और *दुरवस्था* जैसी काव्य रचनाओं ने जातिवाद के ख़िलाफ़ लड़ने वाले लोगों को प्रेरणा दी। महाकवि वल्लत्तोल ने गाँधी जी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रशंसा करते हुए काव्य रचना की और उल्लूर ने एक नई सामाजिक चेतना की नींव रखी। इन रचनाओं ने सामाजिक पुनरुत्थान को इस कदर बढ़ाने का काम किया कि बड़े-बूढ़े भी मलयालम सीखने के लिए प्रेरित हुए। श्री नारायण गुरु जैसे समाज सुधारकों ने शिक्षा को विमुक्ति के साधन के रूप में इस्तेमाल किया। चंङमपुष़ा जैसे रोमांटिक कवियों ने पढ़ने-लिखने की ऐसी नई ताकत और स्फूर्ति जगाई कि बहुतों ने केवल उनके *रेमनन* पढ़ने के लिए इस भाषा का अध्ययन किया।

केरल के तत्कालीन राजाओं ने भी भाषा नियोजन को गंभीरता से लिया, जैसा कि त्रावणकोर में गठित पाठ्यपुस्तक समिति का संस्थानीकरण। गद्य साहित्य के महत्त्व को पहचानने और मलयालम में गद्य की सापेक्ष कमी में सुधार के कारण पाठ्यपुस्तक समिति ने मलयालम गद्य की गुणवत्ता के लिए सशक्त कदम उठाया। केरलवर्मा की गद्य साहित्यिक कृतियाँ इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं ने "विद्वान", "मुंशी" जैसी उपाधियों से भाषा शिक्षण को मानकीकृत भी किया।

जब मलयालम को उच्च शिक्षा के लिए अनुमोदन मिला तो भाषा संबंधी पाठ्यपुस्तकों का अभाव एक बाधा थी। इसी दौरान ए.आर. राजराजवर्मा ने *केरल पाणिनीयम्, वृत्तमंजरी, भाषा भूषणम* और *साहित्य सह्यम* जैसी पुस्तकों की रचना की।

परंपरागत रूप से भाषा सीखने की शुरुआत वर्णमाला के अध्ययन से होती है। हालाँकि, यह पद्धति उन अमीर घरानों के छात्रों के लिए आसान था, जिनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि समृद्ध थी। समाज के हाशिए के तबके के छात्रों के लिए यह पद्धति बड़ी चुनौती थी। स्वाभाविक रूप से, आधुनिक शिक्षण सिद्धांतों की मदद से भाषा सीखने की इस प्रक्रिया में सुधार के प्रयास शुरू किए गए। सरल से जटिल, ज्ञात से अज्ञात और ठोस से अमूर्त जैसी अवधारणाएँ समकालिक थीं। इसी पृष्ठभूमि में शुरुआती दौर में, */तराः/, /पराः/* जैसे सरल अक्षर और शब्द पेश किए गए थे। बाद के अध्ययनों ने भाषा शिक्षाविदों को ज्ञात से अज्ञात के सिद्धांत को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार शिक्षा की एक प्रणाली अस्तित्व में आई, जो बारिश और पक्षियों से संबंधित कहानियों और गीतों से शुरू होती है। लेखन सीखने के क्रम में, उन्होंने छात्रों को अपना नाम खुद लिखना शुरू कराने की पद्धति अपनाई। अलग-अलग परिस्थितियों में वर्णमाला सीखने के बजाय संशोधित शिक्षाशास्त्र ने सार्थक संदर्भों में वर्णमाला सिखाने और लिखने की अवधारणा को अपनाया। इसके अलावा, इससे यह संदेश गया कि शिक्षार्थियों की लिखित त्रुटियों में अनावश्यक सुधार छात्रों को भयभीत कर सकता है।

प्रसिद्ध मलयालम विद्वान और कवि एन.वी. कृष्ण वारियर ने मलयालम में टंकण (typewriting) की सुविधा के लिए कुछ वर्णमाला सुधार की शुरुआत की। इस वर्णमाला सुधार ने मलयालम के नए शिक्षार्थियों की कुछ हद तक मदद की है। यद्यपि पारंपरिक वर्णमाला सहज लेखन के लिए उपयोगी थी, फिर भी छात्रों को संशोधित वर्णमाला प्रणाली सिखाई गई। कंप्यूटर प्रौद्योगिकी ने मुद्रणालय (press) को अक्षरों को संयोजित करने में सक्षम बनाया, जबकि परंपरावादी इस प्रयास के ख़िलाफ़ थे। उन्होंने आलोचना की कि यह परंपरागत लेखन शैली के ख़िलाफ़ है।

हालाँकि मलयालम कई छात्रों की मातृभाषा है, लेकिन बोली संबंधी विविधताओं के कारण उन्हें मलयालम सीखने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उच्चारण में अंतर और बोलचाल की भाषा के कारण निराश महसूस करने वाले छात्र मलयालम को आशंका से देखने लगे। पाठ्यपुस्तकों में लोक गीतों और बोलचाल की भाषाओं को शामिल करने के प्रयासों से भाषा सीखने की पद्धति को इस समस्या को हल करने में मदद मिली। भाषा में बोलीगत विविधताओं की जागरूकता से लेखन और रचनात्मक लेखन को बढ़ावा मिला। शिक्षाशास्त्र ने भाषा सीखने के हिस्से के रूप में रचनात्मकता को महत्त्व दिया, इसलिए बच्चों को भाषा और साहित्य से प्यार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसके परिणामस्वरूप स्कूलों में पुस्तकालयों की स्थापना हुई। प्रिंट मीडिया ने भी छात्रों के बीच पठन-पाठन को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक कॉलम की शुरुआत की। यह सच है कि भाषा सीखने के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन संतुलित और सर्वव्यापी होने की आवश्यकता नहीं है। शिक्षकों के बीच कौशल और दृष्टिकोण में अंतर तथा सामाजिक-आर्थिक कारक आदि भाषा अधिग्रहण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार लेखन में बहुत सी त्रुटियों का प्रसार, स्पष्टता का अभाव और खराब शैली आदि नए भाषा शिक्षाशास्त्र की पहचान हैं। एक और आलोचना यह है कि यह भाषा सीखना इसलिए निरर्थक हो गया है क्योंकि भाषा पाठ्यक्रम से काव्यशास्त्र और व्याकरण जैसे विषयों को हटा दिया गया था।

यह सामान्य समझ है कि स्कूली शिक्षा में एक छात्र को भाषा संरचना, काव्यशास्त्र की धारणा, साहित्य और सौंदर्यशास्त्र का आस्वादन हासिल करना होता है। इसलिए पाठ्यक्रम उन गतिविधियों की कल्पना करता है, जो इन्हें वैचारिक ज्ञान की ओर ले जाए। कविता, छंद, व्याकरणिक विश्लेषण और अलंकार का अध्ययन सबसे अंत में रखा गया ताकि समाज के सभी वर्गों के छात्रों को मलयालम भाषा और साहित्य सीखने में आनंद आए। आधुनिक युग की माँग के अनुसार भाषा शिक्षा को ऊपर उठाने के लिए आधुनिक साहित्यिक विश्लेषण, ग्रंथों का आलोचनात्मक अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन, मीडिया अध्ययन, प्रोक्ति विश्लेषण आदि भाषा अध्ययन में शामिल किए गए हैं।

स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा के स्तर पर भी मलयालम भाषा मज़बूत हो रही है। लेखक के साथ बातचीत करने और अपनी शैली में पाठ का विश्लेषण करने की प्रथा ने किसी पाठ के अर्थ को गहराई से जानने के लिए रास्ते प्रशस्त किए हैं। अब पटकथा जैसी लगभग एक दशक पुरानी साहित्यिक विधाएँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं।

केरल राज्य बोर्ड पाठ्यक्रम ने मलयालम को शिक्षा के माध्यम के रूप में चुना है। हालाँकि, राज्य की उच्चतर माध्यमिक शिक्षा को अभी तक पूरी तरह मलयालम माध्यम नहीं बनाया गया है। प्रश्नपत्र द्विभाषी रूप में छपते हैं, और छात्र चाहें तो मलयालम में उत्तर दे सकते हैं। कॉलेज स्तर पर भी चीज़ें बहुत ज़्यादा भिन्न नहीं हैं। अतः उच्च शिक्षा के स्तर पर मलयालम को शिक्षा का माध्यम बनाने के प्रयास अभी तक पूरी तरह सफल नहीं हुए हैं।

शिक्षा के उच्च स्तर पर मलयालम को शिक्षा का माध्यम बनाए जाने हेतु कुछ पूर्व-आवश्यकताएँ हैं। यहाँ की कार्यपालिका और जनता को यह समझाने की आवश्यकता है कि ज्ञान के किसी भी रूप को समायोजित करने में भाषा सक्षम है। भाषा सिद्धांत के व्यावहारिक उपयोग पर विभिन्न प्रकार के शब्दकोश और पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए व्यवस्थित और आवधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। केरल भाषा संस्थान की स्थापना विशेष रूप से ऐसे ही उद्देश्यों के लिए की गई थी।

मलयालम के अध्ययन के लाभों के व्यावहारिक विचार ने स्कूली शिक्षा के साथ ही उच्च शिक्षा को भी प्रभावित किया है। जबकि मध्यम वर्ग गैर-मलयालम शिक्षा को प्रतिष्ठा का प्रतीक मानता है। ज़ाहिर है यह भेदभाव स्कूलों में सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के आकर्षण को कम करता है। यह मलयाली संस्कृति में आए बदलाव का भी एक कारण है।

शिक्षा के क्षेत्र में मलयालम का मान बढ़ाने के प्रयास जोर पकड़ रहे हैं, इसके लिए सरकार ने स्कूलों में मलयालम को अनिवार्य भाषा बनाने के लिए ठोस कदम उठाए हैं। भाषा और उसके साहित्य के लिए उच्च शिक्षा के स्तर पर उत्साहवर्धक आंदोलन जारी हैं।

प्रशासन में मलयालम

केरल सरकार की यह घोषित नीति है कि सभी प्रशासनिक स्तरों पर केरल की आधिकारिक भाषा मलयालम होनी चाहिए। 1956 में केरल राज्य के गठन के तुरंत बाद गठित पहली सरकार ने मलयालम को आधिकारिक भाषा बनाने के सवाल पर विचार किया। परिणामस्वरूप 1957 में ही एक समिति नियुक्त की गई। इस समिति की सिफ़ारिशों पर सभी ज़िला मुख्यालयों में मलयालम टंकण (typing) और आशुलिपि (shorthand) में सहायकों और टंककों (typists) के उपयोग के लिए प्रशिक्षण देना शुरू किया गया। 1969 में राज्य सरकार ने केरल राजभाषा अधिनियम पारित किया और प्रशासन के विभिन्न क्षेत्रों में मलयालम को आधिकारिक भाषा के रूप में लागू करने के आदेश पारित किए। 69 विभाग और 38 विभिन्न संगठन (बोर्ड, निगम आदि सहित) ऐसे हैं, जिन्हें अधिसूचना द्वारा मलयालम को आधिकारिक भाषा के रूप में सभी आधिकारिक कार्यों में उपयोग करने के लिए अधिसूचित किया गया है, सिवाय उन कार्यालयों को छोड़कर, जिन्हें अंग्रेज़ी, तमिल और कन्नड़ जैसी अल्पसंख्यक भाषाओं के उपयोग करने को कानूनी अनुमति हो।

राजभाषा अनुभाग ने 1971 में लोक प्रशासनिक विभाग के अधीन सरकारी सचिवालय में काम करना शुरू किया। अब यह कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग का हिस्सा है। इसके प्रमुख प्रयोजन पुस्तकों का प्रकाशन, सरकारी कर्मचारियों को राजभाषा प्रशिक्षण, संहिताओं, विभिन्न विभागों के मैनुअल और प्रपत्रों के अनुवादों की जाँच, राजभाषा पुरस्कारों का कार्यान्वयन, मलयालम दिवस का आयोजन (1 नवंबर, केरल राज्य का स्थापना दिवस), राजभाषा सप्ताह (1-7 नवंबर), राजभाषा के कार्यान्वयन की प्रगति के मूल्यांकन के लिए गठित विभिन्न समितियों का पर्यवेक्षण, मलयालम राजभाषा सॉफ्टवेयर का निर्माण आदि हैं।

विधान सभा द्वारा गठित राजभाषा समिति विभागीय और ज़िला स्तरों पर कार्यान्वयन की प्रगति की निगरानी करती है और आवश्यक कदम उठाने हेतु सरकार का मार्गदर्शन करती है।

राज्य प्रशासन में मलयालम के उपयोग की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न स्तरों पर विभिन्न राजभाषा समितियाँ कार्यरत हैं। ज़मीनी स्तर पर तालुक समिति है, जिसके अध्यक्ष और संयोजक तहसीलदार होते हैं। ज़िला स्तर की समिति के अध्यक्ष ज़िला कलेक्टर होते हैं। एक और राज्य स्तरीय समिति है, जिसके अध्यक्ष मुख्य सचिव होते हैं। सरकार राजभाषा नीति के शीघ्र कार्यान्वयन के लिए सरकारी अधिकारियों को प्रोत्साहन और पुरस्कार भी प्रदान करती है।

राजभाषा विभाग ने विभिन्न पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें अंग्रेज़ी-मलयालम *भरण शब्दकोशम*, अंग्रेज़ी-मलयालम *भरण शब्दसहायि*, सरकारी आदेशों का संग्रह, *भरण भाषा पठन पद्धति, भरण भाषा प्रयोग पद्धति*, *पदकोशम* और *भाषयुम भरण भाषयुम* आदि शामिल हैं।

केरल सरकार के 2005 में शुरू हुए राजभाषा विभाग के माध्यम से, दिल्ली में मलयाली बच्चों को मलयालम अध्ययन करने के अवसर प्रदान करने हेतु, मलयालम भाषा अध्ययन केंद्र खोले गए हैं। किसी भी क्षेत्रीय भाषा के लिए मातृभाषा अध्ययन हेतु

अपने गृह राज्य के बाहर सबसे बड़ा नेटवर्क राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में इसी भाषा का है, जहाँ 170 अध्ययन केंद्रों के साथ कार्यरत होने पर यह उद्यम लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स में भी दर्ज किया गया था।

मुद्रण माध्यम में मलयालम

यद्यपि मलयालम भारत के सबसे छोटे राज्यों में से एक में बोली जाने वाली भाषा है, जिसकी कुल जनसंख्या बमुश्किल 3.5 करोड़ है, इसके बावजूद यह देश के सबसे बड़े दैनिक समाचार पत्रों में से एक की भाषा होने का दावा करती है। यह भारत में सबसे अधिक प्रकाशन वाली भाषाओं में से एक है। साक्षरता की उच्च दर जो इस राज्य में हमेशा से रही है, साथ ही नवीनतम वैश्विक रुझानों के साथ प्रयोग करने में रुचि और एक मज़बूत पुस्तकालयी आंदोलन ने मलयाली जनता के बीच एक जुनून पैदा किया है। इसके अलावा, मीडिया प्रसार की उच्च दर बीसवीं शताब्दी में केरल के सामाजिक परिवर्तन में प्रिंट मीडिया के प्रभाव को भी दर्शाती है।

केरल के समाचार पत्रों को प्रिंट मीडिया के विपणन के एक साधन के रूप में भाषा की क्षमता का तुरंत एहसास हो गया। सोलहवीं शताब्दी में आए पुर्तगाली मिशनरी स्वयं को लोगों से संवाद करने में सक्षम बनाने के लिए केरल की बोलचाल की भाषा सीखना चाहते थे, जिसके लिए उन्होंने मिशनरी मलयालम नामक एक नई बोली तैयार की। मलयालम में पत्रकारिता के आरंभिक वर्षों में प्रकाशनों की भाषा ज़्यादातर चर्च प्रकृति की थी, क्योंकि शुरुआती प्रकाशनों का उद्देश्य सामाजिक से अधिक धार्मिक था। हालाँकि, एशिया की पादप संपदा पर शास्त्रीय ग्रंथ *हॉर्तुस मलाबारिकस* मलयालम वर्णमाला मुद्रित करने वाली पहली पुस्तक थी, किंतु इसे आम जनता को ध्यान में रखकर प्रकाशित नहीं किया गया था। *संक्षेपवेदार्थम* जैसे पहले प्रकाशनों का उद्देश्य ईसाई जनता में धार्मिक जागृति लाना था। *राज्यसमाचारम* (1847), वह पहला मलयालम समाचार पत्र था, जिसने पहले अंक में ही अपने सामाजिक उद् देश्यों और दायित्वों की घोषणा की थी। *पश्चिमोदयम*, जो 1847 में ही प्रकाशित हुआ, ने पाठकों को वैज्ञानिक माने जाने वाले मामलों से परिचित कराने का प्रयास करके एक अलग दृष्टिकोण पेश करने की कोशिश की। इसकी सामग्रियों में ज्योतिष, यात्रा वृत्तांत, भूगोल और केरल का थोड़ा इतिहास शामिल था। *ज्ञाननिक्षेपम* (ज्ञान का खजाना, 1848), जो सर्वाधिक समसामयिक सामग्री छापने वाला पहला समाचार पत्र था, में धार्मिक जानकारियों के साथ-साथ समाचार और सामान्य ज्ञान भी शामिल था। हालाँकि, *वेस्टर्न स्टार* (1860) एक अंग्रेज़ी प्रकाशन था, जिसे सही अर्थों में केरल का पहला समाचार पत्र कहा जा सकता था। इसके संपादक चार्ल्स लॉसन थे, जो बाद में *मद्रास मेल* शुरू करने के लिए मद्रास (वर्तमान चेन्नई) चले गए। *वेस्टर्न स्टार* धार्मिक प्रचारों से हटकर सामान्य समाचारों, साहित्यिक-सांस्कृतिक जानकारियों को प्राथमिकता देने वाला पहला समाचार पत्र था, जो पाठकों के ज्ञान में वृद्धि करने वाला था। इसका मलयालम संस्करण 1864 में देवजी भीमजी द्वारा शुरू किया गया *पश्चिमतारका* था। सही अर्थों में इसे ही “पहला मलयालम समाचार पत्र” कहा जा सकता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में जो अन्य प्रमुख प्रकाशन सामने आए, उनमें *केरलम* (1866), *संदिष्टवादी* (1867), *केरलपाठक* (1870), *केरलोपकारी* (1874), *सत्यनादकाहलम* (1876), *केरलदीपकम, मलयालमित्रम* (1878), *केरलचंद्रिका* (1879), *मलाबार स्पेक्टेटर* (1879) और *केरलमित्रम* (1881) शामिल हैं। इनमें से देवजी भीमजी द्वारा शुरू किया गया *केरलमित्रम* मलयालम का पहला व्यवस्थित समाचार पत्र है। इसका संपादन कंडत्तिल वर्गीस माप्पिला ने किया था, जिन्होंने बाद के वर्षों में *मलयाल मनोरमा* और *केरल पत्रिका* (1884) की स्थापना की। यह केरल के उत्तरी क्षेत्र मलाबार से प्रकाशित होने वाला पहला सामान्य समाचार पत्र था। जनता को शिक्षित करने और प्रशासन को साफ़-सुथरा करने की अपनी प्रतिबद्धता के साथ, इस पत्र को मलयालम पत्रकारिता में एक गति-निर्धारक माना जाता है। इसने साहित्य और साहित्यिक आलोचना को भी पर्याप्त स्थान दिया।

जैसे-जैसे प्रिंट मीडिया उद्योग खुद को धार्मिक प्रचारकों के चंगुल से मुक्त करता गया, भाषा और इसके उपयोग में कठोरता भी कम होने लगी। फिर भी, 1930 के दशक की खबरें "कहानी समाचार" की तरह लगती थीं, क्योंकि उन खबरों ने आज की उलटी पिरामिड शैली का सहारा नहीं लिया था। कथानक और विवरण भी बहुत सामान्य थे। ऐसी कमियों के बावजूद, उस समय की पत्रिकाएँ और समाचार पत्र भाषा में प्रगतिशील परिवर्तनों को बढ़ावा देने लगे, जिसमें ओ चंतु मेनन जैसे शुरुआती उपन्यासकारों, और निबंधकार एवं हास्यकार वेंङयिल कुञिरामन नायनार, जो "केसरी" नाम से लोकप्रिय थे, का प्रवेश पहले से ही देखा जा सकता था। नायनार के पहले निबंध का प्रकाशन *केरलचंद्रिका* में हुआ तो वहीं उनके पहले संपादकत्व में *केरल संचारी* (1886) का प्रकाशन शुरू हुआ। ये सभी उस पारस्परिक प्रभाव की प्रवृत्ति की शुरुआत का संकेत देते हैं, जिसे मलयालम पत्रकारिता और साहित्य ने बनाए रखा है। बाद में मूरकोत्त कुमारन द्वारा शुरू किए गए प्रकाशन *मितवादी* के साथ *केरल संचारी* का विलय हो गया। वे 1897 में कुछ समय के लिए इसके संपादक के रूप में भी जुड़े रहे। संयोगवश, यह वही *मितवादी* पत्रिका थी, जिसने कवि कुमारन आशान की प्रसिद्ध कविता *वीण पूवू* का प्रकाशन किया था। 1886 में तिरुवनंतपुरम से शुरू हुई एक अन्य पत्रिका *मलयाली* ने राजनीतिक और नागरिक अधिकारों के लिए भी लड़ाई लड़ी, जब इसके संपादक सी.वी. रामन पिल्लई जैसे साहित्यिक दिग्गज थे।

नसराणिदीपिका (*दीपिका* के रूप में अब भी जारी) 1887 में शुरू हुआ, जिसे सबसे पुराना मलयालम समाचार पत्र माना जाता है। यद्यपि इसकी प्रकाशन आवधिकता कई बार बदली, किंतु 1938 से यह एक दैनिक पत्र बना हुआ है। इसी तरह, 1890 में समाचार पत्र उद्योग में पहली संयुक्त स्टॉक कंपनी के रूप में शुरू किया गया *मलयाल मनोरमा* केरल में सबसे बड़े और भारत में सबसे बड़े दैनिक के रूप में आज भी जारी है। शुरुआत में एक साप्ताहिक के रूप में आरंभ हुए इस समाचार पत्र ने साहित्य, विशेष रूप से कविता को अधिक महत्त्व दिया। तदुपरांत 1928 में यह दैनिक बन गया।

विद्याविलासिनी (1881), *विद्याविनोदिनी* (1889), *कवनोदयम* (1896), *भाषापोषिणी* (1898), *रसिकरंजिनी* (1903), *विवेकोदयम* और *कवन कौमुदी* (1904) जैसे कुछ साहित्यिक प्रकाशन मलयालम भाषा में अपने योगदान के लिए उल्लेखनीय हैं। *मलयाल मनोरमा* का *भाषापोषिणी* के साथ जुड़ाव और *भाषापोषिणी सभा* नामक एक साहित्यिक मंच के प्रारंभ होने के परिणामस्वरूप मलयालम भाषा और इसके उपयोग पर साहित्यिक चर्चा और व्यावहारिक प्रयास भी शुरू हुए। वास्तव में, *मलयाल मनोरमा* और *भाषापोषिणी* ने केरल के विभिन्न हिस्सों में लेखकों के बीच न सिर्फ़ संचार (communication) को प्रोत्साहित किया बल्कि अब तक नज़रअंदाज़ की गई साहित्यिक विधाओं को भी लोकप्रिय बनाया। इसी प्रकार *विद्याविनोदिनी* द्वारा शुरू की गई साहित्यिक समीक्षा की शैली को *भाषापोषिणी* द्वारा मज़बूत और लोकप्रिय बनाया गया। इस पत्रिका ने प्राचीन शास्त्रीय कृतियों के पुनर्प्रकाशन की शुरुआत भी की थी।

केरल के प्रकाशनों के विकास में साक्षरता का बढ़ना एक प्रमुख कारक रहा है। वास्तव में, पत्रकारिता और साहित्यिक परिदृश्य को फलने-फूलने के लिए साक्षरता के एक निश्चित स्तर की आवश्यकता होती है। अतः केरल में, प्रारंभिक प्रकाशनों के विकास ने पाठकीय रुचि को इस तरह से प्रेरित किया जिससे साक्षरता सुधार में मदद मिली। यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक केवल 30 प्रकाशन ही सामने आ सके, किंतु बीसवीं शताब्दी में नए प्रकाशनों की बाढ़ सी आ गई। *केरल कौमुदी* ऐसा ही एक प्रकाशन था, जिसकी स्थापना 1911 में सी.वी. कुञिरामन ने की थी और 1940 में यह दैनिक प्रकाशन बन गया था, जो आज भी एक प्रमुख दैनिक के रूप में जारी है। टी.के. माधवन की *देशाभिमानी* (1915), के. अय्यप्पन की *सहोदरन* (1917), *समदर्शी* आदि भी अपने क्रांतिकारी उत्साह के कारण लोकप्रिय थीं। ए. बालकृष्ण पिल्लई की *केसरी*, हालाँकि अल्पकाल तक ही चल सकी किंतु सामाजिक सोच और राजनीतिक चर्चा को प्रोत्साहित कर एक नई प्रवृत्ति स्थापित करने के लिए जानी जाती है। के. रामकृष्ण पिल्लई की *स्वदेशाभिमानी* (1905) एक और अन्य प्रकाशन था, जिसने अपने तीखे प्रहार से कई सामाजिक बहसों

को प्रेरित किया। 1929 में एक और दैनिक *मलयालराज्यम* ने धमाके के साथ प्रवेश किया, किंतु अपनी अभिव्यक्ति की शक्ति के अभाव के कारण इसे झुकना पड़ा। केरल में दूसरा सबसे बड़ा प्रसार वाला मलयालम समाचार पत्र *मातृभूमि* है, जिसे 1923 में के.पी. केशव मेनन के संपादकत्व में शुरू किया गया था, जिन्होंने केरल में राष्ट्रवादी आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्वतंत्रता संग्राम में इस पत्र की भूमिका सुनिश्चित की।

मलयालम भाषा और साहित्य पर प्रिंट मीडिया का प्रारंभिक प्रभाव सकारात्मक और बहुआयामी रहा है। यूरोप में पुनर्जागरण की गति तेज़ करने वाली मुद्रण प्रणाली का केरल के सांस्कृतिक पुनर्जागरण पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ा। उसके प्रमुख योगदानों में से एक पहले अक्षरों को और फिर भाषा में कई उपयोगों को एक निश्चित आकार देना रहा। चल प्रकारों (movable types) के आगमन के साथ, बेंजामिन बेली द्वारा तैयार किए गए "गोल" फॉन्ट को स्वीकृति मिली। प्रिंट मीडिया के आगमन के बाद ही "ई" और "ओ" जैसे ह्रस्व स्वरों का "लंबा" और "छोटा" होना प्रचलन में आया। इस प्रकार, *ज्ञाननिक्षेपम*, जिसने प्रारंभिक अंकों के दौरान अंतिम शब्दांश में लघु "इ" का उपयोग किया था, ने बाद में इसे दीर्घ "ई" में सुधार लिया। केरल के विभिन्न हिस्सों में बोली जाने वाली भाषा में बहुत अंतर था। प्रिंट मीडिया के आने तक इन जगहों पर एक समान शैली की संभावना बहुत कम थी। इसके लिए वास्तव में पत्रिकाओं ने एक स्तरीयक (leveller) के रूप में कार्य किया, जिन्होंने मलयालम भाषा के बोली-रूपों, अक्षरों और शब्दों को निश्चित आकार देकर एकीकृत किया, और ऐसे अर्थ निर्दिष्ट किए, जो आमतौर पर भाषा के विभिन्न रूपों के बोलने वालों पर लागू होते हैं। क्षेत्रीय बोलियों के अनुसार भिन्न उपसर्गों और प्रत्ययों का उपयोग होता था। केरल के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग तरीकों से अक्षरों, विशेष रूप से व्यंजनों, का समूहन किया गया था। अतः इस मुद्रण (छपाई) व्यवस्था ने एक समान शैली की शुरुआत की, जो जल्द ही मानक रूप में प्रतिष्ठित हो गई। कई बोलियों में द्वंद्वात्मक विभिन्नताओं के बावजूद, उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक तक मलयालम लेखन कुछ हद तक मानकीकृत हो गया था।

यह देखा गया है कि मलयालम में पहला व्यवस्थित उपन्यास प्रकाशित होने से पहले ही आरंभिक पत्रिकाओं ने उपन्यास का प्रारूप पेश कर दिया था। इसके उदाहरण *विद्यारंभम* में कथाख्यान धारावाहिक के रूप में निकला *घातकवधम* तथा *ज्ञाननिक्षेपम* में क्रमबद्ध कथा *पुल्लेलि कुंञ्जु* आदि हैं। ध्यातव्य है कि प्रिंट मीडिया के शुरुआती दिनों में शिक्षा प्रदान करने के लिए ही किताबें थीं। सरकारी समितियों द्वारा शैक्षणिक कार्यभार संभालने के साथ ही पाठ्यपुस्तकों की सामग्री और शैली पर निर्णय लेने के लिए उसी भाषा और शैली का उपयोग किया गया, जिसे उन दिनों प्रिंट मीडिया द्वारा लोकप्रिय बनाया गया था। समाचार पत्रों की भाषा और शैली के नियम बनाए गए, क्योंकि जो कागज पर छापे जाते थे उन्हें वर्तनी, वाक्य रचना और व्याकरण की अशुद्धियों को दूर कर संपादित किया जाता था।

हालाँकि, हाल ही में अन्य मीडिया की उपस्थिति से लेखन की भाषा का यह परिष्कार प्रभावित हुआ है। मलयालम में प्रिंट मीडिया की भाषा में भी कई बदलाव आ रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, *देशाभिमानी* जैसे प्रमुख राजनीतिक दैनिक समाचार पत्रों के प्रवेश के साथ, राजनीतिक विचारों का उपयोग करते हुए लेखन की एक नई शैली विकसित की। *मंगलम* (दैनिक और साप्ताहिक) जैसे प्रकाशनों के आने से आम आदमी की भाषा बिक्री की भाषा बन गई। इस दैनिक कामकाजी भाषा के उपयोग से *मलयाल मनोरमा* सहित कई दैनिक समाचार पत्रों के पाठकों में भी वृद्धि हुई।

हालाँकि, रेडियो ने बोलने और लिखने की एक मानक शैली को भी प्रोत्साहित किया था, लेकिन फिल्म और टीवी जैसे मीडिया के प्रवेश के साथ ही प्रिंट मीडिया की भाषा बोलचालीय शैली की ओर झुकी हुई दिखाई देने लगी थी। अतः धीरे-धीरे लेखन की शैली साहित्यिक स्तर से हटकर सरलतम स्तर पर आ गई। दैनिक समाचार पत्रों द्वारा भाषा के उपयोग में जो अंतर दिखाई देते हैं, वे "ई" के लिए प्रत्येक दैनिक द्वारा अपनाई जाने वाली विशिष्ट शैली की बाध्यताओं या शर्तों से अधिक संबंधित

हैं। जैसे, *मनोरमा* में “फेब्रुवरी” लिखा जाता है, जैसा कि अंग्रेज़ी में उच्चारण किया जाता है, *मातृभूमि* में लेखन और उच्चारण में यह “फिब्रेवरी” जैसे लगता है। केरल में मीडिया दृश्य में हाल ही में शामिल हुए *माध्यम* में शोएब अख्तर का उच्चारण “शू-ऐब” के रूप में होता है। कुछ दैनिक समाचार पत्रों में कुछ शब्दों के केवल विशिष्ट उपयोग होते हैं। जैसे, “अंतर्राष्ट्रीय” शब्द का अनुवाद *मनोरमा* में “राज्यांतरम” लिखा जाता है, जबकि अधिकांश दैनिक समाचार पत्रों में “अंतर्राष्ट्रम”। इसलिए, जब कोई व्यक्ति अपने सामान्य लिखित संचार में इस तरह की अभिव्यक्तियों का उपयोग करता है, तो उसे उस समाचार पत्र के बारे में भी जानकारी मिलती है, जिसे वह आमतौर पर पढ़ता है।

दृश्य-श्रव्य माध्यम में मलयालम भाषा

दूरदर्शन में मलयालम

सार्वजनिक क्षेत्र का टेलीविज़न चैनल दूरदर्शन, जिसने 1982 में मलयालम में प्रसारण शुरू किया, निजीकरण युग से पूर्व लोगों के लिए उपलब्ध एकमात्र चैनल था। राष्ट्रीय स्तर पर टेलीविज़न क्षेत्र में नीतिगत परिवर्तनों के मद्देनज़र मलयालम में भी कई चैनल सामने आए। 1993 में शुरू हुआ एशियानेट राज्य का पहला निजी टेलीविज़न चैनल था। इसके बाद सूर्य/किरण, कैरली/पीपल, अमृता, जयहिंद, जीवन, इंडियाविज़न यस आदि अन्य चैनल शुरू हुए।

ये चैनल विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक हितों द्वारा नियंत्रित और स्वामित्व में कार्य करते हैं और प्रदर्शन सामग्रियों में विविधता पैदा कर स्वयं के दर्शकीय आधार (audience base) को बढ़ाने के लिए एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा रखते हैं। इस प्रक्रिया में उन्होंने सामग्री को प्रस्तुत करने के लिए कई नए काल्पनिक और समाचार प्रारूप भी बनाए हैं– टेली-सीरियल, टॉक शो, समाचार फीचर, दूरदर्शन वृत्तचित्र, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, रियलिटी शो, कॉल-इन कार्यक्रम आदि।

दृश्य काल्पनिक कथाओं के क्षेत्र में टेलीविज़न ने कुछ वर्षों में ही सिनेमा द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले पारिवारिक नाटकों, रिश्तों जैसे विषयगत क्षेत्रों आदि पर कब्जा कर लिया। इसने सिनेमा उद्योग को काफ़ी प्रभावित किया। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दूरदर्शन द्वारा दृश्य-कथारूपी (visual fiction) विषयों को घर-घर तक पहुँचाने के साथ ही, सिनेमाघरों में बार-बार आने वाले दर्शकों की संरचना में भी भारी बदलाव आए। इसके कारण, सिनेमा को भी अपने दर्शकीय आधार में बदलाव करने पड़े।

मलयालम का पहला 24 घंटे वाला समाचार चैनल इंडियाविज़न 2003 में शुरू हुआ, उसके बाद मनोरमा और रिपोर्टर। टेलीविज़न की व्यापक पहुँच को देखते हुए, ये चैनल समाचार और सूचना की तीव्र भूख तथा राजनीतिक चर्चाओं और तर्क-वितर्क के लिए मलयाली रुचि को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। जहाँ राजनीति से संबंधित सार्वजनिक वक्तव्यों को पहले मुख्यतः समाचार पत्रों द्वारा प्रसारित किया जाता था, वहीं अब इसका स्थान टेलीविज़न द्वारा ले लिया गया। सामाजिक प्राथमिकताओं को निर्धारित करने और राजनीतिक एजेंडे को उलटने (upset) की इसकी शक्ति स्पष्ट है।

प्रिंट मीडिया और सार्वजनिक क्षेत्र के प्रसारण निगमों द्वारा अपनाई जाने वाली मानक मलयालम से अलग होकर इन नए टेलीविजन चैनलों ने एक तरह से स्थानीय अभिव्यक्तियों और बोलियों को सार्वजनिक पहुँच में ला दिया। राजनेताओं और विभिन्न अन्य सार्वजनिक एजेंटों तथा नागरिकों के रूप में “स्थानीय” और “क्षेत्रीय” की भागीदारी, जिन्होंने टेलीविज़न पर विभिन्न मुद्दों और समस्याओं के बारे में बात की, ने भाषा के बहुलवादी उपयोग को अपरिहार्य बना दिया।

हालाँकि समाचार पाठक या उद्घोषक अभी भी मानक और समान “प्रिंट भाषा” का उपयोग कर रहे थे, जिसे समाचार पत्रों ने दशकों में विकसित किया था। लाइव प्रसारण और नागरिक पत्रकारिता के उदय के साथ स्थानीय अभिव्यक्ति के माध्यम से यह भाषा सार्वजनिक स्थान हासिल कर चुकी है। दूसरे शब्दों में, यह “बातूनी” (talkative) माध्यम उन लोगों की विभिन्न

स्थानीय बोलियों और उपबोलियों को अपनाता है, जो इनकी चर्चाओं, टॉक शो, साक्षात्कार, ऑन-स्पॉट रिपोर्टिंग, टिप्पणियों आदि में भाग लेते हैं।

लाइव टेलीकास्ट के मामले में यह स्पष्ट दिखाई देता है, जहाँ किसी भी प्रकार की स्क्रिप्टिंग अप्रासंगिक होती है। यद्यपि टेलीविज़न काफ़ी हद तक मानक मलयालम का ही उपयोग करता है, किंतु यह कार्यक्रम की सामग्री की माँगों और लक्षित दर्शकों की रुचिओं को पूरा करने के लिए स्वतंत्र रूप से विभिन्न बोलियों का भी उपयोग करता है। कैरली टीवी पर *प्रवासीलोकम* (आप्रवासी की दुनिया) और अमृता टीवी पर *कथयल्लितुजीवितम* (यह कल्पना नहीं, सच है) जैसी वास्तविक जीवंत कहानियों को प्रस्तुत करने वाले कार्यक्रमों में इस तरह की प्रवृत्ति बहुत स्पष्ट है, जहाँ व्यक्ति अपने जीवन और समस्याओं के बारे में बात करते हैं। टॉक शो जैसे विभिन्न कार्यक्रमों में संवादी शैली का उपयोग किया जाता है, जबकि इन कार्यक्रमों के समन्वयक शहरी युवाओं को लक्षित कर उस विशेष प्रकार की वार्तालाप बोली का प्रयोग करते हैं (जिसे भाषा की शुद्धता के लिए बहस करने वालों द्वारा ‘‘मंगलिश’’ कहा जाता है), जो अंग्रेज़ी और मलयालम का एक अजीब मिश्रण है।

वास्तव में आज मलयालम टेलीविज़न केरल के ‘‘मौखिक समकालीन’’ और उसकी सभी विविधताओं और अंतर्विरोधों को स्पष्ट करता है। यह वह है, जिसे एक ओर मानकीकरण की ताकतों द्वारा खींचा जाता है, तो दूसरी ओर हाशिए की विस्फोटक ताकतों द्वारा, जो सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी आवाज़ खोजने के लिए संघर्षशील हैं।

फिल्मों में मलयालम

सिनेमा से पहले एक हद तक आधुनिक रंगमंच, लोक, शास्त्रीय और पारंपरिक सभी मंचित कला रूप, शैलीगत और सौंदर्यवादी भाषा उपकरणों पर निर्भर थे। उनकी इतिहास और संस्कृतियाँ ग्रामीण समुदायों, संस्कृतियों, जातियों, धर्मों आदि को संबोधित करने तक ही सीमित थीं। उनमें से मंदिर कला रूप *कूडियाट्टम*, शैली संस्कृत थिएटर जैसी कुछ एक प्रस्तुतियाँ तो केवल उच्च जाति के लिए ही सुलभ थीं। उनकी कहानियों और विषयों के उपयोग, भागीदारी व स्वीकृति (reception) आदि में भी संस्कृति-जाति-क्षेत्र-विशिष्ट भाषा प्रयोग होते थे।

पचास के दशक में रंगमंच

सिनेमा, औद्योगिक युग का और जनसंचार माध्यमों का एक उत्पाद रहा है। आम जनता की भाषा में सिनेमा बनाए जाने से अन्य बाधाएँ अपने-आप टूटती गईं। प्रारंभिक मलयालम सिनेमा में भाषा के उपयोग को रंगमंच के साथ इसके जुड़ाव से जाना जा सकता है, क्योंकि सभी शुरुआती फिल्मी कलाकार, परिदृश्यकार और अभिनेता, स्वयं को थिएटर से जोड़ते थे। पचास के दशक में जब मलयालम सिनेमा एक उद्योग के रूप में अपने पैर जमा रहा था, मलयालम रंगमंच एक ऐसे आंदोलन से गुजर रहा था, जिसका उद्देश्य इसके स्वरूप और सामग्री को स्वदेशी बनाना था। मेलोड्रामा से यथार्थवाद में यह बदलाव आख्यानों (कथाओं) में प्रयुक्त होने वाली भाषा में क्रांतिकारी परिवर्तन का कारण बना, जिसका मुख्य उद्देश्य थिएटर को आम आदमी की भाषा में प्रस्तुत करना था। इसलिए, उस समय के रंगमंच (थिएटर) और सिनेमा दोनों उन्हें संबोधित और प्रतिनिधित्व कर निरपेक्ष दर्शक बनाने की कोशिश कर रहे थे।

साहित्यिक साठवाँ दशक

1950 और 60 के दशक में, सिनेमा के माध्यम से कई नई बुलंद आवाज़ों ने प्रवेश किया। इस अवधि की फिल्में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश की विविधता को दर्शाती हैं, जो अपने आप में बोली जाने वाली भाषाओं की विविधता पर आधारित हैं। हम *नीलक्कुयिल* (नीली कोयल, 1954; रामू कारियाट/पी. भास्करन) जैसी फिल्मों में विभिन्न बोलचालीय भाषाएँ पा सकते हैं,

जैसे– उच्च जाति के नंबूदिरि और परदेशी ब्राह्मण भाषा, नायर, हिंदुओं में निम्न जाति पुलयन और मुस्लिमों की भाषा आदि। दृश्यकार (उरूब) के संवाद जातिगत अभिव्यक्तियों के करीब हैं, केवल आधुनिकता के दो प्रतिनिधि, स्कूल मास्टर और डाकिया ही अपवादस्वरूप फिल्मों में समाचार पत्रों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली मानकीकृत मलयालम बोलते दिखाई देते हैं।

उस दौर की फिल्मों में क्षेत्रीय या सामुदायिक बोलियों ने "यथार्थवाद" और प्रामाणिकता की ओर बढ़ने का संकेत दिया। उदाहरण के लिए, ऐसी कई फिल्में हैं जिनमें परदेशी (विदेशी) और नंबूदिरि ब्राह्मण दोनों परिहास के पात्र बनते हैं क्योंकि वे समाज में हो रहे बड़े बदलावों को पीठ दिखाने वालों के रूप में दर्शाए जाते हैं। उस दौर के "मिलिउ" (milieu) उपन्यासों की प्रवृत्ति के बाद, फिल्मों ने भी उन्हें बोलियों के तत्संबंधी परिदृश्य के पुनरुत्पादन की कोशिश की, ताकि पहचान की भावना जगा सके। यह एक ऐसा प्रयास था, जहाँ पात्र को उसके अपने स्थान से बोलना था। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नायक द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली "धर्मनिरपेक्ष-आधुनिक" भाषा, जो आमतौर पर आधुनिक और "प्रगतिशील" होती है, अपने सभी प्राग्-आधुनिक, सामंती और जातिगत लक्षणों को बड़ी सावधानी से बचाए हुए थी। उनमें से अधिकांश समाचार पत्रों वाली भाषा बोलते थे (जिसे "अच्चडि (छपाई) भाषा" या मुद्रित भाषा कहा जाता है), जिसमें क्षेत्र, धर्म/जाति या वर्ग के संकेत नहीं हों। किसी जाति की विशिष्ट भाषा का उपयोग, चाहे वह उच्च जाति हो या निम्न, ज़्यादातर धर्मनिरपेक्ष-आधुनिकता से उनकी दूरी या अलगाव को दर्शाता है। वे बोलियाँ धर्मनिरपेक्ष कथा जैसी कुछ अजीब, भद्दी या उपहास लायक रह गईं। यह एक ऐसी भाषा थी जो सामंती विषय अथवा एक विशेष स्थान और समय में फंसे हुए व्यक्ति को संबोधित करती थी।

सत्तर और अस्सी के आधुनिकतावादी दशक

सत्तर के दशक में खाड़ी क्षेत्रों के तेल में आए उछाल से केरल से बड़े पैमाने पर श्रमिकों का पलायन हुआ। इस दशक की भाषा और आख्यान परंपरा से अलग एक ऐसे समाज/अर्थव्यवस्था के थे जो कृषि संबंधी सवालों, उनके संघर्षों और ऐसे परिवेशों को हाशिए पर ले जाने वाले थे।

रूप का संबंध, पिछले दशकों के "सामाजिक-यथार्थवाद" से न सिर्फ़ एक कदम दूर था, बल्कि यूरोपीय साहित्य और अस्तित्ववादी दर्शन आदि के प्रभाव का वह स्पष्ट सूचक भी था। पश्चिमी शास्त्रीयता से प्रभावित फिल्म निर्माताओं की एक पूरी पीढ़ी ने फिल्मों में "नई लहर" का सूत्रपात किया, जिसने खुद को मुख्यधारा के "व्यावसायिक" के मुकाबले "कला" के रूप में परिभाषित किया। यह साहित्य तथा सामाजिक-यथार्थवादी विषयों एवं चिंताओं पर सिनेमा की निर्भरता से भी एक कदम दूर था। आधुनिकतावादी "रूप" (form) के बारे में अधिक चिंतित थे और उनका सामना अक्सर अमूर्त विषयों से ही होता था। यदि व्यावसायिक सिनेमा "शरीर" का प्रतिनिधित्व करता है, तो कला सिनेमा "मन" का प्रतिनिधित्व करता है। यदि पहला, ज़ोरदार, तेज़ और मौखिक था, तो दूसरा धीमा, मौन और शैलीगत था। फिर भी बोली जाने वाली भाषा पात्र की संस्कृति, क्षेत्र और जाति के लिए एक सांस्कृतिक संकेत प्रस्तुत करती थी, इसका अभी भी अर्थ प्रामाणिकता और सुदृढ़ता (rootedness) है। धीरे-धीरे मुख्यधारा की एक मानक भाषा उच्च जाति, मध्यम वर्गीय शहरी पुरुष की भाषा बनती जा रही थी, जो कथानक के केंद्र में था। इसे एम.टी. वासुदेवन नायर की सफल रचनाओं द्वारा बहुत लोकप्रियता मिली, जिन्होंने अपने आख्यानों में वल्लुवनाडु के नायर तरावाड़ को केंद्र में रखा था। इसलिए, यदि पात्र पहले वह भाषा बोलते थे जो उनके क्षेत्र और सामाजिक/जाति/वर्ग परिवेश को दर्शाती थी, तो अब नायकों की भाषा तथा सहायक पात्रों, सहयोगी कलाकारों, हास्य कलाकारों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के बीच एक खाई थी।

अस्सी के दशक में सिनेमा में मध्यम वर्ग में बोली जाने वाली भाषा तेज़ी से उच्च जाति के परिवेश के अनुसार मानकीकृत हो रही थी, उसी समय स्थानीय बोली ने हास्य अभिनेताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इन क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग

कर विभिन्न हास्य कलाकार दृश्यपटल (मंच) पर प्रवेश कर चुके थे। कुतिरवट्टेम पप्पु, माळा अरविंदन और जगती श्रीकुमार के बाद मामुकोया, इन्नसेंट और इंद्रन आदि ने आमतौर पर अपने हास्य (कॉमिक चार्ज) में मलाबार, त्रिशूर और तिरुवनंतपुरम जैसी स्थानीय बोलियों का प्रयोग किया। अडूर भासी, बहादुर या एस.पी. पिल्लई जैसे पहले के हास्य कलाकारों को कभी भी उनकी कठबोली (slang) विशेष के नाम पर नहीं जाना जाता था, वे आंगिक भाषाभिनय और संदर्भ पर अधिक निर्भर थे। हालाँकि वे विभिन्न क्षेत्रों से ही आए थे, इसलिए हास्य में स्थानीय भाषा का उदय नायक की भाषा को आदर्श के रूप में स्थापित करने के साथ हुआ। उस समय अंग्रेज़ी बोलना या बोलचाल में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग कुलीन संस्कृति अथवा परिष्कार का प्रतीक माना जाता था। पहले, अंग्रेज़ी बोलने वाले पात्र या तो पश्चिमीकृत महिलाएँ होती थीं या वे जो विदेशों से लौटे होते थे और स्थानीय लोगों से कृपापूर्वक (condescendingly) बातें करते थे। इसका अर्थ या तो स्थानीय संस्कृति से उनका अलगाव था या मूर्खतापूर्ण नकल द्वारा हँसी प्रदर्शन करना था।

नब्बे के दशक में टेलीविज़न

देश के इतिहास में नब्बे का दशक अर्थव्यवस्था, राजनीति और मीडिया के संबंध में उथल-पुथल भरा समय था। राष्ट्रीय राजनीति में सांप्रदायिकता के उदय की गूँज मलयालम सिनेमा में भी उठने लगी, जिससे पहचान और इतिहास के बारे में इसी तरह की धारणाएँ प्रचलन में आने लगी थीं। सांप्रदायिक भाषणों (discourses) को वैधता मिलने से उसने तत्कालीन आख्यानों (narratives) और भाषा के उपयोग को प्रभावित किया। महिलाओं और हाशिए के समुदायों की घटती हिस्सेदारी से नायक (heroes) अपनी शारीरिक भाषा और बोली में बिना किसी संदेह के सांप्रदायिक और मर्दाना (macho) बन गए। 90 के दशक के मलयालम सिनेमा का प्राकृतिक आवास वह पृष्ठभूमि थी, जिसका वासुदेवन नायर की कथाओं ने पर्दाफाश किया था।

मीडिया क्षेत्र में सैटेलाइट टेलीविज़न का प्रवेश और व्यापक प्रसार दुनिया भर से सूचनाओं और मनोरंजन को घरों तक पहुँचाने में सफल रहा। टेलीविज़न ने अब तक सिनेमा के क्षेत्र माने जाने वाले पारिवारिक नाटक जैसे विषयों को हथिया लिया। इससे सिनेमा उद्योग को नुकसान पहुँचा। टेलीविज़न ने दृश्य कथा साहित्य (visual fiction) को घर-घर पहुँचाया, जिससे सिनेमा थिएटर के दर्शकों की संरचना में भारी बदलाव आया, और सिनेमा को भी दर्शक वर्ग में परिवर्तन करना पड़ा।

समकालीन सिनेमा में भाषा का एक महत्त्वपूर्ण उपयोग इसकी क्षेत्रीयता पर ज़ोर देना और इसे प्रदर्शनात्मक बनाना है। यदि समुदाय/क्षेत्रीय भाषा पहले आदर्श मानी जाती थी, जो केरल समाज की बहुलता को अभिव्यक्त करती थी, तो अस्सी के दशक में यह अपवाद बन गई थी, जो सीमांत, गैर-सामान्य या हास्य को दर्शाती थी।

अब स्थानीय भाषा का उपयोग वस्तुतः प्रदर्शनात्मक हो गया है– यह प्रदर्शन के रूप में भाषा है। उदाहरण के लिए, *राजमाणिक्कम* या *प्रांचिएट्टन द सेंट* जैसी फिल्मों में भाषा अब पहचान या प्रामाणिकता का प्रतीक नहीं है, बल्कि खेल और प्रदर्शन का एक क्षेत्र है, एक ऐसा क्षेत्र जहाँ से नायक हमारे मनोरंजन के लिए एक वीर कथा प्रस्तुत करता है, जबकि इनमें पहली फिल्म दक्षिणी बोली में बनाई गई है, तो उसके बाद मध्य केरल में त्रिशूर बोली में।

संक्षेप में, यह कहना गलत नहीं होगा कि मलयालम सिनेमा में यह प्रदर्शन की भाषा से भाषा के प्रदर्शन तक की यात्रा थी।

नए माध्यम (इंटरनेट और मोबाइल) में मलयालम

इंटरनेट पर मलयालम

मलयालम ने मुख्य रूप से इंटरनेट पर अपनी उपस्थिति दर्ज की, जब प्रेस ने नए मीडिया की संभावनाओं की खोज शुरू की। बाद में मलयालम विकिपीडिया की तरह वेबसाइटों, ब्लॉगों, वेब पोर्टलों, सोशल नेटवर्क और ऑनलाइन एन्साइक्लोपीडिया में दिखाई देने लगी।

मलयालम वेबसाइटों का वास्तविक विकास और प्रसार 1990 के दशक के अंत में शुरू हुआ क्योंकि समाचार पत्रों ने वेबसाइट की संभावनाओं को महसूस किया और मलयालम में वेब क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया। 1997 में www.deepika.com की शुरुआत कर *दीपिका* इस क्षेत्र में अग्रणी रही और उसके बाद *मलयाल मनोरमा, केरल कौमुदि, मातृभूमि, देशाभिमानी, मंगलम, माध्यमम, वीक्षणम* आदि समाचार पत्रों ने इसका अनुसरण किया। आरंभ करने के लिए, समाचार तुरंत पाठ के रूप में इंटरनेट पर प्रसारित किए जाने लगे। आज इन नव स्थापित मीडिया द्वारा विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। ऐसे कई मलयालम समाचार पोर्टल इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। अधिकांश मुद्रित पत्रिकाओं और साप्ताहिक समाचार पत्रों की प्रतियाँ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं, और कुछ नए मलयालम प्रकाशन केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध हैं। इनके साथ, टेलीविज़न चैनल, जैसे– इंडियाविज़न और मनोरमा न्यूज़ भी ऑनलाइन दिखाई देने लगे हैं।

प्रसिद्ध कवि पी.पी. रामचंद्रन द्वारा संपादित *हरितकम* पहला कविता पोर्टल है और इसमें समकालीन, प्राचीन और अनुवाद जैसी विविध श्रेणियों में कविताओं का प्रस्तुतीकरण होता है। यह इसलिए भी अधिक लोकप्रिय हुआ क्योंकि इसमें कविताओं के ऑडियो संस्करण (ज़्यादातर कवियों द्वारा गाए गए), संवाद, लेख, समीक्षाएँ और अन्य ब्लॉगों के लिंक और मलयालम में कविता के साइटों के लिंक उपलब्ध कराए गए थे। लोकप्रिय मलयालम साइटों में indulekha.com, weblokam.com, thatsmalayalam.com के साथ-साथ याहू और माइक्रोसॉफ्ट नेटवर्क (MSN) के मलयालम संस्करण हैं। विकिपीडिया का मलयालम संस्करण (एक लोकप्रिय ऑनलाइन विश्वकोश) 2002 में शुरू किया गया, *सर्वविज्ञानकोशम* और *केरलविज्ञानकोशम* इंटरनेट आधारित लोकप्रिय विश्वकोशों (एन्साइक्लोपीडिया) में से हैं।

ब्लॉग

ब्लॉग, "वेब लॉग" का वेब आधारित शौकिया प्रकाशन क्षेत्र है। मलयालम में ब्लॉगिंग की शुरुआत 2002 में विदेश में काम करने वाले अभियंताओं (engineers) द्वारा की गई थी। आगे चलकर *मेलम* नामक एक ब्लॉग विकसित होने से मलयाली और केरल से संबंधित ब्लॉगों को वर्गीकृत करने में मदद मिली। दिसंबर 2002 में शुरू किया गया *जालकम*, मलयालम के शुरुआती ब्लॉगों में से एक है। यह यूनिकोड तकनीक से बहुत पहले दिखाई दिया और इसका ASCII कोडित पृष्ठ केरलाइट, एक True Type फॉन्ट का उपयोग करते हुए वेब अभिलेखागार में उपलब्ध है। 2004 की शुरुआत तक लगभग 20 ही मलयालम ब्लॉग चल रहे थे, जिनमें से अधिकांश विदेशी मलयाली लोगों के थे। 2004 के बाद मलयालम ब्लॉगिंग ने काफ़ी लोकप्रियता हासिल की, क्योंकि इस समय यूनिकोड टाइपिंग टूल का विकास हुआ और हुसैन के साथ एक मलयालम कंप्यूटिंग समूह द्वारा बनाए गए *वरमोझी, मोषिक्केमन, इन्स्क्रिप्ट मिनस्क्रिप्ट, तूलिका, अंजलि पुरानी लिपि*, और *मीरा* जैसे उपकरण अपने विकास के साथ और भी लोकप्रिय हो गए। आज 30,000 से अधिक मलयालम ब्लॉग हैं और हर दिन नए ब्लॉग शुरू भी हो रहे हैं।

ब्लॉग साहित्य, अपनी सामग्री की प्रकृति के अनुसार हास्य, सामाजिक आलोचना/राजनीति, व्यक्तिगत डायरी प्रविष्टियाँ, यात्रावृत्त, तकनीकी लेखन, पाकविद्या, सिनेमा पुस्तक समीक्षा, संगीत या किसी अन्य विषय को प्रस्तुत करते हैं। ब्लॉगस्फीयर इतिहास के प्रारंभिक चरणों में प्रवासी लोग प्रमुख ब्लॉगर थे। उनके लेखन में उनकी मातृभूमि और उसकी भाषा के प्रति उदासीन लालसा झलकती है। कालांतर में उन्होंने मलयालम में ब्लॉग की वृद्धि और विकास में काफ़ी योगदान दिया। प्रवासी मलयाली लोगों के लिए, ब्लॉग एक मिलन-स्थल के रूप में कार्य करते थे जहाँ वे अपनी रुचियों और इच्छाओं को साझा कर सकते थे। ब्लॉगिंग ने बुक रिपब्लिक का भी नेतृत्व किया, जो ब्लॉगर्स के एक समूह द्वारा आयोजित एक मुक्त पुस्तक मुद्रण और वितरण नेटवर्क है, जहाँ उत्कृष्ट ब्लॉग लेखन को पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाता था। लपुता (टी.पी. विनोद) का कविता संग्रह *निलविळियेकुरिच्चुळ्ळा कडम्कथकळ्* और वी.एम. देवदास का उपन्यास *डिल्डो* कुछ ऐसी ही प्रकाशित रचनाएँ हैं। इसी प्रकार

परोल एक लघु फिल्म है, जो ब्लॉगर्स के एक समूह द्वारा प्रकाशित ब्लॉग कहानी पर आधारित है। साहित्यिक सामग्री वाले ब्लॉगों में विशेषकर कविता ब्लॉग ज़्यादा लोकप्रिय हैं। *हरितकम.कॉम* (Harithakam.com) मलयालम में सभी कविता ब्लॉगों की एक सूची प्रदान करता है।

ब्लॉगिंग ने मलयालम में नए शब्दों का भी योगदान किया है। उदाहरण के लिए, *बूलोकम* (मलयालम ब्लॉग का समूह), *अनोनी* (गुमनामी टिप्पणीकार), *ब्लॉगुलकम, ब्लॉगर, ब्लॉगन्मार* (पुरुष ब्लॉगर), *ब्लॉगिनिमार* (महिला ब्लॉगर), *ब्लॉगात्महत्या* (ब्लॉग को मिटाने का कार्य), *बूलोकचुरुळ* (ब्लॉग रोल), *ब्लॉगेश्वरन, ब्लॉगुका, ब्लॉगेषुतुका, अनोनी पोस्टुका, डेलेटुका, कमेंटुका* आदि।

मलयालम भाषा सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर भी काफ़ी लोकप्रिय हो रही है, जिसने 1990 के दशक के बाद काफ़ी प्रगति की है।

मोबाइल फोन पर मलयालम

तीन साल की छोटी सी अवधि में भी मोबाइल फोन पर मलयालम का काफ़ी प्रभाव रहा है। मोबाइल फोन (और अन्य मोबाइल उपकरण) अब मलयालम पाठ प्रदर्शित करने के लिए तैयार हैं, जबकि पहले अंग्रेज़ी ही उनकी एकमात्र समर्थित (supported) भाषा थी। यूनिकोड के परिनियोजन द्वारा तैयार किए गए फॉन्ट की सुविधा किसी भी राज्य में मोबाइल संचार की पहुँच और लोकप्रियता को काफ़ी हद तक बढ़ा देती है, जैसे कि गैर-अंग्रेज़ी भाषी लोग अब संदेश, फोन मेनू और संकेत उसी भाषा में पढ़ सकते हैं जिस भाषा में वे सुगम हैं।

मलयालम कुंजी के साथ अलग मलयालम कीबोर्ड एप्लिकेशन और फोन कीबोर्ड ने मलयालम टंकण (typing) शुरू करने में मदद की है। एसएमएस और संपर्क सूचियों (contact lists) का प्रबंधन अब मलयालम में भी किया जा सकता है। जिन स्मार्टफोन में कंप्यूटर के समान कीबोर्ड होता है, उनमें यह और भी सरल हो गया है। कुछ फोन मलयालम समर्पित कीबोर्ड भी प्रदान करते हैं, जिसने टंकण के अनुभव को भाषा और संस्कृति के अनुकूल बना दिया है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग संचार दर्शन (communication philosophy) और इसके द्वारा अपनाई जाने वाली जन भागीदारी के तरीकों पर आधारित है। जिस प्रौद्योगिकी में जितनी अधिक जन भागीदारी होगी, वह इस सामाजिक व्यवस्था के प्रति उतनी ही अधिक विश्वसनीय होती है।

अभी हाल ही में जिस दृष्टिकोण पर न्यू मीडिया को ब्रांड किया गया है, वह प्राथमिक भागीदारी के संचार सिद्धांत को सही ठहराता है। पिछले दशक में हाशिए पर रहने वाले जिन समुदायों में "डिजिटल विभाजन" था, उनमें डिजिटल पहुँच की क्षमता में परिवर्तन के संकेत दिख रहे हैं। अब संज्ञानात्मक असंगति या प्रौद्योगिकी को स्वीकार करने में अनिच्छा काफ़ी हद तक कम हो गई है, जिससे स्थानीयता को अधिक समर्थन प्राप्त हो रहा है। हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि आदिवासियों और मछुआरों जैसे हाशिए के समुदायों के बीच मोबाइल फोन उपकरण की पहुँच ने संचार को और अधिक सरल व प्रभावी बना दिया है। मुख्यतः उनकी सामाजिक स्थिति से संबंधित बाधाएँ भी बदल गईं; जिससे उन्हें मुख्यधारा की लोकप्रिय गतिविधियों में भाग लेने में मदद मिली। प्रौद्योगिकी और सामाजिक जीवन के संतुलन में भाषाओं का स्थानीय आकर्षण प्रमुख कारकों में से एक है, जो मोबाइल मलयालम के माध्यम से केरल की जनसांख्यिकी के परे क्रांतिकारी बदलाव के साक्षी हैं।

मलयालम में ज्ञान

मलयालम में विश्वकोश

मलयालम में विश्वकोश (एन्साइक्लोपीडिया) की पहल 1946 में शुरू हुई। मलयालम में पहला विश्वकोश *विज्ञानम : मलयालम*

पॉपुलर एन्साइक्लोपीडिया था। इसके आठ खंडों में से पहला खंड 1947 में बालन पब्लिशर्स से प्रकाशित हुआ था। इसके अन्य खंडों का प्रकाशन 1964 से 1973 के बीच हुआ। 1971 में साहित्य प्रवर्तक सहकारी समिति, कोट्टायम द्वारा प्रकाशित होने पर *पुराण निघंडु* (संपा. वेट्टम मणि, अशोक बुकस्टॉल, कोट्टायम, 1964) को बाद में *पौराणिक विश्वकोश* का नाम दिया गया। *विश्व विज्ञानकोशम* के दस खंड (साहित्य प्रवर्तक सहकारी समिति) 1970 और 1972 के बीच लोकार्पित हुए। प्रस्तावित बहु-खंडों में *सर्व विज्ञानकोशम* (स्टेट इंस्टीटयूट ऑफ़ एन्साइक्लोपीडिक पब्लिकेशंस) का पहला खंड 1961 में प्रकाशित हुआ, और 2010 तक इसका पंद्रहवाँ खंड प्रकाशित हो चुका है। इसका संशोधित और वेब संस्करण जून 2008 में प्रकाशित हुआ था। मलयालम भाषा और साहित्य पर *मलयाल साहित्य सर्वस्वम* (संपा. के.एम. जॉर्ज, केरल साहित्य अकादमी, 1987), केरल पर *केरल विज्ञानकोशम* (देशबंधु प्रकाशन, 1987), *अखिल विज्ञानकोशम* (संपा. एन.वी. कृष्णा वारियर, डी.सी. बुक्स, कोट्टायम, 1988), विश्व साहित्य पर *विश्व साहित्य विज्ञानकोशम* (स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ़ एन्साइक्लोपीडिक पब्लिकेशंस, 1994) महत्त्वपूर्ण हैं। पौराणिक मिथकों और किंवदंतियों पर, *पौराणिक विश्वकोश* (वेट्टम मणि), *आयुर्वेद विज्ञानकोशम* (संपा. राघवन तिरुमुलप्पाडु, सम्राट प्रकाशन, त्रिशूर, 2004) और स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ़ एन्साइक्लोपीडिक पब्लिकेशंस के कोश-ग्रंथों में पारिस्थितिकी पर *पारिस्थिति विज्ञानकोशम* (2000), खगोल विज्ञान और विकास पर *ज्योतिशास्त्र विज्ञानकोशम* (2009), विकास पर *परिणाम विज्ञानकोशम* (2009), और *वार्षिक विज्ञानकोशम* (2011) भी महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

मलयालम में शब्दावलियाँ

लोकप्रिय शब्दावलियाँ, जैसे– तकनीकी वैज्ञानिक शब्दों के दो-खंड अंग्रेज़ी-मलयालम शब्दावली *विज्ञान शब्दावली* (1969), मानविकी पर दो-खंड *मानविकी शब्दावली* (केरल भाषा संस्थान), इंजीनियरिंग शब्दों पर *इंजीनियरिंग शब्दावली* (केरल भाषा संस्थान), कृषि संबंधी *कृषि शब्दावली* (केरल भाषा संस्थान), वाणिज्यिक पदावलियों से युक्त *वाणिज्य शब्दावली* (केरल भाषा संस्थान) 1969 में प्रकाशित हुईं। इसके बाद एक अंग्रेज़ी-मलयालम चिकित्सा शब्दों की *वैद्यक शब्दावली*, (केरल भाषा संस्थान, 1973), राजनीतिक और प्रशासनिक शब्दों की *भरण शब्दावली* (केरल भाषा संस्थान, 1974), भारतीय और पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांतों पर *साहित्य शब्दावली* (केरल भाषा संस्थान, 1974), वैज्ञानिक और चिकित्सा शब्दों का *विज्ञान निघंडु* (केरल भाषा संस्थान, 1975), भाषा पर *भाषाशास्त्र सांकेतिक शब्दावली* (संपा. मोहन भास, 1985), नंबूदिरि जाति बोली पर *नंबूदिरिभाषा शब्दकोशम* (एम.वी. विष्णु नंबूदिरि, 1982), और एक *मलयालम सूचना प्रौद्योगिकी निघंडु* (संपा. के. रवींद्रन, 2001) भी लोकार्पित हुए। वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग (सीएसटीटी) के सहयोग से केरल भाषा संस्थान ने 2011 में दस खंड प्रकाशित किए। इनमें शामिल हैं– *शस्यशास्त्रम* (वनस्पति विज्ञान), *जंतुशास्त्रम* (जूलॉजी), *रसतंत्रम* (रसायन विज्ञान), *भौतिकशास्त्रम* (भौतिकी), *नियमम* (कानून), *तत्त्वचिंता* (दर्शनशास्त्र), *मृगसंरक्षणम* (पशुपालन), *माध्यमपठनम* (पत्रकारिता), *राष्ट्रतंत्रम* (राजनीति) और *चरित्रम* (इतिहास)।

मलयालम में विज्ञान साहित्य

मलयालम में विज्ञान साहित्य लेखन को तीन चरणों में विभक्त कर सकते हैं। पहला चरण 1847 से पहले का है। दूसरा 1847-1957 के मध्य और तीसरा 1957 के बाद का है। पहले चरण में आयुर्वेद, खगोल विज्ञान और गणित विषयों पर सामग्रियाँ तैयार हुईं। आयुर्वेद के क्षेत्र में सबसे प्राचीन और महत्त्वपूर्ण कार्य, *आलत्तूर मणिप्रवाळम्* है, जिसे चौदहवीं शताब्दी में शायद आलत्तूर नंबी के परिवार के एक सदस्य द्वारा लिखा गया था, जो अष्टविद्याओं में सबसे प्रमुख माने जाते थे। उस समय के गणितीय ग्रंथों में *युक्तिभाषा* (1639) सबसे अलग है। इस युग में चिकित्सा विषयक कई काम हुए और कई संस्कृत रचनाओं के भाष्य रचे गए।

1847 से प्रारंभ दूसरे चरण में आधुनिक वैज्ञानिक विचारों के प्रसार के उद्देश्य से बड़ी संख्या में लेख और पुस्तकें लिखी गईं। अक्टूबर 1847 में गुंडर्ट द्वारा शुरू किए गए *पश्चिमोदयम* में आधुनिक विज्ञान पर पहला लेख मलयालम में छपा। अन्य प्रकाशनों जैसे *भाषापोषिणी, मंगलोदयम, मातृभूमि* ने भी इसका अनुसरण किया। यह वह चरण था जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार हेतु योजनाबद्ध और संगठित प्रयास किए गए थे। केरलवर्मा वलियकोयि तंपुरान, ए.आर. राजराजवर्मा, सी.पी. अच्युत मेनन और बाद में जोसेफ मुंडश्शेरी और एन.वी. कृष्ण वारियर ने मलयालम में वैज्ञानिक ग्रंथ लिखे और दूसरों को भी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। इस काल में विज्ञान के विकास को बढ़ावा देने के लिए कई औपचारिक और अनौपचारिक प्रयास किए गए। इनमें सर्वाधिक प्रयास करने वाले समूहों में महत्त्वपूर्ण हैं, भाषापोषिणी सभा, त्रावणकोर पाठ्यपुस्तक समिति और त्रावणकोर विश्वविद्यालय।

तीसरा चरण 1957 में शुरू हुआ। यह वह समय था जब बहुत सारे कार्य इस मान्यता के साथ हो रहे थे कि विज्ञान और समाज आपस में जुड़े हुए हैं और सामाजिक सुधार के लिए वैज्ञानिक सोच नितांत आवश्यक है। 1957 में केरल शास्त्र साहित्य समिति का गठन विज्ञान को आम आदमी की भाषा में प्रस्तुत करने के लक्ष्य को लेकर किया गया था, ताकि उसे व्यापक विश्वदृष्टि प्रदान की जा सके। यद्यपि यह एक वर्ष के बाद बंद कर दी गई, बाद में 1962 में स्थापित केरल शास्त्र साहित्य परिषद (केएसएसपी) ने इसे प्रतिस्थापित किया। विज्ञान पुस्तकों के प्रकाशन एवं वितरण में केएसएसपी का अमूल्य योगदान रहा है। केएसएसपी से प्रारंभ होकर केरल भाषा संस्थान द्वारा 1968 में स्थापित वैज्ञानिक, तकनीकी और शैक्षिक प्रकाशन सहकारी समिति (एसटीईपीएस) के प्रयास इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण रहे हैं।

वैज्ञानिक पुस्तकों को चार श्रेणियों में बाँटा जा सकता है, अकादमिक पुस्तकें, लोकप्रिय विज्ञान पुस्तकें, बच्चों की पुस्तकें और संदर्भ साहित्य, जो कि भाषा, शैली और लक्षित पाठक के आधार पर रचा जाता है। अब बच्चों की पुस्तकों को बहुत अधिक महत्त्व मिल रहा है और वे औपचारिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का हिस्सा भी बन रही हैं। इन पुस्तकों की बढ़ती माँग को महसूस करते हुए कई प्रकाशकों और लेखकों ने इस क्षेत्र में कदम रखा है। हालाँकि, इस क्षेत्र में अभी भी पर्याप्त अच्छी मलयालम पुस्तकें नहीं के बराबर हैं। इसके अलावा केएसएसपी, केरल भाषा संस्थान जैसी एजेंसियों और अन्य प्रकाशकों द्वारा संदर्भ पुस्तकों की श्रेणी में बड़े काम किए गए हैं।

प्रभेद/विशिष्टताएँ

लेखन दीक्षा अनुष्ठान – विद्यारंभम

केरल में तीन से पाँच वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को आमतौर पर अक्षरों की दुनिया में दीक्षित किया जाता है। यह अक्टूबर महीने में *विजयदशमी* के दिन *विद्यारंभम* नामक आनुष्ठानिक विधि से संपन्न होने वाला एक सरल लेकिन सुरुचिपूर्ण समारोह है, जिसमें एक नए स्वर्णिम किनारे वाली छोटी धोती या कपड़े पहने हुए बच्चे को गुरु की गोद में, या बच्चे के पिता या पितृसमान दूसरे की गोद में बिठाया जाता है। वे बच्चे के दाहिने हाथ की तर्जनी पकड़कर साफ़ रेत या थाली में चावल फैलाकर और उस पर पवित्र अक्षर एवं मलयालम के कुछ अक्षरमाला संकेत (जैसे हिंदू लिखते हैं *ओम! हरि श्री गणपतये नमः; अविघ्नं अस्तु*) लिख देते हैं। इसके बाद गुरु एक सोने की अँगूठी के सहारे बच्चे की जीभ पर *ओम!* और कुछ अक्षर लिखते हैं। बच्चा तब गुरु के चरणों पर झुकता है, उसे कुछ अर्पित करता या दक्षिणा देता है और बदले में गुरु का आशीर्वाद पा लेता है।

पुस्तकालय आंदोलन

केरल में भाषा, संस्कृति और शिक्षा की शक्ति को पीढ़ियों तक फैलाने में पुस्तकालय आंदोलन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूचना की लोकप्रियता ने इसे सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बना दिया।

त्रिवेंद्रम पब्लिक लाइब्रेरी (स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी) की स्थापना 1827 में हुई। यह भारत में स्थापित पहला सार्वजनिक पुस्तकालय था। इसकी स्थापना स्वाति तिरुनाल के शासन के दौरान एडवर्ड कैडोजेन के मार्गदर्शन में हुई थी। हालाँकि सार्वजनिक पुस्तकालय की अवधारणा त्रावणकोर में 1894 तक लोकप्रिय हो चुकी थी किंतु केरल का पुस्तकालय आंदोलन 1945 में अंबलप्पुझा में आयोजित अखिल त्रावणकोर पुस्तकालय संगठनों की एक बैठक के बाद ही संयुक्त उद्यम बन गया। प्रख्यात आयोजक, पी.एन. पणिक्कर द्वारा दिए गए संदेश ने दूसरों लोगों को इस कदर प्रेरित किया कि ग्रामीण इलाकों में भी हज़ारों पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी।

केरल राज्य के गठन से पहले मलयाली तीन रियासतों– त्रावणकोर, कोचीन (अब कोच्चि) और मलाबार– में निवास करते थे। वी.के. मेमोरियल लाइब्रेरी में 1945 में आयोजित अखिल त्रावणकोर लाइब्रेरी सम्मेलन केरल लाइब्रेरी फाउंडेशन के इतिहास में एक मील का पत्थर था। त्रावणकोर के सैंतालीस प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया, जिसके परिणामस्वरूप अखिल केरल त्रावणकोर पुस्तकालय परिषद की स्थापना की गई। सभी पुस्तकालयों को परिषद का सदस्य बनाने, मौजूदा गैर-कार्यरत पुस्तकालयों को पुनर्गठित करने और नए पुस्तकालयों को स्थापित करने की पहल की गई। इस उद्देश्य के लिए, के.एम. केशवन को अध्यक्ष और पी.एन. पणिक्कर को सचिव बनाकर, एक तेरह सदस्यीय विनिर्णय (ruling) समिति का गठन किया गया था, जिसे अखिल केरलीय त्रावणकोर पुस्तकालय परिषद का नाम दिया गया। यह संगठन केरल पुस्तकालय परिषद के गठन का आधार बना।

कोचीन (अब कोच्चि) में सरकार के प्रबंधन में पुस्तकालय स्थापित किए गए थे। फिर भी कोचीन के शासक, जो भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समर्थक थे, पुस्तकालयों को राष्ट्रीय भावना दर्शाने वाले एक मंच के रूप में प्रस्तुत करने में विफल रहे। इसलिए कोचीन के पुस्तकालयों को दी गई सरकारी मदद से कोई संगठनात्मक ढाँचा खड़ा करने में मदद नहीं मिली। क्योंकि सरकार ने सीधे पुस्तकालयों की स्थापना की और उन्हें वित्त पोषण दिया, इसलिए केरल राज्य के गठन के पहले कोचीन में कोई भी संगठित पुस्तकालय आंदोलन जन्म नहीं ले सका।

संपादक मंडल (पी.एन. पणिक्कर की अध्यक्षता में) द्वारा तैयार की गई पुस्तक *द लाइब्रेरी मूवमेंट्स इन केरल* में मलाबार राष्ट्रीय आंदोलन और पुस्तकालय परिषद के बीच के संबंध को इस प्रकार दर्शाया गया है– "1932 के बाद, मुख्यधारा के सामाजिक क्षेत्र में ए.के. गोपालन, के.आर. केरलीयन और कई अन्य लोग पुस्तकालयों के प्रचारक के रूप में खड़े हुए, किंतु उन्हें सरकारी सम्मति प्राप्त नहीं हो सकी। जिससे आगे चलकर ये पुस्तकालय वामपंथी संगठनों के प्रजनन स्थल बन गए। बाद में, जब ई.एम.एस. नंबूदिरिप्पाड केरल कांग्रेस समिति के सचिव बने, तो उन्होंने कांग्रेस समिति के सदस्यों से, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के सदस्यों से, नए पुस्तकालय शुरू करने का आह्वान किया। ये पुस्तकालय कई क्षेत्रों में कृषि और श्रमिक आंदोलनों के केंद्र थे। 1953 के बाद शुरू हुई मलाबार एडेड टीचर्स यूनियन ने भी ज़्यादा-से-ज़्यादा पुस्तकालयों की स्थापना को महत्त्व दिया।" अतः मलाबार में राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ पुस्तकालय आंदोलन भी शुरू हुआ और फला-फूला। मार्क्सवादी नेताओं में से एक ए. दिवाकरन ने मलाबार में काम करना शुरू करने वाले पुस्तकालयों को एक साथ लाने का मार्ग प्रशस्त किया। 14 मई, 1937 को कालीकट टाउन हॉल में आयोजित पुस्तकालय कार्यकर्ताओं की बैठक में मलाबार पुस्तकालय संगठन का जन्म हुआ। केरल पुस्तकालय संगठन की गतिविधियों का उद्घाटन 8 दिसंबर, 1943 को किया गया।

त्रावणकोर और कोच्चि राज्यों को मिलाकर एक ज़िला बनाए जाने पर तिरु-कोच्चि पुस्तकालय समूह का निर्माण हुआ। चूँकि केरल राज्य का गठन भाषा के आधार पर किया गया था, अतः यहाँ 1958 से केरल पुस्तकालय समूह नामक संगठन ने अपनी गतिविधियों की शुरुआत की, जिसमें मलाबार क्षेत्र के पुस्तकालयों को एक-दूसरों से जोड़ा गया।

जैसे-जैसे लोगों ने ज्ञान के अनुभव को साझा करना शुरू किया, पुस्तकालय सामाजिक परिवर्तन के मंच और प्रगतिशील विचारों के प्रसार केंद्र बन गए। उन्होंने कई लेखकों और विचारकों को जन्म देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन संस्थानों के

विकास के परिणामस्वरूप, मलयालम पुस्तकों को पढ़ने वाला एक समुदाय विकसित हुआ। पुस्तकालयों के माध्यम से पुस्तकों का प्रचार-प्रसार किया जाता था। इन पुस्तकालयों ने क्षेत्रीय भाषा और संस्कृति के विकास में काफ़ी योगदान दिया।

पढ़ने की (वाचन) संस्कृति के विकास से समाज में एक ऐसे वर्ग – अनपढ़ – का पता लगाने में मदद मिली, जो इससे वंचित थे। इस वर्ग में ऐसे लोग आते थे, जिनका एकमात्र उद्देश्य अपनी आजीविका कमाने के लिए कड़ी मेहनत करना था। पुस्तकालय आंदोलन ने निरक्षरता उन्मूलन और उन्हें राष्ट्र के विकास की ओर ले जाने के लिए योजनाएँ तैयार कीं। पूरे केरल में अतियन्नूर और मलप्पुरम ब्लॉकों से साक्षरता मिशन का श्रीगणेश हुआ। इस जनवादी साहित्यिक मिशन ने अपने काम को ग्रामीण पिछड़े क्षेत्रों के साथ-साथ तटीय क्षेत्रों में भी केंद्रित किया। शैक्षणिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों और समर्पित पुस्तकालय कार्यकर्ताओं ने एक ऐसे कार्य की आधारशिला डाली, जिसके केरल के सामाजिक परिवेश में दूरगामी परिणाम हुए। एक सुव्यवस्थित शिक्षण योजना, नव साक्षरों के लिए डिज़ाइन की गई विशेष पुस्तकें, संगोष्ठियों का आयोजन और एक साक्षरता पुस्तक-कोना, जिसने सभी पुस्तकालयों में पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित की, जैसी कुछ गतिविधियाँ पुस्तकालयों द्वारा लोगों तक ज्ञान के संदेश को फैलाने में अग्रदूत बनीं। साक्षरता संबंधी गतिविधियों की सतत प्रक्रिया के परिणामस्वरूप, मलयालम में पाठकों की एक नई पीढ़ी को बनाना और बनाए रखना संभव हुआ। इससे भाषा के प्रयोग और उसके संरक्षण में तेज़ी आई। अगस्त 1948 में पुस्तकालय परिषद के समाचार पत्र *ग्रंथालोकम* ने अपना प्रकाशन शुरू किया। पुस्तक आलोचना, पुस्तक परिचय, साहित्यिक चर्चा, पुस्तकालय समाचार आदि *ग्रंथालोकम* में प्रकाशित हुए। यह प्रकाशन कई साहित्यिक चर्चाओं के लिए एक मंच बनाने में सक्षम था।

पुस्तकालय कार्यकर्ताओं के निरंतर प्रयास के परिणामस्वरूप, 1989 में केरल सरकार ने केरल सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम पारित किया। राज्य-ज़िला-तालुका स्तर पर एक समिति की स्थापना हुई, जिसने महिलाओं और बच्चों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने की गतिविधियों का सूत्रपात किया। कई गतिविधियों की शुरुआत भी की, जैसे– घरों में किताबें उपलब्ध कराने हेतु "ग्रामीण महिला पुस्तक वितरण योजना", हाई स्कूल के छात्रों के लिए "ऑल केरल रीडिंग कॉम्पिटिशन" और मलयालम को अध्ययन का माध्यम बनाने वाले बाल कैरली नर्सरी स्कूल स्थापित हुए। उनका कार्य एजेंडा सभी क्षेत्रों के लोगों तक पुस्तकालयों की सेवाएँ पहुँचाना था।

केरल के लोगों को पढ़ने की पहल कराने वाले पुस्तकालय संस्थान ने पाठक के सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता और समानता के विचार को भी पोषित किया। पुस्तकों को प्राप्त और वितरित करने वाले पारंपरिक केंद्र होने के अतिरिक्त, पुस्तकालय परिषदों ने खुद को लोगों की बातचीत के केंद्रों के रूप में नवीनीकृत किया।

आज राज्य पुस्तकालय परिषद आधुनिक पुस्तकालय विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से समाज के सभी वर्गों में पुस्तकालय की सेवाओं को पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है।

मलयाली डायस्पोरा/प्रवासी मलयाली

मलयालम भाषी जनसंख्या के प्रवास को कई स्तरों पर देखा जा सकता है और इसका एक लंबा इतिहास है। केरल के लोग श्रीलंका और लक्षद्वीप में बस गए थे, जहाँ मलयालियों का उपनिवेशीकरण हुआ था। श्रीलंका और मलेशिया की ब्रिटिश नियंत्रित बागान (plantation) अर्थव्यवस्थाओं ने मलयालम मूल के शिक्षित और अशिक्षित लोगों को एक साथ समायोजित कर दिया। हालाँकि दूसरे विश्व युद्ध और उसके बाद इन गंतव्यों में मलयालम प्रवास में गिरावट देखी गई। ब्रिटिश काल के दौरान मद्रास (वर्तमान चेन्नई) ने उच्च शिक्षा और रोज़गार के लिए लोगों को आकर्षित किया। अंडमान द्वीपों में मलयाली प्रवासियों की शुरुआत अंग्रेज़ों द्वारा कालेपानी के हिस्से के रूप में की गई थी। बाद में सरकार द्वारा प्रायोजित पुनर्वास कार्यक्रम के तहत अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में मलयाली बस्तियों की स्थापना हुई। स्वतंत्रता के बाद, भारत के सभी राज्यों, संघशासित प्रदेशों और विदेशों में

भी मलयाली प्रवासी (Malayali diaspora) की महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दिखाई देने लगी। केरल से प्रवासन (migration) का मुख्य कारण रोज़गार और शिक्षा के लिए हुआ है। 1970 के दशक में खाड़ी देशों में तेल की कीमतों की उछाल ने बड़े पैमाने पर मलयालम प्रवास को प्रोत्साहित किया। 2007 में अनिवासी केरलवासियों की संख्या 27.4 लाख थी। तालिका 2.20 विदेशों में प्रवासी मलयाली के वितरण को दर्शाती है।

तालिका 2.20 : विदेशों में प्रवासी मलयाली

राष्ट्र	मलयाली प्रवास
संयुक्त अरब अमीरात	7,73,624
सऊदी अरब	4,47,440
ओमान	1,34,019
कुवैत	1,34,728
बहरीन	58,146
कतर	94,310
अन्य पश्चिम एशिया	2,836
संयुक्त राज्य अमेरिका	1,05,655
कनाडा	11,346
यूनाइटेड किंगडम	26,237
अन्य यूरोप	15,600
अफ्रीका	4,255
सिंगापुर	7,800
मालदीव	7,091
मलेशिया	10,636
अन्य दक्षिण पूर्व एशिया	7,091
ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड	1,418
अन्य देश	5,670
कुल	18,47,902

विदेशी भूमि में विरासत में मिली भाषा की कार्यक्षमता कम होना अपरिहार्य है, जो कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी मातृभाषा में प्रवाह को प्रभावित करती है। विरासती भाषा की कीमत पर मेजबान भाषा सेटिंग को अपनाना एक सार्वभौमिक प्रवृत्ति है। भाषा और पहचान के प्रति वक्ताओं का रवैया प्रवासी भूमि (emigrant land) में उनकी जीवन शक्ति को प्रभावित करता है।

मलयाली प्रवासियों का संचारी अथवा संवादात्मक (communicative) व्यवहार मिश्रित प्रवृत्तियों को दर्शाता है। पहचान, रिश्तेदारी, धार्मिक पृष्ठभूमि, विवाह संबंध, मातृभूमि के साथ आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध बनाए रखने की सामाजिक बाध्यता

उनके संपर्क व्यवहार को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुश्तैनी जड़ों से संबंधविच्छेद को वैकल्पिक माना गया है। नई पारिस्थितिकी के प्रति अनुकूलन के बावजूद, पुस्तैनी पहचान को जड़ से ख़त्म करने की प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है। इसके लिए खाड़ी देश मलयालम प्रवासियों का पसंदीदा गंतव्य होने के कारण पर्याप्त सुरक्षा के उपाय भी रखते हैं, जैसे– मलयालम भाषा के संरक्षण के लिए स्कूलों में मलयालम भाषा की शिक्षा आदि। इसके अलावा, मातृभूमि संबंध भी मज़बूत बने हुए हैं। खाड़ी देशों की सामाजिक पारिस्थितिकी न केवल भाषा के संरक्षण के पक्ष में है बल्कि इसके विकास को भी बढ़ावा देती है। अंडमान में स्थायी बस्तियों के बावजूद, माप्पिला लोक मदरसों (इस्लामिक धार्मिक स्कूल) के माध्यम से मातृभाषा शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है। पूरे भारत में, मलयाली प्रवासी सांस्कृतिक जड़ों के साथ जीवित हैं। खाड़ी देशों को छोड़कर, भाषा के प्रयोग के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कमी आई है। सामान्यतः, मलयालम बोलचाल की भाषा के रूप में ही जीवित है, जो कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोगों द्वारा बोली जाती है। आज आभासी माध्यमों से सुगम वैश्वीकरण ने भाषाई पहचान की चेतना को पुनर्जीवित किया है। इंटरनेट और उपग्रह संचार के प्रसार ने अपनी लुप्त जड़ों को पहचानने और उनसे जुड़ने में बहुत मदद की है। एक आभासी पारिस्थितिकी मलयालम के अस्तित्व को भी प्रोत्साहित करती है। उपरोक्त अवलोकन से यह तात्पर्य बिलकुल नहीं है कि मलयालम को इन मेज़बान देशों में कोई नुकसान नहीं पहुँचा है। फिर भी विश्व मलयालम सम्मेलन और वैश्विक मलयाली सम्मेलन मलयाली प्रवासी पहचान के स्पष्ट साक्ष्य हैं।

जन विज्ञान आंदोलन और मलयालम

सभी जन विज्ञान आंदोलनों (people's science movements) का प्राथमिक उद्देश्य मातृभाषा के माध्यम से वैज्ञानिक विचारों का प्रसार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने मातृभाषा में वैज्ञानिक लेखन को प्रोत्साहित किया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से मलयालम में कई वैज्ञानिक किताबें और लेख प्रकाशित होने लगे थे। बीसवीं शताब्दी में उनमें और भी वृद्धि हुई। फिर भी उन्हें रचनात्मक लेखन जैसी मान्यता या स्वीकार्यता नहीं मिली। इसी संदर्भ में केरल शास्त्र साहित्य परिषद (केएसएसपी) का गठन किया गया था।

इस संबंध में केएसएसपी के कुछ विशिष्ट लक्ष्य हैं, जैसे– उचित चर्चा के बाद वैज्ञानिक शब्दों के बारे में आम सहमति पर पहुँचना, सस्ती विज्ञान पुस्तकों के प्रकाशन की सुविधा प्रदान करना, विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के विकास की योजना बनाना आदि। इसके अलावा कुछ अन्य उद्देश्य भी दृष्टव्य हैं, जैसे– पूरे केरल के जानवरों और पौधों के स्थानीय नामों को एकत्रित कर उन्हें उपयुक्त वैज्ञानिक नाम दिलाना, प्रतिभाशाली लेखकों को प्रोत्साहित करना, साहित्यिक और वैज्ञानिक गतिविधियों में लगे लोगों की सूची तैयार करना और प्रकाशन गृहों तक उनकी पहुँच बनाना आदि। साथ ही सार्वजनिक चर्चाओं, बैठकों और विज्ञान/फिल्म प्रदर्शनियों द्वारा जनता के बीच वैज्ञानिक जागरूकता फैलाने और वैज्ञानिकों एवं साहित्यकारों के बीच सौहार्द और समझ का माहौल बनाए रखने के लिए भी वह कृतसंकल्पित है।

केएसएसपी ने 1966 में जनता के लिए एक वैज्ञानिक प्रकाशन *शास्त्रगति*, 1969 में हाई स्कूल के छात्रों के लिए *शास्त्र केरलम*, और 1970 में प्राथमिक छात्रों के लिए *यूरेका* का प्रकाशन शुरू किया। अब भी तीनों पत्रिकाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं।

मलयालम में विज्ञान के लेखकों के सामने सबसे बड़ी समस्या तकनीकी शब्दों को लेकर थी। केएसएसपी ने मलयालम में तकनीकी शब्दों का एक संग्रह बनाने की दिशा में काम किया। केएसएसपी द्वारा तैयार की गई शब्दावलियाँ मातृभूमि साप्ताहिक और एक्सप्रेस दैनिक में प्रकाशित होती थीं। केरल भाषा संस्थान द्वारा इन शब्दावलियों का व्यवस्थित उपयोग इंजीनियरिंग और वैज्ञानिक शब्दकोश बनाते समय किया गया। यद्यपि केएसएसपी इस दिशा में और आगे नहीं बढ़ पाया, किंतु इसने विज्ञान का एक शब्दकोश और एक हाई स्कूल विज्ञान कोश प्रकाशित किया, जो सीखने के साथ-साथ पढ़ाने में भी बहुत मददगार है।

केएसएसपी ने मलयालम लिपि के संशोधन में भी योगदान दिया है। इसने इस विषय पर एक विस्तृत चर्चा करवाई। 1977 में *शास्त्रगति* ने इस मुद्दे पर एक संपादकीय प्रकाशित किया और इसमें नई लिपि के कुछ नमूने भी पेश किए। स्पष्ट है कि ये हस्तक्षेप मलयालम में नई लिपि के विकास में बहुत प्रभावशाली बने।

1976 में केएसएसपी ने प्रकाशन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कदम उठाए। उस वर्ष बच्चों की किताबों के ग्यारह सेट प्रकाशित किए गए। इन प्रयासों ने यह साबित कर दिया कि ज्ञान की किसी भी शाखा को मलयालम में अच्छी तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है। अब तक केएसएसपी ने एक हज़ार से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनके एक से अधिक संस्करण भी निकाले गए हैं। बिकने वाली प्रतियों की संख्या लगभग दस हज़ार से डेढ़ लाख के बीच है। केएसएसपी द्वारा प्रकाशित बच्चों की विज्ञान की किताबें ज्ञान की इस शाखा की एक वास्तविक संपत्ति हैं।

केएसएसपी ने मलयालम में कुछ उत्कृष्ट संदर्भ ग्रंथ भी प्रकाशित किए हैं। वैज्ञानिक साहित्य ने वास्तव में मलयालम लेखन में अपनी समुचित जगह बनाई है।

मलयालम की राजनीतिक बोली

मलयालम भाषा की एक अन्य विशेषता उसकी जीवंत राजनीतिक बोली का विकास है। भाषा के शब्दार्थविज्ञान में राजनीतिक संकेत (undertones) स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकते हैं। यह अंतर केरल की राजनीतिक संस्कृति के इतिहास में भी निहित है। एक और बात जो केरल के समाज को अलग बनाती है, वह इसका सार्वजनिक परिदृश्य है। राज्य की राजनीतिक संस्कृति अपनी तर्कशील प्रकृति के कारण उल्लेखनीय रूप से भिन्न है और वह राजनीतिक कार्यों के लिए जनमत को बढ़ावा देती है। राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करने में भाषा एक प्रमुख भूमिका निभाती है जिससे जनमत का निर्माण होता है। किसी सहभागी लोकतंत्र में कोई समाज किस प्रकार की प्रतिक्रिया देता है, वह उसकी भाषा की राजनीतिक बनावट से समझा जा सकता है। केरल की जीवंत राजनीतिक संस्कृति एक ऐसा वातावरण प्रदान करती है जहाँ सभी क्षेत्रों में बहस की संस्कृति पाई जाती है। केरल के सार्वजनिक क्षेत्र पर बिना तर्क-वितर्क के कुछ भी तय करने की अनुमति नहीं है, ज़ाहिर है केरल की यह राजनीतिक संस्कृति विभिन्न प्रकार के सकारात्मक संघर्षों का परिणाम है। केरल का सार्वजनिक क्षेत्र प्रारंभ में सामाजिक क्षेत्र के मौलिक पुनर्गठन से निकलकर सामने आया था, यह उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध का वक्त था। औपनिवेशिक प्रशासन और मिशनरी गतिविधियाँ मिलकर सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्र में पर्याप्त परिवर्तन लाईं। उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही के दौरान, केरल में एक जीवंत प्रकाशन (print) संस्कृति की स्थापना हुई, जिनके परिणामस्वरूप एक जीवंत साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र का निर्माण हुआ। इस अवधि में आधुनिक जातिगत पहचानों का एकीकरण, "प्रभुत्वशाली जातियों के उत्पीड़न के ख़िलाफ़ निम्न" जातियों का दावा, राष्ट्रवाद का उदय और साम्राज्यवाद विरोधी समाजवादी आंदोलन में मज़दूर वर्ग की भागीदारी के प्रमाण भी मिलते हैं। इसके बाद जाति, धार्मिक और दक्षिणपंथी राजनीतिक समूहों के वर्चस्व वाले केरल में कम्युनिस्ट विरोधी मोर्चे के विरुद्ध भी सुगबुगाहट शुरू हुई। केरल की सामंती क्षेत्रीय व्यवस्था से सहभागी लोकतंत्र की तरफ़ परिवर्तन में विशिष्ट राजनीतिक बोली और लेखन दोनों का विभिन्न प्रकार से योगदान रहा है।

उचित राजनीतिक शब्दावली जानने से व्यक्ति को संवाद करने और अधिक प्रभावी रूप से राजनीतिक विषयों में भागीदारी की अनुमति मिलती है, क्योंकि मलयालम में राजनीतिक शब्दावली का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, *सघावु* (कॉमरेड), *वर्गबोधम* (वर्ग चेतना), *प्रत्ययशास्त्रम* (विचारधारा), *बुर्षा पेरुमाट्टम* (बुर्जुआ/बुर्जुआ व्यवहार), *तोऴिलाळि वर्गम* (श्रमिक वर्ग), *समरम* (हड़ताल), *पणिमुडक्कु* (हड़ताल), *मिन्नल पणिमुडक्कु, बंद, हड़ताल, चिन्नम, कोटि, सत्याग्रह, निराहारम, जाधा, प्रचार जाधा, बोधवलकरण जाधा, पदयात्रा,* आदि दैनिक शब्दावलियाँ हैं। बोलियों के उपयोग की

इस जीवंतता ने राजनीतिक शब्दावली को सुपरिचित और सांस्कृतिक मूल का बना दिया है। राजनीतिक शब्दावलियों की शैली भी मलयालम है। मलयालम में शब्दों और वाक्य प्रकारों का चयन अक्सर किसी की राजनीतिक पृष्ठभूमि को अभिव्यक्त करता है। राजनेता जनता के विचारों को प्रभावित करने के लिए भाषा की शक्ति में विश्वास करते हैं। केरल में प्रत्येक राजनीतिक दल के साथ शब्दावली और शैली का एक समूह जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, जहाँ वामपंथी दल *विकसनम* (विकास) शब्द का प्रयोग करते हैं, वहीं दक्षिणपंथी दल *पुरोगति* (प्रगति) शब्द का उपयोग करते हैं। मलयालम में नारे भी विशिष्ट रूप से गढ़े गए हैं। सार्वजनिक बोली में, श्रोताओं को संबोधित करते हुए *अभिवाद्यंङ्गल* (सलाम) और समापन भाषण में *जयहिंद* जैसे विशिष्ट शब्द रूप प्रयोग किए जाते हैं।

केरल में सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि किसी की बोली से उसकी राजनीतिक पहचान को आसानी से समझा जा सकता है। मलयालम भाषा का राजनीतीकरण चर्चा का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। सामंती अतीत के बोझ से दबी होने के कारण इसका भाषाई अस्तित्व ऐतिहासिक रूप से समस्याग्रस्त रहा है। इसलिए इसकी शब्दावलियाँ सामंती संवेदनाओं से मुक्त नहीं है। राजनीतिक संवेदनशीलता और प्रोक्ति संस्कृति (discourse culture) आज भी गर्व की भावना को जन्म देती है कि मलयालम अपनी मज़बूत राजनीतिक बोली के साथ एक प्रगतिशील भाषा है। निस्संदेह, आधुनिक मलयालम राजनीतिक रूप से संवेदनशील है और साहित्यिक मलयालम को राजनीतिक आयामों से प्रभावित करने में सक्षम है।

मलयालम सार्वदेशीयता

मलयालम भाषा की एक विशेषता भाषाई सार्वदेशीयता (cosmopolitanism) है। इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि मलयालम भाषा अन्य भाषाओं को शांतिपूर्वक समायोजित करती है। मलयालम पर विदेशी भाषाओं का गहरा प्रभाव है। प्राच्य भाषाओं, जैसे– पालि, प्राकृत, संस्कृत, सिरिएक, फ़ारसी, अरबी, उर्दू और हिंदुस्तानी का मलयालम शब्दावली में अपना हिस्सा है। इनमें संस्कृत से संबंध कहीं अधिक गहरा है, जो इसके व्याकरण में भी दिखाई देता है। डेढ़ शताब्दी की अवधि में पुर्तगाली उपस्थिति ने लगभग 150 शब्दों का योगदान दिया। मलयालम ने फ्रांसीसी से लगभग 30 शब्द और डच से लगभग दस शब्द और अंग्रेज़ी से 4,000 से अधिक शब्द उधार लिए हैं। आज भी मलयालम और अंग्रेज़ी के बीच संबंध जारी है। वर्तमान स्थिति यह है कि अंग्रेज़ी भाषा सभी क्षेत्रों में मलयालम को प्रभावित करती है। चीनी और सिरिएक जैसी भाषाओं से उधार शब्द भी हैं। वर्तमान मलयालम संवेदनशीलता यहाँ तक है कि शब्द की उत्पत्ति जो भी हो, वाक्य मलयालम में होना चाहिए। यह संवेदनशीलता निस्संदेह सार्वदेशीय (cosmopolitan) दृष्टिकोण दर्शाती है। अंदर और बाहर प्रवासन (migration) संस्कृति ने दूसरों को स्वतंत्र रूप से समायोजित करके भाषा के परिवर्तन को परिपक्व किया है। इस तरह की भाषाई आधुनिकता ने मलयालम भाषी समुदाय के बीच अंतर-भाषाई संवेदनशीलता हासिल करने में मदद की।

भाषा शुद्धतावादियों (purists) का मानना है कि मलयालम की सर्वदेशीय आधुनिकता भाषाई संदूषण (contamination) का एक उदाहरण है, और मलयालम सर्वदेशीयता सिर्फ़ एक भाषाई उपनिवेशवाद है, जो मलयालम के स्थानीय कलेवर को बर्बाद कर देता है। इस तरह के तर्क देने से पहले, किसी को भी भाषाई मेल-जोल की प्रकृति को समझना चाहिए, जिसके द्वारा मलयालम भाषा अपने भाषाई व्यक्तित्व और संपर्क भाषाओं के बीच संबंधों को स्पष्ट करती है। मलयालम के संपर्क इतिहास को देखें तो, इस बात पर ध्यान जाता है कि संपर्क पारिस्थितिकी में मलयालम की प्रतिक्रिया अधीनता की नहीं, बल्कि अन्य भाषाओं के साथ मेल-जोल की थी। अपने आधिपत्य के बावजूद न तो संस्कृत मलयालम का स्थान ले सकी और न ही केरल में जातीय समूहों के पूर्वज बनने के बाद अरब और पुर्तगाली मलयालम का स्थान ले सके। एक संकर भाषा के रूप में अरबीमलयालम (एक मलयालम बोली) का जन्म माप्पिला समुदाय की उत्पत्ति की याद दिलाता है। यह विनियोग (appropriation) के माध्यम से प्रतिरोध की एक प्रक्रिया है।

दूसरे को समायोजित करने का अर्थ "दूसरे" के प्रति समर्पण करना नहीं है, "अन्य" को स्थानीय बनाने की प्रक्रिया में मलयालम इसे सिद्ध करती है। यह दूसरे को अपने व्यक्तित्व से जोड़ने की एक परियोजना है। इस संदर्भ में, उधार लेने को और पुनः शब्दीकरण को अलग-अलग ढंग से समझा जाना चाहिए। उन अवधारणाओं और भावनाओं को व्यक्त करने वाले एक नए विश्व दृष्टिकोण (worldview) को समायोजित करना, जिसके लिए मलयालम में कोई समकक्ष नहीं था, विकास का संकेत है। लेकिन पुनः शब्दीकरण मौजूदा शब्दों का एक प्रतिस्थापन है, जिसे हतोत्साहित करने की आवश्यकता है। हालाँकि, मलयालम सार्वदेशीयता को एक ऐसी घटना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है कि एक भाषा ध्वनि और व्याकरणिक प्रणाली के पारंपरिक ढाँचे को बाधित किए बिना, दूसरे को अपनी प्रणाली में समायोजित करती है। इसलिए यह उपनिवेशीकरण के बिना भाषाई वैश्वीकरण के लिए एक मॉडल प्रदान करता है।

अंग्रेज़ी और मलयालम के बीच संबंध केवल शब्दावली तक ही सीमित नहीं है। अंग्रेज़ी के बहुत से वाक्यांश, कहावतें और मुहावरे मलयालम में मुक्त रूप से समाहित हो गए हैं। अंग्रेज़ी से मलयालम में अनुवाद कई शैलीगत परिवर्तन लाए हैं। संबंधवाचक सर्वनाम और कर्म वाच्य संरचना, जो संस्कृत से मलयालम में आई थी, को अंग्रेज़ी ने और मज़बूत किया है। अनिश्चित उपवाक्य का प्रयोग, "और" के लिए "उम" का समानांतर प्रयोग, अंग्रेज़ी प्रत्ययों के लिए समतुल्य उपसर्ग, पारंपरिक क्रियांत प्रकृति के लिए लचीली शब्द व्यवस्था, मिश्र वाक्य और विस्तृत खंड संरचना, विराम चिह्नों और संक्षिप्ताक्षरों का उपयोग आदि, अंग्रेज़ी को अपनाने में ध्यान देने योग्य प्रवृत्तियाँ हैं। वाक्य निर्माण में अंग्रेज़ी और मलयालम शब्दों को एक सीमा तक समन्वित कर एक संकर भाषा "मंगलिश" (मलयालम और अंग्रेज़ी का मिश्र रूप) विकसित हुई है। ऐसा सम्मिश्रण केवल बोलने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि लिखित भाषा में भी इसका प्रयोग देखा जा सकता है। मलयालम अपनी प्रस्तुति में अंग्रेज़ी को समायोजित करती है और अपनी संचार रणनीति बनाती है। यह प्रभाव दोनों तरह से पाया जाता है। केरल में अंग्रेज़ी मलयालम शैली में और इसके विपरीत बोली और लिखी जाती है।

मलयालम सार्वदेशीयता सोच-समझकर चुनी गई अवस्था है, जिसके द्वारा मलयालम भाषी समुदाय विश्व समुदाय से पहचान और संबंध निर्मित करता है। स्थानीय और वैश्विक दोनों जगह के सवाल पर मलयालम भाषा में बातचीत की जाती है। भाषाई सार्वदेशीयता ने मलयालम को एक नया भाषाई व्यक्तित्व प्रदान किया है। इसका यह स्वभाव मलयाली (मलयालम मातृभाषी) को किसी भी भाषाई माहौल में ढलने में मदद करता है। अन्य क्षेत्रों के मलयाली प्रवासियों को "अन्यता" के पक्ष में सहिष्णुता हितकारी होती है। उन्नत द्विभाषावाद और सार्वदेशीय एकभाषावाद दोनों ही बदलती सामाजिक-आर्थिक पारिस्थितिकियों पर प्रतिक्रिया देने के लिए भाषाई सुरक्षा प्रदान करते हैं। मलयालम विनियोग के माध्यम से प्रतिरोध की जो विशिष्टता दिखाती है, वह बदले हुए सामाजिक-आर्थिक परिवेश में भाषाओं को बदलाव और विलुप्त होने से बचाने के विकल्प के रूप में दुनिया के लिए एक योगदान है। यह प्रमाणित करता है कि कैसे एक भाषा अंतर-भाषाई संवेदनशीलता प्राप्त कर सकती है।

केरल में साक्षरता

संगम साहित्यिक कृतियाँ प्राचीन केरल में साक्षरता के उच्च स्तर को दर्शाती हैं। संगम काल के तमिल लेखकों के साथ-साथ तमिल ब्राह्मी लिपि की लोकप्रियता और व्यापारिक समुदाय द्वारा प्रयुक्त लिपि की जानकारी, सभी इसी ओर इशारा करते हैं। इस काल में केरल आए जैन और बौद्ध भिक्षुओं ने भी लिपि को लोकप्रिय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने जाति और पंथ (creed) की परवाह किए बिना उत्साहपूर्वक आम लोगों के बीच अक्षर ज्ञान का प्रसार किया। उनके *आश्रमों* और *विहारों* से जुड़े स्कूलों ने केरल के लिए अक्षरों की दुनिया का एक मज़बूत आधार बनाने में बहुत मदद की।

आठवीं शताब्दी में शुरू हुए ब्राह्मणवादी प्रभुत्व ने ग्यारहवीं शताब्दी में प्रमुखता हासिल की और ब्राह्मण पुरुषों तक अक्षर ज्ञान को सीमित कर दिया। एकसमान राजनीतिक वातावरण का निर्माण करके वे इस अभ्यास (practice) को फलदायी रूप से

लागू करने में सक्षम थे। इस जाति आधारित समुदाय द्वारा विकसित मंदिर उन्मुख तरीकों, प्रथाओं और सामाजिक रीति-रिवाजों से उच्च वर्गीय ब्राह्मण ज़्यादा लाभान्वित हुए थे। इसने गैर-ब्राह्मणों, महिलाओं, और पददलितों को शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार से भी वंचित कर रखा था। ब्राह्मण लड़कों को वेदों, *शास्त्रों* और संस्कृत में, *मठम* के नाम से प्रसिद्ध ब्राह्मण स्कूलों में *गुरुकुल* शिक्षा दी जाती थी। ध्यान देने योग्य है कि शिक्षित ब्राह्मण समुदाय की कुल आबादी का केवल एक प्रतिशत ही थे। सार्वजनिक स्थानों में अक्षर खुदे हुए पत्थर (शिलालेख) नहीं लगाए जाने का एक कारण यह भी हो सकता है। हालाँकि, छोटे पत्थरों पर लेखन के कुछ रूप गैर-ब्राह्मण समुदाय के बीच मौजूद थे। माना जाता है कि ये जैन और बौद्ध विहारों में पाषाणों के अवशेष थे।

उपनिवेशवाद के परिणामस्वरूप केरल में यूरोपीय आधुनिकतावाद की शुरुआत हुई। इससे यूरोपीय व्यापारियों के साथ ईसाई मिशनरियों का भी केरल में प्रवेश हुआ। उनमें से, जेसुइट पादरियों ने यूरोपीय मॉडल पर संस्थाओं और पाठशालाओं की स्थापना की, जिन्होंने सिरिएक, लैटिन और पुर्तगाली भाषाएँ भी सिखाईं। पुर्तगालियों और डच मिशनरियों द्वारा किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप ही विभिन्न कैथोलिक शैक्षिक संस्थान स्थापित किए गए थे। ये योजनाएँ नए विश्वासियों (new believers) को धर्म की ओर आकृष्ट और साक्षरता के प्रति आस्थावान रखने के लिए थीं। एक उच्च धार्मिक व्यवस्था से, महिलाओं को शिक्षा से वंचित करने और पिछड़ी जातियों के अधिक लोगों को शिक्षा के प्रति आकर्षित करने में असमर्थता से, इस अवधि के दौरान साक्षरता दर कम होती गई।

इस क्षेत्र में आए अरब व्यापारियों के माध्यम से इस्लाम ने न केवल केरल के लोगों पर अपना प्रभाव डाला, बल्कि अपना प्रचार-प्रसार और ज़्यादातर धर्म केंद्रित शिक्षा प्रणाली को मस्जिदों से जुड़े स्कूलों के माध्यम से संचालित भी किया। धार्मिक ग्रंथों का पाठ अरबी, अरबीमलयालम और मलयालम भाषाओं के माध्यम से होता था। हालाँकि उपनिवेशवादी प्रशासक इन संस्थानों को धार्मिक उग्रवाद के केंद्र मानते थे। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के माप्पिला दंगों के दौरान ये संस्थान सभी बाधाओं के बावजूद फले-फूले। 1921 के बाद मुस्लिमों ने माप्पिला स्कूलों और कुछ धर्मार्थ लोगों द्वारा स्थापित स्कूलों के माध्यम से साक्षरता और शिक्षा प्राप्त करनी शुरू कर दी। उन्नीसवीं शताब्दी में प्रोटेस्टेंट ईसाई मिशनरियों के आगमन के बाद साक्षरता में प्रगतिशील परिवर्तन दिखाई देने लगे। महत्त्वपूर्ण मिशनरी समूह बेसल इवेंजेलिकल मिशन, चर्च मिशन सोसाइटी और लंदन मिशन सोसाइटी थे। उन्होंने अंग्रेज़ी को प्रमुखता देकर भारत में शिक्षा शुरू की थी। यह शिक्षा उन लोगों को उपलब्ध कराई गई थी जो पहले इससे वंचित थे। इस निःशुल्क शिक्षा ने एक ऐसे समाज के निर्माण करने में मदद की जो न केवल पढ़ और लिख सकता था, बल्कि पाठशालाओं, सरकारी कार्यालयों के साथ-साथ ईसाई मिशनरियों के कारोबार में भी नौकरी के अवसर प्राप्त कर सकता था। केरल के शैक्षिक क्षेत्र का आधुनिकीकरण अनाथालयों, लड़कियों के स्कूलों और कॉलेजों के माध्यम से किया गया। इसके समानांतर देशी रियासतों के साथ-साथ ब्रिटिश शासित क्षेत्रों में भी कई सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूल स्थापित किए गए। जैसे-जैसे एक साक्षर समुदाय अस्तित्व में आया, राज्य में समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और साहित्यिक/शैक्षिक प्रकाशनों ने लोगों के जीवन को प्रभावित करना शुरू कर दिया। 1930 में नागरकोविल में एक प्रकाशन गृह की स्थापना के बाद, केरल में कई प्रकाशन केंद्र खुल गए। इस संबंध में चर्च मिशन सोसाइटी के बेंजामिन बेली और थॉमस नॉर्टन का योगदान उल्लेखनीय है। चर्च मिशन सोसाइटी ने 1916 तक केरल में लगभग 307 स्कूलों की स्थापना कर दी थी, जिनमें सेनाना मिशनरी समूहों द्वारा चलाए गए लड़कियों के स्कूल भी प्रमुख थे। अन्य स्थानों की तुलना में केरल में महिलाओं की साक्षरता दर बढ़ाने में इन स्कूलों ने अहम भूमिका निभाई।

उत्तरी केरल में कार्यरत बेसल मिशन ने 1839 में तलश्शेरी से शुरू करके मलाबार क्षेत्र में भी कई स्कूलों का निर्माण किया। उन्होंने औद्योगिक दुनिया के लिए एक नई पीढ़ी तैयार की, जो सिलाई, संगीत, दारु कला (woodwork), बुनाई और टाइल बनाने जैसे व्यवसायों में कुशल थी। इस काल में समाज सुधार के माध्यम से शिक्षा और साक्षरता को महत्त्व दिया गया। नारायण गुरु

ने अपने आंदोलन के नारे "शिक्षा के माध्यम से ज्ञानोदय" की शुरुआत के साथ कई स्कूलों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। अधिकांश सामाजिक विकास समूह समान गतिविधियों में शामिल थे। रात्रिकालीन विद्यालयों की स्थापना से समाजसेवी श्रमिक वर्गों को साक्षर बनाने लगे। इस काल में रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसाइटी, देवदार सोसाइटी और आर्य समाज जैसी कुछ अन्य संस्थाओं ने केरल में इसी तरह की पहल शुरू की। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू की गई "सहायता अनुदान" योजना के अंतर्गत, सरकार ने स्कूलों की स्थापना के लिए निजी पार्टियों को वित्तीय सहायता देनी शुरू कर दी। पुस्तकालयों की स्थापना और कार्यशालाओं का आयोजन करके राष्ट्रीय और विकासात्मक संगठनों ने केरल को एक साहित्यिक केंद्र बनाने का प्रयास किया। 1920 और 1930 के दशक के बाद समाजवादी-साम्यवादी विचारकों ने भी साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्यक्रम तैयार किए। मलयालम पढ़ाने के साथ-साथ विशेष समूहों ने हिंदी, जिसे हम राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार कर चुके थे, पढ़ाने के लिए राष्ट्रीय संगठनों के साथ भी काम किया।

केरल शास्त्र साहित्य परिषद (केएसएसपी) ने 1977 में केरल में "पूर्ण साक्षरता" का नारा दिया। इस उद्देश्य के लिए राज्य में साहित्यिक केंद्र स्थापित किए गए। 1987 में अधिक उपयोगिता वाले कार्यक्रम तैयार किए गए। सर्वप्रथम राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की मदद से, "पूर्ण साक्षरता" हासिल करने वाले ज़िले के रूप में एर्णाकुलम की घोषणा की गई थी। इस प्रयोग की सफलता के बाद "अक्षरा केरलम" योजना प्रस्तावित की गई। लगभग 40 लाख छात्र, तीन हज़ार राष्ट्रीय प्रशिक्षक, 200 ज़िला प्रशिक्षक और संबद्ध समूह साक्षरता के क्षेत्र में उतरे। कार्यक्रम आयोजित करने की ज़िम्मेदारी केएसएसपी को दी गई थी। केरल साक्षरता समिति (केएसएस) ने इसे एक जन आंदोलन में बदल दिया। कई सांस्कृतिक और कला रैलियों, लोक गीतों और सांस्कृतिक उत्सवों के माध्यम से साहित्यिक मिशन लोकप्रिय हो गया। बाद के वर्षों में विकास और शैक्षिक मंचों (platforms) ने केरल में साहित्यिक मिशन की विरासत को बनाए रखने की कोशिश की। केरल के लोग "सामाजिक परिवर्तन के लिए साक्षरता" के उद्देश्य से अपने सुव्यवस्थित आंदोलन के माध्यम से दुनिया को अपना "सक्सेस मॉडल" दिखाने में सफल रहे।

शब्दावली

केरल ने अपनी संस्कृति प्रणालियों, जैसे– भाषा, साहित्य, संगीत, वेशभूषा, आभूषण और खान-पान की आदतों पर बाहरी प्रभावों का पूरे दिल से स्वागत करते हुए अपने प्रवेश द्वार और ग्रामीण आवासों के दरवाज़े हमेशा खुले रखे हैं। इसलिए मलयालम तमिल के साथ अपनी व्यापक शब्दावलियाँ साझा करती है, बिना किसी आपत्ति के संस्कृत और अंग्रेज़ी से लिए गए सभी प्रकार के शब्दों का स्वागत करती है। इसने अपने संपर्क में आने वाली अधिकांश भाषाओं से अभिव्यक्तियाँ (expressions) उधार ली हैं। तमिल, संस्कृत और अंग्रेज़ी के अलावा अन्य भाषाओं से लिए गए कुछ सामान्य शब्द नीचे दिए गए हैं–

रिश्ते-नाते की शब्दावली

रिश्ते-नाते (या संबंध) की शब्दावली समाज में लोगों द्वारा अपने रिश्तेदारों को वर्गीकृत करने से संबंधित है। मलयालम रिश्ते-नाते की शब्दावली अपनी प्रकृति में जटिल है। इसमें सजातीय (consanguinal), संपार्श्विक (collateral), वैवाहिक और वंशीय संबंधों को अभिव्यक्त करने वाले शब्द शामिल हैं, जो हिंदुओं, ईसाइयों और मुस्लिमों में मौजूद हैं। आरोही और अवरोही दोनों पीढ़ियों को अपने-अपने अहं से अच्छी तरह चिह्नित किया जाता है। शब्द *सहोदरन/सहोदरि* या *उटप्पिरःन्नोन/उटप्पिरःन्नोळ* या *आङला/पेङळ* का प्रयोग क्रमशः भाई और बहन को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। कुछ शब्द धार्मिक रुझान वाले हैं, लेकिन सभी मलयालम का हिस्सा हैं। संदर्भित शब्दावली और व्यक्ति के लिए संबोधन शब्द अग्रलिखित तालिका में दिए गए हैं–

रिश्ते-नाते के शब्द

संदर्भ शब्द (मलयालम लिपि)	संदर्भ शब्द (लिप्यंतरण)	स्थिति	संबोधन शब्द	संबंध
അമ്മ അമ്മച്ചി ഉമ്മ മാതാവ് പെറ്റമ്മ	*अम्मा* *अम्मच्चि* *उम्म* *माताव* *पेट्टःम*		*अम्मा* *अम्मच्चि* *उम्मा* *माताव* *पेट्टःम्मा*	माता
അമ്മമ്മ മൂത്തശ്ശി വല്യമ്മച്ചി ഉമ്മൂമ്മ വല്യുമ്മ	*अम्मम्म* *मुत्तश्शि* *वल्यम्मच्चि* *उम्मूम्म* *वल्युम्म*		*अम्मम्मा* *मुत्तश्शि* *वल्यम्मच्चि* *उम्मूम्मा* *वल्युम्मा*	दादी/नानी
മുത്തച്ഛൻ മുത്തശ്ശൻ അപ്പാപ്പൻ വല്യപ്പൻ വല്യുപ്പ	*मुत्तच्छन्* *मुत्तश्शन्* *अप्पाप्पन्* *वल्यप्पन्* *वल्युप्प*		*मुत्तच्छन्* *मुत्तश्शा* *अप्पुप्पा* *वल्यप्पा* *वल्युप्पा*	दादा/नाना
വലിയമ്മ മൂത്തമ്മ	*वलियम्म* *मूत्तम्म*		*वल्यम्मा* *मूत्तम्मा*	माता की दीदी पिता के बड़े भाई की पत्नी
ചെറിയമ്മ ഇളയമ്മ കൊച്ചമ്മ കുഞ്ഞമ്മ ചിറ്റ ചിറ്റമ്മ കുഞ്ഞമ്മ	*चेरिःयम्म* *इळयम्म* *कोच्चम्म* *कुञ्ञम्म* *चिट्टः* *चिट्टःम्म* *कुञ्ञम्म*		*चेरिःयम्मा* *इळयम्मा* *कोच्चम्मा* *कुञ्ञम्मा* *चिट्टा:* *चिट्ट:म्मा* *कुञ्ञम्मा*	माता की छोटी बहन पिता के छोटे भाई की पत्नी
വല്യച്ഛൻ വല്യപ്പൻ പേരപ്പൻ മൂത്തപ്പൻ	*वल्यच्छन्* *वल्यप्पन्* *पेरप्पन्* *मुत्तप्पन्*		*वल्यच्छा* *वल्यप्पा* *पेरप्पा* *मूत्तप्पा*	माता की दीदी के पति पिता के बड़े भाई

संदर्भ शब्द (मलयालम लिपि)	संदर्भ शब्द (लिप्यंतरण)	स्थिति	संबोधन शब्द	संबंध
ചെറിയച്ഛൻ ഇളയച്ഛൻ ഇളയപ്പൻ ചിറ്റപ്പൻ കൊച്ചച്ഛൻ കുഞ്ഞപ്പ ഇളാപ്പ	*चेरिःयच्छन्* *इळयच्छन्* *इळयचछन्* *इळयप्पन्* *चिट्टःप्पन्* *कोच्चप्पन्* *कुञ्ञप्प* *इळाप्प*		*चेरिःयच्छा* *इळयच्छा* *इळयचछा* *इळयप्पा* *चिट्टःप्पा* *कोच्चप्पा* *कुञ्ञप्पा* *इळाप्पा*	माता की छोटी बहन के पति पिता का छोटा भाई
ജ്യേഷ്ഠൻ ചേട്ടൻ അണ്ണൻ മൂത്താങ്ങള ഇക്ക ഓപ്പ	*ज्येष्ठन्* *चेट्टन्* *अण्णन्* *मूत्ताङ्ङळा* *अळ* *ओप्प*	बड़ा	*ज्येष्ठन्* *चेट्टन्* *अण्णन्* *मूत्ताङ्ङळा* *इक्का* *ओप्पा*	माता की बहन का पुत्र बड़ा भाई पिता के भाई का पुत्र
അനുജൻ അനിയൻ ഇളയാങ്ങള അപ്പി തമ്പി	*अनुजन्* *अनियन्* *इळयाङ्ङळा* *अप्पि* *तंपि*	छोटा	*अनुजन्* *अनियन्* *इळयाङ्ङळा* *अप्पि* *तंपि*	माता की बहन का पुत्र पिता के भाई का पुत्र छोटा भाई
ജ്യേഷ്ഠത്തി ചേട്ടത്തി അക്ക അക്കൻ അക്കച്ചി ചേച്ചി ഇത്ത താത്ത ഓപ്പോൾ	*ज्येष्ठत्ति* *चेट्टत्ति* *अक्क* *अक्कन* *अक्कच्चि* *चेच्चि* *इत्तात्त* *तात्ता* *ओप्पोळ*	बड़ी	*ज्येष्ठत्ति* *चेट्टत्ति* *अक्का* *अक्कच्चि* *चेच्चि* *इत्ता* *तात्ता* *तात्ता* *ओप्पोळ*	माता की बहन की पुत्री पिता के भाई की पुत्री बहन

संदर्भ शब्द (मलयालम लिपि)	संदर्भ शब्द (लिप्यंतरण)	स्थिति	संबोधन शब्द	संबंध
അനുജത്തി അനിയത്തി	*अनुजत्ति* *अनियत्ति*	छोटी		माता की बहन की पुत्री पिता के भाई की पुत्री बहन
വല്യമ്മാമൻ മാമ്മൻ വല്യച്ഛൻ വല്യമ്മാമ	*वल्यम्मामन्* *मामन्* *वल्यच्चन्* *वल्यम्माम*		*वल्यम्मामा* *मामा* *वल्यच्चा* *वल्यम्मामा*	माता के बड़े भाई
ചെറിയമ്മാമ കുഞ്ഞമ്മാമൻ കുഞ്ഞച്ഛൻ	*चेरिःयम्माम* *कुञ्ञम्माम* *कुञ्ञच्चन्*		*चेरिःयम्माम कुञ्ञम्मामा* *कुञ्ञच्चा*	माता का छोटा भाई
അമ്മായി മാമി ചെറിയമ്മായി	*अम्मायि* *मामि* *चिरिःयम्मायि*		*अम्मायि* *मामि* *चिरिःयम्मायि*	माता के छोटे भाई की पत्नी
അച്ഛൻ അപ്പൻ ഉപ്പ ബാപ്പ പിതാവ്	*अच्छन्* *अप्पन्* *उप्प* *बाप्प* *पिताव*		*अच्छा* *अप्पा* *उप्पा* *बाप्पा* *पिताव*	पिता
അമ്മായി ചെറിയമ്മ ചെറിയമ്മായി അപ്പച്ചി	*अम्मायि* *चेरिःयम्म* *चेरिःम्मायि* *अप्पच्चि*		*अम्मायि* *चेरिःयम्मा* *चेरिःम्मायि* *अप्पच्चि*	पिता की छोटी बहन
മകൻ മോൻ പുത്രൻ	*मकन्* *मोन्* *पुत्रन्*		*मकने* *मोने*	पुत्र भाई का पुत्र पत्नी की बहन का पुत्र

संदर्भ शब्द (मलयालम लिपि)	संदर्भ शब्द (लिप्यंतरण)	स्थिति	संबोधन शब्द	संबंध
മകൾ മോൾ പുത്രി	*मकळ्* *मोळ्* *पुत्रि*		*मकळे* *मोळु* *मोळे*	पुत्री भाई की पुत्री पत्नी की बहन की पुत्री
മരുമകൾ മരുമോൾ അനന്തിരവൾ	*मरुमकळ्* *मरुमोळु* *अनंतिरवळ्*		*मरुमकळे* *मरुमोळे* *अनंतिरवळे*	पुत्र की पत्नी भाई के पुत्र की पत्नी पत्नी की बहन के पुत्र की पत्नी बहन की पुत्री
അനന്തിരവൻ മരുമോൻ മരുമകൻ	*अनंतिरवन्* *मरुमोन्* *मरुमकन्*		*मरुमोने* *मरुमकने* *मोने*	पुत्री का पति भाई की पुत्री का पति पत्नी की बहन की पुत्री का पति बहन का पुत्र
പേരക്കിടാവ് കൊച്ചുമോൾ കുഞ്ഞുമോൾ പൌത്രി	*पेरक्किडाव* *कोच्चुमोळ् कुञ्ञुमोळ्* *पौत्रि*		*पेरक्किडावे* *कोच्चुमोळु* *कुञ्ञुमोळु* *मोळे* *मोळुट्टि*	पुत्र की पुत्री भाई के पुत्र की पुत्री पत्नी की बहन के पुत्र की पुत्री
പേരമകൻ പേരക്കിടാവ് കൊച്ചുമോൻ കുഞ്ഞുമോൻ പുത്രൻ	*पेरमकन्* *पेरक्किडाव* *कोच्चुमोन्* *कुञ्ञुमोन्* *पौत्रन्*		*मोने* *कोच्चुमोने* *कुञ्ञुमोने* *मोनूट्टा*	पुत्र का पुत्र भाई के पुत्र का पुत्र पत्नी की बहन के पुत्र का पुत्र

संदर्भ शब्द (मलयालम लिपि)	संदर्भ शब्द (लिप्यंतरण)	स्थिति	संबोधन शब्द	संबंध
ഭർത്താവ് മാപ്പിള കെട്ടിയോൻ കുഞ്ഞിന്റച്ഛൻ വീട്ടുകാരൻ ആമ്പിറന്നോൻ മോന്റച്ഛൻ ചേട്ടൻ അങ്ങോര്	*भर्ताव* *माप्पिळ्* *केट्टियोन्* *कुञ्ञिन्टःच्चन्* *वीट्टूकारन्* *आंपिरःन्नोन्* *मोन्टःच्चन्* *चेट्टन्* *अङ्ङोरु*		*कोच्चाट्टा* *चेट्टा* *एट्टा*	पति
നാത്തൂൻ മദിനി ചേച്ചി	*नात्तून्* *मदिनि* *चेच्चि*		*नात्तूने* *मयिनि* *चेच्चि*	पति की बहन
ചേട്ടൻ	*चेट्टन्*	बड़ा	*चेट्टा*	पति का भाई
അനിയൻ	*अनियन मोन्*	छोटा	*अनिया मोने*	पति का भाई
ഭാര്യ പെൺപിള്ള പെണ്ണ് പെൺപിറന്നോള് കെട്ടിയോള് വീട്ടുകാരി വീട്ടികാരത്തി വാമഭാഗം അവര്	*भार्या* *पेण्पिळ्ळ* *पेण्णु* *पेण्पिरःन्नोळ्* *केट्टियोळ्* *वीट्टूकारि* *वीट्टूकारत्ति* *वामभागम* *अवरु*		*एडियॆ मोळे*	पत्नी
അളിയൻ മച്ചമ്പി മച്ചുനൻ മച്ചിനൻ മച്ചാൻ	*अळियन्* *मच्चंपि* *मच्चुनन्* *मच्चिनन्* *मच्चान्*		*अळिया* *मच्चंपि* *मच्चुना* *मच्चिना* *मच्चाने*	पत्नी का भाई / साला
ചേച്ചി അക്കൻ	*चेच्चि* *अक्कन्*	बड़ी	*चेच्चि* *अक्का*	पत्नी की बहन

रंगों के नाम

मलयालम में प्राथमिक रंग शब्दों को संशोधित करके रंगों की श्रेणी बनाई जाती है। *इलम* (हल्का)/ *कटुम* (गहरा)/ *किली* (पक्षी हरा)/ *तत्ता* (तोता)/ *चाणक* (गाय का गोबर) जैसे शब्द हरे रंग के विशेषक (modifier) हैं। मलयालम में परिचित वस्तुओं के नामों के साथ, प्रत्येक रंग के लिए, “निरःम” प्रत्यय जोड़कर समान रूप से पहचाना जाता है। इसी प्रकार तविट्ट (भूरा–भूसी से) आदि में निरःम प्रत्यय लगाया जाता है।

मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
വെളള/വെളുപ്പ്	*वेळ्ळ/वेळुप्पु*	सफेद
കറുപ്പ്	*करुःप्पु*	काला
മഞ്ഞ	*मञ्ञ*	पीला
നീല	*नील*	नीला
പച്ച	*पच्च*	हरा
ഇളംപച്ച	*इळं पच्च*	हल्का हरा
കടുംപച്ച	*कडुं पच्च*	गहरा हरा
കിളിപ്പച്ച	*किळिप्पच्च*	पक्षी (चिड़ियाई) हरा
തത്തപ്പച്ച	*तत्तप्पच्च*	तोता वाला हरा
ഇലപ്പച്ച	*इलप्पच्च*	पत्ते जैसा हरा
ചാണകപ്പച്ച	*चाणकप्पच्च*	गोबर जैसा हरा
റോസ് നിറം	*रोःस निरःम*	गुलाबी रंग
തവിട്ടുനിറം	*तविट्टू निरःम*	भूरा रंग
ഉളളിത്തൊലി നിറം	*उळ्ळित्तोलि निरःम*	प्याज के छिलके जैसा रंग
കൂമ്പു നിറം	*कूंपु निरःम*	केले के फूल जैसा रंग
കത്തിരിപ്പൂ നിറം	*कत्तिरिप्पू निरःम*	बैंगन के फूल जैसा रंग
ചെങ്കല്ലുനിറം	*चेङ्कल्लु निरःम*	ईंट जैसा लाल रंग
കുരുത്തോലനിറം	*कुरुत्तोल निरःम*	नारियल के कोमल पत्तों जैसा रंग
സ്വർണ്ണനിറം	*स्वर्ण निरःम*	सुनहरा रंग
കരിവീട്ടിനിറം	*करिवीट्टि निरःम*	शीशम जैसा रंग
താമരനിറം	*तामर निरःम*	कमल के फूल जैसा रंग
കാപ്പിപൊടിനിറം	*काप्पिप्पोडि निरःम*	कॉफी पाउडर जैसा रंग

मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
രക്തനിറം	*रक्त निरःम*	रक्तिम रंग
ഗോതമ്പുനിറം	*गोदंबु निरःम*	गेहुँआ रंग
കരിക്കട്ടനിറം	*करिक्कट्टु निरःम*	कोयले जैसा रंग
തേൽനിറം	*तेन निरःम*	शहद जैसा रंग
പൂവമ്പഴനിറം	*पूवंपऺम निरःम*	एक किस्म के केले का रंग
ചാമ്പക്കാനിറം	*चांपक्क निरःम*	बेलफल जैसा रंग
ചാരനിറം	*चार निरःम*	भूरा रंग
തുമ്പപ്പൂനിറം	*तुंबप्पू निरःम*	छोटा हलकुसा फूल जैसा सफेद रंग
താഴമ്പൂനിറം	*ताऺपूं निरःम*	पैंडानसिस फूल जैसा रंग
മേഘനിറം	*मेघ निरःम*	बादल जैसा रंग
ആകാശനിറം	*आकाश निरःम*	आसमानी नीला रंग
വെണ്ണനിറം	*वेण्ण निरःम*	मक्खन जैसा रंग
മയിൽ/പീലിനിറം	*मयिलप्पीलि निरःम*	मोरपंखी रंग
കോഴിപ്പൂനിറം	*कोऺिप्पू निरःम*	मुर्गा पंखी रंग
കുങ്കുമനിറം	*कुंकुम निरःम*	कुमकुम रंग
ചന്ദനനിറം	*चंदन निरःम*	चंदन की लकड़ी जैसा रंग

इसके अलावा, मलयालम भाषा ने उर्दू से ऊत (वॉयलेट और राख रंग मिश्रित) और अंग्रेज़ी से ऑरेंज, पिंक, क्रीम, ब्राउन शब्द लिए हैं।

अंक

क्रमांक

पत्तु (दस) के अपवर्ती रूप से 10 से 19 तक के क्रमांक एक से नौ तक के अंकों को जोड़कर और गुणांक 10 x 2 = 20, 30, आदि बनते हैं। 800 तक सैकड़ों (hundreds) दसियों अर्थात् दहाई (tens) के पैटर्न का अनुसरण करते हैं। 9, 90 और 900 की उत्पत्ति दूसरों से भिन्न है। *लक्षम* (लाख) और *कोटि* (करोड़) *आयिरम* (हज़ार) से अधिक हैं।

क्रमांक	मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
1	ഒന്ന്	*ओन्नु*	एक
2	രണ്ട്	रंडु	दो

क्रमांक	मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
3	മൂന്ന്	*मून्नुः*	तीन
4	നാല്	*नालु*	चार
5	അഞ്ച്	*अञ्जु*	पाँच
6	ആറ്	*आरुः*	छह
7	ഏഴ്	*एषु*	सात
8	എട്ട്	*एट्टू*	आठ
9	ഒൽപത്	*ओंपतु*	नौ
10	പത്ത്	*पत्तु*	दस
11	പതിനൊന്ന്	*पतिनोःन्नुः*	ग्यारह
12	പന്ത്രണ്ട്	*पन्द्रण्टु*	बारह
13	പതിമൂന്ന്	*पतिमून्नुः*	तेरह
14	പതിനാല്	*पतिनालु*	चौदह
15	പതിനഞ്ച്	*पतिनंचु*	पंद्रह
16	പതിനാറ്	*पतिनालरुः*	सोलह
17	പതിനേഴ്	*पतिनेषु*	सत्रह
18	പതിനെട്ട്	*पतिनेट्टू*	अठारह
19	പത്തൊമ്പത്	*पत्तोंपतु*	उन्नीस
20	ഇരുപത്	*इरुपतु*	बीस
21	ഇരുപത്തൊന്ന്	*इरुपत्तोन्नुः*	इक्कीस
30	മുപ്പത്	*मुप्पतु*	तीस
40	നാൽപത്	*नाल्पतु*	चालीस
50	അൻപത്	*अंपतु*	पचास
60	അറുപത്	*अरुःपतु*	साठ
70	എഴുപത്	*एषुपतु*	सत्तर
80	എൺപത്	*एण्पतु*	अस्सी
90	തൊണ്ണൂറ്	*तोण्णूरुः*	नब्बे
100	നൂറ്	*नूरुः*	सौ

क्रमांक	मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
101	നൂറ്റൊന്ന്	*नूट्टिःओन्नु*	एक सौ एक
110	നൂറ്റിപ്പത്ത്	*नूट्टिःपत्तु*	एक सौ दस
199	നൂറ്റിതൊണ്ണൂറ്റൊൻപത്	*नूट्टिःतोण्णूट्टिःओंपतु*	एक सौ निन्यानवे
200	ഇരുന്നൂറ്	*इरुन्नूरुः*	दो सौ
300	മൂന്നൂറ്	*मुन्नूरुः*	तीन सौ
400	നാനൂറ്	*नाःनूःरुः*	चार सौ
500	അഞ്ഞൂറ്	*अञ्ञूरुः*	पाँच सौ
600	അറുന്നൂറ്	*अरुःन्नूरुः*	छह सौ
700	എഴുന്നൂറ്	*एषुपुन्नूःरुः*	सात सौ
800	എണ്ണൂറ	*एण्णूरुः*	आठ सौ
900	തൊള്ളായിരം	*तोळ्ळायिरम*	नौ सौ
999	തൊള്ളായിരത്തി തൊണ്ണൂറ്റിയൊൻപത്	*तोळ्ळायिरत्तितोण्णूट्टि ओंपतु*	नौ सौ निन्यानवे
1000	ആയിരം	*आयिरम*	एक हज़ार
2000	രണ്ടായിരം	*रण्टायिरम*	दो हज़ार
3000	മൂവായിരം	*मूवायिरम*	तीन हज़ार
4000	നാലായിരം	*नाःलायिरम*	चार हज़ार
5000	അയ്യായിരം	*अय्यायिरम*	पाँच हज़ार
6000	ആറായിരം	*आराःयिरम*	छह हज़ार
7000	ഏഴായിരം	*एषायिरम*	सात हज़ार
8000	എണ്ണായിരം	*एट्टायिरम*	आठ हज़ार
9000	ഒൻപതിനായിരം	*ओंपतिनायिरम*	नौ हज़ार
10000	പതിനായിരം	*पतिनायिरम*	दस हज़ार
100000	ലക്ഷം	*लक्षम*	एक लाख
10000000	കോടി	*कोटि*	एक करोड़

आधारमूल एवं गुणक

मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
ഒന്നാം–ഓന്നാമൻ ഒന്നാമത്തവൻ/ ഒന്നാമത്തത് ഒന്നാമത്തെ/ആദ്യത്തെ	*ओन्नाम/ओन्नामन्* *ओन्नामत्तवन्/ओन्नामत्तत्* *ओन्नामत्ते/आद्यते*	पहला पहला वह (पु.) पहला/प्रारंभिक
രണ്ടാം	*रण्टां*	दूसरा
മൂന്നാം	*मून्नाम्*	तीसरा
നാലാം	*नालाम्*	चौथा
ഒരു പ്രാവശ്യം (തവണ)	*ओरु प्रावश्यम् (तवण)*	पहली बार (बारी)

यौगिक

मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
ഓരോസ്	*ओरोन्नुः*	हरेक/एक-एक
ഈരണ്ട്	*ईरण्टु*	दो गुना
മുമ്മൂന്ന്	*मुम्मून्नुः*	तीन गुना
നന്നാല്	*नःन्नाःलु*	चार गुना
അയ്യഞ്ച്	*अय्यञ्जु*	पाँच गुना
പപ്പത്ത്	*पप्पत्तु*	दस गुना

व्युत्पन्न

मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
ഒരുവൻ	*ओरुवन*	अकेला एक व्यक्ति
ഒരുത്തി	*ओरुत्ति*	अकेली एक महिला
ഇരുവർ	*इरुवरः*	दोनों
മൂവർ	*मूवरः*	तीनों
	इरुवरः	दो आदमी
	मूवरः	तीन आदमी

शरीर के अंग

किसी भी समाज में शरीर के अंगों के लिए प्रचलित शब्दावली उस समाज विशेष की संस्कृति को दर्शाती है। यह मानव पहचान की समग्रता का आधार है। मलयालम की शारीरिक शब्दावली को एक प्रकार की मूल शब्दावली के रूप में नीचे सूचीबद्ध किया गया है–

मलयालम	**लिप्यंतरण**	**हिंदी**
തല/ശിരസ്സ്	*तल/शिरस*	सिर
തലമുടി/രോമം	*तलमुटि/रोमम्*	सिर का बाल/रोम
തലയോട്	*तलयोटु*	खोपड़ी
ഉച്ചി/നെറുക	*उच्चि/नेरुःक्*	सिर का ताज
കണ്ണ്/ദൃഷ്ടി/മിഴി	*कण्ण्/दृष्टि/मिषि*	आँख/दृष्टि/नयन
കൃഷ്ണമണി/കണ്മണി	*कृष्णमणि/कण्मणि*	पुतली
പീലി/കൺപീലി/ഇമ	*पीलि/कण्पीलि/इम*	बरौनी
കൺപോള	*कण्पोळ्*	पलक
പുരികം/പിരികം	*पिरिकम/पुरिकम्*	भौंह
നെറ്റി	*नेट्टिः*	माथा
ചെന്നി/കന്നം	*चेन्नि/कन्नम्*	माथे का किनारा
മുഖം/മോന്ത	*मुखम्/मोंता*	चेहरा
കവിൾ/ചെകിട്/ചെവിട്/ ചെവിട്/ ചെപ്പ/ചെപ്പക്കുറ്റി	*कविळ/चेकिट/चेविड* *चेप्प/चेप्पक्कुट्टिः*	गाल
ചെവി/കർണം	*कात/चेवि/कर्णम्*	कान
ചോണ	*चोण*	लोलकी
മൂക്ക്/നാസികം	*मूक्क/नासिकम्*	नाक
നാസികാഗ്രം/മൂക്കിൻതുമ്പ്	*नासिकाग्रम्/मूक्किन्तुंपु*	नासिकाग्र
മൂക്കിൻദ്വാരം	*मूक्किलद्वारम्*	नासिका विवर
കൊങ്ങ	*कोङ्ङा*	गले का अग्र भाग
ദേഹം/ശരീരം	*देहम्/शरीरम्*	देह/शरीर
പുറം/കുറുക്ക്	*पुरःम्/कुरुःक्क*	पीठ
മുതുക്/പിടലി	*मुतुक्/पिडलि*	पीठ का ऊपरी भाग
തോള്/ഭുജം/പോയം	*तोळ्/भुजम्/पोयम्*	कंधा

मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
നട്ടെല്ല്	*नट्टेल्ल्*	रीढ़
തോളെല്ല്	*तोळेल्ल्*	हँसली
കക്ഷം	*कक्षम्*	काँख
കൈ	*कै*	हाथ
കൈമുട്ട്	*कैमुट्ट*	कोहनी
കൈക്കുഴ, മണിബന്ധം	*कैक्कुष/मणिबंधम्*	कलाई
കൈ/കൈപ്പത്തി/	*कै/कैपत्ति*	हाथ
കൈവെള്ള	*कैवेळ्ळ*	हथेली
കൈവിരൽ/വിരൽ	*कैविरल/विरल*	हाथ की उँगली
തള്ളവിരൽ/പെരുവിര	*तळ्ळविरल/पेरुविरल*	अँगूठा
ൽചണ്ടുവിരൽ	*चूंडुविरल*	तर्जनी
നടുവിരൽ/പാമ്പുവിരൽ	*नडुविरल/पांबुविरल*	मध्यमा
മോതിരവിരൽ	*मोतिरविरल*	अनामिका
ചെറുവിരൽ	*चेरुःविरल*	कनिष्ठा
കൈരേഖ/ഹസ്തരേഖ	*कैरेख/हस्तरेखा*	हस्तरेखा
നഖം	*नखम्*	नाखून
നെഞ്ച്/മാറ്	*नेञ्जु/मारः*	छाती
മുല/സ്തനം	*मुल/स्तनम्*	कुच/स्तन
ഇടുപ്പ്/അര	*इटुप्प/अर*	कमर
മടി	*मटि*	गोद
അടിവയറ്/നാഭി	*अडिवयरः/नाभि*	नाभि
പാലം/മൂക്കിൻപാലം	*पालम्/मूक्किन्पालम्*	नाक का पुल
ചുണ്ട്/അധരം	*चुण्ट/अधरम्*	अधर/होंठ
മീശ	*मीश*	मूँछ
കീഴ്താടി	*कीष़ताडि*	निचला जबड़ा
മേൽതാടി	*मेलताडि*	ऊपरी जबड़ा
താടി/താടിമുടി/താടിമീശ	*ताडि/ताडिमुडि/ताडिमीश*	दाढ़ी

मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
വാ/വായ്	*वा/वाय*	मुँह
മോണ	*मोण*	मसूड़ा
പല്ല്/ദന്തം	*पल्ल्/दंतम्*	दाँत
ഉളിപ്പല്ല്	*उळिप्पल्ल्*	कृंतक
അണപ്പല്ല്	*अणप्पल्ल्*	दाढ़
പാൽപ്പല്ല്	*पालप्पल्ल्*	दूध के दाँत
നാവ്/നാക്ക്/ജിഹ്വാ	*नाव/नाक्क/जिह्वा*	जीभ/जिह्वा
അണ്ണാക്ക്/ഉണ്ണാക്ക്	*अण्णाक्क/उण्णाक्क*	तालु
കുറു(ചെറു)നാക്ക്	*कुरुः (चेरुः) नाक*	अलिजिह्वा
തുപ്പൽ/ഉമിനീർ	*तुप्पल्/उमिनीरः*	लार
കഴുത്ത്	*कषुत्त*	गर्दन
പുറംകഴുത്ത്	*पुरःम् कषुत्त*	गर्दन का पिछला भाग
കാല്	*काल*	पैर
തുട/തൊട	*तुड/तोड*	जाँघ
തുടയിടുക്ക്/ഇടുക്ക്	*तुडयिडुक्क/इडुक्क्*	ग्रोम
കാൽമുട്ട്/മുട്ട്	*कालमुट्ट/मुट्ट*	घुटना
കാൽവണ്ണ/വണ്ണ	*कालवण्ण्/वण्ण*	पिंडली
കണങ്കാൽ	*कणंकाल*	निचले पैर का अग्रभाग
കാൽകുഴ	*कालकुषा*	टखना
പാദം	*पादम*	पैर
ഉപ്പൂറ്റി	*उप्पूट्टिः*	एड़ी
ഉള്ളങ്കാല്	*उळ्ळंकाल्*	पैर का तलवा
കാൽവിരൽ	*काल्विरल*	पैर की उँगली
പെരുവിരൽ/തള്ളവിരൽ	*पेरुविरल/तळ्ळविरल*	पैर का अँगूठा
വാരിയെല്ല്	*वारियेल्ल्*	पसली
എല്ല്	*एल्ल्*	हड्डी
പേശി	*पेशि*	मांसपेशी

मलयालम	लिप्यंतरण	हिंदी
ഞരമ്പ്/നാഡി	*ञरंब/नाडि*	नस
നാഡി/നാഡിയിടിപ്പ്	*नाडि/नाडियुडिप्प्*	नाड़ी
തലച്ചോറ്/മണ്ട	*तलच्चोरः/मण्ड*	मस्तिष्क
ഹൃദയം/ചങ്ക്	*हृदय/चंक्*	हृदय/दिल
രക്തം/ചോര	*रक्तम्/चोर*	रक्त/लहू
ഗർഭപാത്രം/ഗർഭാശയം	*गर्भपात्रम/गर्भाशय*	गर्भाशय
കരള്	*करळ्*	लिवर/यकृत
ത്വക്ക്/തൊലി/ചർമ്മം	*त्वक्क/तोलि/चर्मम्*	त्वचा/खाल
വൃക്ക	*वृक्क*	गुर्दा
ശ്വാസകോശം	*श्वासकोशम्*	फेफड़े
ആമാശയം/വയറ്	*आमाशयम/वयरः*	पेट
കുടൽ	*कुडल*	आँत
മൂത്രാശയം/മൂത്രസഞ്ചി	*मूत्राशयम्/मूत्रसञ्जि*	मूत्राशय
രക്തക്കുഴൽ	*रक्तक्कुष़ल*	नस/रक्त वाहिका
മറുക്	*मरुःक्*	तिल
വിയർപ്പ്/വിശർപ്പ്/സ്വേദം	*वियर्प्प/विशर्प्प/स्वेदम्*	स्वेद/पसीना

संदर्भ-सूची (References)

Albrecht Frenz and Scaria Zacharia. 2002. *In meinem Land leben verschiedene Völker*. Schwabenverlag.

Andronov, Mikhail Sergeevich. 1996. *A grammar of the Malayalam language in historical treatment*. Wiesbaden: Harrassowitz.

Annamalai, E. 2000. *Managing multilingualism in India political and linguistic manifestations*. New Delhi: Sage Publications.

Bailey, Banjamin.1829. *Puthiya Niiyaman*.

Bhattathiri, C. V. Vasudevan. 1977. *Bhashasatram*. Thrissur: Current Books.

Bulletins of Rama Varma Research Institute, Trichur.

Chaitanya, Krishna. 1971. *A history of Malayalam literature*. New Delhi: Orient Longman

Dale, Stephen Frederic. 1980. *Islamic society on the South Asian frontier: The Mappilas of Malabar*, 1498–1922. Oxford: Clarendon Press.

Elamkulam, P. N. Kunjan Pillai. 1957. *Malayala bhashayute vikasa parinamangal*. Kottayam: National Book Stall.
_____. 2005. *Selected works*, vol. I. Trivandrum (Malayalam).
Emeneau, Murray B. 1984. *Toda Grammar and Texts*. Philadelphia: American Philosophical Society.
Ezhuthachan, K. N. 1973. *The history of grammatical theories in Malayalam*. Dravidian Linguistics Association.
Ezhuthachan. 1975. *The history of the grammatical theories in Malayalam*. Trivandrum: Dravidian Linguistics Association.
Girish, P. M. The influence of English on Malayalam language. *English in India*. http://www.languageinindia.com/ may2005/girishenglishmalayalam1.html (accessed 18 January 2013).
Godavarma, K. 1948. *Indo-Aryan Loan Words in Malayalam*.
Gopi, K. M., ed. (compiled by). 1995. *Malayala grantha soochi* (Bibliography of works published in Malayalam). Thrissur: Kerala Sahitya Akademi.
Gopi, K. M., ed. 1998. *Adimudranam Bharathathilum Malayalatilum* (Early printing in India and Malayalam). Thrissur: Kerala Sahitya Akademi.
Gopi, K. M., ed. (comp.) 1976. *Bibliography of Malayalam works in translation*. Thrissur: Kerala Sahitya Akademi.
Gopi, K. M., ed. 1868. Kerala pazhama. Mathrubhumi.
Gundart, Herman 1851,1931. *Malayala vyaakaranam*. Kottayam: D. C. Books.
Iyer, L. V. Ramaswamy. 1936. *The evolution of Malayalam morphology*. Kerala Sahitya Academy.
James, Jancy. 2000. Englishinte Swadheenam Malayala Bhashayil. *In Malayala Bhasha Charithram*, ed. S. V. Venugopalan Nair. Thiruvananthapuram: Maluban.
Joseph, P. M. 1984. *Malayalathile Parkiya Padangal*. Thiruvananthapuram: Kerala Bhasha Institute.
Joshi, Irene (comp.) 1998. *A bibliography of malayalam literature in English translation*. www. lib.washington.edu/Southasia/guides/malayalam. html (accessed 25 February, 1998).
Karassery, M. N. Kerala Society Papers. Trivandrum.
Kurup, O. N. V. Traditional poetry in comparitive Indian literature. *Kerala Sahithya Charithram*, vol. I, 302–305.
Marar, Kuttikrishana. 1971. *Malayala Sailee*. Kozhikode: Mathrubhumi.
Nachimuthu, K. 2005. A Cilappatikarattil Malainaattu Vazakkukal, 26–41. Coimbatore: Ilango Adigal Ilakkiya Manram Malar: An English version of it was presented in the 33rd All India Conference of Dravidian Linguists held on 16–18 June, 2005 at Thiruvananthapuram. www.cds.edu, 25 January 2013
Nair, M. P. Sankunni. 1995. *Points of contact between Prakrit and Malayalam*. International School of Dravidian Linguistics.
Nair, Panmana Ramachandran. *Sampurna Malayala Sahithya Charithram*, 234. Kottayam: Current Books.
Nampoodiri, E. V. N. 2004. *History of Malayalam language*. ICKS, University of Kerala.
Narayana Pillai, P. K., ed. *Ramakathapattu vol. I & II*. Preface, 59–101.
Narayanan, M. G. S. 1973. *Cultural symbiosis in Kerala*, Trivandrum.
_____. 1994. *Foundations of society and culture in South India*. Delhi.
_____. 1996. *Perumals of Kerala*. Calicut.
Nayak, H. M., ed. 1985. *Epic in Indian literature*. Dharwad: India Institute of Kannada Studies.
Nayar, V. R. Prabodhachandran. 2012. *Bhashasastra Nighandu*. Thiruvananthapuram: Kerala Bhasha Institute.
_____. 2012. *Bhashasastra Nighandu*. Kerala: State Institute of Languages.
Paniker, K. Ayyappa. 1978. *History of Malayalam literature*, 23–24.
Parameshwara Aiyer, Ulloor.1990. *Kerala Sahithya Chrithram* (History of literature of Kerala). Thiruvananthapuram, Kerala: University of Kerala.
Pillai, Elamkulam Kunjan.1955. *Kerala bhashayude vikasaparinamangal,* 103–104. Kottayam: Sahitya Pravarthaka Cooperative Society.
Priyadarshan, G. 1982. *Malayalapathrapravarthanam: Prarambhaswarupam* (The Publication of Newspapers in Malayalam: Early Formulations). Thrissur: Kerala Sahitya Akademi.
Puthussery, Ramachandran.1973. *Language of Middle Malayalam.* Trivandrum: Dravidian Linguistics Association of India.

Rajarajavarma, A. R. 2001. *Kerala panineeyam.* Kottayam: DC Books.
Ramaswami Aiyar, L.V. 1936. *The evolution of Malayalam morphology*. Ernakulam: Cochin Government Press.
Ravivarma, L. A. 1938. *Ancient scripts of Kerala*. Pracheena Kerala Lipikal (Ist edition).
Sam, N. 2003. *Malayala Patra Pravartanam Pathonpatham Noottandil.* Kottayam: DC Books.
Sastri, K. A. Nilakanta. 1955. *A History of South India: From prehistoric times to the fall of Vijayanagar.* Indian Branch: Oxford University Press.
Sekhar, A. C. 1954. *Evolution of Malayalam*. Poona: Deccan College.
Sinnappah, Arasaratnam 2004. *Maritime India in the seventeenth century*. New Delhi: Oxford University Press. South Indian Inscriptions, Madras.
Sreekanteswaram, G. Padmanabha Pillai. 1923. *Sabdatharavali.* Kottayam.
Subramoniam, V. I. 1961. *Index of Purananuru.* Trivandrum: Department of Tamil, University of Kerala.
_____. 1974. *Dialect survey of Malayala: Ezhava/Tiya*. Trivandrum: University of Kerala. Travancore Archaeological Series, Trivandrum.
Varrier, K. M., Prabhakara. 2004. *Malayalam Mattavum Valrchayum.* Sukapuram: Vallathool Vidya Peetham.
Varrier, K. M., ed. 1985. *History of Malayalam language.* Madras: University of Madras.
Zvelebil, Kamil. 1968. *From Proto-South Dravidian to Tamil and Malayalam.* Prague, Czechoslovakia: Oriental Institute.
2007. *Aadyakalamasikakal* (Early Magazines). Thrissur: Kerala Sahitya Akademi.

3



केरल की लघु भाषाएँ

ब्यारि

भूमिका

"ब्यारि" या "बेयरि" शब्द की उत्पत्ति तुलु भाषा के शब्द "ब्यारा" से मानी जाती है, जिसका सामान्य अर्थ व्यापार या व्यवसाय है। चूँकि इस समुदाय के ज़्यादातर लोग व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल हैं, इसलिए स्थानीय तुलु भाषी लोगों ने इन्हें "ब्यारि" या "बेयरि" नाम दिया।

ब्यारि समुदाय दक्षिण कन्नड़ मुस्लिम आबादी का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा बनता है। शेष ब्यारि चिकमगलूर, शिमोगा, कोडगु, हासन और उत्तर कन्नड़ के समीपवर्ती ज़िलों में रहते हैं। मुंबई और गोवा में भी ब्यारि लोग रहते हैं। इतना ही नहीं, ब्यारि लोग मध्य एशिया के खाड़ी देशों में भी विभिन्न व्यवसायों में संलग्न हैं, जिनकी जनसंख्या लगभग 15 लाख है।

ब्यारि बाशे (ब्यारि भाषा) कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ और उडुपी ज़िलों तथा केरल के कुछ हिस्सों, मुख्यतः कासरगोड ज़िले में बोली जाने वाली एक भारतीय भाषा है। इस भाषा में तुलु स्वानिकी (Phonology) और व्याकरण से युक्त मलयालम मुहावरे शामिल हैं। ब्यारि लोगों के माप्पिलाओं के साथ घनिष्ठ संपर्क के कारण ब्यारि भाषा को पारंपरिक रूप से माप्पिला बाशे के नाम से जाना जाता था। शताब्दियों से तुलु के सशक्त प्रभाव के कारण आज इसे तुलु और मलयालम दोनों भाषाओं की करीबी माना जाता है। इसे पहली बार सुनने पर कासरगोड ज़िले के एक मलयाली को यह मलयालम की तरह लगेगी, लेकिन दक्षिण केरल के मलयाली लोगों को यह अलग ही भाषा प्रतीत होगी।

ब्यारि भाषा कन्नड़ लिपि में लिखी जाती है। यह मलयालम की दूसरी बोलियों की प्राचीन विशेषताओं के साथ–साथ आधुनिक नवाचारों को भी दर्शाती है, क्योंकि यह मलयालम की अन्य बोलियों की सुदूर संबंधी के रूप में सदियों से तुलु और कन्नड़ भाषिक समूहों से जुड़ी हुई है। तुलु भाषी समुदाय से घिरे होने के कारण इस बोली की स्वनिमिक (phonological), रूपात्मक और वाक्यात्मक संरचना पर तुलु का प्रभाव स्पष्ट है।

भाषाई विशेषताएँ

"ळ", "ण", "रः" की भिन्नता

इस भाषा में मलयालम भाषा की विशेष ध्वनियों की तरह *ळ*, *ण*, और *रः* नहीं पाए जाते बल्कि उनके स्थान पर क्रमशः *ळ* का "ल", *ण* का "न", *रः* का "र" और *टः टः* का "त्त" हो जाता है, जो कि तुलु भाषा में मिलते हैं।

ब्यारि	**कन्नड़**	**मलयालम**	**हिंदी**
शन्ते	*शन्ते*	*चंता*	बाज़ार
एनि	*एनि*	*एणि*	सीढ़ी
पुलि	*हुनासे (हुलि)*	*पुळि*	इमली
कात्त	*गालि*	*काट्टः*	हवा

"व" और "ब" की भिन्नता

मानक मलयालम का प्रारंभिक "व" ब्यारि भाषा में प्रारंभिक "ब" होता है। यह भिन्नता तुलु में भी दिखाई देती है।

ब्यारि	**मलयालम**	**तुलु**	**कन्नड़**	**हिंदी**
बेलि	*वेलि*	*बेलि*	*बेलि*	घेरा
बित्तु	*वित्तु*	*बित्तु*	*बीज* (कन्नड़ में "बित्तु", अंग्रेज़ी में "गाय")	बीज
बाडिगे	*वाटका**	*बाडिगे*	*बाडिगे*	किराया

*यह वर्ण विन्यास स्वनिमिक है। ध्वन्यात्मक (phonetic) स्तर पर यह सामान्यतः "वाडका" है, जो तुलु और ब्यारि रूपों के ज़्यादा नज़दीक है। ऐसा इसलिए है कि घोष स्फोट व्यंजनों (voiced plosive consonants) के स्वरों के अंतर वाली ध्वनियों पर स्थानीय प्रभाव पड़ता है। जो भी हो, स्थानीय द्रविड़ शब्दों के लिए ही यह नियम लागू होता है। चूँकि "वाटका" संस्कृत से लिया गया शब्द है, इसलिए इसका शुद्ध उच्चारण "वा"टका ही होगा।

"अ" और "ए" की भिन्नता

मानक मलयालम भाषा के "अ" के स्थान पर ब्यारि भाषा में "ए" का प्रयोग होता है।

ब्यारि	**कन्नड़**	**मलयालम**	**हिंदी**
आमे	*आमे*	*आमा*	कछुआ
चेरे	*केरे हावु*	चेरा	चूहा साँप
मूले	*मूले*	*मूला*	कोना

"न" और "म" की भिन्नता

मानक मलयालम शब्दांत में मिलने वाले "न" और "म" का ब्यारि भाषा में लोप हो जाता है।

ब्यारि	**मलयालम**	**हिंदी**
शुरोग	*आद्यम*	पहला
इल्ले	इल्लम्	नंबूदिरि परिवार/घर
कळ्ळा	कळ्ळन	चोर
कुप्पाया	*कुप्पायम्*	कपड़ा

मानक मलयालम भाषा के शब्द में जो द्वित्व व्यंजन (geminated consonants) दीर्घ स्वर के बाद और दूसरे लघु स्वर के बाद आता है, ब्यारि में वह द्वित्वहीन बन जाता है।

ब्यारि	**मलयालम**	**तुलु**	**हिंदी**
पूचे	*पूच्चा*	*पुच्चे*	बिल्ली
माङे	*माङ्का*	*कुक्कु*	आम

सर्वनाम

ब्यारि	**हिंदी**	**ब्यारि**	**हिंदी**
ञान	मैं	*अवन*	वह (पु.)
ञम्मल	हम	*अवल*	वह (स्त्री.)
निः	तू	*अदु*	वह
णिञल	तुम	*अवर*	वे

ब्यारि में लगभग सभी शब्द मलयालम, तुलु और अरबी भाषा के शब्दों से संबंधित हो सकते हैं। हालाँकि कुछ समकक्ष केवल केरल में मलयालम की माप्पिला बोलियों में पाए जा सकते हैं।

ब्यारि भाषा पर अरबी भाषा का सशक्त प्रभाव पड़ा है। तटवर्ती प्रदेशों के अधिकांश ब्यारि भाषी अपनी दैनिक बातचीत में बहुत सारे अरबी शब्दों का प्रयोग करते हैं। *सान, पिनहना, गुब्बूस, दब्बोस, पत्तिरि, राक्कसि, सेयिनतान* और *कयीन* जैसे शब्दों का प्रयोग ब्यारि भाषा में आम है, जबकि इन शब्दों का मूल अरबी भाषा में है। इसके अलावा, ब्यारि लोग तमिल और मलयालम शब्दों का भी प्रयोग करते हैं। उल्लेखनीय है कि ब्यारि के 75 प्रतिशत शब्दों को तमिल और मलयालम भाषी समझ सकते हैं।

लोक साहित्य

तटवर्ती प्रदेशों के ब्यारि लोगों ने कन्नड़ और ब्यारि दोनों भाषाओं का उपयोग करके समृद्ध साहित्यिक कृतियों का निर्माण किया है। ब्यारि साहित्य में कविताएँ, कहानियाँ, शोध आलेख, दक्षिण कन्नड़ मुस्लिम निवासियों का ऐतिहासिक विश्लेषण, निबंध, कहानियाँ और साहित्य की अन्य विधाएँ शामिल हैं। ब्यारि साहित्य को समृद्ध करने में कई उल्लेखनीय ब्यारि साहित्यकारों का योगदान है। ए. वहाब दोड्डामने ने जहाँ अंग्रेज़ी-कन्नड़-ब्यारि शब्दकोश का निर्माण किया, वहीं द *मुस्लिम्स ऑफ़ दक्षिण कन्नड़* नामक एक जानकारीपूर्ण वृत्तचित्र (documentary) के रूप में एक पुस्तक का प्रकाशन भी किया है। प्रसिद्ध विद्वान सुशीला पी. उपाध्याय ने ब्यारि साहित्य का मूल खोजने पर एक व्यापक अध्ययन किया है।

ब्यारि लोगों ने मंगलोर और अन्य शहरों से कई पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया है। इन पत्रिकाओं में कुछ लोकप्रिय हो गईं और कुछ ब्यारि इतिहास का हिस्सा बन गईं। आम तौर पर ब्यारि साहित्य कन्नड़ भाषा में ही लिखा जाता है। ब्यारि में अब तक 100 से ज़्यादा पुस्तकों, 400 ऑडियो कैसेटों और 2 वीडियो एलबमों का निर्माण हो चुका है।

ब्यारि लोगों द्वारा ब्यारि के कई गीत भी रचे गए हैं। गीतकारों और संगीतकारों ने कई ब्यारि एलबम निकाले हैं, जिनकी हज़ारों इलेक्ट्रॉनिक कॉपियाँ बेची जा चुकी हैं।

लोक गीत

ब्यारि भाषा में कई गीत व गजलें हैं। यद्यपि ये गीत अपने-आप में अद्वितीय हैं, फिर भी *माप्पिलाप्पाट्टु* (माप्पिला गीत) से इनकी समानता स्पष्ट देखी जा सकती है। सामान्यतः ब्यारि लोक गीतों को विवाह (मंगिला), बारात जैसे कई अन्य शुभ अवसरों पर

गाया जाता था। *कोलकलि पाट्टु* एक ऐसा गीत है, जो सांस्कृतिक नाटक मंचन *कोलाट* के दौरान गाया जाता है। लड़कियों द्वारा बच्चे को सुलाने के लिए *उंजाल पाट्टु* और वैवाहिक रस्म में *मयिलांजि पाट्टु* गाया जाता है।

दुर्भाग्यवश पूर्वजों द्वारा गाए जाने वाले इन लोक गीतों की जानकारी आधुनिक ब्यारि लोगों को नहीं है। कई ब्यारि लोक खेल भी लुप्त हो चुके हैं। *अप्प चुड्डु चुड्डु पातिमा* वह गीत है, जो ब्यारि महिलाएँ नई-नवेली दुल्हन से चुहल करने के लिए गाती हैं। *मंगिला* (विवाह) के खास अवसर पर पास-पड़ोस की बुजुर्ग महिलाएँ एकत्रित होकर दुल्हन को घेरकर छेड़छाड़ वाले इस सुरीले गीत को गाती हैं। इसकी शुरुआत कुछ इस प्रकार होती है–

अप्प चुड्डु चुड्डु पातिमा,
इप्प बरु बरु मपुले;
चुट्टे अप्प करिनिञ पोयि,
बन्ने माप्पिल मडिङ पोयि...

हिंदी अनुवाद

ओ पातिमा, तू अप्पम बना, बना
तेरा पति आ रहा है
तेरा बनाया अप्पम तो जल गया
अब तेरा पति भी लौट गया।

शब्दावली (ब्यारि-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

ब्यारि	हिंदी	ब्यारि	हिंदी
उप्पा	पिता	*उप्पुप्पा*	दादा
उम्मा	माँ	*उम्माम्मा*	दादी
मोन	पुत्र	*उप्पुप्पा*	नाना
मोळ	पुत्री	*उम्माम्मा*	नानी
भर्ताउ	पति	*मोत्ताप्पा*	ताऊ
भार्या	पत्नी	*इळेयप्पा*	चाचा
एटत्ति	दीदी	*काका*	ससुर
अनियेत्ति	छोटी बहन	*अम्मायि*	सास
एटन	बड़ा भाई	*ना:तु*	ननद

शरीर के अंगों के नाम

ब्यारि	हिंदी	ब्यारि	हिंदी
कयि	हाथ	*कवल*	गाल
कालु	पैर	*ने:रियानि*	एड़ी
मुट्टु	घुटना	*पोर:म*	पीठ

ब्यारि	हिंदी	ब्यारि	हिंदी
तला	सिर	*कीवयर*	निचला पेट
कण्णु	आँख	*वयर*	पेट
मूकु	नाक	*कुञ्ज*	कंधा
वायि	मुँह	*मुनःगै*	कोहनी
नेःट्टि	माथा		

संख्यासूचक शब्द

ब्यारि	हिंदी	ब्यारि	हिंदी
ओन्नुः	एक	*आरुः*	छह
रःण्डु	दो	*एळु*	सात
मून्नुः	तीन	*एट्टु*	आठ
नाःलु	चार	*ओम्बदु*	नौ
अन्जु	पाँच	*पत्तु*	दस

रंगों के नाम

ब्यारि	हिंदी	ब्यारि	हिंदी
चोप्पु	लाल	*बेळ्ळा*	सफेद
पच्चा	हरा	*करुःप्पु*	काला
मञ्जा	पीला	*नेरःला*	बैंगनी
नीला	नीला	*रोसे*	गुलाबी

समयसूचक शब्द

ब्यारि	हिंदी	ब्यारि	हिंदी
पुलर्चा	बहुत सुबह	*मकरिवु*	संध्या
राविले	सुबह	*रात्रि*	रात
दिनम्	दिन	*मऴक्कालम*	वर्षा ऋतु
नःट्टुच्चा	मध्याह्न	*तनुप्पुकालम*	सर्दी का मौसम
उच्चा	दोपहर	*वेयिलकालम*	गर्मी का मौसम
(व)यिन्नेरम्	शाम		

प्रकृति से संबंधित शब्द

ब्यारि	हिंदी	ब्यारि	हिंदी
भूमि	भूमि	*समुद्रम्*	समुद्र
आकाशम्	आकाश	*गुव (परवतम्)*	पर्वत

कोंकणी

केरल में कोंकणी बोलने वाले गौड़ा सारस्वत ब्राह्मण (जीएसबी), वाणिया और कुडुंबि हैं। पुर्तगालियों द्वारा धार्मिक उत्पीड़न के डर से वे तेरहवीं से सोलहवीं शताब्दी ईस्वी के बीच केरल चले गए। कोंकणी ब्राह्मण पंच गौड़ा (गौडा) के सारस्वत उपखंड का एक समूह है। वाणिया कोंकणी वैश्य हैं और कुडुंबिचेट्टि कोंकणी शूद्र माने जाते हैं। 2001 की जनगणना रिपोर्ट में गौड़ा सारस्वत ब्राह्मणों को ब्राह्मण और वाणिया को "गैर-अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों" के अंतर्गत चक्कालन वर्ग में रखा गया है। जबकि कुडुंबि को मूप्पन और कुडुंबिचेट्टि के रूप में एक अलग समूह माना गया। केरल में गौड़ा सारस्वत ब्राह्मण और वाणिया का संबंध कोंकणी भाषा से है, जबकि कुडुंबियों का संबंध कुडुंबि भाषा से है।

भारत की आठवीं अनुसूची में शामिल कोंकणी गोवा की राजभाषा है। इस अनुसूची में कोंकणी का स्थान पंद्रहवाँ है, जिसके बारे में विस्तृत विवरण भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण – गोवा की भाषाएँ, खंड 8 भाग 1 में दिया गया है। यहाँ पर केवल केरल में उसकी उपस्थिति का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। भारत की जनगणना 2001 के अनुसार, भारत में कोंकणी बोलने वालों की जनसंख्या 24,89,015 है। इनमें गोवा में 6,02,606, कर्नाटक में 7,06,397, महाराष्ट्र में 3,12,618 और केरल में 64,008 हैं। दंतकथाओं के अनुसार कोंकणी की उत्पत्ति इस प्रकार हुई– लगभग 1900 ई.पू. हिमालय में आए भूकंप के कारण जब सरस्वती नदी भूमि में अंतर्लीन हो गई तो नदी के किनारे रहने वाले ब्राह्मणों को वहाँ से गोमंतक की ओर पलायन करना पड़ा। इस प्रवास में वे शौरसेनी प्राकृत की अपनी बोली भी लेकर आए, जो समय के साथ आधुनिक कोंकणी में बदल गई। वंश के आधार पर कुडुंबियों को कुन्बियों की ही जाति का माना जाता है, जो गोवा के मूल निवासी थे। ये हट्टे-कट्टे थे। इनका निवास सलचेते तालुका में था, जिन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया। कोच्चि के राजा वीर केरलवर्मा (1624-1637) के *तिट्टूरम* (शाही हुक्मनामा) द्वारा 1627 में कोच्चि *महाजनम* के ताम्रपट्ट में लिखा गया है कि राजा ने कोंकणियों को कुछ विशेषाधिकार दिए थे, जिनमें उन्हें कर भुगतान से छूट, घर बनाने तथा कोच्चि से विदेशी राज्यों में व्यापार करने की अनुमति शामिल थी। कोच्चि के दीवान द्वारा त्रावणकोर और कोच्चि प्रांत के ब्रिटिश प्रशासक डब्ल्यु. कुल्लन के नाम लिखे गए पत्र में उल्लेख है कि 'कोच्चि में कोंकणी लोगों का आगमन हुआ, क्योंकि उन्हें अपने राज्य से अपनी धार्मिक मान्यताओं और देवी-देवताओं की मूर्तियों के साथ 1294 ई. में मजबूरन विस्थापित होना पड़ा। वे दक्षिण की ओर यात्रा करते हुए कोच्चि के महाराजा के साम्राज्य में पहुँचे। महाराज ने उन्हें न केवल शरण दी, बल्कि भूमि और संरक्षण भी प्रदान किया, तदुपरांत वे कोच्चि में ही निवास करने लगे, कालांतर में यह समुदाय *कोंकणस्थ महाजनम* के नाम से जाना जाने लगा।' (दीवान डायरी, भाग 144/1858 दिनांक 6-3-1858, राज्य अभिलेखागार, एर्णाकुलम)।[1]

भगवती पाट्टु (गीत), जिसकी वैश्य मंदिरों में प्रस्तुति होती थी, से भी उनके आगमन के समय का उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार, क्रागनूर (कोच्चि बंदरगाह का पहला नाम) ही वह जगह है, जहाँ इनके कदम सबसे पहले पड़े। तत्पश्चात् 1648 ई. में, कोच्चि के राजा वीर केरलवर्मा ने *तिट्टूरम* के तहत इस समुदाय को उनकी अच्छी तरह से परिभाषित सीमा "संकेतम" के भीतर के दीवानी एवं फौजदारी मामलों का अधिकार प्रदान किया। वे अपने निवास स्थान को "गोसीपुरम" कहते थे, जो गोवापुरि शब्द से व्युत्पन्न है।

कोंकणी भाषा

केरल के कोंकणी और कुडुंबि लोगों की भाषिक स्थिति एक दिलचस्प भाषिक दृश्य प्रदर्शित करती है। जहाँ तक भाषा का सवाल है, केरल के कोंकणी अपनी मातृभाषा को दृढ़तापूर्वक परंपरागत रूप से कायम रखे हुए हैं। वे अपनी भाषा में होने वाले भाषिक परिवर्तन

1. Studies on Cooper Plate No. 8, preserved at the Ernakulam Regional office of the Archives Kerala, 1992.

का प्रतिरोध करते हैं, दूसरी ओर कुडुंबि अपनी मातृभाषा को मुख्यधारा की भाषा में समर्पित करने की प्रक्रिया में हैं। जहाँ कोंकणी अपनी मूल शब्दावली पर दृढ़ हैं, वहीं कुडुंबि मूल शब्दावली, संख्या पद्धति, रिश्ते-नाते की शब्दावली, शारीरिक अंगों के नाम और अस्थायी संगठन में बड़े पैमाने पर सरल एवं सहज शब्दों को अपना लेते हैं। जहाँ तक व्याकरण का संबंध है, कोंकणी कुडुंबियों की तुलना में मुख्यधारा की भाषा के साथ व्याकरणिक विलयन अथवा अभिसरण (convergence) का कम अवसर देते हैं।

स्थानीय भाषा में सरल-सहज शब्दों और व्याकरणिक विशेषताओं के शामिल होने से यह प्रदर्शित होता है कि संबंधित समुदाय कैसे अपनी भाषा और मुख्यधारा की भाषा पर हावी हो जाता है। केरल में कोंकणी मलयालम और कन्नड़ दोनों लिपियों में लिखी जाती है।

एक ही भाषा की दो किस्में बोलने वाले दो समुदायों के बीच देखे गए इन अंतरों को उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में अंतर के प्रकाश में समझाया जा सकता है। कोंकणी उच्च जाति के माने जाते हैं और सामाजिक-आर्थिक रूप से कुडुंबियों से अधिक विकसित एवं समृद्ध हैं। कोंकणी कुडुंबियों की तुलना में सामाजिक-आर्थिक रूप से अधिक शक्तिशाली हैं, जो स्थानीय समुदाओं के बराबर शक्तिशाली माने जाते हैं। परिणामस्वरूप उन्होंने अपनी भाषा को सफलतापूर्वक बनाए रखा है। स्थानीय समुदायों से सामाजिक-आर्थिक रूप से कमज़ोर एवं कोंकणी लोगों से बराबरी न कर सकने वाले कुडुंबि मुख्यधारा की भाषा मलयालम में अचानक भाषा परिवर्तन की प्रक्रिया से गुज़रे हैं। दोनों भाषाओं के उपलब्ध आँकड़ों से पता चलता है कि कुडुंबि सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता बढ़ाने के लिए मलयालम में स्थानांतरित होने की तीव्र इच्छा दिखाते हैं। उनमें मुख्यधारा की संस्कृति को अपनाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है, जबकि कोंकणी बिलकुल इसके विपरीत हैं। जब भाषा के प्रति निष्ठा की बात आती है, तो युवा कोंकणी भाषी अपनी मातृभाषा के प्रति सकारात्मक रुख रखते हैं, जबकि कुडुंबियों में युवा अपनी मातृभाषा को उतना महत्त्व नहीं देते। यद्यपि बुज़ुर्ग कुडुंबि अभी भी अपनी मातृभाषा के प्रति गौरव का अनुभव करते हैं और उसे बनाए रखना चाहते हैं लेकिन ऐसा लगता है कि वे भी सामाजिक दबाव के आगे झुक चुके हैं। प्रवासन के संदर्भ में इसे अल्पसंख्यक भाषाओं की एक सामान्य प्रवृत्ति माना जा सकता है। स्थानीय समुदाय की तुलना में एक प्रवासी समुदाय सामाजिक-आर्थिक रूप से कमज़ोर और राजनीतिक रूप से पिछड़ा हुआ होता है, जिसमें मुख्यधारा की भाषा एवं संस्कृति को अपनाने की प्रवृत्ति पाई जाती है। प्रवासी समुदाय यदि स्थानीय समुदाय की तुलना में सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक रूप से बराबर या अधिक शक्तिशाली हो तो वे अपनी भाषा एवं संस्कृति में होने वाले संभावित परिवर्तनों का विरोध करते हैं।

कोंकणी की वर्तमान स्थिति

केरल में इन दिनों कोंकणी के सुधार के लिए सराहनीय काम किए जा रहे हैं। युवा पीढ़ी में अपनी मातृभाषा की नींव डालने के लिए स्थानीय मंदिरों के आसपास कोंकणी भाषा की शिक्षा दी जा रही है। इस क्षेत्र में एन. पुरुषोत्तम मल्लिया और के.के. सुब्रह्मण्यन ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। कोंकणी लोगों के प्रबंधन वाले मंदिरों ने शैक्षणिक संस्थानों को बनाए रखा, जो उनकी भाषा को संरक्षित रखने का केंद्र थे। इसके अलावा कोंकणी समुदाय के स्कूलों में भाषा शिक्षण को प्राथमिकता दी गई। एक अंग्रेज़ी-स्थानीय स्कूल (एंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल) तिरुमला देवस्वम विद्याशाला सबसे पहले स्थापित किया गया था। तिरुमला देवस्वम विद्याशाला द्वारा संचालित *वेद पाठशाला* (1877) केरल में कोंकणियों की सबसे पुरानी *पाठशाला* (स्कूल) है। कुडुंबि डॉट ओआरजी (kudumbi.org), सेवमाईलैंग्वेज डॉट ओआरजी (savemylanguage.org), कुडुंबि डॉट कॉम (kudumbi.com) आदि जैसे विभिन्न ऑनलाइन ब्लॉगों के माध्यम से कोंकणी युवा पीढ़ी इस क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य कर रही है, ताकि अपनी भाषा में नई जान लाई जा सके। हाल के नए पोर्टल डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु मल्लामाम डॉट इन (www.mallamaam.in) को केरल के पहले कोंकणी ब्लॉग के रूप में महत्त्व मिला है, जो देवनागरी लिपि का उपयोग करता है। ऐसे सार्थक प्रयासों के आलोक में शायद भविष्य में कुडुंबि पुनरुत्थान की गवाह बन सकती है।

तुलु

वर्तमान केरल के कासरगोड ज़िले की चंद्रगिरि नदी से शुरू होकर वर्तमान कर्नाटक राज्य के गोकर्ण तक फैले, अल्वखेडा नाम से पहचाने जाने वाले इस हिस्से को तुलु का क्षेत्र माना जाता है। इसके शासक अलुपा थे। यह तुलु भाषी लोगों की मातृभूमि थी। भाषायी रूप से अल्पसंख्यकों के इस इलाके को तुलुनाडु भी कहा जाता है, जिसमें उडुपी और दक्षिण कन्नड़ ज़िले शामिल हैं तथा जो केरल के कासरगोड ज़िले के उत्तरी भाग में चंद्रगिरि नदी तक फैला हुआ है। मंगलोर, उडुपी और कासरगोड तुलु संस्कृति के सांस्कृतिक केंद्र हैं।

तुलु दक्षिण भारत की पाँच द्रविड़ भाषाओं में से एक है। तुलुनाडु क्षेत्र में लगभग 25 लाख लोग तुलु बोलते हैं और इसे अपनी मातृभाषा कहते हैं। तुलुनाडु एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ कई भाषाएँ बोली जाती हैं। कन्नड़ आधिकारिक राज्य भाषा है। विभिन्न नृजातीय समुदाय अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं। आद्य-द्रविड़ से व्युत्पन्न तुलु विभिन्न जातियों के हिंदुओं और तुलुनाडु के जैनियों द्वारा बोली जाने वाली एक प्रमुख भाषा है। कोंकणस्थ (Konkanasthas) और ईसाई (कैथोलिक) दो प्रकार की कोंकणी बोलते हैं। यहाँ के मुस्लिम अपनी ब्यारि भाषा बोलते हैं, जो तुलु और मलयालम के मिश्रण से बनी है। भाषाविदों ने लगभग छब्बीस द्रविड़ भाषाओं को मान्यता दी है। इनमें से दक्षिण की पाँच प्रमुख भाषाओं के रूप में विकसित हुईं। तुलु एकमात्र विकसित भाषा है, जिसे मान्यता नहीं मिली है। हालाँकि, अपनी विलुप्तप्राय लिपि वाली तुलु भाषाविदों के बीच बहुत उत्साह पैदा कर रही है क्योंकि अब इसे सबसे पुरानी द्रविड़ भाषाओं में से एक माना जाता है।

वर्तमान में तुलु भाषा ने एक प्रमुख भाषा के रूप में अपनी प्रसिद्धि खो दी है। इस भाषा में गंभीर साहित्य की कमी के कारण इसे शैक्षिक संस्थानों में पढ़ाई जाने वाली भाषा का गौरव नहीं मिल पाया है। यद्यपि कई ऐसी साहित्यिक रचनाओं का उल्लेख मिलता है, जो ताड़पत्रों को सुरक्षित रखने की कठिनाई के कारण नष्ट हो गई हैं। लेकिन उपलब्ध सबसे पुराना साहित्य चौदहवीं शताब्दी का माना जाता है। यह भाषा में बहुत बाद का कार्य है, जो स्वयं हज़ारों वर्ष पुराना है। तुलु भाषा की लिपि को लेकर भी कुछ भ्रम था, जो मलयालम से काफ़ी मिलती-जुलती है। ऐसा माना जाता था कि शास्त्रों एवं संस्कारों संबंधी अध्ययन हेतु तुलुनाडु से पुजारी केरल गए होंगे। वहाँ उन्होंने मलयालम से उधार वर्ण लेकर संक्षेप में टिप्पणियाँ लिखीं होंगी। यद्यपि कई शोधकर्ताओं का यह भी दावा है कि मलयालम लिपि के अस्तित्व में आने से पहले तुलु भाषा की अपनी लिपि थी।

एक आधार पर यह सच भी माना जा सकता है कि मलयालम लिपि तुलु लिपि से विकसित हुई, क्योंकि यह भाषा मलयालम भाषा से एक हज़ार वर्ष से भी अधिक पुरानी है। तुलु लिपि में लिखे मंत्रों को केरल तक ले जाने का श्रेय तुलु पुरोहितों को ही दिया जाता है। मलयालम और तमिल की तरह तुलु लिपि का विकास भी ग्रंथ लिपि से हुआ है।

तुलु में उपलब्ध सबसे पुरानी रचना *कर्णपर्व* है, जिसे चौदहवीं शताब्दी में तुलु लिपि में लिखा गया था। तुलु *महाभारतो* एवं *देवीमाहात्म्य* पंद्रहवीं शताब्दी के माने जाते हैं। दो अन्य महाकाव्य *श्री भागवतो* और *कावेरि* सत्रहवीं शताब्दी के हैं, जिनकी हाल ही में खोज हुई है। तेरहवीं शताब्दी में उडुपी में स्थापित माधवाचार्य के आठ मठ उनके जीवनकाल और उसके बाद तुलु साहित्य के केंद्र थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जर्मन मिशनरियों द्वारा इस भाषा का पुनर्जागरण किया गया। उन्होंने तुलु साहित्य और ईसाई धर्म से संबंधित सामग्री का प्रकाशन किया। उसके अलावा जर्मन मिशनरियों ने एक तुलु शब्दकोश और एक तुलु-अंग्रेज़ी शब्दकोश भी तैयार किया। उन्हें तुलु लोक कथाओं, लोकोक्तियों और तुलुनाडु की भूताराधना (spirit worship) का श्रेय भी दिया जाता है। दुर्भाग्य से, यह सब कन्नड़ लिपि में लिखे गए थे, क्योंकि उन्होंने मंगलोर में उस भाषा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की थी। कन्नड़ लिपि में मुद्रण सामग्री भी मूल तुलु लिपि के खत्म होने का कारण बनी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक तुलु लिपि दूरस्थ हो गई और लुप्तप्राय हो गई।

अब तक खोजे गए सभी शास्त्रीय साहित्य तुलु की चार बोलियों में केवल एक तुलु ब्राह्मण में लिखे गए हैं। यह बोली तुलुनाडु के दक्षिणी भाग में ब्राह्मणों द्वारा बोली जाती है। इसमें लोकोक्तियों, लोक गीतों और पहेलियों को एक सामान्य बोली में लिखा गया है। लोक गीत *पाद्दना* तुलुनाडु की समृद्ध संस्कृति को दर्शाते हैं। इन गीतों में तुलुवा समाज की झलक भी मिलती है। ये गीत कहीं लिखे नहीं गए, बल्कि पारंपरिक एवं मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी गाए जाते रहे हैं।

रॉबर्ट काडवेल ने अपनी स्मरणीय रचना, *ए कंपरेटिव ग्रामर ऑफ़ द्रविड़ियन* या *साउथ इंडियन फैमिली ऑफ़ लैंग्वेजेज* का प्रकाशन 1856 में किया, जिसमें तुलु भाषा का व्यवस्थित अध्ययन किया गया है। काडवेल के अनुसार तुलु विकसित द्रविड़ भाषाओं में से एक है। बीसवीं शताब्दी में एस.यू. पन्नियाडि और एल.वी. रामस्वामी अय्यर ने व्याकरण पर कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। ये लेखक तुलु को एक आद्य-दक्षिण द्रविड़ भाषा की उपशाखा मानते हैं, जो इनकी दृष्टि में अच्छी तरह विकसित है और जिसमें कई बोलीगत विभिन्नताएँ समाहित हैं। वर्तमान में ऐसा देखा जा रहा है कि तुलु भाषा और लिपि पर होने वाले शोध बहुत प्रभावशाली नहीं हैं। परंतु यह संतोषजनक है कि भारत और विदेश दोनों में कई विश्वविद्यालय तुलु भाषा पर अधिक शोध को बढ़ावा दे रहे हैं।

केरल ने तुलु भाषा एवं तुलु भाषी लोगों के इस विकास का स्वागत और समर्थन किया है। केरल में लगभग तीन लाख लोग तुलु बोलते हैं, जिनमें से कई लोग तटीय ज़िले कासरगोड में बस गए हैं। लगभग दस शताब्दी पहले चेर राजाओं के शासनकाल में केरल में शिवल्ली गोत्र वाले ब्राह्मण समुदाय आ बसे थे। बाद में ये पूरे केरल में फैल गए तथा मंदिरों और जनसेवा के माध्यम से इस क्षेत्र में अपनी मज़बूत पकड़ बना ली। अन्य तुलु भाषी समुदायों, जैसे– बयिरा, कोरगा, बुंट, बिल्लव और अन्य अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों ने भी इसी तरह का अनुसरण किया, जिससे केरल में तुलुनाडु की समृद्ध और विविध संस्कृति एवं विरासत में योगदान मिला। युवा पीढ़ी को विभिन्न कलाओं में प्रशिक्षण देकर और शामिल करके इस समृद्ध परंपरा और संस्कृति को बरकरार रखा गया है।

ये समुदाय विभिन्न व्यावसायिक कार्यों, जैसे– कृषि, मछली पकड़ना, टोकरियाँ बनाना, देसी शराब बनाना आदि कार्यों में लगे हुए हैं। व्यस्त दिनचर्या के बावजूद ये लोग शाम को बातचीत, मुर्गों की लड़ाई, बैल-दौड़, यक्षगान और अन्य लोक खेलों के माध्यम से अपना मनोरंजन करते हैं। तुलुनाडु के अनुष्ठान और परंपराएँ– *नागमंडला, भूत कोला* (भूताराधना) एवं *सिरि* आदि अभी भी जीवित हैं और इसका श्रेय तुलु जनसंख्या को ही दिया जा सकता है।

इनके अतिरिक्त, तुलु संस्कृति की विशिष्टता को संरक्षित करने और उसके सर्वांगीण विकास में सहयोग देने वाले कई संगठन सक्रिय हैं। कर्नाटक और केरल में तुलु अकादमियाँ क्रमश: उमेश कोटियन और सुब्बय्या राय के निर्देशन में भाषा, साहित्य और संस्कृति के उन्नयन के लिए प्रयासरत हैं।

4



आदिवासी भाषाएँ

अडिया

अडिया भाषा मुख्यतः केरल के वयनाड़ और कन्नूर ज़िलों में बोली जाती है। इस भाषा के बोलने वालों को अडियन कहा जाता है। कुछ अडियन कर्नाटक के कोडगु (कूर्ग) ज़िले में भी पाए जाते हैं।

अडियन समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

अडियन एक अनुसूचित जनजाति है, जो केरल के वयनाड़, कन्नूर तथा निकटवर्ती प्रदेश कर्नाटक के कोडगु (कूर्ग) ज़िलों में पाई जाती है। इस समुदाय को "अडियन" कहा जाता है, जिसका अर्थ है – "गुलाम" या "दास", जबकि कर्नाटक में इन्हें "राःवेलर" कहा जाता है। अडियनों में पत्नियों को "राःत्ति" और पतियों को "राःवुलन" कहते हैं। इस समुदाय में गोत्र (clan) व्यवस्था पाई जाती है, जिसे मनरुः कहा जाता है। इनके मुख्य गोत्र हैं – बद्‌डक मनरुः, तिरुनेल्लि मनरुः और एदमला मनःरुः। ये नाम इनके निवास क्षेत्रों के आधार पर निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक मनरुः पाँच से दस "चेम्मम" (वंशावली) से बनता है, जो परंपरागत होती हैं। मुखिया को *पेरुमन* कहा जाता है, यही मुखिया इस समुदाय के आंतरिक मामलों की बैठक का अध्यक्ष होता है। अडियन पारंपरिक रूप से प्रेतात्माओं और जंगली देवताओं की उपासना में विश्वास रखते हैं, जिसके साक्ष्य समुदाय के जनजातीय गीतों में आसानी से मिल जाते हैं। किंतु ये अन्य द्रविड़ समुदायों की तरह चचेरे-ममेरे भाई-बहनों के बीच विवाह संबंध नहीं रखते।

सामान्यतः खान-पान में कई प्रकार के पत्ते, फल, कंदमूल एवं जड़ें[i] आदिवासियों के प्रमुख आहार होते हैं, किंतु वयनाड़ के अडियन समुदाय का खान-पान विशिष्ट है। पेड़-पौधों, पत्तों एवं जड़ों को खाने के लिए उपयुक्त भोजन मानने वाली अनुसूचित जनजातियों में यह समुदाय सबसे आगे है। अधिकांश जनजातियाँ बाँस के पत्ते को सूखी सब्जी (उप्पेरि) के रूप में ही खाती हैं, किंतु अडियनों का कहना है कि बाँस के कच्चे हरे पत्ते खाने से न सिर्फ़ इनकी सेहत अच्छी बनी रहती है बल्कि वजन भी संतुलित रहता है। इनके द्वारा खाई जाने वाली हरी पत्तेदार सब्जियों में काक्कच्चोप्पु, चुरिळिच्चोप्पु, उरवळोच्चोप्पु, अयविरलुच्चोप्पु, तुंबच्चोप्पु, बोक्करिचोप्पु और करंतच्चोप्पु प्रमुख हैं।

अट्टप्पाडि के अन्य जनजातीय समुदायों की जीवन-शैली, खान-पान एवं गोत्र संस्कृतियों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। इरुळा, मुदुगा और कुरुंबा समुदायों के मुख्य भोजन में कई तरह के पालक के पत्ते भी शामिल होते हैं।

---

i देखें टिप्पणी i पृष्ठ 223

भाषाई विशेषताएँ

इस भाषा में पाँच स्वर और उनके अनुरूप दीर्घ स्वर हैं।

तालिका 4. 1 : अडिया स्वर

	अग्र	**मध्य**	**पश्च**
उच्च	इ		उ
मध्य	ए‘		ओ‘
निम्न		अ	

इस भाषा में 21 व्यंजन स्वनिम (phoneme) हैं।

तालिका 4.2 : अडिया व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	**दंत्य**	**वर्त्स्य**	**मूर्धन्य**	**तालव्य**	**कंठ्य**
स्फोट	प ब	त द		ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म	नः	न	ण	ञ	ङ
पार्श्विक			ल	ळ		
उत्क्षिप्त			र	रः		
प्रवाही	व				य	

स्वानिकीय (phonologically) विश्लेषण से पता चलता है कि इस भाषा में संघर्षी, महाप्राण और संयुक्त स्वर नहीं होते।

अडिया एक द्रविड़ भाषा है। इसकी संज्ञा में ही प्रत्यय के रूप में लिंग की सूचना शामिल होती है, जिसमें पुल्लिंग सूचक (marker) प्रत्यय *-एय* और स्त्रीलिंग सूचक प्रत्यय *-इइ-/त्ति* और बहुवचन सूचक *-अ/एरु* है।

इस भाषा में आठ कारक होते हैं।

तालिका 4.3 : अडिया कारक

कारक	**कारक चिह्न**
कर्ता	...
कर्म	*-ए*
संप्रदान	*-कु*
संबंध	*-न्नः, - ओण्डा, अण्डा* और *-अ*
अधिकरण	*इलि*
करण	*-कोण्डु, -कु* और *-लि*
अपादान	*-न्त*
संबोधन	अंतिम स्वर को लंबा बनाना

अडिया भाषा के व्यक्तिवाचक सर्वनाम निम्नलिखित हैं–

तालिका 4. 4 : अडिया व्यक्तिवाचक सर्वनाम

पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
			नपुंसकलिंग	नपुंसकलिंग
उत्तम	*नाःनुः*	*णङ्का* हम (बहिष्कारी) *णामु* (अंतःकारी)		
मध्यम	*नीः*	*णीःयु*		
अन्य	*अयिनुः* (पु.) *अवूळु* (स्त्री.) *अयिरा* (वे)	*अव*	*अतु*	*अतुका*

इस भाषा में काल को प्रदर्शित करने वाले चिह्न निम्नलिखित हैं–

वर्तमान काल चिह्न *-ण्ड-, इन्रः* और *न्रः*

भूतकाल चिह्न *-त-, -त्त-, -रः-, -ट-, -च-, -नः-,-न्ःत-, -न्ःच-* और *-इन-*

भविष्यत काल चिह्न *-उव-, -व-* और *-प्प-*

लोक साहित्य

गीत 1

मलेन्ःरेः गुटिया उल्लिक पूव/कालि गिराणात्ति
पुळ्ळेक्कु पोत्तुना चिन्तेक्कु पूवा/कालि गिराणात्ति

हिंदी अनुवाद

पहाड़ी की चोटी पर जो सुंदर फूल है,
उसे तुम बाज़ार जाते समय पहन सकती हो

गीत 2

अक्करे मोट्टालि पुळ्ळु किरङच
तुवरु तुवरु मावे...

हिंदी अनुवाद

उस पहाड़ी पर एक चिड़िया रोती है,
बारिश को रोको तो ज़रा, रोको...

गीत 3

पेय्गवा पेय्गवा चुरिःकुट्टिपेय्गवा...
पेय्गवा प्पेय्गवा अम्पुकुट्टिपेय्गवा ...

हिंदी अनुवाद

हाय बचाए, हाय बचाए, कत्ते (चाकू) को हाथ धारे
हाय बचाए, हाय बचाए, बाण को संधारे
कृपया उसे बचाइए, उसे बचाइए।

शब्दावली (अडिया-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

अडिया	हिंदी	अडिया	हिंदी
अप्पे	पिता	*पेरम्मे*	ताई
अव्वे	माँ	*कुळियम्मे*	नानी
राःटिःट	पत्नी	*अण्णे*	जीजा
राःळे	पति	*बावे*	भाई
चिक्के	बेटा	*अचप्पे*	दादा
पेण्णु	बेटी	*इट्टियावे*	नानी
पेरप्पे	ताऊ	*पुण्डा*	विधुर
कुळियप्पे	काका/चाचा	*पुण्डेत्ति*	विधवा
मामे	मामा	*अव्वि*	बच्चा/शिशु

संख्यासूचक शब्द

अडिया	हिंदी	अडिया	हिंदी
ओन् रुः	एक	*एरु*	सात
राण्टु	दो	*एट्टु*	आठ
मून् रुः	तीन	*ओम्पत्तु*	नौ
नालु	चार	*पत्तु*	दस
अंचु	पाँच	*नूरुः*	सौ
आरुः	छह		

रंगों के नाम

अडिया	हिंदी	अडिया	हिंदी
करिनिरः	काला	*चुवप्पु*	लाल
बेळ्ळे	सफेद	*नीले*	नीला
पच्चे	हरा	*मञ्जे*	पीला

मौसम और समय से संबंधित शब्द

अडिया	हिंदी	अडिया	हिंदी
मूवाण्टु	पिछला वर्ष	*एतिरे*	सुबह
आण्टे	वर्ष	*नट्टुच्चे*	मध्याह्न
मावे	वर्षा	*अंतिनीरा*	सायंकाल
बेनि	गर्मी	*अंति*	रात
माङ्चु	अब	*नःट्टिपिर*	आधी रात
काट्ःतुयेत्तिरे	सूर्योदय		

नाप-तोल सूचक शब्द

अडिया	हिंदी	अडिया	हिंदी
गित्ताने	थोड़ा	*बिराःबेरि*	ज़्यादा
ओरुक्क	थोड़ा और	*अरेक्केने*	आधा
मिगियायि	अधिक	*तुट्टमाने*	पूरा

संदर्भ-सूची (References)

Research Publication Series, vol. II, KIRTADS, Kozhikode – 17.

Singh, K.S. 2002, People of India, *Kerala*, vol. XXVII, part one.

Thurston, Edgar. 1975, *Castes and Tribes of Southern India*, vol. I.

इरुळा

इरुळा भाषा मुख्य रूप से केरल के पालक्काड ज़िले के अट्टप्पाडि आदिवासी इलाके में बोली जाती है। इरुळा भाषा बोलने वाले लोगों को इरुळन कहते हैं।

इरुळन समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

तमिलनाडु के कोयंबटूर ज़िले में रहने वाले इरुळन मूलतः तमिल हैं। ये अट्टप्पाडि की मुख्य जनजातियों में से एक हैं। इनकी संरचनात्मक विशेषता यानि इरुळा (घना काला) के आधार पर ही शायद इनका नामकरण इरुळन पड़ा।

अट्टप्पाडि में कुल 53 इरुळा पुरवा (hamlets) हैं, जो आपस में विजातीय विवाह संबंधों में बँधे होते हैं। सामान्यतः लड़के-लड़कियों की शादी की उम्र होने पर ही विवाह हो जाता है किंतु इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं दासी के रूप में या खरीदकर विवाह करने की प्रथा अब भी प्रचलित है। वर के पिता को "परिज पणम्" (वधू धन) दिया जाता है, जो पाँच रुपये से लेकर पंद्रह रुपये तक हो सकता है, इसका भुगतान विवाह अनुष्ठान के पूर्व ही कर दिया जाता है। बहुपत्नीत्व इस समुदाय की एक सामान्य विशेषता है, लेकिन बहुपतित्व के उदाहरण नहीं के बराबर मिलते हैं।

यद्यपि इरुळा काफ़ी सीमा तक मुदुगा भाषा के समान ही है किंतु दोनों की शब्दावली, शैली और उच्चारण में उल्लेखनीय अंतर देखे जा सकते हैं।

भाषाई विशेषताएँ

यहाँ दिए गए स्वर अट्टप्पाडि इलाके में बोली जाने वाली इरुळा भाषा पर आधारित हैं। इस भाषा में पाँच ह्रस्व स्वर और उन्हीं के अनुरूप दीर्घ स्वर हैं।

तालिका 4.5 : इरुळा स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	इ		उ
मध्य	ए‘		ओ‘
निम्न			अ

इरुळा भाषा में 21 व्यंजनों की पहचान हुई है।

तालिका 4.6 : इरुळा व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य
स्फोट	प ब	त द		ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म	नः	न			
पार्श्विक			ल	ळ		
उत्क्षिप्त			र			

	द्वयोष्ठ्य	दंत्य	वत्स्र्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य
संघर्षी			स			ह
अर्ध स्वर	व				य	
कंपित			रः			

इस भाषा में पुल्लिंग एकवचन के तीन प्रत्यय *-आन, -अन* एवं *-ए* तथा स्त्रीलिंग एकवचन के *-त्ति, -आत्ति, -इ, -सि, -अल, -आल* और *-अ* प्रत्ययों की पहचान की जा चुकी है। बहुवचन प्रत्यय मानव और मानवेतर प्राणियों के लिए प्रयोग किए जाते हैं, जो *-आरुः* और *-का* हैं।

कर्तृवाचक सर्वनाम निम्नलिखित हैं–

तालिका 4.7 : इरुळा सर्वनाम

पुरुष	**एकवचन**	**एकवचन/बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	नपुंसकलिंग
उत्तम	*नाःनुः*	*एम्मे* (बहिष्कारी)		
उत्तम		*नामे* (अंतःकारी)		
मध्यम	*नीः*	*नीःविरि*		
अन्य	*अवे*	*अवरुः* (एकवचन) *अव* (पु.बहुवचन)	*आतु/अतु*	*अतुका*

तालिका 4.8 : इरुळा कारक

कारक	**कारक चिह्न**
कर्ता	...
कर्म	*-ए*
अपादान	*-ऊमे*
संप्रदान	*-उक्कु, -क्कु*
संबंध	*तु, त्तु*
अधिकरण	*-ति, -क्के, -उक्के*
करण	*-आले*
संबोधन	*-ए, -ओ*

वर्तमान काल को प्रत्यय *-गग, -कक, -क* और *–उक* द्वारा, भूतकाल को प्रत्यय *-तत, -द, -दद, -नःद, -ट, -म* द्वारा और भविष्यत काल को प्रत्यय *-प, -वु, -उव*, और *-पप* द्वारा दर्शाया जाता है। इस भाषा में दो प्रकार के आज्ञासूचक शब्द पाए जाते

हैं। एकवचन और बहुवचन आज्ञासूचक। बहुवचन में *-यि* और *-इरि* जैसे चिह्न होते हैं। क्रियार्थक कृदंत को- *इ, -उ* और *-ए* द्वारा चिह्नित किया जाता है। सप्रतिबंध क्रियार्थक कृदंत चिह्नक (marker) *-अते* और *-आ* हैं, जबकि संबंधी कृदंत चिह्नक *-अ* है।

इस भाषा में सामान्यतः पुरुष विभक्ति पाई जाती है, जिनमें उत्तम पुरुष विभक्ति में जो *-ईमु*, और *-ऊयि* चिह्नक पाए जाते हैं, वे मध्यम पुरुष में *-अ* और *-इरि* बन जाते हैं। इसी प्रकार अन्य पुरुष एकवचन में *-ए, -अ,* और *-आरुः* हैं, जबकि अन्य पुरुष बहुवचन में *-तु* है। क्रियाविशेषण को कालवाची, रीति और स्थानवाची अभिव्यक्ति माना गया है। क्लिटिक्स को सुनिश्चित, प्रश्नवाचक, समन्वयकारी, विस्मयादिबोधक, अपूर्ण और संपूर्ण चिह्नक के रूप में माना गया है।

इरुळा भाषा की विशेषताएँ अन्य द्रविड़ भाषाओं से मेल खाती हैं। फिर भी उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम/*एम्मे*/, मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम /*नःम्मे*, निषेध चिह्नक /*-आत*, आदेशात्मक बहुवचन चिह्नक /*-यि* और /*–इरि*, संबंधकारक चिह्नक /*-तु,/-त्तु*, करणकारक चिह्नक /*-ति, /-ककउ/*, उत्तम पुरुष बहुवचन /*-ईमु/,* अंतःकारी /*-ऊयि/* आदि कुछ शब्दावलियों में अपनी अलग पहचान निर्धारित करते हैं।

लोक साहित्य

गीत 1

अट्टप्पाडि देवा मल्लीश्वरा
अट्टप्पाडि देवा मल्लीश्वरा -निःन्ने
पाक्का नामु वन्तूमीश्वरा...
मल्लीश्वरा देवा मल्लीश्वरा निःन्ने पाक्का
नामुम वन्तेमीश्वरा...
वरःसत्ति ईलुनाःळु व्रतमिरुन्त्
निःत्त् सन्निःदानःत्क्के वंतेमश्वरा... मल्लीश्वरा ...
मलेक्क् मेला इरिक्क मल्लीश्वरा...
एम्मे एल्लां कण्टुराःन्त् पारुमश्वरा...
एम्मे एल्ला कवक्कत्त् इरुप्पवने
निःन्क्काक शिवरात्रिःरोःक्क् क्टुकीम्...

हिंदी अनुवाद

अट्टप्पाडि के महादेव मल्लीश्वर, आपको प्रणाम। हम आपकी सेवा में सात दिन का शिवरात्रि व्रत रख कर आए हैं। हे ईश्वर! अपने नेत्र खोलिए और हमें आशीष प्रदान कीजिए।

गीत 2

नःम्मुत्त् नाःट् मेलेनाःट्
नःम्मुत्त् नाःट् मेलेनाःट् नःम्मुत्त् नाःट् सूलेनाःट्...
अप्पतींपा सूलेनाःट् इप्पतींपा मोट्ट मेट्...
अप्पत्त काडाात्ति तेन् मानः् तिन्ःत नःटन्तारः सोले सूललेया...
इप्पत्त काडात्ति रोःट्ट रोट्टा सुत्तिनाटक्कारः वित्ति वित्तिय पोट्...

हिंदी अनुवाद

यह गीत उनकी पहाड़ी और वन भूमि की प्रशंसा करता है, जो बहुत सुंदर है।

लोक कथा

एन्नेत्तेरिःयुमा। एत्त पेर पिळप्पुट्टा। ओरु कालत्ति एत्त कुटुंपात्ताने एण्णिप्पात्ता कणक्के तेरियात, अत्तनिः आलका इरुंतारः। अक्कालत्ति एमक्क तिन्काक्क चूला, राःयि, सामे, पुच्चामे, तेने, वीत्त एन्नःवेण ईङ्क पाट्टालम काताक वेलेंता अच्चामे पूत्त कुलुङकिनत। कालमे नाःम रूःङकि ईनःतत एमुत्त वेरेः राःप्पित्त एमत्त क्केरेःक्का कोटिङ्केरे, वारागार, बवानि, सिरुवाणि अतल्लामे नालिका, कुट्टेक एल्लाम रःमपिक्कटाक्कु तण्णियेक्कुटत्तुमित्त सेत्तेवाट् वळाटवीस नाःळेक्क सावीन्त ईङककारः बवानिःय्य, सिरुःवानिःय्य।

इप्पत्त पिळ्ळेक्कुट्टिक एम्मे पात्तरःप्पर इल्ले। नाःम् सूले, कोरेःकाळत्ति मरमिम्ण्टेति कल्ल् कोसोरःति चिन्नकूरे केट्टिट वाळन्तीम्। एमत्त पाट्टे कीट्ट आड़, मात मेकावरः। एरः ऊट्टुकवारः एहाक्क वेच्चिति पूक्कावरुङ्कूट सेत्ते निःन्त पाप्पारः एल्लार निःन्त पाटवारः, कुत्तिप्पाटुवार वानःत्ते पात्त नीरे मेले पोयि बूमियेप्पात्त अट्टिए पात्तुकुण्टी पाटवीम। अत एनाःक्क एम्मेप्पत्त सामि कुम्मुत्तुकारन्त एल्लावरः सोल्लुवारः। आनाः अक्कलत्ति मङ्चुम...

कटांतातनाले एमक्क सोलप्पेत्तेरियाले। एम्मक्केन पा/चम ईट काटेप्पात्तालम् वालेन्त कुलिङ्किनात्। एमत्त सोकात्तेप्पवर एमेमे प्पत्त पोराःमेप्पटारः एप्पमावत एम्मे तोळेत्त केट्टून्नूःन एण्णिनाःर। एच्च? मेले माकुटात्ते वेट्टि सुट्टि अळत्तारः वीलि, नाःळिकलत्तिक्किटान्त नःल्लु मरकळे कोटिकाळे वीरूते तूण्टि अलत्तार। नाम मनसार तिन्तवन्त वाळ्ळामेकळे इल्लाते पण्णिनाःरः। तम्त कुरेके केट्टुकाक्क मर। मण्ण कल्ल एल्लामे तमत्त मनाःसपूले सेतारः। एम्मे कोन्तारः

अतनाले एमत्त नेलामे इप्प येय्यानःत वाम्सामे अळेन्त पूनःत्। नाम् नाटंत नाय्य। केरे, गूमल इतेल्ल नेनेःत्त पात्ता...

हिंदी अनुवाद

क्या तुम मुझे जानते हो? मेरा नाम पुलिपुत्त (एक चिड़िया) है। एक समय में हमारी बड़ी संख्या थी। तुम अनुमान भी नहीं लगा सकते कि हमारा झुंड कितना बड़ा होता था। उन दिनों रागी, ज्वार, चामे, पुचामे, तेने (विभिन्न धान) आदि अन्न हमारा भोजन थे। ये अन्न सभी जगह भरपूर मात्रा में उपलब्ध होते थे। अट्टप्पाडि में सब जगह इनकी खेती होती थी। वे दिन हमारे खुशियों वाले थे। पीने या नहाने के लिए भवानी और सरस्वती नदियाँ बहती थीं, जो उन दिनों पानी से लबालब भरी होतीं थीं, जो अब अपनी अंतिम अवस्था में हैं।

क्या नए बच्चों ने कभी हमें देखा है? नहीं, क्योंकि हम जंगल में बड़े पेड़ों और ऊँची पहाड़ियों पर रहती हैं। खेतिहर, गड़रिये (चरवाहे) यहाँ तक कि पैदल यात्री भी हमारी सुंदर आवाज़ और गीतों को पसंद करते थे। हम आसमान में उड़ते-उड़ते गीत गाती थीं। यही गुण हमें दूसरी चिड़ियों से अलग करता है। हमें ऐसे गाते देखकर लोगों ने यह अनुमान लगाया कि हम भगवान से प्रार्थना कर रही हैं।

पुराने समय में बरसात और सर्दियाँ दोनों खूब होती थीं। तब भी हम थकते नहीं थे। खाने-पीने की हमें कोई कमी नहीं थी, क्योंकि खेतों में सब जगह पर्याप्त भोजन उपलब्ध था। तब हमारी मौज रहती थी, लेकिन लोगों की ईर्ष्या ने सारे जंगल और बड़े-बड़े पेड़ काट दिए। पहाड़ों को खोदकर समतल बनाया, यहाँ की मिट्टी उठाकर ले जाते और बड़ी इमारतें बनानी शुरू कर दीं। हमारी रहने की सभी पुरानी जगहें धीरे-धीरे नष्ट हो गईं। अंत में क्या हुआ? हमारी प्रजाति पृथ्वी से विलुप्त हो गई। अब हम में से केवल कुछ ही जीवित हैं। हमारी मृत्यु के बाद हमारा अस्तित्व इस पृथ्वी से पूर्णतः मिट जाएगा। इस स्थिति से तुम भी ऐसे ही जूझोगे। इसलिए तुम्हें इन असामाजिक कृत्यों का विरोध करना है और शांति से जीवन बिताना है।

शब्दावली (इरुळा-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

इरुळा	हिंदी	इरुळा	हिंदी
अम्मे	पिता	*बेलामेय्तिनेः*	जीजा
अप्पे	माता	*दोट्टःग्गे*	फूफी/ताई
अम्मि	छोटी बहन	*दोट्टःम्मे*	दादा
अय्ये	बड़ा भाई	*कोह्यरनःते*	देवर
बेलाकका	दीदी	*मामे*	ससुर
बेलकोहनि्ःत	बड़े भाई की पत्नी	*मामि*	सास
बेलामामि	ताई		

शरीर के अंगों के नाम

इरुळा	हिंदी	इरुळा	हिंदी
अटियमत्तु	निचला होंठ	*मनसु*	मन
बोक्कु	नाभि	*मणिक्केट्टु*	कलाई
दाटियेलुंपु	गाल की अस्थि	*मटवारु*	तोंद
गनटिकक्कयि	हृदय	*मटि*	गोद
ईलेक्केट्टु	कफ	*मत्तु*	होंठ
इटुप्पेलंपु	रीढ़	*मेच्चका*	तिल (त्वचा पर)
इटुप्पु	कमर	*मुट्टु*	घुटना
कण्णानःताण्णि	आँसू	*मुतुवु*	कंधा
कण्णु	आँख	*मूक्कोट्टे*	नथुना
कण्णुगुयि	पलक	*मूळे*	मस्तिष्क
कण्णुमणि	पुतली	*मूलेक्टक्कयेलंपु*	कपाल
कण्णुमुटि	बरौनी	*म्ले*	स्तन
कण्पिरुव	भौंह	*म्मि्ञ्च*	चेहरा
कट्टेवेरलु	अँगूठा	*नक*	नाखून
कवुळु	गाल	*ओगालु*	लार
केयु	हाथ	*ओटंपु*	शरीर
कोळुप्पु	मज्जा	*पल्लुसेते*	मसूड़ा
कोट्टाविळ	जम्हाई	*रेत्ता*	रक्त
कत्तु	गर्दन	*सोट्टेत्तेले*	गंजा सिर
कालुवेरालु	पैर की उँगली	*उळ्ळन्कालु*	एड़ी
कातु	कान	*वायि*	मुँह
मळ्ळु	मूत्र		

संख्यासूचक शब्द

इरुळा	हिंदी	इरुळा	हिंदी
ओण्णु	एक	*एळु*	सात
ओन्तु	एक	*एट्टु*	आठ
रण्टु	दो	*अंपतु*	नौ
मूणु	तीन	*पत्तु*	दस
नाःलु	चार	*अंबतु*	पचास
अञ्चु	पाँच	*ओरुन्नूरुः*	एक सौ
आरुः	छह	*ओरायिर*	एक हज़ार

मौसम से संबंधित शब्द

इरुळा	हिंदी	इरुळा	हिंदी
मेकाल	बारिश का मौसम	*वेनःक्काल*	गर्मी का मौसम
कुळिरुकाल	सर्दी का मौसम		

प्रकृति से संबंधित शब्द

इरुळा	हिंदी	इरुळा	हिंदी
केरे	नदी	कटलु	समुद्र

संदर्भ-सूची (References)

Darwin, L. 2010, *Language of Irula*.

Singh, K.S. 2002, *People of India, Kerala,* Vol. XXVII.

Thurston, Edgar. 1975. *Castes and Tribes of Southern India*, Vol. 1.

काट्टुनायिक्कन

काट्टुनायिक्कन भाषा मुख्य रूप से केरल के वयनाड़, कोष़िकोड और मलप्पुरम ज़िलों में सबसे ज़्यादा बोली जाती है।

काट्टुनायिक्कन समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

केरल इंस्टीट्यूट फॉर लोकल एडमिनिस्ट्रेशन (KILA) बेसलाइन सर्वे रिपोर्ट 2008 के अनुसार काट्टुनायिक्कन की आबादी लगभग 19,995 है। काट्टुनायिक्कन (जंगल का राजा) को तेनकुरुम्मन (*/तेन/*"शहद") भी कहा जाता है। केरल के अलावा ये कर्नाटक और तमिलनाडु में भी पाए जाते हैं। इन्हें जेनु कुरुंबर/तेनकुरुंबर भी कहा जाता है। ये शहद इकट्ठा करने में पारंगत होते हैं। इनकी भाषा निलंबूर की पतिनायिक्कन और चोलनायिक्कन भाषाओं से बहुत मिलती-जुलती है।

गैर-जनजातियों से काट्टुनायिक्कन के संबंध नहीं के बराबर हैं। शताब्दियों से पूरी तरह से जंगली जीवन बिताने वाले इस समुदाय के लोग कपास आदि से बने कपड़े नहीं पहनते थे। ये कपड़ों के लिए पेड़ों की छाल का उपयोग करते थे। ये जंगली वस्तुओं से बने आभूषण एवं गहने पहनते हैं। ये लोग सामान्यतः लंबे, काले और घुंघराले बालों वाले होते हैं। ये पणियन को अपने से निम्न मानते हैं, जिससे इनके मध्य छुआछूत का व्यवहार पाया जाता है।

काट्टुनायिक्कन का मानना है कि ये एक ऐसे साम्राज्य के वंशज हैं, जो कुछ शताब्दी पहले तक शक्तिशाली थे। वर्तमान में कुछ शिक्षित लोगों ने अपने बच्चों को उन स्कूलों में भेजा है, जहाँ जनजातीय बच्चों को सरकारी छात्रावासों में रहकर पढ़ने की सुविधाएँ हैं। उनमें से काफ़ी बच्चे आधुनिक शिक्षा के प्रति रुचि रखते हैं।

इनकी झोपड़ियाँ बाँस, घास और भूसे से बनी होती हैं। ये लोग अपने जूतों को घर के बाहर ही उतारते हैं तथा प्रदूषण न फैले इसलिए गाय की खाल से बने चमड़े का उपयोग नहीं करते। ये बहुत अच्छे शिकारी होते हैं तथा मोम और शहद जैसे वन उत्पाद इकट्ठा करने में कुशल होते हैं। ये मांसाहारी हैं, पर गाय का मांस नहीं खाते। सुअर, बकरा और मुर्गी पालते हैं। ये कभी-कभी शराब पीते हैं। हाल ही में कुछ काट्टुनायिक्कन ने कृषि कार्य करना आरंभ किया है। कुछ लोग वन विभाग में गार्ड और मज़दूर के रूप में भी काम कर रहे हैं। ये जीववादी हैं और पेड़, पहाड़, पत्थर और साँप आदि की पूजा करते हैं। बाहरी लोगों के संपर्क में आने से ये हिंदू देवताओं और सूर्य एवं चंद्रमा जैसे खगोलीय पिंडों की पूजा करने लगे हैं।

समुदाय के मुखिया को *मुत्तम* कहा जाता है, इन्हें समुदाय में विशेष सम्मान प्राप्त होता है। इन्हें विवाह और तलाक जैसे मामलों पर निर्णय लेने का अधिकार होता है। ये पुजारी का काम करते हैं तथा भूत-प्रेत आदि बाधाओं को दूर करने संबंधी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं। काट्टुनायिक्कन पितृवंशीय समाज है, यहाँ पिता से पुत्र को उत्तराधिकार प्राप्त होता है। समुदाय में बेटियों का विवाह कम उम्र में ही कर दिया जाता है। यहाँ विवाह की तीन प्रथाएँ प्रचलित हैं - दासी रूप, खरीदकर और भागकर। खरीद विवाह में बातचीत के बाद दुल्हन के लिए एक कीमत तय की जाती है और इसका भुगतान विवाहोपरांत किश्तों में किया जा सकता है। कुछ लोग मोतियों और सीपियों से बनी *तालि* (मंगलसूत्र की तरह) विवाह में पहनाते हैं। एक-दूसरे को पान-सुपारी खिलाते हैं, जिसे "बीड़ा खिलाना" कहा जाता है। रिश्तेदारों के मध्य आपस में शादियाँ मान्य होती हैं। किंतु यदि किसी महिला का गैर-जनजातीय व्यक्ति से संबंध हो तो उसे समुदाय से बहिष्कृत कर दिया जाता है। ये विवाह और प्रसव के समय सूतक (pollution) मानते हैं। इस दौरान कोई नया काम शुरू नहीं किया जाता। मृत्यु के उपरांत की जाने वाली अंत्येष्टि को ये ज़्यादा महत्त्व नहीं देते थे और शवों को चट्टानों या पेड़ों के ऊपर रख देते थे, ताकि जानवर और पक्षी उन्हें खा सकें। परंतु आजकल ये शवों को गहरी कब्रों में दफनाते हैं जिसके निचले हिस्से में एक तहखाना होता है। शव को तहखाने में धकेल दिया जाता है और बाद में मिट्टी से भर दिया जाता है। ये पुनर्जन्म में विश्वास नहीं रखते और मृत्यु के बाद की छूत (pollution) की रस्म भी नहीं पाई जाती।

भाषाई विशेषताएँ

इस भाषा में पाँच ह्रस्व स्वर और उनके अनुरूप दीर्घ स्वर हैं।

तालिका 4.9 : काट्टुनायिक्कन स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	इ		उ
मध्य	एʻ		ओʻ
निम्न		अ	

अब तक इस भाषा के 25 व्यंजनों की पहचान की जा चुकी है।

तालिका 4.10 : काट्टुनायिक्कन व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	**दंत्य**	**वर्त्स्य**	**मूर्धन्य**	**तालव्य**	**कंठ्य**
स्फोट	प ब	त द		ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म	नः	न	ण	ञ	ङ
पार्श्विक			ल	ळ		
उत्क्षिप्त				र		
संघर्षी		श	ष			
प्रवाही	व				य	ह
कंपित			र			

काट्टुनायिक्कन दक्षिण भारत की एक द्रविड़ भाषा है। इसका अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन, स्त्रीलिंग एकवचन, उभयलिंग बहुवचन और नपुंसकलिंग एकवचन एवं बहुवचन में एक-दूसरे की अलग पहचान बनाए रखता है। इसमें कोई महाप्राण ध्वनि नहीं है। अन्य भाषाओं की तुलना में इसके भूतकालिक चिह्नक, कारक चिह्नक और पुरुषवाचक सर्वनाम सभी पूरी तरह अलग हैं।

इस भाषा के पुरुषवाचक सर्वनाम निम्नलिखित हैं–

तालिका 4.11 : काट्टुनायिक्कन पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुष	**एकवचन/बहुवचन**	**एकवचन/बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	नपुंसकलिंग
उत्तम	*नाःनुः*	*ङन्ग* (अंतःकारी)		
उत्तम	*नाःनुः*	*नःङ* (बहिष्कारी)		
मध्यम	*नीःनुः/ निःङ*	*नीःनुः/ निःङ*		
अन्य	*अवे/अव*	*अवे* (एकवचन)	*अदु*	*अदु*

काट्टुनायिक्कन भाषा में दो ही वचन हैं– एकवचन और बहुवचन। इसमें *-नः* एकवचन का चिह्नक है, तो वहीं *-ङ्ग, -अरः* और *-र* बहुवचन चिह्नक। लिंग में पुल्लिंग एकवचन (चिह्नक *-अनः* और *-आ*), स्त्रीलिंग एकवचन (चिह्नक *-अत्ति, -ओ*, और *-अ*) तथा नपुंसकलिंग एकवचन में (*अदु/इदु*– वह/यह) हैं। इस भाषा में छह कारकों की पहचान की गई है। ये निम्नलिखित हैं– कर्म, सहवाची, संप्रदान, संबंध, करण और अधिकरण।

तालिका 4.12 : काट्टुनायिक्कन कारक

कारक	कारक चिह्न
कर्म	*-ए /-नेः*
सहवाची	*-ओट्टुळु*
संप्रदान	*-अगु/ -गु*
संबंध	*-अ/-ओ*
करण	*-कोण्दु*
अधिकरण	*-गु/-लु*

सर्वनाम की बात करें तो अब तक इस भाषा में तीन संबंधवाचक, संकेतवाचक और प्रश्नवाचक सर्वनामों की पहचान हुई है। सामान्यतः प्रेरणार्थक प्रत्यय *-सिसि* सकर्मक क्रियाओं के साथ जुड़कर प्रेरणार्थक क्रिया बनाता है।

इस भाषा में वर्तमान काल और भूतकाल के लिए कोई चिह्नक (marker) नहीं है। प्रत्ययों को देखें तो भूतकाल के लिए *-द, -न्द* एवं *-ण* प्रत्यय और भविष्य काल के लिए *-उत्त* और *-इत्त* प्रत्यय हैं। निषेधवाचक प्रत्यय *-ए* और *-अ* हैं। क्रिया के कालवाची रूप में *-इल्लै* जोड़ने से भी निषेध का संकेत मिलता है। अन्य व्याकरणिक विशेषताएँ, जैसे– भूतकालिक कृदंत (क्रियार्थक कृदंत उ और इ चिह्न हैं), सापेक्ष कृदंत (सापेक्ष कृदंत चिह्न *-अ*), सोद्देश्य सूचक (जैसे *-ओले* से चिह्नित), सोपाधिक (conditional) (चिह्न *-अले*), इस भाषा में उपलब्ध हैं। इस भाषा में सामान्यतः आज्ञार्थक, अनुमतिबोधक, निषेधात्मक, और प्रश्नवाचक अभिव्यक्तियाँ मिल जाती हैं।

लोक साहित्य

लोक कथा

तुडे चिक्किद कदे

तेनेडुक्कुन्नः कथा

ओन्तु दिनः नाःङ्क तूदे कयिक्कलिक्कु काडुक्कु हूदरु। तुडे नूःडि नूःडि इरुःट्टु बूलुगायि नाःङ्क आङ्चित्तु, नाःङ्क ओन्चु अलेद ओलगे हुक्कित्तु। निःद्दे माडादे कण्टु नूःडि कुत्तु बलाग मण्तिद। होत्तरेः आगले अल्लिन्तु हूयिदरा। काडिल नटदु नटदु हूदरे मरः कोडदु तुडे कण्टित्तु। कूरिळलु तिरत्ताले तुडे चिक्किदादु। तुडे हाक्कले हाले एत्ति बण्दु। ओब्बळु मराःलु हत्ति तुडे कयिक्कलित्तु। नाःङ्क तुडे हिण्डालि बेनसालित्तु अल्लिन्दु मनेलि बन्दिदग तुप्पा (तुडे) नाः अळदु नूडि कुप्पिलु आक्कित्तु। एरडु कुप्पि इद्दले अयिंप रुःपिय चिक्किदादु।

हिंदी अनुवाद

शहद बटोरने की कहानी

एक दिन हम लोग शहद एकत्रित करने जंगल गए थे। शहद की तलाश करते-करते हम लोग घने जंगल में पहुँच गए। सूर्यास्त होने वाला था, रात भी घिरने लगी थी। हम लोगों को भी डर लगने लगा। इसलिए हम सब एक गुफा में चले गए और सुबह होने तक वहीं बैठे रहे। जैसे ही सुबह हुई हम लोग गुफा से बाहर निकलकर फिर से शहद की तलाश में आगे बढ़े। तभी हमें एक पेड़ पर शहद का छत्ता दिखाई दिया। हमने कुल्हाड़ी से शहद के छत्ते को काटा और गिरते शहद को एकत्र कर लिया। इसके बाद हम घर वापस आ गए। शहद को बोतलों में भरा। दो बोतलों में भरे शहद को बेचकर हमें 50 रुपये मिले।

शब्दावली (काट्टुनायिक्कन-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
अते	सास	*दोड्डप्पनुः*	ताऊ, मौसा
अप्पनु	पिता	*दोड्डव्वे*	मौसी, ताई
अक्कनु	दीदी, फूफी की बेटी, ताऊ की बेटी (वरिष्ठ), पति की दीदी	*दौड्डःरेंः*	फूफी, ननद
अण्णनु	बड़ा भाई, भतीजा (वरिष्ठ), ताऊ का बेटा (वरिष्ठ)	*दोड्डमावनु*	मामा, ताऊ
अव्वे	माता	*नाःदिनिः*	छोटे भाई की पत्नी
आळुमनुसन	आदमी	*बावनुः*	जीजा, भानजा (वरिष्ठ)
एत्ता/एर्रेः	नानी, दादी (माता/ पिता की माता)	*मकनुः*	पुत्र
एत्तनु	दादा	*मकळु*	पुत्री
एत्तिगे/ एर्रिःगे	भतीजी, भानजी (पिता/ माता की बहन/भाई की बेटी), बड़े भाई की पत्नी (वरिष्ठ)	*मैदनु*	देवर
कूसु	बच्चा	*मावनुः*	ससुर
कोक्कड्ड	साला	*मोम्मका*	पोती, नातिन
गण्डनुः	पति	*मोम्मूनः*	पोता, नाती
गण्डुमक्का	लड़का	*सोजे*	बहू
चिक्कप्पनुः	चाचा, पिता का छोटा भाई, माता की छोटी बहन का पति	*हेण्ड्रु*	पत्नी

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
चिक्कव्वे	चाची, माता की छोटी बहन, पिता के छोटे भाई की पत्नी	*हेण्णु*	महिला
चिन्नःर्रेः	पिता की छोटी बहन, माता के छोटे भाई की पत्नी	*हेण्णुमका*	लड़की
चिन्नःमावन्नुः	मामा, पिता की छोटी बहन का पति	*हेत्ते/हेःर्रेः*	नानी, नाना
तण्गे	छोटी बहन, पिता के भाई की बेटी (कनिष्ठा), माता की बहन की बेटी (जो छोटी हो), पति की छोटी बहन (ननद)	*हेत्तनुः*	नाना, दादा
तम्मनुः	छोटा भाई, चाचा का बेटा (कनिष्ठ), माता की बहन का पुत्र (कनिष्ठ)	*हिरप्पा*	ताऊ

शरीर के अंगों के नाम

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
इब्ब	भौंह	*लिरि*	लिवर
उच्चनिःरु	मूत्र	*उग्रु*	नाखून
ऊरे	नितंब	*एल्लु*	हड्डी
एयेद	छाती	*ओसरिकेण्णु*	तिरछी नजरें
बलकेयि	दाहिना हाथ	*बरु*	पसली
बाडु	मांस	*बायियगिळसोदु*	जम्हाई
बायि	मुँह	*तलेतुम्म*	मस्तिष्क
तलेओडु	खोपड़ी	*तलेकूलु*	मस्तिष्क
तले	सिर	*तलेळे*	सिर के बाल
तुप्पुलुनीःरु	लार	*तोदे*	जांघ
तोण्डा	गर्दन	*तूलु*	त्वचा
दाडे	गाल	*दुडि*	होंठ
दोड्डायि	पेट	*जाडू*	ठोड़ी
चूरे	रक्त	*कळतले*	गंजा सिर
कालबोट्टु	पैर की उँगली	*कालु*	पैर
किरुःनाःलेगे	अलिजिह्वा	*किवि*	कान

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
किविबायि	कनपटी	*किवि गुग्गे*	कान का मैल
कुरुःकनाणि	टखना	*केक्के*	जबड़े की हड्डी
केण्णु	आँख	*केण्णुमणि*	पुतली
कण्णेले	बरौनी	*केण्णुनीःरु*	आँसू
केण्णुहाडे	भौंह	*केण्णुपोट्टे*	पलक
केळगादुडि	निचला होंठ	*केरसा*	आँत
केरुःप्पु पुळिळ	तिल	*केयिपडा*	हथेली
केयि	हाथ	*केयबरे*	हस्तरेखा
केयि गंपु	कलाई	*गौड्कुलु*	काँख
गुण्डागुलि गूगे	सिर का पिछला भाग	*गूगे*	गला
मणिरि	फेफड़ा	*मासु, सज्जे*	गर्भ
मीशे	मूँछ	*मूक्कु*	नाक
मूक्कुबायि	नासारंध्र	*मूळे*	कंकाल
मेडि	गोद	*मेले दुडि*	ऊपरी होंठ
मोले	छाती	*मोका*	ठोड़ी
नरत्तेळे	पका बाल	*नालगे*	जीभ
सङ्कु	हृदय	*सुरुण्डेले*	घुंघराले बाल
हाणे	माथा	*हरःडु*	घुटना
हेगलु	कंधा	*हेल्लु*	दाँत
हेळ्ळुबाडु	मसूड़ा	*होक्कुडि*	नाभि

संख्यासूचक शब्द

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
ओन्द	एक	*एल*	सात
एरड	दो	*एण्ट*	आठ
मूरः	तीन	*ओंपत्त*	नौ
नाःक्क	चार	*हेत्त*	दस
अय्द	पाँच	*नूःरः*	सौ
आरः	छह	*सावरुः*	हज़ार

समयसूचक शब्द

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
बेलगे	सुबह	*नीरहोयिळिडु*	सूर्यास्त
सञ्जेरात्रः	शाम		

प्रकृति से संबंधित शब्द

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
होळे	नदी	*नीरुपोक्क*	बाढ़
मूडा	बादल	*मळेबिल्लु*	इंद्रधनुष
करेबाव	अमावस	*कट्टिमिनिःक्कु*	बिजली
चुण्दरुःगाळि	भंवर	*तिङ्कबेणिसा*	चाँदनी
बिगुलु	सूरज की किरणें	*तेरे*	लहर
सन्निः	सर्दी		

रंगों के नाम

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
नेःरः	रंग	*नीःला*	नीला
मघ्चे	पीला	*करिया*	काला
चोप्पु	लाल	*बेळ्ळे*	सफेद

महीने और दिनों के नाम

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
नेन्नेः	कल (बीता)	*चोव्वायिचा*	मंगलवार
नाःळे	कल (आने वाला)	*बुदनायिचा*	बुधवार
इन्दुगिनाः	आज	*दिना*	दिन
आगिना	परसों (बीता हुआ)	*तिण्क्का*	महीना
मर्रेःगिना	परसों (आने वाला)	*आयिच्चा*	सप्ताह
तिघळायिच्चा	सोमवार		

स्थानसूचक शब्द

काट्टुनायिक्कन	हिंदी	काट्टुनायिक्कन	हिंदी
मलेमुडि	पहाड़ की चोटी	*मलेचूले*	जंगल
मलेपळ्ळे	पहाड़ी की ढलान	*केळक्कु*	पूर्व
तेक्कु	दक्षिण		

संदर्भ-सूची (References)

Research Publication series II, KIRTADS 2011.

Kattunaika Bhasha paThavali, KIRTADS. (Unpublished)

Singh, K.S. 2002, *People of India*, Kerala, Vol. XXVII.

Thurston, Edgar. 1975. *Castes and Tribes of Southern India*, Vol. 1.

कोरगा

कोरगा भाषा मुख्य रूप से उत्तरी केरल के कासरगोड और दक्षिण कर्नाटक के सीमावर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।

कोरगा समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

कोरगा आदिवासी एक अर्धघुमंतू जनजातीय समुदाय है। भारत सरकार ने इन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया है। इस समुदाय के लोग टोकरी बनाकर अपनी जीविका चलाते हैं। आजकल कुछ लोग खेती की ओर भी अग्रसर हुए हैं। *केरल इंस्टीट्यूट फॉर लोकल एडमिनिस्ट्रेशन (KILA) बेसलाइन सर्वे रिपोर्ट* 2008 के अनुसार इनकी कुल आबादी 1,644 है।

कासरगोड और माजेश्वरम में पाई जाने वाली इस आदिम जनजाति को एक पराजित राजवंश का उत्तराधिकारी माना जाता है, जिन्हें पहले तो जंगल में भगा दिया गया और आगे चलकर गुलाम बना लिया गया। ग्रामीण प्रदेशों में पाई जाने वाली यह जनजाति पारंपरिक रूप से निम्न स्तर की संकर प्रजाति मानी जाती है। ये गंदगी में जीवन बिताने वाले माने जाते थे और पारंपरिक रूप से मृत जानवरों की खाल उतारकर उसके मांस को खाते थे। ये बंधुआ मज़दूरी उन्मूलन अधिनियम के अंतर्गत गुलामी पर प्रतिबंध लगने के बाद आजाद हुए, किंतु इसके बावजूद अन्य समुदायों के साथ आज भी इनका बहुत कम संपर्क है। इनकी कोरगा भाषा तुलु और कन्नड़ से मिलती-जुलती है।

इस समुदाय के मुख्यतः दो अंतर्विवाही उप-विभाजन हैं– 1. केरल के मैदानी इलाकों में रहने वाले कुन्ःतु कोरगा और 2. कर्नाटक के जंगलों में रहने वाले छप्पु कोरगा। इन दोनों वर्गों की वेशभूषा अलग-अलग है। कुन्ःतु कोरगा को दो उपविभागों में बाँटा गया है– बदियडुक्का और पुलिक्कूर।

टोकरियाँ बनाना इनका मुख्य पेशा है, हालाँकि कुछ लोग कृषि एवं लघु वन उत्पाद संग्रह में लगे हुए हैं। इस समुदाय का एक ऐसा वर्ग भी है, जो भीख माँगकर जीविका चलाता है। कोरगा लोगों की पारंपरिक झोपड़ी को "कोप्पु" कहते हैं, जो दोनों ओर से खुली रहती है। इसकी छत घास या नारियल के पत्तों से बनाई जाती है। वर्तमान में कई लोग विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से सरकार द्वारा बनवाए गए घरों में रहने लगे हैं। परंपरागत रूप से ये सूर्य और कुछ अन्य देवताओं की पूजा करते हैं। किंतु आजकल ये हिंदु देवी-देवताओं की भी पूजा करने लगे हैं।

भाषाई विशेषताएँ

कासरगोड ज़िले में बोली जाने वाली कोरगा भाषा के अब तक खोजे गए स्वनिम (phoneme) निम्नलिखित हैं। इस भाषा में पाँच ह्रस्व और तदनुरूप उनके दीर्घ स्वरों की पहचान हुई है।

तालिका 4.13 : कोरगा स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	इ		उ
मध्य	ए‘		ओ‘
निम्न			अ

इस भाषा के व्यंजनों में छह अनुनासिक, दो संघर्षी, दो पार्श्विक, एक उत्क्षिप्त, दो अर्ध स्वर और एक कंपित वर्ण शामिल है।

तालिका 4.14 : कोरगा व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य
स्फोट	प ब	त द		ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म	नः	न	ण	ञ	ङ
पार्श्विक			ल	ळ		
उत्क्षिप्त				रः		
संघर्षी		श	ष			
अर्ध स्वर	व				य	
कंपित			र			

कोरगा एक द्रविड़ भाषा है। इसमें स्वरगुच्छ (vowel cluster) नहीं होते। किंतु शब्दों के आरंभिक और मध्य स्थानों में व्यंजनगुच्छ (consonant clusters) पाए जाते हैं। स्वनिमों में महाप्राण ध्वनियाँ नहीं हैं। संज्ञा सरल या व्युत्पन्न रूप में होती है। संज्ञा धातुओं विशेष्य (substantive), संख्या और सर्वनाम को कारक चिह्न के रूप में गिना जाता है। इस भाषा में अन्य पुरुष सर्वनाम में पुल्लिंग एकवचन, स्त्रीलिंग एकवचन, उभयलिंग बहुवचन और नपुंसकलिंग एकवचन एवं बहुवचन हैं। इसके कारक चिह्न और पुरुषवाचक सर्वनाम अन्य भाषाओं से तुलनात्मक रूप से भिन्न हैं।

तालिका 4.15 : कोरगा में पुरुषवाचक सर्वनाम

उत्तम पुरुष एकवचन	*इया,* उ और तिर्यक *एनः-* *इया,* उ स्वतंत्र रूप में आता है	उत्तम पुरुष बहुवचन	*एङ्कुळु* – हम
मध्यम पुरुष एकवचन	ईरु और तिर्यक रूप *निःन्नः*	मध्यम पुरुष बहुवचन	निःक्कुळु – तुम
अन्य पुरुष	*-ये* (पुल्लिंग) वह *-ळु* (स्त्रीलिंग) वह *अ-/इ-* (नपुंसकलिंग)	अन्य पुरुष बहुवचन	उभयलिंग – *अ(इ)* *क्कुळु* – वे नपुंसकलिंग – *वु*

संज्ञात्मक सर्वनाम निम्नलिखित हैं–

तालिका 4.16 : संज्ञात्मक सर्वनाम

उत्तम पुरुष एकवचन	*यानुः*	मैं
उत्तम पुरुष बहुवचन	*येनःकुळु*	हम
मध्यम पुरुष एकवचन	*यीरु*	तू
मध्यम पुरुष बहुवचन	*निःक्कुळु*	तुम (बहु.)

अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन	*आये*	वह
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	*आळु*	वह
अन्य पुरुष नपुंसकलिंग एकवचन	*अदु*	यह
अन्य पुरुष उभयलिंग बहुवचन	*अक्कुळु*	वे
अन्य पुरुष नपुंसकलिंग बहुवचन	*अव*	वे

इस भाषा में संबोधन को मिलाकर नौ कारक मिलते हैं, जबकि कर्ता कारक चिह्नविहीन है। *-ए* (कर्म), *-क* (संप्रदान), *-अ* (संबंध), *-ओट्टिगे* (सहवाची), *-ट्टु* (करण), *-लु* (अधिकरण), *-ल्तु* (अपादान) और अंतिम स्वर को दीर्घ बनाया जाता है।

जहाँ तक क्रिया का संबंध है, प्रेरणार्थक रूप प्रत्यय *-अ* (अव) से जाना जाता है। इस भाषा में तीन काल हैं– भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्यत काल। प्रत्यय रूपिम जैसै *-त, -तत, -न्ःत, -ण्ट, -घ*, और *-य* भूतकालिक चिह्न हैं। वर्तमान काल को *-प* और *-ण* द्वारा चिह्नित किया जाता है, तथा भविष्यत काल को *-व* और *-ओ* द्वारा चिह्नित किया जाता है। विशेषणों में सामान्यतः समय, स्थान, रीति एवं मात्रा संबंधी सामान्य विशेषण, संख्यावाचक विशेषण और क्रियाविशेषण पाए जाते हैं। क्लिटिक्स की बात करें तो पूर्वपदीय क्लिटिक्स, पश्चपदीय क्लिटिक्स (संकेतवाचक और प्रश्नवाचक) तथा समय और स्थानसूचक क्लिटिक्स की भी पहचान हो चुकी है।

लोक साहित्य

गीत 1

टोकरी बनाना

कांट्य मेटप्पुणा
एक्कुळु बळ्ळीट्टु काण्ट्ये मेटप्पुणु
आणुळ काट्टुक्क पूत्तु बोळ्ळु कटत्तु बरवरु...
अक्कन्ःळ कत्तिट्टु बळ्ळु कटप्पे
बळ्ळु कटेत्तु अदु चिगुरिः काण्ट्ये मेटप्पुणु।
आए ओञ्जि काण्ट्याण्टु
ओञ्जि काण्ट्याक्कु ओयिनुः रूःवायि...

हिंदी अनुवाद

हम बाँस के टोकरे बना रहे हैं।
पुरुष जंगल जाकर बाँस लाने वाले हैं।
वे कत्ते (knives) से बाँस काटते हैं,
उसके टुकड़े करते हैं,
और फिर उनसे टोकरे बनाते हैं।
उन्होंने टोकरियाँ बनाईं
और प्रत्येक पाँच रुपये में बेची।

गीत 2

चत/पुचे/

कल्ल पुच्चे बत्तोण्टु
अञ्जि इञ्जि चूत्तु अडिगते
कूणिगे पारितु

हिंदी अनुवाद

बिल्ला

चोर बिल्ला अंदर आकर
इधर-उधर ताक रहा था।
उसे कोने में

अज्जि पेरिदा पात्रः कण्टितु	एक प्याले में दूध दिखाई दिया।
पात्रःदु उळया तोडगितु	वह प्याले से दूध पीने लगा।
अप्पे उळय बत्तळु	तभी माँ हाथ में एक छड़ी लेकर आई।
उद्दत कूळु कोणटेत्तळु	वह चुपके-चुपके
मेल्ले नःटत्तु पैरु परःप्पुण पुचेक्कु	दूध पी रहे बिल्ले के पास पहुँची
रेड्डु क्रपेट्टु कोरियळु।	और उसे पीटने लगी।

लोक कथा

कहानी

मङ्कु मात्ताडि तूण्टेलु। ओञ्जिनाक्कुळु इरुवरु बळ्ळुक्कु बूडदु काडुक्कु पोयारु। बल्लु चूत्तु काटिलु गुड्डेलु नःडन्तेर नःडानूःतु नःडानूःतु अक्कुळु क्षीणपट्टरु। मङ्कु मत्तडीट्ट पण्ट यी इज्जि कुळ्ळू। गिट्ट ओञ्जि गुण्टि उण्टु। याणु नीरु देत्तु बरप्पे अल्प पण्पे माङ्कु गुण्टित्तु पूयनु। अत्ते अनःचि नःज्जे अनःचि बत्तिण्टु। मत्तडि पूडुत्तु बच्चुण्डु पूये। आय दयिर्य्प्पट्टु बीगोडु अञ्जि कल्लु देत्तु नःज्जेनः मूङ्कुक्कु अडक्कि नःज्जेन पायिच्च।

हिंदी अनुवाद

मंकु और मत्ताडि दोस्त थे। एक दिन दोनों बेलें (लताएँ) इकट्ठा करने जंगल में गए। बेल ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वे थक गए। तब मंकु ने मत्ताडि से कहा कि जब तक वह पानी लाए तब तक नदी किनारे बैठ जाए। मंकु पानी लेने नदी की ओर चला गया। उसी समय एक सियार मत्ताडि के पास पहुँच गया। हालाँकि पहले तो वह डर गया, लेकिन उसने हिम्मत जुटाकर एक पत्थर उठाया और सियार के थूथन पर फेंककर मारा। सियार भाग गया।

शब्दावली (कोरगा-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

कोरगा	हिंदी	कोरगा	हिंदी
अक्के	दीदी, पिता के भाइयों की बेटियाँ/माता की बहनें	*कण्टनेः*	पति
अज्ज	दादा (दादा/नाना)	*किञ्जमगे*	कनिष्ठ पुत्र
अज्जि	दादी (दादी/नानी)	*तङ्गेमेगिदि*	सबसे छोटी बहन, पिता के भाई की बेटी (कनिष्ठा)
अण्णे	बड़ा भाई	*तम्ममेग्ये*	छोटा भाई, पिता के भाई का बेटा, माता की बहन का बेटा (कनिष्ठ)
अट्टिः	बड़े भाई की पत्नी	*नेःलेमागे*	वरिष्ठ पुत्र
अप्पे	माता	*नेःलिप्पे*	मौसी (माता की बड़ी बहन)

कोरगा	हिंदी	कोरगा	हिंदी
अम्मे	पिता	*परःदि*	दीदी (केवल संदर्भित शब्दावली)
अञ्ळिए	साला (पत्नी का बड़ा भाई)	*पुल्लि*	पोता, नाती
अञ्ळियत्ति	साली (पत्नी की बहन)	*पोङ्ङु*	महिला
आणु	आदमी	*पोङ्ङुळा*	लड़की
आणुल	लड़का		

शरीर के अंगों के नाम

कोरगा	हिंदी	कोरगा	हिंदी
उगुरु	नाखून	*णिरल्ले*	नितंब
एडत्तयि	बायाँ हाथ	*पट्टिगे*	मूत्र
कण्णसूयि	भौंह	*पियि*	मल
कण्णुत्ताक्कुञ्जि	नेत्रगोलक	*पुगीलु*	कंधा
कण्णु	आँख	*पूवोळु*	आँत
कयितसंतु	कलाई	*बिजनाःवु*	कोख
कयिबिज	हथेली	*बलत्तयि*	दाहिना हाथ
कयि	हाथ	*बायि*	मुँह
कयि अङ्कदबरे	हस्तरेखा	*बिम्म*	निचला होंठ
करःलु	लिवर	*बिरेलु*	उँगली
कारःल चुण्डु बेरेलु	पैर की उँगली	*बेगर्नःरु*	पसीना
कारःपाद	पैर	*बोण्डा*	मस्तिष्क
किन्निःबिरेलु	कनिष्ठिका	*बूण्डपरु, मण्डिगे*	मसूड़ा
कूलि	दाँत	*अज*	तिल
केवि	कान	*मत्ते*	गोद
केवित कण्टेलु	लोलकी	*मिरे*	छाती
कोडिञ्चि	गाल	*मीसे*	मूँछ
कोंपबिरेलु	अँगूठा	*मूक्कु*	नाक
गेज्जे	गुल्फ/टखना	*मुक्कुडगण्णु*	नासारंध्र
चयिरा	शरीर	*मुतरुः*	होंठ
चरपोलि	गुल्फ/टखना	*मोट्टे चरे*	गंजा सिर
चरे	सिर	*मोल्लपोट्टे*	तोंद
चरःकुजु	सिर के बाल	*मोलेलेबिरेलु*	अँगूठा
चिगले	हृदय/छाती	*रट्टेदडु*	काँख
एण्या	ठोड़ी	*रोमा*	शरीर के बाल
णालगे	जीभ		

संख्यासूचक शब्द

कोरगा	हिंदी	कोरगा	हिंदी
ओञ्जि	एक	*नूःतु*	सौ
रेड्डु	दो	*साविरा*	हज़ार
मुनुःजि	तीन	*लक्का*	लाख
नाःलु	चार	*ओञ्जेला*	पहला
अयिनु	पाँच	*नाःलेनःदा*	चौथा
आजि	छह	*अयिनःत्ता*	पाँचवाँ
एलु	सात	*आजिनिःत्ते*	छठा
एण्मा	आठ	*एलेंते*	सातवाँ
ओरुम्पा	नौ	*एण्मदि*	आठवाँ
पत्तु	दस		

रंगों के नाम

कोरगा	हिंदी	कोरगा	हिंदी
कप्पु	काला	*बुळ्पु*	सफेद
पज्जि	हरा	*क्येंपु*	लाल

संदर्भ-सूची (References)

KoragaBhasha paThavali, KIRTADS (Unpublished).
Research Publication series II, KIRTADS 2011.
Singh, K.S. 2002, *People of India*, Kerala.
Thurston, Edger. 1975. *Caste and Tribes of Southern India.*

कुरिच्यन

कुरिच्यन भाषा मुख्यतः केरल के वयनाड़ ज़िले में बोली जाती है।

कुरिच्यन समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

कुरिच्यन केरल का एक मुख्य आदिवासी समुदाय है। यह समुदाय ज़्यादातर वयनाड़ और कोष़िकोड ज़िले के कुछ भागों में केंद्रित है। किरताड्स 2020 के शोध[ii] में भारतीय जनगणना 2011 को उद्धृत करते हुए कुरिच्यन की जनसंख्या 35,172 बताई गई है। पहले इनके तरवाडु (संयुक्त परिवार) की संख्या 108 थी, जिनमें शेष 56 की गणना एवं सूची अद्यतन शोध में दी गई है। यद्यपि कुरिच्यन पहाड़ी प्रदेशों में अलग-थलग रहते हैं, लेकिन इनके कुछ घरों की वास्तुकला एवं अन्य कलारूपों से पता चलता है कि ये ऐतिहासिक रूप से मुख्यधारा से जुड़े हुए आदिवासी समुदाय हैं। इन्हें आदिवासियों में सबसे ऊँचा माना जाता है। ये छुआछूत (*अयित्तम*) का पालन अन्य जनजातियों से अधिक करते हैं। एक दंतकथा के अनुसार इस समुदाय के योद्धाओं को युद्ध में पराजित होने पर वनवासी के रूप में (वानप्रस्थ अवस्था में) रहना पड़ता था। ये लोग अपने को भगवान शिव का अवतार मानते हैं। इन्होंने अंग्रेज़ों के खिलाफ पष़श्शि राजा के मुख्य वफादार और वीर योद्धा के रूप में लड़ाई लड़ी थी। ये लोग सामरिक कला और धनुर्विद्या में पारंगत होते हैं।

इन्हें *जाति करिशियन* (वयनाड़ के कुरिच्यन), *कुन्नन कुरिच्यन, पातिरि कुरिच्यन* और *आचिल्ल कुरिच्यन* उपजातियों में विभाजित किया गया है। मातृकुलीन गोत्र होने के कारण इन्हें *कुलम* कहा जाता है। इस समुदाय की पारंपरिक जाति सभाएँ होती हैं, जिनके मुखिया को *ओरुगौडा, मव्रिगौडा* या *यजमान* कहा जाता है। मुखिया पर समुदाय के सदस्यों की समस्याओं का समाधान करने की ज़िम्मेदारी होती है।

ये लोग अपने मृत पूर्वजों और मृतात्माओं की पूजा करते हैं, जिन्हें *नेकल* या *निष़ल* (छाया) कहा जाता है। इनके मुख्य देवता हिंदुओं के लिए भी आराध्य हैं। इनके पारंपरिक विश्वास के अनुसार मृत्यु के बाद सिद्ध पुरुष *नेकल* बन जाता है और सिद्ध स्त्री *पेना* बन जाती है, जिन्हें ये आराध्य मानते हैं। कुरिच्यन के आचार और अनुष्ठानों का विवरण[iii] यहाँ उल्लेखनीय है।

कुरिच्यन पुरुष शराब, बीड़ी और सिगरेट पीने तथा पान खाने के शौकीन होते हैं। महिलाएँ कृषि कार्य, मछली पकड़ने तथा खेतीबाड़ी आदि में हिस्सा लेती हैं। इसके अलावा पीने योग्य पानी लाने और ईंधन इकट्ठा करने में भी मदद करती हैं। ये सामाजिक संबंधों में भाग लेने के साथ-साथ बच्चे के जन्म पर सूतक आचरण, प्रसव के बाद की पाबंदियों और कन्या विवाह से संबंधित अनुष्ठानों का पालन करती हैं।

भाषाई विशेषताएँ

इस भाषा में पाँच ह्रस्व स्वर और तदनुरूप उनके दीर्घ स्वर हैं।

तालिका 4.16 : कुरिच्यन स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	इ		उ
मध्य	ए‘		ओ‘
निम्न			अ

ii देखें टिप्पणी ii पृष्ठ 223
iii देखें टिप्पणी iii पृष्ठ 223

इस भाषा में अब तक 22 व्यंजनों की पहचान हुई है।

तालिका 4.17 : कुरिच्यन व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	**दंत्य**	**वर्त्स्य**	**मूर्धन्य**	**तालव्य**	**कंठ्य**
स्फोट	प ब	त द		ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म	नः	न	ण	ञ	ङ
पार्श्विक			ल	ळ		
उत्क्षिप्त			र	रः		
प्रवाही	व				य	

स्वनिमिक अथवा ध्वन्यात्मक (phonological) विशेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि इस भाषा में संघर्षी, महाप्राण और संयुक्त स्वरों का अभाव है।

अभी तक पहचाने गए लिंग हैं– पुल्लिंग *-अनः*, और स्त्रीलिंग *-इ-*, *-त्ति* और *-ळ*।

बहुवचन प्रत्यय हैं *-ळ* , *कळ* और *मारः*

पुरुषवाचक सर्वनाम निम्नलिखित हैं–

उत्तम पुरुष एकवचन	*नाःनः*
उत्तम पुरुष बहुवचन	*नःङ्ङल*
मध्यम पुरुष एकवचन	*नीः*
मध्यम पुरुष बहुवचन	*निःङ्ङल*
अन्य पुरुष पुल्लिंग	*ओनः*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग	*ओळ*
अन्य पुरुष नपुंसकलिंग	*इतु*

कुरिच्यन भाषा के सात कारक निम्नलिखित हैं–

तालिका 4.18 : कुरिच्यन कारक

कारक	**कारक चिह्न**
कर्ता	कोई कारक चिह्न नहीं।
कर्म	*-अ/-ए*
सहवाची	*-ओट*
संप्रदान	*-क, -नः, -इनः*
संबंध	*-अटे, -टे, -अ*
अधिकरण	*-ई, -ल, -मेल,-त*
करण	*-ओट्टण्ड, ओण्ड, -कोण्ड*
संबोधन	*-ई, -ए, -आ*

कुरिच्यन में कालवाचक चिह्न

वर्तमान काल – स्वरांत क्रिया वर्ण हो तो *-नःनः*/ अन्यत्र *-इनःनः* जुड़ता है।

भूतकाल – व्यंजनांत क्रिया धातुओं के साथ -इ जुड़ता है।

-आ और *-पो* क्रिया धातुओं से अंत होने पर *-य-* जुड़ता है।

इसी प्रकार *-य* से अंत होने वाली क्रिया धातुओं के साथ *-इ* जुड़ता है।

भूतकालिक चिह्न के रूप में *-त्त/ -रः/-ट/-ण्ड/-ण/-च* और *-ञ्ज* हैं।

क्लिटिक्स रूप स्वतंत्र, बद्ध और अंशतः बद्ध रूपों में होते हैं। कुरिच्यन भाषा में सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य सर्वाधिक मिलते हैं।

शब्दावली (कुरिच्यन-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

कुरिच्यन	**हिंदी**	**कुरिच्यन**	**हिंदी**
अच्चन	पिता	पाप्पे	चाचा
अम्मा	माता	मामे	मामा (माता का छोटा/ बड़ा भाई)
वच्चाये	पति	अम्मायि	फूफी (पिता की बड़ी/छोटी बहन)
केट्टयोळु	पत्नी	बेल्ल्यम्मा	बुआ
एलादि	सौतन	एळाम्मा	चाची (माता की छोटी बहन)
मेनेः	पुत्र	मर्योळु	पुत्रवधु
मोळे	पुत्री	मर्योन	दामाद
बेल्लियच्चे	ताऊ		

शरीर के अंगों के नाम

कुरिच्यन	**हिंदी**	**कुरिच्यन**	**हिंदी**
वट्टि	पेट	*तोल*	त्वचा
नेअर	सफेद बाल	*पेल्ल*	दाँत
पोळा	रक्त	*तला*	सिर
कट्टपिरि	भौंहें, जो आपस में मिली हुई हों	*केरल*	गर्दन
मन्नः	एड़ी	*नःगेम*	नाखून
मुटि	बाल	*मेला*	छाती
मेल	तन	*पिरिकम*	भौंह
अणह	अलिजिह्वा	*कण्ण*	आँख

कुरिच्यन	हिंदी	कुरिच्यन	हिंदी
अप्पविरल	अँगूठा	*एल्ल*	हड्डी
चेवि	कान	*चिर्रिः*	होंठ
मीशा	मूँछ	*मूणा*	मसूड़ा

संख्यासूचक शब्द

कुरिच्यन	हिंदी	कुरिच्यन	हिंदी
ओन्नु	एक	*एट्टु*	आठ
नण्टु	दो	*ओंपत्तु*	नौ
मून्नु	तीन	*पत्तु*	दस
नालु	चार	*इरुवतु*	बीस
अङ्चु	पाँच	*अयिंपतु*	पचास
आरुः	छह	*एयुवतु*	सत्तर
एयु	सात		

रंगों के नाम

कुरिच्यन	हिंदी	कुरिच्यन	हिंदी
करुःप्पु	काला	*पच्चे*	हरा
चोन्नतु	लाल	*वेळ्ळे*	सफेद
नीले	नीला	*मञे*	पीला

मौसम से संबंधित शब्द

कुरिच्यन	हिंदी	कुरिच्यन	हिंदी
वरशकाला	वर्षा का मौसम	*तनुप्पुकालम्*	सर्दी का मौसम
बेनुःक्कालम्	गर्मी का मौसम		

लोक साहित्य

लोक गीत

गीत 1

नारायो नारायो नारायणा...
पाट्टु गणपति नारायनो...
ओन्नोण्टु केक्कानो नारयणा...
पाटोन्नु पाटोनाम गेणपतिये...
केलरु तेडक्क गेणपतिक्क्

केट्टूटे बेट्टिला गेणपतिक्क्
कतलि प्पळावुम गेणपतिक्क्
इतोन्नु पोरेङ्ङिकलु सिवनोटु
नङळु तोळसीणरेःलाकोण्टु शेमे चोदिक्कुम...
अतिल्लेङ्ङिकतेन्नेः तरिःप्लियाक्कु
तुंःकलोक्के पोरुः त्तिनणम्।

हिंदी अनुवाद

हे भगवान नारायण, गणपति भजन गाते हुए हम तेरी पूजा करते हैं।
पान, कदली (केले) और जो कुछ हमारे पास है, सब तेरे चरणों में अर्पित है।
अगर तुझे यह पसंद न आ रहे हों, तो भगवान शिव से तुलसी के पत्ते माँगूँ।
अगर तू फिर भी खुश नहीं है तो हम माफी माँगते हैं।

गीत 2

वावावो वावावो वावावावो... *(2)*
ओन्नूराःङ्ङिङल्लो किन्निःप पेण्णे...
अच्चनिप्प वरयुम् पेण्णे...
बन्नाप्पिन्नेः निनःक्करियिल्ल पेण्णे...
बेगम् बेगम् नी ओरङ्ङिङक्को नी...
इल्लेङ्ङिकतेनःरेः पुरम्पोट्टुम...
वावावो वावावो वावावावो... *(2)*

हिंदी अनुवाद

ओ मेरी लाड़ली, सो जा, सो जा ... (2)
पिता के आने का समय हो गया, तुझे नहीं मालूम लाड़ली, जल्दी सो जा...
नहीं तो हे लाड़ली, वे मुझ पर गुस्सा होंगे, सो जा, सो जा लाड़ली... (2)

लोक कथा

कहानी

पण्डु पण्डु एर्या अच्चनुःम् अम्मयुम् नण्टुपिल्लेरुम्। अच्चनुः अम्मेयुम पनिक्कु पोयप्पो पिल्लोरु काट्टिल कायपरिःक्कांपोयि। परिःच्चूण्टिरिःक्कुंपो ओरु चाच्चि वरु। माले मोने ओरु काय्य् तर्यो एक्कु तर्या। अत्तु मोनेः कियिलु पेय्, ओत्तु वळत्तिट्टात्तिले पूय्- अन्नुः परिःचीट्ट् कीञ्ञु वा। पिल्लोरे रायिनेः चाकिलाक्कुम्। चाच्चीटे कूटे ओरु कुट्टियाण्ट् नीः मिरःत् पोयिट्टु तिप्पेट्टि एटुत्तिट्ट्वा। नमुक्क् ई पिळ्ळोरे चुट्टिन्नाःम्। पिट्टापरःयुम एक्कु एर्ःक्कावुन्नुःल्ल अम्मेम बा, अवरु पोयि आ वयिक्कोरु कुरुःक्के वन्नु आ पिल्लोरे केट्टयिच्चु विटुम। एन्निट्टुई पिल्लोरु कुरुःक्कन्नुम् कूटि आ चाक्किल् मुळ्ळ्, चप्प् एल्लाम कूट्टिटट्ट केट्टिःवक्कुम। एन्निट्ट् इवरु ओञ्ळिच्चु कुत्तिक्कुम। अङ्ङने चाच्चूम कुट्टीम वरुम्। कुटघिन्नोःटुः परेःम् माळे नुःळ्ळट्ट्ः बनःक्क् चुट्ट्

तिन्नल्लो। तीयिलिट्ट् नोःक्कुंपो अतिनुःळ्ळिलोन्न्ल्ल। अतु कण्ट् पिळ्ळोरुम करुःक्कनुम मन्नःत्त् कुत्तिन् कुनःक्किम बारुःम्कौक्कुम। अतुकेण्ट् चाच्चोल्ल् बारुःम कोटुक्कुम। अतु कण्ट् चाच्चिक्क चोडिवर्युम अङ्ङने पिळ्ळोर्पाणूटुम चाच्चिक्क् किट्टिल्ला।

हिंदी अनुवाद

एक बार माता-पिता और उनके दो बच्चे थे। एक दिन माता-पिता काम पर गए तो बच्चे जंगल में चले गए। बच्चे पेड़ पर चढ़कर उसके फल तोड़ने लगे। उसी रास्ते पर जा रही एक बुजुर्ग महिला और एक छोटी लड़की उनके पास आई। बुजुर्ग महिला ने बच्चों से एक फल माँगा। बच्चों ने फल नीचे फेंक दिया। किंतु वह इसे पकड़ न सकी और फल पानी में गिर गया। बच्चों ने दूसरा फल फेंका तो वह भी कहीं झाड़ी में खो गया। अंत में उस महिला ने बच्चों से कहा कि वे नीचे उतरकर उसे एक फल दे दें। जब बच्चे नीचे फल देने को उतरे तो उस बुजुर्ग महिला ने उन्हें पकड़कर अपनी झोली में बाँध लिया। और लड़की से कहा कि लकड़ियाँ इकट्ठी करो, इन बच्चों को भूनकर खाएँगे। छोटी लड़की ने उत्तर दिया कि वह अकेली नहीं जा सकती। तब उस महिला ने कहा कि तुम यहाँ खड़ी रहो और मैं लकड़ियाँ लेकर आती हूँ। लड़की ने कहा कि वह अकेली यहाँ खड़ी भी नहीं हो सकती। अंत में महिला ने कहा कि चलो हम दोनों साथ चलकर लकड़ियाँ लेकर आएँ। जब वे दोनों चले गए तो एक सियार उस झोली के पास पहुँचा और उसने झोली खोलकर बच्चों को बचा लिया। बच्चों ने झोली में कचरा भरकर उसे उसी तरह बाँधकर रख दिया। और फिर वे थोड़ी दूर हटकर देखने लगे। जब वह महिला और लड़की वापस आई तो झोली पर आग लगा दी। झोली तुरंत जल गई। महिला ने देखा कि उसमें तो कुछ नहीं था, वह नाराज हो गई। यह देखकर सियार और दोनों बच्चे डर गए और वहाँ से भागकर बच निकले।

संदर्भ-सूची (References)

Darwin L, ed. 2012. *Dictionaries of Tribal Languages.* KIRTADS.

Singh, K.S. 1994. *The Scheduled tribes.* Oxford University Press.

कुरुंबा

कुरुंबा भाषा केरल के पालक्काड ज़िले के अट्टप्पाडि आदिवासी इलाके में बोली जाती है।

कुरुंबा समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

किला बेसलाइन सर्वे रिपोर्ट 2008 के अनुसार कुरुंबा की जनसंख्या लगभग 2,252 है। जनगणना 2011 के अनुसार कुरुंबा की कुल जनसंख्या 2,586 है। किरताड्स 2017 के शोध[iv] के अनुसार कुरुंबा की 14 बस्तियों में 9 आरक्षित वनभूमि पर और 5 निहित वनभूमि पर स्थित हैं। आरक्षित वनभूमि की बस्तियाँ हैं– 1. मेलाइ तुडुक्किल, 2. ताषे तुडुक्किल, 3. मुरुकला, 4. आनवायि, 5. कडुकनान्नु, 6. गलाजि, 7. कुरुक्कटि कल्लु, 8. गोटिसर कंडि और 9. तडिकुंडु। निहित वनभूमि की बस्तियाँ हैं– 1. भूतयार, 2. यादवानि, 3. पषयूर, 4. सूतरा और 5. मूल कोंब। मलाबार के कुरुंबा समुदाय की तीन उपजातियाँ हैं– मुल्ल कुरुंबन, जेनु कुरुंबन और ऊराळि कुरुंबन।

केरल की अनुसूचित जनजातियों में कुरुंबा एक आदिम जनजाति है। इनके आवास पालक्काड के अट्टप्पाडि इलाके में भवानी नदी के दोनों किनारों पर स्थित हैं। ये अधिकतर भोजन संग्राहक हैं और झूम खेती (shift cultivation) करते हैं। ये अपनी कुछ बस्तियों के पास घने जंगल में गाँजे (भाँग) की खेती भी करते हैं। रागी इनका मुख्य खाद्यान्न है किंतु आजकल ये चावल भी खाते हैं। शराब पीना इनकी दिनचर्या में शामिल है।

इनकी पुरानी पीढ़ी कपड़ों का इस्तेमाल कम करती है। युवतियाँ काँसा, टिन, एल्युमिनियम, प्लास्टिक और काँच से बनी अँगूठियाँ, माला और कान के गहने पहनती हैं। बाँस, बेंत और ईख का इस्तेमाल नौका और टोकरे बनाने के लिए किया जाता है। खाना पकाने के लिए एल्युमिनियम और मिट्टी के बर्तनों का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक कुरुंबा परिवार में सामान्यतः दो औज़ार– ऊखल और मूसली अवश्य पाए जाते हैं, जिनसे वे धान कूटते, पीसते और गूँथते हैं।

कुरुंबा लोगों का जीवन *ऊरु* नामक सामाजिक-राजनीतिक इकाई द्वारा संचालित होता। प्रत्येक *ऊरु* के मुखिया को *ऊरुमूप्पन* कहते हैं, जो प्रशासन देखता है। इसके सहायक *भंडारी, कुरुतलै* और *मन्नूःक्कारन* होते हैं। *ऊरुमूप्पन* सरकारी अधिकारियों के संपर्क में रहता है और अंतःबस्तियों की समस्याओं को सुलझाता है। *भंडारी* सामाजिक कार्य के लिए कोषाध्यक्ष होता है। *मन्नूःक्कारन* पारंपरिक कृषि विशेषज्ञ होता है। संपूर्ण समाज आठ गोत्रों में विभाजित होता है। अलग-अलग सामाजिक अधिकारी विभिन्न गोत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था के लिए कुरुंबा जनजाति की कई परिषदें हैं। कुरुंबा समाज में मुखिया एवं पुरोहित को प्रतिष्ठित पद प्राप्त है। गाँव के मुखिया को *मनिःयगारु* और पुरोहित को *मन्नुःगारु* कहते हैं। इस समाज में पुरुष वंशावली के अनुसार मुखिया और उसके सहयोगी का कार्य अगली पीढ़ी को हस्तांतरित होता है। एक पुजारी (ओझा) या आविष्ट (Sorcerer) के रूप में स्त्री या पुरुष कोई भी कार्य कर सकता है। धार्मिक रीति-रिवाज इनके पूर्वजों की आराधना से संबंधित हैं, जिसके लिए पवित्रता एवं शुद्धता पर विशेष बल दिया जाता है। वर्तमान में सभी धार्मिक मान्यताएँ जिनका पालन कुरुंबा जनजाति करती है, हिंदू धर्म जैसे अन्य धर्मों के समान हैं। साथ ही, कुरुंबा समाज की अधिकांश जनजातियाँ, विशेषकर इनके युवा पारंपरिक कुरुंबा विश्वासों का पालन करते हुए हिंदू और ईसाई धर्म को भी मानते चले आ रहे हैं।

प्राचीन काल में कुरुंबा लोग पहाड़ों की चोटियों या गुफाओं में एकांत जीवन व्यतीत करते थे। फिर धीरे-धीरे वे जंगल के ही पास अपनी झोपड़ी बनाकर, वहाँ केले, आम, कटहल, मक्का आदि के बगीचे लगाकर जीवनयापन करने लगे थे। वर्तमान में इनकी जनसंख्या बढ़ने और वनों की कटाई होने से कुरुंबा लोगों को राज्य सरकार द्वारा निर्धारित पहाड़ियों से निचले स्थानों में रहने और कॉफी बागानों में काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

---

iv देखें टिप्पणी iv पृष्ठ 223

पारंपरिक झोपड़ी बाँस, कीचड़ और जंगली घास के प्रयोग से बनाई जाती थी। प्रत्येक परिवार एक इकाई है, जो अपनी झोपड़ी अलग बनाता है। कभी-कभी दो या तीन परिवार एक झोपड़ी में एक साथ भी रहते हैं। इसके अलावा फसल की देखभाल के लिए ये खेतों में झोपड़ियाँ भी बनाते हैं।

अधिकतर कुरुंबा परिवार एकल हैं और मातृवंशीय विरासत का पालन करते हैं। अट्टप्पाडि क्षेत्र की तराई में पाए जाने वाले एक अन्य प्रमुख मुदुगा आदिवासी समुदाय से कुरुंबा का विवाह संबंध होता है। ये जीवन में सूतक (pollution) आदि प्रथाओं का पालन करते हैं। मृत्यु के तीसरे दिन शवों को दफनाया जाता है।

शारीरिक रूप से कुरुंबा लोगों की नाक चौड़ी, चेहरा फानाकार, गाल पिचके, और गाल की हड्डियाँ उभरी हुई होती हैं। इनकी ठोड़ी नुकीली, रंग गहरा और आँखें बड़ी होती हैं। महिलाएँ कमर या कभी-कभी घुटनों तक चौकोर छोटे कपड़े पहनती हैं। आदिवासी समुदाय की इस वेशभूषा में आभूषणों की मुख्य भूमिका रहती है। यह जनजाति अभी भी बहुत पिछड़ी अवस्था में है, जिसे कोई आधुनिक सुख-सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं। उल्लेखनीय है कि विशिष्ट संस्कृति, परंपरा, धार्मिक रीति-रिवाजों और सामाजिक प्रथाओं का पालन करने वाले अधिकांश कुरुंबा लोग अनपढ़ हैं।

ये अन्य जनजातियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखते हैं और एक-दूसरे के कार्यों में हाथ बँटाते हैं। ये तोदा जैसे समुदाय को अंतिम संस्कार में काम आने वाले लंबे बाँस की आपूर्ति करते हैं। इसी प्रकार ये बडगा जनजाति द्वारा उपयोग की जाने वाली तीन प्रकार की टोकरियों की भी आपूर्ति करते हैं।

कुछ मानव विज्ञानियों के अनुसार नीलगिरि की संतति परंपरा में कुरुंबा का प्रमुख स्थान है और ये मुख्यतः सामूहिक खेतीबाड़ी करते हैं। जंगल में रहने वाले कुरुंबा शिकार और जंगली उत्पादों को इकट्ठा कर जीवनयापन करते हैं। पहाड़ों में रहने वाले कुरुंबा अस्थायी झूम खेती करते हैं तथा छोटी चिड़ियों और जीव-जंतुओं को पकड़कर खाते हैं।

कुरुंबा अपने पारंपरिक देवी-देवताओं के साथ ही हिंदू देवताओं की भी पूजा करते हैं। इसके अलावा ये जादू-टोना, जादुई प्रदर्शन और जड़ी-बूटियों से दवा बनाने में भी माहिर होते हैं। ये जादूगर के रूप में प्रसिद्ध हैं और आविष्ट (*देवग्गारु*), दिव्यपुरुष (*कनिःगार*) एवं जादू-टोना करने वाले (*ओडिगरा* या *ओडिया*) की भूमिका निभाते हैं। इनका अभिचार (*पिल्लिगरा*) दावा करता है कि वह खुद किसी भी जानवर का रूप ले सकता है। ये जड़ी-बूटियों और मंत्रोच्चारण से दुश्मनों को बीमार करने या किसी को मारने में भी सिद्धहस्त होते हैं। इसके अलावा इनके अन्य व्यवसाय मालिश करने वाले विशेषज्ञ (*मद्दुगारा*) और बीमारियों का इलाज करने वाले हकीम आदि हैं।

कुरुंबा जनजातियों की बोलचाल की भाषा द्रविड़ भाषा (कुरुंबा) है। ये लोग पितृवंशीय और सामान्यतः विजातीय विवाह संबंध मानने वाले होते हैं। किंतु सजातीय विवाह के भी कुछ उदाहरण मिलते हैं। ममेरे-चचेरे भाई-बहनों के बीच विवाह आम बात है।

भाषाई विशेषताएँ

अट्टप्पाडि इलाके में बोली जाने वाली कुरुंबा भाषा के निम्नलिखित स्वनिम (phonemes) पहचाने गए हैं। इसमें पाँच ह्रस्व स्वर और तदनुरूप उनके दीर्घ स्वर हैं।

तालिका 4.19 : कुरुंबा स्वर

	अग्र	**मध्य**	**पश्च**
उच्च	इ		उ
मध्य		ए'	ओ'
निम्न		अ	

इस भाषा के 24 व्यंजनों की पहचान की जा चुकी, जिनमें दस स्फोट, छह अनुनासिक, दो पार्श्विक, एक उत्क्षिप्त, दो संघर्षी, दो अर्ध स्वर और एक कंपित है।

तालिका 4.20 : कुरुंबा व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	**दंत्य**	**वर्त्स्य**	**मूर्धन्य**	**तालव्य**	**कंठ्य**
स्फोट	प ब	त द		ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म	नः	न	ण	ञ	ङ
पार्श्विक			ल	ळ		
उत्क्षिप्त				रः		
संघर्षी			स		श	
अर्ध स्वर	व				य	
कंपित			र			

द्रविड़ भाषा की कई विशेषताओं वाली इस भाषा में कोई महाप्राण ध्वनि नहीं है। संज्ञा सामान्य और व्युत्पन्न रूप में है। पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों को विशेष रूप से चिह्नित किया गया है। लिंग प्रत्यय जैसे *-इ, -इच्चि, -आळु, -आट्टि, -इट्टि* और *-श्शि* स्त्रीलिंगवाचक हैं और *-आणु* पुल्लिंगवाचक प्रत्यय है। पुरुषवाचक चिह्न भी इस भाषा में मिलते हैं। एकवचन के लिए कोई चिह्न नहीं है, जबकि बहुवचन में *-म, -आरु, -गाळु,* और *-आमु* चिह्न मौजूद हैं। इस भाषा में अन्य पुरुष रूप पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एकवचन और नपुंसकलिंग एकवचन में एक-दूसरे से अलग हैं। इस भाषा में वाक्य विन्यास कर्ता-कर्म-क्रिया के क्रम में होता है।

पुरुषवाचक सर्वनाम को तीन भागों में बाँटा गया है– प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष। इनकी सूची निम्नलिखित है–

तालिका 4.21 : कुरुंबा पुरुषवाचक सर्वनाम

पुरुष	एकवचन (पु.)	एकवचन (स्त्री.)	बहुवचन (पु.)	बहुवचन (स्त्री.)	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	*नाःनुः*	*नःम्म*	*नाःनुः*	*णम्म*		
मध्यम पुरुष	*नीःनुः*	*निःम्म*	*नीःनुः*	*निःम्म*		
अन्य पुरुष	*अवानुः*	*अवाळु*	*अवानुः*	*अवाळु*	*आदु*	*आदु*

इस भाषा में सार्वनामिक अंत भी देखा गया है। क्रिया धातु के साथ *-एनुः* लगे तो वह उत्तम पुरुष एकवचन है, *-ईमु* उत्तम पुरुष बहुवचन, *-आयि* मध्यम पुरुष एकवचन, *-इरु* मध्यम पुरुष बहुवचन, *-आनुः* अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन, *-आळु* स्त्रीलिंग एकवचन और *-इतु/अतु* नपुंसकलिंग हैं। इसमें विकृत क्रियाएँ पाई जाती हैं, जो काल चिह्नित नहीं अपितु निषेध चिह्नित हैं। विशेषण में सामान्य, व्युत्पन्न, और संख्यावाचक विशेषण पहचाने गए हैं। व्युत्पन्न विशेषणों का निर्माण प्रत्यय *-उळा* लगाने

से होता है। स्थानवाची, समयवाची और गुणवाची क्रियाविशेषण सामान्य विशेषणों के साथ भी प्रयुक्त होते हैं। मुक्त और बद्ध प्रत्ययप्राप्त (क्लिटिक्स) रूप भी पहचाने गए हैं।

इस भाषा में आठ कारक हैं। कर्तृवाचक धातु ही बिना प्रत्यय के कर्ता कारक बन जाती है।

तालिका 4.22 : कुरुंबा कारक

कारक	कारक चिह्न
कर्म	*-नः*
संप्रदान	*-कुः*
करण	*-ळु*
संबंध	*-उ, -अ, -नाः,* और शून्य
सहवाची	*-ऊडा*
अधिकरण	*-इलु*
अपादान	*-इलु/- इन्ःतु*
संबोधन	अंतिम स्वर को लंबा बनाना

कुरुंबा में काल विशेष प्रकार से चिह्नित हैं। जैसे प्रत्यय *-त-, -तत-, -चच-, -नः-, ञज-* और *-इनः-* भूतकाल के हैं, जबकि वर्तमान काल के चिह्न *-नःरः-* और *-णङ* है तथा भविष्यत काल में *-व-* और *-उव-* प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

शब्दावली (कुरुंबा-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

कुरुंबा	हिंदी	कुरुंबा	हिंदी
अक्कनुः	दीदी, पति/पत्नी की बड़ी बहन, माता की बहन की बेटी (बड़ी), पिता के भाई की बेटी (बड़ी)	दोड्डव्वे	फूफी, पिता के बड़े भाई की पत्नी
अच्चानुः	दादा/नाना	दोड्डप्पनुः	फूफा, माता की बड़ी बहन का पति
अच्चि	नानी/दादी	दोड्डमामा	मामा, पिता की बड़ी बहन का पति
अच्चित्ता	बुजुर्ग महिला	*नाःदिनि*	पति/पत्नी की बहन (ननद), पिता के भाई के बेटे की पत्नी

कुरुंबा	हिंदी	कुरुंबा	हिंदी
अण्णानुः	बड़ा भाई, माता/पिता के भाई का पुत्र (बड़ा)	*पाट्टारु*	पूर्वज
अप्पानुः	पिता	*पाट्टी*	बुजुर्ग महिला
अळियानुः	बेटी का पति, भाई/बहन की बेटी का पति, पति की बहन का पुत्र (अहंमन्य महिला), पत्नी के भाई का पुत्र (अहंमन्य पुरुष)	*पेण्डु*	पत्नी
अव्वे	माता	*पेण्णुमक्कालु*	बच्ची
आळानुः	पति/दूल्हा	*पेराळे*	विख्यात व्यक्ति
आणुम्काळु	लड़के	*पेळ्ळे*	नातिन/पोती
कोनःतानुः	पति का बड़ा भाई	*मरःमगानुः*	वर
गण्डाळानुः	पुरुष	*मरःमगाळु*	वधू/बहू
चिन्नःप्पानुः	चाचा, माता की छोटी बहन का पति	*मक्काळु*	बच्चे
चिन्नःव्वे	चाची, माता की छोटी बहन, पिता के छोटे भाई की पत्नी	*मगाळु*	बेटी, भाई/बहन की पुत्री
चिन्नःमामनुः	मामा, माता का छोटा भाई, पिता की छोटी बहन का पति	*मगानुः*	बेटा, भाई/बहन का पुत्र
चिन्नःमामि	पिता की छोटी बहन, माता के छोटे भाई की पत्नी	*मामानुः*	मामा, पति/पत्नी का पिता
तंपि	छोटा भाई, माता की बहन का पुत्र	*मामि*	पिता की बहन, सास
तनःके	छोटी बहन, माता की बहन की पुत्री, पिता के भाई की पुत्री (छोटी)	*मयिदिनुः*	बहन के पति का पुत्र, माता के भाई का पुत्र/पिता का छोटा भाई (अहंमन्य महिला)/पत्नी का छोटा भाई (अहंमन्य पुरुष)

शरीर के अंगों के नाम

कुरुंबा	हिंदी	कुरुंबा	हिंदी
इडुप्पु	नितंब	*कण्णालि*	नेत्रगोलक
उच्चे	मूत्र	*कण्णु*	आँख
उच्चि	मुकुट	*कण्णुब्बे*	भौंह
उरूःन्नुः	तन	*कण्णेमे*	पलक
एडक्कयि	बायाँ हाथ	*कण्णुनीःरु*	आँसू
एले कातु	कनपटी	*कयितुंपे*	ऊपरी बाँह
एलुंबे	हड्डी	*कयिबरे*	हस्तरेखा
ओयिरु	नाखून	*कातु*	कान
कणेकालु	टखना	*कातु कन्नः*	कान का मैल

संख्यासूचक शब्द

कुरुंबा	हिंदी	कुरुंबा	हिंदी
ओनःरुः	एक	*ओनःराःवतु तलेक्कोडि*	पहला
राःडु	दो	*राःडावतु*	दूसरा
ओट्टिक्कानेः	एक हाथी	*मुनःराःवतु*	तीसरा
मूरुः	तीन	*अरे*	आधा
नाःक्कु	चार	*कालु*	चौथाई
अयिदु	पाँच	*मुक्कालु*	पौन
आरुः	छह	*ओनःरुःबेप्पु*	एक बार
एळु	सात	*राःडुबेप्पु*	दोगुना
एट्टु	आठ	*ओरुत्तानुः*	एक आदमी
ओंपादु	नौ	*ओरुत्ति*	एक महिला
पत्तु	दस	*राःडालु*	दो आदमी
नूःरु	सौ	*मूराःलु*	तीन आदमी
आयिरा	हज़ार	*ओनःरुःगण्डुमक*	एक बालक
मुन्नुःक्कु	सर्वप्रथम		

समयसूचक शब्द

कुरुंबा	हिंदी	कुरुंबा	हिंदी
इनःरुः	आज	*उच्चि*	मध्याह्न
उडेहे	तुरंत		

प्रकृति से संबंधित शब्द

कुरुंबा	हिंदी	कुरुंबा	हिंदी
ओडेंपु	बाढ़	*कडालु*	सागर
कल्लाळे	गुफा	*कामबिल्लु*	इंद्रधनुष
काल	मौसम		

संदर्भ-सूची (References)

Research Publication Series I & II 2011 KIRTADS.
Singh, K.A., *Tribes in India*.
Thurston, E., 1975, *Castes And Tribes of Southern India*.

मण्णन

मण्णन मुख्य रूप से केरल में इडुक्की ज़िले की अडिमालि, कट्टप्पना और नेडुंकंडम खंड पंचायतों में बोली जाती है। इस भाषा को बोलने वालों को मण्णान कहा जाता है।

समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

किला बेसलाईन सर्वे रिपोर्ट 2008 के अनुसार मण्णान की जनसंख्या 9,229 है। तेक्कडि के ये आदिम निवासी गाँव से जंगल की ओर चले गए थे। ये अपने अनोखे रीति-रिवाजों और वंशानुगत परंपराओं का पालन करते हैं। इनका एक राजा होता है, जिसका आदर पूरा समुदाय करता है। उसे राजमूप्पन या वलियमूप्पन[v] कहा जाता है। सारा क्षेत्र राजा के अधीन होता और वह खूबसूरत कोषिमला पहाड़ी पर रहता था। ये लोग वार्षिक ग्रामोत्सव में बड़ी संख्या में भाग लेते हैं, जिसमें मण्णान राजा भी शामिल होते हैं। त्योहार, नृत्य और संगीत मण्णान आदिवासी जीवन का अभिन्न अंग हैं।

ये परंपरागत रीति-रिवाजों का पालन करते हैं और जंगल क्षेत्र में खेती करते हैं तथा सरकार द्वारा आवंटित भूमि में रहते हैं। सरकार द्वारा वन कटाई एवं निर्वनीकरण पर रोक लगा देने से इनमें से कई लोग अपने लिए आवंटित भूमि पर अपनी संस्कृति के वाहक के रूप में रहने को मजबूर हो गए। ये लोग आवंटित भूमि पर खेती के अलावा वन उत्पाद एकत्रित करते हैं और मज़दूरी तथा गोचारण में लगे रहते हैं।

इनकी आर्थिक स्थिति बहुत आशाजनक नहीं है। ये अपने खेत और कृषि उपज को अमीरों के हाथों गिरवी रखकर उनके मज़दूर बनकर काम करते हैं। इनकी साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से बहुत ही कम है। मण्णान पुरुष और महिलाएँ शराब और नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं और इन्हें स्वच्छ जीवन शैली के बारे में भी ज़्यादा जानकारी नहीं होती। इनका कोई स्थायी निवास नहीं है। अधिकतर लोग चंदन की लकड़ी, शीशम और जंगली शहद एकत्रित करते हैं, जबकि कुछ लोग मछली पकड़ने, पशुपालन, खेतीबाड़ी और कृषि कार्यों में लगे हुए हैं।

भाषाई विशेषताएँ

मण्णन भाषा में स्वानिकीय (phonetically) दृष्टि से पाँच ह्रस्व स्वर और पाँच दीर्घ स्वर हैं।

तालिका 4.23 : मण्णन स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	इ		उ
मध्य	ए'		ओ'
निम्न			अ

इस भाषा में व्यंजनों की संख्या 19 है, जिनका विभाजन अग्रलिखित है–

---

v देखें टिप्पणी v पृष्ठ 223

तालिका 4.24 : मण्णन व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य
स्फोट	प ब	त द		ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म		न	ण		
पार्श्विक			ल	ळ		
उत्क्षिप्त			र			
संघर्षी					स	
प्रवाही	व				य	

अभी तक पहचाने गए बहुवचन चिह्नक हैं, *-क, -कल, -अ, -अर,-मार्यः, -लाम* और *-काटु*। कर्म और संप्रदान दोनों का प्रत्यय *-क्कु* है। कभी-कभी *-ए* भी कर्मकारक के रूप में प्रयोग किया जाता है। संबंध कारक के लिए *-इले/शून्य* दोनों प्रयुक्त होते हैं। मलयालम के समान इसका भी सार्वनामिक ढाँचा है। मलयालम से भिन्न, लेकिन वर्तमानकालिक चिह्नक अधिक हैं, जैसे *-न, -उन* और *-इन*। निषेध प्रत्यय रूप में भूत *-अ* और गैर-भूत *-आत्त* है। मलयालम के समान *-इल्ल* और *-अल्ल* का प्रयोग निषेध रूप *-ना्ःत्तु* के साथ होता है। क्रिया में कोई पुरुषांत नहीं पाया जाता।

लोक साहित्य

एक मण्णन गीत

नल्ल पोन्नुःम मुल्लूरनाण्डवा
नल्ल पोन्नुःम तेक्कु च्व्वारिमल अय्यप्पा...
उण्कळूटे पोनः पादम पाटुते...
नल्ल पोन्नुःम काञचयत्तु मुत्तिये
नल्ल पोन्नुःम नाटानिः मलय्यप्पा...
नल्ल पोन्नुःम वचरूळांटवा
नल्ल पोन्नुःम मतिप्पिच्चामुत्तियो
नल्ल पोन्नुःम कटाडु मुत्तियो
तन्नःन्नाः नाःनोः नाःनोः
तन्नःन्नाः नाःनोः नाःनोः ...

हिंदी अनुवाद

यह गीत पहाड़ी देवता अय्यप्पन की स्तुति है। हम आपको सोना और अन्य वस्तुओं का प्रसाद चढ़ाते हैं। हमें खेतों तथा अन्य कार्यों से जो प्राप्त होता है, उसे हम आपके चरणों में अर्पित करते हैं। हम पहाड़ी देवता अय्यप्पन के सेवक हैं। ओ महान देवता, हम आपकी शरण चाहते हैं।

एक मण्णन पहेली

कोड्डियत्ति काणाप्पोय पिन्नःत्ता कुडञ्चत्ति काडोळ्ळ ती

हिंदी अनुवाद

जब वे अमीर थे, तो किसी को कुछ भी न दिया, तो क्या वे गरीबी में देंगे?

एक मण्णन लोक कथा

चोक्कनः कते

चिवरिकालं पिशच्चि पिशच्चि ओरु कुशविम् कुशवनुःम् काडे वेट्टि नेःल्लम पुल्लम केळच्चि। नेःल्लुम पुल्लुम विळञ्च कणियत्तुक्क्। कानःत्तिलिरुण्डोरु चोक्कन वण्ड् नेःल्लुम पुल्लुम तुण्णु पकुतिय कनःत्तुक्कुम एडुत्तु पोयि कानःत्ति पोय मूप्पे चोक्कनः वुळिचेय इत एल्लारुक्कुम कोडुत्त्। मूप्पे तणडक्कारेःनः चोक्कनः वुळुक्किन। इतु एड केडक्किनः तूण् केट्ट। ओरु काड् नुःरेः किडनःतोण चोल्लि। एन्निट्ट कुटुमत्तूट मूप्पनः चोक्कनुःम अल्ला आवेराळुम कूटि ओत्तराःवोट ओत्तेतुण्णोच्चाच्च। वामम् वुटिञ्चि कुशवेनः पोय् नोक्कप्प नेल्लाम पुल्लाम ओत्ते तुणेय्। कुशवनःकूरेल् वन्तु चोल्लि। नाःम तलेक्क् तीयिट्टेच्चोये। ओरु कोळारोण्ट् नीः कूरेल् ओट्टेयेल्लाम अडे। एन कत्तिये तीट्टाम्। इत् चोल्लियोण कुशवेनः एनः मिट्टोण कत्तियुम किट्टवाच्च् चोट्टवोले किटोन्त् कुशविया ईरुन्त कोन्त्। मूप्पन चोक्केन इतु केट्ट एल्लाराम कूट्टियेतुत्त् अक्कूरेक्क् पोय्। इवरेल्लारुम कूरेलेरिःय वोळ कुशवि व्तिलि रिण्ट्चि्चि। मूप्पनः चोक्कनः केट्ट इतेन्नुःक्क् वातुलटक्किन। कुशवि चोल्लि एङ्क वातलडक्किनः। एल्लारुम इरुन्त केशुक्कि। मूप्पनः चोक्केनः तलक्कीश् इरुन्त् कूण्टा। कुश्वे कितन्त लिटन्त एन्तियतुम मूप्पनः चोक्कनः आत्तियम वेट्टि कोण्ण्। पिन्नेः वाकि ओळ्ळ वेराळयेल्लाम अडिचीम वेट्टिमेत्ताम कोण्ण्। ओरु वाकुरःत्ति वोक्कनः मत्तिरम मित्तियाय् कुशवि वातल तुरःक्कट्टीम वकुरःत्ति चोक्कनः ओटि कानःस्तेक्क् मण्टियेय् अक्कनः कानःत्ती पोय् तानः चोक्कनः पिन्नः पेरिकत्। अल्लात वोयप्प चोक्कनः नाःतवोकुव नाःय।

हिंदी अनुवाद

बंदर की कहानी

एक बार जंगल में एक बूढ़ा और बुढ़िया रहते थे। वे धान की खेती करते थे। धान की फसल जब पक गई, तो एक विशाल बंदर ने आकर उनके पके धानों को खाया और फसल को नष्ट कर दिया। वापस जंगल लौटकर बंदर ने थोड़ा धान अन्य बंदरों को भी दिया। धान खाने के बाद बंदरों ने कहा कि यह तो बहुत अच्छा है, उन्हें और चाहिए। अतः उन्होंने खेत में जाकर धान खाने का निर्णय लिया। उसके बाद वहाँ पहुँचकर उन्होंने बहुत सा धान खा लिया और बाकी का नष्ट कर दिया। अगले दिन जब बूढ़ा आदमी खेत में पहुँचा तो देखा कि थोड़ा सा भी धान नहीं बचा। उसे बहुत निराशा हुई, उसने घर वापस आकर पत्नी से सारी बातें बताईं। उन दोनों ने बंदरों को मारने का निश्चय लिया। एक दिन बूढ़ा मृत होने का बहाना कर लेट गया और पास ही एक तेज धार वाला चाकू रखा। बुढ़िया ने घर की सारी खिड़कियों को बंद किया और दरवाजा खुला रखा। वह शव के पास बैठकर रोने लगी। विशाल बंदर ने रोना सुना और दूसरे बंदरों से कहा कि बूढ़ा मर गया है और उन्हें भी घर जाना चाहिए। इस प्रकार, सब बंदर खाने के लिए घर के अंदर आ गए। तभी बूढ़ी महिला ने दरवाजा बंद कर लिया। बंदर ने उस बुढ़िया से दरवाजा बंद करने का कारण पूछा। बुढ़िया ने कहा कि यह उनका रिवाज है। विशाल बंदर और बाकी सब दिखावा कर रोने-बिलखने लगे। उसी समय तुरंत बूढ़ा उठ खड़ा हुआ और उसने पहले विशाल बंदर को मार डाला, फिर बाकी सबको। जब बुढ़िया ने दरवाजा खोला तो एक गर्भवती बंदरिया बच निकली और जंगल की ओर भाग गई। केवल इसी कारण अब वहाँ बंदर अस्तित्व में हैं। इन्होंने अपनी प्रजाति को बनाए रखा है, नहीं तो वहाँ बंदर ही नहीं होते।

शब्दावली (मण्णन-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

मण्णन	**हिंदी**	**मण्णन**	**हिंदी**
तन्तार, निन्तार, अप्पन	पिता	*तुम्मीनः*	बड़ा भाई
निःल्ला, तल्ला, अम्मा	माता	*अच्चा, चोळ्ळे*	छोटा भाई
मके	पुत्र	*अक्का*	दीदी
मका	पुत्री	*चोळ्ळि*	छोटी बहन
मक्का	बच्चे	*मडयनः, पेत्तनः*	साला
तम्मामे	ताऊ	*चिन्नःम्मा, चुरुःतळ्ळा*	चाची, पिता के छोटे भाई की पत्नी
नुःम्मामे	मामा, माता का छोटा/बड़ा भाई	*वलियम्मा, वलियतळ्ळा*	बुआ, माता की बड़ी बहन
कुङ्चुमामे	माता का छोटा भाई	*तात्ते, तमुत्तनःप्पे*	दादा
तम्मामि, नुःम्मामि, करुःत्तमा	फूफी, माता की बड़ी/छोटी बहन	*पाट्टि, तमुत्तियम्मा*	दादी

संख्यासूचक शब्द

मण्णन	**हिंदी**	**मण्णन**	**हिंदी**
अण्ण्	एक	*पन्नःङ्ट्*	बारह
इरण्	दो	*इरुवत्*	बीस
मूण्	तीन	*अंपत्*	पचास
नाःळ्	चार	*नूःरःरु*	सौ
अञ्ञ्च	पाँच	*आयिरम*	हज़ार
आःर्	छह	*लेच्चम*	लाख
एळ्	सात	*एट्टण*	अठन्नी
एट्ट	आठ	*अरयण*	लगभग तीन पैसे
ओंपात्	नौ	*मक्कालेण*	पचहत्तर पैसे
पत्तु	दस	*कालण*	पच्चीस पैसे
पतिनोङ्ङ	ग्यारह		

समयसूचक शब्द

मण्णन	**हिंदी**	**मण्णन**	**हिंदी**
वानःम्वुटिङ्कूय्	बड़ी सुबह/प्रातःकाल	*अन्तियोट्*	शाम
पिलेच्चे	सुबह	*राःव्*	रात

मण्णन	**हिंदी**	**मण्णन**	**हिंदी**
उच्चे	दोपहर	*नाःटुक्कुरःच्चामम*	आधी रात

समय और दूरी

मण्णन	**हिंदी**	**मण्णन**	**हिंदी**
नेःरम	समय	*चमयम*	समय
तूला	दूर	*नेड्डुक्*	बहुत दूर

मौसम से संबंधित शब्द

मण्णन	**हिंदी**	**मण्णन**	**हिंदी**
मशक्कालम	वर्षा का मौसम	*वोरुःविक्कालम*	गर्मी का मौसम

दिनों के नाम

मण्णन	**हिंदी**	**मण्णन**	**हिंदी**
नाःराच्च	रविवार	*वियाच्चा*	गुरुवार
तिङकलाच्	सोमवार	*वेळ्ळियाच्च*	शुक्रवार
चुव्वाच्च	मंगलवार	*चनियाच्च*	शनिवार
बुतनाच्च	बुधवार		

महीनों के नाम

मण्णन	**अर्थ (हिंदी)**
विदनःमासम	*मिथुनम* (जून-जुलाई)
आटिमासम	*करक्किटकम* (जुलाई-अगस्त)
चिक्कमासम	*चिङ्म* (अगस्त-सितंबर)

संदर्भ-सूची (References)

Research Publication Series, Vol.II, 2011 KIRTADS.
Singh, K.S. 2002, *People of India: Kerala*, vol. XXVII, part-1.
Thurston, Edgar, 1975, *Castes and Tribes in Southern India,* vol. I.

मुदुगा

मुदुगा समुदाय

मुदुगा अट्टप्पाडि आदिवासी इलाके की सुदूर जंगली बस्तियों में रहते हैं। मुदुगा केरल के पालक्काड ज़िले के उत्तर-पूर्वी भाग के एक पहाड़ी क्षेत्र में पाए जाते हैं। इनके कुछ परिवार तमिलनाडु के नीलगिरि और कोयंबटूर ज़िलों में भी पाए जाते हैं। जनगणना 2011 के अनुसार मुदुगर की जनसंख्या 23,746 है।[vi] अट्टप्पाडि में ही 18 मुदुगा बस्तियाँ हैं जो निम्न प्रकार हैं– 1. चुंडक्कि, 2. ताषचुंडक्कि, 3. वेरनूःरु, 4. करुवरे, 5. ओम्मले, 6. कोल्लमले, 7. कोट्टमले, 8. चित्तूरु, 9. चंदक्कुलम, 10. कोरवंपाडि, 11. उम्मत्तुपडिग, 12. मोलकंबि, 13. तेक्कुंपन्ना, 14. अब्बन्नूरु, 15. कोट्टियूरु, 16. पेट्टिक्कल्लु, 17. कक्कुप्पाडि और 18. मुक्कालि।

मुदुगा को इस क्षेत्र में सबसे पुराना आप्रवासी माना जाता है। मुदुगर तमिल मूल के हैं जो तमिलनाडु के कोयंबटूर ज़िले से आए थे। अट्टप्पाडि की उपजाऊ मिट्टी में खेतीबाड़ी करने के उद्देश्य से ही ये आप्रवासी बनकर आए थे। ऐसा माना जाता है कि इनका आप्रवासन पंद्रहवीं शताब्दी या उससे भी पुराना है। इस जनजाति का धर्म हिंदू धर्म से मिलता-जुलता है। प्राचीन काल में ये विजयनगर हिंदू साम्राज्य के अधीन थे। मुदुगा भगवान शिव के उपासक हैं। यह देखा गया है कि ये वैष्णव धर्म के प्रचार से पहले ही मैदानी इलाकों से आकर बस गए थे।

ये समूह में रहते हैं और प्रत्येक बस्ती में 12 या उससे अधिक घर होते हैं। इनकी बस्तियों को ऊरु और इनके झोपड़ीनुमा घरों को *कुरेः* कहा जाता है। इनकी झोपड़ी छोटी होती है, जिसकी छत फर्श से पाँच फीट से अधिक नहीं होती है। इनकी झोपड़ी दूर-दूर होती है और उनमें केवल घास और बाँस की खपच्चियों से बनी चटाइयाँ होती हैं। ये लोग बाँस और बेंत के बर्तन बनाने में निपुण होते हैं लेकिन मिट्टी के बर्तनों को बाज़ार से खरीदते हैं।

प्रत्येक बस्ती के लिए एक मुखिया (मूप्परः) होता है और उसके तीन सहायक -*करुःटाले*, वण्डारि और *मंटुकारे*- होते हैं। मृत्यु, जन्म और विवाह आदि संस्कार मुखिया के नेतृत्व में पूर्ण होते हैं।

विवाह संबंधों के लिए मुदुगा चार विजातीय भागों में बाँटे गए हैं– *करुःटिगा, वेळगा, कुपुणिगा* और *आरुरा*। यहाँ ममेरे-चचेरे भाई-बहन से विवाह प्रचलन में हैं। बहुपतित्व निषिद्ध है, लेकिन बहुविवाह कुछ शर्तों के साथ स्वीकार किया जाता है। तलाक और विधवा विवाह की अनुमति है। यहाँ अंत्येष्टि जैसे संस्कारों को विधिवत तरीके से किया जाता है। एक जनजाति के रूप में, मुदुगा शर्मीले होते हैं और गैर-आदिवासियों से अलग-थलग रहते हैं। ये स्वयं को अट्टप्पाडि आदिवासी क्षेत्र की अन्य दो जनजातियों इरुळा और कुरुंबा से श्रेष्ठ मानते हैं। लेकिन ये कृषि, शिकार, मछली पकड़ने आदि में एक-दूसरे की मदद करते हैं।

मुदुगा भाषा

आदिवासी क्षेत्रों में अध्ययनरत मानव विज्ञानियों एवं समाजशास्त्रियों के अनुसार मुदुगा भाषा मलयालम भाषी के लिए अबोधगम्य है और यह कई तुलु शब्दों और पदबंधों से युक्त तमिल की एक बोली है। राजेंद्रन (1978) ने आगे चलकर इसका विस्तृत विश्लेषण किया और सिद्ध किया कि भले ही इस भाषा की तमिल व्याकरणिक संरचना से समानताएँ हैं फिर भी इसे तमिल की बोली के रूप में नहीं माना जा सकता। इसकी शब्दावली में तुलु, मलयालम और कन्नड़ का प्रभाव भी पाया जाता है।

इस भाषा में 26 स्वनिमों (phonemes) की पहचान हुई है। पाँच स्वर वर्ण (/इ, ए, अ, ओ, उ/) और 20 व्यंजन वर्ण (/प, ब, त, द, रः, ट, ड, च, ज, क, ग, म, न, ण, ल, ळ, र, व, य, स/) और एक दीर्घ वर्ण (/:/)। /*ओ*/ के अलावा सभी ह्रस्व या

vi देखें टिप्पणी vi पृष्ठ 223

दीर्घ स्वर अग्र, मध्य और पश्च में आते हैं। ह्रस्व या दीर्घ */ओ/* केवल अग्र और मध्य में ही आता है और पश्च में केवल दीर्घ वर्ण ही आता है। अग्र स्वर */इ/ और /ए/* और पश्च स्वर */ओ/* और */उ/* क्रमशः */य/, /व/* की पश्च या अवरोह श्रुति में आरंभ में ही प्रयुक्त होते हैं। सभी व्यंजन शब्दांत में प्रयुक्त होते हैं। इस भाषा में दीर्घ स्वर नहीं हैं। केवल दो और तीन व्यंजनगुच्छ ही हैं। तीन व्यंजनगुच्छ मध्य में प्रयुक्त होते हैं और दो व्यंजनगुच्छ प्रारंभ और मध्य में प्रयुक्त हैं।

मुदुगा भाषा के काल चिह्नक निम्नलिखित हैं–

तालिका 4.25 : मुदुगा काल चिह्नक

वर्तमान काल चिह्नक	उदाहरण	भूतकाल चिह्नक	उदाहरण	भविष्यत् काल चिह्नक	उदाहरण
/-रः-/, /-उरः	*व+रः -अ >* *वरः* (वह) आती है *पोरेः* (वह) जाता है *विळट*+उरः +ए>*विळटूरेः* (वह) खेलती है	*/-रः-/*	*तो*+रः+*अ*>*तोरः* (वह) पराजित हुई	*/-व-/,* */-उव-/*	पो+व+अ> पोवा (वह) जाएगी नोः+ट+ उव+अ> नोटुवा (वह) देखेगी
		/-इ-/	चेय +इ+ए>चेय्ते (उसने) किया		
		/-द-/	*तिन+द+अ >* *तिन्दा* (उसने) खाया *ओले*+*त*+*अ*> *ओलेता* (उसने) भूना		
		/-ट-/	*कुट*+*ट*+*अ >* *कुट्टा* (उसने) भूना		
		/-ड/	*वेराण*+ड+*अ*> *वेरण्डा* (वह) भयभीत हुई		
		/-न-/	*पो*+*नः*+*अ* >पोना (वह) गई		
		/-न्द-/	*कूकट*+*न्द*+*अ* >*कूकन्दा* (वह) बैठी		
		/-न-/	*एळुत*+इन+ *एळुतिना* (उसने) लिखा		

निषेधात्मक चिह्न हैं– */-आत-/, /-अत-/, /-अ-/* और */-माट-/*। /-आत/ संबंध कृदंत चिह्न के पहले */-अ-/* एवं */-अत-/* और क्रियार्थक कृदंत */-इ-/* के पहले प्रयुक्त होते हैं। (उदाहरण, *निःनेःक+आत+अ > निःनेःक्कात* "बिना सोचे"; *काण+अत+ए >काणाते* "बिना देखे"), क्रिया धातु */वेट-/* के बाद */-अ-/* प्रयुक्त होता है (जैसे– *वेटा* "नहीं चाहिए") */-आले-/* से भूतकाल निषेध का बोध होता है, जबकि */-माट-/* से भविष्यत काल में अवबोधक निषेध का अर्थ निकलता है (जैसे– *वराले* "नहीं आया था"; *नोटाले* "नहीं देखा था"; *वरामाटा* "वह नहीं आएगी")।

अन्य प्रमुख द्रविड़ भाषाओं के समान मुदुगा भाषा में पुरुष चिह्नक भी पाया जाता है।

तालिका 4.26 : मुदुगा पुरुष चिह्नक

पुरुष	चिह्नक	उदाहरण
उत्तम पुरुष एकवचन, मध्यम पुरुष एकवचन और अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन	*/-ए-/*	(उदा- *वन्ःदे* - "मैं, तू, वह आया")
उत्तम पुरुष बहिष्कारी बहुवचन, उत्तम पुरुष अंतःकारी बहुवचन मध्यम पुरुष बहुवचन	*/-आमु/* */-एरुः-/*	*वन्ःदामु* "हम (बहिष्कारी) आए" वन्ःदारुः "हम (अंतः), तुम (बव.) आए"
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	*/अ-/*	*व+न्द+अ > वन्दा* (वह) आई
अन्य पुरुष बहुवचन	*/-आरुः/*	*वर+उव+आरुः > वरुवारुः* (वे) आएँगे

तालिका 4.27 : मुदुगा सर्वनाम

उत्तम पुरुष एकवचन	*नाःनुः*
उत्तम पुरुष बहुवचन (बहिष्कारी)	*एम् अ*
उत्तम पुरुष बहुवचन (अंतःकारी)	*नाःम् अ*
मध्यम पुरुष एकवचन	*नीः*
मध्यम पुरुष बहुवचन	*निम्अ*
अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन स्त्रीलिंग एकवचन उभयलिंग बहुवचन नपुंसकलिंग एकवचन नपुंसकलिंग बहुवचन	*अवे* *अव* *अवरुः* *अतु* --
पुल्लिंगेतर एकवचन	--

इस भाषा में कर्ता कारक और संबोधन कारक के अलावा अन्य छह कारक और हैं–

तालिका 4.28 : मुदुगा कारक

कारक	कारक चिह्न	उदाहरण
कर्म	*अण-* *-अ* *-ए*	*एनः+अण>एन्नःण* "मुझे" *एम+अण>एम्माण* "हम" (बहि.) *नम+अण>नम्माण* "हम" (अंतः) *निनः+आण>निन्नाःण* "तुझे" *निनः+आण>निन्नाःण* "तुम्हें" *अवरः+इन+अ>अवरिःनाः* "उन्हें" *अवरः+इन+अ>अवरिःनाः* "उन्हें" *अवनः+ए>अवनेः* "उसे" *मर+त+ए>मरत्ते* "पेड़ को"
सहवाची	*-ओटे*	*अवनः+ओटे >अवनोःटे* "उसके साथ"
संप्रदान	*-आकु-* *-उकु* *- कु*	*एनः+आकु>एनाःकु* "मुझे" *निःनः+आकु>निःनाःकु* "तुझे" *निःम+आकु>निःमाकु* "तुम्हें" *अवनः(ळ)+उकु>अवनुः(ळु)कु* "उसे"(पु./स्त्री.) *मामि+कु>मामिक्कु* "मामी को"
संबंध	*-इट-* *-तु* *-उ*	*ओनःद+-इटा>ओन्दिटा* "एक का" *अवळ+-तु>अवळ्तु* "उसका" (स्त्री) *एनः+उ> ऐनुः* "मेरा" (अंतः) *निःनः+>ऊनिःनुः* "तेरा"
अधिकरण	*-इलु* *-लु*	*मर+इ+लु >मरत्तिलु* "पेड़ पर" *कूरे+लु >कूरेलु* "कुटिया में"
करण	*आले*	*अवनः (ळ)+आले>अवनःा (ळा)ले* "उससे"

मुदुगा भाषा की शब्दावली के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

शब्दावली (मुदुगा-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

मुदुगा	हिंदी	मुदुगा	हिंदी
अव्वे	माता	*पेरमका*	पोती/नातिन
अच्चि	दादी/नानी	*नाःस्वे*	साली
अच्चा	दादा/नाना	*अत्तए*	ननद

शरीर के अंगों के नाम

मुदुगा	हिंदी	मुदुगा	हिंदी
अटियमत्तु	निचला होंठ	रेत्त	रक्त
अनःग	मूँछ	*इरुमलु*	कफ
एलेप्पप्पु	प्लीहा/तिल्ली	*गोरःक्कु*	छींक
ओब्बे	भौंह	*ची*	मवाद
कटेबायि	मुँह का कोना	चोटि	गंजा
चण्णि	नितंब	*ताव*	प्यास
नेट्टि	माथा	*पी*	मल
पकिडु	गाल	*सोंदु*	रूसी
विक्कु	गुर्दे	*आविळ*	जम्हाई
उच्चे	मूत्र		

प्रकृति से संबंधित शब्द

मुदुगा	हिंदी	मुदुगा	हिंदी
अरिमे	मच्छर	*तट्टि*	मछली का अंडा
ईप्पि	मक्खी	*तरिः*	टेपियोका पेड़ का तना
एय्या	साही मछली	*तूवि*	पंख
एट्टि	नदी तट	*तोरिः*	चोंच
एमे	कछुआ	*नेरा*	सूर्य
ओरि	बैल	*पळ्ळ*	तालाब
कप्पे	मेंढक	*पिट्टु*	खाना
काटु	कृषि/जंगल	*बण्ढे*	एक मछली
काट्टि	मवल/जंगली सांड	*अण्णि*	गिलहरी
कानुः	गटर/नाली	*बागे*	छोटा केला
गूमे	उल्लू	*बेय्य*	धूप
गेम्मु	दल	*मगे*	वर्षा
चिळ	हिमकण	*मूनःग*	बाँस
चूण्ढी	चूहा	*वाणि*	नदी
अट्टे	जोंक	*वेळ्ळि*	तारा
चुळा	टहनी	*अळे*	गुफा
चूरु	गंध	चेट्टु	पराग

अन्य शब्द

मुदुगा	हिंदी	मुदुगा	हिंदी
अगु	रोना	*अर्या*	नाराजगी
नाःगु	हँसना	*अव*	वह (स्त्री.)
अट्टा	छत	*अवे*	वह (पु.)
अड्डे	गले का हार	*एच्चे*	कैसा
अण्डे	बाँस की टोकरी	*आनःलु*	यदि हो
काणे	बाँस का चम्मच	*आनूःगु*	वहाँ
कण्णनिः	रस्सी, सूत	*जेलाइम*	सर्दी
ऊट्टु	कुटिया	*पन्नेः*	पतला
कळ्ळि	अन्न भंडार	*पक्का*	पास
चीला	कुंडी	*इन्ःरुः*	आज
जण्दु	कूड़ा-करकट	*मद्देनाः*	मध्याह्न
तट्ठु	छलनी	*इट्ळु*	संकरा
नुःरे	फेन/झाग	*इनुःप्पु*	मीठा
तुरिः	बाँसुरी	*इय्या*	सीसा
मरुः	झाड़ू	*उलावु*	वर्जित शब्द
अन्नाः	भूसा	*ऊत्ता*	एनीमिया
पानिः	चीनी के बर्तन	*ऊरलु*	फीलपाँव से जुड़ा
ओट्टे	कयोटा यूरेन्स (एक पौधा)	*खडा*	ऋण
उण्डिका	समर्पण	*कनेक्का*	कोण
अम्मा	देवी	*करुवे*	लुहार
गरे	कपड़े का किनारा	*नाःति*	नाई
कूरे	झुग्गी	*वण्णे*	धोबी
कोप्पे	श्मशान	*परया*	स्त्रीधन
एटा	स्थान	*वण्णलि*	कन्या
अण्णुवे	(वह) छुएगा		

संदर्भ-सूची (References)

Rajendran, N. 1986. *Muduga Language*. Kollam: Ennes Publications.

--------------- 1978. *Description of the language of Muduga*, Ph.D Thesis, Department of Linguistics, University of Kerala.

.

मुदुवन

मुदुवन मुख्य रूप से केरल के इडुक्की ज़िले की देवीकुलम, अडिमालि और नेडुंकंडम खंड पंचायतों में बोली जाती है।

मुदुवन समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

किला बेसलाइन सर्वे रिपोर्ट 2008 के अनुसार मुदुवन की जनसंख्या 19,163 है। ये मुख्यतः उपर्युक्त स्थानों के घने जंगलों में निवास करते हैं। ये प्रकृति से तालमेल बिठाकर अपनी विशिष्ट विरासत को बनाए रखते हैं। ये जंगली कंदमूल खाते हैं और जंगली झरनों का पानी पीकर सामान्य जीवन जीते हैं।

ये लोग अन्य जनजातियों और लोगों से संपर्क करने में हिचकते हैं और एकांत जीवन जीते हुए अपनी पहचान और संस्कृति को बनाए रखते हैं। घने जंगलों में रहने के कारण ये लोग निरक्षरता और अंधविश्वास के शिकार हैं। आधुनिकता और शिक्षा से वंचित होने के कारण इन्हें जीवन में शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ता है। नब्बे प्रतिशत से ज़्यादा मुदुवन समुदाय बाँस के झोपड़ीनुमा आवास में रहते हैं। किंतु आजकल ये अपने सामाजिक विकास से अलग हटने के स्वभाव को बदल रहे हैं और अच्छे जीवनयापन की ओर प्रेरित हो रहे हैं।

इनकी महिलाओं को बाहरी दुनिया के साथ कोई भी संबंध रखने की सख्त मनाही है इसलिए उन्हें झोपड़ियों में पूरी तरह से एकांत में रखा जाता है। यहाँ तक कि उन्हें दूसरे पुरुषों से बात करने की भी मनाही है। इसलिए उनमें से अधिकांश महिलाएँ निरक्षर हैं।

इनमें बचपन से ही तंबाकू चबाने की आदत पड़ जाती है, पुरुष नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। ये लोग अपने खेतों में रागी बोते हैं। ये तीन से लेकर दस एकड़ तक भूमि को कृषि योग्य बनाते हैं। इन्हें अपने वन उत्पादों को बिचौलियों को कम कीमतों पर बेचना पड़ता है। बिचौलिये आधुनिक खेती के तरीकों के बारे में इनकी अज्ञानता और पैसा निवेश करने में इनकी असमर्थता का फायदा उठाते हैं। सटकर बनी हुई तंग झुग्गियों में जीवन बिताने के कारण इन्हें शौच और अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से भी जूझना पड़ता है। इससे संक्रामक रोगों की चपेट में आने से इनका जीवन जल्द ही खत्म हो जाता है।

भाषाई विशेषताएँ

मुदुवन में तमिल और मलयालम दोनों भाषाओं के समान तत्त्व मिल जाते हैं। किंतु इससे यह निर्णय नहीं लिया जा सकता कि मुदुवन इन दोनों भाषाओं में से किस एक की बोली है। क्योंकि इस भाषा की अपनी कुछ विशिष्ट विशेषताएँ हैं।

इस भाषा के ह्रस्व स्वर और उनके दीर्घ रूप निम्नलिखित हैं–

तालिका 4.29 : मुदुवन स्वर

	अग्र	**मध्य**	**पश्च**
होंठों की स्थिति	अवर्तुल	मध्यस्थ	वर्तुल
उच्च	इ		उ
मध्य	ए‘		ओ’
निम्न			अ

इस भाषा में 25 व्यंजनों की पहचान हुई है, जिनका विभाजन इस प्रकार है–

तालिका 4.30 : मुदुवन व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	दंत्योष्ठ्य	वत्स्र्य-दंत्य	दंत्य	वत्स्र्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य
स्फोट	प ब			त द	रः	ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म			नः	न	ण	ञ	ङ
पार्श्विक					ल	ळ		
उत्क्षिप्त			र					
संघर्षी		फ	स			श		
प्रवाही		व					य	

मुदुवन एक द्रविड़ भाषा है। इसमें अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन और स्त्रीलिंग एकवचन, उभयलिंग बहुवचन व नपुंसकलिंग एकवचन तथा बहुवचन में अंतर मिलते हैं। इस भाषा में कोई महाप्राण नहीं है। इसके भूतकाल प्रत्यय, कारक चिह्न, और पुरुषवाचक सर्वनाम अन्य भाषाओं से अलग हैं।

लोक साहित्य

लोक गीत

कुछ मुदुवन गीतों के चुने हुए अंश निम्नलिखित हैं–

गीत 1

कन्नाःटि कन्नाःटि काप्पानःट्ट् कन्नाःटि...
तिरिशूर मण्तयिलु तेरेंञेटुत्त कन्नाःटि...

हिंदी अनुवाद

आइना, आइना, एक अच्छा आइना...
त्रिशूर के बाज़ार से चुना आइना...

गीत 2

चावल् कूयकूकाते चण्द्रन वण्त् उतिक्काते चावाटि वीट्टित् कितक्कुम कुञ्चि चङ्ङा पत्तनःयकुम शन्ःतोशम्म शन्ःतोशम्।

हिंदी अनुवाद

मुर्गा बाँग नहीं देता, चाँद भी नहीं निकला, फिर भी चारों तरफ़ खुशियाँ ही खुशियाँ हैं।

गीत 3

आट् उन्ःट् माट् आमेम कुळत्त् सङ्आल उण्ट्
मञ्चतुलिप्पत्ति वोर्रः मङकियल

हिंदी अनुवाद

बकरी वहाँ है, गाय वहाँ है, कछुआ वहाँ है, हल्दी वहाँ है, हल्दी पोटली में है।

शब्दावली (मुदुवन-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

मुदुवन	हिंदी	मुदुवन	हिंदी
अप्पे	पिता	*मामि*	मामी
अम्मे	माता	*कुञ्चिमामि*	छोटी मामी
तात्तेन	दादा/नाना	*कय्या*	पुत्र
तात्ति	नानी/दादी	*पेळ्ळा*	पुत्री
पाट्टि	नानी/दादी	*पेरनः*	पोता/नाती
वेलियप्पेनः	ताऊ	*पेरत्ति*	पोती/नातिन
चुट्टियप्पेनः	चाचा	*मेरुमानः*	दामाद
वेलियम्मा	ताई	*अळियन:*	साला
चुट्टियम्मा	चाची	*एळियन*	जीजा/पति का छोटा/बड़ा भाई
मामे	मामा	*मोत्तप्पे*	दादा/नाना
कुञ्चिमामा	छोटा मामा	*मोत्ता*	नानी/दादी

संख्यासूचक शब्द

मुदुवन	हिंदी	मुदुवन	हिंदी
ओन्न्ऱ्	एक	*आरः*	छह
राण्ट्	दो	*चेळ्*	सात
मुन्नःऱ्	तीन	*एट्ट्*	आठ
नाल्	चार	*एम्पत्*	नौ
अञ्च्	पाँच	*पत्त्*	दस

रंगों के नाम

मुदुवन	हिंदी	मुदुवन	हिंदी
कलःर्	रंग	*करुःप्प*	काला
वेळ्ळे	सफेद	*सेवप्प्*	लाल
पच्च्	हरा	*मञ्च्*	पीला
नीले	नीला		

मौसम से संबंधित शब्द

मुदुवन	हिंदी	मुदुवन	हिंदी
मयक्कालम्,	वर्षा काल	*वेनःलकालम*	गर्मी का मौसम
मेङइकालम			
नरङ्क्	सर्दी का मौसम		

दिनों के नाम

मुदुवन	हिंदी	मुदुवन	हिंदी
नाःत्तिकेळमा	रविवार	*व्याळकेळमा*	गुरुवार
तिङ्ककेळमा	सोमवार	*वेळ्ळिकेळमा*	शुक्रवार
सोव्वकेळमा	मंगलवार	*सेनिःकेळमा*	शनिवार
बोतनःकेळमा	बुधवार		

पणिया

पणिया भाषा मुख्य रूप से केरल के वयनाड़, कन्नूर, कोष़िकोड और मलप्पुरम ज़िलों में बोली जाती है।

पणिया समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

किला बेसलाइन सर्वे रिपोर्ट 2008 के अनुसार, पणिया की जनसंख्या लगभग 92,783 है। पणिया (जिसे पनिया, पनइया, पन्या भी कहा जाता है) केरल का सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय है, जो वयनाड़, कन्नूर, कोष़िकोड और मलप्पुरम ज़िलों में पाया जाता है। ये लोग दशकों तक खेतिहर मज़दूरों के रूप में ज़मींदारों के गुलाम बनकर रहे थे। शताब्दियों पहले इन्हें गुलाम बनाकर वयनाड़ में खेती करने के लिए लाया गया था। जहाँ-जहाँ खेती होती थी, वहाँ-वहाँ इन मज़दूरों को भी बेचा जाता था। दासप्रथा उन्मूलन के बाद विभिन्न सरकारी उपनिवेशों में इन्हें पुनर्वासित किया गया। इन्हीं के एक उपसमुदाय, काट्टुपणियर, को मलप्पुरम के निलंबूर जंगली इलाके में अब भी आदिम जनजाति के रूप में रहते हुए देखा जा सकता है। यद्यपि पणिया जनजाति की उत्पत्ति के बारे में स्पष्ट तरीके से कुछ नहीं कहा जा सकता, फिर भी इनके वंश के बारे में कई दंतकथाएँ प्रचलित हैं। मोटे होंठ, काला रंग और घुंघराले बाल इनकी प्रमुख शारीरिक विशेषताएँ हैं। अफ्रीकी लोगों से मिलती शारीरिक समानता इन्हें अफ्रीकी मूल के होने का संकेत देती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि इनकी उत्पत्ति काप्पिरि (अफ्रीका या अंतरीप) भूमि से हुई है।

मलयालम के शब्द *पणि* यानि मज़दूरी से पणियन शब्द की उत्पत्ति मानी जा सकती है। इस आदिवासी समुदाय का मुख्य धंधा आज भी कृषि मज़दूरी ही है क्योंकि इसके पहले भी ये बंधुवा मज़दूर ही होते थे। अमीर ज़मींदारों के खेत में कृषि कार्य करते-करते ही इनका जीवन खत्म हो जाता है। खैर, पहले जो भी रहा हो, आज कई पणियन समुदाय वालों की अपनी भूमि है और ये लोग अपनी खेती में ही रागी और चावल उपजाते हैं। महिलाएँ और बच्चे जंगल से जड़ें और कंदमूल खोदकर लाते हैं। कुछ लोग चाय और कॉफी बागानों में श्रमिक और कुछ कृषि उद्योग रोजगार में भी लगे हुए हैं।

पणियन मुख्य रूप से कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल के जंगली इलाकों में पाए जाते हैं। केरल में पश्चिम घाट के उत्तरी भागों में, वयनाड़, कोष़िकोड, मलप्पुरम और कन्नूर ज़िले के पूर्वी भागों में इनकी बस्तियाँ हैं। इसके अलावा ये तमिलनाडु के नीलगिरि ज़िले के गुडलूर तथा पंडलूर में और कर्नाटक के कोडगु ज़िले के दक्षिणी भाग में भी पाए जाते हैं।

इनके गाँव में एक पंक्ति में बाँस और घास से बने दोमंजिला झोपड़ीनुमा घर होते हैं। ये लोग पास-पास ही घर बनाते हैं। बरसात के मौसम में ये नदी तट या ठंडे प्रदेशों में चले जाते हैं और मौसम के बदलने पर अपने घरों में दोबारा लौट आते हैं। पणियन समुदाय का विशेष भोजन[vii], विभिन्न प्रकार के ताल (*कोलकेशिया* नामक प्रजाति के पौधे) का हरा-मांसल तना है, जिसे पकाने के भी उनके अपने तरीके हैं।

पणियन समाज में विवाह को उच्च रस्म माना जाता है। विवाह सामान्यतः दूल्हा और दुल्हन दोनों के माता-पिता की सहायता से पक्का किया जाता है। वर का परिवार वधू को चुन लेता है। गाँव के पुजारी जिसे *चेम्मि* कहा जाता है, द्वारा विवाह संस्कार संपन्न होता है। इनके विवाह के भी अपने तरीके होते हैं। परंपरा के अनुसार पणियन वधू के माता-पिता *चेम्मि* को 16 सिक्के और नए कपड़े आदि देते हैं, जो फिर से इन वस्तुओं को वधू के माता-पिता को लौटा देता है। इस समाज में एकल पत्नी प्रथा सामान्य है, फिर भी एक पुरुष की एक से अधिक पत्नियाँ पाई जाती हैं।

पणियन लोगों की कई धार्मिक प्रथाएँ और अनुष्ठान हैं, जिनका ये आदर और भक्ति भाव से पालन करते हैं। ये विभिन्न पशु देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। ये जानवरों की बलि भी देते हैं। कूळि और काटु भगवती आदि की उपासना इस समुदाय

vii देखें टिप्पणी vii पृष्ठ 223

के सदस्यों द्वारा बड़ी श्रद्धा से की जाती है। इसके अलावा ये लोग हिंदू देवी-देवताओं की भी उपासना करते हैं। कुछ पणियन गाँवों में काटु भगवती का मंदिर बनाकर उन्हें प्रसन्न करने के लिए कई प्रकार के सामान भी चढ़ाते हैं। बुरी शक्तियों के विनाश के लिए ये भूताराधना और प्राकृतिक वस्तुओं की पूजा में भी विश्वास रखते हैं। वर्तमान में कुछ पणियन लोग ईसाई बन गए हैं।

भाषाई विशेषताएँ

इस भाषा में मलयालम स्वरों के समान ही पाँच लघु स्वर और उसके अनुरूप दीर्घ रूप हैं–

तालिका 4.31 : पणिया स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	इ		उ
मध्य	ए'		ओ'
निम्न			अ

इस भाषा में अब तक 19 व्यंजन वर्णों की पहचान हुई है–

तालिका 4.32 : पणिया व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य
स्फोट	प ब	त द	त द	ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म		न	ण		ङ
पार्श्विक			ल			
अर्ध स्वर	व				य	

पणिया भाषा में पुल्लिंग चिह्नक प्रत्यय *-एनः* और छह स्त्रीलिंग प्रत्यय (*-आळु, -ई, -इच्चि, -एत्ति, -आम* और *-एत्ति*) हैं। प्रत्यय *-अ, -एरु* और *-मरु* आदि को बहुवचन चिह्नक माना जाता है।

सहवाची कारक के लिए प्रत्यय *-कूटा* संबंधकारक के साथ जोड़कर बनाया जाता है। करण कारक के लिए कोई प्रत्यय नहीं है।

तालिका 4.33 : पणिया कारक

कारक	कारक चिह्न
कर्ता	कुछ नहीं
कर्म	*-ए*
संप्रदान	*-कु/-अक्कु/-क्कु/-उक्कु*
संबंध	*-अ*
अधिकरण	*-उम्बे/-ळि/-इ*

तालिका 4.34 : पणिया सर्वनाम

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	*नाःनुः*	*णाङ्का* "हम" (बहिष्कारी) *णामु* (अंतःकारी)
मध्यम पुरुष	*नीः/नीःय/* *नीःःनुः*	*णिनःक/* *नीःङकळु*
अन्य पुरुष	*इवेन/अवेन* (स्त्रीलिंगेतर) *इवाळु/अवाळु* (स्त्रीलिंग) *इतु/अतु*	*इ (अ) वेरु (अ)* *इवेळु/इवेरा* *अवेरु/अवेरा* *इवेरु/इवेरा/अवेरु/अवेरा*

तालिका 4.35 : पणिया पुरुष प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	*-एनः/अ*	*-ओम*
मध्यम पुरुष	*-एनः/-ए*	*-इरि*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग अन्य पुरुष स्त्रीलिंगेतर	*-आळु* (भूतकालिक रूप) *-ओळु* (गैर भूत) *-अओ/ओ* (भूतकालिक रूप) *-ओओ* (वर्तमान काल रूप)	*आरु/ओरु* *उळा*

प्रश्न शब्दों को दुहराना इस भाषा की विशेषता है।

निःन्नः पेरु एन्नाःते पेरु? (तुम्हारा क्या नाम है?)

प्रेरणार्थक रूप *-प्पि, इप्पि, ईप्पि* प्रत्ययों से बनता है।

लोक साहित्य

पणिया गीत

वेयिलेरिः वेयिलेरिः माणिके मोट्टेन कण्णनःन्तिरिट्टेलि
कय्यालपांपु ओट्टम कुटुक्केलि तेळिवोळ्ळा...

हिंदी अनुवाद

यह गीत बादल वाले मौसम के बारे में है। लोग बादल को देखकर यह गीत गाते हैं कि–

हे काले बादल, तू कहीं और जाकर बरस और हमें सामान्य मौसम लौटा दे।

एक लघु कहानी

मारेनः मरुतेनः चङ्ङायिमारु अवेरु ओरु तिवासा कातनुक्कु पोयिलेरु। तेनुः तेटि तेटि काट्टिलि मलेलि तेण्टि नःटाक्किङचरु। नःटन्नुः नःटन्नुः कोरिःप्पोयारु। बल्य तायिच्चे वङ्चु। मारेनः अटुक्के उळा पुयेलु बोळळा एटुत्तोण्टु बरुवलेक्कु पोयुल अप्प ओरु नरि मरुतन ऊट्क्कु वङच। अतु पोटिच्चु वुपोये एङचेलो अवेङ्कु ओरु दयर्य वङ्चुळा अवेन ओञ्ञ्च कल्लेटुत्तु नःरिनःमूक्कु म्मे एरिःञ्च् नःरिनः पायिच्चु काङ्चन अङ्ङाने अवेनाः दयर्य कोण्ट् रेच्चप्पेण्टान एतु कारिरुयत्तुक्कुम नःल्ल दयर्य बोणुम।

हिंदी अनुवाद

मारेन और मरुतेन दोस्त हैं। एक दिन वे जंगल में गए। वे घने जंगल के अंदर शहद की तलाश कर रहे थे। उन्होंने जंगल में इधर-उधर सब जगह तलाश की। अंत में वे थक गए और उन्हें प्यास भी लग गई। मारेन नदी से पानी लेने चला गया। उसी समय एक सियार मरुतेन के पास आया। मरुतेन डर के मारे काँपने लगा। परंतु उसने तुरंत साहस जुटाया और एक पत्थर उठाकर सियार की नाक पर दे मारा। सियार वहाँ से भाग गया। इस प्रकार मरुतेन बच गया। यह कहानी हमें सिखाती है कि कोई भी यदि हिम्मत से काम ले तो सभी कार्य संभव हो जाते हैं।

शब्दावली (पणिया-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

पणिया	हिंदी	पणिया	हिंदी
अप्पेन	पिता	*मुन्नाःयिकरेः*	दामाद
अम्मे	माता	*चिच्च*	चाचा
अच्चि	दीदी	*ऊम*	चाची
अक्के	दीदी	*चाच्चम्मा*	दादी
अय्या	बड़ा भाई	*चाच्चप्पेन*	दादा
कुट्टियनः	ससुर	*उराःट्टि*	पत्नी
कुट्टिच्चि	सास	*उराःळे*	पति
मैत्तिनिः	ननद	*मूत्तप्पे*	ताऊ
मुन्नाःयिकरःत्ति	बहू		

शरीर के अंगों के नाम

पणिया	हिंदी	पणिया	हिंदी
अप्पेबिरेलु	अँगूठा	*चूण्डबिरेलु*	तर्जनी
अरिकायु	निचली भुजा	*चुमे*	खाँसी
अरे	नितंब/गोद	*चुवनथातिले*	भूरा बाल
इटाथुकालु	बायाँ पैर	*कुटेलु*	आँत
उच्चुबोळळा	मूत्र	*चोवुटु*	कान
ऊनुः	मसूड़ा	*चोरे*	रक्त

पणिया	हिंदी
कण्णुमणि, कण्णुकुट्टि	आँखें
कण्णुनीःरु	आँसू
कण्णुपिरिय	पलक
कण्णुपीलि	बरौनी
कैपटा	हथेली
कैबिरेलु	उँगली
कैमुट्टु	कोहनी
कय्यु	हाथ
करणक्कुच्चि, कुनःचि, कोळु	गाल
करळु	लिवर
कवुरि	पसीना
कळारेः	गंजा सिर
कालु	पैर
कालुनः एयिरु	पैर का नाखून
कुरेलु	गला
कोट्टु	हड्डी
चाणेथिले	गंजा सिर
चावु	शव
चिक्क	चौड़ी नाक
चिरि	होंठ
ताटि	दाढ़ी
तळिप्प	ठोढ़ी
थाकेक्कुळ चिरि	निचला होंठ
थाटि	दाढ़ी
थिले	सिर
थिलेओटु	कपाल
थिकोटि	बाल
थिले चोरुः	मस्तिष्क
तुटे	जाँघ
थुप्पेलु, मरःनीःरु	लार
नक	नाखून
नावु	जीभ
निःट्टटेल्लु	रीढ़
नेःन्ःचु	छाती
पालु	दाँत
पळ्ळे	पेट
मनाःतु	मन
मुट्टु	कोहनी
मूक्कु	नाक

संख्यासूचक शब्द

पणिया	हिंदी
ओञ्चु	एक
इरण्टु	दो
मूञ्चु	तीन
हालु	चार
अञ्चु	पाँच
आरुः	छह
चेयु	सात
एट्टु	आठ
ओंपतु	नौ
पत्तु	दस
पतिनोञ्चु	ग्यारह
पन्तिरन्ःटु	बारह
अयिंपतु	पचास
एयिपतु	सत्तर
एयिंपतु	अस्सी
आयिरा	हज़ार
देचेअ	लाख

समयसूचक शब्द

पणिया	हिंदी	पणिया	हिंदी
इरावे	बड़ी सुबह/प्रातःकाल	*इरावु*	रात्रि
एरुःते	सुबह		

रंगों के नाम

पणिया	हिंदी	पणिया	हिंदी
बोळ्ळे	सफेद		

नाप-तोलसूचक शब्द

पणिया	हिंदी	पणिया	हिंदी
उञ्चि	छोटा	*तूरा*	लंबा
ओमि	नाटा	*चीनिः*	छोटा

संदर्भ-सूची (References)

Paniya Bhasha Nikhandu, KIRTADS. (unpublished)
Research Publication Series, Vol. II, 2011 KIRTADS.
Singh, K.S. 2002, *People of India, Kerala*, vol. XXVII, part- 1.
Therston, Edgar, 1975, *Castes and Tribes in South India.*

वेट्टकुरुमा

यह भाषा मुख्य रूप से केरल के वयनाड़ ज़िले में बोली जाती है।

वेट्टकुरुमा समुदाय का संक्षिप्त इतिहास

किला बेसलाइन सर्वे रिपोर्ट 2008 के अनुसार वेट्टकुरुमा की जनसंख्या लगभग 6,482 है। अनुसूचित जनजाति विकास विभाग की जनगणना के अनुसार इनकी जनसंख्या 6,484 है, जिसमें 3,182 पुरुष और 3,302 महिलाएँ हैं। वेट्टकुरुमा के निवास स्थान मुख्यतः वयनाड़ ज़िले के तिरुनेल्लि, पनमरम, पुताडि, नूलपुषा, मुल्लन कोल्लि, कुनियापेट्टा, अंबलवयल और नेन्मेनि क्षेत्रों में हैं। ये कुम्हार, लुहार, बढ़ई और राजमिस्त्री के रूप में कुशल कारीगर हैं। ये अन्य जनजातियों के लिए कृषि औज़ार, लोहे की कुल्हाड़ी, बाण, मिट्टी के घड़े आदि बनाते हैं। हाल ही में परंपरागत धंधा छोड़कर ये श्रम और निर्माण मज़दूर के रूप में भी काम करने लगे हैं।

वेट्टकुरुमन[viii] मांसाहारी होते हुए भी पत्ते और कंदमूल खाकर अपने शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाए रखते हैं। इनकी सब्जियों में भी कई तरह के हरे पत्ते एवं पालक शामिल होते हैं, जैसे *कडुकिला* (सरसों का पत्ता), *मुल्लनचीरा* (पालक, जिसमें छोटे काँटे हों), *मत्तनिला* (कद्दू के पत्ते), *काट्टुचीरा* (जंगली पालक) और *पोनकन्नियिला* (एक विशेष किस्म का पालक)। ये सभी पत्ते इन्हें सूखी सब्जियों के रूप में विशेष प्रिय हैं।

भाषाई विशेषताएँ

इस भाषा की स्वर व्यवस्था अन्य द्रविड़ भाषाओं के समान ही है, सिवाय मध्य केंद्रीय स्वरों की उपस्थिति के। सभी ह्रस्व स्वरों के दीर्घ रूप भी हैं।

तालिका 4.36 : वेट्टकुरुमा स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	इ		उ
मध्य	ए‘		ओ‘
निम्न			अ

अभी तक इस भाषा में 21 व्यंजनों को पहचाना जा चुका है।

तालिका 4.37 : वेट्टकुरुमा व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कंठ्य
स्फोट	प ब	त द		ट ड	च ज	क ग
अनुनासिक	म		न	ण		ङ
पार्श्विक			ल	ळ		
उत्क्षिप्त					रः	
संघर्षी		स	श			
प्रवाही	व				य	

viii देखें टिप्पणी viii पृष्ठ 223

वेट्टकुरुमा में अन्य पुरुष (तृतीय पुरुष) सर्वनाम का लिंग सूचक चिह्न नहीं है। पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का अंतर स्पष्ट परिलक्षित होता है। बहुवचन के लिए केवल *-र/ग* प्रत्यय जुड़ जाता है।

वेट्टकुरुमा भाषा में छह कारक हैं।

तालिका 4.38 : वेट्टकुरुमा कारक

कारक	कारक चिह्न
कर्ता	कोई सूचक चिह्न नहीं
कर्म	*-ए/-मा* (*-इये* में अंत होने वाली संज्ञा धातुओं के बाद में *-मा* आता है)
संप्रदान	-ङ (अन्य पुरुष संकेतवाचक सर्वनाम, स्थान नाम और व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के बाद आता है)
अपादान	*-पिलितो* (प्राणिवाचक संज्ञा धातुओं और पुरुषवाचक सर्वनामों के बाद आता है) /*-का* (सभी जगह आता है)
अधिकरण	*ळ/पिलि*
संबोधन	*-ओय*

इस भाषा में प्रेरणार्थक चिह्नक *-इनःदा* और सोद्देश्य चिह्न सूचक *-कबेयिरि* का प्रयोग होता है।

तालिका 4.39 : सार्वनामिक प्रत्यय

पुरुष	एकवचन (भूत)	बहुवचन (भूत)	एकवचन (गैर-भूत)	बहुवचन (गैर-भूत)
उत्तम पुरुष	*इ/ए*	*आ*	*ईया*	*इया*
मध्यम पुरुष	*ई*	*उ/आ*	*ईयि*	*इयोलियु*
अन्य पुरुष	*आ*	*ओ*	*आ*	*इओ*

अन्य पुरुष सार्वनामिक प्रत्ययों में लिंग सूचक का अभाव है।

तालिका 4.40 : सर्वनाम

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	*नःवु*	*नाःनः* (अंतःकारी)
उत्तम पुरुष	*ए-तिर्यक*	एङ (बहिष्कारी)
मध्यम पुरुष	*निः*	*निःनः-*
अन्य पुरुष	*अद/इद*	*अगु/इगु*

इस भाषा में अन्य विशिष्ट चिह्नक (markers) शून्य गैर-भूतकालिक प्रत्यय की अनुपस्थिति, क्रियार्थक संज्ञा प्रत्यय, संबंधकारी कृदंत का सूचक चिह्न -उ और भूतकालिक कृदंत *-उनः/-नः* और *-दि* हैं।

शब्दावली (वेट्टकुरुमा)

रिश्ते-नाते के शब्द

वेट्टकुरुमा	हिंदी	वेट्टकुरुमा	हिंदी
अम्मनः	पिता	*मिनःम्नुः*	दामाद
अबे	माता	*प्यार्ःन*	पोता
क्यामे	ताऊ/मामा	*प्यारःत्ति*	पोती
देफम्मनः	ताऊ/मामा	*मामा*	ससुर/मामा/चाचा
देफेबे	ताई	*त्रि्ःरः*	सास, ताई, बुआ/माता के बड़े भाई की पत्नी
क्याबे	चाची /मौसी	*पोण्डु*	पत्नी
मग्नु	पुत्र	*गण्डाले*	पति
मग्लु	पुत्री		

शरीर के अंगों के नाम

वेट्टकुरुमा	हिंदी	वेट्टकुरुमा	हिंदी
कयिवेळ्ळा	हथेली	*कुरुः*	होंठ
इरिनीरु, तिप्पु नीरु	लार	*जीमा*	दिल
उद्दाय ताक्केर	लंबे बाल	*तोन्गुलिय्ये*	गला
एदे	छाती	*त्वालु*	त्वचा
कणेण्णु	आँख	*निःचे, नेःत्रे*	रक्त
कण्णीरु	आँसू	*निःयर्रःनीःरु*	मूत्र
कण्णेर्राःतु	बरौनी	*नेःलेगु*	जीभ
कण्णेमे	भौंह	*पोट्ट*	पेट
काल	पैर	*बाये*	मुँह
कालबेरेलु	पैर की उँगली	*बोच्चि*	छाती
कालमटेम्पु	टखना	*मण्टोड्डु*	कपाल
केग्गे	कान का मैल	*मण्णूबोडे*	गंजा सिर
किबेरेलु/बरेलु	उँगली	*मनःगालु/मेडेगाळा*	पैर
किय्ये	हाथ	*मूनःगकिय्ये*	कोहनी
किरिय्ये	मुँह	*मूक्के*	नाक
किरि बरेलु	कनिष्ठिका	*मेनःत्तेगा*	अलिजिह्वा
किविये	कान	*मोरे*	मुख/माथा
किरःक्के	ठोढ़ी	*यालवु*	हड्डी
कुयिमातु	शरीर	*विरियेलु*	पसली
करुमातु	पर बाहु/पिछला हाथ	*सनःकु*	छाती

वेट्टकुरुमा	हिंदी	वेट्टकुरुमा	हिंदी
कुलिय्यु	कंधा	*हेसे बरेलु*	मध्यमा
कुलु, तुरेः	नितंब		

संख्यासूचक शब्द

वेट्टकुरुमा	हिंदी	वेट्टकुरुमा	हिंदी
ओणरुः	एक	*इप्पत्तु*	बीस
ओट्टु	दो	*मोत्तु*	तीस
मूरुः	तीन	*नःलुवत्तु*	चालीस
नाःक्कु	चार	*एयिवत्तु*	पचास
येयितु	पाँच	*अरुःवत्तु*	साठ
आरुः	छह	*एळुवत्तु*	सत्तर
एळु	सात	*एमपत्तु*	अस्सी
येट्टु	आठ	*तोण्णूरुः*	नब्बे
येनःपत्तु	नौ	*नूःरुः*	सौ
ओअत्तु	दस		

रंगों के नाम

वेट्टकुरुमा	हिंदी	वेट्टकुरुमा	हिंदी
क्यामकाते	रंग	*नीःले*	नीला
पच्चे	हरा	*मोञ्चिलु*	पीला
करुप्प	काला	*क्याम्प्*	लाल
बरळ्ळे	सफेद		

मौसम/ऋतु से संबंधित शब्द

वेट्टकुरुमा	हिंदी	वेट्टकुरुमा	हिंदी
माकाला	बरसात का मौसम	*मळेमोळ*	बादल
चेलिकाला	सर्दी	*बेजिगे*	गर्मी

संदर्भ-सूची (References)

Research Publication Series, Vol. II. 2011 KIRTADS, Calicut.
Singh, K.S. 2002, *People of India, Kerala,* vol. XXVII, part- 1.
Therston, Edgar, 1975, *Castes and Tribes in South India*, volume 1.

अनुवादकीय

i. Mini, P.V. 2017. Changing Food Habits of Scheduled Tribe Communities of Kerala, *Journal of Kirtads*, Vol. 1, Pp. 61-71. https://kirtads.kerala.gov.in/wp-content/uploads/2021/09/journal-of-KIRTADS.pdf. p. 64

ii Pradeep Kumar, K.S., Shyam, S.K., ed. 2020, *Oral literature, Language and Art Forms of Kurichya,* Calicut, KIRTADS, introduction 8.

iii. ibid. .Pp 13-33.

iv. Shyam, S.K, 2017. *Descriptive Grammar of Muduga and Kurumba of Attappady,* Calicut, KIRTADS, Pp. 104-105.

v. Pradeep Kumar K.S., Dr. 2017. The Changing Discourses On Power Amongst The Tribes of Kerala*, Journal of Kirtads*, Vol. 1, Pp. 51 – 60.
https://kirtads.kerala.gov.in/wp-content/uploads/2021/09/journal-of-KIRTADS.pdf. p.57.

vi. loc.cited, p 8

vii. Mini, P.V. 2017. Changing Food Habits of Scheduled Tribe Communities of Kerala, *Journal of Kirtads*, Vol. 1, Pp. 61-71. https://kirtads.kerala.gov.in/wp-content/uploads/2021/09/journal-of-KIRTADS.pdf. p. 64.

viii. ibid. p. 64.

भाग II

लक्षद्वीप

5



भूमिका

लक्षद्वीप भारत का सबसे छोटा संघशासित प्रदेश है। यह द्वीपसमूह अरब सागर में 8° से 12° अक्षांश एवं 71° से 74° पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। केरल के तटीय शहर कोच्चि से इसकी दूरी लगभग 220 से 440 किलोमीटर है। इस द्वीपसमूह में 12 आवासीय द्वीप, 16 निर्जन द्वीप और पांच संलग्न तट (बासेस द पेद्रो, सेसोस्त्रिस, कोराडीव, अमिनिपेट्टी, एलिकपेनी) और तीन जलमग्न मूँगा चट्टानें (बलियपानि, चेरियपानि,पेरुमालपुर) शामिल हैं। रणनीतिक रूप से यह क्षेत्र भारत के पश्चिमी तट पर स्थित है, जहाँ से इस क्षेत्र की अंतर्राष्ट्रीय समुद्री गतिविधियों की निगरानी की जाती है। यह भू-क्षेत्र पहले लक्कदीव अमिनिदीव और मिनिकॉय द्वीपसमूह के नाम से जाना जाता था, जिसे 1956 में संघशासित प्रदेश का दर्जा मिला। इसके बाद 1973 में इसका नाम लक्षद्वीप कर दिया गया, जिसका मुख्यालय कवरत्ती है। पर्यावरण की दृष्टि से लक्षद्वीप अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र है, इसीलिए इसे प्राकृतिक आपदाओं की पीड़ित भूमि भी कहा जा सकता है। इसकी प्रवाल खाड़ी की कुल लंबाई 4,200 वर्ग कि.मी. है।

ऐतिहासिक रूप से केरल के शासक चेरमान पेरुमाल के समय तक इन द्वीपों में मानव निवास के साक्ष्य तो मिलते हैं, किंतु इनकी उत्पत्ति के बारे में पूर्णतः जानकारी उपलब्ध नहीं है। यहाँ का शासन सोलहवीं शताब्दी के मध्य तक चिरक्कल राजाओं के सीधे नियंत्रण में था। तदनंतर यहाँ अरक्कल, विशेषकर अरक्कल बीबी का प्रशासन कायम हुआ। इस क्षेत्र का रणनीतिक महत्त्व तब और बढ़ गया जब पुर्तगालियों ने औपनिवेशिक उद्देश्यों से लक्षद्वीप पर कुछ समय के लिए अधिकार जमाया था, इनके बाद मैसूर के टीपू सुल्तान और आगे चलकर अंग्रेज़ों ने भी यहाँ शासन किया।

लक्षद्वीप क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से भारत के सभी राज्यों/संघशासित प्रदेशों में सबसे छोटा है। इस एक ज़िले वाले संघशासित प्रदेश का जनसंख्या घनत्व 1,894 प्रति वर्ग कि.मी. है। 2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल आबादी 60,650 है। इनमें 95 प्रतिशत स्थानीय लोग हैं। यहाँ साक्षरता दर 87 प्रतिशत है। यहाँ के निवासियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति काफ़ी हद तक अच्छी है, सामान्यतः यहाँ की जनसंख्या खाद्य सुरक्षा, कुपोषण और गरीबी की शिकार नहीं है।

कवरत्ती, अगत्ति, बंगारम, अमिनि, कडमत, किल्तान, स्नेहिलि, चेतलात, बित्र, अंद्रोत्त, कल्पेनि और मिनिकॉय द्वीप लोगों से आबाद हैं। अपवादस्वरूप मिनिकॉय निवासियों को छोड़े दें तो लक्षद्वीप के अधिकांश लोग दक्षिण-पूर्व भारत के मलाबार तटवर्ती प्रदेशों से आकर यहाँ बसे हैं, जो चेरमान पेरुमाल के शासनकाल में यहाँ पहुँचे थे। मिनिकॉय के लोगों का मालदीव के

साथ गहरा संबंध है। द्वीपवासियों की आस्था इस्लाम धर्म में है, लेकिन सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में हिंदू धर्म भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यहाँ अपराधों की संख्या नगण्य है और लोगों में सामूहिकता की भावना है।

मिनिकॉय निवासियों की सांस्कृतिक समानता और अन्य समुदायों के बीच के अंतर को भाषाई विरासत से समझा जा सकता है। लक्षद्वीप के अधिकांश लोग मलयालम से भिन्न द्वीप-मलयालम बोलते हैं, लेकिन मिनिकॉय निवासियों की भाषा महल है, जो पुरानी सिंहली से मिलती-जुलती है। लक्षद्वीप मलयालम और मिनिकॉय की महल भाषा में क्रमशः मलयालम की प्राचीन मलाबारी बोली और प्राचीन इंडो-आर्यन भाषा की विशेषताएँ दिखाई देती हैं। ऐतिहासिक रूप से महल भाषा बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसके विशद अध्ययन से आर्यों के भारत आगमन एवं भाषा के प्रति उनके लगाव को जाना जा सकता है। वास्तव में, महल भाषा भारत में सबसे कम शोध की गई छोटी भाषाओं में से एक है।

सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन और भौगोलिक अलगाव के कारण इन द्वीपवासियों को अनुसूचित जनजातियों में गिना जाता है। सांस्कृतिक रूप से समरूप द्वीपवासियों, जैसे– नाव मालिकों (कोया), नाविकों (मलमी) और ताड़ी निकालने वालों (मेलांचेरि) में विशेष सामाजिक भेदभाव देखने को मिलते हैं। तदनुरूप मिनिकॉय में भी मनिकफन (कोया के बराबर), थक्रुफन और थक्रु (मलमियों के बराबर) तथा रवेरिया (मेलांचेरि के बराबर) जैसे समुदाय हैं।

6



लक्षद्वीप मलयालम

नाम और क्षेत्र

लक्षद्वीप संघशासित प्रदेश के दस द्वीप आवासीय परिस्थितियों के अनुकूल हैं। सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित मिनिकॉय द्वीप के निवासी इंडो-आर्यन भाषा महल (जिसे मह्‌ल भी कहते हैं) बोलते हैं। जबकि प्रदेश के बाकी द्वीपों के निवासी द्रविड़ भाषा, मलयालम के एक भिन्न रूप को बोलने वाले समुदाय हैं। भारतीय मुख्य भू-भाग के केरल में बोली जाने वाली मलयालम भाषा से यह भिन्न है। किंतु बहुत से विद्वानों की सामान्य धारणा है कि यह मलयालम का ही एक अन्य रूप है। कई क्षेत्रवासी इसके लिए *जेसरी* नाम पसंद करते हैं, जिसका अरबी अर्थ है 'वह जो द्वीपवासियों का हो', ताकि लक्षद्वीप की अपनी भाषा लक्षद्वीप मलयालम का अस्तित्व कायम रहे। यद्यपि इसके कोई सैद्धांतिक प्रमाण मौजूद नहीं हैं, फिर भी द्वीपवासियों के जीवन मूल्यों में इस भाषा के कारण थोड़ा सकारात्मक अंतर दिखाई देता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि स्वयं की बोली का होना एक प्रकार की आजादी का परिचायक है।

चूँकि ये द्वीप समुद्री यात्रियों के लिए मुख्य भूमि की निकटता का संकेत देते हैं, अतः सामूहिक रूप में इन्हें *लक्ष/लक्सा/* "एक इशारा" *द्वीप/*, *द्विप/* "समुद्र से घिरा इलाका" कहा जाता है। संस्कृत के पदबंध *लक्क्षद्विपा* की जगह *लक्कदिवा* हमें अंग्रेज़ी की पुरानी वर्तनी "लक्खदिव" की याद दिलाता है।

ऐतिहासिक विवरण

लक्षद्वीप मलयालम की उत्तरी मलयालम से समीपता और उसमें बड़ी मात्रा में निहित प्राचीनता यह प्रमाणित करती है कि उत्तर केरल के *कोलत्तुनाडु* से लक्षद्वीप मलयालम बोलने वाले लोगों के प्रवास के कारण प्राग्-मलयालम से लक्षद्वीप मलयालम में भी कुछ विशेषताएँ आई हैं। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि लगभग एक हज़ार वर्ष पूर्व यह संभव हुआ होगा। अतः तरवाटु (पुश्तैनी) कहे जाने वाले द्वीपों, जैसे– अमिनि, अंद्रोत्त, और कल्पेनि को ही प्रथम उपनिवेशीकृत द्वीप माना जा सकता है। बाद में लोग अन्य द्वीपों में फैल गए होंगे। वर्तमान में सभी द्वीपवासी इस्लाम धर्म के अनुयायी हैं। यह संपूर्ण धर्म परिवर्तन कब हुआ इसके बारे में कुछ भी सटीक रूप से कहना संभव नहीं है। भौगोलिक अलगाव के बावजूद लक्षद्वीप के लोगों का केरल के साथ

निरंतर धार्मिक, सांस्कृतिक और वाणिज्यिक संपर्क था। ग्यारहवीं शताब्दी के मूषिकवंशम् के संदर्भ से यह कहा जा सकता है कि शताब्दियों पहले कोलत्तिरि राजाओं के वंशज ही लक्षद्वीप के प्रारंभिक शासक रहे होंगे। (मन्नाड़ियार : 40, 1977; पृ. 2216-15) अभी तक हम यह जान चुके हैं कि ऐतिहासिक काल में इन द्वीपों के शासक कोलत्तिरि थे। बाद में सोलहवीं शताब्दी में अरक्कल के राज परिवार (केरल का एकमात्र मुस्लिम शाही वंश) को यह आधिपत्य सौंपा गया। मैसूर कब्जे के दौरान (1787-1798) अरक्कल परिवार को उत्तर के पाँच द्वीप सौंपने पड़े। बाद में 1798 में, अंग्रेज़ों की ईस्ट इंडिया कंपनी ने इन पर कब्जा कर लिया। पाँच उत्तरी द्वीप मंगलोर जिलाधीश के अधीन रखे गए और दक्षिण के पाँच द्वीप कालीकट (अब कोष़िकोड) जिलाधीश के अधीन रखे गए। स्वतंत्रता के बाद 1956 में सभी द्वीप समूहों को एक संघशासित प्रदेश घोषित किया गया और 1973 में इस क्षेत्र का नाम बदलकर लक्षद्वीप संघशासित प्रदेश कर दिया गया।

भाषा या बोली (बोलियाँ)

पृथक भू-क्षेत्र होने के कारण लक्षद्वीप मलयालम में कई पुरानी विशेषताएँ दिखाई देती हैं। कुछ नई विशिष्ट विशेषताओं का भी आविष्कार किया है, जो इसे मलयालम के अन्य रूपों से बिलकुल भिन्न बनाती हैं, जैसे 'बातचीत में संगीतात्मक लहजा' (intonation) और उनकी विशिष्ट शब्दावली। द्वीपवासियों की बोलचाल की भाषा में संघर्षी ध्वनियों की अधिकता है, जैसे– चेवि "कान" के लिए *सिवि*, *पल्ल* "दाँत" के लिए *फल*। ऐसी स्थिति में यह तार्किक सवाल उठाया जा सकता है कि इस बोली (या बोलियों के समूह) को लक्षद्वीप मलयालम में क्यों शामिल किया जाता है। अतः कह सकते हैं कि जैसे केरलवासियों के साथ द्वीप के लोगों का ऐतिहासिक संबंध निर्विवाद है, वैसे ही भाषाई समानता भी है। अतः द्वीपवासियों की बोली (या बोलियों का समूह) के बारे में मलयालम से जाना जा सकता है, क्योंकि द्वीपवासी मलयालम आसानी से समझ भी लेते हैं। इसके अलावा उनकी कुछ साहित्यिक परंपराएँ भी केरल की कुछ परंपराओं से मेल खाती हैं। अतः भले ही द्वीपों की अपनी अनन्य विशेषताएँ हैं, फिर भी ये द्वीप सांस्कृतिक और भाषाई रूप से केरल का ही विस्तार हैं।

वास्तव में, प्रत्येक द्वीप में बोली के लिए कुछ परिभाषित विशेषताएँ हैं और "लक्षद्वीप मलयालम" शब्द केवल उनके बीच कुछ सामान्य विशेषताओं की उपस्थिति के कारण ही उचित है। हालाँकि द्वीपवासी इन विषमताओं और समग्र समानताओं से अवगत हैं। उदाहरणार्थ, अतीत की घटना को व्यक्त करने के लिए अंद्रोत्त के लोग "गाया है" के लिए पदबंध *(फा) टिनाना* और अगत्ति के लोग "मत टकराओ" के लिए *मुट्टाय* का प्रयोग करते हैं।

जाति व्यवस्था द्वीप समूहों की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। सबसे ऊँची जाति कोया है, जो पुराने ज़माने के ज़मींदार हुआ करते थे और सबसे निचली जाति मेलाच्चेरि है, जो कि शुरू से ही मज़दूर रहे हैं। एक मध्यम जाति नाविकों (मल्लाहों) की है, जो मलमी के नाम से जाने जाते हैं। यह जातीय अंतर उनकी भाषा में भी झलकता है। कोया लोगों की बातचीत में आदरसूचक बहुवचन का प्रयोग विशेष उल्लेखनीय है, जैसे कोया लोग स्वयं को संदर्भित करने के लिए *नङ्ङ* यानि "हम" का प्रयोग करते हैं, जबकि अन्य जाति के लोग *नान* यानि "मैं" का प्रयोग करते हैं।

भाषाई विशेषताएँ

ध्वनि विज्ञान

लक्षद्वीप मलयालम में 10 स्वर और 23 व्यंजन हैं।

स्वर

तालिका 6.1 : लक्षद्वीप मलयालम में स्वर

	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व
संवृत	ई	इ			ऊ	उ
अर्ध-संवृत	ए	ए'			ओ	ओ'
विवृत			आ	अ		

अधिकांश दीर्घ स्वर अपने लघु स्वरों की तुलना में गौण होते हैं। वे किसी भी संयुक्त स्वर के साथ नहीं दिखाई देते, क्योंकि ध्वन्यात्मक संयुक्त स्वर (*अइ*) को इस प्रकार बताया जा सकता है कि लघु विवृत स्वर जिसके बाद तालव्य अवरोधी हो और वही लघु स्वरों के क्रम में आए जो नादी (नादयुक्त) अस्फोट हो और जो केवल एकाक्षरी शब्दों में अंतिम अनुमेय हो। ऐसे शब्दों का विहित रूप स्व(व्य)ल, इस पद्धति के अनुरूप हो, जिसमें व्य पहले से अनुमित व्यंजन, स्व ह्रस्व स्वर और ल निम्न व्यंजनों - य, ल, ळ, न, नह्व, और म में से कोई एक हो।

पोय झूठ
पुल घास
कळ ताड़ी
चुल एक चिड़िया
पोन स्वर्ण
पेण महिला
कण आँख

जबकि *अइ* "वह", *केइ* आदि भी उसी प्रकार के शब्द हैं, जैसे *अय, कय* आदि। ये शब्द भी इसी नियम से निर्मित होते हैं। इसी प्रकार -*अव* की तरह ही (-अउ) भी व्याख्यायित होता है। एकाक्षर में -*अव* का प्रयोग अंद्रोत्त की देन है।

अन्य द्वीप

कवरत्ती	**अंग्रेज़ी**	**हिंदी**	**अंद्रोत्त**
अवय	चौरि	कौड़ी	*कव्डी*
तवडु	ब्रान	भूसी	*तव्डु*

संध्वनि व्याख्या

(i) अगत्ति में शब्दारंभ का /*अ*/ अर्ध-विवृत वर्तुल है जो /*ए*/ (ल्ल) नक्कम "हिलाना" में प्रयुक्त होता है। अंद्रोत्त में शब्दांत /अ/ कम विवृत और अग्र गुण प्राप्त करता है।

पोन्ट [-<ə] जाता
पोय [-<ə] गया

(ii) /*उ*/ *द्व*/ केवल प्रारंभिक अक्षरों में होंठ की वर्तुल स्थिति कायम रखता है, अन्यत्र यह अवर्तुल मध्य गुण प्राप्त करता है।

उरीडा लोटा
वेरिप्पी दुश्मनी

जो भी हो कवरत्ती में *उणु* "होता है" में अंतिम */उ/* अवर्तुल (unrounded) नहीं है।

व्यंजन

तालिका 6.2 : व्यंजन

1	क		ङ			ह
2	च	ज	ञ	य		
3	ट	ड	ण		ळ	
4	टः			रः	र	स
5	त	द	नः	न	ल	
6	प	ब	म	व		

व्यंजन प्रणाली पर टिप्पणी और ध्वन्यात्मक कार्यान्वयन

(i) इस प्रणाली में */ज/, /द/, /स/* और */ह/* की उपस्थिति उधार शब्दों के रूप में है। लक्षद्वीप मलयालम में अरबी के उधार (loan) शब्द जैसे */जहन्नम/* यानि "नरक", */दीन/* यानि "धर्म", /सलाम/ यानि "नमस्कार", /हलम/ यानि "कलम" आदि शामिल हैं।

(ii) इसमें शब्दारंभ का घोष स्पर्श परिवर्तित ध्वनि से उत्पन्न होता है। ऐसे कुछ शब्द निम्नलिखित हैं–

डाक्कु जहाज की छत्त
डाक्कुटर डॉक्टर, हकीम

उधार ध्वनि - टः

टिः टिन
टिक्कटटुः टिकट

-ड- से उत्पन्न देशज शब्द भी परिवर्तित ध्वनि होते हैं, यहाँ शब्द का पहला स्वर लुप्त हो जाता है, जैसे उड*य*>ड*य* "(तुम) तोड़ना (सकर्मक)"।

(iii) "एकल" स्वरांतरस्फोट व्यंजन -क-, -त-, -ट- जो नादीकरण पाते हैं और कमज़ोर रूप से व्यक्त होते हैं– "द्वित्व" रूप में वे स्वनिमिक (phonetically) नादरहित स्फोट होते हैं।

उरि(गि)म	गलेगा	-क-	
क(ड)म	कर्ज	-ट-	
कु(डि)	लालसा (पीने की)	-टि-	
अक्कम	अंक	(क)	-क्क-
अट्टि	ढेर	(ट)	-ट्ट
अत्तिरे	उतना	(त)	-त्त-

यह "द्वित्व" वर्त्स्य स्फोट और ओष्ठ्य स्फोट के रूप में भी मान्य है।

कुट्टिः	खुंडी	(टः)	-टःटः

काट्टुः	हवा	(टः)-(टः)	-टःटः
अप्पल	ऑक्टोपस	(प)	-प्प-
कुप्पि	बोतल	(प)	-प्प-

स्फोट का संरचनात्मक स्थान लेने वाले तालव्य-वर्त्स्य स्पर्श संघर्षी भी तब ध्वनि की दृष्टि से नादरहित स्पर्श संघर्षी होते हैं, जब वह द्वित्व रूप में होते हैं।

कच्चम	उत्तर-पश्चिमी दिशा की हवा	[ṭʃ] -चच-
नेरःच्च	दिव्य पुरुष (ईश्वर) को भेंट	[ṭʃ] -ए'ए'-

(iv) *[रः]* की कई प्रयुक्तियों को *-ट* के रूप में दिखाया जाता है। जैसे निम्न समांतरता–

चोटु	तल	*:चोट्टिल*	के तले
नू(रः)रु	सौ	*:नूट्टिल*	सौ में

हालाँकि कई उधार शब्दों में (रः) का *-ट-* से संबंध नहीं होता इसलिए ध्वन्यात्मक दृष्टि से वे इनसे अलग होते हैं जैसे–

राःणि	रानी
राःट्टु	चरखा
रोःक्कम्	नकदी

(v) प्रारंभिक और "एकल" स्वरांतर ए वर्ण वर्त्स्य नादहीन संघर्षी [*स*] माना जाता है।

सक्का	एक प्रकार का कटहल (ब्रेड फ्रूट)
सी	(तुम) करो
फसि	भूख

(vi) *प-* को दंतोष्ठ्य नादहीन संघर्षी (फ) के रूप में समझा जाता है, केवल इसके "द्वित्व" रूप को छोड़कर जैसे-

फेण	स्त्री
फू	फूल
कप्पल	जहाज

(vii) तालव्य स्वर के बाद ई, ए और अर्ध-स्वर *य*, *-कक-* प्रत्यय के साथ तालव्य नादहीन संघर्षी (च) ध्वनि मानी जाती है, जैसे–

अटि-क्कु-म	मारेगा/गी
उटः-क्कु-म	तोड़ेगा/गी
माय-क्कु-म	मिटाएगा/गी

(viii) *-च-* और *-ज-* तथा *-त-* और *-द-* का प्रारंभिक व्यतिरेक (contrast) अनुनासिक के बाद नहीं होता या बेअसर हो जाता है, जैसे–

चोरुः	खाना	: *जोरु*	उत्कृष्ट
तानम्	ओहदा	: *दानम*	ख़ैरात
लेकिन, *अं[द]इ*	संध्या	-न्त-	
अं[ज]उ	पाँच	-नच-	

सभी अनुनासिक निरपवाद रूप से अनुनासिकोत्तर नादी बनते हैं। इसलिए उन्हें नादहीन संघर्षी के अलग-अलग रूप (संध्वनियाँ) माना जाता है, जैसे–

अन[ग]ार	जलती चिंगारी	*-नक-*
अन[द]यक्कुम	लागू होगा	*-नद-*
अम[ब]रु	मोम जैसा सुगंधित पदार्थ -तिमिंगल से उत्पन्न	*-मप-*

(ix) शब्दारंभ का *व-* *ब* में बदल जाता है, जैसे–

बरि	पंक्ति	< वरि
बरिचम	वर्षा	< वर्षम् (संस्कृत)
बरक्कतु	फायदा	< बरकत (अरबी)

[फु]तन "बुधवार" (< संस्कृत - बुध), *[फु]त्ति* "बुद्धि", जैसे उदाहरणों में हमें *ब* की जगह [फ] मिलता है, क्योंकि ये सब *ब*>*प* के द्वितीय बदलाव के प्रथम स्थानीयकरण का प्रमाण माने जाते हैं।

(x) शब्दारंभ में इन छह अनुनासिकों *-ङ, ञ, ण, न, नः*, और *म* में, *ङ* और *ण* का किसी भी अर्थ में प्रारंभिक प्रयोग नहीं होता, यह प्रयोग केवल "द्वित्व" और समवर्गी स्फोट (plosive) में ही होता है, जैसे–

कण्केट्टु	जादू
तिण्कल	सोमवार
तिण्णल	चाँद

इसके अलावा भी *ण* की कई सीमाएँ हैं, यह प्रारंभ में प्रयुक्त नहीं होता। केवल स्वरांतर ("एकल" और "द्वित्व" वर्ण दोनों में) और समस्थानीय (homorganic) स्फोट के पहले ही प्रयुक्त होता है, जैसे–

कुणम	योग्यता
कण्णि	कड़ी (चेन)
उण्डा	गोलाकार वस्तु

-ञ- का शब्दारंभ में प्रयोग अमिनि द्वीप में ही सीमित है, जबकि अन्य द्वीपों में इसकी जगह पर *-न-* का प्रयोग होता है, जैसे-

अमिनि	**अन्य द्वीप**	**हिंदी**
ञान	*नान*	मैं
ञायम	*नायम*	न्याय
ञिकम	*नेकन*	नाखून

स्वरांतर में द्वित्व की ही अनुमति होती है-

कञ्ञि	तंडुलांबि (पका चावल मिला पानी)
चिङ्ङञ्ञार	मलयालम महीना चिङम् (श्रावण)

कई जगह *-च-* के साथ *-ञ* का भी योग होता है, जैसे–

ऊंञिल	झूला
मुञ्चु	सुंदर

नः और *न* का व्यतिरेक केवल "द्वित्व" अवस्था में हो तो अनुनासिक दंत्य प्रारंभिक और पूर्व स्फोट स्थानों में होता है, जैसे–

नाःळ	दिन
मन्ःतु	फीलपाँव (हाथीपाँव)
अनःङ्ङुम	हिलेगा
ओन	वह
कुन्निः	कान की छोटी हड्डी
कुन्नि	बहुत छोटा/टी

(xi) *य-* से कोई शब्दारंभ नहीं होता है इसलिए एक उधार शब्द को स्थानीय बनाने के लिए *य->च* में बदल दिया जाता है जैसे [ʃ] *चामम* "एक पहर–रात का 1/3 हिस्सा" < संस्कृत *यामम्। चात्तिरा* "यात्रा" < संस्कृत *यात्रा*, दोनों शब्दों में य को च में बदल दिया गया है।

(xii) मूर्धन्य प्रवाही का मूर्धन्य पार्श्विक में बदल जाने से निम्न जोड़ियों में कोई फर्क नहीं पड़ता जैसे–

कुळि	गड्ढा	<*कुषि*
कुळि	स्नान (नहाना)	<*कुळि*

मगर रूपवैज्ञानिक प्रक्रिया में "ऴ से ळ" में भिन्न प्रथा दिखाई पड़ती है। जैसे *नीळुम* यानि "लंबा होगा" का भूतकालिक रूप *नीण्टा* है, और *ओळुम* (<*अकळुम*<*अकषुम*) "खोदेगा" का *ओण* (तुलना– प्राचीन मलयालम में *अकन्नु* "खोदा") बन जाता है।

(xiii) वर्त्स्य उत्क्षिप्त में और पर-वर्त्स्य कंपित में स्पष्ट व्यतिरेक (contrast) है–

इरा	कीड़ा
इराः	बरामदा

यदि दोनों से शब्दारंभ हो तो–

रा	रात्रि
रिळा	दिव्य दृष्टि
रःङ्ङुम	सोएगा
रुःहानि	भूत

(xiv) वर्त्स्य और मूर्धन्य पार्श्व ध्वनियाँ स्पष्ट रूप से व्यतिरेकी हैं–

कल	पत्थर	:	*कळ*	ताड़ी
कलम	घड़ा	:	*कळम*	गज

यदि दोनों से शब्दारंभ हो तो–

लाकुम	टहलना
लेम्मि	रश्मि (प्रकाश की किरण)
ळानि	मुलायम कच्चा नारियल (अमिनि एवं कडमत)
ळय	(तुम) बैठो <*इळय* "आराम करो"

(xv) लक्षद्वीप मलयालम में नादहीन वर्त्स्य संघर्षी *स* और नादहीन काकल्य संघर्षी *ह*, ये दोनों उधार (*श*) वर्ण हैं। संध्वनि

/च/ का स्वानिकी वास्तव में वर्त्स्य-तालव्य संध्वनि है। अतः इस प्रकार लक्षद्वीप मलयालम ''संघर्षी प्रधान'' भाषा है। हालाँकि इसके पास केवल दो ही स्वानिकीय संघर्षी हैं।

लक्षद्वीप मलयालम में नादरहित मूर्धन्य संघर्षी [ष] का स्थानांतरण उधार [*श*] से हुआ है, जो */च/* की ही एक संध्वनि है, जैसे–

संतो(श)म	<	*संतो(ष)म*	संतोष
क(श)यम	<	*क(ष)यम*	आयुर्वेदीय काढ़ा (दवा)

जबकि कंठ्य और मृदुतालव्य ध्वनियों को उधार शब्दों के (*क*) से स्थानापन्न करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है, लक्षद्वीप मलयालम के विशेषज्ञतापूर्ण उच्चारण में उल्टा अतिशोधित (*ह*) का अस्तित्व भी मिलता है, जैसे–

हबर/कबर	मक़बरा	<अरबी क़ब्र
हत्तु/कत्तु	एक चिट्ठी	<अरबी ख़त
(श़)अहम/(श़)अकम	लाश	<संस्कृत शव

इन सबके होते हुए भी *क*- और *ह*- में बहुत ही कम व्यतिरेक होता है।

काल	पैर	: *हाल*	स्थिति
कूरि:	बोला	: *हूरि:*	परी

वितरण संबंधी प्रतिबंध

(i) लक्षद्वीप मलयालम में स्वरसामंजस्य भी पाए जाते हैं, इसलिए इसके लिए निम्न नियम लागू होते हैं-

$$\begin{bmatrix}\text{ए}\\ \text{ओ}\end{bmatrix} > \begin{bmatrix}\text{इ}\\ \text{उ}\end{bmatrix} > / \quad \text{व्य}_1 - \text{व्य}_2 \quad \begin{Bmatrix}\text{इ}\\ \text{उ}\end{Bmatrix}$$

यदि एक व्यंजन वाला -व्य$_2$ दूसरे अक्षर में इ और उ हो तो पहले अक्षर में भी केवल इ और उ ही आएगा, न कि ए और *ओ*–

लक्षद्वीप मलयालम	*इलियम*	चूहा	मलयालम	*योलि*
लक्षद्वीप मलयालम	*इडुप्पु*	मीनार	मलयालम	*योडुप्पु*
लक्षद्वीप मलयालम	*चिवि*	कान	मलयालम	*चेवि*
लक्षद्वीप मलयालम	*उरुक्क*	एक बार	मलयालम	*ओरिक्कल<ओरुक्कल*
लक्षद्वीप मलयालम	*मुळि*	वाणी	मलयालम	*मोषि*
लक्षद्वीप मलयालम	*तुलि*	त्वचा	मलयालम	*तोलि*
लक्षद्वीप मलयालम	*मुंचु*	सुंदर	मलयालम	*मोंचु*

(ii) जब दूसरे अक्षर का विवृत स्वर बाद में आए तो संवृत और अर्ध-संवृत स्वर वाले प्रारंभिक अक्षरों के व्यतिरेक (contrast) को तटस्थ बनाना होता है।

$$(\text{व्यं}_1) \quad \begin{Bmatrix}\text{इ/ए}\\ \text{उ/ओ}\end{Bmatrix} \quad \text{व्यं}_{2\text{अ}}$$

उपरोक्त परिभाषित संदर्भ में अंद्रोत्त में *ए-ओ* रूप को ही सुलभ माना गया है, जो केरल की मौखिक मलयालम से भी मिलता-जुलता है। लेकिन अन्य द्वीपों में लिखित मलयालम से मिलते-जुलते इ-उ रूप को ही मानते हैं। इसका

कारण यह भी हो सकता है कि मुख्य भू-भाग से निकटतम क्षेत्र (द्वीप) की मौखिक मलयालम उसके निकट के भू-भाग की तरह है, किंतु जो द्वीप मुख्य भू-भाग से दूर हैं, वहाँ मलयालम का दूसरा ही रूप है।

अगत्ति	**अंद्रोत्त**	**हिंदी**
इला	*एला*	पत्ता
इरा	*एरा*	कीड़ा
इडम	*एडम*	स्थान
बिरल	*बेरल*	उँगली
बिला	*बेला*	दाम/मूल्य
फिणा	*फेणा*	नारियल का गुच्छा
उरा:	*ओरा:*	म्यान
उअमा	*ओअमा*	स्वामित्व
शुमा	*शोमा*	खाँसी
फर:म	*फ़ोर:म*	पीठ
कुळम	*कोळम*	कुंड
तुळा	*तोळा*	छोटा चप्पू

(iii) जब कोई शब्द *प-* या *म-* से प्रारंभ होता है, तो कवरत्ती की मौखिक भाषा में प्रथम ओष्ठ्य स्वर को ही प्रथमाक्षर माना जाता है। इसी प्रकार अगत्ति और अमिनि की मौखिक भाषा में तालव्य स्वर की प्रथमाक्षर के रूप में परिगणना होती है। यह *उ/इ* रूपभेद भी मुख्य भू-भाग की तरह ही है।

कवरत्ती	**अगत्ति**	**हिंदी**
फ़ुडि	*फ़िडि*	पकड़
फ़ुळा	*फ़िळा*	नहर
फ़ुरा	*फ़िरा*	घर
मुन्ने:	*मिन्ने:*	पहले
मुट्ट:म	*मिट्ट:म*	आँगन
मुञ्चम	*मिञ्चम*	बाकी

(iv) स्वरांतर *-व-* को अधिकांशतः *-क-* में बदल दिया जाता है–

अगत्ति	**अंद्रोत्त**	**हिंदी**
कसवु	*कसकु*	चाँदी की जाली
किनावु	*किनाकु*	सपना
कूवुम	*कूकुम*	सीटी बजाना (पंछी की तरह)

(v) अन्य द्वीपों के *-इका* के प्रयोग के स्थान पर अंद्रोत्त में *-इया* प्रयोग होता है, जैसे–

अगत्ति	**अंद्रोत्त**	**हिंदी**
उरु:प्पिका	*उरु:प्पिया*	रुपया
कुळिका	*कुळिया*	गोली

माळिका	*माळिया*	हवेली
उरिका	*उरिया*	तलछट

(vi) अगत्ति में *ब* < *व* परिवर्तन के स्थान पर *म*- हो जाता है, यद्यपि *ब*- और *म*- में व्यतिरेक भी होता है, जैसे *बळा* "कंगन" और *मळा* "वर्षा" में है।

अगत्ति	**अन्य द्वीप**	**हिंदी**
मेयन्ना:	*बयेंता/बयंदा*	आ जा
मेनि:ट्टु	*बेनु:म*	उसे
मंपम्	*बंपन*	अभिमानी

(vii) यद्यपि *बरा* "रेखा" और *बला* "जाल" के -*र*- और -*ल*- में व्यतिरेक है फिर भी -*र*- की जगह -*ल*- का परिवर्तन होने की तरफ़ ज़्यादा झुकाव दिखाई देता है। जैसे–

रण्टु/लण्टु	दो
राकु/लावु	रात्रि

कुछ संदर्भों में जहाँ -*र*- का होना ऐतिहासिक हो वहाँ -*ल*- की उपस्थिति दिखाई होती है, जैसे *लाडुम* यानि "बोलेगा" < *उरियाडुम*। कुछ अन्य संदर्भों में मुख्य भू-भाग की मलयालम के समान *ल*- का र बनता है, जैसे लक्षद्वीप मलयालम का *तरडोउम* मलयालम में तोलोडुम बन जाता है।

(viii) अंद्रोत्त में -*उका*-/-*उवा*- कभी-कभी लघु *ओ* बन जाता है।

चट्टोम	कलछी	*<चोट्टुकम/चट्टुवम*
चोटु	के तले	*<चुकट्टु/चुवट्टु*
पाडोन	पायल	*<पाडकम/पाडवम*

(ix) चेतलात में प्रारंभिक अक्षर के इ या उ के बाद *आ* या *अ* हो तो शब्दारंभ का व्यंजनगुच्छ प्रारंभिक अक्षर को छोड़ता है। और दूसरे अक्षर का -*अ*- स्थिर रूप से दीर्घ बनता है।

$$(\text{व्यं}_1)\begin{bmatrix}\text{इ}\\ \text{उ}\end{bmatrix}\ \text{व्यं}_2\,\text{आ} > \text{व्यं}_1\text{व्यं}_2\text{आ}$$

किळङ्ङु	कंद	*>किळाङ्ङु>क्ळाङ्ङु*
बिळक्कु	दीप	*>बिळाक्कु>ब्ळाक्कु*
बिरेकु	जलाने की लकड़ी	*>बिरा:कु>ब्रा:कु*
मुळकु	मिर्च	*>मुळाकु>म्ळाकु*
तलाहु	तलाक़	*>तलाक्कु>त्लाक्कु*

(x) अंद्रोत्त में वर्तमानकाल प्रत्यय -*इन्त*-, -*न्त*- विद्यमान है, जिसका अगत्ति में -*नन*- में बदलाव हो जाता है जबकि अन्य द्वीपों में वही -*ण्ट*- बन जाता है–

अंद्रोत्त	**अगत्ति**	**अन्य द्वीप**	**हिंदी**
बयिन्त	*बयिन्न*	*बयिण्ट*	आता है
फ़ोन्त	*फोन्न*	*फोण्ट*	जाता है

आकिन्त	*आकिन्न*	*आकिण्ट*	होता है
केङ्ङुन्त	*केकिन्न*	*केकिण्ट*	सुना, पूछता है

(xi) भूतकालिक प्रत्यय के उपरूपिम *-न्ट-* की बारंबारता विभिन्न बदलाव लाती है।

नियम 1: धातु का आकार यदि व्यं.$_1$ स्व.$_1$ व्यं.$_2$ स्व.$_2$ में हो तो *-न्ट-* अनुनासिक समीकरण में *-न्ट->-न्न* -/व्यं.$_1$ स्व.$_1$ व्यं.$_2$ स्व$_2$.- बनता है।

न:ट-न्न:-अ गया

नियम 2: यदि शब्दांत *ल* धातु से हो तो, यह *-न्न-* में बदल जाता है। हम अनुमान लगा सकते हैं कि यह एक मध्यम अवस्था है जिसमें *–न्:त* दंत्यकरण एवं अनुनासिक समीकरण की प्रक्रिया से गुजरता है।

*कोल-न्टा >*कोन्ता >*	*कोन्:ना:*	मारा गया
*नि:ल-न्टा>*नि:न्ता>*	*नि:न्:ना:*	खड़ा हुआ

यह अनुमान इस तथ्य पर आधारित है कि दंत्यकरण और अनुनासिक समीकरण की प्रक्रिया उन्हीं एकाक्षरी धातुओं की होती है, जिनका अंत *–न:* हो। जैसे-

तिन्-त>	**तिन्त>तिन्न:*	खाया

नियम 3: अगर एकाक्षरी क्रियाधातु का अंत र-, न्ट- से हो रहा हो, तथा जिसका भूतकाल प्रत्यय इसमें सम्मिलित हो, तो *–न:न:* अपने लघुरूप *-न* में बदल जाएगा, बशर्ते कि स्वर धातु दीर्घ बनी हो।

र:-न:त- > [*-नन- / -व्यं.स्वर*
-न / -व्यं-दीर्घ स्वर]

भविष्य काल		**भूतकाल**		
बरुम्	आएगा	*बन्:ना:*	आया	*<बर-न्त-अ*
तरुम्	देगा	*तन्:ना:*	दिया	*<तर-न्त-अ*
चेरुम	जुड़ेगा	*चेर्न्:ना:*	जुड़ा	*<चेर-न्त-अ*
तीरुम	समाप्त होगा	*तीर्न्:ना:*	समाप्त किया	*<तीर-न्त-अ*

संज्ञा रूपविज्ञान

सर्वनाम

उत्तम पुरुष एकवचन :

ना:न [*ना:न-, ना:-*]

बहिष्कारी उत्तम पुरुष बहुवचन :

न:ङ्ङ(ळ) [*न:ङ्ङ(ळ)-*]

अंत:कारी उत्तम पुरुष बहुवचन :

न:-म्म(ळ) [*न:-म्म(ळ)-*]

मध्यम पुरुष एकवचन :

नी: [*नि:न, नी-*]

मध्यम पुरुष बहुवचन :

नि-ङ्ङ(ळ) [*नि:ङ्ङ(ळ)*-]

निजवाचक एकवचन :

तान [*तान*-]

निजवाचक बहुवचन :

ताङ्ग(ळ) [*ताङ्ङ(ळ)*]

अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन -दूरस्थ :

ओन

अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन -निकटस्थ :

बेन

अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन -दूरस्थ :

ओळ

अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन - निकटस्थ :

बेळ

अन्य पुरुष मानव एकवचन -दूरस्थ :

अबा

अन्य पुरुष मानव एकवचन -निकटस्थ :

इबा

अन्य पुरुष नपुंसक एकवचन -दूरस्थ :

अतु

अन्य पुरुष नपुंसक एकवचन -निकटस्थ :

इतु

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष (मानव बहुवचन) में बहुवचन रूप का प्रयोग लिंगभेद प्रकट करने के अतिरिक्त सम्मानसूचक भी है।

संकेतक धातु

निकटस्थ संकेतक धातु इ- और दूरस्थ *अ*- है। *ओन, ओळ, बेन* और *बेल* में धातु रूप का पता नहीं चलता, क्योंकि उनमें ध्वन्यात्मक (phonetic) परिवर्तन होता है। लेकिन *अबा, इबा, अतु* और इतु में वे स्पष्ट रूप में प्रदर्शित होते हैं। संयुक्त रूपों में अगर दूसरे भाग का शब्दांश इ और *अ* स्वर से शुरू हो तो क्रमशः *इय* और *अय* संरूप प्रयुक्त होंगे, जैसे *इय्योला* यानि "यह नारियल पत्ता" और *अय्याळ* यानि "वह आदमी"। *ब*- के अतिरिक्त अन्य व्यंजनों के आगे, ये संकेतक धातु इ- और *अ*- संरूपों से युक्त हैं, जो दूसरे भाग में द्वित्व से शुरू हो रहे हैं–

अ-म्-मरम	वह पेड़
अ-क्-कुन्नी	वह बच्चा
अ-त्-तूण	वह स्तंभ
इ-प्-पल	यह दाँत

ब- के आगे आने वाले रूपिम *इम-* और *अम-* हैं

इम-बाक्कु यह शब्द
अम-बंटि वह गाड़ी

व्यंजनों के आगे *इय-* और *अय-* का अधिकांशतः प्रयोग हो रहा है।

अय-मरम वह पेड़
इय-फिल्ला यह बच्चा

इय- और *अय-* को विकल्पत: *ई-* और *आ-* में भी परिवर्तित कर दिया जाता है–

आ(श)क्का वह ब्रेड फ्रूट
ई पिळ्ळा यह बच्चा

प्रश्नवाचक मूलधातु

प्रश्नवाचक धातुओं जैसे– *येन्तु* यानि "क्यों" और *एतु* यानि "क्या" को और *आरु* यानि "कौन" द्वारा दीर्घ बना दिया जाता है। इसे "व्यक्ति" वाचक विशेषण "कौन" में स्थानापन्न किया जाता है।

एत-आळ बन्ना:/आरु बन्ना: कौन आया?

निष्पन्न अंतर्लीन आधारिका

संकेतक चिह्न *इ-, अ-* और प्रश्नवाचक *ए-* से बने संज्ञा रूप "स्थान", "अवधि", और "गुण" को सूचित करते हैं।

न्यूनपदीय *-उटा* और *-ङ्ङु* से स्थान का बोध होता है। *-उटा* के आगे, मूल *इ-, अ-* और *ए-* की संध्वनियाँ (allomorphs) यथाक्रम *इब-, अब-*, और *एब-* हैं, जैसे–

इबुटा/इङ्ङु यहाँ
अबुटा/अङ्ङु वहाँ
येबुटा/एन्ना: कहाँ

येबुटा (<येव-उ-टा) अंद्रोत्त में *ओटा* बन जाता है, जबकि यही कवरत्ती में *येच्चो* में परिवर्तित हो जाता है।

यदि *इ-, अ-* और *ऐ-* के बाद एकबद्ध न्यूनपद *–न्नुः* आए तो वह "दिन" को सूचित करता है–

इ-न्नुः आज
अ-न्नु: उस दिन
ए-न्नुः किस दिन

उसी प्रकार *ये-प्प-अ(ळ)* "समय" का द्योतक है

इ-प्पअ(ळ) अब (इस समय)
अ-प्पअ(ळ) तब (उस समय)
ये-प्पअ(ळ) कब (किस समय)

गुण का वाचक *-त्तिरा* है-

इ-त्तिरा इतना
अ-त्तिरा उतना
ये-त्तिरा कितना

कारक

कर्ता कारक के लिए कोई प्रत्यय नहीं

ञान	मैं
आळ	व्यक्ति

कर्म कारक -अ

मूत्तोन-अ	बड़ा भाई (कर्म)
ओळ-अ	उसे (लड़की को)
नःन्न-अ	मुझे (कर्म)
पूच्चअ-य-अ	बिल्ली (कर्म) (संधि की वजह से *-य-*)
आर-अ	किसे

अंद्रोत्त में *बाप्पया* "बाप (कर्म)" से *बाप्पे* और *उम्मया* "माता (कर्म)" से *उम्मे* जैसा छोटा रूप बनता है।

सभी द्वीपों में *-अ* की संध्वनि, कर्म कारक प्रत्यय *ओ* निर्जीव वस्तुओं को दर्शाने वाली संज्ञाओं के साथ जुड़ता है।

ओटम ळक्कुम नाव खुल जाएगी

लेकिन औपचारिक संदर्भों में संध्वनि *-अ* की स्वीकृति है।

पोरःक्कलिन तेडिया [*पोरुःक्कल-इन-अ*] माफी माँगी गई

अपादान कारक

अपादान कारक प्रत्यय *-ओडा* है, जबकि अंद्रोत्त में *निःन्नोडा* "तुझसे"

अन्य द्वीपों में वही कारकीय परसर्ग *कूड़ा* संबंध कारक रूप के साथ जुड़ा होता है।

ओना + क-कूड़ा	उसको (*-क-* संधि के कारण द्वित्वरूप)
निःसार-इन-आ+क-कूड़ा	निसार को

संप्रदान कारक

अमिनि को छोड़कर, अंद्रोत्त और अगत्ति में संप्रदान कारक प्रत्यय *-क्कु* होता है।

नाः-क्कु	मुझे, मेरे लिए	नाङ में से घ लुप्त होता है।
आ-क्कु	किसके लिए	आर में से र लुप्त होता है।
ओ-क्कु	उसके लिए	ओळ में से ळ लुप्त होता है।
बाप्पा(य)-क्कु	पिता के लिए	
उम्मा(य)-क्कु	माता के लिए	

संप्रदान "प्रयोजन", "लक्ष्य" और "निर्देश" का द्योतक है।

सुबय-क्कु वा	(तुम) सुबह आना
चेरि-क्कु पोया	घर गया
तण्णि-क्कु इलिञ्ञा	पानी के अंदर गया

अमिनि में संप्रदान कारक प्रत्यय *-उम*, अंद्रोत्त में *-ऊन* और अगत्ति में *-इट्टु* होता है।

अमिनि	**अंद्रोत्त**	**अगत्ति**	**हिंदी**
मम्मदूम्	*मम्मदून्*	*मम्मदिड्डु*	मुहम्मद के लिए
बेणूम्	*बेणूण्*	*मेणिड्डु*	इसके (समीपस्थ) लिए

करण कारक

कर्म कारक के बाद प्रत्यय *-कोणु* या *-चोल्लि* (अगत्ति में *-चेल्लि*) जोड़कर करण कारक या कारण विभक्ति अभिव्यक्त है। जब इनमें से कोई एक जुड़ जाता है, कर्म कारक संध्वनि *-ओ-* (दीर्घ) को *-अ-* से स्थानापन्न किया जाता है। *चोल्लि-* या *चेल्लि-* के पहले *-अ-* लंबा हो जाता है।

ओन-क-कोण्टु/ओना-च्-चोल्लि	उसके (दूरस्थ) द्वारा
नरून्न-क-कोण्टु/नरून्न-च-चोल्लि	मुझ से
अयनक्कोण्टु/अयनाच्चोल्लि	उस से

[*अत-इन>अयन:*] *-न-* की एक रूपिम कड़ी है।

कत्तीन क्कोण्टु/कत्तीना च्चोल्लि	चाकू से

संबंध कारक

बुनियादी तौर पर संबंध कारक प्रत्यय *-अ* है। किंतु एकाक्षरी धातुओं के बाद यह दीर्घरूप है। एक रूपिम कड़ी *-इन-* धातु है और यह प्रत्यय व्यंजनांत धातुओं के बाद जुड़ता है, हालाँकि इसके अपवाद *ना:न, नि:न-, ओन, ओळ, पेङ्ङळ* और *तिङ्ङल-* हैं।

संध्वनि -अ:

मुत्तुबि-य-अ	मुत्तुबि का
तिङ्ङल-अ	महीने का
कटल-इन-अ	सागर का
फ्ळुद-इन-अ	सूर्य का
नि:सार-इन-अ	निसार का
यासिन-अ	यासिन का

(*-न-* में अंत धातु हो तो रूपिम कड़ी नहीं है)

संध्वनि -आ:

न:न-न-आ	मेरा
ओळ-आ	उसका (दूरस्थ)
अय-न-आ	इसका (दूरस्थ)

अधिकरण कारक

कुछ ऐसे स्थान जिनके नाम के अंत में इ- होता है, वे अधिकरण कारक को अपने-आप ही सम्मिलित कर लेते हैं, जैसे–

कवरत्ती	कवरत्ती में

इसके अलावा अन्य संज्ञा धातुओं के बाद में *इल-* प्रत्यय का प्रयोग होता है। जबकि अंतिम व्यंजन *-ल-* केवल स्वरों के आगे ही प्रयोग होता है।

कटल-इ मळा पेय्ता सागर में पानी बरसा

अगत्ति द्वीप में, अधिकरण कारक ज़्यादातर धातुओं के साथ नहीं जुड़ता। संबंध कारक को भी सम्मिलित नहीं किया जाता, जबकि जिस शब्द का अंत अधिकरण से होता हो, विशेषकर वह जिसका अर्थ "अंदर" होता हो, उसे ही जोड़ा जाता है।

मुरिरू-य- इन-अ+उळ-ल-इ (ल) कमरे का- के अंदर में यानि कमरे के अंदर

अन्य द्वीपों में "अंदर" (उळ) के लिए बिना प्रत्यय वाले *-इल* का काफ़ी प्रयोग होता है, जैसे–

चेरिय+उळ घर का- अंदर यानि घर में

"तन" (body) अर्थ द्योतित करने के लिए प्रत्यय *उच्चि* "ऊपर" और *मेल* या "पर" जुड़ता है-

कप्पल-अ+उळ/कप्पल-अ+उच्चि जहाज पर

अधिकरण संरूप *-अत्तु* "स्थान" और "समय" का सूचक है, जैसे–

मळयत्तु जब पानी बरस रहा हो/बरसते पानी में

अगत्ति में *-अत्तु* को *-अत्ति* से बदल दिया जाता है।

काट्ट:त्ति हवा में

कुछ स्थानों के नाम का अंत अधिकरण कारक *-अत्तु* से होता है, जैसे–

कडमत्तु कडमत द्वीप

कहीं-कहीं *-अत्तु* के विकल्प रूप में *-त्तु* का भी प्रयोग किया जाता है।

कोळिक्कोट्टु कोष़िकोड में

मीनङ्ङत्तु मीनम माह (आरु:) में

"सुबह", "मध्याह्न" और "शाम" को व्यक्त करने के लिए अधिकरण कारक के स्थान पर संप्रदान कारक का प्रयोग किया जाता है।

सुबय-क्कु सुबह को
उच्च-क्कु मध्याह्न को
अन्ति-क्कु शाम को

अपादान कारक

धातु के साथ *-येन्तु* (अंद्रोत्त) / *एन्नु* (अगत्ति) / *-इण्टु* (अमिनि) जुड़ता है।

अंद्रोत्त	*माळिकेन्तु*	*नूःक्किन्ता*
अगत्ति	*माळिकेन्नु:*	*नूःक्किन्ना:*
अमिनि	*माळिकयिण्ट्ट*	*नूःक्किण्टा*

"बहुमंजिला इमारत से देखना"

यद्यपि ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्पष्ट है कि *इल+निल-न्त* से *-येन्तु* प्रत्यय की उत्पत्ति हुई है।

गति पथ

गति पथ (path of motion) को व्यक्त करने के लिए *-ऊळे* जोड़ा जाता है।

काट्टुळे	झाड़ी से
उळ्ळे से ऊळे	अंदर

चयनात्मक

"उनमें से" चयनात्मक बोध को द्योतित करने के लिए कर्तु (nominal) रूप *कूट्टत्तु* "उनके साथ" संबंधिका विभक्ति प्रत्यय जुड़ता है।

मक्कळ कूट्टत्तु	बच्चों में से

बहुवचन रचना

अर, मा(र), और *-क(ळ)* आदि बहुवचन संध्वनियाँ (allomorphs) हैं।

इन संध्वनियों के वितरण में कोई स्वनिमिक या व्याकरणिक कंडीशनिंग नहीं रखी जाती।

(1) ***-अर***

मूकर	तीन लोग
इरुवर	दो लोग
ना:लर	चार लोग
तेक्कर	दक्षिण के लोग

(2) ***-मार***

धातु के अंत में र- सामान्यतः स्वर के आगे निकाला जाता है।

उम्मामा(र) "माताएँ"

जबकि धातु के अंत में *-मार* के पहले *न-* आए तो वह *-म* में बदलता है।

किळवम्मा(र) "बुजुर्ग"

(3) ***-क(ळ)***

कुछ धातुओं जैसे *पेण, आण, मक-* के बाद यह संध्वनि प्रयुक्त होती है।

पेण-ण-इ-क (ळ)	"महिलाएँ"	*<पेण-इ-कळ*

-इ- कड़ी है।

मक्क(ळ)	"संतानें"	*<मक-कळ*

अंद्रोत्त में अंतःस्वर अवस्था में *-क* लुप्त होता है।

आण-इ-य(ळ) "पुरुष"

क्रिया रूपविज्ञान

लक्षद्वीप मलयालम की क्रियाओं को इनके स्वरूप के आधार पर दो वर्गों में बाँटा जाता है– सबल (strong) और अबल (weak)। उपर्युक्त रूपिम (morpheme) कड़ी में, भूतकाल न होने पर *-कक-* में परिवर्तन नहीं होता। सबल क्रियाएँ निम्नलिखित हैं–

नट-	*नट-क्क-उम*	चलेगा
वि(ल)-	*वि-क्क्-उम*	बेचेगा
अटु-	*अटु-क्क्-उम*	पास आएगा
पय-	*पय-क्क्-उम*	भूख लगेगी

बिना रूपिम कड़ी की अबल क्रियाएँ निम्नलिखित हैं–

ची-	*चीयुम*	करेगा
ओत-	*ओतुम*	सुनाएगा
अनङ्ङ-	*अनङ्ङुम*	हिलेगा
अर-	*अरयुम*	पेस्ट बनेगा

क्रिया की रूपसिद्धि – काल

पूर्व के सार्वनामिक प्रत्यय के रूप में अवशेष रह गई वर्तमानकालिक और भूतकालिक क्रियाएँ *-अ* से अंत होती हैं। तत्कालीन अवस्था में वहाँ क्रिया की कोई सार्वनामिक सहमति नहीं है-

तालिका 6.3 : काल

क्रम सं	अर्थ	भविष्यत काल	वर्तमान काल	भूतकाल
(i)	चल	*नःट-क्कुम*	*नःट-क्क-इण्ट-अ*	*नःट-क्क-न्नः-अ*
(ii)	बेच	*बि-क्क्-उम*	*बि-क्क-इण्ट-अ*	*बि-रःरः-अ*
(iii)	कर	*ची-(य)-उम*	*चिय-(य)-इण्ट-अ*	*ची-त-अ*
(iv)	सुना	*ओत-उम*	*ओत-इण्ट-अ*	*ओति-य-अ*

प्रेरणार्थक क्रिया रूपायन

(i)	*नःट-त्त-उम*	चलाएगा
(ii)	*बि-प्पि-क्क-उम*	बिकवाएगा
(iii)	*ची-(य)-इ-क्क-उम*	कराएगा
(iv)	*ओत-इ-क्क--उम*	सुनाएगा

-तत- और उसके रूपभेद अकर्मक से सकर्मक क्रियाओं के परिवर्तन में प्रयोग किए जाते हैं। अबल क्रियाओं के साथ -इ- जोड़ने से और सबल क्रियाओं के साथ *-पपइ-* जोड़ने से सकर्मक प्रेरणार्थक रूप बनाया जाता है।

काल प्रत्यय

1. भविष्यतकालीन प्रत्यय *-उम* होता है।

   बर-उम आएगा

   नट-क्क-उम चलेगा

2. निषेधवाचक वाक्य में निषेध एवं भविष्य काल दोनों एक ही इकाई *आ* से प्रकट होते हैं।

   वर-आ नहीं आएगा

3. अगर क्रिया सकारात्मक हो तो अंद्रोत्त में वर्तमानकालिक प्रत्यय *-इन्त* का प्रयोग होता है, जबकि अगत्ति में *-इन्नः* और अन्य द्वीपों में *-इण्टा-* का प्रयोग होता है।

   बयिन्ता/बयिन्नाः/बयिण्टा आता है

निषेधवाचक वाक्य में, वर्तमान काल संरूप अबल क्रियाओं में *-व-* है, जबकि सबल क्रियाओं में *-पप-* है। ऐतिहासिक रूप से निषेधवाचक प्रत्यय *एला* निषेधक धातु *इल-* से संबंध रखता है।

बर(उ)-व-एला	आता-वर्तमान-नहीं यानि नहीं आता
कळि-पप-एला	खेल-वर्तमान-नहीं यानि नहीं खेलता

भूतकाल प्रत्यय के चार संरूप हैंः *-इ-, -त-, -न्ःत-*, और *-त्त-*

मूल एवं व्युत्पन्न दोनों क्रियाओं के भूतकाल रूपायन को समझाने के लिए उन्हें चार वर्गों में बाँटा जाता है–

वर्ग –I : संरूप -इ-

इस वर्ग में धातुओं का अंत व्यंजन वर्णो से होता है।

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
चाटुम	*चाट-इ-य(अ)*	*चाट-*	कूद
तळ्ळुम	*तळ्ळ-इ-य(अ)*	*तळ-*	धक्का दे
उरुट्टुम	*उरुट्ट-इ-य(अ)*	*उरुट्ट <(उरुळ-ट्ट)*	लुढ़क
नूक्कुम	*नूक्क-इ-य(अ)*	*नूक्क-*	देख
पेचुम	*पेच-इ-य(अ)*	*पेच-*	गाली दे
तुन्नुम	*तुन्न-इ-य(अ)*	*तुन्न*	सिल
पोंतुम	*पोन्त-इ-य(अ)*	*पोंत*	उठ
आकुम	*आ-(य)अ<*आकिया*	*आक-*	हो
पोकुम	*पो-य(अ)<*पोकिया*	*पोक-*	जा

वर्ग –II: संरूप -त-

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
चीयुम	*ची-त-अ*	*ची-*	कर
अरुःम	*अट्ः-टः-अ*	*अरः-*	कटा हुआ (अकर्मक)
पेरुःम	*पेट्ः-टः-अ*	*पेरः-*	जन्म दे
इट्टुम	*इट्-ट-अ*	*इट-*	गिरा
विट्टुम	*विट्-ट-अ*	*विट*	छोड़
उण्णुम	*उण्-ट-अ*	*उण-*	पीना (दूध या तरल पदार्थ आदि)

उपरोक्त के अनुसार संधि नियम को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

$$\begin{bmatrix} \text{त} \\ \text{ट} \\ \text{ण} \end{bmatrix} \quad \text{और : त} > \quad \begin{bmatrix} \text{तत} \\ \text{टःटः} \\ \text{ण्ड} \end{bmatrix}$$

वर्ग III: संरूप -न्त-

(i) - *न्त*- अपरिवर्तित रहता है

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
बेकुम	*बे-न्त-अ*	*बेक/बे*	खाना पकाना

(ii) - *न्त*-> -*न:न:*-

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
बळरुम	*बळर-न्न:-अ*	*बळर-*	बढ़
पटरुम	*पटर-न्न:-अ*	*पटर-*	फैल
तुटरुम	*तुटर-न्न:-अ*	*तुटर-*	जारी रख
अकलुम	*अक-न्न:-अ*	*अकल/अक-*	अलग
नि:क्कुम	*नि:-न्न:-अ*	*नि:-*	उठ
न:टक्कुम	*न:ट-न्न:-अ*	*न:ट-*	चल

(iii) इस उपवर्ग में ऐसे एकाक्षरी शब्द, जिनके अंत में यदि -*र*- और -*न*- है तो *न्त* >-*न:न:* फिर वत्स्र्यकरण की प्रक्रिया से गुजरते हैं। इसके अतिरिक्त अगर एकाक्षरी शब्दों की धातु में दीर्घ स्वर हो तो -*नन*- छोटा -*न*- हो जाता है।

1. *(व्यं) स्वॅ* { *र* / *न* } -*न:न*> *(व्यं) स्वॅ नन*

2. *(व्यं) स्वॅ -र -न:न*> *(व्यं) स्वॅ* न

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
बरुम	*बन्न*	*बर-*	आ
तरुम	*तन्न*	*तर-*	दे
तिन्नु:म	*तिन्न*	*तिन-*	खा
चेरुम	*चेन*	*चेर-*	जुड़
ईरुम	*ईन*	*ईर-*	काट

(iv) *ळ*- से अंत होने वाली धातु में -*न्त*- मूर्धन्यीकृत होता है।

ळ - न्त > ण्ट

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
आळुम	*आण्टा*	*आळ-*	डूबा
नीळुम	*नीण्टा*	*नीळ-*	लंबा
उरुळुम	*उरुण्टा*	*उरुळ-*	गोला
कमळुम	*कमळ्त*	*कमळ-*	औंधा

(v) कुछ संदर्भों में -*ळ*- में व्यंजनांत धातु के पहले स्वर हो तो *ण्ट*>*ण* होता है।

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
ओळुम	*ओण*	*ओळ्-*	खोदा

बाळुम	*बाण*	*बाळ्-*	पति/पत्नी
ताळुम	*ताण*	*ताळ्-*	डूबा

उपर्युक्त सभी के अंत में जो *-ळ-* धातु होती है, उसको ऐतिहासिक रूप से *ष़* माना जाता है। इनका *ळ* और *ष़* में परिवर्तन हो जाने के बाद भी ये आंशिक रूप से रूपिम-स्वनिमिक दृष्टि से अलग हैं।

(vi) तालव्य स्वर और *-य-* के बाद भूतकालिक संरूप (allomorph) *-न्त-* का तालव्य और अनुनासिक से समीकरण होता है, जिसके परिणामस्वरूप *-ञ्ञ-* बनता है।

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
आयुम	*आञ्ञा*	*आय-*	फैला
मेयुम	*मेञ्ञा*	*मेय-*	बिछा
अळियुम	*अळिञ्ञ*	*अळि-*	हल्का हो
पीयुम	*पीञ्ञा*	*पी-*	निचोड़ा/सड़ा
इरियुम	*इरिञ्ञा*	*इरि-*	जला
अणयुम	*अणञ्ञा*	*अण(य)-*	उपागम

वर्ग IV: संरूप -तत-

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
अरुः-क्क्-उम	*अरुः-त्त-अ*	*अरुः-(क्क)-*	कटा
मण-क्क्-उम	*मण-त्त-अ*	*मण(क्क)-*	सूँघा
पवि-क्क्-उम	*पवु-त्त-अ*	*पवु(क्क)-*	बाँटा
को-क्क्-उम	*को-त्त-अ*	*को(क्क)-*	पिरोना
ओ-क्क्-उम	*ओ-त्त-अ*	*ओ(क्क)-*	उपयुक्त होना
मू-क्क्-उम	*मू-त्त-अ*	*मू(क्क)-*	पका होना

इस वर्ग की कुछ क्रियाएँ सकर्मक में परिवर्तित सबल (strong) क्रियाएँ हैं।

अरुः-क्क्-उम	*अरुःत्त-अ/अरुः(क्क)-*	कटा	*<अरुः*	समाप्त
तकरः-क्क्-उम	*तकरः-त्त-अ/तकरः(क्क)*	तोड़ा	*<तकरः*	टूटा

(vii) जिन धातुओं के अंत में अनुमार्गनीय (traceable) अंतिम व्यंजन *ल* हो तो *-तत-* का *-रःरः-* हो जाता है।

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
बि-क्क-उम	*बि-ट्ःटः-अ*	*बि(ल)-(क्क)-*	बेच
		(तुल. बिला)	दाम
तो-क्क-उम	*तो-ट्ःटः-अ*	*तो(ल) (क्क)-*	हारना
		(तुल. तोल्वि)	हार

संधि नियम है– *ल-तत>-ट्ःटः*

(viii) यह मूर्धन्यीकरण के समान है, जिसके बाद "अनुमार्गनीय" *-ळ-* हो।

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
ई-क्क्-उम	*इ-ट्ट-अ*	*ई(ळ)(क्क्)*	खींच

		तुल. ई-(ळ)	(तुम्हारी) खींच
ता-क्क्-उम	*ता-त्त-अ*	*ता-(ऴ)(-क्क्-)*	नीचे दबा
		तुल. ताषुम	नीचे दब जाए
		ताषे	के नीचे

संधि नियम है– *-ळ- तत>ट्टः*

(ix) तालव्य स्वर और *य-* के बाद संध्वनि *-तत-* का तालव्य समीकरण (assimilation) हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप वह *-चच-* बन जाता है।

भविष्यत	**भूत**	**मूलधातु**	**हिंदी**
अय-क्क्-उम	*अटि-चच्-अ*	*अटि(क्क)-*	मार
करुः-प्पि-क्क्-उम	*करुः-प्पि-च्च्-अ*	*करुःप्पि-(क्क)*	काला कर
ते-क्क्-उम	*ते-च्च्-अ*	*ते(क्क)-*	लिपा
ळेय्क्क्-उम	*ळाय-च्च्-अ*	*ळाय-(क्क)-*	बिठा

अवधारक भूत, आसन्न भूत और पूर्ण भूत

सामान्य भूतकाल के अलावा लक्षद्वीप मलयालम में तीन और भूतकालिक संरचनाएँ पाई जाती हैं, जो सहायक संरचना के रूप में उत्पन्न हुई हैं। चूँकि यह स्पष्ट नहीं है कि कौन-सी क्रिया सहायक क्रिया है, अतः समकालिक रूप से उन्हें केवल प्रत्यय माना जा सकता है।

(i) **अवधारक भूत**

चाट-ईना	कूद लिया था
कण्ट-ईना	देख लिया था
बिटःटः-ईना	बेच लिया था

(ii) **आसन्न भूत**

इस संरचना में लक्षद्वीप मलयालम में क्षेत्रीय आधार पर कई अंतर हैं।

अंद्रोत्त	**अगत्ति**	**अमिनि**	**हिंदी**
चाटिप्पेन	*चाटिप्पोय*	*चाटिप्पान*	कूदा है
पाटिप्पेन	*पाटिप्पोय*	*पाटिप्पान*	गाया है
कण्टवेन	*कण्टुपोय*	*कण्टुप्पान*	देखा है
केट्टवेन	*केट्टपोय*	*केट्टप्पान*	सुना है
बिट्टःप्पेन	*बिट्टःपोय*	*बिट्टःप्पान*	बेचा है

(iii) **पूर्ण भूत**

अंद्रोत्त	**अगत्ति/अमिनि**	**हिंदी**
चाटिनाना	*चाटिनियाञ्ञा*	कूदा था
पाटिनाना	*पाटिनियाञ्ञा*	गाया था
कण्टुनाना	*कण्टिनियाञ्ञा*	देखा था
बिट्टिःनाना	*बिट्टिःनियञ्ञा*	बेचा था

कृदंत

वे भूतकालिक प्रत्यययुक्त क्रिया धातुएँ (जिसमें पूर्ण चिह्न *-अ* नहीं हो) कृदंत (participle) हैं, जिनमें भूतकालिक संरूप व्यंजनांत हो, और यह व्यंजन अपरिवर्तनीय "उच्चारक *-उ*" के साथ हो–

कुन्नि	*ओडिया*	बच्चा दौड़ा
कुन्नि	*ओडि(य) येत्तिया*	बच्चा दौड़ता हुआ आया
ओळ केट्टा		उसने पूछा (उसने स्त्री.)
ओळ केट्टु	*चोल्लिया*	सुनकर वह बोली

वृत्ति

आज्ञार्थ

1. जिस क्रिया धातु में थोड़ा परिवर्तन हो या बिलकुल परिवर्तन न हो, वह आज्ञार्थक विधि रूप में अपनाई जाती है।

पो	जा
केळ	सुन
परः/परःय	बोल

2. आदरसूचक आज्ञार्थक वृत्तियाँ प्रत्यय *-ए* के जुड़ने से बनती हैं, जबकि अगत्ति में प्रत्यय *-आम* जुड़ता है।

अगत्ति	**अन्य द्वीप**	**हिंदी**
बायम	*बाए*	आइएगा
चीयम	*चीए*	कीजिएगा
काणम	*काणे*	देखिएगा
केळम	*केळे*	सुनिएगा

3. कल्पेनि में *-कार* तथा अन्य द्वीपों में *-ऊडु* जोड़कर एक विस्तारित आज्ञार्थक वृत्ति बनाई जाती है। धातु के साथ सीधे *–कार* और कृदंत के साथ *–ऊडु* जोड़ा जाता है।

कल्पेनि	**अन्य द्वीप**	**हिंदी**
बरुकार	*बन्नूडु*	आएँ
केळुकार	*केट्टूडु*	सुनें

अनुज्ञेय

अनुज्ञेय प्रत्यय *-ट्ट-* स्वनिकीय (इ) के बाद आने वाले "उच्चारक *-उ"* के साथ होता है, इसे व्यंजनांत धातु में *-उ-* धातु के अंतिम व्यंजन और *-टट-* के बीच में जोड़ा जाता है। एक धातु या उसके विकल्प का यदि *-य-* से अंत हो रहा हो तो स्वर *-इ-* जोड़ा जाता है। अतः ये दोनों *-उ-* और *-इ-* स्वनिकीय (phonetically) केंद्रीकृत हैं।

निः-क्क्-(उ)-ट्ट-(उ)	रहने दो, ठहरो
चाट्-(उ)-ट्ट- (उ)	कूदने दो
बय्-(इ)-ट्ट-(उ)	आने दो

जब आने के लिए आज्ञा माँगी जा रही हो, तो इस रूप के साथ *-ए-* प्रत्यय जुड़ता है।

नाःन बयिट्ट-ए	क्या मैं आ सकता हूँ?

निश्चयात्मक

निश्चयात्मक वृत्ति अंद्रोत्त में *-ओणुम*, अमिनि में *-ओण्टुम* और अगत्ति में *-आण्टुम* बनती है।

अंद्रोत्त	**अमिनि**	**अगत्ति**	**हिंदी**
पाटोणुम	*पाटोण्टुम*	*पाटाण्टुम*	गाना है
कळिक्कोणुम	*कळिक्कोण्टुम*	*कळिक्काण्टुम*	खेलना है

अनुमोदनात्मक

अनुमोदनात्मक प्रत्यय *-आम* और *-किलाम* स्वतंत्र परिवर्तनीय हैं।

नूःक्कु पर्ःकिलाम/परःवाम	हम बोल सकते हैं
निःङ्ङक्कु नःटक्किलाम/नःटप्पाम	आप जा सकते हैं

निषेधात्मक

(i) उण्टु यानि "अस्तित्व" का निषेधक *इल्ला* है, जो समवाक्यों में प्रयुक्त होता है।

कळ्ळन कप्पलुळ इल्ला	चोर जहाज के अंदर नहीं
ओनः मम्मद्(उ) इल्ला	वह मम्मद नहीं यानि वह मम्मद नहीं है।

(ii) अमिनि और अंद्रोत्त में *-इला* पदलोपचिह्न है वहीं अगत्ति में *-अल्ला* निषेधात्मक है।

अमिनि और अंद्रोत्त	**अगत्ति**	**हिंदी**
कुळिच्च्-एला	*कुळिच्च्-अल्ला*	नहाया नहीं
बन्न्ः-एला	*बन्न्ः-अल्ला*	आया नहीं

(iii) वर्तमान काल में *-इला* अमिनि और अंद्रोत्त में निषेधात्मक है। जबकि अगत्ति में सबल क्रियाओं में *-इला* के स्थान पर *अल्ला* प्रयुक्त होता है। अबल क्रियाओं में वर्तमान काल प्रत्यय को *-व-* से और सबल क्रियाओं में *-पप-* से स्थानांतरित किया जाता है।

अमिनि और अंद्रोत्त	**अगत्ति**	**हिंदी**
कळि-प्प-एला	*कळि-प्प-अल्ला*	खेलता नहीं
काण्-(उ)-व-एला	*काण्-(उ)-व-एला*	दिखता नहीं
नूःक्क्-(उ)-व-एला	*नीक्क्-(उ)-व-एला*	देखता नहीं

(iv) भविष्यत काल और निषेधात्मकता दोनों की अभिव्यक्ति हेतु *-आ* प्रत्यय प्रयुक्त होता है।

नःट-क्क्-आ	जाएगा नहीं
तर्-आ	देगा नहीं

निरोधात्मक

किसी भी क्रिया का निषेध *-अरुतु* से बनता है। इसे -ए- जोड़कर एक निवेदन के रूप में बनाया जाता है।

पोक-अरुतु	मत जाना
पोक-अरुत-ए	कृपया मत जाइए
नःट-क्क-अरुतु	मत चल

नःट-क्क-अरुत-ए कृपया मत चलिए

अंद्रोत्त में इसके लिए *-अय्य* जोड़ा जाता है–

पोक्-अय्ये कृपया मत जाइए

नःटक्क्-अय्ये कृपया मत चलिए

"कोई कार्य करने में प्रतिबंध" जैसे अर्थ के लिए *-अरुतु* के साथ *-आना* जुड़ता है–

पोक-अरुत-आना जाना नहीं चाहिए था

नःटक्करुत-आना चलना नहीं चाहिए था

संज्ञा विशेषण

संख्या

ओन्नुः "एक" का बद्ध विकल्प है।

उर-*(उ)*

उरु *कोल्लम* एक वर्ष

उर-आळ एक आदमी

उर-आच्च एक सप्ताह

उरु से लिंगसूचक प्रत्यय जुड़ने पर यह संज्ञा बन जाती है-

उरु-त्त्-अनः एक पुरुष/कई पुरुष

उरु-त्त्-इ एक महिला/कई महिलाएँ

ओन्नु से एक और विकल्प *ओट्टः* यानि "केवल एक" बनता है।

ओट्टःक्कुन्नि केवल एक बालक

ओट्टःउर-आळ केवल एक आदमी

रण्टु "दो", *मून्नू* "तीन" और *अंचु* "पाँच" जैसे बद्ध विकल्प रूप नीचे दिए जा रहे हैं–

इरु/ईर, *मु/मू, अय-/अयम*

इरुवर दो लोग

ईरेळु दो गुना सात

मूवर/मूकर तीन लोग

मून्ना:ल तीन गुना चार

अय्यारुः पिळ्ळयाळ पाँच या छह बच्चे

अप्राणिवाचक संज्ञाएँ कभी बहुवचन रूप में प्रयुक्त नहीं होतीं।

पत्तु रावु दस रातें

ना:लु पैयु चार गायें

संख्या के साथ *आम-अत्त* जुड़ने पर "उस जगह को पूरा करने" का अर्थ बन जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह क्रमसूचक संख्या बन जाती है।

ओन्ना:मत्ते पिरा	पहली झोपड़ी
अंञ्चामत्ते पिरा	पाँचवीं झोपड़ी

विशेषण

1. कुछ विशेषणों की भूतकालिक संबंध कृदंत संरचना होती है, लेकिन उनमें कोई उल्लेखनीय बिंदु नहीं है।

करुःत्त पैवुयु	काली गाय
बेलुत्त आडु	सफेद बकरी
चिकन्नः कडलास	लाल कागज

2. कुछ ऐसे स्वतंत्र रूप भी हैं, जो वास्तव में विशेषण के गुण रखते हैं-

नःल्ल पैयुवु	अच्छी गाय
चेत्त *कुप्पायम*	बुरा कपड़ा
बलिय मनिचन	बड़ा आदमी
पळिय सामानम	पुराना माल
पुतिय तुणि	नया कपड़ा
चिरिय पेर	छोटी लोबिया

संबंधकारी कृदंत

1. क्रिया के भूतकालिक और वर्तमानकालिक रूपों के साथ प्रत्यय *-अ* जोड़ने से संबंधकारी कृदंत बनते हैं। लक्षद्वीप मलयालम की पूर्ण क्रियाएँ भूतकाल में *-अ* प्रत्यय युक्त हैं, औपचारिक रूप से संबंधकारी कृदंत भी पूर्ण क्रियाओं का रूप ले लेता है।

कुन्नि बन्ना	बच्चा आया
बन्नाः कुन्नि	आया हुआ बच्चा
कुन्नि बयिण्टा	बच्चा आता
बयिन्त कुन्नि	आता हुआ बच्चा

भविष्यतकालीन पूर्ण क्रियाओं से कोई संबंधकारी कृदंत नहीं बनता। वर्तमानकालिक संबंधकारी कृदंत ही भविष्यतकालीन कृदंत को व्यक्त करते हैं।

इसीलिए

नाःळे मळपेय्युम	कल पानी बरसेगा (कल बारिश होगी)

-से हमें

नाःळे पेय्यिण्ट मळ	कल होने वाली बारिश का पता चलता है।

2. नकारात्मक संबंधकारी कृदंत का कोई काल नहीं है। इसे बनाने के लिए *-आत्ता* जोड़ा जाता है (*आ* नकारात्मक प्रत्यय, *-त्त-* रूपिम कड़ी और *-अ* संबंधकारी कृदंत)

ओन चोल्लात्त बात्त	वह न बताता समाचार यानि जो समाचार वह नहीं बताता
केळात्त कार्यम	अनकही बात

अपूर्ण क्रियार्थक संज्ञाएँ

क्रियार्थक संज्ञाएँ संबंधकारी कृदंत से संख्यावाचक प्रत्यय जोड़कर बनती हैं।

पुल्लिंग एकवचन	*ळयक्किन्तोन*	वह जो बैठा है
स्त्रीलिंग	*ळयक्किन्तोळ*	वह जो बैठी है
उभयलिंग बहुवचन	*ळयक्किन्तो*	वे जो बैठे हैं
नपुंसकलिंग एकवचन	*ळयक्किन्तटु*	वह (सामान) जो रखा है

क्रिया विशेषण

(i) **क्रियार्थक कृदंत**

कृदंत वाली स्थिति को मज़बूत करने के लिए एक सहायक कृदंत उपलब्ध है।

बन्नु पो	आया तो, जा
बन्न-एच्चु पो	आया तो, (उसके बाद) जा

(ii) **अनियत कृदंत**

अनियत प्रत्यय *-वाम* की दूसरी संध्वनि *-पपआम* है, जो सबल क्रियाओं (strong verbs) के बाद बनती है।

पो-वाम् चेल्लिया	जाने को कहा, यानि कहा कि जा
कुळि-प्पाम् बन्ना:	नहाने को आया, यानि नहाने आया

(iii) **सप्रतिबंधी कृदंत**

क्रिया विशेषण के लिए प्रत्यय *-एनकु* या *अ(ळ)* जोड़कर प्रतिबंधित रूप बन जाता है।

चेय्तेड-कु/चीयाअ(ल)	अगर करें तो

प्रत्ययप्राप्त रूप (क्लिटिक्स) और प्रत्यय

संयोजक

अंद्रोत्त में *-उम* और अन्य द्वीपों में *-इम*

अंद्रोत्त	**अन्य द्वीप**	**हिंदी**
ओन-इम् ओळ-इम	*ओन-उम् ओळ्-उम्*	वह (आदमी) और वह (औरत)
ओन-इम्	*ओन-उम्*	वह (आदमी) भी

प्रश्नवाचक

प्रश्नवाचक क्या- "कर के समान" अगत्ति में *-ई* और अन्य द्वीपों में *-इया*

अगत्ति	**अन्य द्वीप**	**हिंदी**
कनःट-ई	*कण्ट-इया*	क्या (किसी ने) देखा?
काणिन्ट-ई	*काणिण्ट-इया*	क्या (कोई-एकवचन) देखता है?

भविष्यत काल में प्रश्नवाचक "क्या- कर के समान" क्लिटिक *-आ* है।

काणुङ्ङ-आ	क्या देख सकते?

यहाँ लागू होने वाला संधि नियम इस प्रकार है–

उम>उङ्ङ-/-स्वर

विस्मयादिबोधक

सबसे ज़्यादा सामान्य विस्मयादिबोधक -*ओ* "ठीक" और -*अय्यो* "नहीं" है।

शब्दक्रम

लक्षद्वीप मलयालम में नियमित द्रविड़ क्रम है– कर्ता-कर्म-क्रिया, जिसका स्वतंत्र रूप से सबसे ज़्यादा उपयोग होता है।

नीः ओळ कण्टिया? "तुमने उसे देखा?" यानि "क्या तुमने उसे देखा?"

कर्ता	कर्म	क्रिया-प्रश्नचिह्न
नीः	ओळा	कण्टिया?

शब्दक्रम में उल्लेखनीय शैलीगत परिवर्तन द्रष्टव्य है।

कर्म	कर्ता	क्रिया-प्रश्नचिह्न?
ओळा	नीः	कण्टिया?
क्रिया-प्रश्नचिह्न	कर्ता	कर्म
कण्टिया?	नीः	ओळा
क्रिया-प्रश्नचिह्न	कर्म	कर्ता
कण्टिया?	ओळा	नीः

समीकरण जैसा वाक्य

समीकरण जैसे वाक्यों में "होना" क्रिया के लिए अंद्रोत्त में *अन्ताय*, अमिनि में आयिण्टोम और कवरत्ती में आण्टोम प्रयुक्त होता है। यह "होना- क्रिया" ऐच्छिक है जो कथन पर बल देती है।

ओन्	*मम्मद*	वह (है) मम्मद
ओळ्	*बंबत्ति*	वह -औरत (है) बलवती
अतु	*नःल्लतु*	वह -माल (है) अच्छा

शब्दावली

रिश्ते-नाते के शब्द, घर, परिवार

शब्द	**हिंदी**	**शब्द**	**हिंदी**
पुरा	घर, आवास, झोपड़ी, झुग्गी, खुद का घर	*उम्मा*	माता (अम्मि)
अंद्रोत्त: *पिरा*		*बलियोम्मा*	नानी
पुरा *कुटि, चेरि,* *इल्लम* आदि भी	मायका (मातृकुलीन आवास) जिससे व्यक्ति का संबंध है।	*बाप्पा*	पिता

शब्द	हिंदी
चेरि	बस्ती जिसमें घर हो
चेरिक्कार	पड़ोसी
बाड	पिता का घर (पीहर)/ जिसके *मुत्तियोआ* और *तित्तियोडा* आदि नाम भी हैं
[मुत्ति/तित्ति	दादी
-ओडा	वह जगह, जुड़कर ही "घर" बनता है
हुब्बा	मीनार
आला	गोशाला
हुजिरा	कव्वाली (संगीत सभा) के लिए इमारत
इडुप्पु	इमारत
बीडु	पत्नी का घर
उळ्	अंदर, घर के अंदर
अरः	घर का कमरा, विशेषकर शयनकक्ष
इडयावारम	गलियारा
बडाप्पुरःम	बैठक का कमरा
बायिल	द्वार, दरवाजा
इराः	बरामदा
अळि	खिड़की/सलाखा
विचाविरि	अर्गला (कुंडी)
कळुक्कोल	छत का तरापा (राफ्ट)
बारि	छप्पर या खपरा बिठाने की पट्टी
किळ	शिकंजा
कुटिक्कारः(र)	घनिष्ठ संबंधी
कुटिक्काडक्कल	गायक जो घर-घर गाते हैं

शब्द	हिंदी
अगत्तिः *उप्पा*	
कल्पेनिः *उप्पाप्पा*	
बलिय बाप्पा	दादा
अगत्तिः *उप्पाप्पा*	
मामा/मामम्	मामा
मामि/मायि	मामी
पेङ्ङळ	भाई या भाइयों की सगी बहन
आङळा	बहन या बहनों का सगा भाई
इत्तात्त	दीदी, बुजुर्ग महिलाओं के लिए संबोधित शब्द
इक्का/इक्काक्का	जीजा, बड़ा भाई
इळयोळ	छोटी बहन
इळयोन	छोटा भाई
पिळ्ळा	बच्चा
अंद्रोत्तः *पुळ्ळा*	
मोन्	बेटा
अगत्तिः संबोधन शब्दः *मान-ए*	
मोळ्	बेटी
मरुमकळ्	भानजी
मरुमकन्	भानजा
मङ्ङलम्	शादी
बीडर्/सउजत्तु	पत्नी
बी/बीबि	आदरणीय महिला, कोया परिवार की एक महिला
पुरिचम्	पुरुष, पति
आण्	पुरुष, एक बलवान पुरुष, संरक्षक

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
तरःवाडु	संयुक्त परिवार, जिसमें एकल परिवार भी जुड़े हों	*अळियन्*	साला यानि पत्नी का भाई या बहन का पति जिसने अपने *चेरि* या खानदान से शादी की हो
तायित्तरःवाडु	उपविभाजन के पहले का मूल परिवार	*मरुमोळ्*	बहू
जाति	जाति	*मरुमोन्*	दामाद
चेरिक्कल	अंद्रोत्त का मुख्य परिवार	*अव*	वह (आदरसूचक), एक महिला द्वारा अपने पति के लिए संबोधन
कारणोम	मातृकुलीन संयुक्त परिवार का मुखिया (बुजुर्ग मामा)		
अंद्रोत्तः *कारणोन*			

शरीर के अंगों के नाम

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
तला	सिर	*कयक्कोळि*	काँख
मीडु	मुख	*कोळुत्तु*	प्रबाहु (बाजू)
मुडि	बाल	*बिरल्*	उँगली
ओमम्	रोंगटा	अंद्रोत्तः *बेरल्*	
कण्	आँख	*चुणु/चुण्टम/*	
कोङ्कण्	भेंगी आँख	*सहत्तु बिरल*	तर्जनी
कुञ्ञित्तिरुट्टि	पुतली	*मारुः*	छाती
इमा	पलकें	*मुल*	स्तन
पिरिकम्	भौंह	*अर*	कमर
चेवि	कान	*बेर्*	पेट
कात	कनपटी	*कुंबा*	तोंद
कुन्निः	कनपटी का ऊपरी भाग	*कुरुळ्*	हृदय, जिगर
तट्टु	लोलकी (इयर लोब)	*कऌला*	उरु-मूल/वंक्षण
चेन्नि	कान के नीचे का गाल (चेहरा)	*ऊरा*	नितंब
मूक्क्	नाक	*करुवु*	भ्रूण
बा	मुँह	*मरुःमम्*	शरीर का मर्मस्थल

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
उमिनीर्	लार	*बीरप्पु*	साँस/पसीना
चिरि्रः	होंठ	*काट्टुः*	साँस की हवा
किल्तानः *तोण्टम*		*अवुरत्तु*	नंगापन
चङ्कु	गला	*मवुत्तु*	मृत्यु
तोक्कु/मुयिप्पु	कंधा	*मय्यत्तु*	शव (मानव का)
पिरति	गले के पीछे का भाग	*चवम*	शव (मानवेतर)
कय्	हाथ	*आयसु*	आयु

संख्यासूचक शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
अरा	आधा	*उर-आयिरम*	एक हज़ार
पाति	आधा	*इरु-पत्तु*	बीस
ओति	हिस्सा/भाग	*मुप्पत्तु*	तीस
ओन्नुः	एक	*मू-व-आरुः*	तीन गुना छह
रण्टु	दो	*ना:ल-आयिरम*	चार हज़ार
मून्नुः	तीन	*अय-य-आयिरम*	पाँच हज़ार
ना:लु	चार	*अंपतु*	पचास
अञ्चु	पाँच	*आरः-आयिरम*	छह हज़ार
आरुः	छह	*अरुः-पतु*	साठ
एळु	सात	*एळ-आयिरम*	सात हज़ार
एट्टु	आठ	*एळुपतु*	सत्तर
ओम्पतु	नौ	*एण्-ण-आयिरम*	आठ हज़ार
पत्तु	दस	*तोळ्-ळ-आयिरम*	नौ हज़ार
उरु	एक, विशेषण स्थानों में	*तोण्-णूरु*	नब्बे
इरु	दो, विशेषण स्थानों में	*पय्-न्-ओन्नु*	ग्यारह
मू/मु	तीन, विशेषण स्थानों में	*पंति-रण्टु*	बारह
ना:ल	चार, विशेषण स्थानों में	*पय्-मून्नुः*	तेरह
अय/अय-म	पाँच, विशेषण स्थानों में	*पत्त-ओंपतु*	उन्नीस
आरः/आरुः	छह, विशेषण स्थानों में	*अंच्-आरुः*	पाँच या छह
एळ/एळ	सात, विशेषण स्थानों में	*ओन्न्ः-आम-तरम*	पहले दर्जे का/प्रथम
एण/एम	आठ, विशेषण स्थानों में	*ओन्न्ः-अराडम*	एक दिन छोड़कर
तोळ/तोण	नौ, विशेषण स्थानों में	*आयिरम*	1000, पूर्ण – जैसे *नाट्टायिरम* द्वीप के सभी लोग
पय-न/पन्ति/पत्त-	दस, विशेषण स्थानों में	*आक*	योग, कुल

समय, स्थान, दिशासूचक शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
मुन्नम्	एक ज़माने में, पहले	*-आरुः*	माह, *कन्निआरुः* संयुक्त सदस्यों में दूसरा सदस्य (यानि, *कन्नि* माह)
मुन्नल्	पहला	*अटियंतिरम*	मृतकों का स्मृति दिवस, मृतकों के नाम बड़भोज
अव्वल्	पहला	इ-	बद्ध धातु जो निकटता की वाचक है, जैसे इन्नुः "आज" आदि
अव्वल् सुबय्क्कु	पौ फटने पर	*अ-*	बद्ध धातु जो दूरस्थ की वाचक है, जैसे *अन्नुः* "उस दिन" आदि
आतियम	पहला, फिर एक बार, बार-बार	*इबुटा*	यहाँ
इन्नि/इनि	अब से	कल्पेनिः *ईले*	
अप्प	तब	*अबुटा*	वहाँ
इप्प	अब	*इब्बय्*	इस ओर, हिस्सा, दिशा
अगत्तिः *उप्पम*		कवरत्तीः *इब्बिलम*	
अन्नुः	वह दिन	*अंबय/अब्बय*	उस ओर, हिस्सा, दिशा
इन्नुः	आज का दिन	*अरःबा*	समुद्र तट
एन्नुः	किस दिन	*इरःक्कम*	ढलान, बेचैनी
पुराणम	एक बहुत पुरानी घटना	*काडु*	उपजाऊ खेत, घर के आँगन के अतिरिक्त कोई घिरा हुआ स्थान
नाळ्	दिन	*मुट्टःम*	आँगन
पकल्	दिन, उदय से अस्त तक	*कीळ*	नीचे, पूर्व
सुब	सुबह	*कीळे बा*	पूर्वी दिशा
उच्च	दोपहर	*कीक्करा*	समुद्र तट, पूर्वी तट
असर	शाम	*ताळ/ताळे*	नीचे, अंतिम
असरप्पू	शाम का फूल	*तेक्कु*	दक्षिण
अंति	सूर्यास्त, गोधूलि बेला	*तेक्कणंति*	दक्षिणी दिशा (लोक साहित्य में समुद्री यात्रियों द्वारा प्रयुक्त)

शब्द	हिंदी
आच	सप्ताह/सप्ताह का एक दिन
ना:राच	रविवार
तिंकलाच	सोमवार
चोव्वाच	मंगलवार
पुतन/बुतनाच	बुधवार
वियाडाच	गुरुवार
बेळ्ळेयाच	शुक्रवार
चेनियाच	शनिवार
तिंकलाच	एक पुरुष की व्यक्तिगत आय, जो उसके मातृकुलीन संयुक्त परिवार को न देकर उसकी पत्नी और बच्चे को देय हो
बेळ्ळियाच	मातृकुलीन जायदाद
मातम	चाँद, माह
चिङ्ङम	पहला महीना (अगस्त-सितंबर)
कन्नि	दूसरा महीना (सितंबर-अक्टूबर)
तुलाम	तीसरा महीना (अक्टूबर-नवंबर)
बिरिच्चिकम	चौथा महीना (नवंबर-दिसंबर)
दनु	पाँचवाँ महीना (दिसंबर-जनवरी)

शब्द	हिंदी
बिरांते	दक्षिण-पश्चिमी दिशा (लोक साहित्य में समुद्री यात्रा के लिए)
मेल	पश्चिम
मेलेबा	पश्चिमी दिशा
अमरंति	स्तंभ की दिशा, पश्चिम
बड़क्कु	उत्तर
उत्तरंति	उत्तर (लोक साहित्य में समुद्री यात्रा के लिए)
कच्चाम	उत्तर-पश्चिमी हवा
अवुळ	निम्न भूमि, जहाँ अनाज और दालों की खेती होती थी
आरुः	समुद्री तट, संयुक्ताक्षर जैसे *कावेरियारुः* में प्रयुक्त समुद्री तट जो प्रांगण के पास हो
बिल्लम	समुद्रताल (लैगून)
अरःलु	अक्षांश (लोक साहित्य में समुद्री यात्रा के लिए प्रयुक्त)
लाक्कु	लक्ष्य, निशाना
मलयाळम	भारत का पश्चिमी तटवर्ती इलाका, जो कन्याकुमारी से कुंतापुरम तक फैला है
करा	मुख्य भू-भाग
करपिडिक्क(ल)	गंतव्य स्थान पर पहुँचना

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
मकरम	छठा महीना (जनवरी-फरवरी)	*करक्कार*	मूख्य भू-भाग के सरकारी कर्मचारी
कुंपम	सातवाँ महीना (फरवरी-मार्च)	*अङ्ङाडि*	मुख्य भू-भाग की मंडी
मीनम	आठवाँ महीना (मार्च-अप्रैल)	*इय*	मध्य स्थान, संभावना
मेडम	नौवाँ महीना (अप्रैल-मई)	*इडच्चेरि*	दो विभागों में बँटे हुए निवासियों के बीच का प्रदेश
इडवम	दसवाँ महीना (मई-जून)	*इडम*	स्थान
मितुनम	ग्यारहवाँ महीना (जून-जुलाई)	*इय्यिडम*	यह प्रदेश
करुक्किडकम	बारहवाँ महीना (जुलाई-अगस्त)	*इडपुरःम*	बाईं ओर
तुलाक्कोळ	नवंबर में उत्तर पूर्वी मानसून की अंतिम आँधी	*बलपुरःम*	दाईं ओर
इडवप्पाति	जून में दक्षिण पूर्वी मानसून का आरंभ	*बीति*	चौड़ाई
पंचांगम	पारंपरिक कैलेंडर	*नीळम*	लंबाई

भूमि, आकाश, समुद्र, वर्षा, सूर्य, चंद्रमा आदि से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
पूमि	भूमि	*काट्टुः*	हवा
दुनियावु	दुनिया	*ओबा*	आँधी
मण	भूमि, मिट्टी	*मेकम*	बादल (केवल गीतों में)
कल	पत्थर	*कारुः*	काला बादल
आकाचम/आहाचम	आकाश	*मळ*	वर्षा
अंद्रोत्त: *आकासन*		*अडमळ*	मूसलाधार बारिश
जन्नत्त	स्वर्ग	*अहुराःबु*	मौसमी वर्षा
सरकम	स्वर्ग	*चम्सु*	सूर्य
जहन्नम	नरक	*तिङ्ङल*	चंद्रमा
आहरुः	प्रपंच का अंत	*कवु*	ध्रुव तारा
आहिरम	दूसरी दुनिया	*कल्हु*	दक्षिण-पश्चिम में अस्त होने वाला तारा

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
हूरिः	दिव्य किशोरी	*सुल्लबार*	लोक साहित्य में उल्लिखित तारा
कडल	समुद्र	*चिमाक्कु*	लोक साहित्य में उल्लिखित एक चमकीला तारा
बहाल	महासागर	*चोति*	स्वाति नक्षत्र (लोक साहित्य में नाविकों का), तारा
पिट्टि	छोटा द्वीप	*सुबयिल*	दक्षिणी तारा
बारःण	छोटी लहरों वाला हल्के हरे रंग का सागर, जो द्वीपों के पास हो	*हिमरोन*	चमकीला तारा (लोक साहित्य में नाविकों का)
मोजा	बड़ी लहर	*अय्यूह*	उत्तर-पश्चिम में अस्त होने वाला तारा
हवा/हवाकाट्टुः	समीर	*हल्ह*	दक्षिण-पश्चिम में अस्त होने वाला तारा

प्रकाश, चमक, अँधेरा, रंग से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
बिळिल	प्रकाश, सूर्य (*बिलिल* के जैसा)	*लात्तिरि*	आतिशबाजी जो चाँदनी जैसे चमके
उदिच्चीन	उदय, सूर्योदय	*ला*	चाँदनी
लेम्मि	प्रकाश की किरण, प्रतिबिंब	*बेल*	सूर्य की रोशनी
ओळिवु	चमक, प्रकाश	*इरुट्टु*	अँधेरा

पेड़ों, पशुओं से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
करिङ्ङा	हरे रंग का नारियल/वह पेड़ जिसमें ऐसा फल हो	*चाळुवम*	चील
चेङ्ङा	हल्के लाल रंग का नारियल/वह पेड़ जिसमें ऐसा फल हो	*तत्त*	तोता
चेंतेङ्ङ	गहरे लाल रंग का नारियल/वह पेड़ जिसमें ऐसा फल हो	*चोक्कि*	हरी गौरेया
अंद्रोत्तः *चेंतिया*		*दरदाच्चि*	सफेद समुद्री चिड़िया

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
चेरुःक्का	द्वीप का सबसे छोटा नारियल/वह पेड़ जिसमें ऐसा फल हो	*अयिक्कूराः*	बांगड़ा (एक किस्म की मछली)
ळानि	कच्चा नारियल	*बाबल*	एक बड़ी मछली
करिक्कु	रसोई में काम आने योग्य पका हुआ नारियल	*चूरा*	टूणा मछली, जिसे स्थानीय लोग मास कहते हैं
कळ	ताड़ी	*कणवा*	एक बड़ी मछली
मीरा	मीठी ताड़ी (अकिण्वित)	*करट्टि*	समुद्र के चट्टानी इलाके में पाई जाने वाली लगभग 12 सेमी लंबी केसरिया रंग की मछली
चक्कर	गुड़ (ताड़, शंकुफल)	*अप्पल*	ओक्टोपस
अयिनि	जंगली कटहल का पेड़	*अलहम*	तटीय रेत में रहने वाला सफेद केकड़ा
करःमूसि	पपीता	*अमणि* अंद्रोत्तः *औणि*	बहुत छोटी चौरी मछली
इरुंःपु अंद्रोत्तः *एरुंःपु*	चींटी	*आम*	कछुआ
पैवु	गाय, *अंपा* (तुतलाती हुई सुंदर बोली में)	*आमत्तोडु*	कछुए का खोल
कुट्टि	जानवरों का बच्चा	*कडलाना*	नीली व्हेल (नीला तिमिंगल)
अरणा	बम्हनी (एक प्रकार की छिपकली) जो जहरीली मानी जाती है	*अंबर*	स्पर्म व्हेल (मोमी तिमिंगल) के पेट से निकला अंबरग्रिस, कई इत्रों का आधार। ये तीन प्रकार के हैं– *पूवंबर, पोन्नंबर और मीनंबर*

समुद्री यात्रा से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
कप्पल	जहाज	*अमरम*	पोत का स्तंभ
सपिना	जहाज/एक प्रकार की गीतात्मक रचना- जहाज गीत	*अणियम*	पोत का अगला भाग

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
पडवु	नाव के समान बड़ा जहाज	*उत्तिल*	*ओडम* का अगला भाग जहाँ लंगर रखा जाता है
उरुवु	मस्तूल वाली समुद्री नाव	*इरुंपु*	लोहा, लंगर
ओडम	तीव्रगति वाली समुद्री नाव	*कयकोल*	*ओडम* के पतवार में दिशा नियंत्रण के लिए घूमता चक्र
ओडि	*ओडम* जैसे दिखने वाली छोटी नाव	*अलामत्तु*	नाव खेने वालों को दिया जाने वाला संकेत
चिरिःयतु/चेरिःयतु अंद्रोत्तः *तोणि*	छोटी नाव	*बेट्टु*	पोतों द्वारा पहली पकड़ की मछली, जो द्वीपवासियों को मुफ्त में बाँटी जाती है

घरेलू भोजन, खाना आदि से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
किणर	कुआँ	*बिंपि*	रागी
तण्णि	पानी	*आणम*	सब्जी की तरी
करुवि	रसाई के बर्तन, थाली आदि	*अप्पम*	चावल से बनने वाली सूखी रोटी
चट्टि	घड़ा	*इडि.यडा*	पकी नमकीन रोटी
अम्मि	एक प्रकार की चक्की (गीला एवं सूखा अनाज पीसने के लिए)	*करुवा*	कसे हुए नारियल में भुनी मछली
आसुङल	पीसने का पत्थर (सूखे अनाज पीसने के लिए)	*इडि.यून्निः*	गेहूँ और घी से बनाया मीठा मांस
उरल	ऊखल	*अवल*	चावल का पुआ
लक्का	मूसल	*उण्डा*	गोल आकार का मीठा मांस
सान	थाली	*इडुमुंचि*	भाप में पका हुआ मीठा मांस, जो गेहूँ और चीनी से बनता है
सुप्रा	बचे हुए भोजन को रखने के लिए गोल डलिया या टोकरी	*सोगि*	एक प्रकार की खीर
अडयिल	लकड़ी का बना ढक्कन	*अलुवा*	गेहूँ और गुड़ में पका मीठा मांस

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
अडप्पु	ढक्कन	*बेळ्ळिच्चोरुः*	वर पक्ष की तरफ़ से विवाह पूर्व दिया जाने वाला भोज
अरि	कच्चा चावल	*पट्टिनि*	उपवास
चोरुः	पका चावल	*बरःम*	अकाल
अन्नम	खाना, विशेषकर पका चावल		

गहनों, कपड़ों से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
अलिक्कत्तु	कान के ऊपरी हिस्से पर पहने जाने वाले आभूषण (कर्णफूल)	*सारि*	साड़ी
कम्मल	एक प्रकार का कर्णफूल	*कम्मिस*	कुर्ता या चोली
कातिला	चौड़ा कर्णफूल	*तुणि*	पुरुषों द्वारा कमर में बाँधा जाने वाला कपड़ा
अरञ्ञाणम	चांदी या सोने की किंकिणी (करधनी)	*लुंकि*	कमर में बाँधने वाला रंगीन कपड़ा
काच्चि	महिलाओं के नरम रंगीन कपड़े	*करिंपाम्*	काले रंग का ऊन का कंबल, जिसमें से बू आती हो
कांकि	काला या हरा मोटा कपड़ा	*बुरःहा*	परदा
बेळ्ळा	जो सफेद हो, सफेद कपड़ा		

लेखन सामग्री से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
कडुलास	कागज	*मय*	स्याही
हलम	कलम		

भाषण, भाषा, ध्वनि से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
बाचा	भाषा, भाषा के प्रकार, बोली	*मुळि*	वाक, भाषा

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
पयक्कम	बातचीत, भाषण	*कुरल*	मानवीय वाणी, गला/ध्वनि
बात्ता	(बुरा) समाचार	*कुडम बिलि*	लोगों को सार्वजनिक कार्य के लिए शंख बजाकर एकत्र होने का आमंत्रण
पेचुम	गाली देगा	*बिळियाळम*	अलार्म बजना
परःयुम	विद्वेषपूर्ण वचन/बोल		

बुद्धि, व्यवहार, रीति आदि से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
बुद्धि/पुत्ति	बुद्धि	*पुकळ*	प्रशंसा
मातिरि	रीति	*पिराक्कु*	श्राप
हियालि	सुबोधन/जागरूकता	*पिळा*	गलती, विरोध करने योग्य
हरम	संतोष	*कुट्टःम*	पाप
तेरुक्कम	जिद	*चंडा*	झगड़ा
तरक्कम	विवाद	*पावम*	बेचारा
कम्मक्कु	रहस्य	*उचारु*	जोशीला
चंङ्का	शंका, शर्माना	*दीनम*	रोग
पिरिचम/-नः	प्रेम, प्यार	*बालुवम*	जवानी/यौवन
पुञ्आरम	फुसलाहट	*बालुवक्कारन*	एक युवा
कुंडम	समलैंगिक साथी		

ऑफिस, प्रशासन से संबंधित शब्द

शब्द	हिंदी	शब्द	हिंदी
अरक्कल	ऑफिस	*अनिःयायम*	याचिका, अर्जी
कारियक्कारम/-न	(परंपरागत) अधिकारी	*हरजु*	
कारणि	(परंपरागत) अकाउंटेंट	*तण्डम*	दंड, जुर्माना
अच्चन	एक *चेरि* का मुखिया	*उरुक्कार*	ज़मींदार
अडियलम	पहचान, निशाना		

लक्षद्वीप की साहित्यिक परंपरा

लिखित परंपरा

लक्षद्वीप की मौखिक साहित्यिक परंपरा बहुत समृद्ध है, जिसकी जड़ें द्वीपों की भाषा और संस्कृति पर टिकी हैं। यहाँ की लिखित परंपरा उत्तर केरल की मुस्लिम जनसंख्या से नज़दीकी प्रकट करती है। केरल की सर्वाधिक प्राचीन लेखन पद्धति *वट्टेषुत्तु* (Vaṭṭeẓuttu) के शिलालेख यहाँ भी प्राप्त होते हैं। अरबी-मलयालम लिपि, जिसमें मलयालम लिखी जाती है, को बाद में अपनाया गया। 1527 ई. में कल्पेनि में सबसे पुराना वट्टेषुत्तु शिलालेख पाया गया। लक्षद्वीप में अरबीमलयालम लेखन के साक्ष्य हमें लगभग 1930 के आसपास मिलते हैं। वर्तमान मलयालम लिपि का सबसे पहला प्रमाण सन् 1880 में मिलता है, जो कि मूख्य भू-भाग के अभिलेखों से बहुत बाद का माना जाता है। यहाँ धार्मिक कथ्यों से संबंधित साहित्यिक लिखित भाषा, परंपरागत वैद्य, और सामुद्रिक नाविक उल्लेख आदि मुख्य भू-भाग की मलयालम भाषा में ही उपलब्ध हैं। क्षेत्र की अपनी विशेष मौखिक भाषा का प्रभाव इसमें थोड़ा ही है। हम जानते हैं कि द्वीपवासियों द्वारा अपनी स्वतंत्र लिपि का आविष्कार नहीं किया गया है। अब भी, राजनीतिक भाषण, पत्रकारिता लेखन आदि में मुख्य भू-भाग से निकटता स्थापित है।

साहित्यिक भाषा के उदाहरणस्वरूप *यूसुफ माला* का एक अनुच्छेद यहाँ उद्धृत किया जा सकता है। इसके लेखक शेख अबुसवालिह पूक्कोय तङ्ङल हैं, जो शेखिंटे वीट्टिल पडिप्पुरा परिवार से ताल्लुक रखते हैं। यद्यपि यह उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक (हिजरा: 1315) में लिखा गया है, उसका प्रकाशन बहुत बाद (हिजरा: 1414) अल् कमल ऑफसेट प्रेस, कालीकट (अब कोषिकोड) में हुआ। यह मुख्य भू-भाग के कवि के समय के किसी *माला* गीत की तरह है। (उद्धृत, अब्दुल अजीज, 2004; 173-174)

मट्टिञ्ञ पोन्नानिन्नु वोलि पोरुंपोल
मुट्टियोर कोयिलाण्टि तन्निल इरुन्नोवर
(पोन्नानि से लौटते हुए उस दिव्य पुरुष ने कोयिलांटि में थोड़ा विश्राम किया)
तुटङ्ङि अविडम वबा दीनम अन्नाळिल
तडि साइक वोलि तोकरोटु मोसिञ्चोवर
कुटुङ्ङिय दीन सीफा बेणम येंकिलो
कुटि बयति-ओडि दफ-अडिक्कु येन्नोर।

(उन दिनों वहाँ एक संक्रामक बीमारी फैल गई। दिव्य पुरुष ने लोगों को इस खतरनाक बीमारी से बचाने का वचन दिया। इसके लिए लोगों को एक सामूहिक स्तुति वृंद गान रूप में बाजों के साथ पेश करना था) इस *माला* गीत की अंतिम पंक्ति में यूसुफ शेख स्वयं को खुदा द्वारा भेजे गए रखवाले के रूप में प्रस्तुत करता है।

पित्तान इबलीसिन चेलिल तिरियामल
पियरार यूसुफ वालि कावलिलाकळ्ळा
(हाय अल्लाह, हमें उस शैतान के कब्जे से बचने के लिए यूसुफ अली शेख की शरण लेने दे)
कूट्टत्तिल तेट्टिक्कोण्ट-एन्नुयिर वाङ्ङुवान
कुरुवर यूसुफ वालि कावलिल एकळ्ळा
(हाय अल्लाह, मेरी आत्मा को पापों से मुक्त करके गुरु यूसुफ अली के संरक्षण में रख)

ध्यातव्य है कि यहाँ का मौखिक साहित्य लक्षद्वीप मलयालम की उल्लेखनीय विशेषताएँ आत्मसात कर चुका है।

लोकोक्तियाँ

यहाँ पर कुछ लोकोक्तियाँ विवरणों के साथ दी जा रही हैं–
(मुल्लक्कोय, 1990 से उद्धृत)

1. *उप्पु तिन्न बायिक्कु तप्पुण्टाकुम*
   जिस मुँह से नमक (उप्पु) खाया, उससे भी गलतियाँ (तप्पु)। कह सकते हैं कि गलतियाँ इनसानों से होती हैं, खुदा से तो माफ़ी मिलती है।
2. *कळि मीन करिःक्काक*
   रंगबिरंगी मछली पकाने/खाने योग्य नहीं
3. *अन्नम कोतिच्चाल आरुः कटक्का*
   खाने के लाचार कैसे दरिया करे पार। यानि कड़ी मेहनत, अर्थात् जब एक तरफ़ ध्यान बिठाय तभी तो कुछ नया हासिल करे।
4. *तेण्टिच्चोन फिण्टिक्कुम*
   जो मेहनती हो, वही बलवान हो।
5. *अप्पम तिन्नाप्पोराया कुळि एण्णंटोञ्ञा*
   रोटी खाना तो ठीक है, मगर उसके औज़ार को क्यों ताके?
6. *इळम बेल तटिक्काक*
   इळम तेङ्ङा करिक्काक
   इळम पुत्ति तळक्काक
   क्या सुबह की किरणें सेहत के लिए फायदा देती हैं?
   क्या कच्चा नारियल खाना पकाने के काम आता है?
   कच्ची बुद्धि वाले नेता कामयाब नहीं होते – वयस्कों को नेता चुनो।

पहेलियाँ

कुछ पहेलियाँ निम्नलिखित हैं–
(मुल्लक्कोय, 1990 से उद्धृत)

1. *एट्टुकालक्कोरु तोप्पि*
   आठ पाँव, टोपी एक – ओक्टोपस
2. *रावुण्टु चिरिक्किण्टा, पकलुण्टु करयिण्टा*
   जो रात को हँसते है, और दिन में रोते हैं – दीपक
3. *बित्तात निरःयुम, चुरियात तीरुम*
   अंदर भरे बगैर भर जाए, बाहर निकाले बगैर खाली हो जाए – कच्चा नारियल
4. *अटि बिरिञ्ञाटुम मुटि बिरिञ्ञाटुम*
   मुत्तु कोत्तातुम कनम बलञ्ञातुम
   नीचे चौड़ा, बाल फैला – मोती
   सख्त और तन टेढा (भार से) – नारियल का पेड़

5. *पुष्र वरिःरःया नाटुवरःरुः ळच्च पक्षि परःन्नुपोकुम*
   नदी के सूखने पर बीच में बैठा पक्षी उड़ जाएगा – तेल भरा दीया और बाती
6. *बेलुत्त कण्डत्तु करुःत्त बित्तु*
   सफेद खेत में काला बीज – कोरे कागज पर लिखना

लोक कथा

किल्तान की एक लोक कथा

(मुल्लक्कोय द्वारा संकलित)

उर-उम्माक्कुम बाप्पक्कुम कूट एलु मक्क उण्डाञ्ञा। उरुक्काउम्मा आ मक्कक्कूड चोल्लिया निःङ्ङा पोयि बिरःकु परःक्किकोण्डुवा, मक्कळे। अम्मक्क पिन्ना बिरःकु परःक्कुवाम् पुव्वा। उरुत्तम माटि परःक्किय। उरुत्तम कुटुंपु परःक्किय। पिन्न उरुत्तम कोच्चिल परक्किय। पिन्न उरुत्तम आट परःक्किय। अव पिन्न बिरःकेल्लाम कोण्टुपोयि उम्माय्क्कु इट्टु कोडुत्त। उम्मा पिन्ना एंत चीता? अरियिण अप्पम इट्टुत्तु एल्लाक्कुम कुटुत्ता। अट परःक्कियोनुम मात्तिरम बिंपियप्पम कुटूत्ता। ओन अप्प करञ्ञ्, नाक्कु मात्तिरम एन्नु बिंपियप्पम्? नाक्कु बेंटा। उम्माय्क्कु अरिचम बन्नाः। ओन मन्टिक्कु कुट्टि ओन ओटिच्चु बिट्टुट्ट। ओम् पिन्न करञ्ञु-- करञ्ञोंटु कटप्पुरत्तु बायिले नःटन्नोंःटु पुव्वा। अप्पणत्तेक्कुम ओनुम काणिंटा- उरु मरम उण्टु अटिञ्ञु अटिञ्ञोंटु बायिंट। करप्पुरःत्तु इलिञ्ञु अम्मरत्तिन इट्टत्त। करप्पुरःत्तु उरु कुळि ओणु आक्कुळियिन उळ्ळेक्कु इम्मरत्तीन नाःट्टिय। पिन्न उरु कुटम तण्णि कोण्टु बन्नुः मरत्तिन मुरट्टेक्कु बीत्तिय। पिन्न मरत्तिनक्कूट चोल्लिंटा –''ए मरमे, नाञ्ञिन्नुः पोय नाळ बयिण्टत्तेक्कु नीः इलयुम पूवुम कायुम बिट्टु बिटटोण्टुम। अयिलेंकिलो निःन्न कोत्तित्ताट्टु कळयुम''. पिट्टियान्नुः ओन बन्नुः नूःक्किण्टत्तेक्कु मरत्तिन मेले इलयुम पूवुम कायुम एल्लां बिट्टु बिट्टिन। ओनुम कोचियायिप्पुवा। बेकम उरु कुडम तण्णि कोरिक्कुण्टु बन्नुः मरत्तिन मुरट्टेत्तेक्कु बीत्तिय। पिन्नायुम मरत्तिनक्कूडा –''ए मरमे, नःञ्ञिन्नुः पोय नाःळ बयिण्टत्तेक्कुम ई पळञ्ञाळेल्लाम पळुत्तु इरिञ्ञु बिटोंटुम। अयिल्लेंकिलो कोत्ति-त्ताट्टु कळेम''। पिन्न पित्तियान्नुः बन्नुः नूःक्किण्टत्तेक्कु अटियुण्टु तोट्टु मेल वरे कायेल्लां पोळुत्तु इरिञ्ञु बिट्टन। पिन्न ओन् तालेंटु पळञ्ञेल्लम चिक्कित्तिन्नोःण्टु मेलेक्केरिःप्पुव्व।

हिंदी अनुवाद

एक माता-पिता के सात संतानें थीं। एक दिन माता ने उनसे कहा – 'बच्चो जाओ और जलाने के लिए लकड़ी ले आओ।' तब वे बच्चे जलाने के लिए लकड़ी लेने गए। एक बच्चे ने नारियल पत्तों के डंठल इकट्ठा किए। एक ने नारियल के सूखे गुच्छे बटोरे। एक दूसरे ने नारियल के रेशे इकट्ठा किए। और एक ने फटे जाले (torn web) इकट्ठा किए। सभी ने जलाने की अपनी-अपनी लकड़ियाँ माँ के सामने रख दीं। तब माँ ने क्या किया? माँ ने सबके लिए चावल की मीठी रोटी परोस दी। लेकिन फटे जाले लाने वाले बच्चे को नहीं दी। उसे केवल रागी की रोटी दी। वह रोने लगा। उस लड़के ने माँ से सवाल पूछा कि ऐसा भेदभाव क्यों किया? उसने खाना नहीं खाया। नाराज माँ ने उसे मारा और भगा दिया। वह सागर के तट पर पहुँचा और वहाँ रोते हुए टहलने लगा। उसने लहरों के साथ बहकर तट पर आते एक पेड़ को देखा। उसने उसे पकड़ा और रेत खोदकर उस पेड़ को वहाँ लगा दिया। एक घड़े में पानी लेकर उसे सींच दिया। तब उसने पेड़ से कहा, 'आज मैं जा रहा हूँ और कल लौटूँगा यह देखने कि तुम पर पत्ते, फूल और फल लगे या नहीं। नहीं तो मैं तुम्हें काट डालूँगा।' अगले दिन उसने देखा कि उस पेड़ पर पत्ते, फूल और फल आ गए हैं। वह खुश हुआ। उसने तुरंत एक और घड़ा पानी उस पेड़ पर डाला। उसने फिर कहा, 'हे पेड़, आज मैं जा रहा हूँ और कल लौटूँगा तब तक तुम्हारे फल पक जाएँ। नहीं तो मैं तुम्हें काटकर सागर में डुबो दूँगा।' अगले दिन उसने आते ही देखा कि पेड़ पर नीचे से ऊपर तक पके फल लदे हुए हैं। उसने नीचे से ऊपर तक सभी फलों को तोड़ा और खुश हो गया।

मौखिक आख्यानात्मक काव्य

लक्षद्वीप के मौखिक आख्यानात्मक काव्यों में विशेष आख्यानों के सभी गुण पाए जाते हैं। कुछ तो 300 पंक्तियों तक लंबे हैं। ऐसे ही तीन अलग-अलग आख्यानात्मक काव्यों से हम प्रत्येक के कुछ चुने हुए भाग यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

पृष्ठभूमि

यह आख्यान कल्पेनि द्वीप की साणम कातिया नामक सुंदर लड़की के बारे में है। कैसे उसका अपहरण किया गया और कैसे वह कई वर्ष बाद अपने बच्चे के साथ द्वीप लौट आई। कोट्टक्कल के कुट्टियम्मक्का (कालीकट के राजा के अधीनस्थ मुखिया) ने उस लड़की को पकड़कर जबरदस्ती अपनी पत्नी बना लिया था। जब चेचक की बीमारी फैली तो वह कुट्टियम्मक्का मुखिया भी मर गया और वह लड़की अपने बच्चे के साथ वापस घर लौट पाई। कातिया की छोटी बहन, जिससे कुट्टियम्मक्का को कातिया के अप्रतिम सौंदर्य का पता चला था, और उससे मुलाकात के क्षण आदि पर दोनों के बीच हुए संवाद द्वारा हम उसका ब्यौरा प्राप्त करते हैं।

(i) **साणम कतिया**

(सूचना देने वाला : ए.सी. अस्साम्मा, किल्तान)

नेःरम बेळुत्तु बिळिरबीटुम मुन्ने
ओट्टुपलक तलयिल कमत्ति
मुन्निलेक्केत्तिय कुट्टियम्मनःक्का
"नी:यितेविटत्तेक्कु उम्मात्तक्कुट्टी?"
"इञ्ञो वा मोळे अणञ्ञु वा मोळे
ओट्टुम जवाबेल्लाम चोल्लित्तायिट्टु"
ओट्टुम जवाबेल्लाम चोल्लि मडक्कि
वाक्केल्लाम केक्किण्टो कुट्टियम्मक्का
"नि:न्निलुम नःल्ल पेण् उण्टो इबिडा?"
"एन्निलुम नःल्ल पेण् साणम कातिया"
"तोलि निःरःम नःल्लतुम आरेल्लि कुञ्ञी?"
"तोलि निःरःम नःल्लतुम साणम कातिया"
"कण्मय नःल्लतुम आरेल्लि कुन्नी?"
"कण्मय नःल्लतुम साणम कातिया"
"निन्ना कातिय पोन इट्टिनीय मोळे"
"इक्काक्कायतेतुम पिरांतुण्टो चोल्लान?"
"इन्नकातियाय्कु पोन्निनेयेन्नुम
पोन्निलुम नःल्ल पोन साणम कतिया।
कारः केट्टोंटा कळुत्तु चिकप्पान
काल वळ वेण्टा किलुक्कं वरुवान
उतिच्चु बयिंडा उतयम कातिया

तट्टान मूचेळ तिप्पोल कातिया
तट्टिप्परत्तिय तालि कातिया।"
"एङ्ङाने पोयाल ई पेण चंतम काणुम?"
"मुक्कुवनेप्पोले कच्चयुम केट्टि
मुक्कुवनेप्पोले कत्तियुम तिरुकि
अङ्ङने पोयाल इप्पेण चंतम काणाम।"
"नी:यिनि पो पेण्णे उम्मात्ताक्कुट्टी
वेकम पोय ओति बा उम्मात्ताक्कुट्टी"
साणम कतिया इल्लवुम तेटि
तुळ्ळिप्पुरःप्पेट्टोन कुट्टियम्मक्का
मुक्कुवनेप्पोले कत्तियुम तिरुकि
मुरःरःत्तु लाकिण्टोन कुट्टियम्मक्का।

हिंदी अनुवाद

पौ फटने से पहले, सूरज की पहली किरण के फैलने से पहले, साणम कातिया की छोटी बहन उम्मात्तकुट्टी अपने सिर पर लिखने की स्लेट रखकर जा रही थी। वह अपने धार्मिक पाठ के लिए ओत्तंपलम (मदरसा) जा रही थी। उसके पास जाकर कुट्टियम्मक्का ने पूछा – 'हे उम्मात्तकुट्टी, तुम कहाँ जा रही हो?' 'मैं वेद पढ़ने ओत्तंपलम जा रही हूँ।' 'ओ प्यारी, यहाँ आ, मेरे पास आ। मैं तुम्हारे सवालों का जवाब दूँगा।' जवाब बताने के बाद कुट्टियम्मक्का ने पूछा– 'तुम्हारे अलावा इस द्वीप में और कोई सुंदर लड़की है!' 'सचमुच साणम कातिया मुझसे भी सुंदर है।' 'क्या उसकी त्वचा का रंग ज़्यादा सुंदर है?' 'साणम कातिया की त्वचा का रंग मुझसे कई गुना सुंदर है।' 'किसकी काली-काली सुंदर आँखें हैं?' 'साणम कातिया की आँखें अति सुंदर हैं।' 'ओ प्यारी, कातिया क्या सोने के गहने पहनती है?' 'भाई, तुम क्या पागल हो कि मुझसे ऐसा प्रश्न पूछ रहे हो ! मेरी कातिया को सोने का क्या काम, वह खुद ही सोने से बढ़कर है। उसकी गर्दन गले के हार से भी मनोरम है। उसे नूपुरों की ज़रूरत ही नहीं क्योंकि चलते-चलते उसके पैर ही घुँघरू बजाने लगते हैं। और उसकी लालिमा ऐसे है जैसे उदय होते तथा डूबते सूरज की लालिमा उस पर पड़ी हो। वह सुनार की कुल्हिया की आग की चिंगारी है। वह ऐसा खरा सोना है, जिसे सुनार के हाथों सुंदरता से गढ़ा गया हो।' 'उस अप्सरा के दर्शन को मैं लालायित हूँ, मैं कैसे उसके सामने पहुँच पाऊँ?' 'एक मछुआरे का कच्छा पहनकर जाओ, मछुआरे का चाकू कमर में बाँध लो, उस रूपवती के दर्शनार्थ यही पहनावे काम आएँगे।'

'अभी तुम जाओ, उम्मात्तकुट्टी,' जल्दी ही वह मछुवारे के कपड़े पहने तेज़ी से चल रहा था। कमर में चाकू रख, वह साणम कातिया को देखने निकला। उसे देखने के लिए वह कातिया के घर के सामने खड़ा हो गया।

(ii) **मुत्ताम चिराक्का**

(सूचना देने वाला : करक्कोच्च यूसुफ, कवरत्ती)

अरक्कल राजवंशीय कारियक्कारन, जो लालच और विभिन्न प्रकार के शोषण के नाम पर कुख्यात रहे, का लक्षद्वीप पर शासन चलता था। मुत्ताम चिराक्का की कहानी में एक कारियक्कारन झूठा गवाह पेश करता है कि उसका मुत्ताम चिराक्का की पत्नी ओमनप्पूव से प्रेम संबंध है।

मुट्टा कटिच्चिट्टुम चेयो कटिच्चिट्टुम
काञ्ञार काक्कात्तियोक्कु-उराःक्किटप्पोयि

तोप्पियुम तट्टवुम वारिप्पिटिच्चु
तुल्लिप्पुरःप्पेट्टेन कारीयक्कारन
"निःङ्ङल एविटेक्कु कारियक्कारा?"
"ञान आ कुळमकरे पोयिबरट्टे"
इरुपत्तेळाम वाविल कूरिरुट्टत्तु
पेण्णिकळारुमे लाकाता चामम
ओटुण्टोन बीळुण्टोन कारियक्कारन
ओटियुम बीणुम पोय अंताम पिळ्ळयु
"अम्मामि मामि" एन्नोःन्नुः बिलिच्चु
ओन्निःनु रण्टोच कूत्तुम कुटुत्तु
"अत्ताळम निञ्ञाळु बच्चिया मामि?"
"ञङ्ङळ बयिच्चेच्चुरःङ्ङान किटन्नु"
"नाःक्कित्तीना कोण्टुवा अम्मामि मामि"
"मक्कक्कु बेच्चा चिनंपु चोरुःण्टु"
"उळ्ळतुं कण्टतुम कोण्टु बा मामि"
बट्ट सुवुरः बलिच्चाञ्ञु बिट्टु
बेळ्ळोट्टु साणतिल चोरुःम विळंपि
मक्कि पिञ्ञाणत्तु चारुःम इटुत्तु
कुप्पि पिञ्ञाणत्तु तण्णियुं बेच्चु
बट्टमिट्टय्याळ बेयिप्पारिःरुन्नुः
बाक्केल्लाम केक्किण्टोन कारियक्कारन
चिन्तिप्परःयिण्टोळ अम्मामि मामि
"मामि पेट्टेडम मक्कळ एत्तिर उण्टु?"
"मामि पेट्टेडम मक्कळ मून्नेः उळ्ळतु"
"मूवरक्कुम माप्पिळ उण्डोडि मामि?"
"मूवरक्कुम माप्पिळ उण्डल्लो कोया"
"ओन्निःन पुरिचन ओडि मासम मून्नाःयि
इनियुम ओरु मुळि बात्तयरिःञ्ञेल
ओन्निःन पुरिचन ओडि मासम रण्डायि
इनियुम ओरु मुळि बात्त यरिःञ्ञेल
आट्टळ मरुमोन ओडि नाळ पतिनःञ्चु
इनियुम ओरु मुळि बात्त यरिःञ्ञेल
अतु तन्ने हलबिलु कल्लिट्ट पोले"
"अट्टाल मरुमोन इतारेल्लि मामि?"

"मोन पुरय बंपन मुत्ताम चिराक्का"
ऊक्कुळ्ळोन बंपन उरमुळ्ळोन बंपान
कारणप्पाट्टिल तान आळुळ्ळोन बंपन
पोकुंप पत्तय्याळ बेच्चेच्चु पोया
बयिण्टेरम पत्तय्याळ कोण्टुवरुमे"
"पिच्चुण्टोमामि पिरान्तुःण्टोमामि
मुत्तांचिल ओडि कळ्ळार पिटिच्चु
कळ्ळार पिटिच्चु करक्किट्टु पोयी
सहियर पतिनारुःम नीःराट्टिप्पोयि"

हिंदी अनुवाद

काञ्जार काक्काति के सदस्य और कारियक्कारन के परिचर को रात में खटमल और मच्छर की वजह से नींद नहीं आ रही थी। तभी उसने देखा कि उसका स्वामी कारियक्कारन झट से उठकर टोपी और शिरोवस्त्र पहने दौड़ता आ रहा है। 'कहाँ खो गया तू?'– उसने पूछा। 'मैं सोने जा रहा हूँ' – परिचर ने जवाब दिया। 'मैं भी आपके साथ चलूँगा', उसने कहा। रात के उस वक्त कोई लड़की घर छोड़कर बाहर आने की हिम्मत नहीं करती, इसलिए कारियक्कारन जल्दी-से-जल्दी अंतामपिळ्ळ के घर पहुँचने के लिए उत्तेजित था। दो सीटियाँ बजाते हुए उसने ज़ोर से पुकारा, 'हे, अम्मामि, मामी।' उसने खाना माँगा। 'क्या तुम रात्रिभोज कर चुकी?' 'हमने खा लिया और अब सोने जा रही हूँ,' उसने बताया। 'तो जो कुछ भी खाना बचा है, मुझे खाने के लिए दे दो।' 'हमने बच्चों के लिए थोड़ा ही रखा है।' 'ठीक है, मामी मैंने देख लिया, वही लाना।' गोल सुप्रा बिछाकर उसने काँसे के बर्तन में चावल परोसा, अरबी तश्तरी में सब्जी और गिलास में पानी दिया। तब उसने उससे बातचीत शुरू की। 'आपके कितने बच्चे हैं?' 'मेरी तीन बेटियाँ ही हैं।' 'हे मामी, क्या सबके माप्पिला (पति) हैं?' 'हाँ कोया, तीनों के माप्पिला हैं। उनमें एक तीन महीने पहले नाव खेने निकला है। अब तक उसके बारे में कोई सूचना नहीं मिली। दूसरा दो महीने पहले गया। उसके बारे में भी कोई सूचना नहीं। मेरा तीसरा लाड़ला दामाद 15 दिन पहले नाव लेकर निकला है। उसके बारे में भी अब तक कोई सूचना नहीं मिली। यह बात मेरे दिल में पत्थर जैसी रखी हुई है।' 'हे मामी, आपका सबसे प्यारा दामाद कौन है?' 'मुत्ताम चिराक्का, वह घर का नायक है, एक ज़िम्मेदार, बेहद परिश्रमी और मज़बूत व्यक्ति है। जाते हुए दो बोरी चावल यहाँ रखकर गया है, और आते समय वह दस बोरियाँ और ले आएगा।' 'ओह मामी, क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, पागल हो गई हो क्या?' 'जालिमों ने मुत्ताम चिराक्का की ओटि (नाव) पकड़ ली है और उसे तट पर ले गए हैं, उसके 16 सहयोगियों को डुबोकर मार दिया है।'

(iii) **ओमनप्पूव**

यह गीत अमिनी की एक आकर्षक लड़की के बारे में है, जिससे अरक्कल का राजा शादी करना चाहता था। वह लड़की युवा कुट्टि तरुवा की पत्नी थी, जिसे राजा के दबाव में आकर मजबूरन तलाक बोलना पड़ा था। उद्धृत प्रकरण में लड़की की माता एवं पति के द्वारा राजा से उसे मासूम तरीके से बचाने का प्रयास है।

कण्णूर कडप्पुरःम काट्टःमुकत्तु
काट्टःत्तु निक्किण्टोन आदिलायावु
कण्टोंटु बन्नीःन बालुवक्कारनः
"एन्नाट्टु मुचिप्पुंटु आदिलायावे?"

पकरम परःयिंटोन आदिलायावुः
"काट्टुः पोकुम नाट्टिल पेण्णिल्ल पोलो,
कुतिर पोकुम नाःट्टिल पेण्णिल्ल पोलो,
आन पोकुम नाट्टिल पेण्णिल्ल पोलो,
आळु पोकुम नाट्टिल पेण्णिल्ल पोलो।"
पकरम परःयिण्टोन बालुवक्कारनः
"पोन्नाय पोन्नेल्लाम कण्णूरु नाःट्टिन
पेण्णाय पेण्णेल्लां अम्मेनि नाःट्टिल
अम्मेनि नाःट्टिल पुरःक्काट्टक्ककत्तु
पेण्णिलुम पेण्णाय पेण्णुण्टु पोलो
एळु पुलुतिन्टे मिन्नलु पोलो
एळु निलावोप्पिच्चुदिच्चातु पोलो
कत्तु कडलासु मुन्निल वेच्चु
मय्युम हलमेल्लां मुन्निलु वेच्चु
बायिच्चिळुतिण्टोन आदिलायावु
"बेंतोरु चोरुः बयिप्पानुम इल्ला
बेक्कात्त चोरिःनि काप्पानुमिल्ला
बन्नः-एना मेलु नीः केरिः बा पूवे
पूवे पुरः क्काट्टुः ओमन प्पूवे"
कत्तु मडक्कि पोतिञ्ञतु केट्टिट
बालुवक्कारन्त्रि किय्यल कुडुत्तु
बेळापुरत्तेन ओडम इळिच्चु
तण्टारक्कु नल्ल कनत्ताळे एट्टिटः
कंपु मुरुःक्कि नःल पायुम बलिच्चु
ओडिप्पुरः प्पेट्टोन बालुवक्कारन।
मून्नुः नाःळेक्कु बहरोट्टः मोति
नाःलाम पुलच्चाक्कु अम्मेनि नाट्टिल
पातम अलन्नुः पनक्कल्लुम वेच्चु
तुळ्ळियिळियिण्टोन बालुवक्कारन
कूटेयिळिण्टोर तण्टेलर मक्कळ
कुट्टःमेयेल्लाम पोय अरःक्कलक्कत्तु
कारोण्मारळ कूट्टाःत्तिरुन्नु
तोप्पि परिःच्चु कुरिः योन्निःतुट्टु
कारियक्कारन्टे किय्य कुटुत्तु।

बाञप्पिडिच्चु कुरिः बाय्क्कुन्नेःरम
"इम्मुलि नाःक्कु तिटःरम बन्नेल"
कारणोन्मारल किय्य कुटुत्तु
बाञप्पिडिच्चु कुरिः बायिक्कुन्नेःरम
"लाबवम चेतवुम रण्टुम काणिण्ट
एल्लारुम पूविनः पाति कुतिच्चोर
आदिलायावु तान मुळुवन कुतिच्चोन!"
अक्कुरिःकुट्टित्तरुःवाय्क्कु नीट्ट्टि
इक्कुरिः बायिप्पीन कुट्टि त्तरुःवा
बाञ्ञिप्पिडिच्चु कुरिः बाय्क्कुन्नेःरम
"इम्मुळि नाःक्कु तिटरम बन्निनः"
मुट्टुमुकम बाटि मुट्टुम कुळञ्ञु
तुळ्ळिपिपुरःप्पेट्टोन कुट्टित्तरुःव
"ओमनप्पूवे एन पुन्नारप्पूवे
हलबिन्टे कण्डम करयिले पूवे"
मुट्टः मडिक्किण्डोल पुविन उम्मा
कण्टीन मुन्नाल्लु पोनमारु मोन
"बिलि पेट्टतेन्नतुम पोन मारु मोने"
पिरिचत्ति केक्किण्टोल अम्मामि मामि
पूविन करणोर तेटान बिट्टतु
चोल्लि मरेःक्किण्टोन कुट्टित्तरुःवा
कुट्टित्तरुःवान्टे मुत्तल्लि कोण्टु
पूविन मूडि मुकवुम मरच्चु
"एरिः मरःय पेण्णे ओमनप्पूवे"
तञ्चत्तिच्चोल्लिण्टोन कुट्टित्तरुःवा
एणि चेविट्टिप्पोय माडम अतेरिः
तङ्ङ् मरःञ्ञीन ओमनप्पूवु

हिंदी अनुवाद

राजा आदिराजा कन्नूर के समुद्र तट पर हवा लेने के लिए टहल रहा है। एक परिचर, जो उसे देख रहा है, पूछता है, 'हे आदिराजा, आपको क्या चिंता सताने लगी है?' इसके जवाब में राजा कहता है, 'मुझे कहीं भी एक ऐसी बेगम नहीं मिली जिसे मैं चिट्ठी भेज सकूँ, जहाँ मैं घुड़सवार दूत को भेजूँ, जहाँ मैं हाथी दूत भेज सकूँ।' इसका उत्तर देते हुए परिचर कहता है, 'कन्नूर में सारे संसार के सोने से भी बेहतर सोना उपलब्ध है, लेकिन कुँवारियों में होनहार कुमारी तो अमिनि में ही है। उस अमिनि में पुरःक्काट्टकम में सबसे सुंदर कुँवारी है। सात सूरज की चमक उसमें बसती है। सात चंद्रमाओं के समान उसकी मोहकता है।'

यह सुनकर राजा एक कागज और कलम लेकर उसके नाम चिट्ठी लिखता है। ‘हे, फूल *(पू)*, प्रिय फूल (*ओनःसप्पू*), पके हुए चावल खाए बिना या चावल पकने का इंतजार किए बिना मेरे द्वारा भेजी जाने वाली पालकी में बैठकर, जल्दी से मेरे पास आओ।’ उसने चिट्ठी को लपेटकर और चिपकाकर परिचर को दे दिया। परिचर ने समुद्र तट पहुँचकर *ओडम* (बड़ा समुद्री पोत) निकाला, पोत में रस्सी कसी और अच्छे पाल लगाए। उसने सबसे मज़बूत नाव खेने वालों को अपने साथ लिया और अमिनि के लिए समुद्र में पोत उतार दिया। उन्होंने जितनी हो सके उतनी तेज़ी से पोत चलाया। तीन दिन गहरे पानी में पोत खेने के बाद चौथे दिन पौ फटते ही वह अमिनि पहुँचा। पानी की थाह लेकर पोत का लंगर डाला और खेने वालों के साथ वह पानी में उतर गया। वे अरःक्कलकम पहुँचे, जहाँ प्रशासक का कार्यालय-आवास था। वहाँ उपस्थित द्वीप के बुज़ुर्गों को साथ लेकर और अपनी टोपी निकालकर प्रशासक (*कारियक्कारन*) को उसने वह चिट्ठी दिखाई। उसने चिट्ठी खोली और पढ़कर प्रतिक्रिया बताई, ‘यह मेरी समझ में नहीं आती।’ उसने वहाँ उपस्थित बुज़ुर्गों को वह पढ़ने को दी। उन्होंने समझाया, ‘इस चिट्ठी में मुनाफा एवं नुकसान दोनों हैं। फूल सबको पसंद है। ओमनप्पूव लेकिन कुछ के लिए ही है। यह वही अदिराजा है जिन्होंने उसे पूर्णतः चाहा है।’ उन्होंने चिट्ठी कुट्टि तरुवा को सौंपी और बोले, ‘कुट्टि तरुवा, आप इसे पढ़ें।’ उसने चिट्ठी ली, पढ़ने के बाद कहा, ‘मैं स्पष्ट समझ गया।’ उसका खिला हुआ चेहरा मलिन हो गया। घुटने थकावट से भर गए। कपड़े से उसने चेहरा पोंछा। उसके बाद यह चौथा तरवाडु (मुखिया की विरासत) वहाँ से जल्द ही निकल गया। वह दौड़कर पुरःक्काट्टकम, अपनी प्यारी पत्नी के पास उसके घर पहुँचता है और आँगन से ही ज़ोर से चिल्लाता है, ‘ओ मेरी प्यारी पूव, ओमनप्पूव, तुम हमेशा मेरे दिल में रहती हो!’ ओमनप्पूव की माँ (*उम्मा*), जो गलियारा साफ कर रही थी, ने देखा कि उसका इकलौता दामाद उसके सामने खड़ा है। उसने अनुरक्त भाव से पूछा, ‘ओह मेरे प्रिय दामाद, तुम्हें इतना चिल्लाने की क्या ज़रूरत पड़ गई?’ उसने गुप्त रूप में जवाब दिया, ‘बुज़ुर्गों ने हमारा फूल (*पू*) माँगा है।’ माँ ने तुरंत ओमनप्पूव को अपने आँचल में छिपा लिया और कहा, ‘तुम ऊपर चली जाओ और अपने आप को अटारी में छिपा लो’। ओमनप्पूव ने सीढ़ियाँ चढ़कर खुद को छिपा लिया।

वर्तमान रचनाएँ

वर्तमान में, लक्षद्वीप के कुछ लोगों ने लघु कथाओं जैसी कुछ साहित्यिक कृतियों का निर्माण किया है। वे पत्रकारिता में भी तल्लीनता से लगे हैं। चूँकि वे सब पढ़े-लिखे हैं और उन्हें मलयालम का उचित प्रशिक्षण मिला है, इसलिए उनकी रचनाएँ मलयालम में ही हैं। उनकी कथाओं के पात्र द्वीपवासियों की बोली बोलते हैं। यहाँ मानक लिखित मलयालम भाषा भी प्राप्त होती है। लक्षद्वीप के लोगों के पास मौखिक साहित्य भी प्रचुरता में है, वे भी जाने-अनजाने एक हद तक मौलिक लिखित मलयालम से प्रभावित हैं। संभव है कि मौखिक साहित्य के पाठ संशोधन ने लोक मौखिक आख्यान के वर्तमान विवरण में अभूतपूर्व प्रभाव को स्वीकारा है।

7



महल

मिनिकॉय द्वीप के लोगों की भाषा महल है। यह लक्षद्वीप के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित है। अन्य द्वीपों में बोली जाने वाली भाषाएँ मलयालम से समानता रखती हैं, लेकिन महल भाषा माली द्वीपों की भाषा से अधिक समानता रखती है, और इसे वहाँ की एक बोली धिवेही (उच्चारण में दिवेही भी) कहा जाता है। दक्षिण में स्थित यह द्वीप भारत की स्वतंत्रता से पूर्व माली का ही भाग था। महल की लिपि अरबी लिपि से मिलती है, जिसका संबंध भारोपीय भाषा परिवार से है। साथ ही, यह सिंहल (sinhala) भाषा से भी मिलती-जुलती है। महल भाषा की उत्पत्ति कई भाषाओं के प्रभाव के परिणामस्वरूप हुई है। इनमें अरबी का प्रभाव स्पष्टतः दिखाई देता है। मलयालम के अधिकतर अरबी शब्द महल में भी उसी अर्थ एवं रूप में पाए जाते हैं।

हलाल	अनुज्ञेय
हराःम	निषिद्ध
हलाक्कु	कष्ट
हिक्किमत्त	ज्ञान
हजत	अभिलाषा
हयातु	ज़िंदगी

अरबी के अलावा फ़ारसी, फ्रेंच, पुर्तगाली, उर्दू और अंग्रेज़ी का प्रभाव भी महल (ज़्यादातर धिवेही भाषाओं) में पाया जाता है। महल के लोक गीतों की हिंदी एवं उर्दू के लोक गीतों से गहरी समानता है। लक्षद्वीप में बोली जाने वाली अन्य भाषाओं ने भी महल को प्रभावित किया है। इन भाषाओं में कई घरों के नाम समान अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

अतिरिगे	*मेलयिल्लम*
इडयक्कल्लु	*इडियक्कल*
औडियक्कल	*पुतिय इडियक्कल*
मगुमत्तिगे	*तिरुवातप्पुरा*
लाबोगे	*नारंगप्पुरा*

शब्दावली (महल-हिंदी)

रिश्ते-नाते के शब्द

महल भाषा में मुख्य रूप से पाई जाने वाली रिश्ते-नाते की शब्दावली निम्नलिखित है–

महल	**हिंदी**	**महल**	**हिंदी**
अम	माता	*अप्पच्चि*	पिता की बहन (फूफी)
अप्पयकाक्क	पिता की बहन का पति (फूफा)	*अंगेदरि*	लड़की
अंगेम्मीहा	पत्नी	*काक्क*	भाई
कफो	दादा	*कोय्फु*	बहन
तित्ति	दादी	*दरि*	बच्ची
दत्ता	बड़ी बहन (दीदी)	*फिरिहम्मीहा*	पति
फिरिहिम दारि	लड़का	*बफा*	पिता
बवा	मामा	*बवदत्ता*	मामी
बोडमा	नानी	*बोडुहवा*	नाना
बक्को	मामा का छोटा पुत्र (छोटा भानजा)	*बाबे*	मामा का बड़ा पुत्र (बड़ा भानजा)
बोडबवदत्ता	ताई (बड़ी मामी)	*बेबा*	भाई

संदर्भ ग्रंथ सूची

Aziz, P. T. Abdul. 2004. *Lakṣdvīpile Likhita pāramparyam*. PhD thesis submitted to the University of Calicut.

Andrawskutti, A. P. 1973. *Language of Lakshadweep: A transformational statement*. PhD thesis submitted to the University of Kerala.

Aiya, V. Nagam. 1906. *Travancore state manual*, vol. I, vol. II, vol. III. Trivandrum: The Government Press.

Aiyangar, M. Raghava and J. Parthasarathi. (trans). 1973. *Some aspects of Kerala and Tamil literature*. Thiruvananthapuram: Kerala University.

Anantha Krishna Iyer, L. K., 1981. *Tribes and castes of Cochin*, vol. II, vol. III. New Delhi: Cosmo.

Antony, C. L. 1969. *Bhaasha PatanangaL* (Studies on Language). Kottayam: Sahitya Pravarathaka Shakarana Sangam.

_______. 1983. *Kerala paaNinitya Bhaashyam*. Kottayam: D. C. Books.

Balakrishnan, P. K. 1987. *Jathivyavasthithiyum Keralacharithravum*. Kottayam: NBS.

Bloch, Jules. *The grammatical structure of Dravidian languages*. Poona: Deccan College.

Handbook Series. [tr. of *Structure grammaticale des langues Dravidiennes* 1946] 1954.

Burrow, T. and M. B. Emeneau. 1984. *A Dravidian etymological dictionary*. Second edition. (Preface, Contents, Introduction, Bibliography, page vii-xli). Oxford: The Clarendon Press.

Caldwell, R. 1856 (1961). *A comparative grammar of the Dravidian or South-Indian family of languages*. Madras: University of Madras.

Drummond, R.A. 1799. *Grammar of the Malabar language*. Bombay: Courier Printing Office.

Ellis, R. H. 1992 (1924). *A short account of Laccadive islands and Minicoy*. Madras: Asian Educational Services.

Emeneau, M. B. 1967. The south Dravidian languages. *Journal of the American Oriental Society* 87: 365-413.

Ezhuthaccan, K. N. 1975. *The history of grammatical theories in Malayalam*. Trivandrum: Dravidian Linguistic Association.

Ganesh, K.R. 1990. *Keralathinte Innalekal*. Thiruvananthapuram: Department of Cultural Publications.

Mathan, George. 1969. *malayazhmayaute vyaakaranam*. Kottayam: Sahitya Pravarathaka Shakarana Sangam.

George, K. M. 1972. *Western influences on Malayalam language and literature*. New Delhi: Sahitya Akademi.

_______. 1968. *A survey of Malayalam literature*. London: Asia Publishing House.
_______. 1958. *Sudha Malayala sakha—sahithya charitram prasthanangililude*. Kottayam: Sahitya Pravarthaka Sahakarana Sangam (SPCS).
Godavarma, K. 1971. *Keralabhashavinjaaniiyam*. Trivandrum: University of Kerala.
Grierson, G. A., ed. 1906. *Linguistic survey of India*. Calcutta: Government of India.
Herman, Gundert. 1851 (1931). *Malayala vyaakaranam*. Kottayam: D. C. Books.
Gundert, Rev. H. 1972 (first Published 1872). *Guntartt nighantu*. Kottayam: Vidharti Mitram Press.
Iyer, L. A. Krishna. 1967. *Kerala megaliths and their builders*. Madras: The University.
_______. 1968. *Social history of Kerala*, vol. 1: *The Pre-Dravidians*. Madras: Book Centre.
_______. *1970. Social history of Kerala*, vol. Il: *The Dravidians*. Madras: Book Centre.
_______. 1970. *Social history of Kerala*, 2 vols. Madras: Book Centre Publications.
Iyer, L. K. Anantha Krishna. 1909. *(The) Cochin tribes and castes*, vol. II. London: Higginbotham.
lyer, N. E. Viswanath. 2009. *Anuvad kala*. New Delhi: Prabhat Prakashan.
Iyer, Ulloor. S. Parameswara. 1928. Colonel Munro. *Kerala society papers*, no. Il, series 7. Trivandrum: State Editor, Kerala Gazetteers.
_______. 1967. *Kerala sahithya charithram*, vol. I. Trivandrum: University of Kerala.
_______. 1979. *Kerala sahithya charithram*, vol. II, Trivandrum: University of Kerala.
_______. 1972. *Kerala sahithya charithram*, vol. IIl. Trivandrum: University of Kerala.
_______. 1974. *Kerala Sahitya Charithram*, vol. I & II. Trivandrum: University of Kerala.
Joseph, K. V. 2000. *Migration from Kerala 1920-1960*. Trivandrum: CDS. -
Pillai, Elamkulam P. N. Kunjan. 1970. *Studies in Kerala history*. Kottayam: National Book Stall.
_______. 1955. *Lilathilakam*. Kottayam: National Book Stall.
Kunju, A. P. Ibrahim. 1975. *Mysore-Kerala reiations in the eighteenth century*. Trivandrum: Kerala Historical Society.
Kurup, K. K. N. 1977. *Aspects of Kerala history and culture*. Trivandrum: College Book House.
Leelavathy, M. 1980. *Malayala kavitha sahitya charitram*. Kerala Sahitya Academy.
Logan, William. 1906a. *Malabar*, vol. I, part 1 and 2. Madras: The Government Press.
_______. 1906b. *Malabar*, vol. I, part 3. Madras: The Government Press.
Luiz, A. A. D. 1962. *The tribes of Kerala*. New Delhi: Bharatiya Adimjat Sevak Sangam.
Mohammad Koya, Pukkutti. 1988. *Jesari-lakṣadvīp bhāṣā nikhaṇṭu*. Kavaratti.
Mannadiyar, N. S. 1977. *A gazateer of India-Lakshadweep*. Coimbatore: Government Press.
Menon, A. Sreedhara. 1978. *Cultural heritage of Kerala: An introduction*. Cochin: East-West.
_______. 1979. *Social and cultural history of Kerala*. New Delhi: Sterling.
_______. 1967. *Survey of Kerala history*. Kottayam: NBS.
Menon, Dilip M. 1994. *Caste, nationalism and communism in south India: Malabar*, 1900-1948. Cambridge: Cambridge University Press.
Menon, K. P. Padmanabha and T. K. Krishna Menon, eds. 1924. *History of Kerala*, vol. I. New Delhi: Asian Educational Services.
_______. 1924. *History of Kerala*, vol. I. New Delhi: Asian Educational Services.
_______. 1924. *History of Kerala*, vol. III. New Delhi: Asian Educational Services.
_______. 1924. *History of Kerala*, vol. IV. New Delhi: Asian Educational Services.
Menon, Sreedhara A. 1962. *Kerala district gazetteers*. Trivandrum: Government Press.
Miller, Roland E. 1976. *Mappila Muslims of Kerala: A study in Islamic trends*. Bombay: Longman.
Miller, Eric J. 1954. Caste and territory in Malaba. *American Anthropologist*, vol. LVI.
Mohanan, K. P. and Tara Mohanan. 1984. Lexical phonology of the consonant system in Malayalam. *Linguistic Inquiry* 15, 575-602.

Mullakoya, M. 1990. *Lakṣadvīpu MalayīḷattiṉtePadāvalīparamāya Paṭhaṉam*. PhD thesis submitted to the University of Calicut.

Musatahu, N. N. 1984. *Vyakarana vivekam*. Kottayam: Sahitya Pravarathaka Shakarana Sangam.

Nagam, Aiya V. 1906. *Travancore State Manual*, vol. 1 (3 vols). Thiruvananthapuram: Kerala Gazetteers Department.

Nair, C. K. Chandrasekharan, 1968. *Malayalathinte valarcha, chila vasangal*. Kottayam: National Book Stall.

Nair, N. Chandrasekharan. 1989. *Keral ke Hindi sahitya ka brihad ithihas*. Thiruvananthapuram: Keral Hindi Sahitya Academy.

Nair, K. Maheswaran. 1972. *Epigraphia Malabarica*. Trivandrum: Kerala Historical Society.

Nair, P. K. Parameswaran. 1967. *History of Malayalam literature*. Trans. E. M. Venniyoor, New Delhi: Sahitya Academy.

Nair, P. Ramanujan. 1974. *Library movement in Kerala: The need for reform and legislation*. Trivandrum: Trivandrum Writers Club.

Nair, T. P. 1977. Sankarankutty. *Tragic decade in Kerala history*. Trivandrum: Kerala Historical Society.

Nair, S. K. 1957. *Samskara kedaram*. Kottayam: National Book Stall.

Nayar, V. R. Prabodhachandran. 1973. *Malayalam, A linguistic description*. Trivandrum: National Research Publishing Company.

Namboodiripad, E. M. S. 1968. *Kerala: Yesterday, today and tomorrow*. 2nd edition. Calcutta: National Book Agency.

_______. 1981. *Keralacharithravum samskaravum: Oru Marxist veekshanam*. Thiruvananthapuram: Chintha Publishers.

Namboodiripad, E. S. M. 1952. *National question in Kerala*, Bombay: People's Publishing House.

Namputhri, Vishnu. 1989. *Folklore Nighandu*. Thiruvananthpuram: Kerala Bhasha Institute, Government of Kerala.

Narayanan, M. G. S. 1972. *Cultural symbiosis in Kerala*. Trivandrum: Kerala Historical Society.

Nilakanta Sastri, K. A. 1958. *A history of south India*. Madras: Oxford University Press.

Menon, K. P. Padmanabha. 1924-37. *History of Kerala*, 4 vols. Ernakulam: Cochin Government Press.

Nair, M. P. Sankunni. 1995. *Points of contact between Prakrit and Malayalam*. Trivandrum: Dravidian Linguistic Association.

Nair, P. Satikumaran. 1974. *Lakṣadvīp Malayāḷam*. Kottayam: National Book Stall.

_______. 1975. *Lakṣadvīle kathā Gānaṅṅaḷ*. Kottayam: National Book Stall.

_______. 1975. *Lakṣadvīpile kathā Ganaṅṅaḷ*. Kottayam: National Book Stall.

Panikkar, K. M. 1929. *Malabar and the Portuguese: Being a history of the relations of the Portuguese with Malabar from 1500 to 1663*. Bombay: D. B. Taraporevala Sons.

Panikar, K.N. 1989. *Against Lord and state*. New Delhi: Oxford University Press.

_______.1972 (1917, 1996). *Malayalam verbal forms*. Trivandrum: Dravidian Linguistic Association.

Pillai, P. K. Sivasankara. 2011. *Folklore Padhanangal*, Thiruvananthpuram: Kerala Bhasha Institute, Government of Kerala.

Prabhu, M. Seshagiri. 1922 (1904). *Vyakaranamithram*. Managalore: Kanarese Mission Press and Book Depot.

Raghavan, Puthuppally. 1985. *Kerala patrapravarthana charitram*. Trissur: Kerala Press Academy.

Ramachandran, Puthussery. 1973. *Language of middle Malayalam*. Trivandrum: Dravidian Linguistic Association.

Ramunni, M. 1965. *Laccadive and aminidive islands*. New Delhi: Publication Division, Government of India.

Retnamma, K. 1994. *Early inscriptional Malayalam*. Trivandrum: Dravidian Linguistic Association.

Saigal, Omesh. 1990. *Lakshadweep*. New Delhi: National Book Trust.

Sekhar, A. C. 1953. *Evolution of Malayalam*. Poona: Deccan College.

Shanmugam, S. V. 1971. *Dravidian nouns: A comparative study*. Department of Linguistics, Annamalai University.

Singh, K. S. 1998. India’s communities. *Anthropological survey of India*. Delhi, Calcutta, Chennai [etc.]: Oxford : University Press.

Sukumarapilla, K. 1980. *Kairalisasanam*. Thiruvananthapuram: Keralabhashs Institute.

Steever, Sanford B. 1988. *The serial verb formation in the Dravidian languages*. Delhi: Motilal Banarsidass.

Thurston, E. 1995 (1975). *Castes and tribes of southern India*. Delhi: Cosmo Publications.

Thomas, P. J. 1989. *Malayala sahityavum christyanikalum*. Kottayam: D. C. Books:

Tiwari, Bholanath. 2011. *Anuvad vigyan*. New Delhi: Kitabghar Prakashan.

Varma, L.A. 1939. Ravi. *Kerala prachiina lipikal*. Ernakulam: Sri Ramavarma Granthavali.

Varma, Rajaraja. A. R. *Kerala paniniiyam*. Kottayam: D. C. Books.

Variyar, K. M. Prabahakara. 1979. *Studies in Malayalam grammar*. Madras: Madras University.

Venugopala, Panicker. 1995. *Language of Lakshadweep in a historical perspective*. Proceedings of the Lakshadweep Festival., Calicut.

Warrier, Madasseri Madhava. 1973. *Kunchan vare*. Kottayam: Manorama Publications.

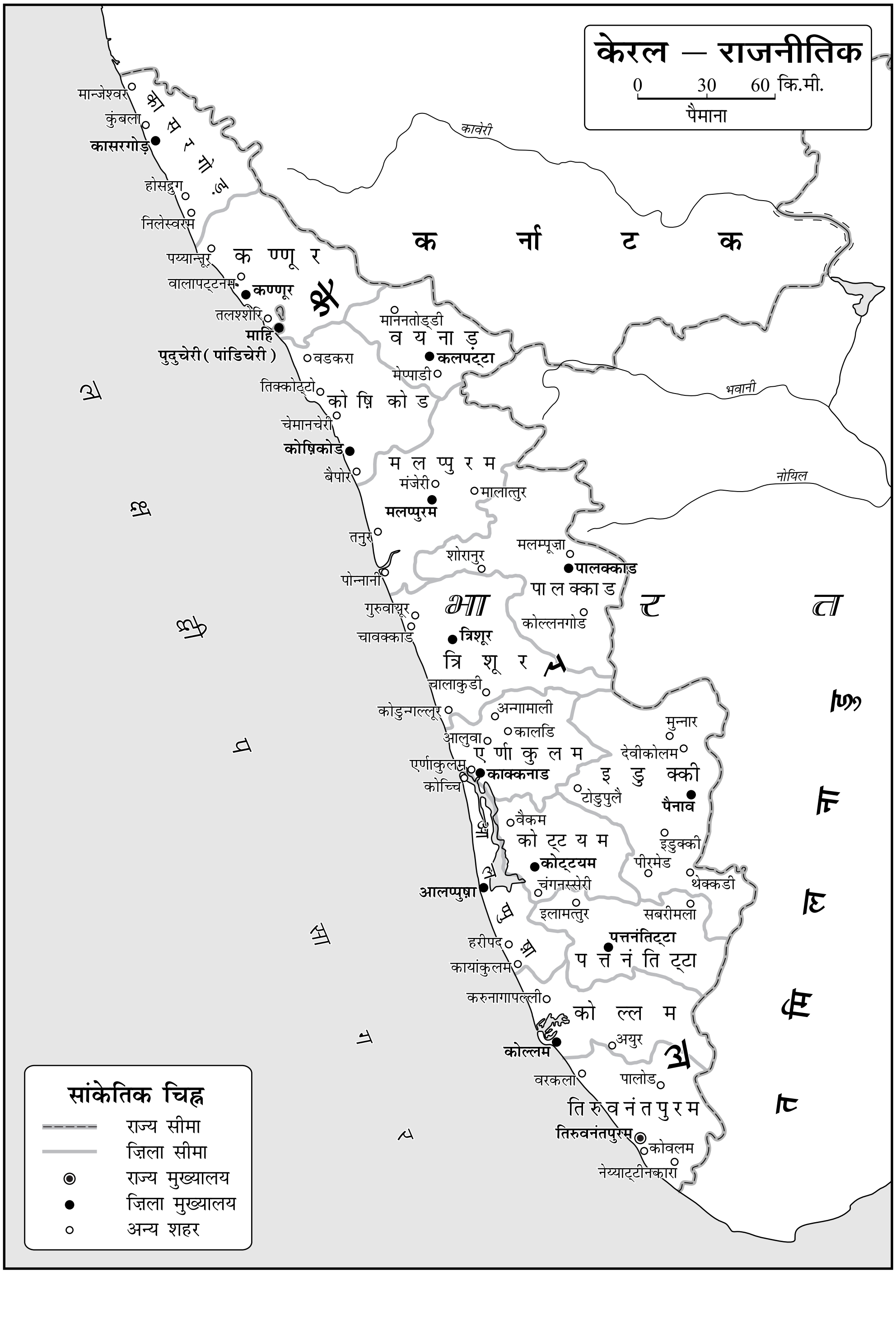
Zachariah, A. C, E. T. Mathew and S. Irudaya Rajan. 2000. *Migration in Kerala state, India: Dimensions, determinants and consequences*. Thiruvananthapuram: CDS.

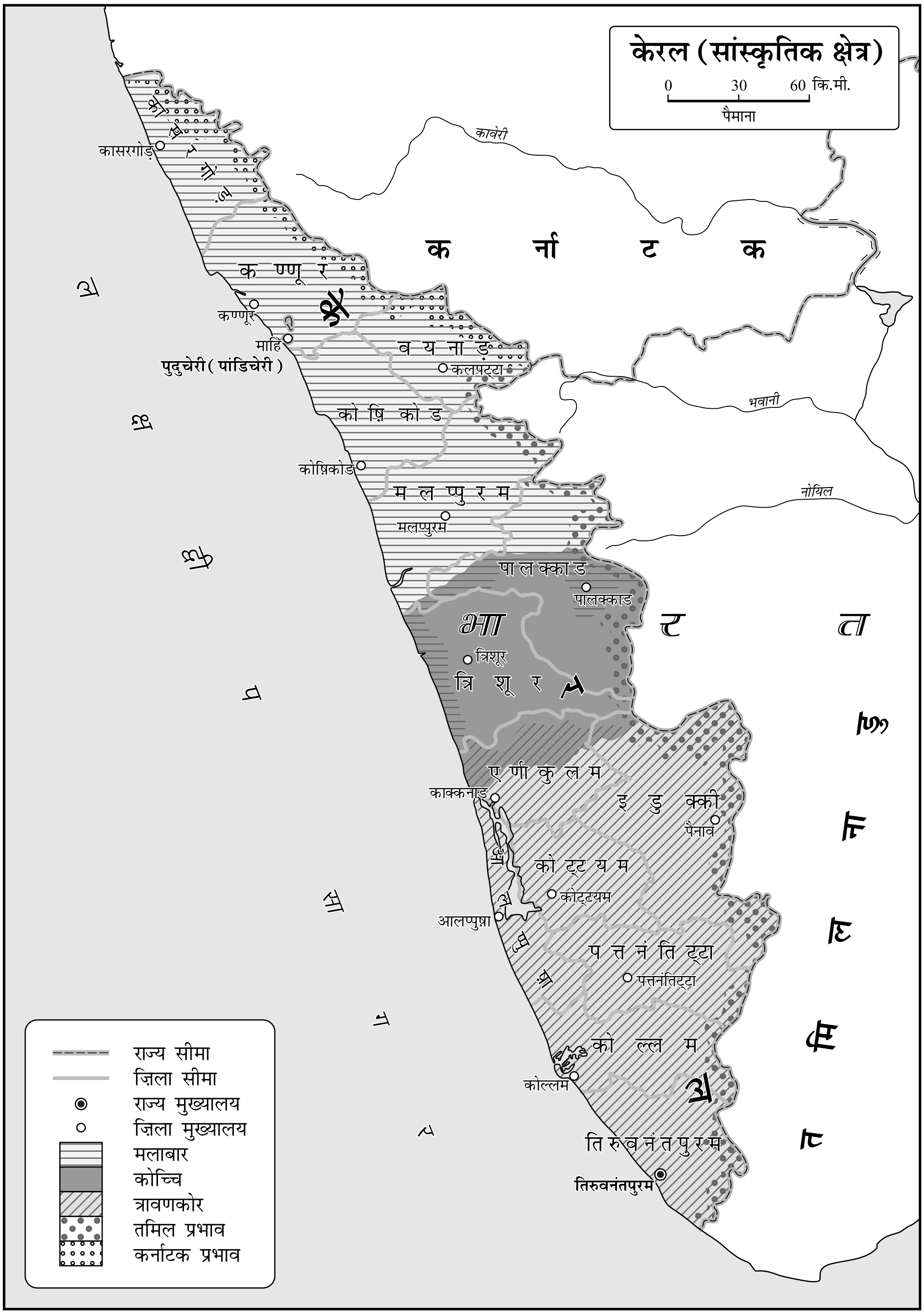
Zvelebil, K. 1970. *Comparative Dravidian phonology*. The Hague: Mouton.

परिशिष्ट I

मानचित्र

मानचित्र सूची **पृष्ठ संख्या**


केरल – राजनीतिक
0 30 60 कि.मी.
पैमाना
कावेरी
भवानी
नोयिल
क र्ना ट क
भा र त
अ र ब सा ग र
त मि ल ना डु
का स र गो ड़
क ण्णू र
व य ना ड़
को षि को ड
म ल प्पु र म
पा ल क्का ड
त्रि शू र
ए र्णा कु ल म
इ डु क्की
को ट्ट य म
आ ल प्पु ष़ा
प त्त नं ति ट्टा
को ल्ल म
ति रु व नं त पु र म
मान्जेश्वर
कुंबला
कासरगोड़
होसदुर्ग
निलेस्वरम
पय्यान्नूर
वालापट्टनम
कण्णूर
तलश्शेरि
माहि
पुदुचेरी (पांडिचेरी)
वडकरा
मानन्तोड्डी
कलपट्टा
मेप्पाडी
तिक्कोट्टो
चेमानचेरी
कोषिकोड
बैपोर
मंजेरी
मलप्पुरम
मालातुर
तनुर
मलम्पूज़ा
शोरानुर
पालक्काड
पोन्नानी
गुरुवायूर
चावक्काड
त्रिशूर
कोल्लनगोड
चालाकुडी
कोडुन्गल्लूर
अन्गामाली
आलुवा
कालडि
एर्णाकुलम
काक्कनाड
कोच्चि
मुन्नार
देवीकोलम
टोडुपुलै
पैनाव
वैकम
कोट्टयम
इडुक्की
पीरमेड
थेक्कडी
आलप्पुष़ा
चंगनस्सेरी
इलामत्तुर
सबरीमला
पत्तनंतिट्टा
हरीपद
कायांकुलम
करुनागापल्ली
कोल्लम
अयुर
वरकला
पालोड
तिरुवनंतपुरम
कोवलम
नेय्याट्टीनकारा
सांकेतिक चिह्न
राज्य सीमा
जिला सीमा
राज्य मुख्यालय
जिला मुख्यालय
अन्य शहर


केरल (सांस्कृतिक क्षेत्र)
0 30 60 कि.मी.
पैमाना
कावेरी
भवानी
नोयिल
क र्ना ट क
भा र त
त मि ल ना डु
अ र ब सा ग र
कासरगोड
क ण्णू र
कण्णूर
माहि
पुदुचेरी (पांडिचेरी)
व य ना ड
कलपट्टा
को षि़ को ड
कोषि़कोड
म ल प्पु र म
मलप्पुरम
पा ल क्का ड
पालक्काड
त्रि शू र
त्रिशूर
ए र्णा कु ल म
काक्कनाड
इ डु क्की
पैनाव
को ट्ट य म
कोट्टयम
आलप्पुषा
प त्त नं ति ट्टा
पत्तनंतिट्टा
को ल्ल म
कोल्लम
ति रु व नं त पु र म
तिरुवनंतपुरम
राज्य सीमा
ज़िला सीमा
राज्य मुख्यालय
ज़िला मुख्यालय
मलाबार
कोच्चि
त्रावणकोर
तमिल प्रभाव
कर्नाटक प्रभाव

परिशिष्ट II

लेखक-अनुवादक परिचय

मुख्य संपादक

गणेश एन. देवी ने बड़ौदा में भाषा रिसर्च सेंटर व तेजगढ़ में आदिवासी अकादमी का गठन करने से पूर्व 1996 तक महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में अध्यापन कार्य किया। आपने इन संस्थानों के माध्यम से आदिवासी एवं यायावर समूहों की संस्कृति, कला एवं भाषा के संरक्षण तथा विकास पर कार्य किया है। आपको साहित्य, आदिवासी शिल्प एवं भाषा संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु पद्‌मश्री सहित विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। आप भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण (People's Linguistic Survey of India— PLSI) (ग्रंथमाला) के मुख्य संपादक हैं।

खंड संपादक

एम. श्रीनाथन भाषाविज्ञान संकाय, तुंचत्तु एषुत्तच्छन मलयालम विश्वविद्यालय, केरल में प्रोफ़ेसर और डीन हैं। इससे पूर्व आपने केरल के केंद्रीय विश्वविद्यालय और द्रविड़ विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश में अध्यापन किया है। आप भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण से जुड़े थे। मानवशास्त्रीय भाषाविज्ञान में आपके शोध अनुभव में अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के पुरापाषाणकालीन अवशेषों और मुख्य भूमि भारत में आदिवासी और जाति समूहों पर काम शामिल है। आप भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह की भाषाएँ खंड के सह-संपादक भी हैं।

जोसेफ कोयिप्पल्लि अंग्रेजी और तुलनात्मक साहित्य विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल में प्रोफ़ेसर और डीन हैं। आप केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल के पहले नियमित विभागाध्यक्ष और स्कूल के पहले नियमित डीन तथा हिंदी विभाग और भाषाविज्ञान विभाग के संस्थापक प्रमुख हैं। आप भूटान (शेरुबत्से कॉलेज, कांगलुंग), भारत (जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली); और सऊदी अरब (हेल विश्वविद्यालय) में केंद्र सरकार के उच्च शिक्षण संस्थानों में कार्य कर चुके हैं। आपकी तीन पुस्तकें (दो अनूदित और एक संपादित) प्रकाशित हैं। आपने 40 से अधिक लेख लिखे हैं और 80 से अधिक व्याख्यान दिए हैं।

अनुवादक

विजयकुमारन सी.पी.वी. केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल और लक्षद्वीप के कालीकट विश्वविद्यालय केंद्र में हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर थे। आप वलाडोलिड विश्वविद्यालय, स्पेन में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की प्रतिनियुक्ति पर हिंदी के विजिटिंग प्रोफ़ेसर भी रहे। आपकी प्रकाशित रचनाओं में हिंदी फासिल (स्पेनी-हिंदी मैनुअल), *रामचरितमानस और सांस्कृतिक अनुवाद, भारत विभाजन और परवर्ती हादसों का हिंदी उपन्यासों में चित्रण, केरल : दशा एवं दिशाएँ, हिंदी में अनूदित मलयालम कविताओं का सौंदर्यशास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन* शामिल हैं। आपको लोकसांस्कृतिक अध्ययन पर अपनी पुस्तक के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार, कन्नूर विश्वविद्यालय से उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार, हिंदी साहित्य सम्मेलन से राष्ट्र भाषा रत्न और सारस्वत सम्मान से सम्मानित किया गया है।

सहयोगी लेखक

अशोकन नांबियार, शोधार्थी, अंग्रेज़ी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
आर. राजीव, फैकल्टी, आईआईआईटीएमके, केरल
आर.वी.एम. दिवाकरन, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, मलयालम विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय
ए.एम. थॉमस, प्रोफ़ेसर, आईआर विभाग, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय
ए.बी. रघुनाथन नायर, 'केदारगौरी', नन्म नगर, तिरुवनंतपुरम
एल. डार्विन, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम
एम.वाई. इंदु, शोधार्थी, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड
एम.जी.एस. नारायणम, सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, कालीकट विश्वविद्यालय एवं पूर्व चेयरमैन, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
एल. थॉमसकुट्टी, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, मलयालम विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय
एम.एच. इलियास, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, गल्फ स्टडीज़ सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
एम. श्रीनाथन, प्रोफ़ेसर, तुंचत्तु एषुत्तच्छन मलयालम विश्वविद्यालय
एन. राजेंद्रन, सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय
एन.के. राखी, शोधार्थी, आईआईटी, जोधपुर, राजस्थान
एस.डी. प्रिंस, पीआरओ, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम
एस. कुंजम्मा, सीनियर असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम
एषुमाट्टूर राजराजवर्मा, सचिव, प्रो. एन. कृष्ण पिल्लई फाउंडेशन, तिरुवनंतपुरम
कावुंबायि बालकृष्णन, प्रोफ़ेसर, केरल शास्त्र साहित्य परिषद, तिरुवनंतपुरम
के.एम. अनिल, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, मलयालम विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय
के.एम. शरीफ, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय
के. मंजु, शोधार्थी, मलयालम विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय
के.पी. सतीश, विकास अधिकारी, ग्रंथशाला संघम, तिरुवनंतपुरम
के.वी. दिलीप कुमार, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडि
जी. उषाकुमारी, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (संस्कृत), यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम

जोसेफ कोयिप्पल्लि, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड
टी.बी. वेणुगोपाल पणिक्कर, सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर (मलयालम), कालीकट विश्वविद्यालय
टी. विष्णुकुमारन, सीनियर असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, तमिल विभाग, द्रविड़ विश्वविद्यालय, कुप्पम
टी.वी. सुनीता, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, सामूतिरि गुरुवायूरप्पन महाविद्यालय, कालीकट
पी.के. तिलकन, सेवानिवृत्त शोध अधिकारी, एससीईआरटी, तिरुवनंतपुरम, केरल
पी. शिवदासन, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, इतिहास विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय
पी.जी. स्वाति, शोधार्थी, काल्ट्स (CALTS), केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद
प्रदीपन पांबिरिक्कुन्नु, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडि
बी. गोपीनाथन नायर, सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम
बी.एस. शिवकुमार, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, तुलु विभाग, द्रविड़ विश्वविद्यालय, कुप्पम
रश्मि, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, भाषाविज्ञान विभाग, तुंचत्तु एष़ुत्तच्छन मलयालम विश्वविद्यालय
रोसि थंपि, एसोसिएट प्रोफ़ेसर (मलयालम), लेखिका, कवयित्री एवं फिल्म निर्माता
लाल मोहन, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, मीडिया स्टडीज़, तुंचत्तु एष़ुत्तच्छन मलयालम विश्वविद्यालय
वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर, सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर (भाषाविज्ञान विभाग), केरल विश्वविद्यालय
वी.वी. मंजु, शोधार्थी, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड
शमशाद हुसैन, संस्कृत विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, तिरूर
सी.एस. वेंकटेश्वरन, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, गुलाटी इंस्टिट्यूट ऑफ़ फाइनेंस एंड टैक्सेशन, तिरुवनंतपुरम; फिल्म आलोचक
सी.पी.वी. विजयकुमारन, अनुवादक एवं भूतपूर्व आचार्य, हिंदी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड

सहयोग

एम. श्रीनाथन : भूमिका, मलयालम शब्द की उत्पत्ति, मलयालम भाषी समुदाय
बी. गोपीनाथन नायर : मलयालम भाषा का इतिहास, मलयालम भाषा की आद्य-द्रविड़, आद्य-तमिल और मध्य-तमिल वंशावली
टी. विष्णुकुमारन : संगम साहित्य और मलयालम भाषा
एम.जी.एस. नारायणन : मलयालम भाषा की उत्पत्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर : मलयालम का भाषा वैज्ञानिक स्वरूप
टी.बी. वेणुगोपाल पणिक्कर : मलयालम में पुरातनवाद
जोसेफ कोयिप्पल्लि : मलयालम भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का इतिहास
एन.के. राखी : मलयालम व्याकरण परंपरा का विकास
एस. कुंजम्मा : मलयालम कोशकला अध्ययन का इतिहास
बी. गोपीनाथन नायर : मलयालम का संपर्क इतिहास
एम.एच. इलियास एवं शमशाद हुसैन : मलयालम, अरबी और फ़ारसी
एम. श्रीनाथन : मलयालम और प्राकृत
ए.एम. थॉमस : मलयालम और सिरिएक भाषा

वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर : मलयालम और संस्कृत
जोसेफ कोयिप्पल्लि : मलयालम और अंग्रेज़ी, मलयालम लिपि
के.एम. अनिल : मलयालम लिपि का विकास
अशोकन नांबियार : मलयालम मुद्रण का इतिहास
टी.वी. सुनीता : डिजिटल भाषा प्रौद्योगिकियाँ
बी. गोपीनाथन नायर : मलयालम की बोलियाँ
एम.एच. इलियास एवं शमशाद हुसैन : अरबीमलयालम
जोसेफ कोयिप्पल्लि : पातिरि मलयालम
रोसि थंपि : मलयालम पर बाइबिल का प्रभाव
के.एम. अनिल : मौखिक साहित्य विधा
जी. उषाकुमारी : मलयालम में शास्त्रीय साहित्य – एक अवलोकन
एल. थॉमसकुट्टी : मलयालम नाटक का विकास
जोसेफ कोयिप्पल्लि : चविट्टुनाटकम
जोसेफ कोयिप्पल्लि : मिशनरी साहित्य
आर.वी.एम. दिवाकरन : प्रगतिवादी साहित्य
प्रदीपन पांबिरिक्कुन्नु : मलयालम में दलित साहित्य
एम.वाई. इंदु : मलयालम में नारीवादी लेखन
ए.बी. रघुनाथन नायर : बाल साहित्य
के.वी. दिलीपकुमार : मलयालम साहित्य का इतिहास लेखन
वी.वी. मंजु : संस्कृत से मलयालम में अनुवाद
के.एम. शरीफ : अंग्रेज़ी से मलयालम में अनुवाद, अंग्रेज़ी से इतर अन्य भाषाओं से अनुवाद
जी. उषाकुमारी : मलयालम और हिंदी
पी.के. तिलकन : शिक्षा में मलयालम भाषा
एषुमाट्टूर राजराजवर्मा : प्रशासन में मलयालम
एस.डी. प्रिंस : मुद्रण माध्यम में मलयालम
सी.एस. वेंकटेश्वरन : दृश्य-श्रव्य माध्यम में मलयालम भाषा
लाल मोहन : नए माध्यम में मलयालम
एस. कुंजम्मा : मलयालम में विश्वकोश, मलयालम में शब्दावलियाँ
कावुंबायि बालकृष्णन : मलयालम में विज्ञान साहित्य
वी.आर. प्रबोधचंद्रन नायर : लेखन दीक्षा अनुष्ठान
के.पी. सतीश : पुस्तकालय आंदोलन
एम. श्रीनाथन : प्रवासी मलयाली
कावुंबायि बालकृष्णन : जन विज्ञान आंदोलन और मलयालम
एम. श्रीनाथन : मलयालम की राजनीतिक बोली, मलयालम सार्वदेशीयता

पी. शिवदासन : केरल में साक्षरता
एम. श्रीनाथन : शब्दावली
पी.जी. स्वाति : ब्यारि
रश्मि : कोंकणी
बी.एस. शिवकुमार : तुलु
एल. डार्विन : आदिवासी भाषाएँ
एन. राजेन्द्रन : मुदुगा
सी.पी.वी. विजयकुमारन : अनुवादकीय टिप्पणियाँ
टी.बी. वेणुगोपाल पणिक्कर : लक्षद्वीप मलयालम
के. मंजु : महल